ओड़िआ

बिचित्र रामायण

विश्वनाथ खुँटिया विरचित

[नागरी लिपि में मूल ओड़िआ पाठ तथा हिन्दी गद्यानुवाद]

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार—

योगेश्वर त्रिपाठी "योगी"

बी. ए., साहित्य-रत्न

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ—२२६०२०

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।। '

प्रथम संस्करण—१९८६-८७ ई०

आकार— १८×२२÷८

पृष्ठसंख्या— ६८८

मूल्य— ७०·०० रुपया

मुद्रक
वाणी प्रेस
मौसम बाग (सीतापुर रोड), लखनऊ—२२६०२०

विश्वनागरी लिपि

॥ ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ॥

सब भारतीय लिपियां सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientifi

भारतीय लिपियों की विशेषता।

'संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है', यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का ध्वन्यात्मक होना। स्वरों-व्यंजनों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना। ['अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरोंका इस भांति मूल आधार। सकलविश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार।] एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर। स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स् के समान अनेकरूप नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वजन पर एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि

ओड़िया - देवनागरी वर्णमाला

ଅ अ	ଆ आ	ଇ इ	ଈ ई	ଉ उ
ଊ ऊ	ଋ ऋ	ୠ ॠ	ଏ ए	ଐ ऐ
ଓ ओ	ଔ औ	ଅଂ अं	ଅଃ अः	
କ क	ଖ ख	ଗ ग	ଘ घ	ଙ ङ
ଚ च	ଛ छ	ଜ ज	ଝ झ	ଞ ञ
ଟ ट	ଠ ठ	ଡ ड	ଢ ढ	ଣ ण
ତ त	ଥ थ	ଦ द	ଧ ध	ନ न
ପ प	ଫ फ	ବ ब	ଭ भ	ମ म
ଯ य	ୟ य़	ର र	ଳ ळ	ଲ ल
ଵ व	ଶ श	ଷ ष	ସ स	ହ ह
କ୍ଷ क्ष	ଡ଼ ड़	ଢ଼ ढ़		

में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों मे मौजूद है, अतः वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों के रूप में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमीवेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वही यह भी सत्य है कि नागरी लिपि मे प्रस्तुत हिन्दी (खड़ी बोली) का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि की, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" मे अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) तो है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य की नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि देशी-विदेशी अन्य सभी लिपियों की उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से विश्व की समस्त अ-लिप्यन्तरित ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश, सुरयानी आदि का वाङ्मय रह गया। जगत् तो दूर, राष्ट्र का ही प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है अथवा बंगाल का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे, तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को 'भी' अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता, युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसने वाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मान कर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर, उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना जरूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। बे, काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको लिपि में कहाँ तक और कैसे समाविष्ट किया जाय?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अलबत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख

है कि आजादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको गायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अरबी, इरानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यता रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में, जरूरी मानकर, उन विशिष्ट भाषाई स्वर-व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

अंग्रेजी—व्यामोह भी ! आदर्श भी !

अंग्रेजी की लिपि-जैसी पंगु लिपि शायद ही संसार में कोई हो। 'डब्लू'—तीन अक्षर, चार मात्राएँ, किन्तु वास्तविक ध्वनि (व) का लोप ! शब्दावली इतनी निरीह कि उसमें ८०% से अधिक शब्द विदेशी भाषाओं के हैं। अपनी छोटी सी धरती पर यह गरीब भाषा, फ्रेंच शाहंशाही के आ-धमकने पर, अपने फ्रेंच-भक्त अंग्रेज बन्धुओं ही द्वारा लताड़ी गई, जैसे हमारे अंग्रेजी-भक्त भारतीय उसी शान में राष्ट्रभाषा का तिरस्कार करते हैं। वे अंग्रेजी से नसीहत लें कि दुर्दशाग्रस्त, पंगु लिपि पर आधारित, शब्द-निर्धन होकर भी कैसे हौसला क़ायम रखकर उसने विश्व-साम्राज्य स्थापित किया। उस हौसले को आदर्श मानकर अपनी समृद्ध राष्ट्रलिपि और राष्ट्रभाषा को और समृद्ध करके विश्वसम्मान दिलायें।

तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अरबी' में केवल २७-२८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "इल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"—यह पैग़म्बर (स०) का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अरबी-पोशाक— चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अरबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्त:स्फुट चार अक्षरों को भी अरबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है ? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा मे जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ— उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिफ्थांग) आदि बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु संवृत, विवृत आदि विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं,

प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का शुद्ध उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। पंजाब, बंगाल, मद्रास के अंग्रेजी के उद्भट विद्वान् अंग्रेजी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेजी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार को वरीयता (तर्जीह)।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्य पदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस शोध-समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे जरूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी वर्णमालाओं में एकार तथा ओकार की ह्रस्व,दीर्घ —दोनों मात्राएँ हम बोलते हैं, किन्तु पृथक् लिखते नहीं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वजों की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, ग्रीक, अपभ्रंश आदि का एक-जैसा है—(आइ, आउ)। किन्तु खड़ीबोली हिन्दी-उर्दू के ऐ, औ, ऐनक, औरत-जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नि, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत बँधा है। उनमें भी कुछ तो अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का उनके ही बीच में अनंत विभाजन

हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण तो 'ब्रह्म' ही है। "बेस्ट् इज् द ग्रेटेस्ट् ऍनिमी ऑफ़् गुड्।" इसलिए शग़ूल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो गुजराती लिपि की भाँति अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

संस्कृत के तिरस्कार से भाषा-विघटन।

मेरा स्पष्ट मत है कि "संस्कृत" राष्ट्रभाषा होने पर, भाषा-विवाद ही न उठता। सबको ही (हिन्दी-भाषी को भी) समान श्रम से संस्कृत सीखने पर, स्पर्धा-कटुता का जन्म न होता, संस्कृत का अपार ज्ञान-भण्डार सबको प्रत्यक्ष होता, और हिन्दी की पैठ में भी प्रगति ही होती। उर्दू-हिन्दी की अपेक्षा, अन्य सभी भारतीय भाषाएँ, संस्कृत के अधिक समीप हैं। संस्कृत देश-काल-पात्र के प्रभाव से मुक्त, अव्यय (कभी न बदलनेवाली), सदाबहार भाषा है। अन्य सब भाषाएँ देश-काल-पात्र के प्रभाव से नहीं बचतीं।

आज क्या करना है?

किन्तु संस्कृत राष्ट्रभाषा न होने पर अब "हिन्दी" ही सबको मान्य होना चाहिए। यह इसलिए कि अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक भारतीय भाषा है जो देश के हर स्थल में कमोबेश प्रविष्ट है।

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर, नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— ("ही" नहीं बल्कि "भी") बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा। हमारी एकराष्ट्रीयता और विश्वबन्धुत्व चरितार्थ होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी (पद्मश्री)
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

अंग्रेज़ी भाषा का इतिहास

[रोमन जैसी पंगु लिपि और किसी समय शब्द-दारिद्रय से ग्रस्त अंग्रेजी भाषा द्वारा निष्ठा, श्रम और उदात्त भावना के बल पर विश्व-चक्रवर्तित्व प्राप्त कर लेने को आदर्श मान कर चलिये, न कि सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि पर आधारित भारतीय राष्ट्रभाषा और समृद्ध मातृभाषाओं का अनादर कर अंग्रेजी को मातृस्थान प्रदान कीजिये, अपनी माताओं को धकेल कर!]

इंग्लैंड में अंग्रेजी कैसे लागू की गयी ?

(डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त—भू० पू० कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)

संभवतः भारत में बहुत थोड़े लोग यह जानते हैं कि जिस प्रकार आज हम विदेशी भाषा—अंग्रेजी के प्रभाव से आक्रांत होकर स्वदेशी भाषाओं की उपेक्षा कर रहे हैं, उसी प्रकार किसी समय इंग्लैंड भी विदेशी भाषा—फ्रेंच के प्रभाव से इतना अभिभूत था कि न केवल सारा सरकारी काम फ्रेंच में होता था, बल्कि उच्च वर्ग के अंग्रेज भी अंग्रेजी में बात करना अपनी शान के खिलाफ़ समझते थे। किंतु जब आगे चलकर फ्रेंच के स्थान पर अंग्रेजी लागू की गयी, तो उसका भारी विरोध हुआ और उसके विपक्ष में वे सारे तर्क दिये गये, जो आज हमारे यहाँ हिंदी के विरोध में दिये जा रहे हैं। फिर भी कुछ राष्ट्रभाषा-प्रेमी अंग्रेजों ने विभिन्न प्रकार के उपायों से किस प्रकार अंग्रेजी का मार्ग प्रशस्त किया, इसकी कहानी न केवल अपने-आप में रोचक है, बल्कि हमारी आज की हिंदी-विरोधी स्थिति के निराकरण के लिए भी उपयुक्त मार्ग सुझा सकती है।

इंग्लैंड में अंग्रेजी का पराभव क्यों ?

वैसे अंग्रेजी इंग्लैंड की अत्यंत प्राचीन भाषा रही है, यहाँ तक कि जब इस देश का नाम 'इंग्लैंड' के रूप में विख्यात नहीं हुआ था, तब भी 'इंग्लिश' भाषा का अस्तित्व था। वस्तुतः 'इंग्लिश' नाम 'इंग्लैंड' के आधार पर नहीं पड़ा, इंग्लिश भाषा के प्रचलन के कारण ही इस भूभाग को इंग्लैंड की संज्ञा प्राप्त हुई तथा १०वीं शताब्दी तक यह समूचे राष्ट्र की बहुमान्य भाषा के रूप में प्रचलित थी। किंतु ११वीं शती के उत्तरार्द्ध में एकाएक ऐसी घटना घटित हुई, जिसके कारण इंग्लैंड में ही अंग्रेजी का सूर्य अस्त होने लगा। बात यह हुई कि १०६६ में फ्रांस के उत्तरी भाग—नॉरमैंडी के निवासी नॉर्मन लोगों का इंग्लैंड पर आधिपत्य हो गया। उनका नायक ड्यूक ऑफ़ विलियम, इंग्लैंड के तत्कालीन शासक हेराल्ड को युद्ध में पराजित करके स्वयं सिंहासनारूढ़ हो गया और तभी से इंग्लैंड पर फ्रेंच भाषा एवं फ्रांसीसी संस्कृति के प्रभाव की अभिवृद्धि होने लगी, क्योंकि स्वयं नॉर्मन्स की भाषा और संस्कृति पूर्णतः फ्रेंच थी।

जब शासक वर्ग की भाषा फ्रेंच हो गयी, तो स्वाभाविकतः न केवल सारा राज-काज फ्रेंच में होने लगा, वरन् शिक्षा, धर्म एवं समाज में भी अंग्रेजी के स्थान पर फ्रेंच

[धर्मयुग १५-२१ दिसंबर, १९८५ के अंक में पृष्ठ २९ पर प्रकाशित डॉ० गणपति चंद्र गुप्त, भू०पू० कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) का लेख 'इंग्लैंड में अंग्रेजी कैसे लागू की गई ?' सर्वाङ्गपूर्ण और सब प्रकार से अद्वितीय है। इस ग्रन्थ में यह लेख अमूल्य निधि मानकर उद्धृत किया जा रहा है। हमारे पाठक और हम धर्मयुग एवं विद्वान लेखक के अत्यन्त आभारी है।]

—सम्पादक, वाणी सरोवर

प्रतिष्ठित होने लगी। उच्च वर्ग के जो लोग सरकारी पदों के अभिलाषी थे या जो शासक वर्ग से मेल-जोल बढ़ा कर अपने प्रभाव में अभिवृद्धि करना चाहते थे, वे बड़ी तेज गति से फ्रेंच सीखने लगे तथा कुछ ही वर्षों में यह स्थिति आ गयी कि धनिकों, सामंतों, शिक्षकों, पादरियों, सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों आदि सबने फ्रेंच को ही अपना लिया और अंग्रेजी केवल निम्न वर्ग के अशिक्षित लोगों, किसानों और मजदूरों की भाषा रह गयी। अपने आपको शिक्षित कहने या कहलवानेवाले लोग केवल फ्रेंच का ही प्रयोग करने लगे और अंग्रेजी जानते हुए भी अंग्रेजी बोलना अपनी शान के खिलाफ़ समझने लगे। यह दूसरी बात है कि कभी-कभी उन्हें अपने अनपढ़ नौकरों या मजदूरों से बात करते समय अंग्रेजी जैसी 'हेय' भाषा में भी बोलने को विवश होना पड़ता था।

आगे चलकर इंग्लैंड नॉर्मन्स के आधिपत्य से तो मुक्त हो गया, किंतु उनकी भाषा के प्रभाव से फिर भी मुक्त नहीं हो पाया। इसका कारण यह था कि जिन अंग्रेज राजाओं का अब इंग्लैंड में शासन था, वे स्वयं फ्रेंच के प्रभाव से अभिभूत थे। इतना ही नहीं, उनमें से कुछ का ननिहाल फ्रांस में था, तो किसी की ससुराल पेरिस में थी। अनेक राजकुमारों और सामंतों ने बड़े यत्न से पेरिस में रहकर फ्रेंच भाषा सीखी थी, जिसे बोलकर वे अपने-आपको उन लोगों की तुलना में अत्यंत 'सुपीरियर' समझते थे, जो बेचारे केवल अंग्रेजी ही बोल सकते थे। दूसरे, उस समय फ्रेंच भाषा और संस्कृति सारे यूरोप में आदर की दृष्टि से देखी जाती थी। फिर अंग्रेजी की तुलना में फ्रेंच का साहित्य इतना समृद्ध था कि उसे विश्व-ज्ञान की खिड़की ही नहीं, 'दरवाजा' (गेट) कहा जाता था। ऐसी स्थिति में भले ही इंग्लैंड स्वतंत्र हो गया हो, पर वहां अंग्रेजी की प्रतिष्ठा कैसे संभव थी ?

इंग्लैंड में फ्रेंच भाषा के आधिपत्य को बनाये रखने में कुछ राजाओं के व्यक्तिगत कारणों ने भी बड़ा योग दिया। उदाहरण के लिए हेनरी तृतीय (१२१६-१२७२ ई०) का विवाह फ्रांस की राजकुमारी से हुआ था, जो अपने साथ भारी दान-दहेज लाने के अलावा अपने आठ मामाओं, सैकड़ों रिश्तेदारों और उनके सेवकों की पल्टन भी लेकर आयी थी, जिन्हें उच्च पदों पर प्रतिष्ठित करना हेनरी के लिए आवश्यक था। भला ऐसा न करके वह अपनी नवविवाहिता दुलहन का मन कैसे दुखा सकता था ! इसका परिणाम यह हुआ कि एक बार पुनः सभी सरकारी महकमों एवं कार्यालयों पर फ्रेंच का पूरी तरह अधिकार हो गया। जो लोग फ्रेंच में बोल सकते थे, लिख सकते थे या उस भाषा में लिखवा सकते थे, उन्हीं की सरकार में सुनवाई हो सकती थी। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी पढ़ना-पढ़ाना बेकार था। अस्तु, सामान्य पाठशालाओं में भी अंग्रेजी की अपेक्षा फ्रेंच की ही अधिक पढ़ाई होती थी।

किंतु १४वीं शती में इन स्थितियों में परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हुई तथा धीरे-धीरे अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ने लगा। इसके कई कारण थे—एक तो यह कि १३३७ से १४५३ तक इंग्लैंड और फ्रांस के बीच युद्ध चला, जिसे इतिहासकारों ने 'शतवर्षीय युद्ध' की संज्ञा दी है। इस युद्ध के फलस्वरूप अंग्रेजों में फ्रेंच जाति, फ्रेंच भाषा और फ्रेंच संस्कृति के विरुद्ध विद्रोह की भावना पनपने लगी।

अंग्रेजी का पुनः अभ्युदय

अब फ्रेंच को शत्रु जाति की भाषा के रूप में देखा जाने लगा। दूसरे, इसी शताब्दी में निम्न वर्ग एवं मध्यम वर्ग में नवजागरण की लहर आयी। ये लोग अपने स्वत्व एवं अधिकारों के लिए संघर्ष करने लगे। १३८१ में मजदूरों ने अधिक वेतन के लिए आंदोलन किया, जिसके फलस्वरूप उनकी स्थिति में सुधार हुआ। देश के विभिन्न

संगठनों ने भी अपनी अन्य माँगों के साथ-साथ, स्वभाषा अंग्रेज़ी को भी मान्यता देने की माँग की। दूसरी ओर मध्यम वर्ग के वे लोग भी जो अपने बच्चों को पेरिस नहीं भेज पाते थे तथा गाँव के स्कूलों में ही पढ़ाकर संतुष्ट हो जाते थे, अंग्रेज़ी के समर्थक बन गये। उच्च वर्ग में भी अब शुद्ध फ़्रेंच बोलनेवाले बहुत कम रह गये। सही बात तो यह है कि जिस प्रकार हमारे यहाँ 'लंडन-रिटर्न्ड' लोग अंग्रेज़ी के बड़े-बड़े प्रोफ़ेसरों पर भी अपने अंग्रेज़ी-ज्ञान एवं उसके उच्चारण की धाक जमाते रहे हैं, वैसे ही लंदन में कुछ 'पेरिस-रिटर्न्ड' लोगों की धाक थी। पेरिसनुमा फ़्रेंच बोलनेवाले, अपने ही देश—इंग्लैंड के उन लोगों की खिल्ली उड़ाते थे, जो स्थानीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पढ़कर टूटी-फूटी या अशुद्ध फ़्रेंच बोलते थे।

धीरे-धीरे अंग्रेज़ी के पक्ष में लोकमत जाग्रत् हुआ और १३६२ में पार्लियामेंट में एक अधिनियम 'स्टैच्यूट ऑफ़ प्लीडिंग' (अधिवक्ताओं का अधिनियम) पारित हुआ, जिससे इंग्लैंड के न्यायालयों में भी अंग्रेज़ी का प्रवेश संभव हो गया। हालाँकि इस अधिनियम का भी उस समय के बड़े-बड़े न्यायाधीशों तथा अधिवक्ताओं ने भारी विरोध किया। क्योंकि अंग्रेज़ी में न्याय और क़ानून संबंधी पुस्तकों का सर्वथा अभाव था, और यह तर्क दिया गया कि ऐसी स्थिति में कैसे बहस की जा सकेगी और कैसे न्याय सुनाया जायेगा। एक देशी भाषा के लिए न्याय की हत्या की जा रही है। अतः वैधानिक दृष्टि से भले ही अंग्रेज़ी को मान्यता मिल गयी, किंतु कचहरियों का अधिकांश कार्य लंबे समय तक फ़्रेंच भाषा में ही चलता रहा।

१४वीं शती में न्यायालयों के अतिरिक्त विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी अंग्रेज़ी का पठन-पाठन प्रचलित हुआ। ऑक्सफ़ोर्ड के कुछ अध्यापकों ने भी लैटिन के अतिरिक्त अंग्रेज़ी की शिक्षा देने की व्यवस्था की।

अंग्रेज़ी में लिखने के लिए क्षमा-याचना

यद्यपि इस प्रकार इंग्लैंड के जनसाधारण में अंग्रेज़ी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा था, फिर भी उच्च वर्ग के विद्वानों एवं विद्वत्ता की भाषा वह अभी तक नहीं बन पायी थी। फ़्रेंच का प्रभुत्व थोड़ा कम हुआ, तो उसका स्थान लैटिन और ग्रीक ने ले लिया। १५वीं शती के पुनर्जागरण युग में ये शास्त्रीय भाषाएँ समस्त यूरोप में ज्ञान-विज्ञान की भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी थीं। ऐसी स्थिति में अंग्रेज़ी में लिखनेवाले लोग प्रायः हेय दृष्टि से देखे जाते थे। इसका प्रमाण इस युग की अनेक रचनाओं की भूमिका से मिलता है, जहाँ उसके रचयिता ने अंग्रेज़ी में लिखने के लिए अपनी सफ़ाई दी है। उदाहरण के लिए, १४वीं शती के आरंभ में ही एक अंग्रेज़ी पुस्तक के रचयिता ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखा है—'भले ही भाषा की दृष्टि से मैं हीन समझा जाऊँ, फिर भी मेरे मन में जो कुछ है उसे अवश्य बता देना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि अगर अंग्रेज़ी में लिखा जाये, तो उसे सब लोग समझ सकते हैं। सही बात तो यह है कि उन क्लर्कों (सरकारी कर्मचारियों) की अपेक्षा, जो फ़्रेंच जानते हैं, उस बेचारे जनसाधारण को दिव्य ज्ञान की अधिक आवश्यकता है, जो केवल अंग्रेज़ी ही जानता है। अतः मैं सोचता हूँ कि यदि अंग्रेज़ी में कोई अच्छी चीज़ लिखी जाये, तो यह एक पुण्य का कार्य होगा।

इसी प्रकार एश्कम नामक लेखक ने अपनी पुस्तक टॉक्स फिलस की भूमिका में स्पष्ट किया है कि उसके लिए ग्रीक या लैटिन में लिखना अधिक आसान था, फिर भी उसने सर्वसाधारण के हित को ध्यान में रखकर ही अंग्रेज़ी में लिखने का दुस्साहस किया है। पर इससे भी महत्वपूर्ण वक्तव्य १६वीं शती के एक अन्य लेखक इलियट का है, जिसने अपनी चिकित्सा-शास्त्र की पुस्तक 'कैसल ऑफ़ हेल्थ' अर्थात् 'स्वास्थ्य का कवच' की

भूमिका में अंग्रेजी में लिखने के लिए क्षमा-याचना करते हुए लिखा है—'यदि चिकित्सक लोग मुझ पर इसलिए कुपित होते हैं कि मैंने अंग्रेजी में क्यों लिखा, तो मैं उन्हें बता देना चाहता हूँ कि अगर ग्रीक लोग ग्रीक में लिखते हैं, रोमन लोग स्वभाषा लैटिन में, तो फिर यदि हम लोग अपनी भाषा अंग्रेजी में लिखें, तो इसमें क्या बुराई है ?'

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार १५वीं-१६वीं शती में अंग्रेजी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें लिखना विद्वानों की दृष्टि में हेय समझा जाता था तथा जो ऐसा करने का प्रयास करते थे, वे अपनी सफाई में कोई-न-कोई तर्क देने को विवश होते थे। इसकी तुलना हमारे मध्यकालीन हिंदी के आचार्य केशवदास की मनस्थिति से की जा सकती है, जिन्होंने अपनी एक रचना में लिखा था— 'हाय, जिस कुल के दास भी भाषा (हिंदी) बोलना नहीं जानते (अर्थात् वे भी संस्कृत में बोलते हैं), उसी कुल में मेरे-जैसा मतिमंद कवि हुआ, जो भाषा (हिंदी) में काव्य-रचना करता है।' वस्तुतः जब कोई राष्ट्र विदेशी संस्कृति एवं भाषा से आक्रांत हो जाता है तो उस स्थिति में स्वदेशी भाषा एवं संस्कृति के उन्नायकों में आत्मलघुता या हीनता की भावना आ जाना स्वाभाविक है।

प्रेयसियों के प्रेम-पत्रों की दुहाई !

यद्यपि १६वीं शती में अनेक विद्वान अंग्रेजी को अपनाने लगे थे। फिर भी अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं का विवाद शांत नहीं हुआ था। अब भी उच्च वर्ग में ऐसे अनेक लोग थे, जो युक्तियों व तर्कों से इंग्लैंड में फ्रेंच का वर्चस्व बनाये रखने के हिमायती थे, जैसे जॉन बर्टन ने फ्रेंच को प्रचलित रखने के पक्ष में तीन तर्क दिये। उनके अनुसार, एक तो न केवल अपने देश में बल्कि आसपास के पड़ोसी राज्यों से संपर्क बनाये रखने के लिए फ्रेंच आवश्यक है। दूसरे, ज्ञान-विज्ञान और क़ानून की सारी पुस्तकें फ्रेंच में ही हैं। तीसरे, इंग्लैंड की सभी सुशिक्षित महिलाएं एवं सज्जन अपने प्रेम-पत्रों का आदान-प्रदान फ्रेंच में ही करते हैं। यह तीसरा तर्क सचमुच रोचक है, जो कुछ लोगों को हास्यास्पद प्रतीत हो सकता है, किंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। कई बार ऐसी भी स्थितियां होती हैं, जबकि वर्ग-विशेष की रुचि या अनुकंपा के कारण कोई भाषा अपना अस्तित्व बचाये रखती है। उदाहरण के लिए पंजाब में स्वतंत्रता-प्राप्ति के पूर्व पुरुष वर्ग की भाषा प्रायः उर्दू थी, जबकि महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा हिंदी में होती थी। इसलिए कहा जाता है कि पुरुष वर्ग को हिंदी केवल इसलिए पढ़नी पड़ती थी कि वे अपनी पत्नियों तथा माताओं और बहनों के साथ पत्राचार कर सकें। इसीलिए पंजाब में हिंदी की परंपरा को जीवित रखने का श्रेय वहाँ की महिलाओं को दिया जाता है।

खैर, इन सारी स्थितियों के होते हुए भी राष्ट्रभाषा-प्रेमी अंग्रेजों ने हिम्मत नहीं हारी। वे स्वीकार करते थे कि फ्रेंच, लैटिन और ग्रीक की तुलना में अंग्रेजी भाषा और उसका साहित्य नगण्य है, तुच्छ है। फिर भी अंततः वह उनकी अपनी भाषा है। यदि दूसरों की माताएं अधिक सुंदर और संपन्न हों, तो क्या हम अपनी माँ को केवल इसलिए ठुकरा देंगे कि वह उनकी तुलना में असुंदर और अकिंचन है ! कुछ ऐसी ही शब्दावली में अंग्रेजी भाषा के कट्टर समर्थक रिचर्ड मुल्कास्टर ने १५८२ में लिखा—

आई लव रोम, बट लंदन बेटर, आई फेवर इटेलिक, बट इंग्लैंड मोर,
आई ऑनर लैटिन, बट आई वर्शिप द इंग्लिश।

अर्थात् 'मैं रोम को प्यार करता हूँ, पर लंदन को उससे भी अधिक। मैं इटली का समर्थक हूँ, पर इंग्लैंड का उससे भी अधिक समर्थन करता हूँ। और मैं लैटिन का सम्मान करता हूँ, पर अंग्रेजी की पूजा करता हूँ।'

कहने का तात्पर्य यह है कि अंग्रेजी के पक्षपातियों ने अपने आंदोलन को तर्क और विवाद के बल पर नहीं, बल्कि भावना के बल पर सफल बनाया। उन्होंने अपने देशवासियों के मस्तिष्क को नहीं, हृदय को झकझोर कर उनके स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम को उद्वेलित किया। इसी का परिणाम था कि इस शती के अंत तक उच्च वर्ग का भी दृष्टिकोण अंग्रेजी के प्रति पर्याप्त अनुकूल हो गया। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि एक ओर तो रिचर्ड कैर्यू-जैसे विद्वान ने १५९५ में अंग्रेजी भाषा की उच्चता पर लेख लिखकर उसका जोरदार समर्थन किया, तो दूसरी ओर सर फिलिप सिडनी जैसे विद्वान ने घोषित किया— 'यदि भाषा का लक्ष्य अपने हृदय और मस्तिष्क की कोमल कल्पनाओं को सुंदर एवं मधुर शब्दावली में व्यक्त करना है, तो निश्चय ही अंग्रेजी भाषा भी इस लक्ष्य की पूर्ति की दृष्टि से उतनी ही सक्षम है, जितनी कि विश्व की अन्य भाषाएँ हैं।'

१७वीं शती के आरंभ तक इंग्लैंड में अंग्रेजी के विरोध का वातावरण तो शांत हो गया तथा आम धारणा बन गयी कि स्वदेशी भाषा को हर क़ीमत पर अपनाना है, किंतु जब इसे व्यावहारिक रूप दिया जाने लगा, तो सबसे बड़ी कठिनाई शब्दावली की आयी। अंग्रेजी को समृद्ध करने के लिए ज्ञान-विज्ञान के ग्रंथ कैसे लिखे जा सकते थे, जबकि तद्विषयक शब्दावली का उसमें सर्वथा अभाव था ? ज्ञान-विज्ञान की बात तो दूर, उस समय अंग्रेजी, शब्द-संपदा की दृष्टि से इतनी दरिद्र थी कि प्रशासन, कला, समाज, धर्म और दैनिक जीवन से संबंधित सामान्य शब्द भी उसके पास अपने नहीं थे, फ्रेंच व अन्य भाषाओं से उधार लिये हुए थे। उदाहरण के लिए, प्रशासनिक शब्दावली में अंग्रेजी के पास अपने केवल दो शब्द थे—किंग (राजा) और क्वीन (रानी)। शेष सारे शब्द फ्रेंच से आयातित थे— गवर्नमेंट, क्राउन स्टेट, एंपायर, रॉयल कोर्ट काउंसिल, पार्लियामेंट, असेंबली, स्टेच्यूट, ऑडन, मेयर, प्रिंस, प्रिंसेस, ड्यूक, मिनिस्टर, मैडम आदि। इसी प्रकार न्यायालय और क़ानून-संबंधी सारी शब्दावली भी प्रायः फ्रेंच से आयातित है, जैसे— जस्टिस, क्राइम बार, एडवोकेट जज, प्ली, सूट, पेटिशन, कंप्लेंट, समन, एविडेंस, प्रूफ़, प्लीड, वारंट, प्रॉपर्टी, इस्टेट —ये मोटे शब्द भी अंग्रेजी के अपने नहीं हैं। फिर कला और साहित्य संबंधी अधिकांश शब्द भी अंग्रेजी के पास नहीं थे, अतः आर्ट, पेंटिंग, म्यूजिक, ब्यूटी, कलर, फ़िगर, इमेज, पीएट, प्रोज़, रोमांस, स्टोरी, ट्रेजेडी, प्रिफ़ेस टाइटिल चैप्टर, पेपर जैसे शब्द भी फ्रेंच से लेने पड़े। इतना ही नहीं, एक इतिहासकार ने तो यहाँ तक कहा है कि फ्रेंच शब्दावली के अभाव में कोई भी अंग्रेज़ अपने रहन-सहन से ले कर खान-पान तक भी कोई क्रिया संपन्न नहीं कर सकता था, क्योंकि उसे ड्रेस, फ़ैशन, गारसेंट, कॉलर, पेटिकोट, बटन, बूट, ब्लू, ब्राउन, डिनर, सफ़र, टेस्ट, फ़िश, बीफ़, मटन, टोस्ट, बिस्किट, क्रीम, शुगर, ग्रेप ऑरेंज, लेमन, चेरी जैसे शब्दों के लिए भी फ्रेंच पर निर्भर करना पड़ता है। ए हिस्ट्री ऑफ़ दी इंगलिश लैंग्वेज के लेखक अलबर्ट सी० बाफ़ के अनुसार, अब तक लगभग दस हजार शब्द तो अकेली फ्रेंच से ही अंग्रेजी में अपना लिये गये थे, किंतु आगे चलकर विश्व की अन्य भाषाओं से भी हजारों शब्द ग्रहण किये गये। इनके मतानुसार, 'यह कहना अनुचित न होगी कि अंग्रेजी में इस समय लगभग पचास से भी अधिक भाषाओं से हजारों शब्द ग्रहण किये जा चुके थे, जिनमें अधिकांश फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक, इटैलियन और स्पैनिश से थे।'

भाषा की क्लिष्टता का शोर

जब विभिन्न भाषाओं से भारी संख्या में ऐसे शब्दों को स्वीकार किया गया, जो पहले से अंग्रेजी में प्रचलित नहीं थे, तो यह स्वाभाविक था कि जनसामान्य के लिए वह

अत्यंत दुर्बोध एवं क्लिष्ट हो गयी। इसके अतिरिक्त विदेशी शब्दों के अत्यधिक मिश्रण से स्वभाषा की शुद्धता का भी प्रश्न उपस्थित हुआ, अतः विद्वानों के एक वर्ग ने शुद्धता एवं क्लिष्टता के दृष्टिकोण से विदेशी शब्दों के बहिष्कार का आंदोलन छेड़ा। किंतु इसके प्रत्युत्तर में अनेक विद्वानों ने कठिन शब्दों के शब्दकोश तैयार करके क्लिष्टता की समस्या को हल करने की चेष्टा की। इस प्रकार के प्रयासों में एन० वैली की यूनिवर्सल एटिमोलॉजिकल् इंग्लिश डिक्शनरी (१७१८), रॉबर्ट कॉडरी की व टेबल अल्फ़ाबेटिकल् ऑफ़् हार्ड वर्ड्स तथा एडवर्ड फ़िलिप की न्यू वर्ल्ड ऑफ़् वर्ड्स जैसी कृतियाँ उल्लेखनीय हैं।

जहाँ तक भाषा की शुद्धता की बात है, अधिकांश लेखकों और साहित्यकारों ने भी इस संबंध में उदार दृष्टिकोण का परिचय देते हुए विदेशी शब्दों को ग्रहण किए जाने का समर्थन किया।

आगे चलकर स्वदेशी एवं विदेशी शब्दों का झगड़ा सदा के लिए तब समाप्त हो गया, जब १७५५ में डॉ० जॉन्सन द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी के प्रथम प्रामाणिक शब्दकोश ए डिक्शनरी ऑफ़ इंग्लिश लैंग्वेज में उन सारे शब्दों को समेट लिया गया, जो अंग्रेजी में प्रयुक्त हो सकते थे, भले ही वे मूल अंग्रेजी के हों या विदेशी भाषाओं से आयातित। इस प्रकार इन शब्दों पर अंग्रेजी का लेबल लगाकर उसे एक अत्यंत संपन्न भाषा का रूप दे दिया गया। यह दूसरी बात है कि जॉन्सन के विरोधी अब भी बराबर कहते रहे कि उनके शब्दकोश में पंद्रह प्रतिशत शब्दों को छोड़कर शेष सारे विदेशी हैं। पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। जब भाषा की अभिव्यंजना-शक्ति की समस्या हल हो गयी, तो उसमें ज्ञान-विज्ञान के साहित्य की रचना के मार्ग में खड़े सारे अवरोध स्वतः दूर हो गये। अंग्रेज जाति ने अपने राष्ट्रभाषा-प्रेम की प्रगाढ़ता का परिचय देते हुए, विदेशी भाषाओं की खिड़कियों के माध्यम से प्राप्त होनेवाले ज्ञान पर निर्भर न रह कर, स्वभाषा के द्वार सबके लिए खोल दिये। इससे सभी देशों से, सभी वर्गों के लिए ज्ञान का आवागमन उन्मुक्त रूप से होने लगा और साथ ही, इससे स्वभाषा के उन सहस्रों विद्वानों को भी रोजगार मिला, जो विभिन्न भाषाओं के ग्रंथों को अनुवादित करने और उनके मूल विचारों अथवा उनके सारांश को अंग्रेजी में प्रस्तुत करने में सक्षम थे। वस्तुतः अंग्रेजी भाषा के अभ्युदय का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि यदि कोई जाति सच्ची राष्ट्रीयता, सुदृढ़ संकल्प एवं पूरी शक्ति से जुट जाये, तो वह किस प्रकार सर्वथा गँवारू अपरिष्कृत, दरिद्र एवं अक्षम कही जानेवाली भाषा को भी एक दिन विश्व की श्रेष्ठ भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर सकती है।

हिंदी की स्थिति से तुलना

यदि अंग्रेजी भाषा की प्रतिष्ठा के इस संघर्षपूर्ण इतिहास से हिंदी की तुलना करें, तो दोनों में अनेक समानताएँ दृष्टिगोचर होंगी— (१) यद्यपि दोनों ही अपने-अपने देशों की अत्यंत बहुप्रचलित भाषाएँ थीं, फिर भी विदेशी भाषा-भाषी लोगों के प्रशासन-काल में दोनों का ही पराभव होना आरंभ हुआ और वे शीघ्र ही अपने गौरवपूर्ण पद से वंचित हो गयीं तथा उनका स्थान शासक वर्ग की विदेशी भाषा ने ले लिया। (२) शासक वर्ग की विदेशी भाषा को अपनाने में उच्च वर्ग के धनिकों, सामंतों एवं शिक्षितों ने बड़ी तत्परता का परिचय दिया। (३) विदेशी भाषा के प्रभाव से दोनों ही देशों (इंग्लैंड और भारत) के लोग इतने अभिभूत हो गये कि वे स्वदेशी भाषा को अत्यंत हेय एवं उपेक्षा योग्य मानते हुए उसमें बात करना भी अपनी शान के ख़िलाफ़ समझने लगे। (४) विदेशी

शासकों के प्रति विद्रोह की भावना एवं स्वभाषा के प्रति अनुराग की प्रेरणा से ही अंग्रेजी और हिंदी के पुनः अभ्युत्थान की प्रक्रिया आरंभ हुई । (५) दोनों ही देशों में पार्लियामेंट द्वारा स्वदेशी भाषाओं को मान्यता मिल जाने के बाद भी उनका व्यावहारिक प्रयोग बड़ी कठिनाई से आगे बढ़ा । (६) विदेशी भाषा के समर्थक एक ओर तो उसकी अभिव्यंजना-शक्ति और साहित्यिक-समृद्धि का गीत गाते रहे, तो दूसरी ओर स्वदेशी भाषा की हीनता और दरिद्रता का ढिंढोरा पीटते रहे तथा । (७) जब स्वदेशी भाषाओं को समृद्ध करने के लिए नये शब्दों का प्रचलन किया जाने लगा, तो उसके विरोधी उस पर क्लिष्टता और दुर्बोधता का आरोप लगाने लगे ।

इस प्रकार अंग्रेजी और हिंदी के पराभव एवं पुनरुत्थान की कहानी परस्पर काफी मिलती-जुलती है किंतु दोनों में थोड़ा अंतर भी है, जिसके कारण हिंदी की प्रगति में आज तक बाधाएँ उपस्थित हो रही हैं । एक तो अंग्रेज जाति में राष्ट्रीयता की भावना जितनी दृढ़ एव गंभीर है, उतनी स्वतंत्रता-प्राप्ति से पहले तो हममें रही, किंतु उसके बाद वह बिखरती चली गयी । संभवतः इसका प्रमुख कारण यह है कि हमने अपने संविधान को अमरीका की नकल पर ढालने के लिए भारत के उपप्रदेशों और प्रांतों को भी राज्यों की संज्ञा देकर यह भ्रम उत्पन्न कर दिया मानो भारत एक सुगठित राज्य न होकर अनेक राज्यों का समूह या संघ है । इससे निश्चय ही क्षेत्रवाद को बढ़ावा मिला, जो राष्ट्रीयता के लिए घातक है । इसके कारण हिंदी का विरोध केवल अंग्रेजी के हिमायतियों द्वारा ही नहीं, अन्य प्रांतीय या क्षेत्रीय भाषाओं के समर्थकों द्वारा भी होने लगा, जबकि हिंदी की प्रतिद्वंद्विता अंग्रेजी से है, न कि भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से । ऐसी स्थिति में यदि हम हिंदीतर क्षेत्रों में न सही, केवल हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र में ही, जो राजस्थान से लेकर बिहार तक और हिमाचल प्रदेश से लेकर मध्य प्रदेश तक फैला हुआ है, पूरी तरह हिंदी लागू कर दें, तो यह भी कम महत्त्व की बात नहीं होगी । किंतु स्वयं हिंदी भाषा-भाषी वर्ग में भी अभी अंग्रेजी के प्रति मोह बना हुआ है । इसका एक अन्य कारण यह है कि न केवल केन्द्र में, बल्कि हिंदी भाषा-भाषी राज्यों में भी सरकारी अधिकारियों और उच्च प्रतियोगिताओं, परीक्षाओं तथा ज्ञान-विज्ञान की उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक अंग्रेजी का ही प्रचलन है । अतः जो अंग्रेजी की उपेक्षा करते हैं, वे अपने भविष्य के निर्माण की दृष्टि से घाटे में रहते हैं । इसीलिए पिछले कुछ वर्षों में जन-साधारण में अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाने का फ़ैशन और भी जोरों से फैला है ।

दूसरे, अंग्रेजी के समर्थकों ने अपनी भाषा की शब्द-संपदा और अभिव्यंजना-शक्ति में अभिवृद्धि करने के लिए विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं के बहुप्रचलित शब्दों को उन्मुक्त भाव से अपनाया, भले ही कट्टरवादियों की दृष्टि में इससे एक ऐसी अशुद्ध भाषा बन गयी, जिसमें अधिकांश शब्द विदेशी हैं, पर इससे अंग्रेजी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों की रचना और अनुवाद के कार्य में तेजी से प्रगति हुई । इसकी तुलना में हम पहले कृत्रिम ढंग से विदेशी शब्दावलियों तथा पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्यायवाची शब्द गढ़ने के बखेड़े में पड़ गये, जो कभी भी समाप्त न होनेवाली स्थिति है, क्योंकि जब तक हम पचास वर्ष में आज की प्रचलित शब्दावली का अनुवाद करेंगे, तब तक उतने ही नये शब्द और सामने आ जायेंगे । विज्ञान की जिस गति से प्रगति हो रही है, उसे देखते हुए यह स्वाभाविक है । फिर इस प्रकार कृत्रिम ढंग से गढ़ी हुई शब्दावली को प्रचलित करना और प्रयोग में लाना भी अपने आप में टेढ़ी खीर है । पिछला अनुभव हमें बता रहा है कि ऐसे नवनिर्मित शब्दों के अधिकांश शब्दकोश केवल सरकारी आलमारियों की शोभा बढ़ा

रहे हैं, वास्तविक प्रयोग में बहुत कम आ रहे हैं। अतः इससे अच्छा यह है कि हम ज्ञान-विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को ज्यों-का-त्यों अपना लें और यदि उनके साथ-साथ सहज रूप में अपनी शब्दावली भी विकसित होती हो तो उसे भी अपनाते रहें। पर यदि हम अपनी नयी शब्दावली की ही प्रतीक्षा करते रहें, तो संभवतः यह कार्य कभी समाप्त नहीं होगा। उस स्थिति में यही कहना पड़ेगा कि न कभी "नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी"।

फ़र्क़ शब्दावलियों के अपनाने का

तीसरे, अंग्रेजों ने बिना नयी शब्दावली की प्रतीक्षा किये और बिना ज्ञान-विज्ञान के सारे साहित्य को अंग्रेजी में अनूदित किये, शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी को लागू कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि स्वतः ही विश्व का सारा ज्ञान-विज्ञान रूपांतरित होकर या मौलिक रूप में अंग्रेजी में अवतरित हो गया। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है'—जब प्रकाशकों ने देखा कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो गया है, तो उन्होंने रात-दिन भाग-दौड़ करके उन लेखकों को पकड़ा, जो अपने ज्ञान-विज्ञान को स्वदेशी भाषा में व्यक्त कर सकते थे। व्यापारियों की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण हर विषय की एक-से-एक अच्छी पुस्तकें बाजार में आने लगीं। सरकार को इसके लिए विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा, हिंदी में हम इसके विपरीत चल रहे हैं। हम सोचते हैं कि पहले सारा ज्ञान-विज्ञान हिंदी में आ जाये, फिर उसे शिक्षा का माध्यम बनायें। किंतु ऐसा कभी होनेवाला नहीं है। जब तक ज्ञान-विज्ञान की पढ़ाई अंग्रेजी में होती रहेगी, तब तक क्यों कोई लेखक हिंदी में पुस्तक लिखेगा और क्यों कोई प्रकाशक उसे छापेगा? और यदि उसने छाप भी लिया, तो कोई उसे क्यों खरीदेगा? केवल सरकार ही ऐसा कर सकती है, जिसके पास पैसे की कमी नहीं है। अपनी अकादमियों के माध्यम से सरकार के इस प्रकार के प्रयास का परिणाम यह है कि आज प्रत्येक राज्य की हिंदी अकादमियों के भंडार ऐसी पुस्तकों से भरे पड़े हैं, जो बिना विशेष रुचि या परिश्रम के मुख्यतः पारिश्रमिक-प्राप्ति की आकांक्षा से हिंदी में अनुवादित एवं प्रकाशित हैं। मेरी अनेक निदेशकों से बात हुई है, उनका रोना है कि क्या करें, हिंदी के अनुवादों की बाजार में मांग नहीं। मेरा उत्तर है कि मांग तो तब हो, जब उसके अनुकूल परिस्थितियां पैदा की जायें, अर्थात्-पहले यदि हिंदी को शिक्षा एवं प्रशासन के माध्यम के रूप में लागू किया जाये, तो फिर तद्‌विषयक हिंदी पुस्तकों की मांग स्वतः ही उत्पन्न होगी। किंतु हम इसके विपरीत प्रतीक्षा कर रहे हैं कि पहले तैरना सीख लें, फिर पानी मे उतरें, जबकि वास्तविकता का क्रम इससे उलटा है।

इसी तरह एक वर्ग ऐसा है, जो अंग्रेजी की खिड़की पर मुग्ध होकर अपनी भाषा के द्वार को बंद किये हुए है। वह नहीं समझता कि खिड़की अंततः खिड़की है, वह द्वार का स्थान कभी नहीं ले सकती। जब तक हम स्वभाषा के द्वार का उपयोग खुलकर नहीं करेंगे, तब तक विश्वज्ञान के अबाध आदान-प्रदान के लिए हमें इस खिड़की पर ही निर्भर करना पड़ेगा।

ऐसी स्थिति में हमारा विश्वास है कि यदि अंग्रेजी के अभ्युत्थान की प्रक्रिया से हम कोई सबक़ ले सकें, तो वह हमारी राष्ट्रभाषा की भी प्रगति में सहायक सिद्ध हो सकता है और हमारी तद्‌विषयक अनेक समस्याओं के समाधान का उपाय सुझा सकता है।

प्रकाशकीय

भाषा सेतुबन्ध के सम्बन्ध में पृष्ठ ३-८ पर "विश्वनागरी लिपि और हमारा दृष्टिकोण" और पृष्ठ ९-१६ पर "अंग्रेजी, इंग्लैण्ड में कैसे लागू हुई" लेख पठनीय हैं।

भारत के विश्रुत चार सांस्कृतिक पीठस्थानों में पूर्वाञ्चलीय श्रीजगन्नाथ पुरी की पुष्कल प्रेरणा, अथवा संयोग, कि अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा ओड़िआ भाषा की सेवा कुछ अधिक आकर्षक बन पड़ी। सर्वप्रथम अद्वितीय अलंकारमय काव्य 'बैदेहीश-बिळास' का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण, ओड़िसा प्रदेश के सर्वप्रथम हिन्दी के एम० ए०, स्नातक श्री सुरेशचन्द्र नन्द के श्रम के फलस्वरूप प्रकाशित हुआ। दूसरी विशेषता यह कि हिन्दी के मुकुट-ग्रन्थ रामचरितमानस का ओड़िआ लिपि में रूपान्तर तथा ओड़िआ भाषा में गद्य-पद्य-अनुवाद। इसके बाद श्री नन्द अधिक व्यस्त हो गये।

भगवान की कृपा हुई कि भुवन वाणी ट्रस्ट के क्षितिज में नव नक्षत्र का उदय हुआ। समीप ही कानपुर में श्री योगेश्वर त्रिपाठी 'योगी' सम्पर्क में आये। श्री योगी जी, बी० ए०, साहित्यरत्न; जन्म-तिथि— १५ अप्रैल, १९३५ ई०; जन्म-स्थल— महोबा (जि० हमीरपुर) मातुलगृह में; निवास— १७/१३, शंकर-सदन, माल रोड, कानपुर—२०८००१; १९५७ से १९८२ तक ओड़िशा प्रदेश में कार्यरत; साहित्यिक अभिरुचि के फलस्वरूप ओड़िआ भाषा का ज्ञान; अनेक ग्रन्थ अनूदित। श्री योगी जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, बंगला, ओड़िआ भाषाओं के विद्वान हैं।

उनके योगदान से ओड़िया की बिलंका रामायण का सानुवाद लिप्यन्तरण पाठकों के सम्मुख पहले प्रस्तुत हो चुका है। अब यह दूसरा ग्रन्थ 'विचित्र रामायण' प्रस्तुत है। बलरामदास कृत दाण्डी जगमोहन रामायण एवं सारळादास कृत महाभारत —बृहत् ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद-सहित नागरी लिप्यन्तरण तैयार किया जा रहा है।

विदित हो कि पुत्र-जन्म पर उसका नाम लखपति साह रख देने से वह लखपती नहीं बन सकता, वह दस-बीस लाख का स्वामित्व पाकर ही लक्षाधीश चरितार्थ होगा। राष्ट्रभाषा की स्थापना तो हो गई, परन्तु अभी वह इस रूप में चरितार्थ तो नहीं हुई। भारत में अधिक फैली होने ही के एक मात्र कारण से, प्रचलित हिन्दी (खड़ी बोली) को राष्ट्रभाषा, और परम वैज्ञानिक भारतीय लिपियों में से सर्वाधिक प्रसरित लिपि 'नागरी' को, राष्ट्र का एकात्मभाव सदैव की भाँति दृढ़ बनाये रखने के लिए, सेवा सौंपी गई। अतः प्रथम कर्तव्य है कि राष्ट्रलिपि और राष्ट्र-भाषा को न केवल भारतीय वरन् विश्व के वाङ्मय के सानुवाद लिप्यन्तरण द्वारा भर दिया जाय, लखपति साह को वस्तुतः लक्षाधीश बना दिया जाय।

आभार-प्रदर्शन

निपृस्ह विद्वानों, सदाशय श्रीमानों और उत्तर प्रदेश शासन के प्रति हम अतिशय आभारी हैं, जिनकी अनवरत सहायता से 'भाषाई सेतुकरण' के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन चलता रहता है।

सौभाग्य की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा शिक्षा एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी-सहित सभी भाषाओं की समृद्धि और व्यापकता के लिए एक जोड़लिपि 'नागरी' के प्रसार पर उपयुक्त बल दिया। उनकी उल्लेखनीय सहायता से हमको विशेष बल मिला है और उपर्युक्त सबके फलस्वरूप ओड़िआ का यह अद्भुत ग्रन्थ 'विचित्र रामायण' प्रस्तुत रूप में प्रकाशित हो सका है।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥
अमर भारती सलिलमञ्जु की 'ओड़िआ' पावन धारा।
पहन नागरी पट, 'सुदेवि' ने भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी (पद्मश्री)

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-२०

अनुवादकीय

दार्शनिकों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि मनुष्य से आदर्श की अपेक्षा की जाती है, परन्तु वह मानव-आदर्श ऐसा होना चाहिए जो लोकेतर अलौकिक भावनाओं से ओतप्रोत न होकर सर्वथा लोकप्रकृति के अनुकूल हो। उसका सीधा सम्बन्ध हमारे दैनिक जीवन से तालमेल खाता हो। उन्हीं परिस्थितियों के बीच पलकर जो अपने जीवन-चरित्र की विशेषताओं तथा आदर्शों के सहारे अपने को ऊपर उठाकर लोकलोचनों में आ जाता है, वह ही लोक के लिए आदर्श पुरुष का स्थान प्राप्त करता है। वह कल्पना-जगत का आदर्श नहीं रह जाता, अपितु व्यवहार जगत का आदर्श बन जाता है। हमारे संस्कारों में उसकी जड़ें बहुत गहराई तक जाती हैं। जीवन की पूर्णता के साथ-साथ आदर्शों का रूपायन भी विकास-क्रम के अनुसार ही होता है। संस्कृति ही राष्ट्रीयता का मेरुदण्ड है, जो देश के भूगोल से नियंत्रित होती है। तुलसी के शब्दों में— "नीति प्रीति परमारथ स्वारथ। कोउ न राम सम जान जथारथ" वाले श्रीराम के चरित्र ने भारतीय मनीषियों को ही नहीं वरन् विदेशी विचारक मनीषियों को भी प्रभावित किया है। उसी के फलस्वरूप अलौकिक पक्षों को लोकप्रवृत्ति के अनुरूप ढालने के प्रयास चिरकाल से किये जा रहे हैं। अपनी इन्हीं आदर्शों की चरम सीमा की सफलताओं के कारण श्रीराम ईश्वर कोटि से पुरुषोत्तम कोटि के रूप में लोक के समक्ष आते हैं।

श्री योगेश्वर त्रिपाठी "योगी"

श्रीराम का चरित्र लोकमंगल-भावनाओं से ओतप्रोत है। उस दिव्य चरित्र का अनुगायन भारत की निधि बना। देश के कोने-कोने में विभिन्न प्रान्तों के विचारकों, सन्तों तथा साहित्यकारों ने अपनी मातृभाषाओं में इस उदार चरित्र को चुना। उन्होंने अपनी बुद्धि के अनुसार श्रीराम के चरित्र का वर्णन किया।

जगन्नाथ की पावन भूमि उड़ीसा में भी सन्तों द्वारा विविध रामायणों की रचना हुई। कविसम्राट् उपेन्द्र भंज ने "वैदेहीश-विळास" की रचना की। बलरामदास जी की जगमोहन रामायण, श्री शारळादास जी की

बिलंका रामायण आदि विभिन्न राम-चरित्र के पावन ग्रन्थ समाज को प्राप्त हुए। श्री विश्वनाथ खुँटिया ने अनेकानेक राग-रागिनियों के पदों की संयोजना करके विचित्र रामायण की रचना की। उड़ीसा में इस ग्रन्थ के गेय पद बहुधा रामलीला के मंचों पर सुने जाते हैं। दासकाठिआ और पाल्हा गायन में भी इसके प्रयोग अधिकता में पाये जाते हैं। ग्राम्य अंचलों से लेकर संगीताचार्य भी इन्हें गाते सुने जाते हैं। पद भावपूर्ण रसमय लालित्य से ओतप्रोत हैं। आधार, मूलभूत वाल्मीकीय रामायण ही है। सारे कथानक संक्षिप्त रूप से पदों में पिरो दिये गए हैं।

उड़ीसा में भक्ति-साहित्य का अतुल भण्डार ताड़ की पोथियों में भरा पड़ा है जो काल-क्रमानुसार कीटदंश का शिकार होकर या जराजीर्ण होकर विलुप्त होता जा रहा है। फलस्वरूप रामायण-रचनाकारों में प्रमुख स्थान के अधिकारी श्री विश्वनाथ खुँटिया का कोई प्रामाणिक जीवन-परिचय सम्बन्धी आलेख उपलब्ध नहीं है। कुछ अनुमान, कुछ किंवदंती तथा कुछ अंतःसाक्ष्य के बल पर दो-चार बातें कही जाती रही हैं।

विचित्र रामायण में स्थान-स्थान पर पदों में "विशि" नाम का सम्बोधन मिलता है। ऐसा अनुमान है कि यह विश्वनाथ का ही अपभ्रंश रूप है। ये अठारहवीं शताब्दी में महाराज दिव्यसिंह देव (खुर्धा रियासत के राजा) के शासनकाल में पुरी में रहा करते थे। उनके नाम के आगे खुँटिया शब्द लगा है। मुख्यतः खुँटिया श्री जगन्नाथ जी के सेवकों में एक सम्प्रदाय का नाम है। वह न केवल जगन्नाथ जी के सेवक थे बल्कि रथयात्रा के समय स्वयं उपस्थित रहते थे।

सामान्य तौर से ओड़िआ भाषा में रचे गये महाकाव्य अथवा पुराण एक ही छन्द में रचे जाते थे। जगन्नाथदास, शारळादास, बलरामदास आदि प्रायः सभी ने इसी नीति का पालन किया है। परन्तु विश्वनाथ खुँटिया ने रामायण-रचना के समय इस नियम का पालन नहीं किया। उन्होंने विभिन्न प्रकार की राग-रागिनी, ताल तथा छन्द आदि का प्रयोग करके ग्रन्थ में वैचित्र्य का समायोग किया है। इसी आधार पर इस ग्रन्थ का नामकरण "विचित्र रामायण" किया गया। आपके इस रामकथा-परक काव्य में २८९ छान्द (अनुच्छेद) हैं। इनमें ५२ छान्द अन्यान्य कवियों के भी मिलते हैं, जो सकलित किये गये हैं।

यहाँ पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि शुद्ध, संशोधित एवं वैज्ञानिक पद्धति पर सम्पादित विचित्र रामायण का पाठ अभी तक सम्भव नहीं हो पाया है, अतः प्रक्षिप्त अंशों का पृथक् रूप से स्पष्टीकरण सम्भव नहीं है। इस ग्रन्थ के पदों का मंचन नृत्य-गीत-वाद्य के साथ बहुत

प्रचलित है। अतः लोकरुचि एवं प्रचलन को देखकर बहुत से कवियों की रचनाओं का समावेश सम्भवतः इसमें हो गया है।

प्रस्तुत काव्य में वाल्मीकि रामायण को मुख्यतः कथा-प्रवाह के लिए आधार मानकर रखते हुए भी वह पूर्णतया वाल्मीकि के अनुगामी नहीं है। आदर्श पात्रों में भी कभी-कभी मानवीय दोष-दुर्बलता का चित्रण करते हुए गेय पदों में रामकथा को अधिकाधिक मंच के लिए उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। भाषा सरल, माधुर्यपूर्ण है। आज भी रामलीला में सीता के विलाप के पदों पर दर्शकों के नेत्र अश्रुपूरित देखे जा सकते हैं। मैं भाई शंकरलाल जी पुरोहित का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने कवि के जीवन-दर्शन-रचना तथा कार्यकाल पर यथासम्भव प्रकाश डालकर हम सबके लिए यह जानकारी प्रदान की है।

भाषासेतु के ओड़िआ स्तंभ में अगली कड़ी के रूप में 'विचित्र रामायण' सुधीवृन्द के कर-कमलों में देते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसकी प्रेरणा हमें भुवन वाणी ट्रस्ट के संस्थापक पूज्यपाद पं० नन्दकुमार जी अवस्थी द्वारा मिली। उन्हीं के आग्रह का पालन करके इस ओड़िआ भाषा की निधि को हिन्दी-जगत में लाया गया। आशा है अब समस्त राष्ट्र में सुधीजन लिपि का आवरण हट जाने से उसे सहज ही ग्रहण करने में समर्थ होंगे। इसी कारण इसे देवनागरी लिप्यन्तरण के साथ अनूदित किया गया है। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने में चि० राजेश पाण्डेय ने अहर्निश परिश्रम करके हमें सहायता दी है। मैं ईश्वर से उसके मंगल-भविष्य की कामना करता हूँ।

गुरुचरणाश्रित

योगेश्वर त्रिपाठी "योगी"

१७/१३, शंकर सदन, महात्मा गांधी मार्ग
कानपुर—२०८००१
मकर सक्रान्ति, सं० २०४३
मंगलवार, १४-१-१९८७ ई०

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
आद्यकाण्ड	**२५-१२२**
मंगलाचरण	२५
गणेश की वन्दना	२७
समस्त देवी-देवताओं की वन्दना	२८
विष्णु की वन्दना	२९
सरस्वती की वन्दना	३०
कटक चण्डी की वन्दना	३१
श्रीरामचन्द्र की वन्दना	३१
सीताजी की वन्दना	३२
श्रीलक्ष्मण की वन्दना	३३
वाल्मीकि की वन्दना	३४
आद्यश्लोक	३७
अनन्त-शयन	३८
सीताजी का जन्म	४४
श्रीराम का जन्म	५२
ताड़का-वध	७४
अहल्या-उद्धार	७७
सीता-स्वयंवर	८३
धनुष-भंग	८९
श्रीराम-विवाह	९६
मधु-शय्या	९८
परशुराम से भेंट	१००
अयोध्याकाण्ड	**१२३-१५३**
राम-वनवास	१२३
कौशल्या का शोक	१३५
आरण्यकाण्ड	**१५४-२११**
विराध-वध	१५४
वन-विहार	१६३
शूर्पणखा से भेंट	१६४
खर-दूषण व त्रिशिरा का वध	१७०
सीता-हरण	१८३
सीता-शोक	१८५
जटायु का प्राण-त्याग	२०४
कबन्ध-वध	२०८
शबरी के आश्रम में प्रवेश	२१०
किष्किन्धाकाण्ड	**२१२-२७०**
चक्रवाक को शाप देना	२१५
गोशाला में गोपों को शाप देना	२१७
हनुमान से भेंट	२१८
सुग्रीव के साथ मित्रता-स्थापन	२२०
श्रीरामचन्द्र का शोक	२२२
दुन्दुभि की अस्थियों को फेंकना	२२३
सप्तताल-छेदन	२२४
बालि-वध	२२५
तारा का शोक	२३१
सुग्रीव का अभिषेक	२३७
माल्यवन्त-आरोहण	२४०
श्रीराम का शोक	२४४
सेना का प्रवेश	२५६
दूत-प्रस्थान	२५९
सीता का अन्वेषण	२६२
सम्पाती-संवाद	२६५
सागर-संतरण पर विचार	२६७

विषय	पृष्ठ
सुन्दरकाण्ड	**२७१-३१४**
हनुमान का लंका-प्रवेश	२७३
सीता की खोज	२७८
त्रिजटा का प्रबोध	२८४
अक्षयकुमार-वध	२९९
नागपाश-बन्धन	३००
लंका-दहन	३०४
लंकाकाण्ड	**३१५-५५५**
विभीषण-शरणागति	३२६
श्रीराम की सिन्धु से प्रार्थना	३३६
सेतुबन्ध-प्रस्ताव	३३८
सेतुबन्ध-निर्माण	३४०
सेना की गणना	३४४
छत्र-छेदन	३५२
माया का शिर तथा धनुष-दर्शन	३५७
सीता का शोक	३६०
सरमा का सान्त्वना देना	३६२
रावण की सैन्य-सज्जा	३६६
श्रीरामचन्द्र की सैन्य-सज्जा	३६९
सुग्रीव और रावण का प्रथम युद्ध	३७२
अंगद पैज	३७४
दोनों दलों का युद्ध	३७९
सीता को मूर्च्छित राम का दर्शन	३८५
नारद-स्तुति	३८९
द्वन्द्व युद्ध	३९१
रावण का प्रथम युद्ध	३९६
कुम्भकर्ण की निद्रा-भंग	४०२
कुम्भकर्ण-वध	४११
रावण के छः रथियों का वध	४१५
इन्द्रजित् का युद्ध	४२१
कुम्भ-निकुम्भ-वध	४२८
मकराक्षस-वध	४३५
माया-सीता का वध	४३८
लक्ष्मण-इन्द्रजित् का युद्ध	४४५
इन्द्रजित्-वध	४५०
रावण का शोक	४५५
महिरावण-चरित्र	४५८
उन्मत्तादि असुरों का वध	४८२
लक्ष्मण-शक्ति-वेध	४८६
रामचन्द्र का शोक	४९१
राम-रावण-युद्ध	५०६
रावण-वध	५१०
मन्दोदरी आदि का शोक	५१५
विभीषण का अभिषेक	५१९
राम और सीता का मिलन	५२४
सीता की अग्नि-परीक्षा	५२६
श्रीराम और देवताओं का संवाद	५२८
राम का सीता को पूर्वपरिचित स्थानों का दर्शन कराना	५३४
अयोध्या में राम की विजय-वार्त्ता	५३८
कौशल्यादि के साथ भरत का पन्थान्वेषण	५४१
राम के अभिषेक का अधिवास	५४४
अयोध्या की नारियों के विचार	५४७
राम का अयोध्या नगर में प्रवेश	५४८
श्रीराम का अभिषेक	५५१

विषय	पृष्ठ
उत्तरकाण्ड	**५५६-६८८**
राम के निकट अगस्ति का प्रवेश	५५६
यक्ष और राक्षसों का जन्म	५६१
माली-वध	५६४
रावण-कुम्भकर्ण का जन्म	५६६
रावण आदि की तपस्या	५७०
रावण का लंका पर अधिकार	५७२
रावण का कैलाश उठाना	५७६
रावण-दिग्विजय	५८३
हनुमान का जन्म	५९५
सुग्रीव, विभीषण आदि की विदाई	६००
राम-सीता का विहार	६०३
सीता-बनवास	६०८
वाल्मीकि-आश्रम में सीता का प्रवेश	६१७
नृग-निमि आदि के उपाख्यान	६२१
ययाति आदि के उपाख्यान	६२६
च्यवन ऋषि और राम का संवाद	६३०
लव-कुश-जन्म	६३३
लवणासुर-वध	६३७
मृत ब्राह्मण-बालक को जीवन-दान	६४१
दण्डकारण्य का वर्णन	६४४
अश्वमेध-यज्ञ	६४७
लव-कुश का रामायण-गान	६५४
सीता का अयोध्यागमन	६५७
सीता का पाताल-प्रवेश	६६०
लक्ष्मण के दोनों पुत्रों का राज्याभिषेक	६६६
श्वान-संन्यासी-संवाद	६६८
उल्लू और गीध का संवाद	६७१
श्रीराम के निकट कालदूत का प्रवेश	६७२
लक्ष्मण का वैकुण्ठ-गमन	६७७
लव-कुश आदि का राज्याभिषेक	६७९
श्रीराम-भरत-शत्रुघ्न आदि का वैकुण्ठ-गमन	६८२
लक्ष्मी-नारायण-भेंट	६८५

बिचित्र रामायण

आद्यकाण्ड

प्रथम छान्द–मंगळाचरण

गुणसागर–बाणी

श्री नीळगिरि शिखरे बिजे हरि द्वादश जात्रा बिनोदे,
स्नान श्री गुण्डिचा अयन शयन पारश्व पालट मोदे ।
देब उत्थापन मकर ओढ़ण दोळ दमनक चोरी,
चन्दन चम्पक* उत्सव सहिते ए बिधि लीळा आचरि ।। १ ।।
द्वादश जात्रारु तिनि जात्रा सार दोळस्नान श्री गुण्डिचा,
सकळ जीबर अबलोकनरे पातक समूह मुञ्चा ।
श्री जगन्नाथ चढ़िण नन्दिघोष गुण्डिचा घरे बिजय,
देखि नाग नर गन्धर्ब किन्नर करुछन्ति जय जय ।। २ ।।

छान्द १–मंगलाचरण

राग–गुणसागर बाणी की धुन

श्री नीलाचल पर्वत पर भगवान जगन्नाथ के बारह उत्सव बड़े आनन्दप्रद होते हैं। स्नानोत्सव, रथयात्रा, शयनोत्सव, बाहुड़ायात्रा अर्थात् बापसी यात्रा मोदयुक्त हैं। देवोत्थान, मकर-सक्रान्ति, दोल-उत्सव, दमनक चोरी उत्सव, चम्पक द्वादशी* तथा चन्दनोत्सव आदि विभिन्न प्रकार से आचरित होते हैं। १ बारह उत्सवों में तीन उत्सव तो श्रेष्ठतम हैं। दोल-उत्सव, चन्दन-यात्रा एवम् रथयात्रा का दर्शन करके सभी जीवों के पातकपुंज विनष्ट हो जाते हैं। नन्दीघोष रथ पर आसीन श्री जगन्नाथ जी की गुण्डिचा मन्दिर की ओर प्रस्थान की यात्रा को देखकर नर-नाग-गन्धर्व-किन्नर जय-जयकार करने लगते हैं। २

---

* चम्पक द्वादशी के दिन श्री जगन्नाथ जी का विशेष श्रृंगार होता है।

रत्नकुण्डळ मुकुट व्याघ्रनख बीरचूळ कण्ठमाळ,
हृदय पूरि पदक घञ्च घञ्चि पद्ममाळ पादतळ।
हेम श्रीपयरे हेम जे भुजरे शोहे हेम धनुर्बाण,
जेबण दक्षिणमूर्त्ति दर्शनकु टाकिथान्ति बिभीषण ॥ ३ ॥
सिंहद्वारे हरि रथरु बिजय करन्ते कमळा भेट,
सेहि समयरे जनसमूहर फिटिला मुद कबाट।
ठाकुर ठाकुराणी चन्द्र आळति दूर्बाक्षत बन्दापना,
जयध्वनि जगतरे जे करन्ति होइण आनन्दमना ॥ ४ ॥
जय बिजय द्वारे हरि बिजय कबाट पड़िबा लीळा,
अनेक मते प्रबोधिण प्रियाङ्कु कहिले कमळ डोळा।
तदन्तरे हरि प्रिया भेंट सारि रत्नसिंहासने बिजे,
श्री दिव्यसिंह गजपति श्री जगन्नाथ श्रीचरणे भजे ॥ ५ ॥
शुण हे सुजने श्रीराम चरित शत कोटि ग्रन्थसार,
सुधा सागरु कुशअग्रे आणन्ते अइला जेतेक नीर।
बालमीक मुनि रामायण करि कलेक ताहा रचना,
चबिश सहस्र ग्रन्थ कले मुनि होइण आनन्दमना ॥ ६ ॥

रत्नजटित कुण्डल, मुकुट, बघनखा वीरवेश सज्जित गले में नाना प्रकार के पदकों से युक्त मालायें, आपाद लम्बित प्रचुर पद्महार, सुवर्ण सज्जित श्रीचरण तथा स्वर्णिम बाहुओं में ग्रहीत स्वर्ण के धनुष-वाण शोभायमान हो रहे हैं। लगता है जैसे दक्षिणामूर्ति के दर्शनों के लिए विभीषण ताक रहे हों। ३ सिंहद्वार पर रथारूढ़ होने के समय भगवान की लक्ष्मी जी से भेंट जनसमूह के हृदय में प्रसन्नता के कपाट ही खोल देती है। महाप्रभु जगन्नाथ एवं लक्ष्मी जी की दूर्वाक्षतयुक्त आरती के समय प्रसन्नचित्त जनसमूह संसार मे जय-जय का उद्घोष करने लगता है। ४ महाप्रभु के लौटने पर जय-विजय द्वार को बन्द करने की लीला, जिसमें कमलनयन भगवान प्रियतमा (लक्ष्मी जी) को नाना प्रकार से प्रबोध प्रदान करते हैं। इसके उपरान्त महाप्रभु प्रियतमा से मिलकर रत्नवेदी पर विराजमान होते हैं। गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह श्री जगन्नाथ जी के चरणों की वन्दना एवं सेवा करते हैं। ५ हे सज्जन पुरुषो ! सुनिये ! सौ करोड़ ग्रन्थों का सार श्रीरामचरित है। अमृत के सागर से अमृत आहरण करते समय कुशा के अग्रभाग में जितना जल आया उसी से महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की तथा प्रसन्न मन से उन्होंने चौबीस सहस्र ग्रन्थों की सृष्टि

से रामायण शत भाग करिण भागे तहिँरु आणिले,
बिबिध रागरे उत्कळ भाषारे गीत करिण गाइले।
हे बुधजने न घेन मोर दोष श्रीराम भकति घेन,
कबिर दोषकु बिचार न कर नमामि हे कबिजन ॥ ७ ॥
राम नाम महापातक नाशन जन्म मृत्यु बिनाशन,
तेणु एहि नाम गायन करन्ति चतुर्दश लोकमान।
चतुर आनन शिव सनकादि जपुछन्ति एहि नाम,
नाम आश्राकला जनकु देखिण दूरु अपसरे जम ॥ ८ ॥
एका राम नाम बिष्णु सस्रनाम फळ अटइ समान,
एणु करि राम चरित बखाण करिबाकु हेला मन।
श्रीराम चरण तरुण अरुण कमळरे निरंतर,
दुर्बुद्धि मकरंद पान करइ बिशि मति मधुकर ॥ ९ ॥

द्वितीय छान्द—गणेशंक बन्दना

राग—कळशा

बन्दइ श्री गणनाथ गउरीकुमर।
गजमुख एकदन्त कपाळे सिन्दूर ॥ १ ॥

की। ६ उस रामायण के सौ भाग करके उसके शतांश भाग को लाकर उड़िआ भाषा में विविध प्रकार के रागों में गीतबद्ध करके गाये गये। हे विदुष जन ! मेरे दोषों को न देखकर इससे श्रीराम की भक्ति ग्रहण करें। कवि के दोषों पर ध्यान न दें। मैं कविजनों को नमस्कार करता हूँ। ७ राम-नाम महान पातकों का नाश करनेवाला है। जन्म और मृत्यु का विनाशक है। इसी कारण से चौदह भुवनों में लोग इसी नाम का गायन किया करते हैं। चतुरानन ब्रह्मा, शंकर, सनक, सनन्दनादि इसी नाम का जाप करते हैं। इस नाम के आश्रित व्यक्ति को देखकर यमराज दूर ही से भाग जाता है। ८ राम का एक नाम तथा विष्णु के सहस्र नामों का फल समान ही है। इसी कारण से रामचरित्र का वर्णन करने के लिए मेरा मन हो आया। श्रीराम जी के तरुण अरुण चरण-कमलों में मन्दबुद्धि का बुद्धि रूपी भ्रमर मकरन्द पान करता रहे। ९

छान्द २—गणेश-वन्दना

राग—कलशा

गजमुख एकदन्त वाले सिन्दूर-चर्चित मस्तकवाले गिरिजानन्दन श्री

देव अग्रगण्य तुम्भे अयोनि सम्भूत ।
लम्बोदर बिघ्नहर सदाशिव सुत ।। २ ।।
आहे गणनाथ मोर घेनिबार सेबा ।
सुप्रसन्न होइ मोते पद कहिदेबा ।। ३ ।।
अनुग्रह कर बारे इन्दूर बाहन ।
श्रीरामचरित किछि करिबि बर्णन ।। ४ ।।
कृताञ्जळि पुटे करुअछि नमस्कार ।
भणे बिक्रम नरेन्द्र श्रीपदे कोयर ।। ५ ।।

तृतीय छान्द—सर्बदेबादेबी बन्दना

बोल हरि हे ।
हरि भज राम भज भज दइत्यारि हे ! ।। घोषा ।।
प्रथमे बन्दिलु आदि श्रीगुरु चरन ।
जाहार क्रिपा ते हये क्रिष्ण दरशन हे ।। १ ।।
दशरथ सुत बन्दुँ श्रीराम चरण ।
ताहार सानुज बन्दुँ बीर लक्ष्मण हे ।। २ ।।
सीता ठाकुराणी बन्दुँ जनकनन्दिनी ।
बशिष्ठ जाबाळि बन्दुँ जत महामुनि हे ।। ३ ।।

गणनायक की मैं वन्दना करता हूं । १ हे अयोनिज, विघ्नों का हरण करनेवाले, शंकर जी के पुत्र, लम्बोदर ! आप देवताओं में अग्रगण्य हैं । २ हे गणों के स्वामी ! मेरी सेवा से प्रसन्न होकर आप मुझे पदों का निर्देश करें । ३ हे मूषक-वाहन ! एक मुझ पर कृपा कर दें, जिससे मैं श्रीराम-चरित्र का कतिपय वर्णन कर सकूं । ४ मैं हाथ जोड़कर आपको नमन करता हूं । विक्रम नरेन्द्र कहता है कि वह आपके श्रीचरणों का दास है । ५

छान्द ३—समस्त देवी-देवताओं की वन्दना

हे सज्जनो ! हरि बोलो ! दैत्यों के शत्रु हरि-रूप राम का भजन करो । घोषा ।। सर्वप्रथम मैं श्रीगुरु-चरणों की वन्दना करता हूं, जिसकी कृपा से श्रीकृष्ण का दर्शन होता है । १ मैं दशरथ-नन्दन श्रीराम तथा उनके भाई पराक्रमी लक्ष्मण के चरणों की वन्दना करता हूं । २ मैं जनकनन्दनी महारानी सीता की वन्दना करता हूं । वशिष्ठ, जाबालि आदि महामुनियों को मैं वन्दना करता हूं । ३ श्रीक्षेत्र की महिमा

क्षेत्रर महिमा किछु कळना न जाए।
चाण्डाळ हस्तर अन्न बिप्र लया खाए हे ॥ ४ ॥
जुनु स्थाने हुए भाइ नाम संकीर्त्तन।
सेहु स्थान बोलाए गोलोक बृन्दाबन हे ॥ ५ ॥
एहु त रामेर लीळा शुन ओरे भाइ।
भक्त जन उद्धारिते जदुनन्दन गाइ हे ॥ ६ ॥
दीन बिशि बोले एहू हरषित मन।
हरि हरि बोल हे सकळि सभाजन हे ॥ ७ ॥

चतुर्थ छान्द—बिष्णुङ्क बन्दना

राग–कळशा

जय जय जगन्नाथ जय लक्ष्मीपति।
क्षीरसिन्धु मध्यरे सर्बदा जार स्थिति ॥ १ ॥
अनन्त-अंकरे सदा जाहार शयन।
शंख चक्र गदा पद्म श्रीकरे शोभन ॥ २ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जा लोममूळे अछि।
से प्रभु बिचित्र लीळा जगते व्यापिछि ॥ ३ ॥
स्थाबर जंगम कीट पतंग शरीरे।
अलक्षित रूपे बिहरन्ति निरन्तरे ॥ ४ ॥

की कुछ भी कल्पना नहीं की जा सकती, जहाँ पर चाण्डाल के भी हाथों का अन्न ब्राह्मण प्रसन्न होकर ग्रहण करते हैं। ४ जिस स्थान पर भगवन्नाम का संकीर्तन होता है। हे भाई! उस स्थान को गोलोक तथा बृन्दावन कहा जाता है। ५ यह तो श्रीराम का चरित्र है। हे भाई! इसे सुनो! श्री यदुनन्दन के गुणगान करने से भक्तजनों का उद्धार हो जाता है। ६ दीन विक्रम प्रसन्न मन से यह कह रहा है। हे सभाजनो! प्रसन्न होकर हरि-हरि बोलो। ७

छान्द ४—बिष्णु-बन्दना

राग–कलशा

क्षीरसागर के मध्य में जिनकी हमेशा स्थिति रहती है, उन जगन्नाथ जी की जय हो, जय हो। उन लक्ष्मीपति की जय हो। १ जो हमेशा अनन्तनाग की गोद में शयन करते हैं, जिनके हाथों में शंख-चक्र-गदा-पद्म शोभित होते है। २ जिनके रोएँ में करोड़ों ब्रह्माण्ड मौजूद हैं, वही प्रभु संसार में व्याप्त होकर विचित्र लीला करते हैं। ३ स्थावर,

सदा सिद्धगण जार पादपद्म चिन्ति ।
भीषण संसार शोक तापुँ तरिजान्ति ॥ ५ ॥
जाहांक मायारे ए पृथिबी गतागत ।
चन्द्र सूर्ज्य जाहा आज्ञा पाळन्ति नियत ॥ ६ ॥
ग्रीष्म बरषा शरत षड़ऋतु आदि ।
एक परे एक जाउछन्ति कार्ज्य साधि ॥ ७ ॥
जे देब पाळन्ति ए ब्रह्माण्ड चराचर ।
बोले बिक्रम ता पादे शरण मोहर ॥ ८ ॥

पंचम छान्द—सरस्वतींक बन्दना

जय जय सरस्वती गो जय देवी शारदा ।
तोते जेहु आश्रे करन्ति देउ अनेक बिद्या ॥ १ ॥
तोहर करुणा होइले मूर्ख हुए पण्डित ।
एबे मोह कण्ठे बसिण कह राम चरित ॥ २ ॥
ए श्री रामं नाम गुपते थिला सामबेदरे ।
चतुर्मुख ब्रह्मा जाणिण भाबुथान्ति मनरे ॥ ३ ॥

जंगम, कीट-पतंग के शरीर में वे अलक्षित स्वरूप में निरन्तर विहार करते हैं । ४ जिसके चरण-कमलों में हमेशा सिद्धगण चिन्तन करते हुए भीषण शोक-ताप रूपी संसार (-सागर) को पार कर जाते हैं । ५ जिनकी माया से लोग पृथ्वी पर जन्म-मरण पाते हैं और चन्द्र-सूर्य जिसकी आज्ञा का नियमित पालन करते हैं । ६ (उनकी आज्ञा से ही) ग्रीष्म-वर्षा-शरद आदि छः ऋतुएँ क्रमशः एक के बाद दूसरी कार्य कर साधती रहती हैं अर्थात् बदलती रहती हैं । ७ इस चराचर ब्रह्माण्ड का जिन देव के द्वारा पालन होता है । उनके पैरों की शरण में ही विक्रम की गति है । ८

छान्द ५—सरस्वती-वन्दना

शारदादेवी सरस्वती की जय हो ! जय हो ! जो व्यक्ति आपका आश्रय ले लेता है उसे आप अनेक ज्ञान प्रदान करती हैं । १ तुम्हारी कृपा होने से मूर्ख भी विद्वान हो जाता है । अब तुम हमारे कण्ठ में विराजमान होकर श्रीरामचरित्र का वर्णन करो । २ यह श्रीराम का नाम सामवेद में छिपा था । इसे जानकर चतुर्मुख ब्रह्मा अपने मन में ध्यान किया करते हैं । ३ यह ही मूल बीजमंत्र आद्यकाण्ड का

मूळ मंत्र · बीज एहिटि आद्यकाण्डर रस ।
भणइ बिक्रम नरेन्द्र शुणि बैकुण्ठ बास ।। ४ ।।

षष्ठ छान्द—कटक चण्डीक बन्दना

जय जय देबी मागो जय कटक चण्डी !
कण्ठे धण्डामाळ जे सिन्दूर मुखे मण्डि ।
मागो जय कटक चण्डी ।। घोषा ।।
मन्दार पुष्पकु मागो तोहर शरधा ।
तोहर नाम धरन्ते तुटइ पाप बाधा ।। १ ।।
तोहर करुणा मागो हुअइ जाहाकु ।
राजदण्ड काळभय न थाइ ताहाकु ।। २ ।।
तोह श्रीचरण तळे सर्बदा आश्रित ।
दीन हीन लक्ष्मणर फेड़ मो दुरित ।। ३ ।।

सप्तम छान्द—रामचन्द्रंक बन्दना

राग–रामकेरी

जय जय रघुनाथ हे प्रभु कौशल्या सुत ।
धरा भाराभर नाशने तुम्भे मर्त्यरे जात ।। १ ।।

सारमय रस है। विक्रम नरेन्द्र कहते हैं कि इसका श्रवण करने से बैकुण्ठ प्राप्त होता है। ४

छान्द ६—कटक चण्डी-बन्दना

हे देवीमाता ! तुम्हारी जय हो। हे कटक-चण्डी ! तुम्हारी जय हो। तुम्हारा सिन्दूर-मण्डित मुख है तथा कण्ठ में हार है। हे कटकचण्डी ! तुम्हारी जय हो। घोषा ।। माँ ! तुम्हें मन्दार-पुष्प प्रिय है। तेरा नाम लेने से पाप का अनिष्ट विनष्ट हो जाता है। १ हे माँ ! तेरी दया जिस पर हो जाती है उसे राजदण्ड तथा काल का भय नहीं रहता। २ मैं सदा से तेरे चरणों का आश्रित हूँ। इस दीन-हीन लक्षणों से भरे हुए मेरे दुःखों का शमन करो। ३

छान्द ७—रामचन्द्र जी की बन्दना

राग–रामकेरी

हे कौशल्यानन्दन प्रभु रघुनाथ ! तुम्हारी जय हो ! जय हो ! भूमि के भार को हरण करने के लिए ही आपका अवतार मृत्युलोक में हुआ। १

नबीन नीरद बरन आहा दिशे कि शोभा ।
अजोध्या-आकाश घनरे जेन्हे विद्युत आभा ॥ २ ॥
श्री भुजे शोभित कोदण्ड काण्ड कि मनोहर ।
नुआ मदन कि विजय घेनिण पुष्प शर ॥ ३ ॥
श्रीमुख शोभाकु देखिण चन्द्र हेले लज्जित ।
उपमा कि देबि न मिळे खोजि तिनिपुरी त ॥ ४ ॥
कौशल्या आनन्द वर्धनकारी दशरथंक ।
नयन पुत्तलिका प्राय धन प्राप्त कि रंक ॥ ५ ॥
अजोध्या नर नारी प्राण जेउं रघुनन्दन ।
तांक श्री चरणे शरण ए पद्मनाभ दीन ॥ ६ ॥

अष्टम छान्द—सीतांक वन्दना

राग—खण्डिता

जय जय जानकी गो जनक कुमारी ।
सर्ब सुलक्षणी श्रीरामंक मनोहारी ॥
कृपा कर गो, निरन्तरे शरण तोहर गो ॥ १ ॥

नवघन वर्ण की क्या ही शोभा दीख रही है । लगता है जैसे अयोध्या रूपी आकाश में विद्युत्-आभा से युक्त जलद हो । २ कितना मनोहर बाण तथा कोदण्ड (धनुष) आपकी श्रेष्ठ भुजाओं में शो[illegible]यमान है । ऐसा प्रतीत होता है मानो सुमनशर ग्रहण कर नू[illegible] कामदेव उपस्थित हो गया हो । ३ आपके श्रीमुख की कान्ति को देखकर चन्द्रमा लज्जित हो गया । मैं क्या उपमा दूं । तीनों लोकों में खोजने पर भी उपमा नहीं मिलती । ४ आप कौश[illegible]या के आनन्द को बढ़ानेवाले तथा दशरथ के नेत्रों की पु[illegible]ली के समान है । लगता है जैसे दरिद्री को धन प्राप्त हो गया हो । ५ जो रघुनन्दन अयोध्यावासी नर-नारियों के प्राण हैं । यह दीन पद्मनाभ उन्हीं के श्रीचरणों की शरण में है । ६

छान्द ८—सीता जी की वन्दना

राग—खण्डिता

हे जनकनन्दिनी जानकी जी ! तुम्हारी जय हो ! जय हो ! आप समस्त लक्षणों से युक्त हैं तथा श्रीराम के मन को हरनेवाली हैं । हे अम्ब ! मैं निरन्तर आपकी शरण हूं । आप मुझ पर कृपा करें । १ तुम जिस पर तनिक भी कृपा कर देती हो, उसे निर्विघ्न

किञ्चितरे सुदया तु करु जाहाठारे।
अबिघ्ने प्रापत सर्व मंगळ ताहारे॥
तिनि पुरे गो, प्रशंसा करन्ति सुर नरे गो॥ २ ॥
तोह ठारे जेउँ जन करइ भकति।
क्षणके तु देइपारु अचळ बिभूति॥
सुमंगळे गो, नाहिँ तो परि महीमण्डळे गो॥ ३ ॥
मानव देहरे गर्व करि के संसारे।
प्रशंसा करिब तोर तो बिना कृपारे॥
गोपी मणि गो, दया कर जगत जननि गो॥ ४ ॥

नवम् छान्द—लक्ष्मणंक बन्दना

राग—रामकेरी

जय श्रीरामंक अनुज सुमित्रांक नन्दन।
जनक सुता उर्मिळार हृद तट चन्दन॥ १ ॥
सकळ गुणे परिपूर्ण जोगुँ नाम लक्ष्मण।
क्षत्रिय पणे त्रिभुबने नाहिँ तुम्भ समान॥ २ ॥

सारे मंगल प्राप्त हो जाते हैं। तीनों लोकों में उसकी प्रशंसा देवता तथा मनुष्य करते हैं। २ जो व्यक्ति आपसे प्रेम करता है उसे तुम क्षण मात्र में अचल सम्पत्ति प्रदान करने में समर्थ हो। हे कल्याणदायिनी! इस भूतल में तुम्हारे समान अन्य कोई नहीं है। ३ इस संसार में नर-देह धारण करके गर्वसहित बिना तुम्हारी कृपा के कौन तुम्हारी प्रशंसा कर सकता है। गोपी कहता है, हे जगज्जननी! तुम कृपा कर दो। ४

छान्द ९—लक्ष्मण जी की वन्दना

राग—रामकेरी

श्रीराम के अनुज सुमित्रा जी के पुत्र की जय हो। जनक की पुत्री उर्मिला के हृदयतल के हेतु आप चन्दन के समान हैं अर्थात् हृदय में वास करनेवाले है। १ समग्र गुणों से परिपूर्ण होने के कारण ही आपका नाम लक्ष्मण पड़ गया। तीनों लोकों में वीरता में तुम्हारे समान अन्य कोई नहीं है। २ विमातृ-हिंसा की धारणा मन मे न रखकर

सावत जननी हिंसक भाव न घेनि मने।
छाड़ि राज्य सुख सम्पद बुलिअछ कानने॥ ३ ॥
चउद बरष भ्राताकु सेवा कल बनरे।
बञ्चित होइण आहार निद्रा मइथुनरे॥ ४ ॥
धनुर्धर बीर लक्ष्मण तुम्भ पादे सेबिबि।
तुम्भ दासर दास होइ गणनाकु आसिबि॥ ५ ॥
सपतम अवताररे तुम्भे सुमित्रा सुत।
दु:सह भूभारकु नाशि माइल इन्द्रजित॥ ६ ॥
कर मोहठारे करुणा हे करुणा-सरित।
तुम्भर प्रसन्ने कहिबि रामायण चरित॥ ७ ॥
हुअ मोर कण्ठे प्रसन्न प्रत्येक पद दिशु।
बिक्रम कहे तव जश जगतरे प्रकाशु॥ ८ ॥

दशम छान्द—वाल्मीकिङ्क वन्दना

राग—खण्डिता

जय जय बाल्मीकि जय महामुने।
सुधा सम रामायण रचिल आपणे।
किबा नाहिं हे, संसारर सार अछ थोइ हे॥ १ ॥

राज्य की सुख-सम्पत्ति का परित्याग करके आप बन में विचरण करते हैं। ३ आपने चौदह वर्ष पर्यन्त वन में आहार-निद्रा तथा मैथुन का परित्याग करके अपने अग्रज की सेवा की। ४ हे धनुर्धर वीर लक्ष्मण ! मैं आपके चरणों की सेवा करूँगा तथा आपके दासानुदासों की गिनती मे स्थान प्राप्त करूँगा। ५ हे सुमित्रानन्दन ! आपने सप्तम अवतार में इन्द्रजित् का विनाश करके कठिन भू-भार का उद्धार किया है। ६ हे करुणा-सागर ! मुझ पर दया करिए। आपके प्रसन्न होने पर ही मैं श्रीरामचरित्र का वर्णन करूँगा। ७ विक्रम कवि कहता है कि आपका यश संसार में प्रकाशित (विख्यात) है। मेरे कण्ठ पर कृपा करिये जिससे प्रत्येक पद का दर्शन हो सके। ८

छान्द १०—वाल्मीकि-वन्दना

राग—खण्डिता

हे महामुनि वाल्मीकि जी ! आपकी जय हो ! जय हो ! आपने अमृतमय रामायण की रचना की है। क्या आपने संसार में सार का भण्डार नहीं प्रस्तुत कर दिया। १ इन समग्र सुन्दर गुणों के बल

ए सबु सुगुण बळे मर्त्त्यरे मानब ।
जोग्य होइ भोगन्ति अतुळ बइभब ।
इह परे हे, सदा गति लभन्ति सुखरे हे ।। २ ।।
पितृ भक्ति भ्रातृ स्नेह पतिब्रता पण ।
बीर धीर सत्यबन्त प्रभु भक्त गुण ।
कि सुन्दर हे, जोजना करिछ चमत्कार हे ।। ३ ।।
तुम्भ ग्रन्थ संसाररे आदरर धन ।
तुम्भे अट कबिकर मस्तक भूषण ।
गुणमणि हे, संक्षेप बिक्रम गीते भणि हे ।। ४ ।।

एकादश छान्द–ग्रन्थारम्भ

राग—चक्रकेळि

एक दिने नारद महाऋषि ।
बालमीकि आश्रमे हेले आसि ।।
तांकु देखिण बहु पूजा कले ।
मन संशय तांकु पचारिले ।। १ ।।
केउँ पुरुष ठारे सर्ब गुण ।
अछि काहाठारे सर्ब लक्षण ।।

से योग्य बनकर मानव अतुल सम्पति का भोग करता है और इसके पश्चात् सुखपूर्वक सदा सद्‌गति प्राप्त करता है । २ पितृ-भक्ति, भाई के प्रेम, पातिवृत्य, वीरता, धीरता, सत्यवादिता तथा भगवान की भक्ति की कितनी चमत्कारपूर्ण योजना आपने सर्जित की है । ३ संसार में आपका ग्रन्थ आदर का पात्र है । निधि है । आप कवियों में मूर्धन्य अलंकार हैं । हे गुणों में मणि-सदृश श्रेष्ठ ! विक्रम ने संक्षिप्त गीतों में इसे गाया है । ४

छान्द ११—ग्रन्थारम्भ

राग—चक्रकेलि

एक दिन महर्षि नारद वाल्मीकि-आश्रम में पधारे । उन्हें देख कर वाल्मीकि जी ने उनका बहुत सत्कार किया तथा उनसे अपने मन की शंकाएँ व्यक्त कीं । १ उन्होंने पूछा कि कौन ऐसा व्यक्ति है जो समस्त गुणों एवं लक्षणों से युक्त है ? सूर्य के समान तेजस्वी, वायु के

रबि प्राय होइब तेजोबन्त ।
पबन प्राय हेब बळबन्त ॥ २ ॥
सत्य, शान्ति, दया, क्षमा सागर ।
कृतान्तक प्राय हृद निष्ठुर ॥
मही प्रायेक होइब सहणी ।
धनबन्तरे कुबेरंकु जिणि ॥ ३ ॥
शत्रु अधिक हेब धनुर्द्धर ।
बिद्यारे हेब बृहस्पति बर ॥
क्रोधे होइब अनळु प्रखर ।
शान्ति गुणे शरद शीतकर ॥ ४ ॥
धाता प्रायेक होइब करता ।
तमोगुणे शिवंकु अधिकता ॥
मनमथ जिणि हेब सुन्दर ।
सर्ब गुणरे होइब उदार ॥ ५ ॥
किछि न थिब तार अबिगुण ।
केउँ पुरुष अछि एड़े जाण ॥
शुणि नारद बोलन्ति बचन ।
रामचन्द्र दशरथ नन्दन ॥ ६ ॥
ताहांकठारे अछि सर्बगुण ।
से जे अटन्ति स्वयं नारायण ॥
ताँक चरित अपारुँ अपार ।
तांकु उपासना करि निस्तर ॥ ७ ॥

समान बलशाली, सत्य-शान्ति-दया तथा क्षमा का समुद्र, यमराज की भाँति निष्ठुर चित्तवाला, पृथ्वी के समान सहनशील तथा ऐश्वर्य में कुबेर को जीतनेवाला है। २-३ शत्रुओं में अत्यन्त धनुर्धारी, विद्या में श्रेष्ठ बृहस्पति के समान, अग्नि से भी अधिक क्रोधी तथा शान्ति मे शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान है। ४ जो ब्रह्मा के समान कर्ता, तमोगुण में शंकर से भी अधिक, कामदेव की सुन्दरता पर विजय प्राप्त करनेवाला तथा सभी गुणों में उदार है। ५ जिसमें किसी प्रकार का दुर्गुण न हो ऐसा आपकी दृष्टि में कौन व्यक्ति है ? यह सुनकर नारद ने कहा कि ऐसे तो दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जी हैं। ६ वह समस्त गुणों से युक्त हैं। वह स्वय नारायण ही हैं। उनके चरित्र अपरम्पार हैं। उनकी उपासना

सर्ब कहि नारद मुनि गले ।
बालमीकि रामंकु लय कले ।।
तांकु प्रसन्न हेले जगन्नाथ ।
बोले बिशि पूरिला मनोरथ ।। ८ ।।

द्वादश छान्द—आद्यश्लोक

संगमतिआरि-बाणी

तमसा नदी तटरे गमन्ते मुनि ।
संगते गोड़ाइ अछन्ति शिष्य बेनि ।। १ ।।
नित्यकर्म समस्ते नदीरे सारिले ।
आश्रमकु जिबाकु बाहार होइले ।। २ ।।
क्रौञ्च क्रौञ्ची बोलि तहिँरे पक्षी बेनि ।
व्याध से क्रौञ्च पक्षीकि गलाक घेनि ।। ३ ।।
क्रौञ्ची कान्त गुण गुणि रोदन कला ।
बालमीकि मुनि श्रवणकु शुभिला ।। ४ ।।
व्याधकु शाप दिअन्ते हेला शोळक ।
दिशिला ताहांकु पद्यपाद अनेक ।। ५ ।।

करने से निस्तार हो जाता है। ७ इस प्रकार सब कुछ समझाकर नारद मुनि चले गये। बालमीकि भी श्रीराम के चिन्तन में लीन हो गये। जगत् के स्वामी उन पर प्रसन्न हो गये तथा विक्रम नरेन्द्र कहते हैं कि उनके मनोरथ पूर्ण हो गये। ८

छान्द १२—आद्यश्लोक

राग–संगमतिआरी गीत के धुन

महर्षि बालमीकि तमसा नदी के तट पर विचरण कर रहे थे। उनके दो शिष्य उनके साथ पीछे-पीछे चल रहे थे। १ उन्होंने नदी में नित्यकर्म सम्पादित किया और आश्रम की ओर वापस लौटे। २ वहाँ पर क्रौञ्च तथा क्रौञ्ची दो पक्षी थे। एक बहेलिया क्रौञ्च पक्षी को आहत कर ले चला। ३ क्रौञ्ची अपने स्वामी के गुणों का बखान करती हुई रुदन करने लगी। उसका रुदन बालमीकि के कानों में जा पड़ा। ४ व्याध को श्राप देते समय श्लोक की सृष्टि हो गई। उन्हें नाना प्रकार के पद दिखाई पड़ने लगे। ५ मन में सोच-विचार

मने मने भाळि मुनि मठकु गले ।
आसन करिण ध्यान करि बसिले ॥ ६ ॥
मराळ चढ़िण पितामहं प्रबेश ।
देखि बालमीकि पूजा कले बिशेष ॥ ७ ॥
धाता बोलन्ति सुन्दर राम चरित्र ।
श्लोक बन्धरे स्फुरिला मुनिक चित्त ॥ ८ ॥
एहा शुणि दीन बिशि बिचार कले ।
गीत बन्ध करि रामायण रचिले ॥ ९ ॥

त्रयोदश छान्द—अनन्त शयन

राग–कळशा

शुण हे सुजन जने अपूर्ब आख्यान ।
आद्यकाण्ड बाणी राम चरित बर्णन ॥ १ ॥
दनुजंक भारा न सहिण बसुमती ।
प्रबेश होइले जहिँ थिले प्रजापति ॥ २ ॥
शिरे कर देइण कहइ बसुन्धरा ।
आउ सहि न पारे मुँ दैत्य पाद भारा ॥ ३ ॥

करते हुए बाल्मीकि मुनि आश्रम को चले गये। वह आसन जमाकर ध्यान में बैठ गये। ६ तभी हंस पर बैठकर पितामह ब्रह्मा जी वहाँ आ पहुँचे। उन्हें देखकर वाल्मीकि जी ने उनकी विशेष प्रकार से पूजा की। ७ विधाता ने उन्हें सुन्दर रामचरित्र सुनाया। तभी महर्षि के मन मे श्लोक स्फुरित हो उठा। ८ यह सुनकर दीन विक्रम नरेन्द्र विचारमग्न हो गये और उन्होंने गीतों में रामायण की रचना की। ९

छान्द १३—अनन्त शयन

राग–कलशा

हे सज्जनो ! अपूर्व आख्यान का श्रवण करें। आद्यकाण्ड में श्रीराम के चरित्र का वर्णन है। १ असुरों के भार को पृथ्वी सहन न कर सकने के कारण प्रजापति ब्रह्मा के पास उपस्थित हुई। २ भूदेवी ने शिर में हाथ लगाकर कहा कि मैं अब और असुरों के पद-भार को सहन नहीं कर पा रही हूँ। ३ हे कुशपाणि पितामह ! यदि

पारिले उद्धार बेगे कर कुशपाणि ।
नोहिले रसातळरे पड़िलिटि जाणि ।। ४ ।।
उपस्थित देवगणे दुःख निवेदिले ।
ए संकटु रक्षा कर बोलिण बोइले ।। ५ ।।
रावणर दर्पे स्वर्गे रहि हेउ नाहिँ ।
असह्य जातना केते भोगिबु गोसाइँ ।। ६ ।।
रक्षाकर रक्षाकर देव कुशपाणि ।
प्रतिकार न कले मलुटि सर्बे जाणि ।। ७ ।।
एहा कहि देबगणे मउन होइले ।
श्रीराम चरण चिन्ति पद्मनाभ बोले ।। ८ ।।

चतुर्दश छान्द

राग–जमक

देवतांक मुखुँ एहा शुणि प्रजापति ।
भाबिले बिष्णुक बिना नाहिँ अन्य गति ।। १ ।।
सकळ देबंकु से घेनिण संगतरे ।
प्रबेश होइले जे अनन्त शज्या ठारे ।। २ ।।
एकमुख होइ सर्बे करुछन्ति स्तुति ।
आगभर होइण जणान्ति प्रजापति ।। ३ ।।

आपमें सामर्थ्य हो तो मेरा उद्धार करें अन्यथा मैं जानती हूँ कि मैं रसातल को चली जाऊँगी । ४ उपस्थित देवगण ने भी अपना दुःख कह सुनाया तथा उनसे इस संकट से रक्षा करने की प्रार्थना की । ५ रावण के दर्प के कारण स्वर्ग में रहना नहीं हो पा रहा । हे स्वामी ! इस असह्य यातना को और कितना सहन करें । ६ हे देव कुशपाणि ! रक्षा करिये ! रक्षा करिये । ऐसा आप जान लें कि उपाय न करने से हम सभी मर जाएँगे । ७ इस प्रकार कहकर देवगण मौन हो गये । "पद्मनाभ" श्रीरामजी के चरणों का ध्यान करके वर्णन कर रहा है । ८

छान्द—१४

राग–यमक

ब्रह्मा जी ने देवताओं के मुख से ऐसा सुनकर कहा कि विष्णु जी के बिना कोई अन्य रास्ता नही है । १ वह सभी देवताओं को साथ लेकर अनन्तशयन के निकट जा पहुँचे । २ प्रजापति ब्रह्मा को आगे

नमस्ते नमस्ते बिष्णु कमळलोचन ।
दुखी दुःखहारी प्रभु भक्त प्राणधन ॥ ४ ॥
लंकपति उपद्रव शुणन्तु गोसाइँ ।
द्वारपाळ कार्य्ये सूर्य्य ता द्वार जगइ ॥ ५ ॥
पुष्पहार गुन्थे इन्द्र भए होइ त्रस्त ।
चन्द्र देबता मस्तके धरिथान्ति छत्र ॥ ६ ॥
पाक सम्पादन्ति अग्नि देबता ताहार ।
धीरे धीरे बिचुथान्ति भयरे समीर ॥ ७ ॥
जेते पाणि लोड़ा आणि दिअन्ति बरुण ।
बसुमती करुथान्ति गृह समार्ज्जन ॥ ८ ॥
जम कथा कहि नुहेँ माड़ुअछि हस ।
ता हाती घोड़ा निमन्ते काटुछन्ति घास ॥ ९ ॥
जे शनि दृष्टिरु भस्म हुए तिनिपुर ।
से मअळ लूगा निति काचे रावणर ॥ १० ॥
प्रतिदिन बृहस्पति पांजि पढ़ुछन्ति ।
मोर खटणि शुणिबा हेउ लक्ष्मीपति ॥ ११ ॥

रखकर समस्त देवगण मिलकर स्तुति करने लगे । ३ हे सरोजनयन विष्णु भगवान ! आपको नमस्कार है ! नमस्कार है ! हे देव ! आप दुखियों के दुःख-नाशक तथा भक्तों के प्राण-धन हैं । ४ हे नाथ ! आप लंकापति (रावण) के उपद्रवों को सुनिये । सूर्य द्वारपाल का कार्य करते हुए उसके द्वार पर पहरा देते है । ५ देवराज इन्द्र भय से त्रस्त होकर पुष्प की माला गूंथते हैं और निशाकर उसके मस्तक पर छत्र धारण किये रहते है । ६ अग्निदेव उसके लिए भोजन बनाते हैं और पवनदेव भयभीत होकर मन्द गति से व्यजन डुलाते रहते हैं । ७ जितने जल की आवश्यकता होती है वह वरुणदेव लाकर देते हैं । भूदेवी भवन की मार्जना करती रहती हैं । ८ यमराज की बात तो कही नहीं जाती, मात्र हँसी आती है । वह उसके हाथी-घोड़ों के लिए घास काटा करते हैं । ९ जिस शनिदेव की दृष्टि पड़ने से तीनों लोक भस्म हो जाते हैं वह रावण के मलिन वस्त्रों को नित्य स्वच्छ किया करते है । १० वृहस्पति प्रत्येक दिन पत्रा पढ़ते हैं और हे लक्ष्मीकान्त ! अब मेरी दासता के विषय में सुनिये । ११ सृष्टि-कर्ता होना ही व्यवधान

सृष्टि कर्त्ता होइण होइछि अबधान ।
निति प्रति पढ़ाए ता बाळुत सन्तान ॥ १२ ॥
एहि परि सर्ब देबे करिअछुँ सेबा ।
केउँ परि एहा हस्तु मुकति लभिबा ॥ १३ ॥
एहा प्रतापरु रक्षा कर चक्रधर ।
नोहिले निश्चय नाश जिब तिनिपुर ॥ १४ ॥
एते बोलि बेदपति आरम्भिले स्तुति ।
बोले दीन पद्मनाभ रामपाद चिन्ति ॥ १५ ॥

पंचदश छान्द

राग–कळशा

नमस्ते नमस्ते प्रभु भकत बत्सळ ।
नमो पतितपावन प्रभु आदिमूळ ॥ १ ॥
नमो नमो शोक-ताप हारी दइतारि ।
दु:खी दु:ख हर करे शंख चक्रधरि हे ॥ २ ॥
जुगे जुगे असुर नाशने तुम्भ जात ।
राबण बिनाशि कष्ट फेड़िबा त्वरित हे ॥ ३ ॥

बन गया है। मुझे नित्य उसके बाल-बच्चों को पढ़ाना पड़ता है। १२ इसी प्रकार समस्त देवता सेवा में लगे रहते हैं। इसके हाथों से कौन सा उपाय करके मुक्ति प्राप्त हो ? १३ हे चक्रधर ! इसके प्रताप से हमारी रक्षा कीजिए। नहीं तो निश्चित रूप से तीनों लोक नष्ट हो जाएँगे। १४ इतना निवेदित करके वेदपति (ब्रह्मा) ने स्तुति प्रारम्भ कर दी। दीन पद्मनाभ श्रीराम के चरणों का चिन्तन करके वर्णन कर रहा है। १५

छान्द—१५

राग–कलशा

हे भक्तवत्सल भगवान ! आपको नमस्कार है। नमस्कार है। हे पतितपावन ! आदिमूल प्रभु ! आपको नमस्कार है। १ शोक-संताप-विनाशक असुरारि ! आपको नमस्कार है ! नमस्कार है ! आप शंख-चक्र धारण करके दुखियों के दु:खों का हरण करते हैं। २ युग-युग में असुरों का विनाश करने के लिए आप अवतार ग्रहण करते हैं। आप शीघ्र रावण का विनाश करके हमारे कष्टों को दूर कीजिए। ३ हे प्रभु !

अशेष महिमा प्रभु अटइ तुम्भर ।
बेद उद्धरि धरिल मीन कळेबर हे ।। ४ ।।
मन्दर धारण करि कूर्म अबतारे ।
दैत्य पराजय कल मोहनि रूपरे हे ।। ५ ।।
बराह रूपरे दन्ते धरिल धरणी ।
हरिणाक्ष नाशिल नृसिंह रूपे पुणि हे ।। ६ ।।
बामन रूपरे त्रयपाद भूमिदान ।
मागि बळि नृपे देल पाताळरे स्थान हे ।। ७ ।।
एहि परि अबतार देबे अगोचर ।
रावण बिनाशि प्रभु महि भारा हर हे ।। ८ ।।
तुम्भे गोळकर पति अगतिर गति ।
ए घोर सकटु देब करिबाकु मुक्ति हे ।। ९ ।।
एहि रूपे स्तुति करन्तेण कुशपाणि ।
शुणि तोष हेले प्रभु पद्मनाभ भणि हे ।। १० ।।

आपकी महिमा अपरम्पार है। आपने मत्स्यावतार धारण करके वेदों का उद्धार किया है। ४ कच्छप-अवतार में आपने मन्दराचल पर्वत को धारण किया और मोहनी-रूप द्वारा दैत्यों को पराजित किया। ५ वाराह-रूप धारण करके अपने दाँतो पर पृथ्वी को साध लिया और फिर आपने ही नृसिंह-अवतार ग्रहण करके हिरण्याक्ष का विनाश कर डाला। ६ वामन-रूप में राजा बलि से तीन पग भूमि का दान माँगकर उसे पाताल का वासी बना दिया। ७ आपके इस प्रकार के अवतार देवताओं के लिए भी अगोचर हैं। हे प्रभु! आप रावण का विनाश करके पृथ्वी का भार उतार दीजिए। ८ आप गोलोक के स्वामी हैं और आपकी गति अविगत है। इस घोर सकट से देवताओं को आप मुक्ति दिला दें। ९ पद्मनाभ कहते हैं कि कुशपाणि ब्रह्मा जी की इस प्रकार की स्तुति सुनकर भगवान विष्णु प्रसन्न हो गये। १०

षोडश छान्द

राग—जमक

देबंक आकुळ देखि प्रभु दइत्यारि।
दिव्य चक्षु फेइण चाहिँले धीर करि॥ १ ॥
शंख चक्र गदा पद्म शोहे भुज चारि।
लक्ष्मी सरस्वती पाशे खटन्ति तांकरि॥ २ ॥
ब्रह्मा मुख चाहिँण कहन्ति नारायण।
असुरंकु एडे बर दिअ कि कारण॥ ३ ॥
पूर्बापर बिचार न कर बेदपति।
से हेतु घटइ आसि समस्त बिपत्ति॥ ४ ॥
बृथा देबगणे आउ न कर भाबना।
अबिळम्बे पूर्ण हेब तुम्भर बासना॥ ५ ॥
निर्भय चित्तरे जाअ निज निज धाम।
अबश्य मर्त्यरे आम्भे होइबु जनम॥ ६ ॥
चतुर्द्धा रूपरे आम्भे जनम होइबुँ।
असुर बळ मारिण मही उश्वासिबुँ॥ ७ ॥

छान्द—१६

राग—यमक

दैत्यारि भगवान विष्णु ने देवताओं को व्याकुल देखकर बड़े धैर्य के साथ उन पर दिव्य दृष्टि डाली। १ उनकी चार भुजाओं में में शंख-चक्र-गदा और पद्म शोभायमान थे। उनके समीप लक्ष्मी जी तथा भगवती वागीश्वरी सेवा में संलग्न थीं। २ नारायणदेव ने ब्रह्मा के मुख की ओर ताकते हुए कहा कि आपने दैत्यों को ऐसा वर ही क्यों प्रदान किया है? ३ हे वेदपति विधाता! आप आगे-पीछे की कुछ भी नहीं सोचते हैं। इसी कारण से यह सारी विपदाएँ घटित होती रहती हैं। ४ हे देव! आप लोग अब और व्यर्थ की चिन्ता न करें, अब आपकी इच्छा अविलम्ब ही पूर्ण होगी। ५ आप लोग निर्भय चित्त से अपने अपने वासस्थान को लौट जायँ। हम निश्चित रूप से पृथ्वी पर जन्म धारण करेंगे। ६ चार रूपों में हमारा अवतार होगा और हम असुरों का विनाश करके पृथ्वी का उद्धार करेंगे। ७ यह

एहा शुणि देबगणे हरषे चळिले ।
बिक्रम नरेन्द्र राम चरणे भजिले ॥ ८ ॥

सप्तदश छान्द—सीतांक बन्दना

राग—जमक

शुण हे सुजन जने होइ एक मन ।
सुधा सम रामायण पबित्र आख्यान ॥ १ ॥
भरतखण्ड मध्यरे मिथिळा नामे देश ।
तथि अधिपति जे जनक नर ईश ॥ २ ॥
बड़ाइ प्रतापी राजा अति भाग्यबन्त ।
ताहार कुळरे जहुँ नोहिलाक पुत्र ॥ ३ ॥
दिनु दिनु दुःखानळ होइ प्रज्ज्वळित ।
स्थूळ तनु कृश करि दिअइ नियत ॥ ४ ॥
एक दिने मंत्रीकि राइण महीपति ।
राज्य भार समर्पिण चळिला झटति ॥ ५ ॥
हरष होइण राजा बिचारि मनरे ।
तप आरम्भिला जाइँ कउशिक तीरे ॥ ६ ॥
जोग लय करिण जनक महीपति ।
शुद्ध मने बिष्णुङ्कु करइ बड़ भक्ति ॥ ७ ॥

सुनकर देवगण प्रसन्नचित्त होकर चल दिये और विक्रम नरेन्द्र श्री रामचन्द्र जी के चरणों का भजन करने लगे । ८

छान्द १७—सीता जी की बन्दना

राग—यमक

हे सज्जनो ! एकाग्रचित्त होकर अमृत के समान रामायण का पावन चरित्र श्रवण करो । १ भरतखण्ड के मध्य में मिथिला नाम का देश है । वहाँ के अधिपति महाराज जनक हैं । २ वह अत्यन्त भाग्यवान तथा प्रतापी नरेश हैं । उनके कुल में कोई सन्तान नहीं हुई । ३ सन्ताप की दुखदाई अग्नि दिनोंदिन प्रज्वलित होने लगी । नियति स्वस्थ शरीर को भी दुर्बल बना देती है । ४ एक दिन राजा ने मंत्री को बुला कर राज्य का भार उसे समर्पित कर दिया और शीघ्र ही चल दिया । ५ महाराज ने प्रसन्न मन से विचार कर कौशिकी नदी के तीर पर पहुँचकर तपस्या प्रारम्भ कर दी । ६ महाराज जनक अपने को

बळाइ साहास मने निश्चळे रहिला ।
बिक्रम कहे एपरि केते दिन गला ॥ ८ ॥

अष्टादश छान्द

राग–रामकेरी

एमन्त समये शून्यरे मेनका अपसरी ।
शापु मुक्त होइ मर्त्त्यरु जाउछि स्वर्गपुरी ॥ १ ॥
दिशे अति शोभा श्रीअंग रंग बिजुळि घने ।
तप त्याग करि जनक देखिलेक नयने ॥ २ ॥
बोलन्ति धन्यरे सुन्दरि धन्य तो रूपराशि ।
धन्य बिहि तोते गढ़िला केते काळहिँ बसि ॥ ३ ॥
नाहिँ नाहिँ शोभा सुन्दरि तोह परि जगते ।
एसन सदृश कुमारी जेबे मिळन्ता मोते ॥ ४ ॥
पुरठारु शतगुणरे पाळन्ति मुँ अबश्य ।
एतेक भाळिण जनक मन कले बिरस ॥ ५ ॥
मनरे भाळेणि जाणिला शून्ये स्वर्ग जुबती ।
स्तम्भीभूत होइ बोलइ शुण हे राजजति ॥ ६ ॥

योग में लीन करके विशुद्ध चित्त से भगवान विष्णु की महान भक्ति में लग गये । ७ वह साहसपूर्ण निश्चल चित्त से रहने लगे । विक्रम कहता है कि इस भाँति न जाने कितने दिन व्यतीत हो गये । ८

छान्द—१८

राग–रामकेरी

इसी समय आकाश-मार्ग से मेनका नामक अप्सरा शाप-मुक्त होकर मृत्युलोक से स्वर्गपुरी को जा रही थी । १ वह अत्यन्त शोभायमान दिख रही थी । उसके अंग-प्रत्यंग बादलों में व्याप्त बिजली के समान प्रतीत हो रहे थे । तप का परित्याग कर जनक ने उस पर दृष्टि डाली । २ वह कह उठे, "हे सुन्दरी ! तू धन्य है । तेरा रूप-लावण्य धन्य है । वह विधाता भी धन्य है, जिसने कितने समयपर्यन्त बैठकर तुम्हारी रचना की । ३ तुम्हारे समान इस संसार में अन्य कोई शोभनीया सुन्दरी नहीं है । यदि इसी के समान सुन्दर कन्या मुझे प्राप्त हो जाती तो मैं अवश्य ही स्वर्ग से अधिक सौ गुने चाव से उसका लालन-पालन करता । इस प्रकार मन में विचार करते हुए जनक दुखी हो गये । ४-५ तब आकाश से ही स्वर्ग की युवती ने अपने मन में विचार कर सब जान लिया

अवश्य तोहर कोळरे जात हुअन्ति मुहिँ।
जाउअछि स्वर्गपुरकु शापुँ मुकुत होइ ॥ ७ ॥
शुणिण जनक बोलन्ति कह कह सुन्दरि।
जेउँ पाप जोगुँ मर्त्त्यरेथिलु तु आबतरि ॥ ८ ॥
ए वचन शुणि मेनका कहइ हसि हसि।
बिक्रम कहे से चरित शुण हे राजऋषि ॥ ९ ॥

उणबिश छान्द

राग–खेमटा

राजार बचने कहे स्वर्ग जुबती।
जाहा पचारिले ताहा शुण हे जति ॥ १ ॥
एक दिने अष्ट अपसराए आसि।
गान करिथिलुँ इन्द्र आगरे बसि ॥ २ ॥
ब्रह्मा इन्द्र बरुण दश दिगपाळ।
सभा पूरि रहिथिले देब सकळ ॥ ३ ॥
चित्रसेनर सौन्दर्य्य देखिण डोळे।
बिह्वळित होइ पड़िलि सभातळे ॥ ४ ॥

और आश्चर्यचकित होकर कहने लगी कि हे राज-योगी! सुनो। ६ मैं अवश्य ही तुम्हारी कोख से उत्पन्न होती। परन्तु मैं शाप से मुक्ति पाकर स्वर्गलोक को जा रही हूँ। ७ यह सुनकर जनक ने कहा कि हे सुन्दरी! बोलो, तुम किस पाप के कारण मृत्युलोक में अवतरित हुई थीं? ८ यह वाक्य सुनकर मेनका ने हँसते हुए कहा, हे राजर्षि! सुनो। विक्रम उस चरित्र का वर्णन कर रहा है। ९

छान्द—१९

राग–खेमटा

राजा की बातों को सुनकर स्वर्ग की युवती ने कहा, हे योगी! आपने जो प्रश्न किया है उसके विषय में सुनो। १ एक दिन इन्द्र के सामने हम आठ अप्सराएँ आकर बैठी हुई गीत गा रही थीं। २ ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, दश दिग्पाल आदि सभी देवगण सभा में विराजमान थे। ३ आँखों से चित्रसेन का सौन्दर्य देखकर मैं सभा के मध्य विह्वल हो गई। ४ यह देखकर इन्द्र ने मुझे श्राप दिया और कहा कि तुम

एहा देखि इन्द्र मोते शाप बिहिला ।
म्लेक्ष तनु धरि मर्त्ये जाअ बोइला ।। ५ ।।
देव स्तिरी होइ तु पाप आचरिलु ।
मो पुत्रकु देखि कामे बश होइलु ।। ६ ।।
एते कहि कोप कला सस्रलोचन ।
बहु बिनये कहिला मुक्ति बिधान ।। ७ ।।
किछि काळे गिरिजा दर्शन पाइबु ।
म्लेक्ष तनु छाड़ि तु स्वर्गकु आसिबु ।। ८ ।।
इन्द्र प्रमाणे शाप भोग करि ।
मुक्त होइ जाउछि एबें स्वर्गपुरी ।। ९ ।।
अवश्य तो कोळे राजा हुअन्ति जन्म ।
एबे मुहिँ कहुछि स्वरूप बचन ।। १० ।।
पूर्बे नारद कहिले ब्रह्मा अग्रते ।
अबश्य कन्याए प्राप्त होइब तोते ।। ११ ।।
मोठारु शतगुणे सुन्दरी कुमारी ।
मिळिब बिक्रम कहे हे ब्रह्मचारी ।। १२ ।।

मृत्युलोक में जाकर म्लेक्ष का शरीर धारण करो। ५ देवरमणी होकर तुमने पापाचार किया है। मेरे पुत्र को देखकर काम के वशीभूत हो गयी। ६ यह कहते हुए सहस्र नेत्रवाले देवराज कुपित हो गये। मेरे बहुत प्रार्थना करने पर उन्होंने मुक्ति का विधान बताया। ७ थोड़े समय के पश्चात् तुम्हें गिरिजा के दर्शन होंगे। तब तुम म्लेक्ष-शरीर को त्यागकर स्वर्ग आओगी। ८ देवराज के प्रमाण से श्राप-भोग करने के उपरान्त मुक्त होकर इस समय स्वर्गलोक को जा रही हूँ। ९ मैं तुम्हारे कोख से अवश्य ही जन्म लेती। यह मैं तुमसे सत्य ही वास्तविक बात कह रही हूँ। १० प्राचीन काल में नारद ने ब्रह्मा के समक्ष कहा था कि तुम्हें (राजा जनक) एक कन्या अवश्य ही प्राप्त होगी। ११ विक्रम कहते हैं कि मेनका ने कहा कि उससे भी सौ गुनी सुन्दर कन्या उन्हें प्राप्त होगी। १२

बिंश छान्द

राग–रामकेरी

शुणिण जनक पुछन्ति कह कह सुन्दरि ।
केमन्त प्रकारे प्रापत मोते हेब कुमारी ।। १ ।।
राजार बचने बोलइ मेनका अपसरी ।
तहिँर बृत्तान्त कहिबा शुण हे ब्रह्मचारी ।। २ ।।
पूर्वे कुशध्वज राजाए थिला महीमंडळ ।
बेदती बोलि कन्याए हेला से राजा कोळे ।। ३ ।।
अत्यन्त सुन्दरी अटइ किबा स्वर्ग जुबती ।
ताहार मोहन मूरति देखि टळिबे जति ।। ४ ।।
ताहार समान सुन्दर बर प्राप्त नोहिला ।
बिरस होइण से कन्या घोर तपे रहिला ।। ५ ।।
मनरे संकल्प करइ बिष्णु हेब मो बर ।
केते काळ तपे रहिला तेजि निद्रा आहार ।। ६ ।।
एमन्त समये लंकार नायक दशशिर ।
दिगबिजे करि आसन्ते देखिला नारीबर ।। ७ ।।

छान्द—२०

राग–रामकेरी

यह सुनकर जनक ने पूछा, हे सुन्दरि ! बताओ । किस प्रकार से हमें कन्या प्राप्त होगी ? १ राजा की बात सुनकर अप्सरा मेनका बोली । हे ब्रह्मचारी (ब्रह्म में विचरण करनेवाले योगी)! सुनो, मैं समस्त वृत्तान्त कह रही हूँ । २ प्राचीन काल में पृथ्वीतल पर कुशध्वज नाम का एक राजा था । उसके वेदवती नामक एक कन्या हुई । ३ वह अत्यन्त सुन्दरी थी । ऐसा लगता था मानों स्वर्ग की युवती हो । उसके मनोहर रूप को देखकर योगीजन भी विचलित हो जाते थे । ४ उसके अनुरूप सुन्दर वर नहीं प्राप्त हो सका । विषण्णमना कन्या घोर तपस्या में लीन हो गई । ५ उसने मन में संकल्प किया कि विष्णु ही मेरे पति बनें । वह निद्रा तथा भोजन का त्याग करके न जाने कितने काल पर्यन्त तपस्या करती रही । ६ इसी समय दिग्विजय के उपरान्त लौटते हुए लंकेश्वर दशानन ने उस श्रेष्ठ रमणी को देखा । ७ शीघ्रता से अन्तरिक्ष से वहाँ आकर उसने अपना यान

अन्तरीक्षे बेगे सेठाकु आसि जान रुहाइ।
कामे बश होइ सुरति मागिला सेहिठाईं॥ ८ ॥
शुणि बेदबती कन्या जे क्षणे मउन हेला।
नास्ति करन्तेण रावण बळात्कारे धइला॥ ९ ॥
गाढ़े अंगे भिड़ि मुखरे दिअन्ते चुम्बदान।
छाड़ छाड़ बोलि बोइला क्रोधे नारी रतन॥ १० ॥
छाड़ि दिअन्ते से रावण बेदबती कहइ।
शुद्धकाय मोर अशुद्ध कलु अशुर होइ॥ ११ ॥
कहुँ कहुँ क्रोध प्रबळुँ अग्नि जात होइला।
मोह जोगुँ नाश होइबु कहि प्राण छाड़िला॥ १२ ॥
महाभय पाइ रावण तहुँ अइला खरे।
प्रबेश होइला जाइण निज लंका गड़रे॥ १३ ॥
एमन्त समये नारद लंके हेले प्रबेश।
रावणकु चाहिँ बोलन्ति शुण बिश्रवा शिष्य॥ १४ ॥
जेउँ देबतार कन्याकु आजि रमिलु बळे।
अपमान पाइ झासिला अंग क्रोध अनळे॥ १५ ॥
दहन नोहिण से शब सेहि रूप पड़िछि।
ताहा जोगे तुहि मरिबु शुण बिश्रवा बत्सि॥ १६ ॥

रोक दिया तथा काम के वशीभूत होकर उससे रतिदान का आग्रह किया। ८ यह सुनकर वेदवती कन्या क्षण भर के लिए मौन हो गई। तब मना करने पर भी रावण ने जबर्दस्ती उसे पकड़ लिया। ९ प्रगाढ़ आलिंगन करके मुख का चुम्बन करते समय कुपित होकर रमणीमणि ने "छोड़ दे, छोड़ दे" इस प्रकार कहा। १० छोड़ देने पर रावण से वेदवती ने कहा, अरे असुर होकर तूने मेरी शुद्ध काया को अपवित्र कर दिया। ११ ऐसा कहते-कहते क्रोध से प्रबल अग्नि प्रज्वलित हो उठी। मेरे कारण तेरा नाश होगा, ऐसा कहते हुए उसने प्राण छोड़ दिये। १२ अत्यन्त भयभीत होकर रावण वहाँ से चला गया और अपने लका-दुर्ग में जा पहुँचा। १३ इसी समय लंका में नारद आ पहुँचे, और रावण की ओर देखकर बोले हे विश्रवानन्दन! सुनो। १४ तुमने आज जिस देवकन्या के साथ बलपूर्वक रमण किया, उसने अपमानित होकर अपने शरीर को क्रोध की अग्नि में जला डाला। १५ दग्ध हुए बिना वह शरीर उसी रूप में पड़ा है। हे विश्रवानन्दन! उसी के कारण तुम्हारी मृत्यु होगी। १६ नहीं तो

नोहिले से शब अणाइ बेगे कर विनाश ।
एतेक कहिण नारद शून्ये हेले अदृश्य ।। १७ ।।
से कथा शुणिण रावण जगतिरु उठिला ।
से शब अणाइ सत्वर मन्दोदरीकि देला ।। १८ ।।
षडरसे एहा व्यजन कर गो प्राणसहि ।
एते कहि तहुँ बिजय कलाक लंकसाइँ ।। १९ ।।
एमन्त समये नारद राणी पाशे प्रवेश ।
बोलन्ति राणी गो व्यंजन कर आन माएँस ।। २० ।।
ए शब नेइण समुद्र जळे दिअ भसाइ ।
तांक आज्ञा प्रति पाळिला मंदोदरी सुमुहिँ ।। २१ ।।
दक्षिण समुद्र कूळरे सेहि लागि अछइ ।
लंगळ द्वारा से स्थानकु चाष करतु जाइँ ।। २२ ।।
अवश्य कुमारी प्रापतआजि होइब तोते ।
बिक्रम कहइ मेनका कहि गला त्वरिते ।। २३ ।।

एकबिंश छान्द

भागवत बृत्ते

एमन्त कहि से सुन्दरी । शून्ये चळिला स्वर्गपुरी ।।
शुणिण जनक आनन्द । चक्षु जेसने पाए अन्ध ।। १ ।।

उस शव को मँगाकर उसे शीघ्र ही नष्ट कर दो । इतना कहकर नारद आकाश में अदृश्य हो गये । १७ यह बात सुनकर रावण जगती से उठा तथा शीघ्र ही उसने उस शव को मँगाकर मन्दोदरी को दे दिया । १८ हे प्राणसंगिनि ! इसके षड्रस व्यंजन बनाओ, इस प्रकार कहकर लंकेश्वर वहाँ से चला गया । १९ इसी समय नारद रानी के पास पहुँचकर बोले, हे राजरानी ! अन्य मांस मँगवाकर व्यंजन तैयार करें । २० इस शव को लेकर समुद्र में प्रवाहित कर दें । सुन्दर मुख वाली मन्दोदरी ने उनकी आज्ञा का पालन किया । २१ दक्षिण सागर के तट पर वह जा लगा है । हे जनक ! तुम वहाँ जाकर हल द्वारा उस स्थान का कर्षण करो । २२ अवश्य ही आज तुम्हें कन्या प्राप्त होगी । विक्रम कहते हैं कि इस प्रकार कहकर मेनका शीघ्र चली गई । २३

छान्द—२१

राग—भागवत की धुन

इस प्रकार कहकर वह सुन्दरी आकाशमार्ग से स्वर्गपुरी की ओर

हरषे सेठारु चळिले । निज राज्यरे प्रबेशिले ॥
पात्र मंत्रींकि घेनि संगे । चळिले जनक सरागे ॥ २ ॥
सफळ काम हेबा पाइँ । संकेत स्थाने हेले जाइँ ॥
बिधिपूर्बक कार्य्यकरि । जज्ञ साधिले दण्डधारी ॥ ३ ॥
आहुति देले नियमित । जज्ञ होइला समापत ॥
स्वर्गे चळिले देवगणे । मुनिए गले जेझा स्थाने ॥ ४ ॥
जनक सतानन्द राइ । आज्ञा देले आनन्द होइ ॥
हळ लंगळ जाअ आण । चषाअ बेगे जज्ञस्थान ॥ ५ ॥
आज्ञा पाइण सतानन्द । चषिले जज्ञ भूमि-खण्ड ॥
पूर्बरु अछइ निर्माणि । बिचित्र कथा कुशपाणि ॥ ६ ॥
चषिला मात्रे फाळमुने । बाहार मंजूषा तक्षणे ॥
बेगे से मंजूषा मेलाइ । चाहान्ति एक मुख होइ ॥ ७ ॥
दगध हेम प्राय कान्ति । शरद शशी मुखज्योति ॥
देखिण जनक हरष । घेनि चळिले निज देश ॥ ८ ॥
अंत:पुररे प्रबेशिले । राणींकठारे समर्पिले ॥
हरष होइ सर्बबाळी । पुत्रठारु अधिके पाळि ॥ ९ ॥

चल दी । यह सुनकर जनक प्रसन्न हो गये जैसे अन्धे को नेत्र मिल गये हों । १ प्रसन्नतापूर्वक वह वहाँ से चलकर अपने राज्य में प्रविष्ट हुए । सभासदों तथा मंत्रियों को साथ में लेकर जनक बड़े प्रेम के साथ चल दिये । २ सफल मनोरथ होने के लिए वह सांकेतिक स्थान पर जा पहुँचे । विधानपूर्वक कार्य करते हुए दण्डधारी (महाराज) ने यज्ञ का आयोजन किया । ३ नियमानुसार आहुति देने पर यज्ञ का समापन हुआ । देवगण स्वर्ग की ओर तथा मुनिसमूह निज-निज वासस्थान को चल दिये । ४ जनक को सतानन्द ने बुलाकर प्रसन्न चित्त से जाकर हल लाने तथा शीघ्र ही यज्ञस्थान को जुतवाने की आज्ञा दी । ५ शतानन्द की आज्ञा पाकर यज्ञक्षेत्र का कर्षण किया । विधाता ने पूर्व से ही इस विचित्र कथा का निर्माण कर लिया था । ६ हल-कर्षण मात्र से ही उसकी नोक के लगने से उसी क्षण एक मंजूषा निकल आई । शीघ्रता-पूर्वक उस मंजूषा को खोलकर वह ध्यान से उसे देखने लगे । ७ तप्त कांचन-सदृश कान्ति तथा शरदऋतु के चन्द्रमा के समान मुख-ज्योति वाली (बालिका) देखकर जनक प्रसन्न मन से उसे लेकर अपने देश को चल पड़े । ८ अन्त:पुर में प्रविष्ट होकर उन्होंने कन्या महारानी को समर्पित कर दी । प्रसन्नतापूर्वक सबने उसका लालन-पालन

जेबण लक्ष्मींक चरणे । सेवन्ति सुर सिद्ध गणे ॥
से एबे जगतर हिते । होइले जनक दुहिते ॥ १० ॥
बिदेहे हेबारु सम्भूत । वैदेही नामे हेले ख्यात ॥
जनक कुमारी निमन्ते । जानकी बोलन्ति जगते ॥ ११ ॥
मिथिळा राजांक दुलाळी । तेणु जे नाम मइथिळी ॥
जननी तांकर पृथिवी । तेणु नाम अटे पार्थवी ॥ १२ ॥
शरीर जोजने बासइ । तेणु जोजनागन्धा सेहि ॥
लंगळमुनरु बाहार । हेबारु सीता नाम तार ॥ १३ ॥
एमन्ते षड़ परकार । नाम विहिले मुनिवर ॥
दिनकु दिन चन्द्रकळा । समान बढ़े राज बाळा ॥ १४ ॥
सीता जनम हेला शेष । शुणिले खण्डे भवक्लेश ॥
से सीता चरणारबिन्द । भजइ बिक्रम नरेन्द्र ॥ १५ ॥

द्वाविंश छान्द—राम जन्म

राग—जमक

एथि उत्तारु बाल्मीकि नामे महाअति ।
रामायण आद्यलीळा जाहा कहिछन्ति ॥ १ ॥

पुत्र से भी अधिक किया । ९ सुरसिद्ध समुदाय जिन लक्ष्मी के चरणों की सेवा करता है। वही अब लोकहितार्थ जनक की कन्या बन गई । १० विदेह के द्वारा सम्भूत होने से वह वैदेही नाम से विख्यात हुई। जनककुमारी होने के कारण संसार में उसे जानकी कहा जाने लगा । ११ मिथिलानरेश की दुलारी होने से उसका नाम मैथिली पड़ा। उनकी माता पृथ्वी होने से उसका नाम पार्थवी पड़ गया । १२ शरीर की सुगन्ध एक योजन तक फैलने के कारण वह योजनगन्धा कहलाई। हल की नोक से प्रादुर्भूत होने से उसका नाम सीता रखा गया । १३ इस प्रकार मुनिश्रेष्ठ ने उनके छः नाम रखे। वह राजकन्या दिन-प्रतिदिन चन्द्रमा की कला के समान बढ़ने लगी । १४ सीता का जन्म समाप्त हो गया इसके सुनने से सांसारिक बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं। विक्रम नरेन्द्र उन्हीं सीता जी के चरण-कमलों का भजन करता है । १५

छान्द २२—राम-जन्म

राग—यमक

तदनन्तर वाल्मीकि नामक महर्षि ने रामायण की जो भी आदिलीला

सामबेदुँ सम्भूत अमृतमय रस ।
शुणन्ति पार्बती देबी कहन्ति महेश ।। २ ।।
भरतखण्ड मध्यरे अजोध्या नामे पुर ।
अज सुत दशरथ तहिँ दण्डधर ।। ३ ।।
ताहांक मइत्र चम्पावती नरेश्वर ।
लोमपाद बोलि नाम अटइ ताहार ।। ४ ।।
बिप्र शापे बृष्टिहीन हेला तार देश ।
जळ बिना पुर जने लभिलेक क्लेश ।। ५ ।।
ऋषिश्रृङ्ग अइले जे जळ बरषिब ।
बोलइ बिक्रम चम्पाबती सुस्थ हेब ।। ६ ।।

त्रयोविंश छान्द

राग–जमक

पार्बती बोलन्ति मोते कह हे धूर्जटि ।
केवण दोषरु इन्द्र न कलाक बृष्टि ।। १ ।।
चम्पाबती देश राजा केउँ दोष कला ।
बार बरष किपाइं इन्द्र न पाळिला ।। २ ।।

का वर्णन किया, वह अमृतमय रस सामवेद से उद्‌भूत हुआ है जिसे भगवान शंकर ने कहा और देवी पार्वती ने सुना है । १-२ भरतखण्ड के मध्य में अयोध्या नाम का एक नगर है । अज के पुत्र दशरथ वहाँ के शासक हैं । ३ चम्पावती के राजा उनके मित्र थे जिनका नाम लोमपाद था । ४ ब्राह्मण के शाप के कारण उनका देश अकालग्रस्त हो गया । बिना जल के पुरवासी कष्ट पाने लगे । ५ विक्रम कहता है कि श्रृंगी ऋषि के आने पर ही जलवर्षा होगी और चम्पावती नगरी स्वस्थ हो जायेगी । ६

छान्द—२३

राग–यमक

पार्वती जी बोलीं, हे धूर्जटी शिवजी ! आप मुझे बताइये कि किस दोष के कारण इन्द्र ने वर्षा नहीं की ? १ चम्पावती प्रदेश के राजा ने कौन सा अपराध कर दिया था जिससे बारह वर्ष पर्यन्त इन्द्र उससे कुपित रहा ? अर्थात् वह देश अनावृष्टि का ग्रास बना रहा ? २

एथिर चरित मोते कह गंगाधर ।
मनर संशय जे छेदन कर मोर ।। ३ ।।
पार्बतींक बचने कहन्ति शूलपाणि ।
पूर्बर चरित एबे शुण गो सर्बाणी ।। ४ ।।
एक दिने लोमपाद ब्राह्मणंकु आणि ।
गोरु दान देला जे ताहांक मन जाणि ।। ५ ।।
गाब घेनि द्विजगणे गले निजघर ।
एक गोरु पळाइ पशिला गो गोष्ठर ।। ६ ।।
अंगदेश नृपति जे तहिँ आर दिन ।
अन्य ब्राह्मणंकु से गोरुकु देला दान ।। ७ ।।
गाव घेनि बिप्र जाउ जाउ निज पुर ।
आग नेला द्विज देखि बोले एत मोर ।। ८ ।।
पच्छ बिप्र बोले मोते राजादान देला ।
आग बिप्र बोले मोते आग देइथिला ।। ९ ।।
दुइ ब्राह्मणंकर लागिला बहु कळि ।
राजांक छामुरे जाइ कलेक गुहारि ।। १० ।।
नृपति बोइले तुम्भे शुण हे ब्राह्मण ।
पळाइ पशिला गोरु आम्भ गो गोष्ठेण ।। ११ ।।

हे गंगाधर ! मुझसे इस चरित्र का वर्णन करके मेरे मन के संशय का विनाश करो । ३ पार्वती के कहने पर शूलपाणि शंकर जी ने कहा, हे सर्वाणी ! अब तुम पूर्वकालिक चरित्र को श्रवण करो । ४ एक दिन लोमपाद ने ब्राह्मणों को लाकर उनकी इच्छानुसार गोदान किया । ५ गउएँ लेकर ब्राह्मणसमूह अपने घर चला गया । एक गाय भागकर गोशाला में जा पहुँची । ६ अंग देश के राजा ने दूसरे दिन वह गाय किसी अन्य ब्राह्मण को दान कर दी । ७ गाय लेकर अपने घर जाते हुए ब्राह्मण को देखकर पहले दान पाये हुए ब्राह्मण ने उससे कहा कि यह तो मेरी गाय है । ८ पीछे वाला ब्राह्मण कहने लगा कि इसे तो मुझे राजा ने दान में दिया है । पहले वाले ब्राह्मण ने कहा कि यह तो मुझे पहले ही दी गई थी । ९ दोनों ब्राह्मणों में नाना प्रकार का विवाद होने लगा । वह दोनों राजा के समक्ष अपनी गुहार लेकर जा पहुँचे ।। १० ।। राजा ने कहा कि आप दोनों ही सुनें । यह गाय भागकर मेरी गोशाला में जा घुसी । ११ अनजान में मैंने इसे

न जाणि बिप्रकु आम्भे दान देलु गोरु।
एबे अन्य गोरु देबा किम्पाँ कोप करु॥ १२॥
ब्राह्मण बोइला नेबि सेहि गोरु मोर।
आगे देइ पच्छे हरु केउँ धर्म तोर॥ १३॥
एबे तु मोर शाप घेन महीपाळ।
तोर राज्ये बृष्टि न करिब आखण्डळ॥ १४॥
बार बर्ष जाए राज्य हेब अपाळक।
अन्न न पाइण जे मरिबे सर्बलोक॥ १५॥
एते कहि ब्राह्मण जे गला निजघर।
पच्छे पच्छे गोड़ाइ बोलइ नृपबर॥ १६॥
शाप प्रतिकार मोते कह द्विजबर।
राज्य नाशजिब मोर दोष क्षमाकर॥ १७॥
राजार बिकळ देखि कहिला से द्विज।
जेबे आणिपारु बिभाण्डकर तनुज॥ १८॥
ऋष्यश्रृङ्ग अटन्ति जे बिभाण्डक बाळ।
अइले अबश्य राज्ये बरषिब जळ॥ १९॥
पूर्बर चरित तुम्भे शुणसि गो बा।
चम्पाबती राज्ये बृष्टि न कला माधवा॥ २०॥

इस ब्राह्मण को दान में दे दिया। आप क्रोध क्यों कर रहे हैं? हम आपको दूसरी गाय दे देंगे। १२ ब्राह्मण बोला कि मैं तो अपनी वही गाय लूँगा। पहले दान करके पीछे से हरण कर लेना यह तुम्हारा कौन सा धर्म है? १३ हे राजन्! अब तुम मेरा शाप ग्रहण करो। इन्द्र तुम्हारे राज्य में वृष्टि नहीं करेगा। १४ बारह वर्ष पर्यन्त राज्य में अकाल रहेगा। अन्न न पाकर सभी लोग मृत्यु का वरण करेंगे। १५ इस प्रकार कहकर ब्राह्मण अपने घर चला गया। उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए राजा ने कहा। १६ हे द्विजश्रेष्ठ! इस शाप का प्रतिकार मुझे बता दीजिए। इससे राज्य नष्ट हो जायेगा। मेरे अपराध को आप क्षमा करें। १७ राजा को व्याकुल देखकर उस ब्राह्मण ने कहा कि जब भी तुम विभाण्डक के पुत्र को ला पाओगे। १८ विभाण्डक के पुत्र ऋष्यश्रृंग हैं। उनके आने से राज्य में अवश्य ही जल बरसेगा। १९ हे पार्वती! तुमने पूर्ववृत्तान्त तो सुना ही है कि चम्पावती राज्य में इन्द्र ने बारह वर्षों तक जलवृष्टि नहीं की। २०

जहुँ आकुळ होइले राज्यर परजा ।
पूर्ब कथा चित्तोइला लोमपाद राजा ।। २१ ।।
मनरे अति भावना होइला ताहार ।
के आणिब बिभाण्डक ऋषिर कुमर ।। २२ ।।
ऋष्यशृङ्ग अइले होइब जळबृष्टि ।
बिक्रम नरेन्द्र कहे रक्षा हेब सृष्टि ।। २३ ।।

चतुर्विश छान्द

राग–नळिनी गौड़ा

मंत्रीङ्कि डकाइ राजा बोलन्ति बचन ।
कह ऋष्यशृङ्गंकर जन्म बिबरण हे ।। १ ।।
राजांक बचने जे कहइ बिज्ञ मंत्री ।
ऋष्यशृङ्ग जन्मकथा शुण नरपति हे ।। २ ।।
ऋष्यशृङ्ग जनम शुणन्तु एक मने ।
बिभाण्डक नामे ऋषि थिले तपस्थाने हे ।। ३ ।।
एहि काळे स्वर्गरु उर्बशी अपसरी ।
नदीरे पशिण स्नान करइ सुन्दरी जे ।। ४ ।।
जानु जउबन जे दिशइ मर्मस्थान ।
देखि कामे बश बिभाण्डक तपोधन जे ।। ५ ।।

जब राज्य की प्रजा व्याकुल हो गई। तब राजा लोमपाद को पूर्ववृत्तान्त का स्मरण हो आया। २१ उनके मन में नाना प्रकार की भावनायें उठीं कि विभाण्डक ऋषि के पुत्र को कौन लायेगा ? २२ विक्रम नरेन्द्र कहते हैं कि शृंगी ऋषि के आने से जल की वर्षा होगी और इस सृष्टि की रक्षा होगी। २३

छान्द—२४

राग–नलिनी गौड़ा

मंत्री को बुलाकर राजा ने कहा कि आप शृंगी ऋषि के जन्म के विषय मे सविस्तार कहें। १ राजा के वचनों को सुनकर विद्वान मंत्री बोला, हे नरपति ! शृंगी ऋषि के जन्म की कथा सुनो। २ एकाग्र चित्त से उनके जन्म की कथा सुनें। तपोवन में विभाण्डक नाम के एक ऋषि थे। ३ इसी समय उर्वशी नामक सुन्दरी अप्सरा स्वर्ग से उतर कर नदी में स्नान करने लगी। ४ उसकी जंघाओं एवं यौवन से परिपूर्ण

स्नान सारि उर्बशी जे गला स्वर्गपुर ।
ध्यान भंग अन्ते मुनि मिळिले जळर जे ॥ ६ ॥
स्नान करन्तेण रेत होइला स्खळित ।
बाहुड़ि आश्रमकु गमिले तपाबन्त हे ॥ ७ ॥
एहि समये प्रवेश होइला मृगुणी ।
जळ सहितरे रेत भक्षिला सेजणि जे ॥ ८ ॥
गर्भबती होइ पुत्रे करिण जनम ।
देह छाड़ि मृगुणी चळिला स्वर्गधाम जे ॥ ९ ॥
धराशायी होइ पुत्र करइ रोदन ।
बिक्रम कहे भरसा हेले भगवान ॥ १० ॥

पञ्चबिंश छान्द

राग–जमक

शुण हे राजन एहि अपूर्ब चरित ।
मुण्डे श्रृङ्ग नरमूर्त्ति सेहि तपोबन्त ॥ १ ॥
बाळक कांदिबा शुणि बिभाण्डक मुनि ।
सेठाबरे प्रबेश होइले तत्क्षणि ॥ २ ॥

मर्मस्थान को देखकर तपस्वी विभाण्डक काम के वश में हो गये । ५ स्नान से निवृत्त होकर उर्वशी स्वर्ग को चली गई । ध्यान टूट जाने पर मुनि जल में आ पहुँचे । ६ स्नान करते समय उनका वीर्य स्खलित हो गया । तब वह तपस्वी आश्रम को लौट गये । ७ इसी समय एक हिरणी वहाँ जा पहुँची । तब उसने जल के साथ बीर्य भी पी लिया । ८ गर्भवती होकर उसने पुत्र को जन्म दिया और देह का परित्याग करके वह स्वर्ग को चली गई । ९ पृथ्वी में पड़ा हुआ शिशु रुदन कर रहा था । विक्रम कहते हैं कि भगवान उसके आश्रयदाता बन गये । १०

छान्द—२५

राग–यमक

हे राजन् ! यह अद्‌भुत चरित्र सुनो । सिर पर सींग वाली नरमूर्ति वह हो तपस्वी हैं । १ बालक का रुदन सुनकर उसी क्षण विभाण्डक मुनि वहाँ आ पहुँचे । २ बालक को देखकर मुनिश्रेष्ठ

कुमरकु देखिण बिस्मय मुनिबर ।
आकाश मार्गरे जे कहिले बज्रधर ।। ३ ।।
एहा द्वारा देबकार्य्य होइब बहुत ।
जत्न करि पाळ बिभाण्डक तपोबन्त ।। ४ ।।
ए जेउँ राज्यकु जिबे बरषिब जळ ।
बोले गोपी सुदया करिबे आदिमूळ ।। ५ ।।

षड्‌विंश छान्द

राग–जमक

मंत्री मुखुँ एहा शुणि चम्पाबती साइँ ।
बिचार करइ पात्र मंत्रींकि बसाइ ।। १ ।।
ऋष्यशृङ्ग आणिबाकु काहा बुद्धि अछि ।
जणे जणे करि राजा समस्तंकु पुच्छि ।। २ ।।
मंत्रीबर बोले देब अछि एक बुद्धि ।
जेबण प्रकारे कार्ज्य होइबटि सिद्धि ।। ३ ।।
धनरत्न छांगड़ा दोसाधु हस्ते देबा ।
दुंदुभि बजाइ नग्रजाकु बुलाइबा ।। ४ ।।

विस्मय में पड़ गये । तभी आकाशमार्ग से बज्रधारी इन्द्र ने कहा । ३ हे तपोनिष्ठ विभाण्डक ! इसका यत्नपूर्वक पालन करो । इसके द्वारा विविध देवकार्य सम्पादित होंगे । ४ यह (बालक) जिस राज्य में भी जाएगा, वहाँ जलवृष्टि होगी । गोपी (विक्रम) कहता है कि परमात्मा की इस पर असीम दया होगी । ५

छान्द—२६

राग–यमक

चम्पावती राज्य के महीपाल मंत्री के मुख से इस प्रकार सुनकर अपने सभासदों एवं मंत्रिपरिषद् को बिठाकर विचार-विमर्श करने लगा । १ एक-एक करके राजा ने सबसे पूछा कि शृंगी ऋषि को लाने में कौन समर्थ है ? । २ श्रेष्ठ मंत्री बोला, हे देव ! एक उपाय है जिससे कार्य सिद्ध हो जाएगा । ३ धन-रत्न से भरा बाँस का थाल मुनादी करनेवाले प्रचारक के हाथों में दे देंगे और डुगडुगी पिटवाकर सारे नगर में घुमा देंगे । ४ जो भी व्यक्ति शृंगी ऋषि को लाने में समर्थ होगा, उसे

ऋष्यशृङ्ग मुनिकि जे पारिबटि आणि ।
ए रत्न छांगड़ा निश्चें पाइब से पुणि ॥ ५ ॥
शुणि करि नृपति सानन्द मन हेला ।
पंचरत्न छांगड़ा दोसाधु हस्ते देला ॥ ६ ॥
आदरे दाउण्डी जे बजाइ बीरतूर ।
दोसाधु बोलइ तुम्भे शुण सर्ब नर ॥ ७ ॥
ऋष्यशृङ्ग मुनि अटे बिभाण्डक शिष्य ।
कउशिक नदी तीरे करिथाइ बास ॥ ८ ॥
से मुनि अइले जे होइब जळबृष्टि ।
जे आणिब नेब सेहु रत्न छांगड़ाटि ॥ ९ ॥
एहा शुणि जरता नामेण नटकारी ।
बिधाता उपाये से जे अछि अबतरि ॥ १० ॥
से आसिण पंचरत्न छांगड़ा धइला ।
मुहिँ ऋषिशृङ्ग आणि देबइँ बोइला ॥ ११ ॥
शुणि करि दोसाधु हरषमन होइ ।
राजार छामुकु ताकु गलाक घेनाइँ ॥ १२ ॥
देखिण आनन्द जे होइले महीपाळ ।
जरता कण्ठरे नेइ लम्बाइले माळ ॥ १३ ॥

यह पंचरत्न से भरा थाल निश्चित रूप से प्राप्त हो जाएगा । ५ यह सुनकर राजा का चित्त प्रसन्न हो गया । उन्होंने पंचरत्न से भरा हुआ बाँस का थाल ढिंढोरा पीटनेवाले के हाथ में दे दिया । ६ सम्मान के साथ वीर-तूर्य, नगड़िया तथा भेरी बजाकर ढिंढोरा पीटनेवाला बोला कि समस्त लोग सुनिए । ७ शृंगी ऋषि महात्मा विभाण्डक के पुत्र हैं जो कौशिकी नदी के तीर पर रहते हैं । ८ उन मुनि के आगमन से जल-वृष्टि होगी । जो भी उन्हें ले आएगा उसे यह रत्न-पूरित बाँस की थाली प्राप्त होगी । ९ यह सुनकर जरता नाम वाली नृत्यांगना, जो भाग्य-वश बुद्धि होकर उत्पन्न हुई थी, उसने आकर पंच-रत्न-पूरित वंश-थाली को स्पर्श किया और कहने लगी कि मैं शृंगी ऋषि को ला दूँगी । १०-११ ऐसा सुनकर प्रसन्नचित्त होकर ढिंढोरा पीटनेवाला उसे राजा के समक्ष ले गया । १२ देखते ही महीपाल आनन्दित हो गये । उन्होंने माला लेकर जरता के कंठ में डाल दी । १३ राजाओं में मणि

बिनयी होइण जे बोलइ नृपमणि ।
मोहर राज्यकु रक्षा कर गो तरुणी ॥ १४ ॥
जरता बोलइ जे जोड़िण बेनि कर ।
शुण देब चम्पाबती नग्नर ठाकुर ॥ १५ ॥
अगम्य अरण्य से जे शाळ शीळ बाट ।
पादरे गमिले जे लभिबुँ बड़ कष्ट ॥ १६ ॥
दुइ नाब सजकरि दिअ नृपबर ।
अप्रमादे आणि देबुँ ऋषिर कुमर ॥ १७ ॥
शुणि करि सन्तोष होइले नृपमणि ।
आज्ञा देले नाब गढ़ि देलेक बिन्धाणी ॥ १८ ॥
नउका उपरे जे बिबिध बृक्ष रोपि ।
फळिला पाचिला बृक्षमान तहिँ थापि ॥ १९ ॥
आम्र पणस कदळी टभा नारिकेळ ।
जेउट नारंग आदि नाना रम्य फळ ॥ २० ॥
टगर तराट जे मन्दार मल्ली जूई ।
चम्पा नागेश्वर किआ कनिअर जाई ॥ २१ ॥
शुभ अनुकूळ जोगे जरता बाहार ।
संगरे घेनिण बार [illegible] आबर ॥ २२ ॥

के समान श्रेष्ठ भूपाल ने विनयशील होकर कहा, हे तरुणी ! मेरे राज्य की रक्षा करो । १४ जरता दोनों हाथ जोड़कर बोली, हे देव ! चम्पावती नगरी के अधीश्वर ! सुनिए । १५ उस अगम्य जंगल का मार्ग बहुत ही टेढ़ा-मेढ़ा है । पदयात्रा करने में तो महान कष्ट होगा । १६ हे नृपश्रेष्ठ ! आप हमे दो नौकाएँ सज्जित करके प्रदान करें, फिर बिना किसी प्रमाद के हम ऋषिकुमार को ला देंगे । १७ नृपश्रेष्ठ यह सुनकर सन्तुष्ट हो गये । आज्ञा देने पर काष्ठकार ने नौकाएँ गढ़ दी । १८ नौकाओं के ऊपर विविध प्रकार के वृक्ष लगाये गये । सुपक्व फलों वाले फले हुए वृक्ष भी वहाँ स्थापित किये गये । १९ आम, कटहल, केले, खट्टा, निम्बू, नारियल, पारीफा तथा नारंगी आदि नाना प्रकार के सुन्दर फल लगे थे । २० चाँदनी, मन्दार, बेला, जुही, चम्पा, नागेशर, कनेर, चमेली इत्यादि पुष्प लगे थे । २१ मंगलमय अनुकूल योग में साथ में युवती वेश्याओं को लिये हुए वस्त्राभूषणों

बस्त्र अळंकार मण्डि सुबेश सुन्दरी ।
बोलइ बिक्रम दिशे स्वर्ग अपसरी ।। २३ ।।

सप्तविंश छान्द

राग—ममक

गंगार भितरे नाब बाहिण घेनिले ।
केतेक दिनरे जाइँ प्रबेश होइले ।। १ ।।
कउशिक नदीतीरे होइले प्रबेश ।
मुनि देखि जरता लभिले अति तोष ।। २ ।।
मढ़िआ दुआरे जे अछइ बेळ गच्छ ।
तहिँ तळे बसिछन्ति बिभाण्डक बत्स ।। ३ ।।
कृष्णाजिन माड़ि बसि ऊद्धर्व मुख दोइ ।
रुद्राक्षर माळा करे घेनिण जपइ ।। ४ ।।
कर्णरे तम्बा कुण्डळ चारि गोटि जट ।
बेनि गोटि शृङ्ग तार शिरकु मुकुट ।। ५ ।।
ए समये जरता जे प्रबेश होइले ।
तांकु देखि ऋष्यशृंग आचम्बित हेले ।। ६ ।।
जन्मरु जुबती तार देखिबार नाहिँ ।
गउरब करि तांकु पाखरे बसाइ ।। ७ ।।

से सुबेश सुसज्जित सुन्दरी जरता बाहर निकल पड़ी । विक्रम कहता है कि वह स्वर्ग की अप्सरा-सी दिख रही थी । २२-२३

छान्द—२७

राग—ममक

गंगा में नाव चलाकर जा पहुँचने में कुछ दिन लग गये । कौशिक नदी के तट पर प्रवेश होते ही मुनि को देखकर जरता अत्यन्त सतोष को प्राप्त हुई । १-२ कुटी के द्वार पर बेल का वृक्ष था । जिसक नीचे विभाण्डक के पुत्र बैठे थे । ३ कृष्ण मृगचर्म पर वह ऊपर की ओर मुख किये हुए हाथ में रुद्राक्षमाला लिये जाप कर रहे थे । ४ कानों में ताँबे के कुण्डल थे । सिर पर दो सींग थे जो चार जटाओं से लिपटा हुआ मुकुट के समान लग रहा था । ५ इसी समय जरता वहाँ प्रविष्ट हुई । जिसे देखकर शृगी ऋषि आश्चर्य में पड़ गये । ६ उन्होंने अपने जन्म से ही युवती नही देखी थी, फिर भी उन्होंने बड़ा आदर

जरताकु देखि मुनि पुछन्ति बचन ।
केणिकि हे महाऋषि करुछ गमन ॥ ८ ॥
काममोहिनी बोइले शुण मुनिबर ।
मकरे रहिलुँ आम्भे प्रयाग तीर्थर ॥ ९ ॥
कुम्भमासे अइलुँ जे हरद्वार बाटे ।
चइत्रे रहिलु आम्भे काशी नदी तटे ॥ १० ॥
मेष मासे बाराणसी क्षेत्रे रहिलुँ ।
एबे अजोध्याकु आम्भे जिबुटि बोइलुँ ॥ ११ ॥
शुणि करि ऋष्यशृङ्ग आनन्द होइले ।
आपणा आसने तांकु नेइ बसाइले ॥ १२ ॥
हरिड़ा बाहाड़ा मुनि घेनि निजकर ।
कन्दमूळ फळ किछि देले उपहार ॥ १३ ॥
ताहा देखि जरता जे हस हस होइ ।
एहा अटे किस फळ बोलि पचारइ ॥ १४ ॥
एहि फळ मुनि आम्भे न करु आहार ।
आम्भर राज्यर फळ देख मुनिबर ॥ १५ ॥
एते बोलि रम्भा लड़ु नेइ समर्पिले ।
भुंजि करि ऋष्यशृङ्ग आनन्द होइले ॥ १६ ॥

करते हुए उसे अपने पास बैठा लिया । ७ जरता को देखकर मुनि ने पूछा कि हे महर्षि ! आपने कहाँ के लिए प्रस्थान किया है ? ८ कामदेव को मोहित करनेवाली (वेश्या) ने कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिए । मैं मकर में प्रयाग तीर्थ में रही । ९ और कुम्भ मास में हरिद्वार जा पहुँची और चैत्र में मैं काशी नदी के तट पर थी । १० मेष मास में वाराणसी क्षेत्र में रही, अब मैं अयोध्या जाऊँगी, इस प्रकार उसने कहा । ११ शृंगी ऋषि यह सुनकर प्रसन्न हो गये और उसे लेकर अपने आसन पर बैठा लिया । १२ हर्र-बहेड़ा और कुछ कन्दमूल-फल अपने हाथों में लेकर मुनि ने उसे उपहार में दिये । १३ यह देख कर जरता ने हँसते हुए पूछा कि ये क्या फल हैं ? १४ हे मुनि ! हम इस प्रकार के फल भोजन में नहीं लेती । हे मुनिश्रेष्ठ ! हमारे राज्य के फलों को देखिए । १५ इतना कहकर रम्भा ने लड्डू लेकर उन्हे समर्पित किये, जिसे खाकर शृंगी ऋषि को बड़ा आनन्द आया । १६

काममोहिनीकि चाहिँ ऋषि पचारन्ति ।
तुम्भर अंगरे किस फळ देइछन्ति ॥ १७ ॥
जरता बोलइ तुम्भे शुण महामुनि ।
ए आम्भर कुचशम्भु अंगे थाउँ घेनि ॥ १८ ॥
अबना अक्षर पाद नाहिँ एहांकर ।
कररे मर्दन कले द्यन्ति ए जे बर ॥ १९ ॥
नयने अंजन रंजि कपाळे सिन्दूर ।
पर पुरुषर संगे पीरति आम्भर ॥ २० ॥
दिब्य पुरुषकु दिब्य भुबनकु नेउ ।
दिब्य रतिरसे ताँकु दिब्य भोग देउँ ॥ २१ ॥
एते कहि कामिनी जे मुनिंकि धइले ।
अंके बसाइण अंगे अंग लगाइले ॥ २२ ॥
हस हस होइ मुनि बोलन्ति बचन ।
चाल तुम्भ राज्यकु हे करिबा गमन ॥ २३ ॥
ताहा शुणि मुनिंकि जे नाबे बसाइले ।
सात दिने चम्पाबती नगरे मिळिले ॥ २४ ॥
मुनि आसन्तेण बृष्टि कला आखण्डळ ।
बोले गोपी जन प्रजा आनन्द सकळ ॥ २५ ॥

काममोहिनी को देखकर ऋषि ने पूछा कि तुम्हारे अंग में ये कौन से फल लगे हैं। १७ जरता ने कहा, हे महात्मन् ! आप सुनिए, ये हमारे कुच-शम्भु है। जिन्हें अपने अंग मे लिये रहती हूँ। १८ इनके न तो पैर हैं और न आदि-अन्त। हाथों से मर्दन करने पर यह वर प्रदान करते हैं। १९ नेत्रों में काजल और माथे में सिन्दूर लगाकर हम अन्य पुरुषों के साथ प्रीत करती हैं। २० दिव्य पुरुषों को सुन्दर महल में ले जाकर दिव्यकेलि-रस प्रदान करके उन्हें श्रेष्ठ भोग प्रदान करती हैं। २१ इतना कहकर सुन्दरी कामिनी ने मुनि को पकड़कर अपनी गोद में बैठाकर अंगों से अंगों को भिड़ा दिया। २२ ऋषि ने हँसते हुए कहा कि चलो, अब तुम्हारे राज्य की यात्रा करेंगे। २३ यह सुनकर उसने ऋषि को नाव में बैठा लिया। और सात दिनों में चम्पावती नगर जा पहुँची। २४ मुनि के आने से ही देवराज ने अखण्ड वर्षा की। गोपी कहता है कि सारी प्रजा आनन्द से झूम उठी। २५

अष्टाविंश छान्द

राग—जमक

आनन्द होइले देखि लोमपाद राजा ।
ऋष्यशृङ्ग मुनिकर कले पाद पूजा ।। १ ।।
हेममय पुरे नेइ बिजे कराइले ।
भोजन निमन्ते नाना उपचार देले ।। २ ।।
महासुख पाइ ऋष्यशृङ्ग जे आनन्द ।
श्रीराम चरणे भजे विक्रम नरेन्द्र ।। ३ ।।

एकोनत्रिंश छान्द

राग—जमक

शुण हे सुजन जन अपूर्व चरित ।
जाहा शुणि प्राणी माने होइबे मुकत ।। १ ।।
हर कोळे बसिण जे पुछन्ति गउरी ।
श्रीराम जन्मचरित कह त्रिपुरारि ।। २ ।।
पार्वतीङ्क बचने कहन्ति शूळपाणि ।
श्रीराम जन्म चरित शुण गो सर्वाणि ।। ३ ।।

छान्द—२८

राग—यमक

महाराज लोमपाद यह देखकर प्रसन्न हो गये और ... शृंगी ऋषि के चरणों की पूजा की । १ ... उन्होंने मुनि को ले ... कर स्वर्ण-महल में रखा और भोजन में नाना प्रकार के व्यंजन समर्पित किये । २ शृंगी ऋषि को महान सुख की प्राप्ति ... र बड़ा आनन्द हुआ । विक्रम नरेन्द्र श्रीराम के चरणों का भजन करता है । ३

छान्द—२९

राग—यमक

हे सज्जन पुरुषो ! अपूर्व चरित्र का श्रवण करो जिसे सुनकर प्राणी मुक्ति-लाभ करता है । १ शंकर के क्रोड़ में विराजित पार्वती बोली, हे त्रिपुरासुर के शत्रु शंकर ! श्रीराम का जन्म-चरित्र सुनाइए । २ पार्वती की बात को सुनकर त्रिशूलधारी ने कहा, हे सर्वाणी ! श्रीराम

एथु अनन्तरे लोमपाद नृपसाइँ ।
ऋष्यशृङ्गे बिभा देले आपणा तनयी ।। ४ ।।
शान्ता कन्याकु बिवाह होइलेक मुनि ।
लोमपाद गृहे करि अछन्ति रहणि ।। ५ ।।
ए समये अजोध्यार साइँ दशरथ ।
चिन्तितरे थान्ति केन्हे लभिबेक पुत्र ।। ६ ।।
पात्र मंत्री पुरोहित मानंकु डकाइ ।
निकटे बसाइ राजा एमन्त कहइ ।। ७ ।।
षाठिए हजार बर्ष हेला मोते जाण ।
पुत्र पाइँ चिन्तानळ दहे हृद बन ।। ८ ।।
एथकु केउँ उपाय कले पुत्र हेब ।
कह पात्र मंत्रीगण जाहा जाण सर्ब ।। ९ ।।
शुणिण सुमंत्र मंत्री बोले जोड़िकर ।
मुँ जाहा कहुछि देब शुणन्तु सत्वर ।। १० ।।
ऋषिमानंक मुखरु शुणिअछि पूर्बे ।
तुम्भ आगे सत्य करि कहुअछि एबे ।। ११ ।।
अबश्य तुम्भर हेबे चारि गोटि सुत ।
आसि जज्ञ कले ऋष्यशृङ्ग तपोबन्त ।। १२ ।।

का जन्म-चरित्र श्रवण करो। ३ इसके उपरान्त महाराज लोमपाद ने अपनी कन्या का विवाह शृंगी ऋषि के साथ कर दिया। ४ मुनि ने शान्ता नामक कन्या से विवाह किया और लोमपाद के भवन में ही रहने लगे। ५ इसी समय अयोध्या के स्वामी राजा दशरथ पुत्र-प्राप्ति के विषय में चिन्तित हो गये। ६ पात्रों, परिषद, मंत्रियों तथा पुरोहितों को अपने समीप बुलाकर राजा इस प्रकार बोले ।। ७ ।। आज साठ हज़ार वर्षों से मेरे हृदय रूपी वन को पुत्र-प्राप्ति की चिन्ता की ज्वाला जला रही है। ८ इस समय कौन सा उपाय करने से पुत्र की प्राप्ति होगी ? हे पात्र-परिषद् एवं मंत्रियो ! सभी लोग जो कुछ भी जानते हों वह हमसे कहें। ९ यह सुनकर मंत्री सुमन्त्र ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! जो भी मैं कह रहा हूँ उसे शीघ्र ही सुनें। १० पूर्वकाल में मैंने ऋषियों के मुख से सुना था वह आपके समक्ष सत्य-सत्य कहता हूँ। ११ आपके निश्चय ही चार पुत्र होंगे, यदि तपस्वी शृंगी ऋषि आकर यज्ञ करवा दें। १२

दशरथ बोलन्ति से ऋषिछन्ति काहिँ ।
किए आणि देव मोते काहुँ पाइ बइँ ॥ १३ ॥
मंत्रीवर बोले चम्पावतीरे से छन्ति ।
लोमपाद तुम्भर जे मइत्र अटन्ति ॥ १४ ॥
सेठाकु गमन कले पाइब निश्चय ।
एहा अटे सुनिश्चित शुण नर राय ॥ १५ ॥
एहा शुणि आनन्द होइले दण्डधारी ।
चतुरंग वळ साजि बेगे बिजे करि ॥ १६ ॥
वजाइण नाना वाद्य टमक निशाण ।
महा समारोहे राजा कलाक प्रयाण ॥ १७ ॥
तिनि दिने चम्पावती कटके प्रबेश ।
वेनि मित्र भेट होइ होइले सम्भाष ॥ १८ ॥
ऋष्यशृङ्ग बोइले हे दशरथ राजा ।
कुशळे अछन्ति टिकि तोर राज्य प्रजा ॥ १९ ॥
कुशळे वृष्टि कराइ टिकि आखण्डळ ।
कह कह तोर पुत्र नातिकि कुशळ ॥ २० ॥
शुणि दशरथ शोके गद गद होइ ।
चरणतळे पड़िले गड़ धालि शोइ ॥ २१ ॥

दशरथ ने कहा कि वह ऋषि कहाँ है ? मेरे लिए उन्हें कौन यहाँ ले आयेगा ? हम उन्हें कहाँ पायेंगे ? १३ श्रेष्ठ मंत्री ने कहा कि वह चम्पावती नगरी में महाराज लोमपाद के यहाँ हैं जो आपके मित्र हैं । १४ वहाँ जाने पर निश्चित ही वह मिल जाएँगे । हे राजेन्द्र, इसे आप सुनिश्चित मानिये । १५ यह सुनकर महाराज प्रसन्न हो गये । उन्होंने चतुरंगिनी सेना को सज्जित करके शीघ्र ही प्रस्थान कर दिया । १६ नाना प्रकार के वाद्ययंत्र, टमक तथा निशाण बजाकर महान उत्सव में राजा ने प्रस्थान किया । १७ तीन दिनों में वह चम्पावती दुर्ग में जा पहुँचे । दोनों मित्र आपस में मिलकर वार्तालाप करने लगे । १८ शृंगी ऋषि ने पूछा, हे राजन् ! तुम्हारा राज्य एवम् प्रजा सकुशल तो है ? १९ इन्द्र ने कुशलता की वृष्टि तो की है ? तथा बताइये, तुम्हारे पुत्र एवं नाती सकुशल तो हैं ? २० यह सुनते ही दशरथ शोक से द्रवित होकर उनके चरणों को दृढता से पकड़कर पृथ्वी पर गिरकर प्रणत हो गये । २१ वह कहने लगे कि आपके प्रसाद से मेरा सम्पूर्ण रूप से मंगल है । आप पुत्र-दान देकर मेरे

बोलन्ति तुम्भ प्रसादे सर्ब शुभ मोर।
पुत्र दान देइ मो बंशकु रक्षाकर ॥ २२ ॥
शुणि करि ऋष्यशृङ्ग कल्याण बाञ्छन्ति।
एमन्त बसिण बेनि राजा बिचारन्ति ॥ २३ ॥
दशरथे चाहिँ ऋषि बोलन्ति बचन।
चाल तुम्भ राज्यकु हे करिबा गमन ॥ २४ ॥
शुणि दशरथ राजा हर्षचित्त होइ।
ऋष्यशृङ्ग लोमपाद घेनिण चळइ ॥ २५ ॥
तिनि दिने अजोध्यारे प्रबेशिले जहुँ।
बोले पद्मनाभ जाग आरम्भिले तहुँ ॥ २६ ॥

त्रिश छान्द

मुनिबर बाणी

ऋष्यशृङ्ग जाग कले, देबता सन्तोष हेले।
पूर्ण आहुतिर शेषे, जात पुरुषे; सुजने हे ॥ १ ॥
दाह सुबर्ण शरीर, पाउँश घेनिछि कर।
मुनिक करे से देले, अदृश्य हेले ॥ २ ॥
मुनि देले राजा कर, घेनिण से नृपबर।
कौशल्या कैकेयी राणी, देले से आणि ॥ ३ ॥

वंश की रक्षा करें। २२ यह सुनकर शृंगी ऋषि ने आशीर्वाद दिया और इस प्रकार दोनों राजा बैठकर विचार-विमर्श करने लगे। २३ दशरथ की ओर ताकते हुए ऋषि ने कहा, चलो! हम तुम्हारे राज्य में चलेंगे। २४ यह सुनकर राजा दशरथ प्रसन्न मन से शृंगी ऋषि तथा लोमपाद को लेकर चल पड़े। २५ पद्मनाभ कहता है कि सभी लोगों ने तीन दिन में अयोध्या पहुँचकर यज्ञ प्रारम्भ कर दी। २६

छान्द—३०

मुनिवर वाणी

शृंगी ऋषि के यज्ञ करने से देवता सन्तुष्ट हो गये। हे सुजनो! पूर्णाहुति के शेष होने पर अग्निदेव प्रकट हो गये। १ तप्त-कांचन-सदृश शरीर वाले अग्निदेव हाथों में खीर लिये थे। उन्होंने मुनि के हाथों में खीर प्रदान की और अदृश्य हो गये। २ मुनि ने उसे राजा

बेनि राणी बेनि भाग, सुमित्राकु अनुराग ।
करिण ताहांकु देले, चरु खइले ।। ४ ।।
उदे नोहु रबि प्रभा, जेन्हे प्राची दिशे शोभा ।
सेहि रूपे से सुन्दर, रहि गर्भर ।। ५ ।।
गला बेनि पञ्चमास, हेला प्रसब दिवस ।
चइत्र शुक्ल नबमी, पुत्र जनमि ।। ६ ।।
जेते से लक्षणमान, कहिथिले तपोधन ।
तहिँकि कोटिए गुणे, जात लक्षणे ।। ७ ।।
तनु मरकत श्रेणी, सकळ देव अग्रणी ।
कौशल्या उदरु जात, अखिळ तात ।। ८ ।।
कैकेयी उदरु पुत्र, दुर्बादळ प्राय गात्र ।
अबतरिले नन्दन, ताहांक सान ।। ९ ।।
सुमित्रा गर्भरु जात, होइले से बेनि सुत ।
शुद्ध सुबर्ण शरीर, अति मधुर ।। १० ।।
देखि दशरथ तोष, राइले द्विज बिशेष ।
अश्व गज गाव दान, देले हिरण्य ।। ११ ।।
हेला हाट तुठ जूर, नेले से इतर नर ।
देबतामानंकु तोष, करि सन्तोष ।। १२ ।।

के हाथों में प्रदान किया । श्रेष्ठ राजा ने उसे लेकर महारानी कौशल्या एवं कैकेयी को प्रदान किया । ३ दोनों रानियों ने बड़े प्रेम के साथ दो भाग करके सुमित्रा को प्रदान किये तथा (सभी ने) खीर खाई । ४ सूर्योदय के पूर्व जिस प्रकार प्राची दिशा सुशोभित होती है उसी प्रकार गर्भवती होकर वह सभी मनोहर दिखने लगीं । ५ दस महीने व्यतीत होने पर प्रसव का दिन आया । चैत्र शुक्ल नवमी को पुत्रों का जन्म हुआ । ६ तपस्वी शृंगी ऋषि ने जितने लक्षण बताए थे उससे कोटि गुणा अधिक लक्षण उत्पन्न हो गये । ७ समस्त देवताओं में अग्रगण्य मरकत-सदृश अंगकान्ति वाले विश्व के नाथ कौशल्या के गर्भ से उद्‌भूत हुए । ८ दूर्वादल-सदृश शरीरवाले उनसे छोटे पुत्र ने कैकेयी के गर्भ से जन्म लिया । ९ सुमित्रा के गर्भ से अत्यन्त मधुर विशुद्ध स्वर्ण वर्णवाले दो पुत्र उत्पन्न हुए । १० यह देखकर राजा दशरथ सन्तुष्ट हो गये । उन्होंने उत्तम ब्राह्मणों को बुलाकर हाथी, घोड़े, गाएँ, स्वर्ण, धनादि दान में प्रदान किये । ११ बाजार के सदृश धन द्रव्यों के अम्बार लग गये जिन्हें अन्य लोगों ने ग्रहण किया । देवताओं को अर्चना

कराइले नृत्य गीत, उत्सब हेला बहुत ।
दुन्दुभि बाजे स्वर्गरे, हृष्ट अमरे ।। १३ ।।
कलेक नाभि छेदन, सुगन्ध कले लेपन ।
उष्ण जळरे जे स्नान, कले बहन ।। १४ ।।
श्रीअंग पोछि बसन, कराइले क्षीरपान ।
रत्न दोळि परे तोळि, शुआन्ति बाळी ।। १५ ।।
जेबण राम चरण, सकळ लोक शरण ।
से प्रभु जनम आसि, भणिले बिसि, सुजन हे ।। १६ ।।

एकत्रिंश छान्द

राग—खेमटा

पञ्चुआति षष्ठीघर उत्सब गला ।
एकबिंश दिबस प्रबेश होइला ।। १ ।।
बशिष्ठ आदि सकळ ब्राह्मणगण ।
दशरथ कराइले नाम करण ।। २ ।।
राम नाम ज्येष्ठर भरत कनिष्ठ ।
बिचारिण नाम देले मुनि बशिष्ठ ।। ३ ।।

से सन्तुष्ट किया गया। १२ नृत्य-गीतादिकों से नाना प्रकार के उत्सव मनाये गये। स्वर्ग में दुन्दुभी बजने लगी। देवगण प्रफुल्लित हो गये। १३ नाभिच्छेदन के उपरान्त सुगन्ध-लेपन किया गया तथा शीघ्र ही तप्त जल से उन्हें स्नान कराया गया। १४ श्री अंगों को वस्त्रों से पोंछकर क्षीरपान कराया गया। रमणियाँ उन्हें रत्नविमण्डित झूलों में लिटाकर सुलाने लगीं। १५ श्री रामचन्द्र के जो चरण समस्त लोकों के लिए शरण्य हैं, उसी प्रभु ने आकर जन्म धारण किया। हे सुजन पुरुषो ! मैंने बैठकर उनका वर्णन किया है। १६

छान्द—३१

राग—खेमटा

पंचदिवसीय एवं षष्ठी का उत्सव समाप्त हो गया तथा इक्कीसवाँ दिन आ पहुँचा। १ दशरथ ने वशिष्ठ आदि समस्त ब्राह्मण वर्ग से नामकरण करवाया। २ महर्षि वशिष्ठ ने विचार करके बड़े का नाम राम तथा छोटे का नाम भरत रखा। ३ सुन्दर लक्षणों को देखते

सुलक्षण देखि लक्षण नाम देले ।
शत्रुघन ता'क सानुजकु बोइले ।। ४ ।।
दिनु दिनु बढ़िले से चारि नन्दन ।
देखि दशरथ राजा आनन्द मन ।। ५ ।।
पाळन्ति, दोळि सुत गाइण गीत ।
बजान्ति जुबती बीणा बाद्य निरत ।। ६ ।।
गुळ्गुचारे अधरु बहइ नाळ ।
झाळबिन्दु गळित श्रीमुख मण्डळ ।। ७ ।।
कमळ दळ लोचनु बहे कज्जळ ।
झुलिबारे ध्वनि करे मेखळा माळ ।। ८ ।।
कुटिळ कुन्तळ माळ मुकुता फळ ।
बाजेणि नूपुर बाजे चरण तळ ।। ९ ।।
कचटि बाहुटी हेम सूत्रे छन्दणी ।
कटि तटे पीताम्बर सुमणि श्रेणी ।। १० ।।
आण्टुआइ भरादेइ पुण उठन्ति ।
केते बेळे कान्दि धरणीरे पड़न्ति ।। ११ ।।
जुबती बेढ़ नचान्ति बजाइ ताळि ।
करी शाबक मण्डिक्ति करन्ति केळि ।। १२ ।।

हुए लक्ष्मण तथा छोटे भाई का नाम शत्रुघ्न रख दिया गया । ४ चारों पुत्र दिन-प्रतिदिन बढने लगे, जिन्हें देखकर राजा दशरथ का मन आनन्द से भर गया । ५ युवतियाँ निरन्तर बीणा बजाकर गान करती हुई बालकों को झूला झुलाती रहती थीं । ६ उनके श्रीमुखमण्डल अधरों से नि:सृत लार तथा पसीने की बूंदों से व्याप्त थे । ७ जलज नयनों से काजल बह रहा था । हिलती हुई मेखला-माल ध्वनि कर रही थी । ८ घुँघराले बाल थे तथा मुक्तामणि मालाएँ पड़ी थीं । चरणों में बजनेवाले नूपुर ध्वनि कर रहे थे । ९ केशों में चिमटी बाहुओं में सुनहरे तारोंवाली बाहुटी (बाजूबन्द) बँधी थीं । पीताम्बर पर कटि प्रदेश में सुन्दर मणि श्रेणी जड़ी हुई थी । १० घुटने साधकर (पैरों पर भार देकर) बार-बार उठते थे । कभी-कभी रोते हुए पृथ्वी पर गिर पड़ते थे । ११ युवतियाँ आगे बढ़कर तालियाँ बजा-बजाकर उन्हें नचातीं थीं । ऐसा प्रतीत होता था जैसे हाथी के बच्चे विभूषित होकर केलि कर रहे हों । १२ चारों कुमार धूल में तत्परता से खेल रहे

चारि कुमरे जे धूळि खेळे तत्पर ।
लीळा भावे आबोरन्ति बालि नअर ।। १३ ।।
पाञ्च बरष पूरन्ते सेहु कुमरे ।
आरोहण कले अश्व गज निकरे ।। १४ ।।
सुबेग बळिला चित्त होइले धीर ।
समस्त गुणे निकर बीरंक बर ।। १५ ।।
शुक्लपक्ष चन्द्रप्राय बढ़न्ति राम ।
चूड़ादि बेनि पाञ्च कले ब्रत कर्म ।। १६ ।।
पढ़िले बेद पुराण शास्त्र आगम ।
दण्डा खण्डा धनुर्बिद्या क्षत्रिय धर्म ।। १७ ।।
बशिष्ठंकठारु शिक्षा कले सकळ ।
तप्त ऋतु रबिप्राय तेज प्रबळ ।। १८ ।।
मृगया करिण मृगमान मारन्ति ।
शरधा करिण मृग पत्नी धरन्ति ।। १९ ।।
धरन्ति करीजूथरु करी शावक ।
मारन्ति शार्दूळ गण्डा जीब अनेक ।। २० ।।
छुआ सिंह प्राय गति दिशे लाबण्य ।
सप्तम बरष आसि हुए सम्पूर्ण ।। २१ ।।

थे तथा पुरवासी महिलाओं को अपनी क्रीड़ामयी लीलाओं से आकृष्ट कर रहे थे। १३ पाँच वर्ष पूर्ण होते-होते सभी राजकुमार हाथी और घोड़ों पर आरोहण करने लगे। १४ शनैः-शनैः उनके चित्त धीर और गम्भीर होने लगे। सभी श्रेष्ठवीर तथा गुणों के भण्डार थे। १५ शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान श्रीराम बढ़ने लगे। चूड़ाकरण आदि दश संस्कारों से युक्त होकर यज्ञोपवीत किये गये। १६ उन्होंने वेद, पुराण, शास्त्र, आगम आदि पढ़े और लाठी, तलवार तथा क्षत्रियोचित धर्मयुक्त धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त की। १७ बशिष्ठ जी की सान्निध्यता में उन्होंने सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त की। उनका तेज ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के समान प्रचण्ड था। १८ शिकार करते हुए पशुओं का वध करते थे और बड़े प्यार से हिरणियों को पकड़ लेते थे। १९ हाथियों के झुण्ड से गज-शावकों को पकड़ लेते थे। सिंह-गैंड़े आदि नाना प्रकार के जीवों का वध करते थे। २० उनका सौन्दर्य तथा सिंह-शावकों जैसी गति दर्शनीय थी। आज उनके सात वर्ष पूर्ण हो चुके थे। २१ श्रीराम की किशोर अवस्था एवं नवीन अंगकान्ति को देखकर कामदेव

नब तन किशोर बयस श्रीराम ।
छबि देखि मुरुछित हुअइ काम । २२ ॥
काम शास्त्र पठनरे बळिला मन ।
सुबेश जुबतीरे निश्चळ नयन ॥ २३ ॥
संगते शरधा चित्त शुणन्ति गीत ।
बोले बिशि मनसिज मनरु जात ॥ २४ ॥

द्वात्रिंश छान्द

राग–देशाक्ष

एक दिने सभाकरि दशरथ दण्डधारी बिजे करि अछन्ति आस्थाने । बशिष्ठ जाबाळी बामदेब सुमंत्र सहिते सभा शोभा दिशन्ति एमाने हे ॥ गाधिसुत । एहि समये प्रवेश हेले । देखिण राजन हृष्ट मान्यकरि मुनिश्रेष्ठ बसिबाकु दिव्यासन देले से ॥ १ ॥

बिश्वामित्र तपोधन अजोध्यापुर राजन बहुबिधिरे कलेक पूजा । ए मोहर बेनि नेत्र अज होइला पबित्र कृताञ्जलि होइ कहि राज हे ॥ मुनिबर । कि कारणे कले आगमन । ए मोर पातकी काय मोठारे एड़े सदय पबित्र होइला मो भबन हे ॥ २ ॥

मूच्छित हो जाता था । २२ उनका मन कामशा[illegible] अध्ययन में लग गया सुबेश युवती को देखकर नेत्र निश्चल हो जाते थे । २३ उनके साथ रहकर प्रेमयुक्त हृदय से गीत [illegible] करते थे । विक्रम नरेन्द्र कहते हैं कि उनके मन में काम का उद्भव [illegible] गया । २४

छान्द—३२

राग–देशाक्ष

एक दिन महाराज दशरथ सभा का आयोजन करके सिंहासन पर विराजमान थे । वशिष्ठ, जाबाली, वामदेव तथा सुमन्त्र से सभा सुशोभित हो रही थी । इसी समय गाधि-पुत्र विश्वामित्र आ पहुँचे । महाराज ने देखते ही प्रसन्न मन से श्रेष्ठ मुनि का सम्मान किया और बैठने के लिए दिव्य आसन प्रदान किया । १ अयोध्या नरेश ने तपस्वी विश्वामित्र की नाना प्रकार से पूजा की, राजा ने दोनों हाथ जोड़कर कहा कि मेरे दोनों नेत्र आज पवित्र हो गये । हे मुनिराज ! आपका आगमन किस हेतु हुआ है ?

बोलन्ति से योगीश्वर शुण आहे नृपबर सिद्धबने सर्वमुनि माने। आरम्भ करन्ते जाग असुरे करन्ति भोग भांगिले से आम्भ जज्ञस्थान हे॥ नृपबर। राम लक्ष्मणंकु मोते देब हे। मारिबे असुरकुळ शुण हे नृप शार्दूळ क्षितिरे बहु जश पाइब हे॥ ३॥

एमन्त शुणि राजन मणिले बज्रपतन बिकळ होइला तांक मन। दश दिगकु अनाइ खर निश्वास पकाइ बेळुं बेळुं होइले अज्ञान से॥ नृपबर। मोह तेजि महीरु उठिले। भयरे होइ कातर बहइ नयनु नीर बशिष्ठंक मुखकु चाहिंले से॥ ४॥

बोलन्ति बशिष्ठ जति शुण आहे महीपति रामचन्द्र दिअ मुनि संगे। शोक मनु हर राय एथकु न कर भय मारिबे असुर रण रंगे हे॥ नृपबर। न देले होइब सर्बनाश। तुम्भर राम कुमर स्वयं हरि अबतार पाइब एथिरु बहुजश हे॥ ५॥

कहन्ति से नृपबर ए मोर बेनि कुमर न जाणन्ति धनुशर धरि। जननींक सुख सीमा आम्भ नयन प्रतिमा केबळ नेउछ

जो आपने मेरे जैसे पातकी शरीर पर कृपा करते हुए मेरे भवन को पवित्र किया। २ वह योगीश्वर बोले, हे राजेन्द्र ! सुनो। समस्त ऋषियों ने सिद्धवन में यज्ञ आरम्भ किया था। राक्षसों ने हमारे यज्ञस्थान को अशुद्ध कर डाला, और उसका उपभोग करने लगे। हे श्रेष्ठ राजन् ! मुझे राम और लक्ष्मण को दे दो। हे नृपकेशरी ! सुनो। (यह दोनों) राक्षसकुल का विनाश करके पृथ्वी तल पर महान यश अर्जित करेंगे। ३ ऐसा सुनते हुए राजा ने समझा जैसे उन पर बज्रपात हो गया हो। उनका मन व्याकुल हो गया। दसों दिशाओं को देखते हुए श्वास-प्रश्वास छोड़ते हुए बार-बार अचेत होने लगे। चेतना लौटने पर राजा पृथ्वी से उठे। भय से कातर अश्रुपरिपूरित नेत्रों से वह वशिष्ठ के मुख की ओर ताकने लगे। ४ महर्षि वशिष्ठ बोले, हे राजन् ! सुनो, रामचन्द्र को मुनि के साथ कर दो। तुम शोक का परित्याग करके निर्भय हो जाओ। हे राजन ! यह रणकौशल से असुरों का संहार कर डालेंगे। इनके न देने से सर्वनाश हो जायेगा। तुम्हारे पुत्र राम स्वयं नारायण के अवतार हैं। इससे इन्हें महान यश की प्राप्ति होगी। ५ राजाओं में श्रेष्ठ दशरथ ने कहा कि मेरे यह दोनों पुत्र धनुष-बाण धारण करना भी तो नहीं जानते। माताओं के सुख की सीमा और हमारे नयनों की प्रतिमा को ही आप ले रहे हैं। विक्रम नरेन्द्र कहते हैं कि राजा दशरथ ने राम और लक्ष्मण की बाँह पकड़कर मुनि के

ताहा हरि हे ।। मुनिबर । राम लक्ष्मणंक भुजधरि । पड़िले मुनिक पाद शोके होइ गदगद बोले बिशि समर्पिले हरि ।। ६ ।।

त्रयस्त्रिंश—छान्द

राग–यमक

पितांक बिकळ देखि श्रीराम लक्ष्मण ।
प्रबोध करि कहन्ति धरि धनुर्बाण ।। १ ।।
मातांक ठारु मेलाणि होइ बेनि भाइ ।
मुनि सगे धीरे धीरे गले पथ बाहि ।। २ ।।
आगे बिश्वामित्र मुनि पच्छे बेनि जन ।
प्रबेश होइले जाइ निबिड़ कानन ।। ३ ।।
देखिले अति सुन्दर महावन घोर ।
बिक्रम कहे दिबसे जेन्हे अन्धकार ।। ४ ।।

चतुस्त्रिंश छान्द—ताड़का बध

राग–कामोदी

राम लक्ष्मण बेनि, घेनि कौशिक मुनि; सरजू पारि होइ गले । गहन गिरि माळ, बिबिध तरुकुळ; मध्यरे प्रबेश होइले हे ।। १ ।।

चरणों में शोक से जर्जर होकर प्रणिपात किया, और भगवान को समर्पित कर दिया । ६

छान्द—३३

राग–यमक

पिता को व्याकुल देखकर श्रीराम और लक्ष्मण धनुष-बाण धारण करके उन्हें बोध प्रदान करने लगे । १ दोनों भाई माताओं से बिदा लेकर मुनि के साथ धीरे-धीरे गतिपथ पर चल दिये । २ आगे-आगे विश्वामित्र महर्षि और उनका अनुगमन करते हुए वह दोनों निर्जन वन में प्रविष्ट हुए । ३ विक्रम कहता है कि उन्होने अत्यन्त मनोहर घोर महाकानन को देखा जहाँ दिन में भी अन्धकार रहता था । ४

छान्द ३४—ताड़का-वध

राग–कामोदी

महर्षि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण दोनों को लेकर सरयू के पार हो गये । सघन पर्वतमालाओं तथा नाना प्रकार के वृक्षों के बीच ये

सुज्ञजने ! कामेश्वर सन्निधे मुनि, पाशे बसाइ भाइ बेनि । देले कोदण्ड दीक्षा समस्त मंत्र शिक्षा कराइ धनुर्बेद ध्वनि से ॥ २ ॥

से दिन सुखे तहिँ रहि निशि पुहाइ प्रातरु स्नान सन्ध्या कले । बेनि भाइंकु घेनि, आनन्द होइ मुनि पथ अनुसरिण गले हे ॥ ३ ॥

सुज्ञजने । चालन्ते महाघोर बन । मुनि हुअन्ति छन्न छन्न । मुनि भरसा पाइ, धनुरे गुण देइ टंकार कले घन घन से ॥ ४ ॥

गर्जन शुणि करि, गर्जि ताड़का सुरी; अनाइ रोषे चउपाश । तरु आयुध घेनि, बुलाइ नेत्र बेनि; पथरे होइला प्रबेश हे ॥ ५ ॥

सुज्ञजन । दशने चापिण अधर, तुण्डरु गळइ रुधिर । केश करि मुकुळ, टेकि बाहु जुगळ, दिशइ महा बिकराळ हे ॥ ६ ॥

राम संगे असुरी, बहु समर करि; मुनिक करु थिला भक्ष । ताहा जाणि श्रीराम धनुरे सन्धि गुण प्रहारिले असुरी मुख हे ॥ ७ ॥

लोग जा पहुँचे । १ हे सज्जनो ! मुनि ने दोनों भाइयों को कामेश्वर के निकट बैठाकर उन्हें कोदण्ड-दीक्षा तथा ध्वनि-सहित मंत्रों और धनुर्वेद की शिक्षा प्रदान की । २ उस दिन सुखपूर्वक वहीं रहकर रात्रि व्यतीत करके, प्रात:काल से ही, उन्होंने स्नान व सन्ध्या की और दोनों भाइयों को लेकर प्रसन्न मन से मुनि गति पथ पर चल दिये । ३ हे विदुषजन ! अत्यन्त घोर कानन में चलते हुए मुनि आशंकित हो रहे थे । (परन्तु) मुनि का भरोसा पाकर (श्रीराम ने) धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर घनघोर टंकार शब्द किया । ४ टंकार को सुनकर राक्षसी ताड़का गरजती हुई अपने दोनों नेत्रों को नचाती हुई क्रोध से चारों ओर देखकर वृक्ष आयुध लिये हुये मार्ग में आ धमकी । ५ हे सज्जनो ! उसने दांतों से अधर दबा रखे थे । मुख से रक्त बह रहा था । छिटके हुए बाल और दोनों भुजाओं को उठाये हुए वह अत्यन्त भयंकर दिखाई दे रही थी । ६ वह राक्षसी राम के साथ बड़ा युद्ध करके मुनि को खानेवाली थी, यह जानकर श्रीराम ने अपना धनुष चढ़ाकर राक्षसी के मुख पर प्रहार किया । ७ हे सुजन ! राम के बाण के मुख में पड़ने से

सुज्ञजने । राम शर ता मुखे पड़ि, स्वर्गे गला विमान चढ़ि; महागर्जन करि मृत्युपिण्ड ताहारि, पड़िला बन गिरि माड़ि हे ॥ ८ ॥

सिद्धबने प्रवेश राम देखि हरष, होइले सर्व मुनि माने । उच्चारिले निगम, जे बिधि जज्ञ कर्म, जागिले राम सावधाने हे ॥ ९ ॥

सुज्ञजने ! माता मरण जाणि सुते ! क्रोधरे अइले त्वरिते ! घेनि असुर सैन्य, ऋषि तप अरण्य, प्रवेश होइले से रात्रे हे ॥ १० ॥

श्रीराम महाबाहु, दूरु देखि सुबाहु मारिच संगतरे घेनि । राम लक्ष्मणंकर, सम्मुखरे समर कलेक आसि भाइ वेनि हे ॥११॥

सुज्ञजने ! श्रीराम शर कि केशरी । बिदारिला असुर करी । असुर बळ तृण शर कि हुताशन जेणेहेँ न गले उवरि जे ॥ १२ ॥

भ्रातृ मरण चाहिँ, मारीच धाइँ धाइँ, श्रीराम निकटे कहिला । किम्पा आम्भंकु मारि, धाता जाकु न पारि; से ऋषि खाइबुँ बोइला हे ॥ १३ ॥

वह विमान पर चढ़कर स्वर्ग चली गई । उसका मृत शरीर घनघोर गर्जना करके जंगल और पहाड़ों को दबाकर पृथ्वी पर गिर पड़ा । ८ सिद्धवन में राम को आया हुआ देखकर सम्पूर्ण मुनिमण्डल प्रसन्न हो गया । मंत्रोच्चार के साथ यज्ञकर्म प्रारम्भ हुआ । श्रीराम सावधानी से रक्षा करने लगे । ९ हे विद्वान पुरुषो ! माता की मृत्यु का समाचार पाकर उसके बेटे शीघ्र ही आ गये । रात्रि में वह राक्षसी सेना को लेकर मुनियों के तपोवन में प्रविष्ट हुए । १० महावाहु श्रीराम को दूर से ही देखकर सुबाहु मारीच को साथ में लेकर आया और दोनों भाइयों ने सामने आकर राम और लक्ष्मण के साथ संग्राम किया । ११ हे सुजनो ! श्रीराम के वाण रूपी सिंह ने राक्षस रूपी हाथियों को विदीर्ण कर डाला । असुर सेना तिनके के समान थी, जो श्रीराम के वाणों की अग्नि से बचकर जा नहीं पाये । १२ भाई की मृत्यु को देखकर मारीच ने दौड़ते हुए श्रीराम से कहा कि जिसका पार ब्रह्मा भी न पा सके मैं उन ऋषियों को खाऊँगा । तुम, हम लोगों को क्यों मार रहे हो ? १३ हे सुजन ! इस प्रकार सुनकर श्रीराम ने

सुज्ञजने। श्रीराम शुणि ता उत्तर। बोइले देख धनुशर। एमन्तरे मारिबुँ, तुम्भंकु जे नाशिबुँ, देइ अछन्ति बेदबर हे ।।१४।।

श्रीराम बाक्य शुणि, मुखुँ न स्फुरे बाणी; तक्षणे होइला बृषभ। ताकु प्राणे न मारि, हाबड़ा शरे करि, फिंगिण देलेक राघव हे ।। १५ ।।

सुज्ञजने। असुर माने क्षय गले। मुनिमाने से जज्ञ कले। बोइले दीन बिशि, देबता माने आसि; आकाशुँ पुष्पवृष्टि कले हे ।। १६ ।।

पञ्चत्रिंश छान्द—अहल्या निस्तारण

राग–भैरव

कउशिक संगे राम ! गले गउतम ग्राम।
देखिले तांकु श्रीराम। पड़िछि पाषाण क्रम ।। १ ।।
ता परे उठन्ते राम ! बाहार होइले हेम।
गउरी नारी उत्तम। जुबती अहल्या नाम ।। २ ।।
श्री रामंक बेनि पाद। पादक बिषकु गद।
छाड़िला शाप प्रमाद ! होइला महाप्रमोद ।। ३ ।।

उत्तर दिया कि हमारे धनुष-बाण देख लो। जो मंत्र ब्रह्मा जी ने मुझे दिया है उसी से तुम्हारा विनाश करूँगा। १४ श्रीराम की बातों को सुनकर उसके मुख से बोल नहीं निकला वह उसी क्षण साँड़ बन गया। राघव राम ने उसके प्राण न लेकर उसे हावड़ा नामक बाण से फेंक दिया। १५ हे सज्जनो ! राक्षस विनाश को प्राप्त हुए। मुनियों ने यज्ञ सम्पादित किया। दीन बिशि कहता है कि देवताओं ने आकर आकाश से पुष्पवर्षा की। १६

छान्द ३५—अहल्या-उद्धार

राग–भैरव

विश्वामित्र के साथ श्रीराम गौतम के आश्रम में पहुँचे, वहाँ पर उन्होंने पड़े हुए पाषाण को देखा। १ श्रीराम के चरण रखते ही उससे अहल्या नाम की स्वर्णसुन्दरी उत्तम युवती बाहर निकल पड़ी। २ श्रीराम के युगल चरण पाप रूपी विष के लिए ओषधि के समान थे जिससे शाप से मुक्ति मिल गयी। और वह अत्यन्त प्रसन्न हो गयी। ३ उस

कृतार्थ रमण नेत्र । देखि दशरथ पुत्र ।
पबित्र होइला गात्र । लागि श्री चरण मात्र ॥ ४ ॥
फळ जळ पुष्प घेनि । पादकु पूजे कामिनी ।
बोले बिशि संगे घेनि । मिथिळा गलेक मुनि ॥ ५ ॥

षट्त्रिंश छान्द

राग–बिभास मंगळगुज्जरी

श्रीराम पचारन्ति भो मुने कह मोते ।
नारी अबा पाषाण होइला कि निमन्ते ॥ घोषा ॥
मुनि कहन्ति श्रीराम शुण हे सन्देश ।
शक्र सकाशुँ होइला एमन्त भबिष्य ॥ १ ॥
एक दिने गउतम तप करि गले ।
पुरन्दर गउतम शरीर धइले ॥ २ ॥
प्रबेश होइले गउतमंक सदन ।
रमिले से ऋषिनारी जुबतीरतन ॥ ३ ॥
बाहार हुअन्ते पुरुँ देखिलेक ऋषि ।
शाप देले ता बृषण पड़िलाक खसि ॥ ४ ॥

रमणी के नेत्र दशरथनन्दन श्रीराम को देखकर कृतार्थ हो गये थे । श्रीराम के चरणों के स्पर्श मात्र से उसका शरीर पवित्र हो गया । ४ उस सुन्दरी ने जल, फूल तथा फल लेकर श्रीराम की पाद-पूजा की । बिशि कहता है कि राम और लक्ष्मण को लेकर महर्षि विश्वामित्र मिथिलापुर चले गये । ५

छान्द—३६

राग–विभास मंगलगुर्जरी

श्रीराम ने महर्षि विश्वामित्र से पूछा, "यह नारी पत्थर कैसे बनी ?" यह आप मुझसे बताइये । घोषा मुनि बोले, हे श्रीराम ! सुनो । इन्द्र के कारण इसका भविष्य ऐसा हो गया । १ एक दिन गौतम तपस्या के लिए चले गये । इन्द्र ने गौतम का रूप धारण कर लिया । २ वह गौतम के आश्रम में प्रविष्ट हुआ और उसने रमणीरत्न ऋषि-पत्नी के साथ रमण किया । ३ ऋषि ने उसे आश्रम के बाहर निकलते देखकर उसे शाप दिया । उसके अण्डकोश गिर पड़े । ४ अनन्तर अहल्या को

अहल्यान्ते देखिण देलेक एहि शाप ।
राम पाद लागिले से जिब तोर पाप ॥ ५ ॥
एबे राम अहल्याकु कल जे कारण ।
बोले बिशि निस्तरिला लागि श्री चरण ॥ ६ ॥

सप्तत्रिंश छान्द

राग–मुखारी

पथ गमनरे दिन शेष ।
कउशिकीतीरे परबेश ॥ १ ॥
राम पुछन्ति केबण देश ।
एथि नृपतिर नाम किस ॥ २ ॥
मुनि बोलन्ति शुण श्रीराम ।
आम्भे कहिबा एथिर नाम ॥ ३ ॥
कुशकेतु से जे कुशलाभ ।
कुश ब्रह्मांक ठारु सम्भव ॥ ४ ॥
कुशनृपर शत नन्दिनी ।
दिव्य सुन्दरी जगन्मोहिनी ॥ ५ ॥
देखि मोहित हेले मरुत ।
बिभा हेबाकु कलेक चित्त ॥ ६ ॥

देखकर उन्होंने यह शाप दिया और कहा कि श्रीराम के चरणों का स्पर्श होने से तेरा पाप नष्ट हो जायेगा । ५ इस समय, हे श्रीराम ! आपने अहल्या पर कृपा की है । बिशि कहता है कि आपके श्रीचरणों के स्पर्श से उसका उद्धार हो गया । ६

छान्द—३७

राग–मुखारी

मार्ग में यात्रा करने में दिवस व्यतीत हो गया । वह कौशिकी के तट पर प्रविष्ट हुए । १ श्रीराम ने प्रश्न किया कि यह कौन सा देश है और यहाँ के राजा का क्या नाम है ? २ मुनि विश्वामित्र ने कहा, हे श्रीराम ! सुनो ! इसका नाम हम बताएँगे । ३ कुशकेतु के कुशलाभ थे । कुश की उत्पत्ति ब्रह्मा से हुई थी । ४ महाराज कुश के दिव्य सौन्दर्य से युक्त जगत् को मोहित करनेवाली सौ कन्याएँ थीं । ५ उन्हें देखकर मरुतदेव मोहित हो गये । उन्होंने विवाह करने का विचार मन

कन्या माने तोटापुरे थिले ।
तांक पाशकु बोलिण गले ।। ७ ।।
आम्भंकु बर बोलि बोइले ।
जणे हें सिउकार न कले ।। ८ ।।
तेणु क्रोध करिण समीर ।
कूज कले कन्यांक शरीर ।। ९ ।।
तेणु कुज कन्या गले देश ।
गाधि अटन्ति ताहांक अंश ।। १० ।।
तांक ठारु अबतार आम्भे ।
जाहा पचारिल राम तुम्भे ।। ११ ।।
आम्भ भगिन कउशिकी नदी ।
बहु अछन्ति पाताळ भेदि ।। १२ ।।
कुश अंशु आम्भे कउशिक ।
एहा बोलन्ति सकळ लोक ।। १३ ।।
शुणि सन्तोष रघुनायक ।
तहिँ बंचिले रजनी एक ।। १४ ।।
प्रातुँ नित्यकर्म बढ़ाइले ।
मुनि आगे पथ कढ़ाइले ।। १५ ।।
गंगा तीरे हो[illegible] [illegible] ।
बोले बिशि गंगा देखि तोष ।। १६ ।।

में किया । ६ कन्याएँ अन्तःपु॰ में थीं । वह उनके पास जा पहुंचे । ७ उन्होंने कहा कि मुझे वर-रूप मे स्वीकार करो परन्तु किसी ने भी यह स्वीकार नहीं किया । ८ अस्तु कुपित हुए पवनदेव ने कन्याओं के शरीर को कुबड़ा बना दिया । ९ फिर कुब्जा कन्याएँ देश को चली गईं जिनके अंश से गाधि उत्पन्न हुए । १० उनसे हमारी उत्पत्ति हुई । तुमने जो पूछा वह मैंने बता दिया । ११ कौशिकी नदी मेरी बहन है जो पाताल को भेदकर बहती है । १२ कुश के अंश से ही उत्पन्न हमें समस्त लोक कौशिक कहता है । १३ यह सुनकर रघुनन्दन राम सन्तुष्ट हो गये । उन्होंने एक रात वहीं बिताई । १४ प्रातःकाल उन्होंने नित्यकर्म सम्पादित किया और मुनि विश्वामित्र गतिपथ पर अग्रसर हुए । १५ वह गंगा के किनारे जा पहुँचे । बिशि कहता है कि गंगा का दर्शन करके उन्हें बड़ा आनन्द आया । १६

अष्टात्रिंश छान्द

राग-दक्षिण कामोदी

गंगाकूळे श्रीराम लक्षमण मुनि ।
डाकन्ति धीबर आस नाब घेनि ॥ १ ॥
न करि बिळम्ब जिबा पथ दूर ।
न शुणइ राम बाणी से धीबर ॥ २ ॥
देखि श्रीराम बोलन्ति ए कि रीति ।
बधिर हेला कि एबे तोर श्रुति ॥ ३ ॥
शुणि धीबर बोलइ रघुबन्सि ।
बधिर तुहइ बीर शुणु अछि ॥ ४ ॥
तो पादर बालि लागि रघुपति ।
पथरे पथर होइछि जुबती ॥ ५ ॥
न पुण नउका मोर सेहिमति ।
नायिका हेले मरिबि दुःखे अति ॥ ६ ॥
एते बोलि गंगानीर करे धरि ।
पाद पखाळिला अति जत्न करि ॥ ७ ॥
जतन करि बसने पोछि देला ।
नाबे बसाइ रामंकु पारि कला ॥ ८ ॥

छान्द—३८

राग-दक्षिण कामोदी

गंगा के तट से श्रीराम-लक्ष्मण तथा मुनि विश्वामित्र ने धीवर से नाव ले आने को कहा। १ अब विलम्ब न करके सुदूर मार्ग पर जाना है। परन्तु श्रीराम की बात वह केवट नहीं सुन रहा था। २ यह देखकर श्रीराम ने कहा कि यह कैसी रीति है ? क्या अब तुम्हारे कान बधिर हो गए है ? ३ यह सुनकर केवट ने कहा, हे रघुनन्दन ! हे वीर ! मैं बधिर नही हूँ। मैंने सुना है। ४ हे रघुपति ! तुम्हारे चरणों की बालू अर्थात् रज के लग जाने से मार्ग का प्रस्तर भी युवती बन गया। ५ मेरी नाव की भी तो वही गति न हो जायेगी। उसके स्त्री बन जाने से हम अत्यन्त दुःख से मर जाएँगे। ६ इतना कहकर हाथों में गंगाजल लेकर बड़े यत्न से उसने उनके चरणों का प्रक्षालन किया। ७ यत्नपूर्वक उसने वस्त्र से उनके चरण पोंछ दिये और नाव में बिठाकर श्रीराम को पार उतार

जाह्नबी शोभा देखन्ति रघुमणि ।
बोले गोपी सकळ कहन्ति मुनि ।। ९ ।।

एकोनचत्वारिंश छान्द

राग–भाटिआरी

मुनि बोले गंगा राम, दिशन्ति अति उत्तम ।
चतुर्दश लोके बिदित होइ पतित पावनी नाम हे ।। १ ।।
सगर नामे राजन, साठिए सस नन्दन ।
दहन तांकु करुथिले कोपरे कपिळंकर नयन हे ।। २ ।।
भगीरथ तपोबळे, बिजे कले रबितळे ।
सगर सुतंकु मुकत करिण संगम सागर जळे हे ।। ३ ।।
तुम्भर चरण नीर, अभिषेक शिब शिर ।
जाह्नबीर जळ ए तुम्भ बशर कीरतिटि रघुबंशर हे ।। ४ ।।
शुणि करि स्नान कले, राम तृपत होइले ।
बोले बिशि निशि सेठारे पुहाइ मिथिळापुरकु गले हे ।। ५ ।।

दिया । ८ रघुकुल में मणि के समान श्रीराम गंगा की शोभा का निरीक्षण करने लगे । गोपी कहता है कि मुनि विश्वामित्र जी समस्त गाथाएँ कहने लगे । ९

छान्द—३९

राग–भटिआरी

महर्षि ने कहा, हे राम ! गंगा अत्यन्त उत्तम दिखाई दे रही है । इनका नाम पतितपावनी चौदह भुवनों में विख्यात है । १ सगर नाम के एक राजा थे । उनके साठ हजार पुत्र थे । कुपित कपिल के नेत्र उन्हें दग्ध कर दिये थे । २ भगीरथ की तपस्या के प्रभाव से गंगाजी ने दिनकर के नीचे (पृथ्वी पर) पदार्पण किया । सगर के पुत्रों को मोक्ष प्रदान करके वह समुद्र के जल में समा गईं । ३ तुम्हारे चरणों का जल शिवजी के सिर पर अभिषिक्त हुआ । हे राघव ! गंगा का यह जल तुम्हारे वंश की कीर्ति ही है । ४ यह सुनकर श्रीराम ने स्नान करके तृप्ति प्राप्त की । बिशि कहता है कि उस स्थान पर रात्रि व्यतीत करके वह मिथिलापुर को चल दिये । ५

चत्वारिंश छान्द—सीता स्वयम्बर

राग—चोखि

शुण हे सुजन जन, मिथिळापुर राजन,
आज्ञा देले सतानन्द मंत्रीकु चाहिँ।
कन्या अनुरूपे नरबरंकु बरण कर,
सीतांकु बिबाह बेगे करिबा पाइँ ॥
शुणि सतानन्द चळिला,
देशे देशे राजांकु निमंत्रण कला ॥ १ ॥
बिदर्भ कर्णाट भोट आबर जे मरहट्टा,
अंग बंग कळिग भूपाळ नेपाळ।
काश्मीर जे कनाउज माळब मगधराज,
म्लेच्छ मत्स्यदेश आदि कुरु पञ्चाळ ॥
एहा सबु कहिबा केते;
पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण जेते ॥ २ ॥
बारता पाइण भूपे, साजि सैन्य जेझा रूपे,
मिथिळा कटके जाइँ प्रबेश हेले।
जेझा अनुरूपे मान्य कले जनक राजन,
सभारे नृप मुकुटे बिजय कले ॥

छान्द ४०—सीता-स्वयंवर

राग—चोखी

हे सज्जन पुरुषो ! सुनिए। मिथिला नगर के महाराज ने मन्त्री सतानन्द की ओर देखकर कन्या के अनुरूप श्रेष्ठ वर का वरण करके यथाशीघ्र सीता का विवाह करने के लिए आज्ञा दी। यह सुनकर सतानन्द ने जाकर देश-विदेश के नृपालों को निमंत्रित किया। १ विदर्भ, कर्नाटक, भूटान, महाराष्ट्र, अंग, बंग, कलिंग, नेपाल, काश्मीर, कान्यकुब्ज, मालवा, मगध, म्लेच्छ, मत्स्य प्रदेश, कुरु, पांचाल आदि कहाँ तक कहा जाय ! पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण के राजाओं को निमंत्रित किया गया। २ समाचार पाकर राजागण अपनी-अपनी सेनाओं को सज्जित करके मिथिला नगर में जा पहुँचे। महाराज जनक ने सबका उचित रूप से सम्मान किया। विशिष्ट नरपालों ने सभा में उपस्थित होकर लाखों राजाओं को वरण करने

पुच्छिले जनकंकु चाहिँ,
लक्षेराजा बरण हे कल कि पाइँ ॥ ३ ॥
कहन्ति जनक नृप, अछि मोर शिबचाप,
ताहाकु जे निज भुजबळे तोळिब ।
अछइ मोर दुहिता, नाम तार अटे सीता,
निश्चय ताहाकु से त बिबाह हेब ॥
शुणि बिन्ध्य गिरि राजन,
धनु तोळिबाकु से उठिला बहन ॥ ४ ॥
फिटाइले धनुघर, देखन्ते से नृपवर,
छागळ पलकु जेन्हे शार्दूळ झाम्पे ।
सेहि परि धाइँ धाइँ भूमिरे पड़िला तहिँ,
बाते रम्भा परा धनु तरासे कम्पे ।
बाहुड़ि सभारे प्रबेश,
प्रतिज्ञा करि उठिला लवणशिष ॥ ५ ॥
बेनि निशे कर देइ, जनक मुखकु चाहिँ,
कि कहिबि तोते बामभुजे फिंगि देबि ए सरासन ।
एते बोलि बीर धाइँला ।
धनु तेज लागन्ते से ढळि ्ला ॥ ६ ॥

के कारण के विषय में महाराज जनक की ..र ताकते हुए प्रश्न किया । ३ राजा जनक ने कहा कि मेरे पास शिवजी का धनुष है । उसे जो कोई भी अपने बाहुबल से उठा लेगा; वह मेरी सीता नामक पुत्री से निश्चित रूप से विवाह करेगा । यह सुनकर विंध्यगिरि-नरेश शीघ्रतापूर्वक धनुष उठाने के लिए उठे । ४ धनुष को खोलकर देखते ही उस नृपश्रेष्ठ ने बकरी के झुण्ड पर झपटते हुए सिंह के समान छलाँग लगा दी तथा दौड़ते हुए पृथ्वी पर गिर पड़ा । धनुष के त्रास से वायु बिड़ोलित केले के वृक्ष के समान वह सभा में लौट गया । तभी प्रतिज्ञा करते हुए लवण का पुत्र उठा । ५ वह अपनी दोनों मूँछों पर हाथ लगाकर जनक के मुख की ओर ताकते हुए बोला । मैं तुमसे क्या कहूँ ? इस धनुष को मैं बायें हाथ से उठाकर फेंक दूँगा । इस प्रकार ताकते हुए वह वीर दौड़ पड़ा । परन्तु धनुष के प्रखर तेज के लगने से वह चक्कर खाकर गिर पड़ा । ६

ताहा देखि कोपमूर्त्ति डाह्माळ देशाधिपसि,
आगुसार होइण से बेगे धाइँला ।
बाहास्फोट मारि बीर सक्रोधे कहइ गिर;
काहिँ अछि धनु तोर देखा हे भला ॥
शुणि शतानन्द कहइ ।
तु किस तोळिबु धनु जाअ पळाइ ॥ ७ ॥
सतानन्द बाणी शुणि, कनाउज नरमणि;
सभाकु अनाइ से जे कोपे कहिला ।
काहिँ शिबशरासन, आण जनक राजन;
निश्चे तो कुमारी आज मोर होइला ॥
एते कहि धाइँला खरे ।
प्रबेश हेला जाइ धनु थिबा द्वारे ॥ ८ ॥
फिटाइ से घर द्वार, धनु देखिण कातर;
तेजरे रहि न पारि गला पळाइ ।
ताहा देखि राजागण, मुखुँ न स्फुरे बचन;
तळकु मुख पोतिले, मउन होइ ॥
सभा निशबद होइला ।
रामपाद चिन्तिण बिक्रम बोइला ॥ ९ ॥

उसे देखकर कुपित होकर डाह्लाल देश का स्वामी शीघ्रता से आगे आया । बाहुओं को फड़काते हुए क्रुद्ध होकर कहने लगा कि तेरा धनुष कहाँ है ? मुझे तो दिखा । यह सुनकर सतानन्द ने कहा कि तू क्या धनुष उठायेगा ! जा भाग जा । ७ सतानन्द की बात सुनकर कन्नौज के नृपाल ने कुपित होकर सभा की ओर देखते हुए कहा कि हे जनक ! शिवचाप कहाँ है ? उसे ले आओ । आज तेरी कन्या निश्चित ही मेरी हो गई । इतना कहकर प्रखर वेग से दौड़ता हुआ जिस स्थान पर धनुष था, उसके द्वार पर जा पहुँचा । ८ उस कक्ष का द्वार खोलकर धनुष को देखते ही वह कातर हो उठा । उसके तेज के कारण वह वहाँ ठहर नहीं सका और भाग गया । ऐसा देखकर राजाओं के मुख से बोल नहीं फूट रहा था । सभी ने मौन होकर अपने चेहरे नीचे झुका लिये । सभा निस्तब्ध हो गई । श्रीराम के चरणों का चिन्तन करते हुए विक्रम ने इसका वर्णन किया है । ९

एकचत्वारिंश छान्द

राग–मंगळ गुज्जरी

श्रीराम लक्ष्मण बेनि मिथिळा प्रबेश ।
देखिण कामिनीमाने कामरे अबश जे ॥ १ ॥
ए परा राम लक्ष्मण एहि परा मुनि ।
ए परा ताड़की सुबाहु मारिले बेनि गो ॥ २ ॥
यांक पाद लागि परा पाषाण जुबती ।
चाहिंबा मात्रके हरुअछि आम्भ मति गो ॥ ३ ॥
देखिण जनक राजा कले बहु पूजा ।
रूप देखि चकित होइले सर्व राजा जे ॥ ४ ॥
बसिले सभार मध्ये हेला नेत्र तुष्टि ।
बोले बिशि पड़िला भूमि सुताङ्क दृष्टि जे ॥ ५ ॥

द्वाचत्वारिंश छान्द

राग–दक्षिण कामोदी

श्रीराम मधुर मूर्त्ति देखि रामा ।
पचारन्ति सखीङ्कि जनक जेमा ॥ १ ॥

छान्द—४१

राग–मंगळ गुज्जरी

श्रीराम तथा लक्ष्मण दोनों को मिथिलापुर में आया देखकर युवतियाँ काम के वश में हो गयों । १ यह राम हैं । यह लक्ष्मण और यह ऋषि विश्वामित्र है । इन्हीं दोनों ने ताड़का और सुबाहु का संहार किया है । २ जिनके चरणों का स्पर्श पाकर शिला भी नारी बन गई, उनके दृष्टि डालते ही हमारी बुद्धि हर गई । ३ इन्हें देखकर महाराज जनक ने इनका बहुत प्रकार से सम्मान किया है । इनकी छवि देखकर सारे राजा आश्चर्य से चकित हो गये । ४ इनके सभा के मध्य बैठ जाने से हमारे नेत्र संतुष्ट हो गये । बिशि कहता है कि भूमिजा जानकी की दृष्टि उन पर जा पड़ी । ५

छान्द—४२

राग–दक्षिण कामोदी

श्रीराम की माधुरी एवम् मनोहर मूर्त्ति को देखकर जनकदुलारी ने सखियों से पूछा । १ यह किस देश के रहनेवाले तथा किस राजा के

केबण देश नृपति काहा सुत ।
देखिला बेळु कातर हुए चित्त ।। २ ।।
तनु निन्दइ नबीन दुर्बादळ ।
क्षीण मझा सुबिपुळ बक्षस्थळ ।। ३ ।।
सुन्दर नासिका निन्दे तिळ फुल ।
जबा पुष्प अधरकु नुहे तुल ।। ४ ।।
त्रिभुबन जय करि मार बीर ।
नयने रखिला कि कुसुम शर ।। ५ ।।
करि कर प्राय देख बाहु बेनि ।
शिव धनु सते कि पारिबे घेनि ।। ६ ।।
कि जाणि बिधाता कि करिब सखि ।
स्फुरअछि त मोहर बाम आखि ।। ७ ।।
धनु भांगि बिभा मोते हेबे परा ।
बरिबाकु मो मन हेउछि तोरा ।। ८ ।।
एड़े भाग्य सखि कि मुँ अछि करि ।
गगन चान्द लोड़इ हस्ते धरि ।। ९ ।।
दारुण पिअर मोर कले सत्य ।
जेउँ धनुधरि न पारिले दैत्य ।। १० ।।

पुत्र हैं ? इन्हें देखते ही चित्त कातर हो जाता है । २ इनके अंग की कान्ति नवीन दूर्वादल की छवि की निन्दा कर रही है । इनका मध्य भाग क्षीण तथा वक्षस्थल विशाल है । ३ सुन्दर नासिका तिल के पुष्प की निन्दा कर रही है । अधर की तुलना में जवा कुसुम भी समर्थ नहीं है । ४ क्या पराक्रमी कामदेव ने तीनों लोकों को जीतकर नेत्रों में सुमन धनुष रख लिया है । ५ देखो इनकी दोनों भुजाएँ हाथी के सूँड़ के समान हैं । क्या सच में यह शिवधनुष को उठा सकेंगे । ६ हे सखी ! पता नहीं विधाता क्या करेगा ? मेरा बायाँ नेत्र तो फड़क रहा है । ७ यह शिव-धनुष को तोड़कर हमसे विवाह करेंगे । इन्हें वरण करने के लिए मेरा मन व्यग्र हो रहा है । ८ मेरा इतना बड़ा भाग्य कहाँ ? मैं आकाश के चन्द्रमा को हाथों से पकड़ना चाहती हूँ । ९ मेरे पिता ने कठोर प्रण किया है । उस धनुष को तो दैत्य भी नहीं उठा सके । १० जगती

चाहान्ति जगतीरे सर्बसखी ।
बोले बिशि पिछड़ा न पड़े आखि ।। ११ ।।

त्रयश्चत्वारिंश छान्द

राग–चउतिशा बाणी

जनक महाऋषि हसि कहन्ति राजसभाकु अनाइँ ।
समस्त महीपति माने बसिछ मस्तक पोति किम्पाइँ बा ।
आउ महीरे नाहान्ति बीर । केहि धनुरे न देले कर ।। घोषा ।।
रावण सहस्रार्जुन बाणासुर आउ वीर छन्ति जेते ।
धनु न भांगि कन्याकु नेब बोलि बिचारिअछ कि चित्ते बा ।। १ ।।
गन्धर्ब किन्नर जक्ष नाग नर इन्द्र आदि दिगपाळ ।
चाण्डाळुँ ब्राह्मण परिजन्ते हेउ जाहा अगे थिब बळ बा ।। २ ।।
जे ए शिबधनु भांगिब सुतनु सीता निश्चे प्राप्त हेब ।
एहि सत्यगीर अटइ मोहर केबेहेँ आन न हिब बा ।। ३ ।।
जनक भारती शुणि नरपति माने मउन होइले ।
बिश्वामित्रंकु चाहिँण रामचन्द्र धनु देखिबा बोइले बा ।। ४ ।।

से सारी सखियाँ देख रही थी । बिशि कहता है कि किसी के भी नेत्र पीछे नहीं जा रहे थे । ११

छान्द—४३

राग–चौंतीसा की धुन

महर्षि जनक ने हँसते हुए सभा की ओर देखकर कहा कि सभी राजागण शिर झुकाये क्यों बैठे है ? क्या पृथ्वी मे कोई अन्य वीर नहीं है ? किसी ने भी धनुष पर हाथ नही लगाया । घोषा रावण, सहस्रार्जुन, बाणासुर आदि अन्य जितने भी वीर है, क्या वह धनुष को बिना तोड़े ही कन्या की प्राप्ति का विचार मन में कर रहे हैं ? १ गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, नाग, नर, इन्द्र तथा दिग्पाल आदि एवम् चाण्डाल से लेकर ब्राह्मण पर्यन्त जिसकी भी भुजाओं में शक्ति होगी और जो भी इस शिव के धनुष को तोड़ेगा उसे निश्चित रूप से सुन्दरी सीता प्राप्त होगी । यह मेरा वचन बिलकुल सत्य है जो कभी मिथ्या नही हो सकता । २-३ जनक के वाक्य सुनकर राजागण मौन हो गये ।

शुणिण जनक नृपति सभारु श्रीरामचन्द्रंकु नेले।
बोले बिशि धनु मंजुष अणाइ श्री रामंकु देखाइले बा ॥ ५ ॥

चतुश्चत्वारिंश छान्द—धनुभग्न

राग–आनन्द भैरव

धनुधरि राम होइले उभा।
लक्षे नृपतिरे दिशन्ति शोभा॥
बामदेब कोदण्ड होइला बेनि खण्ड।
ध्वनि कला प्रचण्ड, मोहे सकळ पिंड ॥ घोषा ॥
लक्ष्मण करे नेइ धनुशर।
राज सभाकु बोलन्ति उत्तर॥
पारिले सकळे धनुकु धर।
धनु भांगि जश रख महीर॥ १ ॥
शुणि राजा माने राम उत्तर।
भूमिकि चाहिँ नम्र कले शिर॥
बाम करे धनु धरिण राम।
चढ़ाइ टंकारिले गुण दाम॥ २ ॥

बिश्वामित्र की ओर देखकर श्रीराम ने धनुष देखने के लिए कहा। ४ यह सुनकर राजा जनक ने सभा से श्रीरामचन्द्र को लिया। बिशि कहता है कि उन्होंने धनुष की मंजूषा को मँगाकर श्रीराम को दिखाया। ५

छान्द ४४—धनुष-भंग

राग–आनन्द भैरव

श्रीराम धनुष उठाकर खड़े हो गये। लाखों राजाओं में वह शोभित हो रहे थे। शिवजी के धनुष के दो खण्ड हो गये थे। उसकी प्रचण्ड ध्वनि से सभी प्राणी अचेत हो गये। घोषा लक्ष्मण ने हाथों में धनुष-बाण लेकर राज्यसभा में घोषणा की। यदि कर सकते हो तो सभी धनुष को ग्रहण करो और धनुष को तोड़कर पृथ्वी पर यश की स्थापना करो। १ राजागण ने उनके वचनों को सुनकर पृथ्वी की ओर ताकते हुए शिर झुका लिये। श्रीराम ने धनुष को बायें हाथ से उठाकर चढ़ाया तथा प्रत्यञ्चा पर टंकार की। २ धनुष जितना झुक रहा था उतने ही मुकुट

जेते लउँथाइ शर आसन ।
तेते लउँथाइ मुकुट मान ॥
जेते बेळे राम टाणिले गुण ।
टाणिले कि सर्ब नृपति प्राण ॥ ३ ॥
कर्ण सरिकि आणिले ओटारि ।
हस्तीकि जेन्हे धइला केशरी ॥
जेते बेळे भग्न कले कोदण्ड ।
हस्ती भांगिला कि ए इक्षुदण्ड ॥ ४ ॥
नृपतिंकर जेते आशा थिला ।
धनु संगते से भग्न होइला ॥
धनु भांगि राम बिजे आस्थाने ।
देखिण बिरस नृपति माने ॥ ५ ॥
कन्याकु आणि मुद्‌सुली गले ।
बोले बिशि जनक आज्ञा देले ॥ ६ ॥

पञ्चचत्वारिंश छान्द

राग–कुम्भ कामोदी

धनुर्भग्न देखि जानकीर भूरु मध्यमा स्फुरिला ।
एहि समयरे कुसुम धनु कि धनु आमथिला ॥ १ ॥

भी झुक रहे थे। श्रीराम ने जिस समय प्रत्यञ्चा तानी मानों उन्होंने सारे राजाओं के प्राण ही खींच लिये। ३ उन्होंने उसे कर्ण पर्यन्त खींच लिया। लगता था मानों सिंह ने हाथी को पकड़ लिया हो। उन्होंने जिस समय कोदण्ड का खण्डन किया तो ऐसा प्रतीत ... मानों हाथी ने गन्ना तोड़ डाला हो। ४ राजाओं की जो भी आशाएँ थीं, वह भी धनुष के साथ ही टूट गईं। धनुष तोडकर श्रीराम सिंहासन पर आ बिराजे। यह देखकर राजागण दुखी हो गये। ५ विशि कहता है कि महाराज जनक की आज्ञा पाकर वेशकारिणी कन्या को लाने के लिए चली गई। ६

छान्द—४५

राग–कुम्भ कामोदी

धनुष-भंग को देखकर जानकी जी की भृकुटि का मध्य भाग फड़कने लगा। इसी समय लगता था मानो सुमन-धनुषधारी कामदेव ने धनुष

रिपु कोदण्ड बेनि खण्ड देखिण होएकि आनन्द ।
मळय पबन लागिले जेसने पल्लवे माळद ॥ २ ॥
राम भुजदण्ड प्रचण्ड देखिण हरष कातर ।
कुसुम शर कुसुमशर भेदे मरम भितर ॥ ३ ॥
सखी जाणि बोले न डर तरुणी देख दिनमणि ।
किरण लागिण फाटइ धरणी आनन्द नळिनी ॥ ४ ॥
जेबण भ्रमर शुष्क तरुबर बदने फोड़इ ।
से पुणि माळती कुसुम चुम्बिला मात्रके छाड़इ ॥ ५ ॥
सखी बाणी शुणि सरोज लोचना होइले प्रमोद ।
बोले बिशि रामचन्द्र देखि फुटे जानकी कुमुद ॥ ६ ॥

षट्चत्वारिंश छान्द

राग—आनन्द भैरब

सुन्दरी सुवेश करि सहचरि माने ।
जगतीरु ओल्हाइ आणन्ति सुखासने ॥
मन हेउछि आनन्द;
रबि देखि प्रफुल्ल कि नब अरबिन्द ॥ घोषा ॥

को हिला दिया । १ वह अपने शत्रु अर्थात् शिव के धनुष को दो खण्डों में देखकर मानों आनन्दित हो गया । जैसे मलय पवन के लगने से पत्ते खिल जाते हैं । २ श्रीराम के प्रचण्ड भुजदण्डों को देखकर प्रसन्नता से सीता झूम उठी । मानों कामदेव ने सुमन-शर से आभ्यन्तरिक मर्म को भेद डाला हो । ३ सखी ने यह समझकर कहा कि हे सखी ! भय मत करो । देखो सूर्य की किरणों से धरती तो फट जाती है पर कमलिनी प्रफुल्लित हो जाती है । ४ जो भौंरा शुष्क वृक्षों के काठ को भी कोल देता है, वही मालती-सुमन को चूमकर ही छोड़ देता है । ५ सखी की बात सुनकर कमलनयनी जानकी प्रसन्न हो गई । बिशि कहता है कि श्रीरामचन्द्र को देखकर कुमुदिनी रूपी जानकी प्रफुल्लित हो गई । ६

छान्द—४६

राग—आनन्द भैरब

सखियाँ सुन्दरी सीता को सुसज्जित करके उन्हें जगती से उतार कर पालकी द्वारा ले आईं । मन में आनन्द भर गया मानों सूर्य को देखकर नवीन कमलिनी प्रस्फुटित हो गई हो । घोषा राजसभा में

राजसभा निकटकु ओल्हाइ आणन्ति,
बेढि समस्त जुबती हुळहुळी द्यन्ति ।
जुबती समूह मध्ये शोभे मइथिळी;
जेसने नक्षत्र मध्ये पूर्णचन्द्र मिळि ।। १ ।।
चन्द्रमा उदय कि देखिला चन्द्रमणि,
सेहि रूपे सीतांकु देखिले रघुमणि ।
जेते बेळे रमणी सभाकु देले दृष्टि;
राजांक शरीरे कामकला शरबृष्टि ।। २ ।।
हेममाळा बाळा राम कण्ठे लम्बाइले;
श्रीफळ श्रीकरे देइ शरण पशिले ।
बाहुड़िण निजपुरे प्रबेश होइले,
जनक अनेक रत्न ब्राह्मणंकु देले ।। ३ ।।
लज्जा पाइण रहिले प्रिय राजा माने ।
बोले बिशि थोक एक गले अपमाने ।। ४ ।।

सप्तचत्वारिंश छान्द
राग–चोखि

आनन्द होइ जनक बिश्वामित्रंकु अनेक ।
गउरब करि निजपुरकु नेले ।

उन्हें उतार कर ले आई। समस्त युवतियाँ उन्हें घेरकर मांगलिक शब्द करने लगीं। सखियों के मध्य मैथिली सुशोभित हो रही थी। जिस प्रकार तारामण्डल में चन्द्रमा शोभित होता है। १ जैसे चन्द्रमा के उदित होने पर उसे चन्द्रमणि देखती है, उसी प्रकार सीता को रघुवंश में मणि के समान श्रीराम ने देखा। जिस समय रमणी सीता ने सभा की ओर दृष्टि डाली तो राजाओं के शरीर पर मानों कामकला के बाणों की वर्षा हो गई। २ कन्या सीता ने श्रीराम के कण्ठ में स्वर्णमाल डाल दी तथा उनके हाथों में श्रीफल समर्पित करके शरणापन्न हो गईं। फिर अपने महल में लौट गईं। राजा जनक ने ब्राह्मणों को नाना प्रकार के रत्न प्रदान किये। ३ प्रिय राजागण लज्जित हो गये। बिशि कहता है कि बहुत से राजागण तो अपमानित हो गये। ४

छान्द—४७
राग–चोखी

महाराज प्रसन्न होकर विश्वामित्र जी को अनेक प्रकार से सम्मानित

राम लक्ष्मणंकु कोळे बसाइ ऋत्विक मेळे ।
बिचारिण लेखा लेखि दूतंकु देले ।
दशरथ अइले बिभा; न जणाइ कले त दिशिबि अशोभा ॥ १ ॥
जनक नृपति दूत अजोध्या पुरे उदित ।
तुरिते चिटाउ देला राजांक पाशे ।
भो प्रभु तुम्भ कुमर बिश्वामित्रंक संगर ।
बिजय करि अछन्ति मिथिळा देशे ।
शिबधनु भांगिले हेळे, लक्षे राजा खण्ड होइ देखिले डोळे ॥ २ ॥
मारि ताडकी सुबाहु रामचन्द्र महाबाहु ।
जाग रखिण मुनिंकि अभय देले ।
गउतमंक जुबती शापरे पाषाणमूर्त्ति ।
चरण लगाइ तांकु जुबती कले ।
बिजे कले बिभा होइब, जनक तुम्भ छामुंकु पेषिले देब ॥ ३ ॥
शुणि नृपति आनन्दे चक्षुकि पाइला अन्ध ।
दूतकु धन बसन बधाइ देले ।
संगे भरत शत्रुघ्न आबर सकळ सैन्य ।

करके उन्हें अपने महल में ले गये । ऋषियों से सम्भाषण करके श्रीराम तथा लक्ष्मण को गोद में बैठाकर विचारपूर्वक पत्र लिखकर दूतों को दिया। विवाह दशरथ जी के आने पर ही होगा । यदि बिना उनकी जानकारी के विवाह किया जाय तो यह अशोभनीय दिखाई देगा । १ महाराज जनक के दूतों ने अयोध्यापुर जाकर तुरन्त ही राजा को पत्र दिया और बोले, "हे देव ! विश्वामित्र के साथ आपके कुमार मिथिलापुर पहुंचे । उन्होंने शिव के धनुष को लीला मात्र में तोड़ दिया, जिसको वहाँ पर उपस्थित लाखों राजाओं ने अपने नेत्रों से देखा । २ महाबाहु रामचन्द्र ने ताड़का तथा सुबाहु का वध करके यज्ञ की रक्षा करके मुनियों को अभय प्रदान किया है। गौतम की स्त्री जो शापवश पाषाण-प्रतिमा हो गई थी, उसे उन्होंने चरणों से स्पर्श करके नारी बना दिया । हे देव ! जनक ने हमें आपके पास भेजा है। आपके पधारने पर ही विवाह होगा । ३ यह सुनकर महाराज दशरथ प्रसन्नता से भर गये । लगता था मानों अन्धे को नेत्र प्राप्त हो गये हों । उन्होंने दूतों को धन-वस्त्र तथा बधाई प्रदान की । नृप-शिरोमणि महाराज दशरथ भरत-शत्रुघ्न तथा समस्त सेना को लेकर

घेनि नृपति मुकुट बाहार हेले ।
मिथिळा नबरे प्रबेश, बोले बिशि शुभुअछि मंगळ घोष ।। ४ ।।

अष्टचत्वारिंश छान्द

राग–कळशा

श्रीराम लक्ष्मण बिश्वामित्र संगे घेनि ।
किछि दूर पाछोटि अइले राजमुनि ।। १ ।।
दशरथ महीपति संगे हेले भेट ।
मान्य गउरब कले जे जाहार श्रेष्ठ ।। २ ।।
हेममयपुरे नेइ बिजे कराइले ।
भोजन निमन्ते बहु उपहार देले ।। ३ ।।
चतुरंग बळ हे समस्ते हेले सुस्थ ।
सुखे निद्रा गले निशी हेलाक प्रभात ।। ४ ।।
नित्यकर्म बढ़ाइण दशरथ राज ।
संगतरे बशिष्ठ आबर बहु द्विज ।। ५ ।।
जनक राजा पुरकु बिजे करिगले ।
देखि मुनि आलिंगन करि बसाइले ।। ६ ।।
बशिष्ठ देखि जनक हेले बहु हृष्ट ।
कालि भाबि हेब बोलि कहिले बशिष्ठ ।। ७ ।।

निकल पड़े। बिशि कहता है कि मिथिला नगर में प्रविष्ट होते ही मांगलिक शब्द सुनाई पड़ने लगे। ४

छान्द—४८

राग–कलशा

श्रीराम-लक्ष्मण तथा विश्वामित्र को साथ लेकर राजर्षि जनक कुछ दूर पर उनको अगवानी करने के लिए आये। १ महाराज दशरथ से उनकी भेंट हुई। जो जैसा श्रेष्ठ था उसी के अनुरूप उनकी अभ्यर्थना हुई। २ वह उन्हें कंचन महल में ले गये तथा उन्होंने भोजन के लिए नाना प्रकार के उपहार प्रदान किये। ३ सम्पूर्ण चतुरंगिनी सेना के स्वस्थ होकर सुखपूर्वक रात बिताने पर प्रभात हो गया। ४ महाराज दशरथ नित्यकर्म से निवृत्त होकर वशिष्ठादि अनेक ब्राह्मणों के साथ महाराज जनक के महल में जा पहुँचे। मुनि को देखकर उन्हें आलिंगन करके राजा ने उन सबको बैठाया। ५-६ वशिष्ठ को देखकर राजा जनक

बेनि जनंकर बेनि बंशानुचरित ।
कहिलेक कउशिक अत्यन्त पबित्र ।। ८ ।।
बोलन्ति बशिष्ठ आहे शुण राजऋषि ।
भरत शत्रुघन लक्ष्मण छन्ति आसि ।। ९ ।।
तिनि कुमारींकि कर एहांकु प्रदान ।
शुणि सीउकार कले मिथिळा राजन ।। १० ।।
बिश्वामित्र महिमा बोले बशिष्ठ मुनि ।
द्वितीय ब्रह्मा अबतरिछन्ति मेदिनी ।। ११ ।।
धातार अभाबे कले अभिनब सृष्टि ।
एणुटि बोलन्ति ए द्वितीय परमेष्ठि ।। १२ ।।
समस्ते जे कले बिश्वामित्रंकु जे स्तुति ।
शुणिण महाहरष हेले महाजति ।। १३ ।।
आजि अधिबास राम कालि हेबे बिभा ।
एमन्त निर्णय करि भांगिलेक सभा ।। १४ ।।
से निशीरे राम सीता अधिबास कले ।
महा उत्सव करिण बाद्य बजाइले ।। १५ ।।
हुळहुळी देले तहिँ सकळ कामिनी ।
बोले बिशि सुखे शेष होइला जामिनी ।। १६ ।।

अत्यन्त हर्ष को प्राप्त हुए । वशिष्ठ ने कहा कि अब कल विचार होगा । ७ कौशिक (विश्वामित्र) ने दोनों व्यक्तियों के अत्यन्त पवित्र वंशानुगत चरित्रों का बखान किया । ८ वशिष्ठ जी बोले कि हे राजर्षि ! सुनिए । भरत-शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण भी आये हैं । ९ तीनों राजकुमारियों को इन्हें प्रदान करें । यह सुनकर मिथिला नरेश ने अपनी स्वीकृति प्रदान की । १० महर्षि वशिष्ठ ने विश्वामित्र की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि यह तो पृथ्वी पर दूसरे ब्रह्मा के रूप में ही अवतीर्ण हुए हैं । ११ विधाता के अभाव में इन्होंने अभिनव सृष्टि का निर्माण कर दिया । इसी कारण से इन्हें दूसरा ब्रह्मा कहा जाता है । १२ समस्त समुदाय ने विश्वामित्र जी की स्तुति की, जिसे सुनकर महर्षि अत्यन्त हर्ष को प्राप्त हुए । १३ आज के अधिवास के उपरान्त कल श्रीराम का विवाह होगा । इस प्रकार का निर्णय लेकर सभा भंग हो गई । १४ श्रीराम तथा सीता ने उस रात्रि को अधिवास किया । वाद्य बजाकर महान उत्सव मनाया गया । १५ समस्त युवतियों ने मांगलिक शब्द किये । बिशि कहता है कि सुखमय यामिनी व्यतीत हो गई । १६

एकोनपञ्चाशत् छान्द—राम बिभा

राग—चमक

एथु अनन्तरे राम बिभार चरित ।
श्रबणे शुणन्ते नरे होइबे पबित्र ॥ १ ॥
मिथिळा कटकरे उत्सब कराइले ।
हेम कलशरे नेत चिराळ बाधिले ॥ २ ॥
बाइले मंगळ गीत देले हुळहुळि ।
बिबिध बाद्यनादरे सिन्धुकि उछुळि ॥ ३ ॥
निशी अबशेषे रुण्ड होइ सबंबाळी ।
हेमकुम्भे चन्दन कर्पूर जळे गोळि ॥ ४ ॥
श्रीराम सीतांक शिरे ढाळिले ता तोळि ।
पुणि सुबास जळरे श्रीअग पखाळि ॥ ५ ॥
सर्बाङ्ग पोछि कुसुमे त्रिमुण्ड बांधिले ।
बसन पीत पटरे काछि पिन्धाइले ॥ ६ ॥
मणिमय तड़ाग श्रीअंगे लागि करि ।
भाळपटे सिन्दूर तिळक देले नारी ॥ ७ ॥
हेम बेदिका उपरे रत्नर मण्डप ।
शोभा दिशइ चामर चारु चन्द्रातप ॥ ८ ॥

छान्द ४९—राम-विवाह

राग—चमक

इसके उपरान्त श्रीराम-विवाह का चरित्र सुनने से मनुष्य पवित्र हो जाएँगे । १ मिथिला नगर में उत्सव मनाया गया । स्वर्ण-कलशों में मांगलिक चीर बाँधे गये । २ मांगलिक ध्वनि के साथ मांगलिक गीत गाये गये । विविध प्रकार के वाद्यनाद से मानों सागर ही उमड़ पड़ रहा था । ३ निशि व्यतीत होने पर सारी युवतियों ने एकत्रित होकर स्वर्ण कलशों में चन्दन तथा कर्पूर घोलकर उन्हें उठाकर श्रीराम-जानकी के शिरों पर डाल दिया । फिर सुवासित जल से उनके श्रीअंग प्रक्षालित किये । ४-५ सारे अंगों को पोंछकर तीन लड़ियों वाली सुमन मालाएँ शिर में लगा दी गईं । उन्हें पीले वस्त्र पहनाए गये । ६ मणिमय आभरणों से श्रीअंग सुशोभित किया गया । सखियों ने मस्तक पर सिन्दूर का तिलक लगा दिया । ७ स्वर्णिम वेदिका पर मणिमय मण्डप

से बेदिका उपरे श्रीराम आसि बसि ।
महाबाक्यरे संकल्प कराइले ऋषि ॥ ९ ॥
दशरथ गउतम आबर जनक ।
बशिष्ठ जाबाळि बामदेबादि जेतेक ॥ १० ॥
एमाने करन्ति बिभा बेदमंत्र पढ़ि ।
कन्याकु आणिले सर्ब परिवारी बेढ़ि ॥ ११ ॥
कोदण्डधर कररे देले कन्या कर ।
कुश रज्जुरे बन्धन कले मुनिबर ॥ १२ ॥
कुमारी गोटिए से बन्धन फेड़ि देले ।
सेहि दिन महाबाजी श्रीरामर हेले ॥ १३ ॥
जनक अनेक देले रत्न आभरण ।
रथ गज अश्व आदि दिव्य नारीगण ॥ १४ ॥
लाजा होम सारि राम भितरे बिजये ।
एहि रूपे तिनि भाइंकर बिभा होए ॥ १५ ॥
पंचग्रासि मणोहि सारि बिड़िआ लागि ।
बोले बिशि मधु शज्यारे प्रबेशि बेगि ॥ १६ ॥

था । जिसमें चामर तथा चँदोवा बड़ा मनोहर दिख रहा था । ८ उसी वेदी पर श्रीराम आकर बैठ गये । ऋषि ने उत्तम वाणी से संकल्प कराया । ९ दशरथ, गौतम, जनक, वशिष्ठ, जाबालि, बामदेव आदि जितने भी थे वह विवाह के वेदमन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे । समस्त सखियाँ कन्या को घेरकर ले आईं । १०-११ कन्या का हाथ कोदण्डधारी राम के हाथ में देकर मुनिश्रेष्ठ ने कुश की रस्सी से बाँध दिया । १२ एक कुमारी कन्या ने उस बन्धन को खोल दिया । उसी दिन वधू श्रीराम की हो गई । १३ राजा जनक ने नाना प्रकार के रत्न, अलंकार, हाथी-घोड़े, रथ एवं दिव्य युवतियाँ दान में दीं । १४ लाजा होम सम्पादित करके श्रीराम भीतर प्रविष्ट हुए । इसी प्रकार तीनों भाइयों का विवाह हुआ । १५ भोग राग, पंचग्रास तथा ताम्बूल की समाप्ति पर बिशि कहता है कि वह शीघ्र ही मधुयामिनी हेतु प्रविष्ट हुए । १६

पञ्चाशत् छान्द—मधुशय्या

राग–घण्टारव

गजगमिनी सुबेश करि सहचरीमाने समर्पिले श्रीराम पाशे, अति सुकुमारी आम्भकुमारी नब बयसी न जाणन्ति सुरति बिशेषे हे। राघव मनमथ मनमोहिनी; सुखे भोगकर ए रजनी ॥ १ ॥

नुहइटि ए शिबधनु सिरीषकुसुम तनु न धरिब अति साहसे, जाति कुसुमे मधुप मधुपान करे किए शेषे जेसने पीड़ा न पाए से ॥ २ ॥

परिहास करि सहचरी गले अपसरि रामा कर धरि श्रीराम; बसाइले निज अंके दन्ती दन्तर पलंके लाजरिपु सधिलाक काम ॥ ३ ॥

एकपत्नी प्रीति राम अग्नि साक्षी करि गले कराइले रामा रतन; कले बिबिध सुरत कामपाठ बिधिमत कामजळे बुड़िण अज्ञान ॥ ४ ॥

छान्द ५०—मधुशय्या

राग–घण्टारव

सखियों ने गजगामिनी सीता को सुसज्जित करके श्रीराम के निकट अर्पित कर दिया। हे राघव! कामदेव के मन को मोहित करनेवाली अत्यन्त सुकुमारी हमारी नववयसी सखी विशेषतया कामकला से अपरिचित है। इस रात्रि का उपभोग सुखपूर्वक करो। १ यह शंकर का धनुष नहीं है। यह सिरीष पुष्प के समान अंगोंवाली है। इसे अत्यन्त दृढ़ता से न पकड़ लीजियेगा। मधुप सुमनों से इस विशेषता से मधुपान करता है कि जिससे अन्त में उन्हें कष्ट नहीं होता। २ परिहास करके सखियाँ हटकर चली गईं। श्रीराम ने सीता का हाथ पकड़कर उन्हें अपनी गोद में बिठा लिया। ऐसा प्रतीत होता था मानों हाथीदाँत के पर्यङ्क पर कामदेव ने अपने लाजरूपी शत्रु को परास्त कर दिया हो। ३ रामा रत्न के आग्रह पर श्रीराम ने एकपत्नी-प्रीति का साक्षी अग्निदेव को बना दिया। कामशास्त्र विधि के अनुसार कामजल में अचेत सराबोर होकर उन्होंने नाना प्रकार की कामक्रीड़ाएँ कीं। ४ कमलांगी सीता तथा

होइले बेनि प्रमोद छाड़िले मनरु खेद कमलिनी रघुनन्दन । बोले बिशि निशी प्रभातरु सर्बसखी बेढ़ि पचारन्ति केळिर बिधान ।। ५ ।।

एकपञ्चाशत् छान्द

राग–आषाढ़ शुक्ल

फिटिछि कुसुम सहिते बेणी । काळन्दीरे भासे कि हंस श्रेणी । राहु मुखरु कि खसिला शशी । सरोजनेत्री सेहि मते दिशि । लिभिछि चन्दन । बर्त्तुळ कुचे नखच्छत मान ।। १ ।।

तुटिछि उर हार गजमोति । तुटिछि अधर रंगिमा ज्योति । रंगिमा दिशुछि नयन बेनि । कान्त अनुराग कि घेनि । फिटिछि बसन । पारारु अन्तर किबा काञ्चन ।। २ ।।

शुणि केउँ सखी बोले बचन । कम्पुथिला परा तनु लाबण्य । अंग छुअन्ते न कलकि नाहिँ । चाटु न कले कि बिनयी होइ । लाज कलटिकि । सुरते तुम्भंकु जिणिले निकि ।। ३ ।।

रघुनन्दन राम दोनों हो मन से ताप को हटाकर प्रसन्न हो गये । बिशि कहता है कि रात्रि व्यतीत होने पर प्रातःकाल से ही सारी सखियाँ उन्हें घेरकर केलि-विधान के विषय में प्रश्न करने लगीं । ५

छान्द—५१

राग–आषाढ़ शुक्ल

फूलों-सहित वेणी खुल गई थी । लगता था जैसे यमुना में हंसों को पंक्तियाँ तैर रही हों । अथवा राहु के मुख से चन्द्रमा निकल पड़ा हो । कमलनयनी सीता उसी प्रकार दिखाई दे रही थी । वर्तुल कुचों पर चन्दन तथा नखों की खरोंच व्याप्त थी । १ गले का गजमुक्ता-हार टूट गया था । ज्योतित अधरों का रंग उड़ गया था । दोनों नेत्रों में लालिमा दिख रही थी । जैसे वह प्रियतम का अनुराग लिये बैठे हों । वस्त्र फट गये थे । पारे जैसे कांचन अंग में अन्तर नहीं था । २ यह सुनकर कोई सखि कहने लगी, अरे ! वह तो अंग का लावण्य ही कम्पित ही रहा था । शरीर का स्पर्श करने पर तुमने मना क्यों नहीं कर दिया । उन्होंने क्या विनत होकर प्रणय-निवेदन नहीं किया था । क्या तुम लज्जित हो गईं । क्या रतिक्रीड़ा में उन्होंने तुम्हें जीत लिया । ३ श्रीराम

राम कले काम भण्डार जुर। जणिलु आम्भे वेशरु तुम्भर। मुकुता अळका पड़िछि खसि। चन्द्र कि सुधा बरषइ हसि। गो नळिनीबर। बोले बिशि राम तुम्भंकु बर ॥ ४ ॥

द्विपञ्चाशत् छान्द—पर्शुराम भेट

राग—घण्टारव

बहु महोत्सब कले जे सात मंगळाइ गले।
जणे जणे करि जनक अनेक रतन बसन देले जे ॥ १ ॥
दशरथ बेनि कर जे धरि राजा ऋषिबर।
मिथिळानगर आजहुँ तुम्भर अजोध्यानगर मोर हे ॥ २ ॥
कुमारी मानंक दोष हे क्षमा करिब नरेश।
पुणि नृपति आळिंगन करिण होइलेक हस हस जे ॥ ३ ॥
दशरथ महाराजा जे बजाइले बीर बाजा।
बिभा बढ़ाइ बाहुडा बिजे कले संगे घेनि क्षिति भुजा जे ॥ ४ ॥
चळे चतुरंग बळ जे कुसुम टळ मटळ।
समुद्र मन्थन प्रायक शुभुछि मुख रावर चहळ जे ॥ ५ ॥

ने काम-भण्डार में लूट मचा दी, ऐसा हम तुम्हारे वेष से समझ गई। अलकों के मुक्ता गिर पड़े हैं। क्या चन्द्रमा हंसते हुए अमृत की वर्षा कर रहा है। बिशि कहता है कि हे श्रेष्ठ कमलांगी! श्रीराम आपके उपयुक्त वर है। ४

छान्द ५२—परशुराम-भेंट

राग—घण्ठारव

सात दिवसों तक मंगल महोत्सव नाना प्रकार से मनाये गये। जनक ने एक-एक को अनेक प्रकार के रत्न तथा वस्त्र प्रदान किये। १ राजर्षि जनक ने दशरथ के दोनों हाथों को पकड़कर कहा, आज से मिथिला नगर आपका और अयोध्या नगर हमारा हो गया। २ हे राजेन्द्र! कुमारियों के दोषों को क्षमा कर दीजियेगा। राजा ने हँसते हुए बारम्बार उनका आलिंगन किया। ३ महाराज दशरथ ने वीरवाद्य वजा दिये। विवाह-कार्य समाप्त करके साथ में जानकी आदि वधूटियों को लेकर वापस चल दिये। ४ चतुरंगिणी सेना के चलने से पृथ्वी कम्पित होने लगी। मुख से निकलनेवाले शब्द सागर-मन्थन के समान सुनाई दे रहे थे। ५ यह सुनकर भार्गव परशुराम क्रुद्ध हो गये। फरसा चमकाते

शुणि करि भृगुपति जे कोपे बसिला ता मति ।
पर्शु झमकाइ ओगाळिले आगे दशरथ महीपति जे ।। ६ ।।
बोलन्ति जे तु रह रहरे तोर सुत काहिँ कह ।
केमन्त स्वरूप केतक बयस आम्भंकु थरे देखाअ हे ।। ७ ।।
शुणि करि नृपबर जे शिरे देले बेनिकर ।
सबु दिने मुहिँ तुम्भर कोयर पर्शुधर रक्षा कर हे ।। ८ ।।
कोपे होइ परखर जे बोले भृगुपति गिर ।
बाळुत कि मुहिँरे अजोध्या साइँ भण्डाउ सेहि प्रकार जे ।। ९ ।।
के न जाणे मोर गुणरे जेते छन्ति नृपगण ।
एकबिश बार निक्षत्री करिछि तोर हेला एड़े टाण रे ।। १० ।।
हेलाणि एड़ेक गर्बरे बजाइण बीर बाद्य ।
निःशंक मनरे जाउ मो पथरे करिबि तो गर्ब खर्ब रे ।। ११ ।।
सैन्य सह आज तोर रे आबर त पुत्रकर ।
शिर हाणि करि तापित प्राणकु शीतळ करिबि मोर रे ।। १२ ।।
केड़े जोद्धा तोर सुतरे आण मो पाशे त्वरित ।
शिबधनु भांगि सीतांकु नेइछि मो धनु धरु तो पुत्र रे ।। १३ ।।
रामर बड़ाइ पणे रे होइलुणि परा जणे ।
नारी मध्ये लुचिथिबा बेळ कथा नाहिँकि तोहरि मनेरे ।। १४ ।।

हुए उन्होंने महाराज दशरथ को आगे से ललकारा । ६ उन्होंने कहा, "तू ठहर जा ! बोल तेरा बेटा कहाँ है ? उसका स्वरूप कैसा है ? आयु कितनी है ? एक बार मुझे दिखा दे ।" ७ यह सुनकर नृपश्रेष्ठ दशरथ ने दोनों हाथ शिर से लगा लिये और बोले, हम सदा से आपके सेवक हैं । हे परशुधर ! रक्षा करिये । ८ भृगुवंश के नाथ परशुराम अत्यन्त क्रुद्ध होकर बोले, ऐ अयोध्या के महाराज ! क्या मैं बच्चा हूँ जो तू मुझे उस प्रकार से भरमा रहा है । ९ जितने भी राजागण हैं उनमे से कौन मेरे गुणों को नही जानता । मैंने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित किया है । तेरा इतना साहस बढ़ गया । १० तुझे इतना घमण्ड हो गया कि वीरवाद्य बजाता हुआ मेरे मार्ग से शंका-रहित चित्त से चला जा रहा है । मैं तेरे गर्व को चूर-चूर कर दूँगा । ११ सेना के सहित आज तेरा तथा तेरे पुत्रों का शिर काटकर अपने तप्त प्राण को ठण्डा करूँगा । १२ तेरे बालक कितने वीर हैं । उन्हें शीघ्र मेरे समीप ले आ । शिव-धनुष का खण्डन करके उसने सीता प्राप्त की है । तेरा पुत्र अब मेरा धनुष उठाए । १३ राम के बड़प्पन से तू बदल गया है,

शृगाळ हेले पागळरे सिंह न करे खातर ।
सेहि मति तोर बाइ बुद्धि देखि सह्य न हुए मोहर रे ।। १५ ।।
मो दाउ मुँ आज नेबिरे राम नाम पोछि देबि ।
नोहिले काहिँकि क्षत्रि बिमर्दन बानाकु उड़ाउ थिबि जे ।। १६ ।।
(दशरथ) बीरबर पर्शुराम हे घेनिबा दिन जणाण ।
बाळुत नन्दने मारि किबा जश कर मो शिर छेदन हे ।। १७ ।।
राजा बिनति शुणि जे गर्जइ जेसने फणी ।
देखन्ति ए रीति लक्ष्मण भाषन्ति एहुटा किए से पुणि जे ।। १८ ।।
बातुळ प्रायक मति जे दिशइ केन्हे बिकृति ।
आम्भ थाट मध्ये किपाइँ पशिछि पळाइ जाउ झटिति जे ।। १९ ।।
बोले बीर पर्शुराम जे रे दशरथ नन्दन ।
एड़ेक साहस हेलाणि तोहर कहु इंगित बचन रे ।। २० ।।
रहिथिला बहु दिनु रे घुणखिआ शिबधनु ।
भांगिबारु राम तार भाइ बोलि परिचय देउ तेणु रे ।। २१ ।।
मूषा खाइले गञ्जाइरे बिराड़िकि चिन्हे नाहिँ ।
सेहि मति तोर देखुछि बेभार तो बाक्ये हस माड़इरे ।। २२ ।।

जब तू युवतियों के बीच मे जा छिपा था, क्या वह बात तेरे मन में नहीं है । १४ पागल हो जाने पर शृगाल सिंह की खातिरदारी नहीं करता । उसी प्रकार तेरी बुद्धि को भ्रष्ट देखकर अब मुझे सहन नहीं हो रहा । १५ मैं आज अपना दाँव ले लूंगा । राम-नाम को मिटा दूँगा । यदि ऐसा न कर सका तो व्यर्थ ही क्षत्रिय-विनाशन पताका क्यों फहराता रहूँगा । १६ दशरथ ने कहा, हे वीरश्रेष्ठ परशुराम ! इस दीन की प्रार्थना स्वीकार करें । शिशु बालक को मारने से क्या यश मिलेगा ? आप मेरा शिर काट दें । १७ राजा की विनय को न सुनकर वह सर्प के समान फुफकार रहे थे । इस प्रकार देखकर लक्ष्मण बोले कि यह कैसी बात है ? १८ इसकी बुद्धि बातुल के समान दिख रही है । हमारी सेना में यह पागल क्यों आ घुसा है ? शीघ्र ही भाग जा । १९ वीर परशुराम ने कहा, "अरे दशरथ-नन्दन ! तेरा इतना साहस हो गया कि तू सांकेतिक वचनों का प्रयोग कर रहा है । २० शंकर का धनुष बहुत दिनों का होने से उसे घून खा गये थे । राम के द्वारा टूट जाने से तू उसका भाई इस प्रकार का परिचय दे रहा है । २१ गांजा खा लेने पर चूहा बिल्ली को नहीं पहचानता । तेरा व्यवहार उसी प्रकार का देखकर तेरी बातों पर मुझे हँसी आ रही है । २२ लक्ष्मण ने कुपित होकर कहा कि मुझे आश्चर्य

लक्ष्मण कोपरे कहि जे आश्चर्य्य देखइ मुहिँ।
शशा छुआ काहिँ सिंह कार्य्यरत देखिला शुणिला नाहिँ जे ।। २३ ।।
तुम्भे ब्राह्मण सन्तान जे क्षत्रि बृत्तिरे प्रधान।
लभिथिबा हेतु मातांकु हाणिछ न जाणि क्षत्री कारण जे ।। २४ ।।
क्षत्रिक हृदय टाण जे श्रेष्ठ अटे क्षत्रिधर्म।
सदा धर्मे भीति जीव हिंसा आदि न करन्ति क्षत्रिगण जे ।। २५ ।।
ए घेनि क्षत्रिय जेते जे न जुझि तुम्भ संगते।
प्राणे नाश हेले धर्म न छाड़िले एथिकि बड़ाइ एते जे ।। २६ ।।
पिता मो धार्मिक अति जे नारी मध्ये गले लुचि।
नोहिले तो मुण्ड खण्ड खण्ड करिन थान्ते टिकि दुर्मति रे ।। २७ ।।
धर्मभय होन्ते चित्तेरे तु बेळु लुचिला मोते।
शशाछुआकु सिंह काहिँ लुचइ शुणि हस माड़े मोते जे ।। २८ ।।
केउँ शिबधनु देखि जे पळाइला बुजि आखि।
से धनुकु राम श्रीकरे भांगन्ते घुणखिआ नोहिब कि जे ।। २९ ।।
एहा शुणि पर्शुबीर जे गात्र कम्पे थर थर।
बाते रम्भा प्राये सम्भाळि न हुए क्रोधे बोले एहु गिरजे ।। ३० ।।

सा दिखाई दे रहा है। खरगोश के बच्चे ने कहीं कार्यरत सिंह को देखा अथवा सुना है ? अर्थात् नहीं। २३ ब्राह्मण-पुत्र होते हुए भी आपने क्षत्री-बृत्ति की प्रधानता प्राप्त करने के लिए क्रोध का कारण न जानकर माता का वध कर दिया। २४ क्षत्रियों के हृदय का बांकपन क्षत्रियधर्म में श्रेष्ठ है। परन्तु क्षत्रीगण सदा धर्म के भय से जीवहिंसा आदि नहीं करते। २५ ऐसा विचार कर जो क्षत्रिय लोग आप से नहीं भिड़े। उन्होंने प्राण खो दिये पर धर्म को नहीं छोड़ा, इसी कारण आप इतने बढ़ गये हैं। २६ हमारे पिता अत्यन्त धार्मिक होने से स्त्रियों के बीच छिप गये। नहीं तो अरे दुर्मति ! वह क्या तेरे शिर के टुकड़े-टुकड़े न कर डालते। २७ मन में धर्म का भय होने से तू एक बार मुझसे छिप गया। कहीं खरगोश के बच्चे से सिंह छिपता है। यह सुनकर तो मुझे हँसी आ रही है। २८ जिस शिवधनुष को देखकर लोग आँख बन्द करके भाग जाते थे वह धनुष श्रीराम के हाथों टूटने से घुन का खाया तो नहीं होगा। २९ ऐसा सुनकर वीर परशुधर का शरीर थर-थर कांपने लगा। वायु से जिस प्रकार केले का वृक्ष सम्हल नहीं पाता उसी प्रकार वह कुपित होकर ऐसा कहने लगे। ३० क्षण मात्र के लिए ठहर जा। पहले

रह रह क्षण मात्ने रे आगे राम पच्छे तोते ।
बधिबइँ देख न पर्शु कलङ्क छड़ाइबि तुम्भे रक्ते रे ॥ ३१ ॥
एते बोलि कोप होइ जे राम निकटे मिळइ ।
पद्मनाभ द्विज करइ जणाण ताहि कर सीता साइँ हे ॥ ३२ ॥

त्रिपञ्चाशत् छान्द

एथु अन्ते शुण जने जे पर्शुराम क्रोध मने ।
श्रीराम निकटे प्रवेश हुअन्ते भये दशरथ भणे जे ॥ १ ॥
हे महात्मा बीरबर हे मो अपराध क्षमा कर ।
दण्डिबा शकति जा निकटे थाए से करे क्षमा बिचार जे ॥ २ ॥
ए मोर कुमर चारि जे चरु अंश अबतरि ।
अळप अळप किशोर बयस न जाणन्ति धनुधरि जे ॥ ३ ॥
बोले पर्शु होइ तेज जे बुलाइ नेत्र सरोज ।
शिब धनु भागि सीताकु नेउछि मोर धनु धरु आज जे ॥ ४ ॥
धरि पर्शुराम कर जे भेटाइले चापधर ।
तुम्भ कृपाबळे एहांकु पाइछि ए कि नुहन्ति तुम्भर जे ॥ ५ ॥

राम का, अनन्तर तेरा वध करूँगा। यह कुठार देख। तेरे रक्त से कलंक को छुड़ा दूंगा। ३१ इतना कहकर कुपित होकर वह राम के निकट जा पहुँचे। द्विज पद्मनाभ विनती करता है। हे जानकीनाथ ! रक्षा करो। ३२

छान्द—५३

हे सज्जनो ! सुनो। इसके पश्चात् क्रुद्ध चित्त वाले परशुराम को श्रीराम के निकट पहुँचने पर भयभीत होकर दशरथ ने कहा। १ हे वीरश्रेष्ठ महात्मन् ! मेरे अपराध को क्षमा करें। जिसके पास दण्ड देने की शक्ति होती है वही क्षमा के विषय में सोचता है। २ मेरे यह चारों पुत्र यज्ञान्न से उत्पन्न हुए हैं। अल्प अवस्था वाले यह किशोर धनुष उठाना भी नहीं जानते। ३ तब प्रचण्ड होकर कमल से नेत्रों को घुमाते हुए परशुराम ने कहा। शिव का धनुष तोड़कर सीता को जा रहा है। यह आज मेरा धनुष उठाए। ४ परशुराम का हाथ पकड़कर (दशरथ ने) धनुषधारी राम को उनसे मिलाते हुए कहा कि आपकी कृपा से ही मैंने इन्हें पाया है। ये क्या आपके नहीं है ? ५ राम को देखकर धनुर्धारी

रामे चाहिँ पर्शुधर जे क्रोधे बोलइ ए गिर।
मिथिळारे शिबधनु भग्न कल मोर धनु एबे धर जे ॥ ६ ॥
पर्शुराम बाक्य शुणि जे श्रीराम बोलन्ति बाणी।
किए तुम्भे काहुँ तुम्भर उत्पत्ति नाम गोत्र कह शुणि हे ॥ ७ ॥
दिशुछि ब्राह्मण प्राय हे क्षत्रिय आयुध बह।
अट काहा सुत केउँ कुळे जात कहि मो नाश संशय हे ॥ ८ ॥
पर्शुधर बोले शुण हे मोर बीर क्षत्रिपण।
मो समाने क्षत्रि त्रिपुर नाहान्ति कहुछि बंशानुगुण हे ॥ ९ ॥
श्रीराम पद्मचरण जे ध्याइ पद्मनाभ दीन।
बोले ए संसारे रहि न पारइ केड़े केड़े जोद्धा टाण जे ॥ १० ॥

चतुःपञ्चाशत् छान्द

रामे पर्शुराम कहि जे, शुण एक चित्त होइ।
मो बंशानुगुण जनम बृत्तान्त वर्णना करुअछइ जे ॥ १ ॥
पूर्बे कनाउज देश जे, गाधि नामे नृप ईश।
पुत्र पौत्रादि न थिबा हेतु बंशे होइ दुःखित मानस जे ॥ २ ॥

परशुराम कुपित होकर इस प्रकार बोले। जनकपुर में तुमने शिव का धनुष तोड़ डाला। अब मेरा धनुष उठाओ। ६ परशुराम की बातों को सुनकर श्रीराम ने कहा कि आप कौन हैं? आपकी उत्पत्ति कहाँ से हुई है? अपना नाम और गोत्र बतायें, मैं सुनना चाहता हूँ। ७ देखने में ब्राह्मण के समान, पर क्षत्रिय अस्त्र-शस्त्र धारण किये हैं। आप किसके पुत्र हैं? किस कुल में उत्पन्न हुए हैं? यह बताकर मेरा संशय निवारण करें। ८ धनुर्धारी परशुराम ने कहा, मेरी वीरता के विषय में सुन। मेरे समान क्षत्रिय योद्धा तीनों लोकों में नहीं है। अब वंश के विषय में बताता हूँ। ९ श्रीराम के चरण-कमलों का ध्यान करके दीन पद्मनाभ कहता है कि कितने-कितने बाँके योद्धा इस ससार में रह नही पाये। १०

छान्द—५४

परशुराम ने राम से कहा कि एकाग्रचित्त होकर सुन, मैं अपना वंशानुगुण-सहित जन्म-वृत्तान्त वर्णन कर रहा हूँ। १ पूर्वकाल में कन्नौज देश मे गाधि नाम का एक राजा था। वंश मे पुत्र-पौत्रादि न होने के कारण उनका मन दुःखी था। २ परमात्मा की आराधना करते हुए उन

ईश्वरंकु आराधना जे, करन्ते से महामना।
केते दिन परे बर प्राप्त होन्ते जात हेला एक कन्या हे ॥ ३ ॥
नाम देले सत्यबती जे, होन्ते प्रौढ़ावस्था प्राप्त।
ऋचिक मुनिक बिबाह दिअन्ते होइण आनन्द मति ॥ ४ ॥
बिभा होइ मुनिबर जे, घेनि संगे नारी बर।
आपणा आश्रम निकटे चळिले गौतमी नदीर तीर जे ॥ ५ ॥
तहिँ जान्ते किछि दिन जे, गाधिराज सन्निधान।
गाधिराणी कर जोड़ि जणाइले धिक् इउ आम्भ जन्म जे ॥ ६ ॥
कोळे नोहिला कुमर जे, के बहिब राज्य भार।
आम्भ अन्ते सिना बंश लोप्य हेब राज्य हेब छार खार जे ॥ ७ ॥
पुत्र कामना अर्थरे जे, जाउछि झिअ बासरे।
एहा शुणि राजा सम्मत हुअन्ते मिळिले जुइँ मन्दिरे जे ॥ ८ ॥
झिअ देखिण माताकु जे, पाछोटि नेले गृहकु।
माता आसिबार सम्बाद प्रकाश कले नेइ ऋचिकंकु जे ॥ ९ ॥
ऋचिक बोलन्ति गिर जे, कि निमन्ते आसिबार।
एहा शुणि गाधिराणी भणि बाणी शुणबा ऋषिप्रवर हे ॥ १० ॥
मो कोळे नाहिँ कुमर जे, आबर सत्यवतीर।
माता झिअ दुहिँकर पुत्र नाहिँ पुत्रदान दयाकर हे ॥ ११ ॥

महामना को कुछ दिनों बाद बर प्राप्त होने से उनके एक कन्या उत्पन्न हुई। ३ जिसका नाम उन्होंने सत्यवती रखा। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुई तो उसका विवाह ऋचीक मुनि के साथ कर देने पर वह प्रसन्न हो गयी। ४ मुनिश्रेष्ठ विवाह हो जाने पर उत्तम नारी को साथ लेकर अपने आश्रम को चल दिये जो गौतमी नदी के तट पर था। ५ कुछ दिन बीतने पर महाराज गाधि के निकट महारानी ने हाथ जोड़कर कहा कि हमारे जन्म को धिक्कार है। ६ गोद में कोई बालक नहीं हुआ। इस राज्यभार का वहन कौन करेगा। हमारे बाद वंश का लोप हो जायेगा और राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। ७ पुत्र की इच्छा से मैं बेटी के घर जा रही हूँ। यह सुनकर राजा की स्वीकृति पाकर वह दामाद के घर जा पहुँची। ८ बेटी माता को देखकर स्वागत करके उन्हें घर में ले गयी और ऋचीक से माता के आने की बात बता दी। ९ ऋचीक ने आने का कारण पूछा। यह सुनकर गाधिरानी ने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिए। १० मेरे तथा सत्यवती की गोद में पुत्र नहीं है। माँ और बेटी दोनों ही पुत्रों से हीन हैं। अतः पुत्र प्रदान करने की दया करें। ११ योग में लगे

जोगारूढ़ ऋषिबर जे, शुणि शाशुङ्क उत्तर ।
दोहराग्नि पूजा करि बेनि चरु जात करन्ते सत्वर जे ।। १२ ।।
डाकि भार्य्या सत्यबती जे, आनन्दे मुनि बोलन्ति ।
पश्चिम भाग चरुकु तुम्भे निजे भक्षण कर तड़ति जे ।। १३ ।।
ए पूर्ब भाग चरुकु गो दिअ तुम्भर मातांकु ।
एहा कहि ऋषि तपस्या निमन्ते गले अरण्य मध्यकु जे ।। १४ ।।
दुइ चरुजाक नेइ जे, एक ठाबे रखि देइ ।
माता झिअ दुहे आनन्दरे गले गोमतीकि स्नान पाइँ जे ।। १५ ।।
माता बेगे स्नान सारँ जे, भक्षिले झिअर चरु ।
झिअ स्नान सारि माता चरु भक्षि आनन्द के कहि पारुजे ।। १६ ।।
गत होन्ते किछि दिन जे, गर्भ हेले बेनि जन ।
तप सारि ऋषि आश्रमे मिळिण गर्भ कले निरीक्षण जे ।। १७ ।।
पाशे राइ सत्यबती जे, ऋषि बचन बोलन्ति ।
चरु पालटइ भक्षण करिल होइला बिषम अति जे ।। १८ ।।
ऋषि पुत्र राजा हेब जे, राजपुत्र ऋषि हेब ।
एहा शुणि गाधिराणी शोके कहे के मोर राज्य भुञ्जिब जे ।।१९।।

हुए ऋषिश्रेष्ठ ने सास की बात सुनकर पुत्रेष्टि अग्नि की पूजा करके शीघ्र ही दो चरु उत्पन्न किये । १२ पत्नी सत्यवती को बुलाकर प्रसन्नतापूर्वक मुनि ने कहा कि पश्चिम भाग वाला चरु तुम स्वयं अविलम्ब खा लेना । १३ यह पूर्व भाग वाला चरु तुम अपनी माता को दे दो । इस प्रकार कहकर महर्षि ऋचीक जंगल में तपस्या के लिए चले गये । १४ दोनों चरुओं को लेकर एक स्थान पर रखकर माता और बेटी दोनों प्रसन्नता से स्नान के निमित्त गोमती नदी को चली गयीं । १५ माता ने शीघ्रता में स्नान करके पुत्री का चरु आनन्द से खा लिया । पुत्री भी स्नान समाप्त करके माता का चरु खाकर प्रसन्न हो गई जिसकी कल्पना भी कौन कर सकता था । १६ कुछ दिन व्यतीत हो जाने पर दोनों गर्भवती हो गईं । तप की समाप्ति पर ऋषि ने आश्रम जाकर गर्भ का निरीक्षण किया । १७ ऋषि ने सत्यवती को समीप बुलाकर कहा, तुमने चरु बदलकर खा लिया है । परिस्थिति अत्यन्त विषम हो गई है । १८ ऋषि का पुत्र राजा होगा और राज-पुत्र ऋषि होगा । यह सुनकर गाधि-रानी ने शोक-विह्वल होकर कहा कि मेरे राज्य का उपभोग कौन करेगा ? १९ ऋषि ने उत्तर

ऋषि बोलन्ति उत्तर जे, तुम्भ पुत्र ऋषिबर ।
हेले मध्य बेळे बेळे बुझुथिब राज्य प्रजा समाचार जे ॥ २० ॥
आपणा पत्नीकि कहि जे तोर पुत्र क्षत्रि होइ ।
तिनि पुरुष पर्ज्यन्त क्षत्रि बृत्ति साधिबेक हृष्ट होइ जे ॥ २१ ॥
शुणि ऋषिकर बाणी जे बिदा हेले गाधि राणी ।
आपणा भुबने प्रबेश होइले गला किछि दिन पुणि जे ॥ २२ ॥
दशमास दशदिन जे, गर्भ हुअन्ते सम्पूर्ण ।
गाधि राणीठारु पुत्रेक जन्मिला देले बिश्वामित्र नाम जे ॥ २३ ॥
सत्यबती कोळे जन्म जे होइला एक नन्दन ।
ऋचिक ऋषि नामकरण करि देले जमदग्नि नाम जे ॥ २४ ॥
गत होन्ते केते बर्ष जे, जुबाबस्था परबेश ।
बिदर्भ देश राजकन्या रेणुका बिभा हेले ऋषिशिष्य जे ॥ २५ ॥
तांक कोळे आम्भे जाण जे, हेलु चारि भ्राता जन्म ।
नळराम बळराम गण्डराम पर्शुराम आम्भे सान से ॥ २६ ॥
शुणिल बंशानुगुण से, दिअ मो धनुरे गुण ।
नोहिले एक्षणि भुलाइ देबिटि शिबधनु भंगापण जे ॥ २७ ॥
बोलन्ति कोदण्डधर जे, तुम्भे कनिष्ठ कुमर ।
ज्येष्ठ बोलि करि किम्पा लोके ख्यात कह कारण एहार जे ॥२८॥

दिया कि तुम्हारा पुत्र श्रेष्ठ ऋषि होने पर भी समय-समय पर राज्य तथा प्रजा की सँभार करता रहेगा । २० फि उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि तेरा पुत्र क्षत्री होकर तीन पीढ़ी पर्यन्त दृढ़ होकर क्षत्रिय-वृत्ति का पालन करेगा । २१ ऋषि की [illegible]णी सुनकर गाधिपत्नी विदा हो गई और अपने महल में जा पहुँची । [illegible]त्तर कुछ काल व्यतीत हुआ । २२ दश मास, दस दिन में गर्भ पूर्ण होने पर गाधिपत्नी से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम विश्वामित्र [illegible] गया । २३ सत्यवती की कोख से जो एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम ऋचीक मुनि ने यमदग्नि रखा । २४ कुछ वर्ष व्य[illegible] होने से युवावस्था आने पर ऋषि-पुत्र का विवाह विदर्भ देश की राजकुमारी रेणुका से हो गया । २५ उनकी कोख से हम चार भाइयों का जन्म हुआ । नलराम, बलराम, गण्डराम तथा सबसे छोटा मैं परशुराम हूँ । २६ वंश-विवरण सुन चुके । अब मेरे धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाओ, नहीं तो इसी समय शिवधनुष को तोड़ने का गर्व भुला दूँगा । २७ कोदण्डधारी राम ने कहा कि तुम तो छोटे पुत्र हो परन्तु संसार में ज्येष्ठ विख्यात हुए, इसका कारण बताइये । २८ परशुराम ने

कोपे कहि पर्शुराम जे शुण तुम्भे देइ मन ।
दिने मोर पिता जमदग्नि करुथिले पितृ तरपण जे ।। २९ ।।
माता मो रेणुका नारी जे, जज्ञपात्रे ढाळे बारि ।
तरपण कले जळ देउथान्ति जळे छाया देखि करि जे ।। ३० ।।
अनाइ थन्ते आकाशे से, चित्रसेन रथ दिशे ।
दृष्टि बक्र हेतु जळ पड़िगला जज्ञपात्र आर पाशे जे ।। ३१ ।।
देखि पिता क्रोधे कहि जे, देचारुणी अटु तुहि ।
परपुरुषरे प्रीति थिबा हेतु अन्यमन हेलु तुहि जे ।। ३२ ।।
गृहे नाहुँ चारि भ्राते जे बने बुलु मृगयार्थे ।
ए समये मोर ज्येष्ठ तिनि भ्रात प्रबेशिले गृहगते जे ।। ३३ ।।
तांकु देखि पिता कहि जे, माता दोचारी अटइ ।
आज्ञा परमाणे तार शिरच्छेद शुणि भीत तिनि भाइ जे ।। ३४ ।।
पितांक आज्ञा अबज्ञा जे होन्ते कोपे महातमा ।
बसिछन्ति मोर पथ अनुसरि मनरे करि कल्पना जे ।। ३५ ।।
ए समये मुँ प्रबेश जे होन्ते देखिलि भबिष्य ।
पिता माता सह भ्राता गणंकर मनरे नाहिँ हरष जे ।। ३६ ।।
एसन रीति देखिण जे, पुछुँ पितांकु कारण ।
पिता बोइले आगे तो तिनि भाइ सह माता मुण्ड हाण जे ।। ३७ ।।

कुपित होकर कहा, तुम मन लगाकर सुनो । एक दिन मेरे पिता यमदग्नि पितरों का तर्पण कर रहे थे । २९ रेणुका नाम की महिला मेरी माता यज्ञपात्र में पानी डाल रही थी । तर्पण में जलदान करते हुए पानी में उन्होंने छाया देखी । ३० आकाश की ओर ताकने पर उन्हें चित्रसेन का रथ दिखाई पड़ा । वक्र दृष्टि होने के कारण जल यज्ञपात्र के बाहर गिर गया । ३१ यह देखकर पिता ने क्रोध से कहा कि तू दुराचारिणी है । पर पुरुष से प्रीति होने के कारण तू अन्यमना हो गई । ३२ घर में चारों भाई नहीं थे । वह मृगया के निमित्त वन में घूम रहे थे । इसी समय मेरे तीनों बड़े भाई घर में जा पहुँचे । ३३ उन्हे देखकर पिता ने कहा कि माता दुराचारिणी है । आज्ञानुसार उसका शिरच्छेद सुनकर तीनों भाई भयभीत हो गये । ३४ पितृ-आज्ञा-अवज्ञा से वह महात्मा अत्यन्त क्रोध में बैठे मन में विचार करते हुए मेरी बाट जोहने लगे । ३५ इसी समय मैंने प्रविष्ट होते हुए ही आगे का हाल समझा । माता-पिता के साथ तीनो भाइयों के मन में भी हर्ष नहीं था । ३६ ऐसा देखकर मैंने पिता से उसका कारण पूछा । पिता ने कहा कि पहले तू माता के साथ

शुणि पितांक उत्तर जे, छेदिलि सकळ शिर।
देखि पिता मोर सन्तुष्ट होइण बोइले माग तु बर जे ॥ ३८ ॥
मागिलि मुँ एहि बर जे, माता भ्राता माने मोर।
मृतपिण्ड छाड़ि जीबदान पान्तु एहि अनुग्रह कर जे ॥ ३९ ॥
अस्तु बोलिण होइले जे से माने जीब पाइले।
सेहि दिन ठारु पुनर्जन्म पाइ मोते ज्येष्ठरे गणिले जे ॥ ४० ॥
जाहा पुच्छाकर मोते हे, कहिलि तुम्भ अग्रते।
एबे जे धनुरे गुणकु चढ़ाअ पद्मनाभ बोले गोते जे ॥ ४१ ॥

पञ्चपञ्चाशत् छान्द

श्रीराम बोलन्ति बाणी जे शुण आहे बीरमणि।
केउँ ठारु ए जानुघण्ट पाइल कह कह थरे पुणि ॥ १ ॥
शुणि कहे पर्शुराम जे खड्गे मातांकु छेदन।
करन्ते से खड्ग हस्तु न खसिला रहिला होइ संलग्न जे ॥ २ ॥
पितांकु जणान्ते पुणि जे ध्यानबळे ऋषि जाणि।
मातृ हत्या जोगुँ एसन घटिछि शुण तु कुमरमणि जे ॥ ३ ॥

तीनों भाइयों का शिर काट दे। ३७ पिता का उत्तर सुनकर मैंने सबके शिर काट डाले। यह देखकर मेरे पिता ने सतुष्ट होकर मुझसे वर माँगने को कहा। ३८ मैंने यह वर माँगा कि हमारी माता तथा भ्रातृगण मृत पिण्ड को छोड़कर जीवन-दान प्राप्त करें। आप ऐसी ही कृपा करें। ३९ उनके अस्तु कहते ही उन लोगों को जीवन प्राप्त हो गया। उसी दिन से पुनर्जन्म पाने के कारण मेरी गणना ज्येष्ठ में हो गई। ४० मुझसे जो तुमने पूछा, वह मैंने तुम्हारे समक्ष कहा। अब धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाओ। पद्मनाभ ने इसे गीतों में वर्णन किया है। ४१

छान्द—५५

श्रीराम ने कहा, हे वीरों में मणि के समान आप सुनिये। यह जानुघण्ट आपको कहाँ से प्राप्त हुआ? हे मुनि! एक बार मुझसे बता दें। १ यह सुनकर परशुराम ने कहा, खड्ग से माता को काटने पर वह खड्ग न गिरकर हाथ में ही चिपक गया। २ पिता से निवेदित करने पर ऋषि को ध्यान के बल से ज्ञात हुआ। वह बोले, हे पुत्रश्रेष्ठ! मातृ-हत्या के कारण ही इस प्रकार की घटना घटी। ३ तुम सन्यासी वेश धारण करके

संन्यासी बेशकु धर जे तीर्थ पर्य्यटन कर।
आम्भ आज्ञा परमाणे खड्ग गोटि न रहु तोहर कर जे ।। ४ ।।
शुणि पितांकु उत्तर जे, संन्यासी बेशे बाहार।
होइबारु करु खड्ग खसि गला भिक्षा कलि द्वार द्वार जे ।। ५ ।।
एक द्वारे मउन होइ जे, रहिलि मुँ भिक्षा पाइँ।
सामन्ताणी आगे दासी ता कहइ पर्शुछन्ति उभा होइ गो ।। ६ ।।
शुणि दासी ठारु गिर जे, बोइला से रामाबर।
पर्शुराम भिक्षा मागि आसिछन्ति बोलि प्रते नुहे मोर जे ।। ७ ।।
जानुरे त घण्ट नाहिँ जे, किपरि जाणिबि मुहिँ।
शुणि से उत्तर सेठारु सत्वर फेरि पिता पाशे जाइँ जे ।। ८ ।।
कहुँ सकल बृत्तान्त हे, बोइले से तपोबन्त।
भगवतींकि ध्यान कले मिळिब कामना हेब सिद्धान्त जे ।। ९ ।।
ध्याने तोषि भगबती जे, जाणइ पूर्ब भारती।
जानुघण्ट ताहांक ठारु पाइअछि पद्मनाभ बदति जे ।। १० ।।

षट्पञ्चाशत् छान्द

शुणि तोष चापधर जे, बैष्णव धनु आबर।
पर्शुकुठार केउँ ठारु पाइल ताहा बेगे व्यक्त कर हे ।। १ ।।

तीर्थाटन करो। मेरी आज्ञा के प्रताप से यह खड्ग तेरे हाथों में नहीं टिकेगा। ४ पिता का उत्तर सुनकर संन्यासी-वेश में बाहर होते ही हाथ से खड्ग छिटक गया। द्वार-द्वार जाकर मैंने भिक्षा ग्रहण की। ५ एक द्वार पर मैं भिक्षा के लिए मौन होकर रुक गया। सामन्त पत्नी के समक्ष उसकी दासी ने कहा कि परशुराम खड़े हैं। ६ दासी के वचन सुनकर श्रेष्ठ महिला ने कहा कि परशुराम भिक्षा माँगने को आये हैं, ऐसा मुझे प्रतीत नहीं हो रहा। ७ उसकी जानु में घण्टा भी नहीं है। मैं किस प्रकार जानूंगी? उसकी बात सुनकर मैं शीघ्र ही पिता के समीप चला गया। ८ मेरे सारे वृत्तान्त कहने पर वह तपस्वी बोले कि भगवती का ध्यान करने से वह तुम्हें प्राप्त होगा और तुम्हारी कामना पूर्ण होगी। ९ ध्यान से देवी को सन्तुष्ट किया। वह पहले से ही जानती थी। पद्मनाभ कहता है कि जानुघण्ट उन्ही से परशुराम को प्राप्त हुआ। १०

छान्द—५६

यह सुनकर धनुर्धारी राम सन्तुष्ट होकर बोले कि अब शीघ्र ही बताइये

बोले जमदग्नि सुत जे, शुण से सर्ब बृत्तान्त ।
एक दिने सैन्य सह सहस्रार्जुन पारिधिकि उपगत जे ॥ २ ॥
बने दिबा अबसान जे, होन्ते सहस्रार्जुन ।
आम्भ पितांक आश्रमरे मिळिले घेनिण सामन्त सैन्य जे ॥ ३ ॥
तांकु देखि पिता मोर जे, कले अतिथि सत्कार ।
रात्रे भोजन शयन आसन देइ हृष्ट मुनिबर जे ॥ ४ ॥
प्रभातरु राजा उठि जे, मंत्रीकि बचन भाषि ।
केउँ ठारु एते द्रव्य आयोजन करि पकाइले ऋषि जे ॥ ५ ॥
आम्भर सैन्य सामन्त जे, खाइ करि हेले सुस्थ ।
राजा बचने मंत्रीबर बोलइ घटणा शुण समस्त जे ॥ ६ ॥
अछि तांक पाशे रहि जे, कामधेनु नामे गाई ।
ताहा प्रसादु जाहा इच्छा करन्ति सकळ पूरण होइ जे ॥ ७ ॥
शुणि राज मंत्री गिर जे ऋषिक पाशे सत्वर ।
प्रवेशि बोलन्ति कामधेनु गोटि दिअ मोते ऋषिबर जे ॥ ८ ॥
शुणि नास्ति कले पिता से सहस्रार्जुन बलबन्ता ।
बळात्कारे कामधेनु घेनि गले पिता करि महाचिन्ता जे ॥ ९ ॥
बसिछन्ति आश्रमरे जे, आम्भे एहि समयरे ।
तीर्थ पर्ज्यटन सारिण दर्शन आशे पितांक छामुरे जे ॥ १० ॥

कि वैष्णव धनुष तथा फरसा आपको कहाँ से प्राप्त हुआ? १ यमदग्नि-नन्दन ने कहा कि वह सारा वृत्तान्त सुनो । एक दिन सहस्रार्जुन सेना समेत शिकार के लिए आया । २ जंगल में दिन समाप्त होते-होते सहस्रार्जुन सेना को साथ लेकर हमारे पिता के आश्रम में जा पहुँचा । ३ उसे देखकर हमारे पिता ने अतिथि-सत्कार किया । श्रेष्ठ मुनि रात्रि में आसन भोजन तथा शयन उपलब्ध कराके प्रसन्न हो गये । ४ प्रातःकाल राजा ने उठकर मंत्री से कहा कि ऋषि ने इतनी वस्तुओं का आयोजन कहाँ से कर लिया ? ५ हमारी सेना तथा सामंत भोजन करके प्रसन्न हो गये । राजा के वचन सुनकर मंत्री बोला कि आप सारी घटना के विषय में सुनें । ६ इनके पास कामधेनु नाम की गाय है, जिसकी कृपा से जो भी इच्छा करते हैं, सभी पूर्ण होती है । ७ राजा ने मंत्री की बातों को सुनकर शीघ्र ही ऋषि के पास जाकर कहा कि हे ऋषिवर ! यह कामधेनु हमें दे दो । ८ पिता ने यह सुनकर उन्हें मना कर दिया । बलवान सहस्रार्जुन बलपूर्वक कामधेनु को लेकर चला गया । पिताजी अत्यन्त चिंतित आश्रम में बैठे थे । इसी समय में तीर्थाटन समाप्त करके दर्शनों की इच्छा से पिता के समक्ष

प्रबेश हुअन्ते आसि जे, पिता ए समस्त भाषि ।
बाग्र महाक्रोधे सस्रार्जुन राज्ये जाइण मुहिँ प्रबेशि जे ।। ११ ।।
राज्य भग्न कलि तार जे, शुणि से जुद्धे बाहार ।
हेबारु पळाइ आसिण जे मुहिँ सिद्धबने घोर तप जे ।। १२ ।।
तपस्याकु अचरिलि जे, बिष्णु आराधना कलि ।
केते दिन परे तप पूर्ण होन्ते बिष्णुठारु कळ नेलि जे ।। १३ ।।
ए बैष्णब धनुशर जे, आबर पर्शुकुठार ।
देइ भगवान बोइले हे राम एथें दुष्ट नाश कर जे ।। १४ ।।
पाइण एसन बर जे, माहेश्वरी कटकर ।
प्रबेशिण सस्रार्जुन संगे जुद्ध कलि मुहिँ परखर जे ।। १५ ।।
सैन्य तार बध कलि जे ता सस्रबाहु छेदिलि ।
शेषे कामधेनु घेनिण मुँ हर्षे पिता पाशे प्रबेशिलि जे ।। १६ ।।
एहि समस्त कारणु जे, बिष्णु ए बैष्णबा धनु ।
पर्शु कुठारादि मोते देइछन्ति आहे दशरथ सूनु जे ।। १७ ।।
चित्ते चिन्ति सीताकान्त जे, पद्मनाभ कहे गीत ।
उद्धारिण धर प्रभु आदिमूळ अटे मुहिँ अपण्डित जे ।। १८ ।।

उपस्थित हुआ । पिता के द्वारा सारी घटना सुनाने पर अत्यन्त क्रोधित होकर मैं सहस्रार्जुन के राज्य में जा पहुँचा । ९-११ उसके राज्य को नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ सुनकर वह युद्ध के लिए बाहर निकला, तब मैं सिद्धवन में घोर तपस्या के लिए भाग आया । १२ तप का आचरण करते हुए मैंने विष्णु भगवान की आराधना की । कुछ दिनों में तपस्या पूर्ण होने पर विष्णु से वर प्राप्त किया । १३ यह वैष्णव धनुष-बाण तथा फरसा देकर भगवान ने कहा कि हे राम ! इससे दुष्ट का विनाश करो । १४ इसी प्रकार का वर प्राप्त करके माहेश्वरी कटक में प्रविष्ट होकर मैंने सहस्रार्जुन के साथ घोर युद्ध किया । १५ उसकी सेना का विनाश किया और उसकी हजार बाहुओं को काट डाला । अतः मैं कामधेनु को लेकर प्रसन्नता से पिता के पास जा पहुँचा । १६ हे दशरथ-नन्दन ! इन्हीं समस्त कारणों से विष्णु ने यह वैष्णव धनुष तथा कुठार मुझे दिया था । १७ हृदय में सीता के कांत श्रीराम का चिन्तन करके पद्मनाभ गायन करता है । हे प्रभु ! आप आदिमूल हैं । मैं अज्ञानी हूँ, हमें अपनाकर उद्धार कर दीजिए । १८

सप्तपञ्चाशत् छान्द

शुणि एसन उत्तर जे, बोलन्ति कोदण्डधर ।
काहिँ पाइँ तुम्भे निक्षत्र करिछ पृथ्वी एक बिशबार जे ।। १ ।।
पर्शुराम भणि गिर जे, शुण सेहि समाचार ।
सहस्रार्जुनर एकपुत्र थिला नाम बिरोचन बीर जे ।। २ ।।
जुद्ध बेळे बने जाइ जे, लुचिला से भय पाइ ।
पिता मृत्यु परे आसिण देखइ राज्य छार खार होइ जे ।। ३ ।।
मने महाक्रोध धरि जे, किछि दिन गत करि ।
मो पिता आश्रम निकटे मिळिला प्रतिशोध नेब बोलि जे ।। ४ ।।
देखिलाक आम्भ माने जे, नाहुँ पिता सन्निधाने ।
एकाकी देखिण ताहांकु बधिण रक्त नेला हर्ष मने जे ।। ५ ।।
सेहि रुधुरि घेनिण जे, कला पितृ तरपण ।
एमन्त अवस्था देखि आम्भ माता बिकळे कले रोदन जे ।। ६ ।।
आम्भे थिलुँ सिद्धबन जे, तपस्यारे होइ मग्न ।
जोग बळे ताहा जाणि बारु कलु माता निकटे गमन ।। ७ ।।
शुणि पिता बध बाणी जे, ए प्रतिज्ञा कलुँ पुणि ।
आजि ठारु पृथ्वी निक्षत्र करिबि बंशे न देब के पाणि जे ।। ८ ।।

छान्द—५७

इस प्रकार उत्तर सुनकर कोदण्डधारी राम ने कहा कि आपने किस कारण से पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियों से रहित किया ? १ परशुराम ने कहा कि वह वृत्तान्त भी सुनो । सहस्रार्जुन का एक वीर पुत्र था । जिसका नाम विरोचन था । २ युद्ध के समय वह जाकर भय से वन में जा छिपा । पिता की मृत्यु के बाद उसने आकर राज्य को नष्ट-भ्रष्ट देखा । ३ मन में वह अत्यन्त कुपित होकर कुछ दिनों के पश्चात् प्रतिशोध लेने के लिए मेरे पिता के आश्रम में आया । ४ उसने पिता के निकट हम लोगों को न देखकर उन्हें अकेले पाकर उनका वध कर दिया और प्रसन्नतापूर्वक उनका रक्त ले लिया । ५ उस रक्त को लेकर उसने अपने पिता का तर्पण किया । वह अवस्था देखकर मेरी माता व्याकुल होकर रोदन करने लगी । ६ मैं सिद्धवन में तपस्या में लीन था । योगबल से ज्ञान होने पर मैं माता के समीप गया । ७ अपने पिता के वध की बात सुनकर मैंने प्रतिज्ञा की कि आज से पृथ्वी को मैं क्षत्रियों से रहित कर दूंगा । वंश में कोई पानी

एते कहि कोप होइ जे, मिळिलि ता राज्ये जाइ।
बिरोचन संगे भेट हेला जहुँ प्राणे बध कलि तहिँ जे ॥ ९ ॥
रखिण तार रुधिर जे जेते थिले क्षत्रिबर।
समस्तंक शिर छेदन करन्ते बहिला रकत धार जे ॥ १० ॥
समस्त रक्त घेनिण जे, कलि पितृ तरपण।
एहि परि पृथिबीकु एकबिश बार कलि बीरशून्य जे ॥ ११ ॥
केबळ ए दशरथ जे, थिला बोलि अपुत्रिक।
प्राण भये नारी मध्ये लुचिबारु न गलि मुँ तार पाश जे ॥ १२ ॥
एबे तुम्भे होइ जन्म जे शिव धनु कल भग्न।
ए बैष्णबा धनु धरिबाकु हेब कहे पद्मनाभ दीन से ॥ १३ ॥

अष्टपञ्चाशत् छान्द

देखि एसनक रीति जे पुणि पुछि दाशरथि।
केउँ ठारु एहि धनुजात हेला कह जमदग्नि बतिस हे ॥ १ ॥
शुणि बोले पर्शुधर जे, प्रसिद्ध सत्यजुगर।
श्वेतराजा एक जज्ञ करिथिले गला किछि दिनान्तर जे ॥ २ ॥
से जज्ञकुण्डरु जाण जे बाउँश बृक्षेक जन्म।
सप्त पब होइ बढ़न्ते से बृक्ष देखि तोष देवगण जे ॥ ३ ॥

देनेवाला भी नहीं रहेगा। ८ इतना कहकर कुपित होकर उसके राज्य में जाने पर विरोचन के साथ भेंट हुई। जहाँ मैंने उसे जान से मार डाला। ९ उसका रक्त संचित करके और भी जितने श्रेष्ठ क्षत्री थे, उन सबका सिर काटने से रक्त की धारा बहने लगी। १० समस्त रक्त को लेकर मैंने पिता का तर्पण किया। इसी प्रकार पृथ्वी को इक्कीस बार वीरों से शून्य कर दिया। ११ केवल यह निपूता दशरथ प्राणों के भय से नारियों के बीच में जा छिपा जिससे मैं इसके पास नहीं गया। १२ अब तुमने पैदा होकर शंकर के धनुष को तोड़ डाला। दीन पद्मनाभ कहता है कि अब यह बैष्णव धनुष चढ़ाना पड़ेगा। १३

छान्द—५८

इस प्रकार देखकर पुनः दशरथ-नन्दन ने पूछा ने कि हे यमदग्नि-नन्दन! यह धनुष कहाँ से उत्पन्न हुआ, हमें आप यह बताइये। १ यह सुनकर परशुधर ने कहा कि सतयुग में प्रसिद्ध महाराज श्वेत ने एक यज्ञ किया जो कुछ दिनों तक चलता रहा। २ उस यज्ञकुण्ड से बाँस का

तहुँ से वृक्षकु आणि जे ता प्रथम पबकु हाणि ।
अजगव नामे धनु तिआरिले इन्द्र बहिले ता पुणि जे ।। ४ ।।
कले द्वितीय पबेण जे, पिनाक धनु उत्पन्न ।
महादेव करे नेइ समर्पिले नाशिबाकु दुष्टगण जे ।। ५ ।।
तृतीय पब सारंग जे बहिले ता शिरीरंग ।
चतुर्थ पब शिबधनु होइला नेइण ता सदाशिब जे ।। ६ ।।
जनकंकु नेइ देले जे, ताकु न भांगिल हेळे ।
पँचम पबे बैष्णबा धनु जात बिष्णु ताहा मोते देले जे ।। ७ ।।
षष्ठ पबरे गाण्डीब जे करि साबित्रीबल्लभ ।
अति जतनरे रखिछन्ति पाशे द्वापरे अर्जुन नेब जे ।। ८ ।।
सप्तम पबक बंशी जे कले देव होइ खुसि ।
द्वापरे श्रीकृष्ण अबतार होइ मोहिबेक गोपबासी हे ।। ९ ।।
एसनक धनु जन्म हे कहिलि आहे श्रीराम ।
निअ जे बैष्णबा धनु बेगे धरि कहे पद्मनाभ दीन ।। १० ।।

एक दण्ड उत्पन्न हुआ । उस दण्ड को सात पोरों में बढ़ते देखकर देवगण हर्षित हो गये । ३ वहाँ से उस दण्ड को लाकर उसकी प्रथम पोर काटकर अजगव नाम का धनुष तैयार हुआ जिसे देवराज इन्द्र ने धारण किया । ४ दूसरे पोर से पिनाक धनुष का निर्माण हुआ जिसे दुष्टों का विनाश करने के लिये महादेव जी के हाथों में समर्पित किया गया । ५ तीसरे पोर से शारंग बना, जिसे विष्णु ने धारण किया । चौथे पोर से शिवधनुष बना जिसे सदाशिव ने ग्रहण किया । ६ उन्होंने उसे लेकर जनक को दे दिया, जिसे तुमने लीला मात्र में तोड़ डाला । पाँचवें पोर से वैष्णव धनुष बना जिसे विष्णु ने मुझे दे दिया । ७ छठी पोर से सावित्रीवल्लभ ने गाण्डीव का निर्माण करके उसे अपने पास यत्न से रख लिया जिसे द्वापर में अर्जुन ग्रहण करेगा । ८ सातवें पोर से देवताओं ने प्रसन्न होकर वंशी का निर्माण किया जिसे द्वापर में अवतरित होकर श्रीकृष्ण गोपियों को मोहित करेंगे । ९ हे श्रीराम ! इस प्रकार मैंने धनुष की उत्पत्ति तुमसे कही । दीन पद्मनाभ कहता है कि अब शीघ्रता से वैष्णव धनुष को ग्रहण करो । १०

एकोनषष्ठितम छान्द

एते कहि पर्शुधर जें, धनु देले राम कर।
धनु बढ़ाइ दिअन्ते पर्शुधर बिष्णु कळा गला तार जे ॥ १ ॥
रामधरि धनुशर जे, कोपे होइ जरजर।
काहाकु ए शर करिबि प्रहार बेगे कह पशुधर जे ॥ २ ॥
पर्शुराम बोले बाणी हे क्षमाकर रघुमणि।
मुहिँ बुद्धिहीन गर्बे न चिन्हिण कटु बाक्य अछि भणि हे ॥ ३ ॥
जेते अछि पाप मान हे, पुरातन जे नूतन।
कृपा दृष्टि करि हे, कोदण्डधारी छेदि पकाअ बहन जे ॥ ४ ॥
शुणि श्रीराम हरष जे, बाण बिन्धन्ते आकाश।
सर्व पापमान होइला छेदन भाबे जमदग्नि शिष्य जे ॥ ५ ॥
ए निश्चे बिष्णुबतार जे प्रदक्षिण बार बार।
पद्मनाभ कहि चळि गले सेहि ध्यायि श्रीराम पयर जे ॥ ६ ॥

छान्द—५९

इतना कहकर धनुर्धारी परशुराम ने श्रीराम के हाथ में धनुष दे दिया। धनुष के चढ़ा देने पर परशुराम से धनुर्धर विष्णु की कला का लोप हो गया। १ क्रोध से तमतमाते हुए श्रीराम ने धनुष-बाण लेकर कहा, हे परशुधर! अब शीघ्र कहो कि इस शर का प्रहार किस पर करूँ? २ परशुराम जी बोले, हे रघुवंश के मणि! क्षमा कर दीजिए। मन्द-मति मैंने गर्व से आपको न पहचानते हुए कठोर शब्द कहे हैं। ३ हे कोदण्डधारी राम! आप कृपा की दृष्टि डाल कर जितने भी प्राचीन तथा अर्वाचीन पाप हैं उन्हें शीघ्र ही काटकर गिरा दीजिए। ४ यह सुनकर श्रीराम प्रसन्न हो गये। गगन में बाण छोड़ते ही समस्त पाप नष्ट हो गये। इस प्रकार का विचार यमदग्नि-नन्दन को आया। ५ यह निश्चय ही विष्णु के अवतार हैं। पद्मनाभ कहता है कि वह बारम्बार उनकी प्रदक्षिणा करके श्रीराम के चरणों का ध्यान करते हुए वहाँ से चले गये। ६

षष्ठितम छान्द

राग—कळशा

धनु धरिबा देखिण जनक दुलणी ।
धइर्ज्य हराइ देवी मने मने गुणि ॥ १ ॥
शिबधनु भांगि राम मोते बिभा हेले ।
पुण पर्शुराम धनु एठारे धइले ॥ २ ॥
गला बेळे स्वयंबर करि थिले अबा ।
पुणिहिँ श्रीराम एथि होइलेक बिभा ॥ ३ ॥
एतेक बिचारि मन दुःखे बइदेही ।
बोले गोपी बसिले से धरणीकि चाहिँ ॥ ४ ॥

एकषष्ठितम छान्द

राग—मुखारी पहपट्ट

पर्शुराम धनु राम धरिबार देखि ।
मन्नोदुःखे मान भर हेले चन्द्रमुखी ॥ १ ॥
टेक खसि टेक एबे शशिजित मुख ।
जिणिबाकु आसिथिले पर्शुधर देख ॥ २ ॥

छान्द—६०

राग—कलश

धनुष को उठाते देखकर जनक-नन्दिनी अधीर होकर मन ही मन विचार करने लगी। १ शंकर का धनुष भंजन करके श्रीराम ने मेरे साथ विवाह किया। फिर इन्होंने यहाँ परशुराम का धनुष उठा लिया। २ क्या जाते समय स्वयंवर किया था और फिर से यहाँ पर श्रीराम का विवाह हो गया। गोपी कहता है कि इस प्रकार चिन्तित होकर विदेह-तनया दुखित मन से बैठकर पृथ्वी की ओर ताकने लगी। ४

छान्द—६१

राग—मुखारी पहपट्ट

श्रीराम को परशुराम का धनुष उठाते देखकर चन्द्रमुखी सीता का मन दुःख से व्याप्त हो गया। १ अब चन्द्रमा पर बिजय प्राप्त करने वाला मुख उठा। देखो परशुधर विजय प्राप्त करने आया था। २

बिम्बाधरी तो बिमुख मोते बहु दुःख ।
सुखदायिनी तो बिनु अछि काहिँ सुख ॥ ३ ॥
प्रदीप छुआइँ कराइछु जेउँ सत्य ।
करिथाअ सखि तुहि सेहि कथा तथ्य ॥ ४ ॥
शुणि राम रम्यबाणी रमणीरतन ।
आनन्द होइ टेकिले चन्द्रमा बदन ॥ ५ ॥
हास रस परिहास कले बहु लीळा ।
रस सिन्धुरे बुड़िले रसकिनीशीळा ॥ ६ ॥
अजोध्या प्रबेश दशरथ महीपति ।
बोले बिशि रामकीर्त्ति शुभ्रकला क्षिति ॥ ७ ॥

द्विषष्ठितम छान्द

राग—कृष्णकाळी बृसे

अजोध्या कटके दशरथ परबेश ।
अनेक नृपति तहिँ अछन्ति जे पाश ॥ १ ॥
बीर बाद्यमानंकरे पूरइ आकाश ।
सबुंकरि घरे नेत पताका कळश ॥ २ ॥

हे बिम्बोष्ठि ! तुमसे पृथक् होकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ है । हे सुख प्रदान करनेवाली ! तुम्हारे बिना सुख कहाँ है ? ३ हे सहचरी ! दीपक का स्पर्श कराकर तुमने जो प्रतिज्ञा कराई थी, तुम उसी बात को प्रमाण समझो । ४ श्रीराम के मधुर वाक्यों को सुनकर रमणीरत्न सीता ने प्रसन्न होकर शशिमुख उठा लिया । ५ उन्होंने हास-परिहास में अनेक लीलाएँ कीं जिससे रसिक शीला-रस के सागर में निमग्न हो गयीं । ६ महाराज दशरथ अयोध्या में प्रविष्ट हुए । बिशि कहता है कि श्रीराम की शुभ्रकीर्ति पृथ्वीतल पर व्याप्त हो गई । ७

छान्द—६२

राग—कृष्णकाली की धुन

दशरथ अयोध्या नगर में जा पहुँचे । उनके समीप अनेक राजागण उपस्थित थे । १ वीर-वाद्यों से आकाश भर गया था । सबके भवनों में कलश एवं पताकाएँ थीं । २ सबके द्वार पर पूर्णकुम्भ तथा सुमन-पल्लव सजे थे ।

सबु द्वारे पुर्णकुम्भ कुसुम तोरण ।
गावन्ति मंगळगीत बार नारीगण ॥ ३ ॥
हुळहुळी शबद सिन्धु गर्जन जिणि ।
भाट किएबार कहुछन्ति बेळ जाणि ॥ ४ ॥
चारि पुत्र चारि बधु घेनिण नृपति ।
श्री नबरे परबेश होइले तड़ति ॥ ५ ॥
शिबिकामानख उत्तरिण कन्याबर ।
निउछाळि करि नेले जे जाहार पुर ॥ ६ ॥
हुळहुळी देइण कुसुम बृष्टि कले ।
सर्बनारी बंधापना करिण देखिले ॥ ७ ॥
राम सीता देखि कउशल्यांक आनन्द ।
चकोर देखिला किबा सरगर चान्द ॥ ८ ॥
बहु उत्सबरे कराइले नृत्य गीत ।
बहु आनन्द होइला सकळ सामन्त ॥ ९ ॥
बहु द्रव्यमान द्विजबरे देले दान ।
अन्न बस्त्र द्विजे दत्त कले अबिच्छिन्न ॥ १० ॥
अजोध्या कटक द्विती स्वर्गप्राय शोभा ।
दशरथ महीपति द्वितीय मघबा ॥ ११ ॥

वारांगनाएँ मगलगीत गा रही थी । ३ मांगलिक शब्दों ने सागर-गर्जन को जीत लिया था । भाट आदि समय-समय पर स्तुति कर रहे थे । ४ राजा चार पुत्रों तथा,चार बधुओं को लेकर शीघ्रता से अपने महल मे जा पहुँचे । ५ डोलियों से उतारकर वर-कन्याओं को वलइयाँ लेते हुए अपने-अपने महलों में ले जाया गया । ६ मांगलिक शब्द के साथ पुष्पवर्षा हुई । सभी स्त्रियों ने आरती उतारकर उन्हें देखा । ७ श्रीराम और सीता को देखकर कौशल्या आनन्दित हो गयी, मानों चकोर ने आकाश का चन्द्रमा देख लिया हो । ८ अनेक प्रकार के नृत्य-गीतादिक उत्सव कराये गये । सभी सामन्तों को अपार हर्ष हुआ । ९ श्रेष्ठ ब्राह्मणों को नाना प्रकार के पदार्थ दान में दिये गये । निरन्तर ब्राह्मणों को अन्न-वस्त्र प्रदान किये गये । १० अयोध्या नगर द्वितीय स्वर्ग के समान सुन्दर लग रहा था तथा महाराज दशरथ द्वितीय इन्द्र के समान लग रहे थे । ११

काम रति प्राय तहिँ अइना पुरुष ।
बैंकुण्ठ तेजिण जहिँ श्रीहरि प्रबेश ॥ १२ ॥
से कटक शोभाकु मुँ कि देबि उपमा ।
तहिँरे बिजय करिछन्ति सिन्धु जेमा ॥ १३ ॥
रथ गज अश्व नर चतुरंग बळ ।
सकळ नृप खटन्ति चरणर तळ ॥ १४ ॥
समस्त नृपति माने होइले मेलाणि ।
जे जेमन्त तेमन्त बेभार देले आणि ॥ १५ ॥
राजा मानंकु मेलाणि देउँ महीपति ।
जे जाहा देशकु गले सकळ नृपति ॥ १६ ॥
जणाइले भ्रत शत्रघनंकु जिबाकु ।
नृपति शरधा करिछन्ति देखिबाकु ॥ १७ ॥
शुणि दशरथ राजा सीउकार कले ।
भ्रत शत्रुघनंकु मातुळ घेनि गले ॥ १८ ॥
रथ चढ़ि निज देशे होइले प्रबेश ।
नातिकि देखि कैकेयी हेले अति तोष ॥ १९ ॥
बहु सुखे रहिले से भ्रत शत्रुघन ।
बोले बिशि एमन्ते हे गला किछि दिन ॥ २० ॥

जहाँ पर श्रीभगवान अवतरित हुए वहाँ अन्य पुरुष भी कामदेव तथा रति के समान थे । १२ जहाँ पर सागर-तनया उपस्थित हों, उस नगर की सुन्दरता की उपमा हम क्या दें ? १३ मनुष्य, रथ, हाथी, घोड़े तथा चतुरंगिनी सेनाएँ आदि सभी राजा के चरणों की सेवा में रत थे । १४ समस्त नृप समुदाय ने एकत्रित होकर जो जैसा था उसने उसी प्रकार का व्यवहार लाकर दिया । १५ महाराज के विदा करने पर सभी राजागण अपने-अपने देश को चले गये । १६ राजा कैकय को भरत तथा शत्रुघ्न को देखने की इच्छा है, अतः उन्हें साथ ही ले जाने के लिए महाराज दशरथ से कहा गया । १७ यह सुनकर राजा दशरथ ने स्वीकृति प्रदान कर दी । मामा भरत और शत्रुघ्न को लेकर चले गये । १८ रथ पर सवार होकर अपने देश में जा पहुँचे । नातियों को देखकर कैकय-नरेश अत्यन्त प्रसन्न हो गये । १९ भरत व शत्रुघ्न बड़े सुख से वहाँ रहे । बिशि कहता है कि इस प्रकार कुछ समय व्यतीत हो गया । २०

त्रिषष्ठितम छान्द

राग–बिचित्र कामोदी

जानकी संगे बहु बिनोद । कमळ चुम्बइ कि षट्पद ॥ १ ॥
रत्न भूषण अंगे । मृगया करे रंगे । घेनि जानकी संगे ॥ २ ॥
श्रीराम प्रतिज्ञा शुणि श्रबणे । भये कम्पन्ति बीर नृपगणे ।
तांक तेज राजन । आनन्द हेउथान्ति प्रतिदिन ॥ ३ ॥
बिचार करे निति । राम हेब नृपति । सुखे पाळिबे क्षिति ॥ ४ ॥
एमन्त बिचारि नृपतिबर । राम अभिषेक से ततपर ।
रामचरित रस । बिशि कला पीयूष । प्रथम काण्ड शेष ॥ ५ ॥

॥ आद्यकाण्ड समाप्त ॥

छान्द—६३

राग–बिचित्र कामोदी

जानकी के साथ नाना प्रकार की लीलाएँ करते हुए श्रीराम, कमल का चुम्बन करते हुए भ्रमर की समता कर रहे थे । १ रत्नाभरण से सुशोभित अंगों वाली जानकी को साथ लिये श्रीराम सानन्द मृगया में रत थे । २ अपने कानों से श्रीराम की प्रतिज्ञा को सुनकर पराक्रमी राजागण भय से काँप जाते थे । उनके प्रताप को देखकर महाराज दशरथ प्रतिदिन प्रसन्न रहते थे । ३ वह नित्य ही सोचते थे कि राम राजा बनकर सुखपूर्वक पृथ्वी का पालन करेंगे । ४ इस प्रकार विचार करते हुए नृपश्रेष्ठ दशरथ श्रीराम के अभिषेक के लिए आतुर थे । बिशि ने इस रामचरित्र के रस को अमृत के समान करके प्रथम काण्ड समाप्त किया । ५

॥ आदिकाण्ड समाप्त ॥

अजोध्याकाण्ड

प्रथम छान्द

एथु अनन्तरे कथा शुण गो सर्बाणि ।
अजोध्याकाण्ड चरित अपुर्ब काहाणी ।। १ ।।
श्रीराम सीताङ्क संगे बिहार करन्ति ।
नाना कउतुके दिन मानङ्कु हरन्ति ।। २ ।।
बुद्धि बिबेक सागर तुल्य रामचन्द्र ।
देखि दशरथ राजा मनरे आनन्द ।। ३ ।।
बिचारन्ति श्रीरामङ्कु नृपति करिबि ।
राज्य भार समर्पिण तपस्याकु जिबि ।। ४ ।।
एते भाबि नृपति जे आस्थाने बसिले ।
बोलइ बिक्रम पात्र मंत्री डकाइले ।। ५ ।।

द्वितीय छान्द—राम बनबास

राग–कनड़ा

गुरु गउरब ज्ञाति जे अमात्य मंत्रीमानङ्कु पचारिले ।
राम राज्यकु जोग्य कि होइले ।

छान्द—१

हे पार्वती ! इसके पश्चात् की कथा श्रवण करो । अयोध्याकाण्ड का चरित्र अद्भुत है । १ श्रीराम श्री किशोरी जी के साथ नाना प्रकार के कौतुक-पूर्ण विहार करते हुए दिन यापन करने लगे । २ बुद्धि एवं विवेक के समुद्र के समान श्री रामचन्द्र को देख महाराज दशरथ मन में प्रसन्नतापूर्वक विचार करने लगे कि अब मैं श्रीराम को राजा बनाकर उन्हें राज्य-भार समर्पित करके तपस्या के लिए बन-गमन करूँगा । ३-४ इस प्रकार का विचार करके महाराज सिंहासन पर जा विराजे । विक्रम कहता है कि उन्होंने पात्र, परिषद् तथा मंत्रिपरिषद् को बुलवा लिया । ५

छान्द २—राम-बनवास

राग–कान्हरा

राजा ने गुरुदेव, पुज्य गुरुजनों, सभासद, दीवान तथा मन्त्रियों से जिज्ञासा की कि क्या राम राजा बनने के योग्य हो गये हैं ? सबने उत्तर

जुगे जुगे राम जुबराज होन्तु बोलि समस्ते बोइले हे ।
सुजने ! राम सकळ गुणरे निपुण ।
सूर्यबंश कुञ्ज बन अरुण ।
रिपु नृपतिङ्क निबारिबा पाइँ जात मृगेन्द्र तरुण हे ।
भो देब ।। १ ।।

एमन्त शुणि नृपति चूड़ामणि मंत्रिकि चाहिँ आज्ञा देले ।
नग्रे उत्सब कराअ बोइले ।
श्रीरामचन्द्र अजोध्या जुबराज हेबाकु जोग्य होइले हे ।
सुमंत्र ! एबे अभिषेक बिधि भिआअ ।
आम्भ कटके घोषणा दिआअ ।
नक्षत्र, बार, चन्द्रजोग होइछि श्रीरामचन्द्र अणाअ हे ।
सुमंत्र ।। २ ।।

आज्ञा प्रमाणरे नगरे सुमंत्र उत्सब मण्डणीकि कले ।
अभिषेकर बिधि भिआइले ।
रात्र पाहिले राम राजा होइबे ए घोषणा दिआइले से ।
सुमंत्र ! रामचन्द्रङ्कु रथरे बसाइ ।
घेनि अइले राजा आज्ञा पाइ ।
राम नृपतिङ्क दर्शन करिण बसिले शिर नुआइँ हे ।
सुजने ।। ३ ।।

दिया कि राम युग-युग में युवराज होते रहें। हे सुजन ! हे देव ! श्रीराम समस्त गुणों में निपुण है। वह सूर्यवंश रूपी कुजवन मे तेजस्वी शत्रु राजाओ का विनाश करने के लिए तरुण मृगेन्द्र के समान उत्पन्न हुए हैं। १ नृपश्रेष्ठ दशरथ ने यह सुनकर मन्त्री की ओर देखकर नगर में उत्सव कराने की आज्ञा दी। श्रीराम अयोध्या के युवराज बनने के योग्य हो गये हैं। हे सुमन्त्र ! अब अभिषेक का आयोजन करो। यह घोषणा हमारे दुर्ग में भी करवा दो। शुभ नक्षत्र, दिन तथा चन्द्रयोग हो गया है। श्री रामचन्द्र को बुलवा लो। २ आज्ञानुसार सुमन्त ने नगर में उत्सव का आयोजन किया। अभिषेक की विधि निर्णीत की। रात्रि व्यतीत होने पर राम राजा बनेगे, इस प्रकार की घोषणा भी कर दी गई। राजा का आदेश पाकर सुमन्त्र श्री रामचन्द्र को रथ में बिठाकर ले आये। महाराज का दर्शन करके उन्हे शिर नवाकर श्रीराम बैठ गये। ३ राम

रामङ्कु चाहिँ आनन्द होइ राजा बोलन्ति आहे राम शुण ।
तुम्भे सकळ गुणरे निपुण ।
बिशेषे ज्येष्ठ राणीङ्क ज्येष्ठपुत्र कुळकु अट कारण हे ।
श्रीराम ! कालि होइब तुम्भे जुबराजा ।
आज अधिबासरे पाअ पूजा ।
पुष्या नक्षत्ररे कक्कड़ा चन्द्रमा कहिले बशिष्ठ द्विजा हे ।। ४ ।।
श्रीराम ! एमन्त बाणी अन्तःपुरे शुभिला शुणि अइला
जे मंथड़ी । कैकेयीङ्कि कहिला कर जोड़ि ।
शुणिण से ताकु आपणा कण्ठरु रत्नमाळा देले काढ़ि से ।
सुन्दरी ! देखि चकित होइला मन्थड़ा ।
माळा पकाइ बोले नाहिँ लोड़ा ।। ५ ।।
नृपति सउभागी राणी बोलाअ शुणि न पाअकि श्रीड़ा गो ।
पुणिहिँ मन्थड़ा बोइला ताहाङ्कु बधाइ दिअ काहिँ पाइँ ।
तुम्भ पुत्र त राजा हेले नाहिँ ।
कउशल्या राजमाता बोलाइबे तुम्भर हर्ष किपाइँ गो ।
सुन्दरी ! एबे शयन कर क्रोधपुर ।
राजा अइले माग बेनि बर ।
राम बने जिबे भरत राजा हेबे पूर्बकथा मने कर गो ।। ६ ।।

को देखकर प्रसन्न होकर महाराज ने कहा कि हे राम ! सुनो ! तुम समस्त गुणों में निपुण हो । विशेषतया कुल के कारण ज्येष्ठ रानी के ज्येष्ठ पुत्र हो । राम ! तुम कल युवराज बनोगे । आज अधिवास-सस्कार में पूजा प्राप्त करो । द्विज वशिष्ठ ने पुष्य नक्षत्र में चन्द्रमा की कर्क राशि में अवस्थिति बताई है । ४ यह बात अन्तःपुर में फैल गई । मन्थरा ने सुनकर कैकेयी के पास आकर हाथ जोड़कर सब कह दिया । यह सुनकर सुन्दरी कैकेयी ने अपने गले से रत्न की माला निकालकर उसे दे दी । मन्थरा यह देखकर चकरा गयी । माला फेंककर वह बोली कि इसकी आवश्यकता नही है । ५ तुम राजा की सौभाग्यशालिनी रानी कही जाती हो । तुम्हें यह सुनकर सन्देह नही हो रहा है । फिर मन्थरा ने कहा, उन्हें बधाई क्यों दे रही हो ? तुम्हारा पुत्र तो राजा नही बना । कौशल्या राजमाता कही जायेगी । तुम्हारी प्रसन्नता किसलिए है ? हे सुन्दरी ! अब कोपभवन में शयन करो । राजा के आने पर दो वरदान माँगना कि भरत राजा बनें और राम वन को प्रस्थान करें । पूर्व कथा का तुम मन में स्मरण करो । ६ मंथरा

सुन्दरी ! मन्थड़ा बाणी कैकेयी राणी शुणि क्रोध मंदिरे
पहूड़िले । दृढ़ करिण कबाट पाड़िले ।
गुरु क्रोध बहि धरणीरे शोइ आभरण दूर कले से ।
सुन्दरी ! राजा रामङ्कु देइण मेलाणि ।
निज सदने प्रबेश रजनी ।
मदन बशे कैकेयी राणी पाशे कहे नाना चाटु बाणी से ।
राजन ॥ ७ ॥

उठ उठ आरे नरेन्द्र नन्दिनी कि पाइँ करु एड़े मान ।
कह कह मोते प्रिय बचन ।
ज हा मागिबु ताहा जेबे न देबि नाशिबि सुकृत मान गो ।
सुन्दरी ! शुणि पुर्ब बरमागे तरुणी ।
सत्य कराइ कहे पुण पुणि ।
भ्रत राजा हेबे राम बने जिबे एहा देब नृपमणि हे ।
भो देब ॥ ८ ॥

शुणि ता नृपति शिररे कुळिश पड़िला प्रायेक होइला ।
आउ देहरे ज्ञान न रहिला ।
केते बेळे पुणि स्वप्न प्राय मणि कइकेयीकि कहिला से ।
राजन ! एहा मोते न बोलरे तरुणि ।
प्राण मागिले देबि एहिक्षणि ।

की बात सुनकर रूपसी कैकेयी कोपभवन में लेट गयी । मजबूती से दरवाजे बन्द कर लिये । अत्यन्त क्रुद्ध होकर अलंकारों को दूर फेंककर पृथ्वी पर सो गयी । महाराज दशरथ राम को विदा देकर रात्रि में अपने महल में जा पहुँचे । राजा ने काम के वशीभूत होकर महारानी कैकेयी से अनेक प्रकार की चिकनी-चुपड़ी बातें करने लगे । ७ अरी राजनन्दिनी ! उठो इतना मान किस कारण से कर रही हो ? मुझसे प्यारी-प्यारी बातें करो । जो माँगोगी यदि वह मैं न दूँ तो मेरे पुण्यों का नाश हो जायेगा । यह सुनकर सुन्दरी युवा कैकेयी ने वर माँगने के पूर्व उनसे प्रतिज्ञा कराकर कहा, हे नृपशिरोमणि ! भरत राजा हों और राम वन को प्रस्थान करें, यही दीजिए । ८ यह सुनते ही राजा को लगा जैसे उनके सिर पर वज्रपात हो गया हो । उनके शरीर में चेतना नहीं रह गयी । कुछ समय पर फिर उसे स्वप्न के समान मानकर कैकेयी से बोले । हे तरुणी ! यह मुझसे मत

बोले बिशि राजाङ्कर क्रोध भरे बेनि नेत्रु बहे पाणि हे ।
सुजने ॥ ९ ॥

तृतीय छान्द

राग–आनन्द भैरव

कउशल्या आदि जेतेक नारी ।
न चाहान्ति तोर कोपकु डरि ।
श्रीरामकु जेबे पेशिबु बने ।
कि बोलिबे मोते सकळ जने ।
आरे कोपनाबर । एबे कोप संहर ।
घेनि बिनय मोर । धरुअछि तो कर ॥ १ ॥
रामकु न देखि छाड़िबि प्राण ।
एकथा मोहर सत्य प्रमाण ।
करि थिलि तोते गळार मणि ।
काळे होइलु तु काळसर्पिणी ॥ २ ॥
कि दोष कले तोते मोर राम ।
कि पाइँ ताहाङ्कु होइछु बाम ।
काळेहेँ न थिला तोर ए रीति ।
शिखाइला तोते केउँ जुबती ॥ ३ ॥

कहो । प्राण माँगने पर मैं इसी क्षण दे सकता हूँ । बिशि कहता है कि हे सज्जन पुरुषो ! राजा के दोनों कुपित नेत्रों से जल बह रहा था । ९

छान्द—३

राग–आनन्द भैरव

कौशल्या आदि जितनी नारियाँ हैं, वह तेरे क्रोध से भयभीत होकर देखती भी नहीं हैं । जो श्रीराम को वन में भेज दोगी तो समस्त लोग मुझे क्या कहेंगे । अरी क्रुद्ध वरांगने ! मेरी विनय मानकर क्रोध को समाप्त करो । मैं तेरा हाथ पकड़कर कह रहा हूँ । १ राम को बिना देखे मैं प्राणों का विसर्जन कर दूंगा, मेरी यह बात सत्य समझ लो । तुझे मैंने कण्ठ-हार बनाया था, परन्तु समय पर तू काली नागिन बन गयी । २ राम ने तुम्हारा क्या अपराध किया है ? किस कारण से तुम उनकी विरोधिनी बन गयीं ? पहले तो तुम ऐसी न थीं । किस स्त्री ने तुम्हें पाठ

चाट कहुँ हेला रजनी शेष ।
शंख शबद शुभिला बिशेष ।
केबेहें ता मन नोहिला तोष ।
बोले बिशि कला रोष अशेष ।। ४ ।।

चतुर्थ छान्द

राग–सिन्धुड़ा

राजाङ्क बिनय देखिण कैकेयी बोलन्ति शुण नृपति ।
शुणिछ त सत्यपाइँ पूर्बे राजामाने कले जेते रीति ।। १ ।।
आहे सत्य बकता ।
सत्य त्यजिले मोहर हत्या ।
शुभिब सत्यहीन बारता ।
किम्पा हेउछ एड़े बिनीता हे ।। २ ।।
एमन्त समये सुमंत्र जाइण खण्डे दूरे हेले उभा ।
देखिले नृपति मूर्च्छित होइण दिशुअछन्ति अशोभा ।। ३ ।।
जोड़ि से बेनि पाणि ।
स्तुति करिण कहइ बाणी ।
देब उदे हेले दिनमणि ।
राजा अइले समय जाणि ।। ४ ।।

पढ़ा दिया है ? ३ चापलूसी की बातें करते-करते रात्रि समाप्त हो गयी। विशेष प्रकार के शंखों का निनाद सुनायी पड़ने लगा। परन्तु उसका मन सतुष्ट नही हुआ। बिशि कहता है वह और भी अधिक क्रोध में भर गई। ४

छान्द—४

राग–सिन्धुरा

राजा की दीनता को देखकर कैकेयी ने कहा, हे राजन् ! सुनो। प्राचीन राजाओं ने प्रतिज्ञा के लिए जो भी किया है वह आपने तो सुना होगा। १ हे सत्यवादी ! प्रतिज्ञा के त्याग पर मेरी मृत्यु होगी। प्रतिज्ञा की भ्रष्टता की चर्चा फैलेगी। आप इतने कातर क्यों हो रहे हैं ? २ इसी समय सुमन्त जाकर किञ्चित दूरी पर खड़ा हो गया। उसने राजा को मूर्च्छित तथा मलिन अवस्था मे देखा। ३ उसने दोनों हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा, हे देव ! सूर्योदय हो गया है। समयानुसार

राणीहिँ बोइले राजा आज्ञा देले राम आणि आम्भ पाश ।
आज्ञा पाइण सुमंत्र मंत्री रामपुरे होइले प्रबेश ।
शुभे मंगळ घोष ।
रामचन्द्र अभिषेक बेश ।
देखि सुमंत्र बहु हरष ।
राजा आज्ञा देले राम आस ।। ५ ।।
पिता आज्ञा देले सानुज सहिते अइले कोदण्डधर ।
नृपतिङ्कि चाहिँ नमस्कार कले छुइँण बेनि पयर ।
देखि पिता बिकळ ।
नयनरु बहे अश्रुजळ ।
राम बोलि होइले बिकळ ।
ढळि पड़िले अबनीतळ ।। ६ ।।
ओळगि होइ कैकेयीङ्कि पुछन्ति एथिर चरित कह ।
केउँ कारणे पिताङ्कु शोक एड़े लागिला मोते सन्देह ।। ७ ।।
किबा मो अभिषेक ।
सीउकारकु करन्ति शोक ।
नाश गले किबा ज्ञाति लोक ।
तुम्भ जोगुँ कि हूए एतक ।। ८ ।।

राजा आ गये । ४ रानी ही बोल पड़ी कि राजा ने आज्ञा दी है कि श्रीराम को हमारे समीप ले आओ । आज्ञा पाकर मंत्री सुमन्त्र श्रीराम के महल में जा पहुँचे । मांगलिक उद्घोष सुनाई दे रहा था । श्रीराम अभिषेक के वेश में थे । सुमन्त्र को देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ । वह बोले कि राजा ने आपको लाने की आज्ञा दी है । ५ पिता की आज्ञा से अनुज-सहित कोदण्डधारी राम वहाँ गये । राजा को देखकर नमस्कार कर के उन्होंने उनके दोनों चरणों का स्पर्श किया । पिता जी देखते ही व्याकुल हो गये । नेत्रों से अश्रु बहने लगे । 'राम' कहते हुए वह व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । ६ उन्होंने कैकेयी को प्रणाम करते हुए इसका कारण पूछा । मुझे संदेह हो रहा है कि ऐसा कौन सा कारण है जिससे पिता जी इतने शोक में पड़ गये । ७ क्या मेरे अभिषेक की स्वीकृति पर शोक कर रहे हैं । अथवा कोई जाति जन नष्ट हो गया है । या फिर आपके कारण ऐसा हो गया । ८ कैकेयी बोली, हे रामचन्द्र ! सुनो

कैकेयी कहन्ति शुण रामचन्द्र जहिँ पाईं ए मूर्च्छित ।
से न कहिबे मुँ ताहा त कहिबि कले तुमे सनमत ॥ ९ ॥
शुणि जानकीकान्त ।
कहुछन्ति मोर एहा सत्य ।
प्राण मागिले देबि त्वरित ।
अग्नि जाळिण होइबि हत ॥ १० ॥
सन्तोष होइण बोलन्ति जननी पुर्बे देइछन्ति बर ।
ताहा मागिलाकु निसत होइण शोक करन्ति पिअर ॥ ११ ॥
तुम्भे बनकु जिब ।
अभिषेक भरत होइब ।
आउ क्षणे बिळम्ब नोहिब ।
तेबे पिताङ्क सत्य रहिब ॥ १२ ॥
चउद बरष जाए राम तुम्भे धरिथिब ऋषि बेश ।
फळ मूळ खाइ ग्रामे न पशिब बकळ करिब बास ॥ १३ ॥
तार निष्ठुर बाणी ।
राम सनमत कले शुणि ।
सेहि क्षणि होइले मेलाणि ।
दिन बिशि शोक भरे भणि ॥ १४ ॥

जिसके कारण यह मूर्च्छित हो गये हैं। वह नहीं बतायेंगे। यदि तुम्हें स्वीकार हो तो मैं सब बता दूं। ९ यह सुनकर सीतानाथ ने कहा कि यह मेरी प्रतिज्ञा है कि मांगने पर शीघ्र प्राण दे दूंगा। अग्नि जलाकर दग्ध हो जाऊंगा। १० माता कैकेयी ने संतुष्ट होकर कहा कि पूर्वकाल में इन्होंने दो वर दिये थे। उनके मांगने पर पिता जी मुरझाकर शोक कर रहे हैं। ११ तुम वन को जाओगे और भरत का अभिषेक होगा। अब और विलम्ब न हो तभी पिता की प्रतिज्ञा रह पाएगी। १२ चौदह वर्ष पर्यन्त तुम मुनि वेश धारण करोगे। फल-मूल खाते हुए वल्कल वस्त्र पहनकर गांव में प्रवेश नहीं करोगे। १३ उसकी कठोर बातों को सुनकर राम ने स्वीकृति दे दी तथा उसी क्षण विदा हो गये। दीन बिशि शोकयुक्त होकर यह वर्णन कर रहा है। १४

पंचम छान्द

राग–कुम्भ कामोदी

माताङ्कु दर्शन करि रामचन्द्र कहन्ति बचन ।
भ्रत राजा हेब आम्भङ्कु बनकु पेषिले राजन ॥ १ ॥
शुणि कउशल्या मूर्च्छित होइण पड़िले महीर ।
जेसने मूळच्छेदन कले पड़े शुष्क तरुबर ॥ २ ॥
रामचन्द्र ताङ्कु सचेत करान्ते करन्ति रोदन ।
तुम्भङ्कु केमन्ते मुरुछि रहिबि धिक मो जीबन ॥ ३ ॥
बिचारु थाई मोर राम राजा हेले जिब मो सन्ताप ।
बिहि एबे ताहा देखाइ हरिला कलि मुँ कि पाप ॥ ४ ॥
एहा शुणि राम फाटि त न गला मोहर शरीर ।
बेदना सहिबाकु एबे होइला कुळिशुँ निष्ठुर ॥ ५ ॥
चाल राम तुम्भ सगतरे मुहिँ जीबइँ बनकु ।
के निन्दा करिब बत्सापच्छे गोड़ाइले जे धेनुकु ॥ ६ ॥
कैकेयी भयरे दर्शन करिण न जाए नाहाकु ।
एबे बेहि मोते उपहास कले कहिबि काहाकु ॥ ७ ॥

छान्द—५

राग–कुम्भ कामोदी

माता के दर्शन करके रामचन्द्र ने कहा कि भरत राजा होंगे और राजा ने हमें वन को भेजा है । १ कौशल्या यह सुनकर मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडी जैसे जड़ काट देने पर सूखा वृक्ष गिर जाता है । २ रामचन्द्र जी उन्हें सचेत कराते हुए रुदन करने लगे । तुम्हें छोडकर मैं कैसे रहूँगा ? मेरे जीवन को धिक्कार है । ३ तुम सोचती होगी कि राम के राजा हो जाने पर मेरा दुःख नष्ट हो जाएगा । मैंने क्या पाप किया है कि विधाता ने उसे दिखाकर छीन लिया । ४ हे राम ! यह सुन कर मेरा शरीर विदीर्ण क्यों नहीं हो गया ? वेदना सहने के लिए अब वज्र से भी कठोर हो गया । ५ चलो राम ! तुम्हारे साथ मैं भी वन को चलूंगी । बछड़े के पीछे दौड़ती हुई गाय को कौन निन्दा करेगा ? ६ कैकेयी के भय से पति का दर्शन भी नहीं कर पाऊँगी । अब उनके ही उपहास करने पर किससे कहूँगी ? ७ यह सुनकर श्री रामचन्द्र ने कहा

शुणि रामचन्द्र कहन्ति जननी कह त अनीति ।
जुबती मानङ्क सकळधर्म पतिङ्कि भकति ।। ८ ।।
बनबास सारि त्वरिते आसिबि कर सुकल्याण ।
शुणि ताहा सुकल्याण कले माता तेजिण कारुण्य ।। ९ ।।
लक्ष्मण बहुत प्रतिज्ञा करिण बोलन्ति रामङ्कु ।
तुम्भे राजा हुअ भरत सहिते मुँ मारिबि राजाङ्कु ।। १० ।।
बने गले तुम्भ संगतरे जिबि होइण सेबक ।
फळ मूळ खोजि देउथिबि आणि हे रघुनायक ।। ११ ।।
हेउ सज होइ आस बोलि गले जानकीङ्क पाश ।
बोले बिशि सीता देखिले श्रीराम श्रीमुख बिरस ।। १२ ।।

षष्ठ छान्द

राग–सिन्धु कामोदी

कातर बिमन जाणि, पचारन्ति ठाकुराणी, दिशुछि त श्रीमुख बिरस । आज हेब अभिषेक, नेत्रे पुरिछि लोतक, मुँ अबा कलि केबण दोष हे । प्राणनाथ ।। १ ।।

कि हे माता ! यह तो आप अनैतिक बात कह रही है । युवतियों का समस्त धर्म पति की ही भक्ति है । ८ वनवास समाप्त करके मैं शीघ्र ही आ जाऊँगा । आप आशीर्वाद प्रदान करें । ऐसा सुनकर माता ने शोक का परित्याग करके आशीर्वाद दिया । ९ लक्ष्मण ने नाना प्रकार की प्रतिज्ञा करते हुए श्रीराम से कहा कि आप राजा बनें । मैं भरत के सहित राजा का वध कर दूंगा । १० वन जाने पर आपके साथ सेवक होकर चलूंगा । हे रघुवंश के नायक ! मैं खोजकर फल-मूल लाकर देता रहूँगा । ११ "अच्छा ! तैयार होकर आओ" कह श्रीराम जानकी के निकट गये । बिशि कहता है कि सीताजी ने श्रीराम के विषण्ण वदन को देखा । १२

छान्द—६

राग–सिन्धु कामोदी

दुखी एवं आर्त जानकर महारानी सीता ने पूछा कि आपका मुख म्लान दिखाई दे रहा है । आज अभिषेक होगा । हे प्राणेश्वर ! मैंने कौन सा अपराध किया है, जिससे आपके नेत्रों में अश्रु भरे हैं । १ हे

शुण आगो प्राणेश्वरी सीता। बनकु पेशिले मोते पिता गो। पूर्बे कैकेयीङ्कु बर, देइण थिले पितर, रखिथिले से गुपत मने। आम्भ अभिषेक शुणि, मागिले से सत्यबाणी, भ्रत राजा राम जिबे बने गो। चन्द्रमुखि ॥ २ ॥

न हुअ मने बिरस, नोहिब दिव्य सुबेश, सेबु थिब माताङ्कर पाश। घरु नोहिब बाहार, संग नोहिब काहार, जेमन्ते भ्रत न करे रोष गो। चन्द्रमुखि ॥ ३ ॥

श्रीराम श्रीमुख बाणी, शुणि सीता ठाकुराणी, बोलन्ति जाणिलि तुम्भ मन। तुम्भे जेबे जिब बने, मु किम्पा थिबि सदने, तुम्भ आगे करिबि गमन हे। प्राणनाथ ॥ ४ ॥

जेबे न नेब संगरे, न थिब प्राण अंगरे, तुम्भे मो पराण पञ्चभूत। करु थिबि बने सेबा, शत बरष हे उबा, तेबे मोर तोष हेब चित्त हे। प्राणनाथ ॥ ५ ॥

शुणि रामा रम्य बाणी, बोलन्ति कोदण्डपाणि, तुम्भे मोर पिण्डर जीबन। जाणिबाकु तुम्भमन, बोइलि सखि एसन, जळ बिनु न बर्त्तन्ति मीन गो। चन्द्रमुखी ॥ ६ ॥

प्राणेश्वरी सीते! सुनो! पिताजी ने मुझे वन में भेज दिया है। पिताजी ने पहले कैकेयी को वर दिया था। उसे उन्होंने अपने मन में छिपा रखा था। हमारे अभिषेक के विषय में सुनकर उन्होंने वर माँग लिये। हे चन्द्रवदनी! भरत राजा होंगे और मैं वन को जाऊँगा। २ तुम मन में दुखी मत हो। दिव्य शृंगार न करना। माताओं की सेवा करती रहना। घर से बाहर मत निकलना। किसी का साथ मत करना। हे चन्द्रवदनी! जिससे भरत क्रोधित न हो। ३ श्रीराम के वचनों को सुनकर देवी सीता ने कहा कि हमने आपके मनोभाव समझ लिये। यदि आप वन को जाएँगे तो मैं घर में क्यों रहूँगी? हे प्राणनाथ! मैं आपके आगे गमन करूँगी। ४ यदि आप साथ में नहीं लेंगे तो मेरे शरीर में प्राण नहीं रहेंगे। आप ही हमारे पंचभूत प्राण हैं। हे प्राणनाथ! मैं वन में आपकी सेवा करती रहूँगी। यदि सौ वर्ष भी लगें तो भी मेरे मन में संतोष रहेगा। ५ सुन्दरी सीता के वाक्य सुनकर कोदण्डधारी राम ने कहा, तुम मेरे पिण्ड (शरीर) की प्राण हो। हे सहचरी! तुम्हारी इच्छा जानने के लिए ही मैंने ऐसा कहा है। हे चन्द्रवदनी! जल के विना मछली नहीं बचती है। ६ इसी समय लक्ष्मण तैयार होकर

एहि समये लक्ष्मण, सज होइ सेहि क्षण, श्रीराम छामुरे परवेश। लक्ष्मणङ्कु चाहिँ तोष, हेले बनबासी बेश, बोले बिशि सबुरि बिरस हे। सुज्ञजने ॥ ७ ॥

सप्तम छान्द

राग—बंगळाश्री

बशिष्ठ पुत्र आणिण रामचन्द्र अंग आभरण देले।
सीताहिँ ताहाङ्क पत्नीर निमन्ते अळकार समर्पिले ॥
गज अश्व गाव हिरण्य बसन बिप्रे देले बहुदान।
परिचार परिचारी सहितरे लेखि देले बर तन ॥ १ ॥
बाहार होइले रामचन्द्र संगे लक्ष्मण जानकी घेनि।
मध्यरे शोभा दिशन्ति चन्द्रमुखी आग पच्छ भाइ बेनि ॥
नगर नारीए बिकळ सबुरि नयनु बहइ नीर।
बिना दोषे राजा बनकु पेषन्ति श्रीराम प्राय कुमर ॥ २ ॥
के बोलइ राजाङ्कर दोष नाहिँ कैकेयी एमन्त कला।
के बोलइ राजातार बोलकला केबण भूत लागिला ॥

श्रीराम के समक्ष आये। लक्ष्मण को देखकर वह प्रसन्न हो गये और उन्होंने वनवासी बेश बना लिया। हे विद्वान पुरुषो ! बिशि दुखित हो कर सब वर्णन कर रहा है। ७

छान्द—७

राग—बंगला श्री

श्री रामचन्द्र ने अंगों के आभूषण लाकर वशिष्ठ के पुत्र को दिये। सीता ने भी उनकी पत्नी के लिए अलकार समर्पित किये। ब्राह्मणों को हाथी, घोड़े, गउएँ, स्वर्ण, वस्त्र इत्यादि बहुत दान प्रदान किये। बिना पारिश्रमिक के परिचारक और परिचारिकाये प्रदान कीं। १ लक्ष्मण तथा जानकी को साथ लेकर श्री रामचन्द्र बाहर निकल पड़े। आगे और पीछे दोनों भाइयों के मध्य में चन्द्रमुखी सीता शोभित हो रही थी। समस्त नागरिक, नर-नारियाँ व्याकुल थीं और उन सबके नेत्रों से जल गिर रहा था। बिना किसी अपराध के श्रीराम जैसे राजकुमार को राजा वन को भेज रहे हैं। २ कोई कहता था कि राजा का दोष नहीं है, यह तो कैकेयी ने ऐसा किया। कोई कहने लगा कि पता नहीं कौन सा भूत लग गया जो राजा ने उसका कहना मान लिया। कोई कहता था कि जिस सीता

के बोलन्ति जेउँ सीताङ्क बदन चन्द्र सूर्य्य न देखन्ति ।
से एबे दीनजनङ्क प्राय होइ श्रीराम पच्छे चालन्ति ।। ३ ।।
के बोलन्ति जेउँ रामचन्द्र संगे थान्ति चतुरंग बळ ।
गज अश्व रथ तेजिण से एबे चालन्ति पादकमळ ।।
एमन्त जने कुहाकुहि हुअन्ते नबरे हेले प्रबेश ।
पिताङ्क चरण छुइँ नमस्कार करि उभा हेले पाश ।। ४ ।।
राम बन जिबा शुणि सर्ब राणी अइले कैकेयीपुर ।
देखिले लक्ष्मण सीता सहितरे पिता अग्रे रघुबीर ।।
तिनिश पञ्चाश कउशल्या आदि राजाङ्क पाट महिषी ।
धिक्कार करन्ति कैकेयीकि चाहिँ राम हेले तोर दोषी ।। ५ ।।
बशिष्ठ आदि सकळ ऋषिमाने करु अछन्ति धिक्कार ।
धिक्कार करिण ताङ्क माता गुण कहिलेक मंत्रिबर ।।
रोदन करन्ति सर्ब राणीमाने श्रीरामकु करि दृष्टि ।
बोलइ बिशि सबुङ्करि नयनुँ हेउअछि अश्रु बृष्टि ।। ६ ।।

अष्टम छान्द—कौशल्या शोक

बिकळ होइ कौशल्या करन्ति रोदन ।
तोते न देखिण राम केमन्ते धरिबि जीबन रे । कुमर ।। १ ।।

के मुख को चन्द्रमा और सूर्य भी नहीं देख पाते थे, वही अब दीन व्यक्ति के समान श्रीराम के पीछे चल रही है । ३ कोई कहने लगा कि जिस राम के साथ में चतुरंगिनी सेना रहती थी, वह हाथी, घोड़े और रथ को त्याग कर अब कमल के समान पैरों से चल रहे हैं । इस प्रकार लोगों की बातें सुनते श्रीराम महल में जा पहुँचे तथा पिताजी के चरणों का स्पर्श कर नमस्कार करते हुए उनके समीप खड़े हो गये । ४ राम का वनगमन सुनकर सभी रानियों ने कैकेयी के महल में आकर लक्ष्मण तथा सीता के साथ रघुवीर राम को पिता के समक्ष देखा । कैकेयी को देखकर कौशल्या सहित राजा की तीन सौ पचास पटरानियाँ धिक्कारने लगीं । अरी ! राम तेरे अपराधी हो गये । ५ वशिष्ठ आदि सभी ऋषि भी धिक्कार करने लगे । श्रेष्ठ मंत्री ने धिक्कार करते हुए उनकी माता के गुण बखान किये । श्रीराम की ओर ताकती हुई सभी रानियाँ रुदन करने लगीं । बिशि कहता है कि सबके नेत्रों से अश्रु की वर्षा हो रही थी । ६

छान्द ८—कौशल्या का शोक

व्याकुल होकर कौशल्या रुदन कर रही थी । अरे वत्स राम ! तुझे

पलङ्क सुपाति राम न रुचइ तोते ।
पत्र कुड़िआरे बसि रे कुमर दिन बञ्चिबु केमन्ते रे ।। २ ।।
धिक धिक मो जीबन धिक मोर हिया ।
धिक हेउ सूर्ज्यबंश रे कुमर धिक नरनाहा रे ।। ३ ।।
केते कष्ट पाइ धन रे पाइछि कुमर ।
केउँ दोष देखि धाता करुछि आजि मो पाशु अन्तर रे ।। ४ ।।
भणे बिक्रम श्रीराम पद्मपाद चिन्ति ।
माताङ्क बिकळ शुणि श्रीराम शोक कराइले शान्ति हे ।
सुजने ।। ५ ।।

नबम छान्द

न जा राम न जा धन तु बनबास करि रे ।
आरे कोदण्ड धनु धारि रे ।
तु जेबे बनकु जिबु मो गळे दिअ छूरी रे ।। घोषा ।।
सउमित्रि कर धरि कान्दे कउशल्या ।
आहा बापधन तोते कि दण्ड पड़िलारे ।। १ ।।

न देखकर मैं किस प्रकार जीवित रह सकूँगी ? १ हे राम ! तुझे पलंग तथा गद्दे भी नहीं रुचते हैं। अरे बेटे ! तुम घास-फूस की झोंपडी में किस प्रकार दिन बिताओगे ? २ मेरे जीवन तथा मेरे हृदय को धिक्कार है। हे कुमार ! सूर्यवंश को और महाराज को भी धिक्कार है। ३ अरे पुत्रधन ! कितने कष्टो के उपरान्त मैंने तुम्हें पाया था। मेरे कौन से अपराध को देखकर विधाता तुम्हें हमारे पास से पृथक् कर रहा है। ४ श्रीराम के चरण-कमलो का ध्यान करके विक्रम कहता है, हे सुजन वृन्द ! माताओं के आर्त वचनों को सुनकर श्रीराम ने उनके शोक को शान्त किया। ५

छान्द—९

हे कोदण्डधारी राम ! अरे वेटा ! तू वन में वास करने के लिए मत जा। यदि तुझे वन में जाना ही है तो मेरे गले में छूरी मार दे। घोषा लक्ष्मण का हाथ पकड़कर कौशल्या रुदन करने लगी। अरे तात ! तुझे कौन सा दण्ड मिला है ? १ यह अत्यन्त सुकुमार है। वन पाषाण और

अति सुकुमार से पाषाण कण्टा बणे ।
चालि न पारिले राम रहिजिबु दिने रे ॥ २ ॥
शतेपळ चन्दन तो शरीरे लेपइँ ।
केमन्ते बञ्चिबु बने पाँशु बोळि होइरे ॥ ३ ॥
सुपाति पलङ्के निद्रा न माड़इ तोते ।
पत्र बिछणा रे राम शोइबु केमन्ते रे ॥ ४ ॥
अमृत जोगाड़ राम तोते न रुचइ ।
केमन्ते बञ्चिबु बने कषा फळ खाइ रे ॥ ५ ॥
अति सुकुमारी मोर जनक दुहिता ।
आरे बाबु लक्ष्मण, लागिला तोते सीतारे ॥ ६ ॥
श्रीराम सुमरि कान्दे कउशल्या राणी ।
बोले बिशि ताङ्कु बोध द्यन्ति रघुमणि ॥ ७ ॥

दशम छान्द

राग–दक्षिण सुखारि काफि

दशरथ नृपति शोके आकुळ ।
भण्डारु आणि राणी रामङ्कु जे, देले अजिन छाल ॥
सीताङ्कु देखि देले भूषण बास ।
आज्ञा पाइ सारथि आणिला जे, रथ श्रीराम पाश ॥ १ ॥

कण्टकों से व्याप्त है। यदि यह चल न पाए तो राम ! एक दिन रुक जाना। २ तुम्हारे शरीर में तो चन्दन का लेप होता था। जंगल में धूल से सनकर तुम कैसे रह पाओगे ? ३ गद्दे और पलंग पर भी तुझे नींद नहीं आती है। अरे राम ! तू तृण-शैय्या पर कैसे सोएगा। ४ राम ! तुझे अमृतोपम भोजन भी नहीं रुचता; बाकठ फलों को खाकर तू वन में किस प्रकार रहेगा ? ५ मेरी जनकतनया अत्यन्त सुकुमारी है। अरे बेटा लक्ष्मण ! तुझे और सीता को भी यह भोगना पड़ा। ६ श्रीराम का स्मरण करके महारानी कौशल्या रुदन कर रही थी। बिशि कहता है कि रघुवंश में श्रेष्ठ राम उन्हें सान्त्वना दे रहे थे। ७

छान्द—१०

राग—काफी (दक्षिणसुखारी)

महाराज दशरथ शोक से व्याकुल थे। रानी ने भण्डार से लाकर मृगचर्म राम को दिया। सीता को देखकर आभूषण तथा वस्त्र प्रदान

पिता चरणे पड़ि तिनि पराणी ।
माता मानङ्कु मान्य करिण से, बेगे हेले मेलाणि ॥
बशिष्ठ आदि जेतेक थिले ऋषि ।
से मानङ्कु हिँ मान्य करिण जे, राम रथरे बसि ॥ २ ॥
कोदण्ड बाम करे दक्षिणे शर ।
पृष्ठ देशरे शोभा पाउछि जे, काण्ड भारकु भार ॥
सुमंत्र रथ बाहान्ति धीर करि ।
रथ बेढ़ि गोड़ाइ अछन्ति जे, अजोध्या नर नारी ॥ ३ ॥
चाहुँ चाहुँ रथ होइला अदृश्य ।
देखिण राजा राणी सहिते जे, शोके हेले अबश ॥
राम अदृश्य जाए गोड़ाइ थिले ।
हा हा राम लक्ष्मण जानकी गो, बोलिण मोह गले ॥ ४ ॥
कौशल्या आदि जेतेक नारी ।
राजाङ्क मोह देखि धरिण जे, आणिले निजपुरी ॥
तपनी तटिनी तटरे प्रवेश ।
सेठारे बिजे करि देखिले जे, दिन होइला शेष ॥ ५ ॥
बोधि कहन्ते केहि बोध नोहिले ।
श्रान्त होइण जने शुअन्ते जे, ताङ्कु न कहि रहिले ॥

किये। आदेश पाकर सारथी श्रीराम के निकट रथ को ले आया। १ तीनों प्राणी पिता के चरणों में नत होकर तथा माताओं की अभ्यर्थना करके शीघ्र ही विदा हुए। वशिष्ठादि जितने भी ऋषि थे उन सबका सम्मान करके श्रीराम रथ पर बैठ गये। २ उनके बाएं हाथ में धनुष, दाहिने हाथ में बाण तथा पीठ पर बाणों से पूर्ण तरकश शोभा पा रहा था। धैर्य के साथ सुमन्त्र रथ चला रहा था। अयोध्या के नर-नारी रथ को घेरे हुए पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। ३ देखते-देखते रथ अदृश्य हो गया। यह देखकर रानियों के सहित राजा शोक के वशीभूत हो गये। राम के ओझल हो जाने पर पीछा करते हुए राजा हा राम! हा लक्ष्मण! हा जानकी! कहते हुए मूर्च्छित हो गये। ४ राजा को मूर्च्छित देखकर कौशल्या आदि जितनी नारियां थीं, उन्हें पकड़कर अपने महल में ले गयीं। श्रीराम ने देखा कि तमसा नदी के तट पर पहुँचने पर दिन ढल गया। ५ बोध कराने पर भी कोई सन्तुष्ट नहीं हो रहे थे। जब थककर लोग सो गये तो बिना उनसे कहे चल दिये तथा शृंगवेरपुर जा पहुँचे। गुह ने

शृङ्गबेर पुररे हेले प्रबेश ।
गुह शबर आसि दर्शन जे, कला श्रीराम पाश ॥
कहिले राम तांकु सर्व बृत्तान्त ।
बोलइ बिशि भक्ष देलाक से, ताङ्क पाशे अनन्त ॥ ६ ॥

एकादश छान्द

तोड़ि—एकताळि

मित देले जाहा नेइ ! राम देले बाहुड़ाइ ।
बटक्षीरे जटा सजकले राम सेठारे से दिन रहि ॥ १ ॥
पान कले गंगा बारि । होइलेक जटाधारी ।
पोइ चान्दुआ तरु मूळे शोइले कुशाङ्कुर शज्या करि ॥ २ ॥
जगि रहिले लक्ष्मण । धनुरे पुराइ बाण ।
गुह शबर मित्रबर उन्निद्र होइला सैन्य घेनिण ॥ ३ ॥
सुमंत्र मेलाणि हेले । रथ बाहुड़ाइ नेले ।
सेठारु श्रीराम लक्ष्मण जानकी पयरे बिजय कले ॥ ४ ॥
केते दूर पथ गले । मेळारे गंगा तरिले ।
बाञ्छाबट निकटरे भरद्वाज मुनिङ्क मठ देखिले ॥ ५ ॥
होइ अछि सायंकाळ । आहुति देबार बेळ ।
एहि समये राम लक्ष्मण सीता पड़िले चरण तळ ॥ ६ ॥

श्रीराम के निकट आकर उनके दर्शन किये । श्रीराम ने उसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया । बिशि कहता है, जो नाना प्रकार के भोज्य पदार्थ उसके पास थे वह लाकर उसने दिये । ६

छान्द—११

तोड़ी—एकताल

मित्र ने जो भी लाकर दिया श्रीराम ने उसे वापस कर दिया । श्रीराम ने उस दिन वहीं रहकर बरगद के दूध से जटाएँ साज ली । १ जटाधारी बनकर राम ने गंगाजल पान किया तथा छायादार वृक्ष के नीचे कुशशय्या डसाकर सो गये । २ धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्मण प्रहरी बन गये । मित्रवर गुह निषाद सेना लेकर जागता रहा । ३ बिदा लेकर सुमन्त्र रथ को लौटा ले गये । वहाँ से श्रीराम, लक्ष्मण तथा जानकी ने पदयात्रा की । ४ नाव से गंगा पार करके बहुत दूर निकल गये । उन्होंने कल्पवट के निकट भरद्वाज का आश्रम देखा । ५ सायंकाल में

कल्याण करिण ऋषि । आसन देइण भाषि ।
नाना उपचारे पूजा करि राम लक्ष्मणङ्क मन तोषि ॥ ७ ॥
मुनिङ्क कहिले सबु । से बोलन्ति रह बाबु ।
चउद बरषकु जेते लागिब लेखि आम्भे सबु देबु ॥ ८ ॥
राम कले ताहा नाहिँ । शयन कले सेठाइँ ।
सेठारे लक्ष्मण जगिण बसिले धनुरे शर बसाइ ॥ ९ ॥
शुभे निशी गला पाहि । मुनि संगे भेट होइ ।
चित्रकूट गिरि निकट दिशुछि बोलि मार्ग देले कहि ॥ १० ॥
सेहि मार्गे राम गले । काळिन्दी पार होइले ।
चित्रकूट गिरि पाशे मन्दाकिनी देखि सानन्द होइले ॥ ११ ॥
धन्य धन्य चित्रकूट । गिरिमानङ्क मुकुट ।
बालमीकि मुनि तपस्या करन्ति जेबण ए गिरि क्रोट ॥ १२ ॥
बालमीकि संगे भेट । कहिले सकळ कूट ।
बहुबिधि कहि रामङ्कु पूजिले होइ मुनिबर हृष्ट ॥ १३ ॥
चित्रकूटे कुटी कले । महासुखरे रहिले ।
बोले बिशि मृगमान मारि आणि कुटीरे प्रबेश हेले ॥ १४ ॥

आहुति देने का समय हो गया था इसी समय श्रीराम, लक्ष्मण तथा जानकी ने (मुनि के) चरणों में प्रणाम किया । ६ ऋषि ने आशीर्वाद देते हुए आसन देकर अनेक प्रकार से राम-लक्ष्मण की पूजा करके उनके मन को संतुष्ट किया । ७ उन्होंने मुनि से सब कुछ कह दिया । मुनि बोले, हे तात ! चौदह वर्ष पर्यन्त जो भी लगेगा वह सब कुछ हम तुम्हें देंगे । ८ राम ने यह अस्वीकार कर दिया । उन्होंने वहाँ शयन किया । लक्ष्मण धनुष पर बाण चढाकर वहाँ पहरे पर बैठ गये । ९ रात्रि सानन्द समाप्त होने पर मुनि से भेंट हुई । चित्रकूट पर्वत निकट ही दिखता है, ऐसा कहते हुए उन्होंने मार्ग बता दि ा । १० उसी मार्ग से जाकर श्रीराम ने यमुना नदी पार की । चित्रकूट पर्वत के निकट मन्दाकिनी को देखकर वह प्रसन्न हो गये । ११ पर्वतों में मुकुट के समान चित्रकूट धन्य है । इसी पर्वत की गुफा में बाल्मीकि ऋषि तपस्या करते हैं । १२ बाल्मीकि के साथ भेंट करके उन्होंने सारा रहस्य कह सुनाया । मुनिश्रेष्ठ ने नाना प्रकार से स्तुति करके राम की पूजा करके प्रसन्नता का अनुभव किया । १३ चित्रकूट में पर्णशाला बनाकर श्रीराम बड़े सुखपूर्वक वहाँ रहने लगे । बिशि कहता है कि पशुओं को मार करके उन्हें लेकर श्रीराम कुटी में प्रविष्ट हुए । १४

द्वादश छान्द

राग–घण्टारव (दुइताळि)

राम कर धरि कामिनी । बुलन्ति बेनि गो ।
चित्रकूट गिरि मुर्द्धनी । बोलन्ति देख सजनी ।
किन्नर बेनि गो । करुछन्ति बिबिध ध्वनि ।। १ ।।
देख देख कृष्ण अगुरु, दुर्लभा तरु गो;
सुबास करु अछि दूरु । देख देख कुसुमलता,
मधुपेमत्त गो, मकरन्द पाने निरता ।। २ ।।
शोभा देख बिबिध तरु, चारु चमरु गो;
फळ पुष्पे अटन्ति गरु । शीत पीत रंग ए शिळा,
देख अबळा गो, नीळ शीळे मर्कट मेळा ।। ३ ।।
देख ए मन्दाकिनी नदी, पाताळ भेदि गो,
सुखदायी महा प्रमोदी । अजोध्यापुरी मोर गिरि,
सरजू सरि गो, मन्दाकिनी नदीर बारि ।। ४ ।।
राम सीता बसिण शिळा, करन्ति लीळा गो;
बिस्मरि नब उर्मिमाळा । लक्ष्मण आणे कन्द मूळ,
रान्धन्ति फळ गो, बोले बिशि मणोहि बेळ ।। ५ ।।

छान्द—१२

राग–घण्टारव (दोताल)

चित्रकूट गिरि के शिखर पर श्रीराम सीता का हाथ पकड़कर दोनों घूमने लगे। उन्होंने कहा, हे सहचरी ! देखो दो किन्नर विविध प्रकार की ध्वनियाँ कर रहे हैं। १ देखो दूर से ही कृष्णा गुरु का दुर्लभ वृक्ष सुगन्धि दे रहा है। देखो पुष्पों की लताओं पर मदमस्त भ्रमर मधुपान में लगे हैं। २ नाना प्रकार के वृक्षों की शोभा को देखो। सुन्दर घने वृक्ष फल एवं फूलों से लदे हैं। हे अबले ! श्याम और पीले रंग की शिलाएँ तथा नीली चट्टानों पर वानरों के दलों को देखो। ३ पाताल को भेदकर बहती हुई अत्यन्त सुख देनेवाली मनोरम मन्दाकिनी नदी को देखो। मेरा पर्वत ही अयोध्यापुरी है। मन्दाकिनी नदी का जल ही सरयू का जल है। ४ सब कुछ भुलाकर नवल लहरों के मध्य शिला पर बैठकर श्रीराम और सीता लीला करने लगे। बिशि कहता है कि लक्ष्मण कन्द-मूल लाते थे। भोजन के समय उन्हें पकाया जाता था। ५

त्रयोदश छान्द

राग–कलहंस केदार

मोह तेजन्ते दशरथ नृपति ।
कर जोड़िण मंत्रीबर जणान्ति जे ॥ १ ॥
बने छाड़िलि राम लक्ष्मण बेनि ।
ताङ्कु संगे गले जनक नन्दिनी ॥ २ ॥
शुणि से महीपति हेळे बिकळ ।
श्रीराम चिन्ति नेत्रु बहइ जळ ॥ ३ ॥
आगो मन्द पामरी कैकेयी राणी ।
कि दोष कले तोते मो रघुमणि गो ॥ ४ ॥
कि दोष कले तोर सुमित्रा सुत ।
निर्दोषी सीताकु तु कलु एमन्त गो ॥ ५ ॥
हा हा हे राम तोते तेजिलि मुहिँ ।
चन्द्र बदन तोर देखिलि नाहिँ ॥ ६ ॥
राम न देखि निश्चे जिब जीबन ।
तु मोते हेलु काळकूट समान गो ॥ ७ ॥
तु मोर अकळंक कुळ चन्द्रमा ।
केन्हे दु:ख सहिबु जनक जेमा गो ॥ ८ ॥

छान्द—१३

राग–कलहंस केदार

महाराज दशरथ को चेत आने पर श्रेष्ठ मंत्री ने हाथ जोड़कर निवेदित किया । १ राम तथा लक्ष्मण दोनों को मैंने वन में छोड़ दिया । जनक-कुमारी सीता उनके साथ चली गई । २ सुनते ही राजा व्याकुल हो गये । श्रीराम के विषय में सोचकर नेत्रों से नीर बहने लगा । ३ अरी मूर्ख एवं दुष्ट रानी कैकेयी ! मेरे रघुकुल में मणि के समान राम ने तेरा क्या अपराध किया ? ४ सुमित्रानन्दन ने तुम्हारा क्या दोष किया था ? तूने निर्दोष सीता के साथ ऐसा किया । ५ हा राम ! हा राम ! मैंने तुझे छोड़ दिया । तेरा चन्द्रमुख भी नहीं देखा । ६ हे राम ! तुम्हें न देखकर यह जीवन निश्चय ही समाप्त हो जाएगा । तुम मेरे लिए कालकूट विष के सदृश हो गये । ७ तुम मेरे निष्कलंक कुल के चन्द्रमा थे । जनकदुलारी दु:ख कैसे सह पाएगी ? ८ यह सुनकर मेरा हृदय फट क्यों नहीं गया ? मैं

फाटि न गला एहा शुणि हृदय ।
जाणिलि कुळिशु मो तनु निर्दय रे ।। ९ ।।
लक्षे नृपति मध्ये भुञ्जिलु चाप ।
गञ्जिलु पर्शुधर तेड़ेक दर्प रे ।। १० ।।
दण्डिलु जाग रखि असुरकुळ ।
मण्डिलु रबि तळे ए रघुकुळ रे ।। ११ ।।
पाद लागि पाषाण हेला जुबती ।
बिधाता देला तोते एते बिपत्ति रे ।। १२ ।।
हा हा राम बोलिण तेजिले प्राण ।
तइळ भाण्डे भरि देले से क्षण जे ।। १३ ।।
सिन्धु घोष प्रायेक शुभिला बाणी ।
अन्तःपुरे प्रबेशि रोदिले राणी जे ।। १४ ।।
राजा निधने अमनात्य सकळ ।
सबुरि नयनस बहइ जळ जे ।। १५ ।।
बिकळ होइले से अजोध्या नारी ।
बोलइ बिशि शोभा न दिशे पुरी जे ।। १६ ।।

जान गया कि मेरा शरीर बज्र से भी कठोर है । ९ लाखों राजाओं के बीच तुमने शिव-चाप खण्डित किया था । परशुराम के इतने बड़े दर्प का दलन कर दिया था । १० तुमने यज्ञ की रक्षा करके असुरवंश को दण्डित किया तथा सूर्य के नीचे अर्थात् भूमण्डल में इस रघुकुल को गौरवान्वित किया । ११ तुम्हारे पैर के लग जाने से पाषाण भी नारी बन गया । परन्तु विधाता ने तुम्हें इतना दुःख दिया । १२ हा राम ! हा राम ! कहते हुए (राजा दशरथ ने) प्राण त्याग दिये । उसी समय उन्हें तैल-पात्र में भरकर रख दिया गया । १३ सागर-गर्जन के समान शब्द सुनाई पड़ने लगा । रानियाँ अन्तःपुर में प्रविष्ट होकर रुदन करने लगीं । १४ राजा के निधन से सभी दुःखी हो गये । सबके नेत्रों से जल बहने लगा । १५ अयोध्या की नारियाँ व्याकुल हो गयीं । बिशि कहता है कि पुरी अशोभनीय दिखाई दे रही थी । १६

चतुर्दश छान्द

राग–कळह रथवाणी

राजा निधने पात्र पुरोहित जन ।
बिचारन्ति काहाकु करिबा राजन ।। १ ।।
श्रीराम गले राजा स्वर्ग पाइले ।
भ्रत शत्रुघन अजाघरे रहिले ।। २ ।।
वशिष्ठ सुमंत्र आदि जेतेक ।
लेखा देइण दूतकु कहि चरित ।। ३ ।।
भ्रतकु आम्भर नामधरि कहिबु ।
कुशळ कहिण बेगे घेनि आसिबु ।। ४ ।।
अश्व चढ़ि करि दूते त्वरिते गले ।
अळप दिनरे जाइ प्रबेश हेले ।। ५ ।।
सेहि निशि भ्रते स्वपन दिशि ।
अमंगळ जाणि मन शुखाइ बसि ।। ६ ।।
एमन्त दूते देले लेखा त्वरिते ।
बेगे आस कुशळ सर्ब पुरोहिते ।। ७ ।।
दूतङ्कर बाणी लेखा आकट जाणि ।
अजाङ्कु छामुरु बेगे नेले मेलाणि ।। ८ ।।

छान्द—१४

राग–चम्पू रथ की धुन

राजा की मृत्यु पर पात्रगण तथा पुरोहित विचार करने लगे कि अब राजा किसको बनाया जाय ? १ श्रीराम के चले जाने पर राजा स्वर्गवासी हो गये । भरत-शत्रुघ्न भी नाना के घर में हैं । २ वशिष्ठ तथा सुमन्त्र ने पूर्व का वृत्तान्त दूतों को लिखवाकर कहा । ३ हमारा नाम लेकर भरत से सब कुशल बताकर उन्हें शीघ्र साथ में ले आना । ४ अश्वारोही बनकर दूत शीघ्र ही चले गये तथा कुछ ही दिनों में वहाँ जा पहुँचे । ५ उसी रात को भरत ने स्वप्न देखा । अनिष्ट जानकर वह मुख सुखाये हुए बैठे थे । ६ इस प्रकार दूतों ने तुरन्त ही पत्र दे दिया कि शीघ्र ही आओ । सभी पुरोहित सकुशल हैं । ७ दूतों की बातों तथा पत्र के तात्पर्य को समझकर नाना के समक्ष जाकर उन्होंने शीघ्र ही बिदाई ली । ८ उन्होंने हाथी, घोड़े, यान तथा विपुल धन प्राप्त किया परन्तु

गज अश्व जान पाइ अनेक धन ।
तेबेहें स्वपन चिन्ति बिकळ मन ॥ ९ ॥
सैन्य पच्छे रखिण गले आगरे ।
बोले बिशि प्रबेश अजोध्या नगरे ॥ १० ॥

पञ्चदश छान्द

राग–कल्याण

अजोध्यारे भ्रत होइ प्रबेश ।
देखिले सबुरि मुख बिरस ।
अन्तःपुरे माता चरणे पड़ि ।
पचारु छन्ति बेनि करजोड़ि गो जननी ।
आम्भ पिअर काहिं ।
ज्येष्ठ कनिष्ठङ्कु देखु त नाहिं ॥ १ ॥
अजोध्यापुर दिशे नार खार ।
मंगळ दिशु नाहिँ आम्भ पुर ।
पथे देखिलि अशकुन मान ।
कि अबा नाश गला आम्भ पुण्य ।
गो जननी । इत्यादि ॥ २ ॥
शुणि जननी कहन्ति बचन ।
रामकु राजा करन्ते राजन ।

स्वप्न के विषय में सोचकर उनका मन व्याकुल था। ९ बिशि कहता है कि वह सेना को पीछे ही छोड़कर अयोध्यानगरी में जा पहुँचे। १०

छान्द—१५

राग–कल्याण

अयोध्या में पहुँचकर भरत ने सबके मुख दुःखी देखे। अन्तःपुर में माता के चरणों में नमन करके दोनों हाथ जोड़कर पूछने लगे, हे अम्ब ! हमारे पिताजी कहाँ हैं ? अग्रज तथा अनुज भी नहीं दिख रहे। १ अयोध्यानगर अस्तव्यस्त दिखाई दे रहा है। हमारे घर में कुशल नहीं दिख रही। मार्ग में अपशकुन दिखाई दिये थे। हे माँ ! क्या हमारे पुण्यों का नाश हो गया है ? २ सुनते ही माता ने कहा कि महाराज द्वारा राम को राजा बनाते समय उनसे मैंने प्रतिज्ञा करा ली। राम तथा

नृपतिङ्कि मु सत्य कराइलि ।
राम लक्ष्मण बनकु पेषिलि ।
रे कुमर ! एबे हुअ नृपति ।
तु मोर भोग कर ए बिभुति ॥ ३ ॥
रामङ्कु न देखि तुम्भ पिअर ।
देह छाड़िण गले स्वर्गपुर ।
मृत शब एबे अछन्ति रखि ।
दहन न कले तोते न देखि ।
रे कुमर इत्यादि ! ॥ ४ ॥
शुणिण मूर्च्छा गले भरत बीर ।
माताङ्कु कले बहुत धिक्कार ।
मन्थरा केश शत्रुघन धरि ।
बन्धन कले अबाध्य बिचारि ।
छाड़िण देले रामङ्कु डरिण ।
कैकेयीरे से पशिला शरण ॥ ५ ॥
शब दहिण कले प्रेत कर्म ।
बोले बिशि राजाङ्कर जे धर्म ॥ ६ ॥

लक्ष्मण को वन में भेज दिया । हे कुमार ! अब राजा बन जाओ तथा मेरी विभूति का उपभोग करो । ३ राम को न देखकर तुम्हारे पिता देह त्यागकर स्वर्ग को चले गये । मृत शरीर अभी रखा है । हे कुमार ! तुम्हें न देखकर उसका दाह नहीं किया गया । ४ यह सुनते ही पराक्रमी भरत मूर्च्छित हो गये । उन्होंने माता को बहुत धिक्कारा । शत्रुघ्न ने मन्थरा के बाल पकड़ लिये तथा अबला समझकर उन्होंने उसका वध नहीं किया । राम के डर से उसे छोड़ दिया । वह कैकेयी की शरण में जा पहुँची । ५ विशि कहता है कि जैसा राजाओं का धर्म है उन्होंने उसी प्रकार शव-दाह करके प्रेतकर्म सम्पादित किया । ६

षोडश छान्द

राग–आषाढ़ शुक्ळ

भरत शत्रुघन स्नान करि ।
सुमंत्र मंत्री छामुकु हकारि ॥ १ ॥
श्रीराम लक्ष्मणंकु जिबा आणि ।
सैन्य सज करिब एहि क्षणि ।
ता शुणिण मंत्री चतुरंग बळ साजि आणन्ति ॥ २ ॥
भरत शत्रुघन चढ़ि रथ ।
सुखरे गले से दुर्गम पथ ।
बन गिरि पूरि चालन्ति थाट ।
शबर नृपति संगरे भेट ।
कहिले से सर्ब । चित्रकूटरे अछन्ति राघब ॥ ३ ॥
गुह बोलन्ति हे मित्र सानुज ।
देख ए कन्दमूळ कुशळ जे ।
राम सीता एथि पहुड़िथिले ।
एठारे लक्ष्मण जगि रहिले ।
तांक संगे मुहिं । कथा कहन्ते निशी गला नाहिं ।
देखि भरत कले बहु शोक ।

छान्द—१६

राग–आषाढ़ शुक्ल

भरत और शत्रुघ्न ने स्नान करके मंत्री सुमन्त को सामने बुलाकर श्रीराम-लक्ष्मण को लाने के लिए चलने तथा इसी समय सेना को सज्जित करने के लिए कहा । ऐसा सुनकर मंत्री चतुरंगिनी सेना को साजकर ले आया । १-२ भरत और शत्रुघ्न रथ पर चढ़कर सुखपूर्वक वन तथा पर्वतों से भरे दुर्गम पथ पर चलते चले गये । फिर निषादराज से उनकी भेंट हुई । उसने सब कुछ बताकर चित्रकूट में राघव रामचन्द्र के रहने की बात कही । ३ गुह ने कहा, हे मित्र के अनुज ! इन कन्द-मूल को कुशलता से देखो । राम और सीता यहीं पर लेटे थे । यहाँ पर लक्ष्मण ने पहरा दिया था । उनके साथ वार्तालाप करते-करते भी मेरी रात नहीं बीती थी । यह देख भरत ने बहुत शोक किया तथा अपनी माता की अनेक प्रकार से निन्दा की । उसी बटवृक्ष के दूध से उन्होंने जटाएँ

निज मातांकु निन्दिले अनेक ।
सेहि बटक्षीरे बन्धिले जट ।
बकळ मान कले पिन्धा पट ।
सेठारु चळिले । भरद्वाज मुनि मठे मिळिले ॥ ४ ॥
मुनिङ्कि देखिण कैकेयी सुत ।
पड़िले चरण तळे त्वरित ।
मुनि तांकु किछि भोजन देले ।
सकळ सैन्य नृपति होइले ।
से निशि रहिले । प्रभात हेबारु शज्या छाड़िले ॥ ५ ॥
रजनी शेषरे हेले बाहार ।
सैन्य चालन्ते बन गिरि चूर ।
गुह शबरकु करिण आगे ।
प्रबेशिले चित्रकूट से लागे ।
शुणि गरु ध्वनि । लक्ष्मण उठिले तरु मूर्द्धनि ॥ ६ ॥
देखिले भरत शत्रुघ्न बेनि ।
संगते अनेक सइनि घेनि ।
तांकु चाहिँ बहु प्रतिज्ञा कले ।
भ्रतकु आज मारिबि बोइले ।
राजा एने होइ । आसुछि आम्भंकु मारिबा पाइँ ॥ ७ ॥
बृक्षरु ओल्हाइ सुमित्रा सुत ।
जणाइले राम पाशे त्वरित ।

बनायीं तथा वल्कल वस्त्र धारण किये थे । वहाँ से चलकर भरद्वाज ऋषि के आश्रम में जा पहुँचे । ४ कैकेयीनन्दन भरत मुनि को देखकर वेग से उनके चरणों में गिर पड़े । मुनि ने उन्हें कुछ भोजन प्रदान किया जिससे सम्पूर्ण सेना भी तृप्त हो गई । उस रात्रि को वहीं विश्राम करके प्रभात होने पर शय्या का त्याग किया । ५ रात्रि व्यतीत हो जाने पर बाहर निकल पड़े । पर्वतों और जगलों को रौंदते हुए सेना चल रही थी । निषादराज को आगे करके वह चित्रकूट के निकट जा पहुँचे । घोर ध्वनि को सुनकर लक्ष्मण वृक्ष की चोटी पर चढ़ गये । ६ उन्होंने भरत और शत्रुघ्न दोनों को अनेक सैन्यवाहिनी को साथ लिये आते देखकर बहुत प्रतिज्ञाएँ कीं । वह बोले कि आज भरत को मार डालूँगा । अब राजा होकर वह हम लोगों को मारने के लिए आ रहा है । ७ वृक्ष से उतरकर

भरत शत्रुघ्न आसन्ति देब ।
शुणिण मने हसन्ते राघब ।
आसु आसु भाइ । देखिबा तांकु नयन पुराइ ॥ ८ ॥
भरत शत्रुघ्न सैन्य रुहाइ ।
चित्रकूट गिरि निकटे जाइ ।
देखिले अति मनोरम गिरि ।
जहिँ बिजे करिछन्ति हरि ।
से गुह संगति । रथु ओल्हाइ हेले पद-गति ॥ ९ ॥
श्रीरामंकु देखि कैकेयी सुत ।
खण्डे दूररु कले दण्डबत ।
भ्रत चरणे लक्ष्मण पडिले ।
शत्रुघनहिँ दूरु मान्य कले ।
चारि भाइ मेळ । बोले बिशि नेत्रु बहइ जळ ॥ १० ॥

सप्तदश छान्द

राग—कउशिक पडि़ताळ

इक्ष्वाकु कुळ सिन्धु चन्द्रमा हे मोर जननी एहा अर्जिले ।
तुम्भंकु न देखि पिअर हा राम बोलिण प्राण तेजिले ॥ १ ॥

सुमित्रानन्दन लक्ष्मण ने शीघ्रता से श्रीराम से निवेदित कर दिया। हे देव ! भरत और शत्रुघ्न आ रहे हैं। यह सुनकर राघव राम मन ही मन हँसते हुए कहने लगे, "भाई को आने दो। हम उन्हें आँख भरकर देखेंगे"। ८ भरत और शत्रुघ्न ने सेना को रोककर चित्रकूट पर्वत के समीप जाकर अत्यन्त मनोरम पर्वत को देखा जहाँ भगवान हरि वास करते थे। वह रथ से उतरकर गुह के साथ पैदल ही चलने लगे। ९ कैकेयी-नन्दन ने श्रीराम को देखकर कुछ दूर से ही दण्डवत किया। लक्ष्मण भरत के चरणों मे नत हुए। शत्रुघ्न ने भी दूर से ही प्रणाम किया। बिशि कहता है कि चारों भाइयों के मिलने से उनके नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। १०

छान्द—१७

राग—कौशिक परिताल

हे इक्ष्वाकुवंश रूपी सागर के चन्द्रमा ! मेरी माता ने यह ही कमाया। आपको न देखकर पिताजी ने हा राम ! कहते हुए प्राण त्याग

दुष्ट पामरी मन्दभागी हे क्षमाशीळ दोष कर क्षमा ।
अजोध्यापुरे अभिषेक हुअ हे घेनिण जनक्क जेमा ।। २ ।।
भरत शत्रुघ्न एमन्त कहि चरण तळे पड़िले ।
उठ उठ बोलि श्रीकरे जे बेनि भाइँकि तोळि धइले ।। ३ ।।
पिता मृत्यु राम लक्ष्मण सीता जे शुणिण बिळाप कले ।
सरजु जळे स्नान जे करि से इंगुदि फळ पिण्डाश देले ।। ४ ।।
बशिष्ठ आदि सकळंकर वचनरे नोहिले प्रसन्न ।
जे जेते रूपे मणाइले हे राम नोहिले सदय मन ।। ५ ।।
भरतंकु राजनीति कहि से पादुका देइ कलेक तोष ।
बोले बिशि भ्रत नन्दिग्रामे जे सैन्य घेनि हेले प्रवेश ।। ६ ।।

अष्टादश छान्द

राग–केदार (जळद वाणी)

चित्रकूट बासी हे ठुळ हेले आसि ।
बिचारि बोलन्ति एथि हे थिवा सकळ तपस्वी ।। १ ।।

दिये। १ हे क्षमाशील ! आप दुष्ट, मूर्ख तथा मन्दभागा के दोषों को क्षमा कर दीजिए। आप जनककुमारी को लेकर अयोध्यापुर में अभिषिक्त होइए। २ ऐसा कहते हुए भरत और शत्रुघ्न चरणों में गिर पड़े। उठो ! उठो ! कहते हुए (श्रीराम ने) दोनों भाइयों को अपने हाथों में उठाकर समेट लिया। ३ श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीता पिता की मृत्यु के विषय में सुनकर विलाप करने लगे। सरिता जल में स्नान करके उन्होंने इंगुदी फलों से निर्मित पिण्डदान किया। ४ बशिष्ठादि समस्त लोगों के कथन से भी वह प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने उन्हें कितना भी समझाया परन्तु राम का मन शान्त न हो सका। ५ भरत को राजनीति समझाकर श्रीराम ने उन्हें पादुका प्रदान करके संतुष्ट किया। बिशि कहता है कि सेना को साथ लिये हुए भरत नन्दीग्राम में जा पहुँचे। ६

छान्द—१८

राग–केदार (जलद वाणी धुन)

चित्रकूट-वासी समस्त तपस्वी वहाँ पर एकत्रित होकर विचार करने लगे। १ मार्ग खुल गया है। क्षत्रीगणों की भीड़ बढ़ गयी है।

फिटिगला दाण्ड हे क्षत्रि हेले दण्ड ।
राम लक्ष्मण बनरे हे बुलन्ति घेनिण कोदण्ड ॥ २ ॥
होइछन्ति जति हे संगरे जुबती ।
प्रतिदिन मृगबध करन्ति हे रघुकुळ पति ॥ ३ ॥
असुर आसिबे हे एहाङ्कु देखिबे ।
आम्भ पाइँ धानुकी से हे आणिछि बोलिण खाइबे ॥ ४ ॥
श्रीराम जाणिले हे लक्ष्मणे कहिले ।
आम्भ रहिबा देखिण हे सानुज मुनि माने गले ॥ ५ ॥
कि कले कि कले हे न कहि त गले ।
एड़े भय कि पाइँ हे सानुज से माने पाइले ॥ ६ ॥
तेजिले ए बन हे आसन्ति ए स्थान ।
बोले बिशि एमन्त हे बाञ्छुण जिबा कले मन ॥ ७ ॥

एकोनविंश छान्द

राग–आहारि (मान्धाता मधुप वृत्ते)

एथु अनन्तरे किछि दिन परे चित्रकूट तेजि श्रीराम ।
दण्डक अरण्ये प्रबेशि देखिले आत्रेय ऋषिक आश्रम ।

राम और लक्ष्मण कोदण्ड (धनुष) लेकर वनों में घूम रहे हैं । २ मुनि बन गए हैं परन्तु साथ में युवती है । रघुकुलपति राम प्रतिदिन वन्य पशुओं का वध करते हैं । ३ राक्षस आकर इन्हें देखकर समझेंगे कि हमारे लिए (यह ऋषि) धनुर्धर ले आये हैं । ऐसा कहकर वह हमें खा जाएँगे । ४ श्रीराम ने यह जानकर लक्ष्मण से कहा, हे भाई ! हमारा निवास देखकर मुनिवृन्द यहाँ से चले गये । ५ यह क्या किया ? मुझसे बिना कहे ही चले गये । हे भाई ! उन्हें इतना भय किस कारण से लगने लगा ? ६ हमारे इस वन को त्याग देने पर वह लोग इस स्थान को लौट आएँगे । बिशि कहता है कि इस प्रकार विचार करके उन्होंने जाने की इच्छा की । ७

छान्द—१९

राग–अहारी (मान्धाता मधुप की धुन)

इसके अनन्तर कुछ दिनों के पश्चात् चित्रकूट का त्याग करके श्रीराम दण्डकारण्य में प्रविष्ट हुए । हे सुश पुरुषो ! उन्होंने अत्रि ऋषि का आश्रम

सुजने । अतिरम्य तांक आश्रम ।
समस्त ऋषिमाने सगतरे जहिँ करि अछन्ति विश्राम ।। १ ।।
सउमित्रि सीता घेनिण श्रीराम मुनिकु कलेक दर्शन ।
आत्रेय ऋषि देखिण श्रीरामकु बहुत होइले प्रसन्न ।
सुजने । बहु बिधिरे पूजा कले ।
अनुसूया सीतांकर भुज धरि तांक पुरकु घेनि गले ।। २ ।।
करि अनुराग देले अंगराग दिव्य अमळान वसन ।
दिव्य आभरण दिव्य कुसुमरे कले ताहांकु सुमण्डन ।
सुजने । केबे हे नुहे से बिभंग ।
हेम उज्ज्वळ किरण रसाणिला पराये दिशिला श्रीअंग ।। ३ ।।
जेउँ अनुसूया जने करि दया तापि नदीकि बढ़ाइले ।
अनेक काळ जाए बृष्टि न कला दुर्भिक्ष बाधा छड़ाइले ।
सुजने । अटन्ति सेहि पतिव्रता ।
अनुसूया व्रत करिण मुकत हुअन्ति सकळ बनिता ।। ४ ।।
जानकी तांक चरण तळे पड़ि लभिले परम सन्तोष ।
ताहा देखि राम लक्षमण सहिते होइलेक बहु हरष ।
सुजने । पूर्वकथा मुनि कहिले ।
तुम्भे एबे ए बनकु बिजे कल अभय होइलु बोइले ।। ५ ।।

देखा । जहाँ समस्त मुनिवृन्द विश्राम कर रहे थे वह उनका अत्यन्त मनोरम मठ था । १ लक्ष्मण और सीता को साथ लेकर श्रीराम ने मुनि के दर्शन किये । अत्रि मुनि श्रीराम को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए । हे सज्जनो ! उन्होंने नाना प्रकार से इनकी पूजा की । सीता का हाथ पकड़कर अनसूया उन्हें अपनी कुटी में ले गईं । २ बड़े प्यार से उसने सीता को दिव्य अंगराग तथा अम्लान वस्त्र प्रदान किये । हे सुजनो ! उन्होंने दिव्य आभूषणों तथा दिव्य पुष्पों से सीता को सुसज्जित किया जो कभी भी मलिन न होनेवाले थे । जानकी का शरीर उज्ज्वल तथा रससिक्त स्वर्ण-किरण के समान दिखाई देने लगा । ३ जिस अनसूया ने लोगों पर दया करके नदी को प्रकट कर दिया था । चिरकाल से वृष्टि न होने के कारण दुर्भिक्ष की बाधा को हटा दिया था । हे सुजनो ! यह वह ही पतिव्रता अनसूया थी जिसका व्रत करने से सारी महिलाएँ मुक्ति को प्राप्त करती हैं । ४ जानकी ने उनके चरणों में गिरकर परम संतोष प्राप्त किया । यह देखकर लक्ष्मण-सहित श्रीराम बहुत प्रसन्न हुए । हे सज्जनो ! मुनि ने पूर्व का वृत्तान्त कह सुनाया तथा फिर बोले कि आप

सकळ ऋषि तण्डुळ शिरे देइ रामंकु कल्याण बांछिले ।
एहि मार्गरे ए बन भितरकु जिबा हेउ बोलि बोइले ।
सुजने । सेठारु राम बिजे कले ।
अजोध्याकाण्ड सम्पूर्ण बोले दीनबिशि गीते एहा कहिले ।। ६ ।।

।। अजोध्याकाण्ड समाप्त ।।

अब इस वन में आ गये हैं। हम अब निर्भय हो गये । ५ सभी ऋषियों ने श्रीराम के शिर पर अक्षत डालकर उन्हें आशीर्वाद दिया । इसी मार्ग से इस वन में चलें, ऐसा कहने लगे । हे सज्जनो ! श्रीराम वहाँ पधार गये । दीन बिशि ने सम्पूर्ण अयोध्याकाण्ड गीतों में वर्णित किया है । ६

।। अयोध्याकाण्ड समाप्त ।।

आरण्यककाण्ड

प्रथम छान्द—विराध वध

राग—आहारी

एथु अनन्तरे महा बनान्तरे प्रबेश होइले श्रीराम ।
दण्डक अरण्ये सीतांकु देखान्ति देइण कन्धे भुज बाम ।
गो सजनि ! तरुमाने जे अभिराम ।
फळ पुष्पे लता अति अप्रमिता कि अबा शक्रआराम ।। १ ।।
शुक सारी संगे अछन्ति बिहगे फळ लोभ जे न छाड़न्ति ।
बिहंग संगरे क्रीड़ा करिबारे विविध ध्वनिकि भाषन्ति ।
गो सजनि ! देखाइ श्रीराम संतोष ।
तमाळर माळ तळरे कस्तूरी जीव चरन्ति जे विशेष ।। २ ।।
सिंह, शार्द्दूळ, गण्डा, गज, गयळ, मर्कट, भाळुंकर कुळ ।
मृग, शूकर, शम्बर, हरिण कृष्णाजिनर संगे मेळ ।
से जानकी । सहिते राम जे सन्तोष ।
एहि समयरे प्रबेश होइला विराध नामरे राक्षस ।। ३ ।।

छान्द १—विराध-वध

राग—महारी

इसके पश्चात् श्रीराम घनघोर जंगल में प्रविष्ट हुए । वह सीता के कन्धे पर बायीं भुजा रखकर उन्हें दण्डक वन दिखाने लगे । हे सजनी ! देखो, यह वृक्षों के समूह कितने सुन्दर हैं । फल तथा फूलों से लतायें विपुलता से भरी हैं । लगता है जैसे यह इन्द्र का नन्दन वन हो । १ हे सजनी ! शुक और सारिकाएँ संग-संग हैं । पक्षी फलों का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे है । पक्षी आपस में क्रीड़ा करते हुए विविध प्रकार के कलरव कर रहे हैं । तमाल वृक्षों के नीचे विशेष प्रकार के कस्तूरी मृगों को चरते हुए दिखाकर श्रीराम को सन्तोष प्राप्त हुआ । २ सिंह, शार्दूल, गैंड़े, गज, गयल, वानर तथा भालुओं के दल, मृग, सुअर, साम्भर, काले चर्म वाले हिरणों के एक संग में जमाव को देखकर जानकी के साथ श्रीराम प्रसन्न हो गये । इसी समय विराध नाम का राक्षस वहाँ आ पहुँचा । ३

महागिरि प्राय दिशइ ता काय धरिछि करे दिव्य शूळ ।
रुधिरे शरीर कर्द्दन होइछि मुख दिशइ बिकराळ ।
हे सुजने । सीतांकु घेनिण से गला ।
राम लक्ष्मण शर बृष्टि करन्ते भय तहिँकि जे न कला ।। ४ ।।
छाड़िण सीतांकु राम लक्ष्मणकु नेउथिला से बान्धिकरि ।
सीताङ्क रोदन देखि बेनि भाइ बाहुकु भग्न तार करि ।
हे सुजने । दळि दहिले तार पिण्ड ।
प्राण तेजि दैत्य गन्धर्व होइला पाइण राम भुजदण्ड ।। ५ ।।
विराध बिनाशि बने बने पशि देखन्ति मुनिक आश्रम ।
समस्त, समस्त ऋषिमानंक मठ देखि प्रशंसा करन्ति जे राम ।
हे सुजने ! शरभंक ऋषिक पाशे ।
शचीपति तांकु बिनय करन्ति ब्रह्मलोककु जिबा आशे ।। ६ ।।
श्री रामंकु देखि अन्तर्द्धान होइगले जे देब सुनासीर ।
सीतांक सहिते श्रीराम लक्ष्मण पड़िले मुनिक पयर ।
हे सुजने । रामंकु करिण से पूजा ।
अग्निरे पशिण शरीर ध्वंसिण ब्रह्मलोककु गले द्विजा ।। ७ ।।
ऋषि ब्रह्मलोक जिबा शुणि ऋषि माने जे हेले तहिँ रुण्ड ।
देखिले अग्निरे भस्म होइगले ऋषिक पबित्र पिण्ड ।

उसका शरीर बड़े पर्वत के समान दिखाई दे रहा था । वह हाथ मे दिव्य शूल लिये था । हे सज्जनो ! उसका शरीर रक्त से रंजित था । मुख भयानक दिखाई दे रहा था । वह सीता को लेकर चल दिया । राम तथा लक्ष्मण के द्वारा बाण-वर्षा करने पर भी वह भयभीत नही हुआ । ४ हे सज्जनो ! वह सीता को छोड़कर राम और लक्ष्मण को बाँधकर ले जाने लगा । सीता को रुदन करते हुए देखकर दोनों भाइयों ने उसके हाथ तोड़कर उसके शरीर को कुचलकर जला दिया । राम के भुजदण्डों से प्राण त्यागकर वह दैत्य गन्धर्व हो गया । ५ हे सज्जनो ! विराध का वध करके श्रीराम जगलों मे घुसकर मुनियों के आश्रम देखने लगे । सभी ऋषियों के मठों को देखकर श्रीराम प्रशंसा करने लगे । शरभंग ऋषि के पास इन्द्र उनसे ब्रह्मलोक चलने के लिए विनती कर रहे थे । ६ श्रीराम के लिए देबराज इन्द्र अन्तर्धान हो गये । सीता के समेत श्रीराम तथा लक्ष्मण ने मुनि के चरण छुए । हे सज्जनो ! इन्होंने श्रीराम की पूजा की तथा अग्नि मे प्रविष्ट होकर शरीर को नष्ट करके ब्राह्मण शरभंग ब्रह्मलोक को चले गये । ७ ऋषि के ब्रह्मलोक गमन को सुनकर वहाँ पर मुनिसमूह

हे सुजने । रामंकु सेहिठारे देखि ।
बोलइ बिशि समस्त ऋषिमाने होइले जे परम सुखी ॥ ८ ॥

द्वितीय छान्द

राग–आहारी (भंजंक चउपदीभूषण वृत्ते)

श्रीराम घेनि, हृष्ट सकळ मुनि ।
शुणन्ति बिबिध पक्षी मानंक ध्वनि ।
चालन्ति बने, राम सानन्द मने ।
प्रबेश होइले सुतीक्ष्णंक स्थाने ।
बुलि आराम, मठे पशिले राम ।
ऋषिकु प्रणमि कले तहिँ बिश्राम ।
कल्याण कले, ऋषि आसन देले ।
बहु पूजा बिधि करि आनन्द हेले ॥ १ ॥
समस्त ऋषि बिनय बाणी भाषि ।
असुरे आम्भंकु ग्रास करन्ति आसि ।
किस करिबुँ, आम्भे काहिंकि जिबुँ ।
तुम्भ शरण रखिले निश्चिन्त हेबुँ ।

एकत्रित हो गया । उन्होंने ऋषि के पवित्र शरीर को अग्नि में भस्म होते देखा । बिशि कहता है, हे सज्जनो ! श्रीराम को वहाँ देखकर सम्पूर्ण ऋषिसमुदाय परम सुख को प्राप्त हुआ । ८

छान्द—२

राग–महारी (भंज के चौपदी भूषण की धुन)

श्रीराम को साथ लिये समस्त मुनिगण प्रसन्नतापूर्वक नाना प्रकार के पक्षियों का कलरव सुनते हुए वन में चले जा रहे थे । पुलकित चित्त से श्रीराम सुतीक्ष्ण के स्थान पर प्रविष्ट हुए । तपोवन में घूमते हुए राम आश्रम में जा पहुँचे । ऋषि को प्रणाम करके उन्होंने वहीं विश्राम किया । ऋषि ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए आसन प्रदान किया तथा नाना प्रकार से विधि-विधान से उनकी पूजा करके वह प्रसन्न हो गये । १ समस्त ऋषियों ने विनती की कि राक्षस आकर हमें खा जाते हैं । हम क्या करें ? कहाँ जायँ ? यदि आप शरण में रख लें तो हम निश्चित हो जायँ । यह

शुणि राघव, बोलन्ति ए दुर्लभ ।
मारिबि असुर निश्चे न जाअ क्षोभ ।
मान्य त कले, तांकु मेलाणि देले ।
सुतीक्षणे राम, आसिबेटि बोइले ।। २ ।।
भय न कर, मुँ मारिबि असुर ।
ऋषिकि रखिण गले केतेक दूर ।
बोलन्ति सीता, आहे सत्यबकता ।
किपाइँ असुरे करिछन्ति अहन्ता ।
एत अधर्म, जाण सकळ धर्म ।
बिना दोषे असुर करिब संग्राम ।
शुणरे सखि, चारु चन्द्रमा मुखि ।
ऋषिङ्कि असुरे आसि कि दोषे भक्षि ।। ३ ।।
कोदण्ड बाण, देखि गले शरण ।
एथि पाइँ शशिमुखी देब पराण ।
बिचित्र बन, दिव्य तरु गहन ।
पुष्करिणी एकं अछि एक जोजन ।
करन्ति नृत्य, बीणा बाणी संगीत ।
जळर भितरे शुभुअछि एमन्त ।

सुनकर राघव राम ने कहा कि आप क्षुब्ध न हों, हम निश्चय ही असुरों का संहार करेंगे। उनकी अभ्यर्थना करके राम ने उन्हें विदा किया। सुतीक्ष्ण से श्रीराम ने आने के लिए कहा। २। भयभीत न हों ! मैं असुरों का वध करूँगा। ऐसा कहकर ऋषियों को छोड़कर कुछ दूर चले गये। सीता ने कहा, हे सत्यप्रतिज्ञ ! यह राक्षस किसलिए इतनी मनमानी करते हैं ? आप समग्र धर्म के ज्ञाता है। बिना अपराध के असुरोंके साथ संग्राम करना तो अधर्म होगा। हे मजुल-मयंक-मुखी सहचरी सीते ! सुनो ! असुर आकर बिना किसी दोष के ऋषियों को खा डालते हैं। ३ धनुष-बाण को देखकर वह लोग शरण में आये हैं। हे चन्द्रवदनी ! इसी कारण से उन्हें प्राण-दान दिया है। दिव्य घने वृक्षों वाले विचित्र वन में एक योजन विस्तीर्ण एक पुष्करिणी है। उस जल के भीतर ऐसा सुनाई देता है जैसे बीणावाद्य संगीत के साथ नृत्य हो रहा हो। इसे सुनते ही श्रीराम चकित होकर शीघ्रता से प्रश्न करने लगे।

शुणि चकित, पचारन्ति त्वरित ।
तहिँ तटे मुनि कहन्ति से वृत्तान्त ॥ ४ ॥
शुण हे राम, ऋषि मण्डूक नाम ।
तपस्या देखिण देबे होइले बाम ।
अपसरी पेषिले, तांकु तप भांगिले ।
से माने एबे तांकर मन रंजिले ।
जळ भितर, करि दुर्लभ पुर ।
से मानंक संगते करन्ति बिहार ।
शुणि श्रीराम, हेले संतोष मन ।
बोले बिशि बुलन्ति दण्डक अरण्य ॥ ५ ॥

तृतीय छान्द

राग–कौमोदी (सरिमान विप्रसिंह बाणी)

दण्डक अरण्य राम देखन्ति ऋषि आश्रम
लक्ष्मण जानकी घेनि संगे ।
काहिँ रहन्ति बरषे काहिँ रहि
षड़मासे समस्त स्थान रहिले रंगे ।
बनबास । हेला बेनि पाञ्च बरष ।

मुनि समस्त वृत्तान्त पुष्करिणी के किनारे कहने लगे । ४ हे राम ! सुनिए ! मण्डूक नामक ऋषि की तपस्या को देखकर देवता प्रतिकूल हो गये । अप्सराओं को भेजकर उनका तप खण्डित कर दिया । वह अप्सराएँ अब उनका मनोरंजन कर रही हैं । जल के अन्दर दिव्य महल बनाकर वह लोग उनके साथ विहार कर रही हैं । यह सुनकर श्रीराम का मन संतुष्ट हो गया । बिशि कहता है कि श्रीराम दण्डकारण्य में विचरण करने लगे । ५

छान्द—३

राग–कौमोदी (सरिमान विप्रसिंह की धुन)

श्रीराम लक्ष्मण तथा जानकी को साथ लेकर दण्डक वन देखने लगे । किसी ऋषि के आश्रम में वह एक वर्ष रहते और कहीं छः महीने निवास करते । वनवास के समय मे सभी स्थानों में आनन्द से रहते हुए दस वर्ष

मारन्ति हरिण मृग फळ मूळ भोग
सुखे बंचि रजनी दिवस ।। १ ।।
सुतीक्षण महामुने पड़िले श्रीराम मने ।
ताहांकर आश्रमकु गले ।
दूरु देखि मुनिबर कले राम नमस्कार
मुनि बहुत कल्याण कले ।
शुण आहे ब्रह्मजति काहिँ अछन्ति अगस्ति
न देखिलि ताहांकर स्थान ।
कहन्ति मुनि बचन एठाकु चारि
जोजन दक्षिणकु करिब गमन ।। २ ।।
सेठारु शुणि ए बाणी मुनिकु मागि
मेलाणि तिनि जोजन पथरे गले ।
अगस्ति भ्रातांक भेट से दिन रहि से
मठ निशि प्रभाते बिजये कले ।
देखिले बिबिध तरु दुर्लभ फळरे
चारु दिशुअछि अग्नि धूम चिह्न ।
निकट दिशिला मठ से बारे करिण
मठ लक्ष्मणकु कहन्ति बचन ।। ३ ।।

व्यतीत हो गये । हिरण तथा पशुओं को मारते थे । फल-मूल आदि खाकर सुख से रात्रि और दिन बिता रहे थे । १ श्रीराम को महर्षि सुतीक्ष्ण का ध्यान आया । वह उनके आश्रम को गये । मुनिश्रेष्ठ को दूर से ही देखकर श्रीराम ने उन्हें नमस्कार किया । ऋषि ने बहुत आशीर्वाद दिये । श्रीराम ने कहा हे ब्रह्मऋषि ! अगस्ति मुनि कहाँ हैं ? उनका स्थान नहीं दिखाई पड़ा । मुनि ने कहा कि यहाँ से चार योजन दक्षिण दिशा की ओर चलना पड़ेगा । २ इस बात को सुनकर ऋषि से बिदा होकर वहाँ से तीन योजन मार्ग तय करने पर अगस्ति के भाई से उनकी भेंट हो गयी । उस दिन श्रीराम उनके आश्रम में रुक गये और प्रातःकाल प्रस्थान कर दिया । नाना प्रकार के वृक्ष दुर्लभ फलों से लदे सुन्दर दिखाई दे रहे थे । अग्नि-धूम के चिह्न ही दिखाई दिये । निकट ही आश्रम दिखाई देने पर वहाँ रुककर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा । ३

आग होइ तुम्भे जाअ आम्भ आगमन ।
कह आज्ञा देले करिबा दर्शन ।
शुणिण सानुज गले ऋषि द्वारींकु कहिले
द्वारी कहे मुनि सन्निधान ।
तेजिण जाग सदन अइले से
तपोधन बोले आसन्तु रघुनन्दन ।
आसिण राम लक्ष्मण पड़िले मुनि
चरण मुनि तांकु कले आलिंगन ।। ४ ।।
बोलन्ति मो नेत्रधन्य तपस्या
होइला पूर्ण आज मुँ देखिलि भाइ बेनि ।
मठ भितरकु नेले रामकु आतिथ्य
कले आनन्दरे पुलकित मुनि ।
बइष्णवा धनु तूणी खड़्ग हस्तरे
घेनि समर्पिले रामकु से मुनि ।
बोलइ जे दीन बिशि आनन्दे से
दिन निशि बंचिले जनक सुता घेनि ।। ५ ।।

पहले तुम जाकर हमारे आगमन की सूचना दो । आज्ञा देने पर हम उनके दर्शन करेंगे । यह सुनकर लक्ष्मण ने जाकर द्वारपालक मुनि से बताया । उन्होंने जाकर महर्षि से निवेदित किया । यज्ञशाला से निकल कर वह तपस्वी 'पधारिये रघुनन्दन' कहते हुए बाहर आ गये । राम और लक्ष्मण ने आकर मुनि के चरणों को छुआ । मुनि ने उनका आलिंगन कर लिया । ४ वह कहने लगे, मेरे नेत्र धन्य हो गये । आज दोनों भाइयों को देखकर मेरी तपस्या पूर्ण हो गयी । मुनि ने श्रीराम को मठ के भीतर ले जाकर बड़े आनन्द के साथ उनका आतिथ्य-सत्कार किया । उन्होंने वैष्णव धनुष, तरकश तथा खड्ग हाथों में लेकर श्रीराम को समर्पित की । दीन बिशि कहता है कि जनकदुलारी को लेकर उस दिन श्रीराम ने आनन्द से रात वहीं बितायी । ५

चतुर्थ छान्द

राग–कौशिक

अगस्ति कहन्ति शुण हे श्रीराम सबु दिने ए बिष्णु धनु ।
शक्र तुम्भंकु देबाकु कहिथिले रखिथिलि मुँ केते दिनु ।
आहे राघब ! असुर एथे क्षय कर ।
केबे क्षय नुहन्ति एथु शर एटि अक्षय तूण भार ।। १ ।।
सन्तोष होइ श्रीराम कर जोड़ि मुनिकु कहन्ति बचन ।
केबण स्थाने पर्णशाळा रचिबुँ कहिबा हेउ तपोधन ।।
मुनि बोलन्ति, पंचबटीरे घर कर ।
गोदाबरी नदी तट मनोहर पवित्र महा सुखकर ।। २ ।।
ए जे जानकी अत्यन्त सुकुमारी महा दुःख मान सहिले ।
महा दुःसह साहस त कले कि बन भितरकु अइले ।।
आहे राघव ! एहाकु हेळा न करिब ।
जेते बेळरे ए जाहा मागुथिबे शरधा करि आणि देब ।। ३ ।।
मुनिकि मेलाणि मागिण सेठारु जोजने दक्षिणकु गले ।
पचबटी तट निकटे प्रकट संकेत मुनि करि थिले ।।

छान्द—४

राग–कौशिक

अगस्ति ने कहा, श्रीराम ! सुनो ! इन्द्र ने सदा से इस वैष्णव धनुष को तुम्हें देने को कहा था। मैंने कितने समय तक इसे रखा। हे राघव ! इससे असुरों का विनाश करो। यह अक्षय तूणीर है। इसके बाण कभी समाप्त नहीं होते। १ सन्तुष्ट होकर श्रीराम ने हाथ जोड़कर मुनि से कहा, हे तपोधन ! यह बताइये कि हम किस स्थान पर पर्णकुटी बनाएँ ? मुनि ने कहा कि आप पंचवटी में निवास करें। गोदावरी नदी का तट बड़ा ही पवित्र, मनोहर तथा अत्यन्त सुख देनेवाला है। २ अत्यन्त सुकुमारी इस जानकी ने अत्यन्त कष्ट सहन किये हैं। इसने महान दुःसाहस किया है कि यह वन में चली आई। हे राघव ! इसकी अवहेलना न करना। यह जिस समय जो भी माँगेगी वह बड़े प्रेम से इसे लाकर देना। ३ मुनि से विदा लेकर श्रीराम वहाँ से एक योजन दक्षिण की ओर गये। पंचवटी तट के निकट मुनि ने प्रकट संकेत बता दिये थे। मार्ग में बैठे हुए पर्वत के समान दिखनेवाली काया को देखकर

बाटे बसिछि । गिरि समान दिशे काय ।
देखिण जानकी सभय होइले पुछन्ति ताकु राम राय ।। ४ ।।
रामकु कहिले कुळानुचरित्र जटायु नामटि आम्भर ।
गरुड़ंकर कनिष्ठ पुत्र आम्भे बापांक मइत्र तुम्भर ।।
शुणि श्रीराम । ताहांकु मान्य धर्म कले ।
केउँ ठारे कुटी करिबा बोलिण संगते घेनिण अइले ।। ५ ।।
मनोरम पुष्पे अरण्य देखिले नदीर पश्चिम भागरे ।
कुश कुसुम फळ मूळ सुलभ कुटी कले तहिँ लागिले ।।
मृत्तिका बाड़; करिण इन्धन पाड़िले ।
पल्लब मानंकरे ताहा आच्छादि दुर्ल्लभ करि सजाड़िले ।। ६ ।।
अति दुर्ल्लभ पर्णशाळा श्रीराम देखिण लक्ष्मणंकु प्रशसि ।
धनु तूणखण्ड समस्त रखिण रहिले घेनि चारुकेशी ।।
तथि आगरे; लक्ष्मण कुटीर रचिले ।
बोले बिशि जहिँ महासुख जाइ रजनी दिवस बंचिले ।। ७ ।।

सीता भयभीत हो गई। राघवेन्द्र ने उससे परिचय पूछा। ४ उसने श्रीराम से अपने वंश का विवरण बताते हुए कहा कि मेरा नाम जटायु है। मैं गरुड़ का छोटा पुत्र हूँ तथा आपके पिता का मित्र हूँ। यह सुनकर श्रीराम ने उसकी अभ्यर्थना की। कहाँ पर पर्णशाला बनाई जाय, ऐसा कहते हुए उसे साथ में ले आये। ५ नदी के पश्चिम भाग पर उन्होने मनोहर पुष्पों का वन देखा। कुश, फल तथा कन्द वहाँ सुलभ थे। कुटी वहीं पर बनाई जाने लगी। मिट्टी का घेरा बनाकर ऊपर लकड़ी लगा दी। पत्तों से उसे छाकर अत्यन्त सुसज्जित किया गया। ६ अत्यन्त दुर्लभ पर्णशाला को देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण की प्रशंसा की। धनुष तूणीर तथा खड्ग आदि सबको रखकर सुकेशी सीता के साथ राम वहाँ रहने लगे। उसके आगे लक्ष्मण ने कुटिया बनाई। विशि कहता कि वहाँ पर उनके दिन-रात अत्यन्त सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे। ७

पंचम छान्द—बनबिहार

राग—आहारी

शरद जन्हरे। राम बुलन्ति बनरे।
जानकी संगते बिहार करन्ति आनन्द मनरे॥ १॥
धरि कान्ता कर। राम चाले धीर धीर।
बोलन्ति देखरे सरोज बदनी दिव्य तरुबर॥ २॥
चन्दन अगुरु। तनु अति मनोहर।
धाड़ि धाड़ि होइ शोभा पाउछन्ति ए महीभागर॥ ३॥
कुसुम कानन। मध्ये पशिले बहन।
नाना कुसुमरे सुबेश करन्ति। जुबती रतन॥ ४॥
मंडिले कबरी। कुचे लेपिले कस्तुरी।
समस्त आभरण मान खंजिले कुसुमरे करि॥ ५॥
होइ हस हस। रामा रामे कले बेश।
बिबिध कुसुम तड़ाउ खंजिले शोभा
जटा बेश जुबती चिबुक धरि॥ ६॥
पुरुष बिबेक ।
जीवन बान्धिबि आम्भ संगे दुःख पाइलु अनेक॥ ७॥

छान्द ५—वन-विहार

राग—अहारी

शरच्चन्द्रिका में श्रीराम वन में भ्रमण करते हुए सीता के साथ प्रसन्नतापूर्वक विहार करने लगे। १ पत्नी का हाथ पकडकर श्रीराम धीरे-धीरे चलते हुए कहते, हे कंजमुखो! दिव्य वृक्षों को देखो। २ इस भू-भाग में अत्यन्त मनोहर चन्दन तथा अगर के वृक्ष पंक्ति को पंक्ति में सुशोभित हो रहे है। ३ वह शीघ्र ही फूलों के वन में घुस गये और उन्होंने अनेक प्रकार के पुष्पों से युवतीरत्न (सीता) का सुरम्य श्रृंगार किया। ४ वेणी को सुसज्जित करके कुचों में कस्तूरी का लेपन किया। फूलों के नाना प्रकार के आभूषण बनाकर उन्हें पहनाये। ५ मुस्कुरातो हुई सोता ने श्रीराम का श्रृंगार किया। नाना प्रकार के फूलों से अलंकार बनाकर जटाओं को सुशोभित किया। फिर विवेकी पुरुष श्रीराम ने सोता की ठोढ़ो पकड़कर कहा कि हे जोवनसंगिनि! तुमने मेरे साथ अनेक प्रकार के कष्ट पाये हैं। ६-७ तुम मेरो सम्पदा हो। कामदेव रूपी विष की

तु मोर सम्पद । कामदेब बिष गद ।
कोटि कोटि जुग मणइ तोहर बिच्छेद ।। ८ ।।
एहि रूपे लीळा । संगे घेनिण अबळा ।
अनुदिने तनु क्षणे न छाड़न्ति रसिकिनीशाळा ।। ९ ।।
कन्द मूळ खोळि । नाना पक्वफळ तोळि ।
बोले बिशि प्रतिदिन आणन्ति सानुज महाबळी ।। १० ।।

षष्ठ छान्द—सूर्पणखा भेट

राग—कल्याण आहारी

एथु अनन्तरे शरद अन्तरे प्रबेश हेला हिम काळ ।
श्रीराम लक्ष्मण सीता सहितरे मिळिले गोदाबरी कूळ ।।
श्रीराम । हसि लक्ष्मणंकु कहन्ति ।
देख ए हिम पड़िबारु तपनकर तेजोबन्त नुहन्ति ।। १ ।।
हिम अचळु चाळिण हिमानिळ प्रचार हेले दशदिग ।
चित्रभानु भानुकिरण एकाळे कराउछि बहु हरष ।
पृथिबी । हेउछि महा सुखदायी ।
ए मार्गशीर समस्त मास श्रेष्ठ बोलिण मुनिमाने कहि ।। २ ।।

औषध हो । तुम्हारा वियोग मुझे कोटि-कोटि युगों के समान लगता है । ८ सीता को साथ लेकर इसी प्रकार की लीला करते हुए प्रतिदिन क्षणमात्र के लिए भी रसिकेश्वरी सीता को नहीं छोड़ते थे । ९ विशि कहता है कि महाबली लक्ष्मण प्रतिदिन कन्द-मूल खोदकर तथा नाना प्रकार के सुपक्व फल तोड़कर लाते थे । १०

छान्द ६—सूर्पणखा से भेंट

राग—कल्याण अहारी

इसके अनन्तर शरद्काल बीतने पर हिमऋतु का प्रवेश हुआ । लक्ष्मण तथा सीता के साथ श्रीराम गोदावरी के तट पर पहुँच गये । श्रीराम ने मुस्कुराते हुए लक्ष्मण से कहा कि देखो शीत पड़ने के कारण सूर्य की किरणें प्रखर नहीं हैं । १ हिमालय से चलती हुई शीतल वायु दसों दिशाओं में फैल रही है । सूर्य की किरणें तथा अग्नि इस समय बहुत आनन्द प्रदान करती हैं । पृथ्वी भी महान सुखों से पूर्ण हो जाती है । मुनिजन इस मार्गशीर्ष के महीने को सभी महीनों में श्रेष्ठ बताते हैं । २

सलिळ अनळ प्रायेक होइला अनळ होइला सलिळ ।
एमन्त कहि राम लक्ष्मण सीता स्नान कले नदीर जळ ।
तदन्ते । कुटीरे होइले प्रबेश ।
देव पितृ पूजा करि फळ मूळ मणोहि कले होइ तोष ।। ३ ।।
जेउँ राम षडरस चतुर्बिध अशनहिँ तांकु न रुचे ।
से एबे फळ मूळ मांस मणोहि सीता परषबारु रुचे ।
जेबण । रामंकु न रुचे अट्टाळी ।
एबे से तरुमानंक छाइतळे कामिनी घेनि करे केळि ।। ४ ।।
आचमन सारि कषाफळ मृगछाळ पारि तहिं बिजये ।
श्रीराम बाम पारुषरे जनक नन्दिनी बीस शोभा पाए ।
लक्ष्मण । निज कुटीरे छन्ति बसि ।
अजोध्या चरित मान बेनि भाइ कहन्ति मन्द मन्द हसि ।। ५ ।।
एहि समयरे श्रीराम पाशरे असुरी प्रबेश होइला ।
श्रीराम श्रीअंग सुन्दर देखिण मदन बाणे मोहि हेला ।
असुरी । देखिला । सुन्दर पुरुष ।
अशन पाशोरि छन्न छन्न होइ मदने होइला अबश ।। ६ ।।

जल अग्नि के समान तथा आग जल के समान हो गई है। इस प्रकार कहते हुए राम-लक्ष्मण तथा जानकी ने नदी के जल में स्नान किया और फिर कुटी में जा पहुँचे। देवताओं तथा पितरों की पूजा करके फल-मूल भोजन करके सन्तोष को प्राप्त हुए। ३ जिस राम को चारों प्रकार के षट्रस व्यंजन नहीं रुचते थे उन्ही को सीता के परोसे हुए फल-मूल तथा मांस अब रुचने लगे। जिन राम को अट्टालिकाओं में अच्छा नहीं लगता था वही राम अब कामिनी को साथ में लेकर वृक्षों की छाया में विहार करते थे। ४ आचमन करके गदरे फल खाकर मृगछाला बिछाकर वह वहीं पर विराजमान हो गये। श्रीराम के बाम भाग में बैठी जनककुमारी शोभित हो रही थी। लक्ष्मण अपनी कुटी में बैठे थे। दोनों भाई मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अयोध्या के चरित्र कह-सुन रहे थे। ५ इसी समय श्रीराम के पास राक्षसी आ पहुँची। मनोहर शरीर वाले श्रीराम को देखकर वह काम के बाणों से मोहित हो गई। राक्षसी ने सुन्दर पुरुष को देखा। वह उन्हें भक्षण करना भूलकर रोमाञ्चित होकर काम के वश में हो गई। ६ पिंगल वर्ण के केशों वाली राक्षसी के नख सूप के समान थे।

पिंगळ केश भविष्य बेश तार कूला प्रायेक नखमान ।
कोटाक्षी कुठार दशनी बरन दग्ध केन्दु काठ समान ।
रामंकु । देखिण मदने बिह्वळा ।
बोलइ बिशि सेहि क्षणि राक्षसी होइलाक दिव्य अबळा ॥ ७ ॥

सप्तम छान्द

राग—माळश्री

सुन्दर रूप होइ सूर्पणखा ।
श्रीराम छामुरे देलाक देखा ।
पचारइ तुम्भे काहा कुमर ।
असुरंक मध्ये कल त घर ।
राम तांकु सबु बृत्तान्त कहिले सेहि कहिला कथा ।
मुहिं बिश्रबा सुता । भ्रात दशमथा ॥ १ ॥
आहे राम तुम्भे आम्भे एकान्ते ।
बिहार करिबा नदी पर्बते ।
दण्डक बन जाक बुलाइबि ।
पुणि जाहा मागिब ताहा देबि ।
असुरीकि चाहिँ हस हस होइ बोलन्ति कोदण्डधर ।
देख संगते कामिनी अछन्ति मोहर ॥ २ ॥

आँखें गड्ढे के समान, दाँत कुल्हाड़ी जैसे तथा शरीर जले हुए केन्दू-काष्ठ के समान था। वह राम को देखकर कामविह्वला हो गई। बिशि कहता है कि उस राक्षसी ने उसी क्षण दिव्य सुन्दरी का रूप धारण कर लिया। ७

छान्द—७

राग—मालश्री

सूर्पणखा सुन्दर रूप धारण करके श्रीराम के समक्ष उपस्थित हुई। उसने पूछा कि आपने तो राक्षसों के बीच में अपना घर बसा लिया है। आप किसके पुत्र हैं ? राम ने उसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया। वह कहने लगी कि मैं विश्रवा की पुत्री हूं और दशानन मेरा भाई है। १ हे राम ! हम तुम एकान्त में विहार करेंगे। मैं तुम्हें सम्पूर्ण दण्डकारण्य में नदी और पर्वतों की सैर कराऊँगी। फिर जो तुम चाहोगे मैं वही दूंगी। राक्षसी की ओर ताककर कोदण्डधारी राम ने हँसते-हँसते कहा

पुणि बोलइ मुँ हेबि कामिनी ।
कि छार सुन्दर तोर भाबिनी ।
एहाकु एहि क्षणि देबि गिळि ।
पुणि तुम्भे आम्भे करिबा केळि ।
बोलन्ति राम तुम्भे ऋषि नन्दिनी ।
तुम्भंकु कि सपतणी ।
तुम्भ मनकु ए कथा अइला पुणि ॥ ३ ॥
भाइ लक्ष्मण अछन्ति आम्भर ।
भारिजा तांकर नाहिँ संगर ।
तुम्भे तांकर हुअ मनोहारी ।
शुणिण संतोष हेला असुरी ।
परिहास न बुझि से असुरी । लक्ष्मण पाशकु गला ।
मोते तुम्भर बनिता कर बोइला ॥ ४ ॥
बोले लक्ष्मण मुँ बोलाए दास ।
दासी होइबारे कि पउरुष ।
तांक भारिजाकु करिब सेबा ।
तुम्भंकु लोके कि बोलिबे अबा ।
लक्ष्मण उत्तर शुणि से असुरी, श्रीराम पाशकु गला ।
तुम्भ भाबिनीकि मुँ खाइबि बोइला ॥ ५ ॥

कि देखो, मेरे साथ मेरी स्त्री है । २ उसने फिर कहा कि मैं तुम्हारी कामिनी बन जाऊँगी । तुम्हारी पत्नी सुन्दरता में कितनी तुच्छ है । इसे मैं इसी क्षण खा जाऊँगी । फिर हम और तुम रमण करेंगे । राम ने कहा कि आप तो ऋषि-नन्दिनी हैं । आपको सवत बनने की बात आपके मन में कहाँ से आ गई ? ३ हमारा भाई लक्ष्मण है । उसके साथ उसकी पत्नी नहीं है । तुम उसके मन को हरनेवाली बन जाओ । यह सुनकर राक्षसी सन्तुष्ट हो गई । परिहास को न समझते हुए वह लक्ष्मण के समीप जाकर कहने लगी कि तुम मुझे अपनी पत्नी बनालो । ४ लक्ष्मण बोले कि मुझे तो दास कहा जाता है । दासी बनने में कौन सा पुरुषार्थ है ? तुम उनकी (राम की) पत्नी की सेवा करोगी । तो लोग तुम्हें क्या कहेगे ? लक्ष्मण का उत्तर सुनकर वह राक्षसी श्रीराम के समीप जा पहुँची और कहने लगी कि मैं तुम्हारी पत्नी का भक्षण करूंगी । ५ तुम इस तुच्छ कामिनी को साथ लेकर मेरी दीनता को

ए छार कामिनी अछु त घेनि ।
घेनिलु नाहिँ मोहर दइनि ।
एमन्त बोलि तुण्ड बिस्तारिला ।
सीतांकु धरि गिळि देउथिला ।
असुरी मुखरु ताकु छड़ाइ । नेइण राम रखिले ।
दुष्टा असुरी दुष्ट स्वभाव देखिले ॥ ६ ॥
राम डाकिले, हे आस लक्ष्मण ।
निश्चे परिहास हेला दूषण ।
छेद एहार नासिका श्रवण ।
सीतांकु ए करुथिला भक्षण ।
आज्ञा प्रमाणे लक्ष्मण सेहि क्षणि ।
काटिले नासा श्रवण ।
एके बिरूप हेलाक रकते भूषण ॥ ७ ॥
सेहि क्षणि तार स्थानकु गला ।
रोदन करि खरकु कहिला ।
देख मोहर नासिका श्रवण ।
बिना दोषे पुणि देला कषण ।
अजोध्यार राजा दशरथ सुत ।
श्रीराम लक्ष्मण बेनि ।
पंचबटीरे अछन्ति जुबती घेनि ॥ ८ ॥

नहीं ग्रहण कर रहे हो । इतना कहकर उसने मुख फैला दिया । वह सीता को पकड़कर निगलने ही वाली थी तभी उसक मुख से राम ने सीता को छुड़ा लिया । उन्होंने उस दुष्ट राक्षसी का उग्र स्वभाव देखा । ६ राम बोले, हे लक्ष्मण ! आओ ! निश्चय ही परिहास दोषपूर्ण हो गया । इसके नाक और कान काट डालो । यह सीता का भक्षण करनेवाली थी । आज्ञा पाते ही लक्ष्मण ने उसी क्षण उसके नाक-कान काट दिये । रक्त से रंजित होकर वह एकबारगी कुरूप हो गई । ७ वह उसी समय अपने स्थान को चली गई । उसने रुदन करते हुए सारा हाल खर से निवेदित किया । वह बोली कि मेरे नाक-कान देखो । बिना किसी अपराध के मुझे इतना दुःख प्राप्त हुआ । अयोध्यानरेश राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम तथा लक्ष्मण दोनों ही युवती को लेकर पंचवटी में रहते हैं । ८ मैं उनकी स्त्री को देखने गई । उनका छोटा भाई बड़ा बलवान है ।

देखि मुं गलि भाज्यकु ताहार।
सानुज तार बड़ बळीयार।
देखि नासिका श्रवण काटिला।
एमन्त कहि भूमिरे लोटिला।
भग्नीर विकळ देखि खर बीर राक्षस राइ।
बोले मारिब ए जाकु देब देखाइ॥ ९ ॥
चउद राक्षस घेनि असुरी।
देखाइ देला से श्रीरामपुरी।
शूळ शल्य सेहि अछन्ति धरि।
रामकु देखिण प्रतिज्ञा करि।
धनुकरे गुण देइण श्रीराम तांक आगे हेला उभा।
मृगजूथे शार्दूळ प्राये दिशे शोभा॥ १० ॥
चउदे चउद शूळ माइले।
चउद बाणे ता राम काटिले।
तहिं परे राम बाण प्रहारि।
पड़िले दनुजे जीबन हारि।
ता हांकु मराइ पुण सूर्पणखा, खरकु कान्दि कहिला।
बोले बिशि से प्रतिज्ञा बहुत कला॥ ११ ॥

उसने देखते ही नाक और कान काट दिये। इतना कहकर वह पृथ्वी पर लोट गई। बहन को व्याकुल देखकर पराक्रमी खर ने राक्षसों को बुलाकर कहा कि यह जिसे दिखा दे उसे मार डालो। ९ उस राक्षसी ने चौदह राक्षसों को लेकर श्रीराम की कुटिया दिखा दी। राक्षस शूल तथा बाण लिये थे। राम को देखकर उन्होंने प्रतिज्ञा की। धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर श्रीराम उनके आगे खड़े हो गये। मृगयूथ के समक्ष वह शार्दूल के समान सुशोभित हो रहे थे। १० चौदह राक्षसों ने चौदह शूलों से प्रहार किया। राम ने उनके शूलों को चौदह बाणों से काट दिया। तदनन्तर श्रीराम ने बाण से प्रहार किया। राक्षस प्राण त्यागकर गिर गये। उन्हें मरवाकर पुनः शूर्पणखा ने रोते हुए खर से सब बता दिया। बिशि कहता है कि उसने तब नाना प्रकार की प्रतिज्ञा की। ११

अष्टम छान्द—खर-दूषण-त्रिशिरा-बध

राग-पाहाड़िआ केदार

भग्नीर मुखु शुणि बचन, खर बोइला कुपित मन ।
बोलइ आज शत्रु होइले नेबि जीबन जे ॥
एमन्त बोलि चढ़िले जान, चउद सस्र असुर सैन्य ।
संगे दूषण त्रिशिरा घेनि बेढ़िला बन जे ॥
देखि श्रीराम लक्ष्मणंकु कहन्ति जे ।
देख असुर सैन्य बेढ़ि पड़न्ति हे ।
तुम्भे एथकु भय न कर । जिबे एमाने शमनपुर ।
देख दक्षिण भुज आम्भर नृत्य करइ हे ॥ १ ॥
सीतांकु गिरिक्रोट भितरे रखिण तुम्भे जगदुआर ।
आम्भ चरण शपथ नोहिबटि बाहार हे ।
आज मुनिंकि अभय बर, देबि दण्डका बन भितर ।
देखन्तु आज मो पराक्रम सकळ शूर जे ।
शुणि सानुज सीतांकु घेनिले जे ।
गिरि गुहारे रखि द्वार जगिले से ॥
श्रीराम बीर बेश होइले । श्रीअंगे हेमसेन्हा नाइले ।
कोदण्ड तूण घेनिण बेगे बाहार हेले जे ॥ २ ॥

छान्द ८—खर-दूषण-त्रिशिरा का वध

राग—पहाड़िया केदार

बहन के मुख की बात सुनकर खर ने क्रोधित होकर कहा कि आज शत्रु के होने पर मैं उसके प्राण ले लूँगा । इस प्रकार कहते हुए वह रथ पर चढ़ गया । चौदह सहस्र असुरवाहिनी के साथ में दूषण तथा त्रिशिरा को लेकर उसने वन को घेर लिया । यह देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा, देखो ! असुर-सेना घिर आई है । तुम इससे भयभीत मत हो । यह लोग यमपुर को जाएँगे । देखो, हमारी दक्षिण भुजा फड़क रही है । १ सीता को पर्वत की गुफा में रखकर तुम द्वार की रक्षा करना । हमारी चरणों की शपथ है तुम बाहर मत आना । आज दण्डकारण्य के भीतर मैं मुनियों को अभय वर प्रदान करूँगा । आज समस्त वीर मेरे पराक्रम को देखें । यह सुनकर लक्ष्मण सीता को साथ ले गये और उन्हें गिरि गुहा में रखकर द्वार की रक्षा करने लगे । अपने शरीर को वीरवेश में सजाकर तथा स्वर्णिम प्रत्यञ्चा अपने श्रीअंग में डालकर

कोदण्डे राम देइण गुण। कन्धे भिड़िले अक्षय तूण।
देखिण खर सैन्य संगले पेषे दूषण जे॥
असुर गण घेनि दूषण, श्रीराम संगे कलाक रण।
राम बाणरे सैन्य सहिते हारिला प्राण जे।
घर रुहाइ से त्रिशिरा असुर जे।
देखि रामकु बृष्टि कलाक शर जे।
रामर शर अग्नि प्रखर, दनुज कि से तृण निकर।
तिनि काण्डरे राम काटिले त्रिशिरा शिर जे॥ ३॥
देखिण खर बीर सत्वर बिन्धिला राम अंगकु शर।
कनक धनु सेन्हा काटिला रघुबीरर जे।
अगस्ति देला धनुरे गुण, देइण राम संधिले बाण।
हृदरे पड़ि पलक मात्रे हारिला प्राण जे॥
राम असुर कुळ काळ होइले जे।
तिनि काण्डरे समस्त क्षयकले जे।
दण्डकारण्यु ऋषि अइले।
समस्ते एक रुण्ड होइले।
रामचन्द्रंकु समस्त मुनि कल्याण कले जे।
गिरि गुहारु हेले बाहार।

श्रीराम वेग से कोदण्ड तथा तूणीर लेकर बाहर निकल पड़े। २ श्रीराम ने कोदण्ड पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर कन्धे पर अक्षय तूणीर धारण किया। यह देखकर खर ने सेना के साथ दूषण को भेजा। राक्षसों को लेकर दूषण ने श्रीराम के साथ युद्ध किया तथा राम के बाणों से वह सेना के सहित मारा गया। दैत्य त्रिशिरा ने राम को अपने स्थान पर देखकर उन पर बाणों की वर्षा की। राम के बाण रूपी प्रचण्ड अग्नि के लिए यह राक्षस तृणसमूह के समान थे। राम ने तीन बाणों से त्रिशिरा के शिर काट दिये। ३ वह देखकर पराक्रमी खर ने श्रीराम के अग पर शर सन्धान किया। उसने रघुवीर के स्वर्ण-धनुष की प्रत्यञ्चा काट दी। तब श्रीराम ने अगस्ति के दिये हुए धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर बाण छोड़ा जिसके हृदय में लगने से पलमात्र में ही उसके प्राण निकल गये। राक्षस-कुल के काल बनकर श्रीराम ने तीन बाणों से ही सबका विनाश कर दिया। दण्डक वन से आकर सारे ऋषि एकत्रित हो गये। समस्त ऋषिमण्डल ने श्री रामचन्द्र को आशीर्वाद दिया। सीता को लेकर

सीतांकु घेनि लक्ष्मण बीर ।
देखिले कुढ़ कुढ़ होइण मले असुर जे ।। ४ ।।
अमर घेनिण सुनासीर ।
कुसुम बृष्टि कलेक शिर ।
एहि समये जानकी देखिले रघुबीर जे ।
महा आनन्दे कलेक आलिंगन जे ।
पुण पुण देखन्ति अबयब मान जे ।
बोलन्ति देब जेते असुर ।
संग्रामे ए त अटन्ति शूर ।
एका होइण केमन्त करि कले निधन जे ।। ५ ।।
मुनि मानंकु देइ मेलाणि ।
कुटीरे बिजे कोदण्ड पाणि ।
आनन्द होइ रहिले तहिँ तिनि पराणी जे ।।
कम्पन गलाक सेहि क्षण ।
रावण आगे जोड़िला पाणि ।
भो देब खर सहिते मले असुर श्रेणी जे ।।
राम लक्ष्मण दशरथ नन्दन जे ।
सगे बनिता घेनि अछन्ति बन जे ।
सूर्पणखा नासा श्रबण, छेदन देखि खर दूषण ।
त्रिशिरा आदि करन्ते रण हारिले प्राण जे ।। ६ ।।

पराक्रमी लक्ष्मण पर्वत की गुफा से बाहर निकल आये । उन्होंने तड़प-तड़पकर मरे हुए राक्षसों को देखा । ४ देवताओं को लेकर इन्द्र ने (श्रीराम के) शिर पर पुष्पों की वर्षा की । इस समय रघुवीर राम ने सीता को देखकर बड़ी प्रसन्नता से उनका आलिंगन किया । वह बारम्बार उनके अंगों का निरीक्षण करते हुए कहने लगी, हे देव ! यह जितने भी असुर हैं, वे रण मे पराक्रमी होते हैं । आपने एकाकी होने पर भी उनका वध किस प्रकार कर दिया ? ५ मुनियों को विदा करके कोदण्डपाणि श्रीराम कुटी में विराजमान हुए और वहाँ तीनों प्राणी बड़े आनन्द से रहने लगे । उसी समय कम्पन ने जाकर रावण से हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! खर के सहित असुरदल मारा गया । दशरथनन्दन राम और लक्ष्मण स्त्री को साथ लेकर दण्डक वन में उपस्थित है । उन्होंने शूर्पणखा के नाक-कान काट दिये जिसे देखकर खर-दूषण और त्रिशिरा आदि युद्ध करते हुए

संग्रामे ताकु नाहिँ ना सम ।
से राम आम दनुज जम ।
जय नोहिब ता संगे तुम्भे कले संग्राम जे ।
कामिनी तार रति कि सम ।
कन्दर्प प्राय काम से राम ।
जीइब नाहिँ ता संगु जेबे कामिनी नेब हे ।
जेबे उपाय बळे हरिबु नारी हे ।
तेबे ताहा दुःखरे सेजिब मरि हे ।
रावण मने बिचार करि ।
केमन्ते आणिबि तार नारी ।
बोलइ बिशि तुटिला लंकपतिर शिरी जे ॥ ७ ॥

नवम छान्द

राग–माटिआरी

मराइण खर बीर से सूर्पणखा चउद सस्र असुर ।
रावण छामुरे कान्दिण कहइ नासिका ।
देखाइ तार, कि आहे भाइ ॥ १ ॥
दशरथर नन्दन, कि आहे भाइ ।

मृत्यु को प्राप्त हुए । ६ संग्राम में राम की समता करनेवाला कोई नहीं है । वह हम राक्षसों के लिए यमराज है । उनके साथ आपके युद्ध करने पर भी विजय प्राप्त नहीं होगी । उनकी स्त्री की समता रति भी क्या करेगी ? वह राम भी कामदेव के समान है । यदि उसकी स्त्री ले लें तो वह जीवित नहीं रहेगा । यदि आप किसी उपाय के बल से उसकी स्त्री का हरण कर लें तो वह उसके दुःख से मर जायेगा । रावण मन में विचार करने लगा कि उसकी स्त्री को किस प्रकार लाया जाये । बिशि कहता है कि लंकापति रावण की श्री नष्ट हो गयी । ७

छान्द—९

राग–भटियारी

पराक्रमी खर तथा चौदह सहस्र राक्षसों का वध कारके शूर्पणखा अपनी नाक दिखाती हुई रावण के समक्ष रोकर बोली, हे भाई ! दशरथ

रहिअछि ता आस्थान ।
संगते कामिनी अछइ ताहार द्वितीय लक्ष्मी समान ॥ २ ॥
देखिबाकु ताकु गलि, कि आहे भाइ ।
किछिहिँ दोष न कलि ।
बिना दोषे नासा श्रबण काटिला ।
कान्दि खरकु कहिलि ॥ ३ ॥
शुणि करि खर गला, कि आहे भाइ ।
ता संगे समर कला ।
त्रिशिरा दूषण सहिते चउद सस्र असुर माइला ॥ ४ ॥
क्षितिरे जेतेक बीर, कि आहे
भाइ, आबर शूर असुर ।
समस्ते एक होइ ताहा
संगरे हारिबे कले समर ॥ ५ ॥
कळि नुहे तार बळ, कि
आहे भाइ, जे सने जळधिजळ ।
बज्र समान ताहार काण्डमून,
जिणन्ता नाहिँ भूतळ ॥ ६ ॥
संगते कामिनी तार, कि
आहे भाइ, नाहि नाग सुर नर ।
ब्रह्माण्ड भितरे खोजिले
न थिबे ताहार प्राय सुन्दर ॥ ७ ॥

के पुत्र उस स्थान पर रहते हैं। उनके साथ द्वितीय लक्ष्मी के समान स्त्री है। १-२ हे भाई ! मैं उसे देखने को गई। कोई अपराध भी नही किया। बिना किसी दोष के उन्होंने मेरे नाक-कान काट दिए। मैंने रोते हुए खर को बताया। ३ सुनते ही खर ने जाकर उसके साथ संग्राम किया। उस राम ने त्रिशिरा तथा दूषण के सहित चौदह सहस्र राक्षसों को मार डाला। ४ हे भाई ! पृथ्वी पर जितने भी शूरवीर राक्षस हैं, वह सब यदि इकट्ठे होकर उससे युद्ध करें तो भी हार जायेंगे। ५ हे भइया ! उनके पराक्रम का आकलन नहीं हो सकता, जिस प्रकार सागर का जल मापा नहीं जा सकता। उसके बाणों की नोंक वज्र के समान है। उसे जीतनेवाला पृथ्वी पर नही है। ६ हे भाई ! उसके साथ जो स्त्री है, उसके समान सुर-नर-नाग में भी नहीं है। इस ब्रह्माण्ड के भीतर खोजने पर भी

तो पुरे जेते सुन्दरी, कि आहे भाइ ।
दिशिबे ता परिचारी ।
आणि पारिले लंका शोभा दिशिब ।
हेब तोर मनो हारी ।। ८ ।।

एते बोलि मुण्ड कोड़ि, से ।
सूर्पणखा, भुमिरे कान्दिण गड़ि ।
प्रतिज्ञा करिण बाहार होइला ।
हेम रहुबर चढ़ि से दशानन ।। ९ ।।

मारीच पाशकु गला से दशशिर ।
सिन्धु कूळरे भेटिला ।
श्रीराम चरित कहन्ते ताहार मनरे भय होइला ।। १० ।।

रामर चरित शुण, हे दशानन, बाळुत काळर गुण ।
मोर जननी ताड़काकु मारिला नेला सुबाहुर प्राण ।। ११ ।।

हाबोड़ा शरे माइला, हे लकेश्वर ।
वृषभ बोलि तड़िला ।
एते दूरे आसि पड़िण जिइलि से दिनु भय होइला ।। १२ ।।

एक दिने मृग हेलि, हे लंकेश्वर, पचबटीरे भेटिलि ।
संग असुर मानंकु मराइण, पळाइ तहुँ अइलि ।। १३ ।।

उसके समान सुन्दर कोई नहीं होगी । ७ हे भाई ! तुम्हारे महल में जितनी भी सुन्दर स्त्रियां हैं, वे सब उसकी दासियाँ लगेंगी । यदि तुम उसे लंका में ला सके, तो उसकी शोभा देखते ही तुम्हारा मन खो जायेगा । ८ इतना कहकर सिर पीटती हुई वह शूर्पणखा रोते-रोते पृथ्वी पर गिर पड़ी । तब रावण प्रतिज्ञा करके सोने के रथ पर चढ़कर निकल पड़ा । ९ वह दशानन मारीच के पास गया । सागर तट पर उससे भेंट हो गयी । श्रीराम का चरित्र-वर्णन करने से उसका मन भयभीत हो गया । १० हे दशानन ! राम का चरित्र सुनो । उस बालक में तो काल के गुण हैं । उसने मेरी माता ताड़का को मार डाला और सुबाहु के प्राण भी ले लिये । ११ हे लंकेश्वर ! उसने मुझ पर हाबोड़ा नामक बाण से प्रहार किया । बैल समझकर मुझे खदेड़ दिया । मैं इतनी दूर आकर गिरा और बच गया । उसी दिन से मुझे भय उत्पन्न हो गया है । १२ हे लंकेश्वर ! एक दिन मैं हिरन बना । पंचवटी में राम से भेंट हुई । अपने साथ के राक्षसों को मरवाकर मैं वहाँ से भाग आया । १३ हे लंकेश !

हराइबु लंकशिरी, हे लंकेश्वर, ता संगे हेले बइरी ।
राक्षस करि गोटिए न रखिब पेषिब शमन पुरी ॥ १४ ॥
मोर बोल एबे कर, हे
दशशिर, ताहार नारी न हर ।
मुहिँ नाश जिबि तुहि
नाश जिबु, ता संगे हेले बइर ॥ १५ ॥
शुणि मारीच उत्तर, से
दशशिर, क्रोधे कम्पइ शरीर ।
बोलइ बिशि अधरे दन्त
चापि कहइ ताकु उत्तर ॥ १६ ॥

दशम छान्द

राग–भाटिआरी पड़िताळ

मारीच मुखरु शुणि बिशपाणि क्रोधे कहइ बचन ।
कह मुँ काहाकु रणे जिणि नाहिँ ए त्रयोदश भुबनरे ।
एबे कर तु मोहर बुद्धि ।
रत्न मृग होइबु अबधि ।
राम आश्रम निकटे चरुथिबु देखि लोभाइबे बिधिरे ॥ १ ॥

उसके साथ शत्रुता करने से लंका का वैभव नष्ट हो जायेगा। एक भी राक्षस को वह नहीं छोड़ेगा। वह सबको यमपुर भेज देगा। १४ हे दशानन ! इस समय मेरा कहना मानकर उसको स्त्री का हरण मत करो। उसके साथ वैर हो जाने पर मैं नष्ट हो जाऊँगा। और तुम भी मारे जाओगे। १५ मारीच का उत्तर सुनकर दशानन का शरीर क्रोध से काँपने लगा। बिशि कहता है कि दांतों से अधरों को दबाकर उसने मारीच को उत्तर दिया। १६

छान्द—१०

राग–भटियारी पड़ताल

मारीच के मुख से इस प्रकार सुनकर बीस भुजाओं वाला रावण कुपित होकर बोला, अरे ! बोल, इस चतुर्दश भुवनों में मैंने युद्ध में किसे नहीं जीता है ? इस समय तुम मेरा कहा हुआ उपाय करो। शीघ्र ही तुम रत्नमृग बन जाओ और राम के आश्रम के निकट इस प्रकार चरते रहो कि देखते ही वह लुब्ध हो जायँ। १ राम तुम पर ललचाकर

राम तोते लोभ करि गोड़ाइले बहु दूर घेनि जिबु ।
लक्ष्मण त्राहि जानकी त्राहि बोलि उच्च स्वररे डाकिबुरे ।
तहिँ अबा सिना तु मरिबु ।
मोर आज्ञा जेबे न करिबु ॥ २ ॥
खड़्ग घेनि हाणिबि तोर शिर ।
एहि क्षणि कि करिबु रे ।
मने बिचारिला मारीच असुर निश्चय हेब मरण ।
एहा हातुँ राम हाते प्राण गले ।
होइबि सिना कारण जे ।
बोले मारीच शुण रावण ।
तोर निकटे हेब मरण ।
तुम्भे आसु थाअ मुँ एबे जाउछि ।
होइबि हेम हरिण हे ॥ ३ ॥
शुणि रावण आलिंगन करिण रथुबरे बसाइला ।
आकाश मार्गरे घेनि आसि ताकु पंचबटीरे छाड़िला जे ।
देखि मारीच राम आश्रम ।
शोभा दिशुछि रम्य उद्यान ।
कदम्ब कर्णिकार बेढ़ सुन्दर ।
दिशइ ता अनुपम हे ॥ ४ ॥

यदि पीछा करें तो उन्हें बहुत दूर ले जाना । फिर त्राहि लक्ष्मण ! त्राहि जानकी ! कहकर ऊँचे स्वर से चिल्लाना और तभी तुम प्राण त्यागना । यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे तो मैं इसी क्षण खड्ग लेकर तेरा शिर काट दूँगा । फिर क्या करोगे ? मारीच ने मन में विचार किया कि यह असुर निश्चय ही मारेगा । फिर इसके हाथ से क्यों ? राम के हाथों प्राण त्यागने पर मेरा निस्तार हो जायेगा । फिर मारीच ने कहा, अरे रावण ! सुन ! तेरी मृत्यु भी अब निकट है । तुम उधर आओ । मैं अब स्वर्ण-मृग बनने जा रहा हूँ । २-३ यह सुनकर रावण ने उसका आलिंगन करके रथ पर बैठा लिया और आकाश-मार्ग से लाकर उसे पंचवटी में छोड़ दिया । मारीच ने श्रीराम का आश्रम देखा । मनोरम उद्यान की शोभा दर्शनीय थी । कदम्ब और कनेर की बाड़ अनुपम सुन्दर दिखाई दे रही थी । ४ रावण से इस प्रकार कहकर

एमन्त कहि ताकु देखाइ ।
देइ लुचिला बन भितर ।
मारीच दिव्य हेम मृग ।
होइला रावणेश्वर हितर जे ।
श‍ृङ्ग मणि खुरा बइडूर्ज्य ।
मुख माणिक्ये होइछि उज ।
नयन नीळमणि पेट ।
रजत मरकत प्राय लाञ्ज जे ॥ ५ ॥

कान्ति प्रबाळ दिव्य हेम ।
सर्बाङ्ग बनकु करे उदित ।
पेण्डि पेण्डि होइ तनु जाक ।
तार मुकुताचय बिदित जे ।
पुण क्षेपइ पुण चरइ ।
पुण से अबयब देखाइ ।
नानारीतिरे नाना गति करन्ते ।
के अबा नोहिब मोहि जे ॥ ६ ॥

राम आश्रमर निकटे चरन्ते ।
पड़िला जानकी दृष्टि ।
कुसुम बनरु कुसुमकु
तोळुथिले जे । पक्व बिम्बोष्ठी जे ।

उसको एक झलक दिखाकर वह वन में छिप गया । रावण के लिए मारीच दिव्य स्वर्ण-मृग बन गया । उसके सीग मणि के, खुर बैदूर्य के थे । उसका मुख माणिक्य-सा चमक रहा था । उसके नेत्र नीलमणि के, पेट चाँदी का तथा पूँछ मरकत के समान थी । ५ उसकी कान्ति प्रवाल के समान थी । दिव्य स्वर्णिम उसका सर्वाङ्ग वन को देदीप्यमान कर रहा था । उसके सम्पूर्ण शरीर के धब्बे मुक्ता के गुच्छों के समान लग रहे थे । वह कभी छलाँग मारता और कभी चरने लगता था । फिर अपने अंगों को दिखाकर अनेक प्रकार से चहलकदमी करते हुए किसका मन नहीं मोहता था । ६ राम के आश्रम के निकट चरते हुए उस पर जानकी की दृष्टि जा पड़ी । वह पुष्प-वन में पुष्प तोड़ रही थीं । उनके ओष्ठ पके हुए बिम्बा-फल के समान थे । मृग ने उनकी बुद्धि

हरिला मृग तांकर मति ।
करुअछि से बिबिध गति ।
आहे आर्य्यपुत्र आस आस
देख ए कनक मृग गति हे ॥ ७ ॥

शुणिण राम लक्ष्मण
धनुशर घेनिण हेले बाहार ।
देखिले विचित्र मृग चरु
अछि कुसुम बन भितर जे ।
देखि लक्ष्मण रामंकु कहे ।
देब मारीच एमन्त होए ।
न जाणि असुर मानंक कपट
लागिला त बड़ भये जे ॥ ८ ॥

शुणि जानकी बोलन्ति हे
लक्ष्मण एहा बिचार न कर ।
धरि आणिले से भरतंकु देबा
न धरि पारिले मार हे ।
राम शुणि सीउकार कले ।
कोदण्डरे गुण बसाइले ।
बोले बिशि सीता लक्ष्मणे
जगाइ राम ताकु गोड़ाइले जे ॥ ९ ॥

हर ली । वह नाना प्रकार की क्रीडा कर रहा था । (सीता ने कहा—) हे आर्यपुत्र ! इधर आकर इस स्वर्ण-मृग की लीला तो देखो । ७ यह सुनकर राम और लक्ष्मण धनुष-बाण लेकर निकल पड़े । उन्होंने पुष्प-वन में अद्भुत हिरण को चरते देखा । उसे देखकर लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा, हे देव ! ऐसा तो मारीच ही है । राक्षसों का छल समझ में नहीं आता मुझे तो बड़ा डर लग रहा है । ८ यह सुनकर जानकी बोली, "हे लक्ष्मण ! ऐसा विचार मत करो । पकड़कर ले आने पर मैं इसे भरत को दूंगी । यदि पकड़ में न आए तो इसे मार दो ।" ऐसा सुनकर राम ने स्वीकृति दे दी । उन्होंने धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई । बिशि कहता है कि सीता की रक्षा लक्ष्मण पर छोड़कर श्रीराम ने उसका पीछा किया । ९

एकादश छान्द

राग–मुखारी पटताळ

हेम हरिणी धीरे धामन्ते सुन्दर धरणी ।
धरु धरु करु मृग पळाउछि गोड़ाउछन्ति रघुमणि ।। १ ।।
केते बेळे मृग दृष्टि कि न दिशे केते बेळे दृष्टि गोचर ।
केते बेळे दूरे केते बेळे पाशे रामंकु हेला अगोचर ।। २ ।।
रामंकु बहुत दूर घेनि जाइ गला अदृश्य होइ काहिँ ।
फुटिण राम तरुतळे बसन्ते पुणि छामुरे हेला जाइँ ।। ३ ।।
मारिबि बोलि मनरे बिचारिण कोदण्डरे काण्ड सन्धिले ।
बज्राघात प्राय शबद शुभिला जेते बेळे शर बिन्धिले ।। ४ ।।
लक्ष्मण त्राहि सीता त्राहि बोलिण राम स्वरे उच्चे डाकिला ।
मृग देह छाड़ि निज तनु धरि प्राण हारि तळे पड़िला ।। ५ ।।
देखि रामचन्द्र चकित होइण बोलन्ति हेला परमाद ।
मृगदेह छाड़ि असुर देहरे किरीट कुण्डळ अंगद ।। ६ ।।

छान्द—११

राग–मुखारी पटताल

पृथ्वी पर स्वर्ण-मृग धीरे-धीरे छलाँग लगा रहा था। हाथ से पकड़ते-पकड़ते मृग भाग जाता था। रघुकुल में मणि के समान श्रीराम उसका पीछा कर रहे थे। १ कभी वह दिखाई देता और कभी आँखों से ओझल हो जाता था। कभी दूर और कभी निकट आकर वह राम को दिखाई नहीं दिया। २ राम को बहुत दूर ले जाकर वह कहीं अदृश्य हो गया। थककर राम के वृक्ष के नीचे बैठने पर वह पुनः सामने जा पहुँचा। ३ इसे मारेंगे, इस प्रकार मन मे विचार कर श्रीराम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। जब उन्होंने बाण छोड़ा तो वज्राघात के समान शब्द सुनाई पड़ा। ४ वह राम के स्वर में बड़ी तीव्रता से चिल्लाया, "हे लक्ष्मण ! रक्षा करो ! हे सीते ! बचाओ !" तदनन्तर मारीच मृगदेह त्याग अपना शरीर धारण कर प्राणों को छोड़कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। ५ उसे देखकर श्रीराम आश्चर्यचकित होकर बोले कि मुझसे प्रमाद हो गया। मृग-शरीर त्याग करने पर उस असुर के शरीर पर किरीटकुण्डल तथा बाजूबन्द दीख पड़े। ६ (श्रीराम विचार करने लगे) यह वाणी सुनकर हमारी आवाज

ए बाणी शुणि आम्भर प्राय मणि आसइ न पुण लक्ष्मण ।
छाड़ि अइले सीतांकु न पाइबि कि बोइला दुष्ट दारुण ॥ ७ ॥
एहा बिचारन्ते बाम भुज बाम नयन तांकर स्फुरिला ।
बोले बिशि राम पच्छरे गोड़ाइ शृगाळ घोर ध्वनि कला ॥ ८ ॥

द्वादश छान्द

राग—मधुकेरी पड़िताळ

लक्ष्मण त्राहि जानकी त्राहि बाणी शुणिण तरुणी मणि ।
चकित होइ ठाकुराणी बोलन्ति तुम्ह भ्रातांकर बाणी हे ।
लक्ष्मण ! बिपत्ति पड़िला हे ।
एहा शुणि मोर सर्ब अबयबुं जीबन छाड़िला हे ॥ १ ॥
शीघ्र होइ चळ धनुशर धर बिळम्ब न कर हे ।
भ्रातांकु तुम्भर साहा होइ एबे कर जाइ प्रतिकार हे ।
लक्ष्मण ! शुणिल नाहिँ कि हे ।
केउँ क्रोध धरि मने कि बिचारि न जाअ काहिँकि हे ॥ २ ॥
साबत जननी सुत सिना तुम्भे आसिछ कपटे हे ।
भ्राताठारे जेते सेनेह सबु से पड़िगलाणि त बाटे हे ।

समझकर कहीं लक्ष्मण न आ जाय । सीता को छोड़कर आने से फिर वह न मिलेगी । इस दुष्ट ने कैसी दारुण वाणी बोली । ७ यह विचार करते ही श्रीराम की बायीं भुजा तथा बायाँ नेत्र फड़कने लगा । बिशि कहता है कि राम को पीछे से शृगाल विकट ध्वनि करते हुए खदेड़ने लगा । ८

छान्द—१२

राग–मधुकेरी पड़ताल

तरुणियों में मणि के समान देवी सीता "लक्ष्मण-त्राहि और जानकी-त्राहि" की आवाज सुनकर चकित होकर लक्ष्मण से बोली कि यह तुम्हारे भाई की आवाज है । हे लक्ष्मण ! बिपदा आ पड़ी है । इसे सुनकर मेरे सम्पूर्ण अंगों से जीवनी-शक्ति निकल गई है । १ तुम धनुष-बाण लेकर अविलम्ब शीघ्र ही जाओ और अपने भाई की सहायता का उपाय करो । अरे लक्ष्मण ! क्या तुमने सुना नहीं ? तुम्हारे मन में कौन सा क्रोध है और क्या विचार कर रहे हो ? जाते क्यों नहीं ? २ तुम तो सौत के पुत्र हो । तुम छल से आये थे । भाई से जो भी स्नेह था

लक्ष्मण ! भाळु थिल जाहा हे ।
मानस पूरिला दइब बशरु होइलाक ताहा हे ॥ ३ ॥
सउमित्री भणि शुण ठाकुराणी नुहसि बिकळ गो ।
रामंकु बिपत्ति देबाकु नाहान्ति बीर केहि रबितळ गो ।
सुमुखि ! न कर से चिन्ता गो ।
मृग घेनिण एहि क्षणि आसिबे बीर बळबन्ता गो ॥ ४ ॥
सती शुणि पुणि बोले कटु बाणी एमन्त जाणु कि रे ।
राम अन्तरे मुहिँ तोते भजिबि एमन्त मणु कि रे ।
लक्ष्मण ! न जाउ मो पाशुं रे ।
राम अन्ते मोते भारिजा करिबु एमन्त बिळसु रे ॥ ५ ॥
किबा मोते नेइ भरतकु देइ भुञ्जिबु बिभूति रे ।
मुं पुणि जीबन धरि धरणी रे करिबि कि अन्य पति रे ।
लक्ष्मण ! छुइँ भूमि श्रुति जे ।
धनुशर धरि बाहार होइले होइ कोप मूर्त्ति जे ॥ ६ ॥
राम मोर पिता तुम्भे मोर माता कहिल अनीति गो ।
दइब प्रतिकूळर समयरे हुअइ त एन्हे रीति गो ।
प्रभुंक ! आज्ञा पाळिथिलि गो ।
जाउअछि मुहिँ मोर दोष नाहिँ थाअ मइथिळी गो ॥ ७ ॥

वह मार्ग में ही छूट गया । अरे लक्ष्मण ! तुम जो भी सोच रहे थे; भाग्यवश तुम्हारा वह मनोरथ पूर्ण हो गया । ३ सुमित्रानन्दन लक्ष्मण ने कहा, हे देवी ! सुनो । तुम व्याकुल मत हो । राम को दुःख देनेवाला कोई भी वीर दिनकर के नीचे (भूमण्डल पर) नही है । हे सुमुखि ! तुम इसकी चिन्ता न करो । पराक्रमी बलवान श्रीराम मृग को लेकर अभी आते होंगे । ४ सती सीता ऐसे वचनों को सुनकर पुनः कठोर वाणी बोली । क्या तू समझता है कि राम से विलग होने पर मैं तुझे चाहने लगूंगी । लक्ष्मण ! तू मेरे पास से नहीं जा रहा । तू ऐसा सोच रहा है कि राम के न रहने पर मुझे अपनी पत्नी बनायेगा । ५ अथवा तू मुझे लेकर भरत को प्रदान करके वैभव का भोग करेगा । मैं क्या जीते जी पृथ्वी पर अन्य पति का वरण करूंगी ? लक्ष्मण ने पृथ्वी को छूकर अपने कान पकड़ लिये तथा क्रुद्ध होकर धनुष-बाण उठाकर वहाँ से चल दिये । ६ राम मेरे पिता और तुम माता हो । तुमने अनीतिपूर्ण वाक्य कहे हैं । भाग्य के प्रतिकूल होने पर ऐसा ही होता

एमन्त बोलि बनदेबी मानंकु कराइले साक्षी हे ।
आम्भ बाहुड़िबा जाए निश्चे तुम्भेमाने यांकु थिब रखि गे ।
जे दिगे । श्री रामंक स्वर जे ।
बोले बिशि सेहि दिगकु लक्ष्मण होइले बाहार जे ॥ ८ ॥

त्रयोदश छान्द—सीता चोरी

रामदासंक कोइलि बृत्ते

कइतब बेशे दशशिर । छता कमण्डळु बेनि कर ।
कषा बसन शिषा पइता । अंगरे मण्डिछि द्वादश चिता ।
राबणेश्वर होइ त्रिदण्डी । एहि बेशे नेब सीतांकु भण्डि ॥ १ ॥
पर्णशाळा द्वारे परबेश । मइथिळींकु देखि हरष ।
पचारइ तुम्भर के बर । एमन्त बने किपाँ कल घर ।
तुम्भर प्राय सुन्दरी नारी । घेनि किपाइँ हेले बन चारी ॥ २ ॥
शुणि जानकी संतोष मन । भिक्षुक देखि देले आसन ।

है। मैं तो स्वामी की आज्ञा का पालन कर रहा था। हे मैथिली! मैं जा रहा हूँ। इसमें मेरा दोष नहीं है। ७ इस प्रकार कहते हुए उन्होंने वन-देवियों को साक्षी बनाकर कहा कि हमारे लौटने तक निश्चय ही आप लोग इनकी रक्षा करती रहना। बिधि कहता है कि जिस दिशा से श्रीराम का स्वर आया था, लक्ष्मण उसी दिशा में चल दिये। ८

छान्द १३—सीता-हरण

रामदास की कोइली की धुन

छद्म-वेश में दशानन ने दोनों हाथों में छाता और कमण्डल लेकर काषाय वस्त्र तथा शिखा-सूत्र धारण कर लिये। बारह तिलक लगाकर उसने अपने शरीर को सजाया। इसी वेश में सीता को भरमा कर ले जाने के लिए रावणेश्वर त्रिदण्डी बन गया। १ वह पर्णशाला के द्वार पर प्रविष्ट हुआ। मैथिली को देखकर उसने प्रसन्नता से पूछा कि आपका पति कौन है? इस प्रकार आपने वन को निवासस्थान क्यों बनाया? आपके समान सुन्दर स्त्री को साथ लेकर वह बनवासी क्यों बने? २ यह सुनकर जानकी ने प्रसन्नचित्त से भिक्षुक को देखकर आसन प्रदान किया। जल-फल तथा मूल लाकर दिये तथा उससे

जळ फळ मूळ आणि देले । समस्त बृत्तान्त तांकु कहिले ।
बोलन्ति आसन्तु मोर पति । प्रति दिन पूजा करिबे जति ॥ ३ ॥
शुणि बोलन्ति दुष्ट राबण । जाणिलि तुम्भ पतिर गुण ।
जेउँ जुबती जगते शोभा । जाहा देखिले मुनि हेब लोभा ।
ताहाकु रखि अछि बनरे । तिळेहेँ भीति नाहिँ मनरे ॥ ४ ॥
आगो आस आस बरांगने । कष्ट न पाअ तुम्भे ए बने ।
पाप दशारु थिला ए जोग । सुबर्णपुरी तु करिबु भोग ।
मोहर होइबु तु बनिता । राबण मुहिँ बिश्रबा मो पिता ॥ ५ ॥
तार ए बचन शुणि सती । मने पाइले से बड़ भीति ।
दम्भ होइ बोलन्ति बचन । श्वान भक्षिपारे सिंह अशन ।
अइले राम प्राणे मारिबे । जतिकि उपरोध न करिबे ॥ ६ ॥
शुणि असुर कुपित होइ । निज रूप सीतांकु देखाइ ।
भय कराइ पुणि कहिला । रामकु चाहान्ते बळे धइला ।
नेइण रथरे से बसाइ । कान्दुछन्ति सती बिकळ होइ ॥ ७ ॥
राम राम लक्ष्मण लक्ष्मण । राबा उच्चे करन्ति कारुण्य ।

उन्होंने समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। वह कहने लगीं कि मेरे स्वामी को आ जाने दो। हे यती ! वह प्रतिदिन आपकी पूजा करेंगे। ३ यह सुनकर दुष्ट रावण ने कहा कि मैं आपके पति के गुण समझ गया। जो युवती संसार की शोभा है, जिसे देखकर मुनि भी लुभा जायेंगे उसे उसने वन में रखा है। उसके मन में तिल मात्र भी भय नहीं है। ४ हे वराङ्गने ! आओ। तुम इस वन में दुःख न उठाओ। यह योग तो पाप दशा के कारण ◌ा। अब तुम स्वर्णपुरी के वैभव का भोग करोगी। तुम मेरी पत्नी बन ◌ो। मैं रावण हूँ और विश्रवा मेरे पिता हैं। ५ उसके ऐसे वचन सुनकर सती सीता को मन में बहुत डर लगा। वह बोलीं कि तू अभिमान की वाणी बोल रहा है। क्या सिंह के भोजन को कुत्ता खा सकेगा ? राम आने पर तुझे जान से मार देंगे। वह तेरे यती होने का भी विचार नहीं करेंगे। ६ यह सुनकर यती ने कुपित होकर सीता को अपना रूप दिखाया और डरावनी बातें करने लगा। राम का चिन्तन करती हुई सीता को उसने बलपूर्वक पकड़कर रथ पर बैठा लिया। सती सीता व्याकुल होकर क्रन्दन करने लगी। ७ वह हे राम ! हे लक्ष्मण ! कहकर उच्च स्वर में दुखी हो रही थी। पुष्पों की माला

खसि पड़िला कुसुममाळा । सुबर्णमाळा थिला सती गळा ।
छिड़िण बिचि होइ से गळा । चन्द्र करु अबा सुधा पड़िला ॥८॥

चतुर्दश छान्द—सीतांक शोक

राग—खेमटा

बनगिरि हे लतागिरि । मो कान्त गले मृग मारि ॥ पद ॥
माया कुरंगी देखि, लोभे होइलि सुखी,
कान्ते बोइलि श्रद्धा करि हे ॥ १ ॥
शुणि मोर उत्तर, धरि कोदण्ड कर,
स्वामी मो गले मृग मारि हे ॥ २ ॥
लक्ष्मण त्राहि शुणि, तांकु पेषिलि पुणि,
से गले मोते क्रोधकरि हे ॥ ३ ॥
मोते एका देखिण, भिक्षा मागि राबण,
माया तपस्वी बेश धरि हे ॥ ४ ॥
धरि मोहर कर, बसाइ रहुबर,
मोते नेउछि लंकापुरी हे ॥ ५ ॥
कहिब मो कान्तंकु, मारिबे राबणकु,
मोते आणिबे बेग करि हे ॥ ६ ॥

नीचे खिसक गयी । सती के गले की स्वर्ण-माला भी टूटकर बिखर गयी । लगता था मानो चन्द्रकिरणों से अमृत की बूंदें टपक पड़ी हों । ८

छान्द १४—सीता का शोक

राग—खेमटा

हे वन के पर्वतो तथा लताओ ! मेरे पति मृग को मारने गये हैं । माया के हिरण को देखकर मैं लोभ के कारण आनन्दित हुई । मैंने श्रद्धापूर्वक अपने स्वामी से बता दिया । १ मेरी बात सुनकर हाथ में धनुष लेकर मेरे स्वामी हिरण को मारने चले गये । २ 'लक्ष्मण ! रक्षा करो', ऐसा सुनकर मैंने लक्ष्मण को भेजा, वह भी मुझसे क्रुद्ध होकर गये । ३ मुझे अकेला देखकर रावण मायावी तपस्वी का वेश धारण करके भिक्षा मांगने आया । ४ मेरा हाथ पकड़कर रथ पर बैठाकर वह मुझे लंकानगरी को ले जा रहा है । ५ तुम मेरे स्वामी से कह देना कि वह रावण का

बोले द्विज गोपाळ, सीता होइ
आकुळ, कांदन्ति श्रीराम सुमरि हे ॥ ७ ॥

पञ्चदश छान्द

राग–खण्डिता

चापधारी रघुनाथ गले मृग मारि ।
चाण्डाळ रावण मोते नेउअछि धरि, के कहिबे गो ।
स्वामी केन्हे बारता पाइबे गो ॥ १ ॥
छद्रम कथा जे न जाणन्ति रघुनान ।
छळे मायामृग मारिबाकु गले बन, जोग नाहिँ गो ।
के जाणे कि अबा हेब तहिँ गो ॥ २ ॥
जाणि त न पारि प्रभु मोर बोले गले ।
जगतकरता होइ माया रे भूलिले ।
जीबमाने हे ! शुणिछ कि एड़े माया कर्णे हे ॥ ३ ॥
झुरि झुरि मोर आउ न सरिब दिन ।
झीन बसनिआ नाथ नाचन्ति नयन ।
जिबि काहिँ हे । बंचिबाकु बद्धि दिशु नाहिँ हे ॥ ४ ॥

वध करके शीघ्र ही मुझे ले जायें । ६ गोपाल द्विज कहता है कि सीता व्याकुल होकर श्रीराम का स्मरण करते हुए रुदन कर रही थी । ७

छान्द—१५

राग–खण्डिता

धनुर्धारी राम मृग को मारने गये । दुष्ट रावण मुझे पकड़कर ले जा रहा है । कौन बतायेगा ? मेरे स्वामी को समाचार कैसे मिल पायेगा ? १ रघुनाथजी छल की बात नहीं जानते, वह माया-मृग को मारने के बहाने वन में चले गये । वह इस योग्य नहीं थे । पता नहीं वहाँ क्या हुआ होगा ? २ वह उसे समझ नहीं पाये । वह तो केवल मेरे कहने से चले गये । जगत के कर्ता होकर भी वह माया में भ्रमित हो गये । हे जीवधारियो ! तुम माया के कानों से क्या सुन रहे हो ? ३ मुझ दुःख-क्षीणा के दिन और कैसे बीतेंगे ? झीने वस्त्रों को धारण किये हुए मेरे स्वामी मेरी आँखों में नाच रहे हैं । मैं कहाँ जाऊँ ? बचने का कोई उपाय नहीं दिखाई दे रहा है । ४ नीला तथा स्वर्ण के समान शरीर का देखना अब मेरे

नीळ हेम तनु देखा स्वप्न हेब मोर।
नबीन पंकज मुख होइले अन्तर।
बन गिरि हे। देखिले कहिब चापधारी हे ॥ ५ ॥
निमिषे जे मूर्च्छि मोते न पारन्ति राम।
टळिला नाहिँ सेनेहेँ आणिले से बन।
मोर बोले गो। गोदाबरी कूळे बास कले गो ॥ ६ ॥
ठकपण करि मायामृग देखाइण।
ठकि मोते नेउअछि लंकार राबण।
गोपी भणि हे। देखिले कहिब चाप पाणि हे ॥ ७ ॥

षोडश छान्द

राग-जमक

उच्चस्वरे रोदन करन्ति राम राणी।
बसन्त काळरे जेन्हे कोकिळर बाणी ॥ १ ॥
ए भूमि मध्यरे मुँ जे होइलइँ जात।
क्षत्रिबर हस्त धरि होइलि अनाथ ॥ २ ॥
अजोध्यार राजा जे अटन्ति दशरथ।
तांक राणी कउशल्या पुत्र रघुनाथ ॥ ३ ॥

लिए स्वप्न हो जायेगा। क्योंकि नवविकसित कमल के समान मुख से वियोग हो रहा है। हे वनगिरि ! धनुषधारी राम को देखने पर तुम उन्हें बता देना। ५ जो क्षणमात्र के लिए मुझे छोड़ नही पाते थे, मेरे अटल होने से ही वह मुझे वन में ले आये। मेरे कहने पर ही उन्होंने गोदावरी के तट को निवास बना लिया। ६ ठग-विद्या करके माया का मृग दिखाकर लंका का रावण मुझ ठगकर ले जा रहा है। गोपी कहता है कि सीता ने वन और पर्वतों से कहा कि देखने पर कोदण्डधारी राम को समाचार दे देना। ७

छान्द—१६

राग-यमक

राम की रानी ऊँचे स्वर में रुदन कर रही थी। लगता था जैसे बसन्त ऋतु में कोयल बोल रही हो। १ इस पृथ्वी पर जन्म लेकर मैंने एक श्रेष्ठ पराक्रमी का हाथ पकड़ा। परन्तु फिर भी मैं अनाथ हो गयी। अयोध्या के राजा दशरथ और उनकी रानी कौशल्या के

स्वामी जे देबर मोर गले मृग मारि ।
चाण्डाळ रावण मोते नेउअछि धरि ॥ ४ ॥
सीतांक रोदन पक्षीबर जे शुणिला ।
बोले गोपी रहुबर आगरे मिळिला ॥ ५ ॥

सप्तदश छान्द

पथे भेटि बोले जटायु । राम बनिता तु किपाँ नेउ ।
अधर्मकु तोर नाहिँ डर । चोराइ किपाँ नेउ दशशिर ॥
आजि मुँ पथ छाड़ि न देबि । सीता न छाड़िले रण करिबि ।
एहा बोलिण संग्राम कला । रावणहिँ अनेक जुझिला ॥
रथ भांगिण अश्व सारथि । मारिण सेम्हा काटिला बिकर्त्ति ।
छड़ाइ नेइ भांगिला धनु । क्रोधरे कम्पिला रावण तनु ॥ १ ॥
खण्डा घेनि काटिला चरण । डेणा काटि कला रण भण ।
रण करन्ते सीता खसिले । लता भितरे जाइँण लुचिले ॥ २ ॥
जाणिण तहुँ आणिला धरि । मृगुणी अबा धइला केशरी ।
सीतांकु कोळरे से धइला । आकाशरे क्षेपिण से गला ॥ ३ ॥

पुत्र रघुकुल के नाथ श्रीराम हैं । २-३ मेरे स्वामी और देवर हिरन को मारने गये और यह चाण्डाल रावण मुझे पकड़कर ले जा रहा है । ४ पक्षीराज जटायु ने सीता का क्रन्दन सुना । गोपी कहता है कि वह रथ के समक्ष जा पहुँचा । ५

छान्द—१७

मार्ग में मिलकर जटायु ने कहा कि राम की स्त्री को तू क्यों ले जा रहा है ? तुझे अधर्म का डर नहीं है ? हे दशानन ! तू चुराकर क्यों ले जा रहा है ? आज मैं रास्ता नहीं छोड़ूँगा । सीता को न छोड़ने से युद्ध करूँगा ? ऐसा कहकर उसने युद्ध किया । रावण भी नाना प्रकार से उससे जूझता रहा । जटायु ने रथ को तोड़कर घोड़े और सारथी को मारकर प्रत्यञ्चा को कुतरकर काट डाला और टूटा हुआ धनुष छीन लिया । रावण का शरीर क्रोध से काँपने लगा । १ उसने तलवार लेकर जटायु के पैर तथा पंख काटकर क्षत-विक्षत कर दिया । संग्राम के समय सीता उतरकर लताओं के भीतर जाकर छिप गयी । २ यह जानकर रावण उन्हें वहाँ से पकड़ लाया । मानो हिरनी को सिंह ने दबोच लिया हो । सीता को गोद में उठाकर वह आकाशमार्ग से छलाँग लगाकर

गळा मोतिहार पड़े छिड़ि । केते दूरे पुणि नूपुर पड़ि ।
बामार सर्ब भूषण गण । उत्तरीरे बान्धिले सेहिक्षण ।। ४ ।।
गिरि शिखे कपिराजन चाहिँ । तांक आगकु देले पकाइ ।
किस बोलि फिटाइ देखिले । जतन करि ता रखाइ देले ।। ५ ।।
रावण नेउछि काहा नारी । एमन्त बोला बोलि हेले हरि ।
सिन्धु डेइँण रावण गला । लंका गढ़रे प्रबेश हेला ।। ६ ।।
सीतांकु रखि से निजपुरी । डाकिला सर्ब बिरूपा असुरी ।
सीतांकु मने कराइ भीति । बोलइ बिशि देखाअ बिभूति ।। ७ ।।

अष्टादश छान्द
राग–मुखारी पड़िताळ

बइदेहींकि निज पुरे रखि । असुरी मानंकु बोलइ देखि ।
तुम्भे लो, रख मो निजस्थान । देउथिब मोते बारतामान जे ।। १ ।।
सीतांकु चाहिँ बोलइ बचन । देख लंकागड़ सबु सुबर्ण ।
सजनि ! एबे होइला तोर । खटिथिबे तोते जुबती मोर ।। २ ।।
देख ए जगति अट्टालिमान । शोभा दिशे कोटि कोटि रतन ।
सजनि ! एहा करिबु भोग । बिहि खण्डिला बनबास जोग गो ।। ३ ।।

चला गया । ३ गले की मोतियों की माला टूटकर बिखर गयी । कुछ दूर पर नूपुर गिर पड़े । सीता ने अपने सभी आभूषण उसी समय दुपट्टे में बाँध दिये । ४ पर्वत के शिखर पर कपिराज सुग्रीव को देखकर (वह गठरी) उनके आगे फेंक दी । यह किसकी है, ऐसा कहकर उन्होंने उसे खोलकर देखा और यत्न के साथ उसे रखवा दिया । ५ रावण किसकी स्त्री ले जा रहा है ? वानर लोग इस प्रकार आपस में कहने लगे, तभी रावण समुद्र को लाँघकर लंका दुर्ग में जा पहुँचा । ६ सीता को अपने नगर में रखकर उसने सभी कुरूप राक्षसियों को बुलाकर सीता के मन को भयभीत कराया । बिशि कहता है कि अब आप अपना ऐश्वर्य दिखायें । ७

छान्द—१८
राग–मुखारी पड़ताल

वैदेही को अपने सदन में रखकर राक्षसियों को देखकर (रावण) बोला, "तुम लोग मेरे स्थान की रक्षा करो । मुझे समाचार देती रहना ।" १ [illegible] ोर देखकर कहा इस सम्पूर्ण स्वर्ण-निर्मित लंका दुर्ग को [illegible] ! यह अब तुम्हारा हो [illegible] । युवतियाँ [illegible] । २ इस ज [illegible]

मुँ रावण त्रिभुबन ईश्वर । मोते डरन्ति धाता सुनासीर ।
सजनि ! मोर हुअ जुबती । सुखे भुञ्ज निश्चळा बिभूति गो ।। ४ ।।
पिता पितामह बिष्णु शंकर । एहांकु रावण न जोड़े कर ।
सजनि ! तोते जोड़ुछि कर । कर अनुकम्पा जुबती बर गो ।। ५ ।।
बनबासे पाउथिलु बेदना । तोहर पति मनुष्यहिँ सिना ।
सजनि ! एबे होइबु मोर । दास होइ चापुथिबि पयर गो ।। ६ ।।
रोदन तेजिण बोलन्ति सती । तु छार पामर हेबु मो पति ।
श्रीराम सिंह, अटु तु श्वान । सिंह बळिकरि लोड़ु अशन रे ।। ७ ।।
कोदण्ड काण्ड धरिथान्ते राम । आणन्तु मोते होइ तांकु बाम ।
रावण, तेबे बोलान्तु बीर । चोरि नुहे बीरंकर बेभार ।। ८ ।।
शुणि रावण क्रोधरे बोइला । बरषे आजु अबधि होइला ।
रामंकु, जेबे आणि न देबु । निश्चय मोर ब्यंजन होइबु गो ।। ९ ।।
एमन्त बोलि असुरींकु चाहिँ । घेनि जाअ बोलि देला देखाइ ।
एहाकु रख अशोक बने । भय कराउ थिब अबिच्छन्ने गो ।।१०।।

को देखो । करोड़ों रत्नों से यह सुशोभित हैं । हे सजनी ! इनका उपभोग करना । विधाता तुम्हारे बनवास का योग खण्डित कर दिया है । ३ मैं त्रिभुवनपति रावण हूँ । हमसे ब्रह्मा तथा इन्द्र भी डरते रहते हैं । हे सजनी ! मेरी पत्नी बनकर अचल वैभव का सुख भोगो । ४ पिता, पितामह, ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के भी यह रावण हाथ नहीं जोड़ता । हे सजनी ! तेरे हाथ जोड़ रहा हूँ । हे श्रेष्ठ वराङ्गने ! कृपा करो । ५ वन में रहकर तुम कष्ट पा रही थीं । तुम्हारा पति मानव ही तो है । हे सजनी ! तुम अब मेरी हो जाओगी । प्रेम से मैं तुम्हारे चरण भी दाबता रहूँगा । ६ रोना छोड़कर सती सीता ने कहा, "अरे तुच्छ ! नीच ! तू मेरा पति बनेगा । श्रीराम सिंह तथा तू कुत्ते के समान है । सिंह को मारकर भोजन खोज रहे हो । ७ यदि राम धनुष और बाण लिये होते और उनसे युद्ध करके तुम मुझे लाते तो अरे रावण ! तुम वीर कहलाते । वीरों का आचरण चोरी नहीं है । ८ यह सुनकर रावण ने क्रोध से कहा कि आज से एक वर्ष की अवधि हो गई । यदि तुम राम को लाकर मुझे न दोगी तो निश्चित रूप से तुम मेरी भक्ष्य बन जाओगी । ९ इस प्रकार कहते हुए राक्षसियों की ओर देखकर उसने ले जाने के लिए दिखा दिया । वह बोला कि इसे अशोक वन में रखना और निरन्तर डराती रहना । १० यह सुन

शुणि दुष्ट असुरी घेनिगले । मध्यरे रखिण बेढ़ि बसिले ।
जेसने, मार्जारी मध्ये सारी । बोले बिशि तेन्हे श्रीराम नारी ।।११।।

एकोनबिंश छान्द
राग–केदार कामोदी

छाड़िले देबी शयन भोजन । राम पद्मपादे देइण मन ।
ताहा देखि देबे कले बिचार । धाता कहिले जाइ सुनासीर ।
बासव ! तुम्भे बहन जाअ । जगत मातांकु अमृत दिअ हे ।। १ ।।
शुणि बासब निद्राकु राइले । अशोक बनकु जाअ बोइले ।
असुरी जाक निद्रा कराइब । आम्भे अइले संगरे आसिब ।
आज्ञारे देबी बेगे चळिगले । असुरी मानंक नेत्रे मिळिले ।। २ ।।
निद्रारे अज्ञान असुरी राशि । राम नाम सीता घोषन्ति बसि ।
अमृत भाण्डकु कररे घेनि । सीतांक करे देले सत्रजोनि ।
करिण ताहांकु बहुत स्तब । बोइले आम्भे आसिछु बासब ।। ३ ।।
धाता सहिते सकळ अमर । अमृत देइछन्ति मोर कर ।

कर दुष्ट राक्षसियाँ सीता को ले गईं और उन्हें बीच में रख घेरकर बैठ गईं। विशि कहता है कि बिल्लियों के मध्य सारिका के समान श्रीराम की पत्नी सीता विराजमान थी । ११

छान्द—१९
राग–केदार कामोदी

श्रीराम के चरण-कमलों में मन लगाकर देवी सीता ने शयन तथा भोजन का परित्याग कर दिया। ऐसा देखकर देवताओं ने विचार किया। ब्रह्मा ने जाकर इन्द्र से कहा, हे सुनासीर ! तुम शीघ्र हीं जाकर जगज्जननी को अमृत प्रदान करो। १ यह सुनकर इन्द्र ने निद्रा को बुलाकर अशोक वन जाने को कहा। तुम राक्षसियों को सुला देना और हमारे आने पर साथ लौट आना। आज्ञा पाकर निद्रादेवी शीघ्र चली गई और राक्षसियों की आँखों में जा पहुँची। २ राक्षसियों का समूह नींद से अचेत हो गया। सीता बैठी हुई राम-नाम उच्चारण कर रही थी। इन्द्र ने अमृत-कुम्भ हाथ में लेकर सीता को प्रदान किया। उसने उनकी बहुत स्तुति करके कहा कि मैं इन्द्र हूँ। आपके पास आया हूँ। ३ ब्रह्मा के समेत सभी देवताओं ने मेरे हाथों से अमृत भेजा है। आप इसे पानकर क्षुधा और तृष्णा का निवारण करें तथा मन में

भोजन करि क्षुधा तृषा हर । मनरे किछि संशय न कर गो ।
जननि ! आम्भमानंक पाइँ । बरषे मात्र थाअ दु:ख सहि गो ।। ४ ।।
श्रीरामंकु आम्भे जाइँ कहिबु । जेमन्ते आसिबे ताहा करिबु ।
पुत्र भ्राता नाति दुष्ट असुर । सहिते मारिबे जे दशशिर ।
जननि ! तेबे पृथ्वीर भार । उश्वास होइब सचराचर गो ।। ५ ।।
संकेतुँ जानकी देबी जाणिले । कर अंगुळि करिण घेनिले ।
श्रीराम सुमरि कले त पान । गले सुरपुर पाकशासन ।
से जानकी । देबींक पादकमळ । दीन बिशि तहिँ मति भ्रसळ ।। ६ ।।

बिंश छान्द

राग—केदार कामोदो

मने बिचारन्ति से कोदण्डपाणि ।
आउ कि बिपत्ति पड़िब न जाणि जे ।।
असुर बोइला आम्भ स्वरे बाणी ।
सीता लक्ष्मण किस बोलिबे शुणि जे ।।
सत्वर होइ राम चालन्ते खरे ।
अन्य मृग मारि मांस अछि करे जे ।। १ ।।

किसी प्रकार का सन्देह न करें । हे माता ! हम लोगों के लिए एक वर्ष केवल दु:ख सहन करके रह जायँ । ४ हम श्रीराम से जाकर कह देंगे और वह जिस प्रकार से भी आयेंगे, वही करेंगे । वह पुत्र, भाई, नाती आदि दुष्ट राक्षसों के सहित दशकन्धर का विनाश करेंगे । हे माता ! तभी सचराचर पृथ्वी का भार हल्का होगा । ५ इस संकेत से जानकी जी समझ गयीं । उन्होंने हाथ की उँगली से उसे लेकर श्रीराम का स्मरण करते हुए पान किया । इन्द्र स्वर्णपुरी को चले गये । उन देवी जानकी के चरण-कमलों में दीन विशि का मन बहुतायत से लगा रहे । ६

छान्द—२०

राग—केदार कामोदी

कोदण्डपाणि राम मन में विचार करने लगे कि अब पता नहीं और कौन सा दु:ख आ पड़े । राक्षस हमारी आवाज में बोला, जिसे सुनकर सीता और लक्ष्मण क्या कहेंगे । दूसरे मृग को मारकर हाथ में मांस लिये राम प्रखर वेग से चल पड़े । १ राजीवलोचन

लक्ष्मण पथे देखि राजीबनेत्र ।
बाता रम्भा पराये कम्पिला गात्र जे ॥
किपाँ अइल प्राण प्रियाकु छाड़ि ।
छाड़ि जीबन मोर गलाटि उड़ि जे ॥
एमन्त बुद्धि किपाँ कल सानुज ।
सीता बदन निकि देखिबि आज जे ॥ २ ॥
दनुज हेला हेम हरिणी काया ।
देबंकु अगोचर असुर माया जे ॥
मारिबा बेळे बोले लक्ष्मण रख ।
जाणिलि तेते बेळुँ देब ए दुःख जे ॥
घेनि गला आम्भंकु बहुत दूर ।
बाण बाजन्ते पुण हेला असुर जे ॥ ३ ॥
जेबें अइल संगे घेनि नइल ।
असुर मुखे बळि करिण देल जे ॥
आहे लक्ष्मण तुम्भ बुद्धि तीक्षण ।
मोते त हेला आज ए अलक्षण जे ॥
दानबे नेले ताकु जिणि कि तोते ।
शुणिछि मुख किपाँ न कहु मोते जे ॥ ४ ॥

श्रीराम को मार्ग में देखकर लक्ष्मण का शरीर वायुविडोलित कदली वृक्ष के समान काँपने लगा। (श्रीराम बोले—) प्राणप्रिया को छोड़कर तुम क्यों आए ? उसे छोड़कर मेरे प्राण उड़ गये। अरे भाई ! तुम्हारी बुद्धि ऐसी कैसे हो गई ? लगता है आज सीता का मुख न देख पाऊँगा। २ राक्षस ने स्वर्ण-मृग का शरीर बना लिया। राक्षसों की माया देवताओं के लिए भी अगोचर है। मरने के समय उसने—"लक्ष्मण बचाओ" की आवाज दी। मैं उसी समय समझ गया कि यह अब दुःख देगा। वह हमें बहुत दूर ले गया। बाण के लगते ही वह फिर राक्षस बन गया। ३ जब तुम आये ही थे तो उसे साथ क्यों नहीं लाये। उसे राक्षस के मुख में बलि बनाकर छोड़ दिया। अरे लक्ष्मण ! तुम्हारी बुद्धि तो तीक्ष्ण है। मुझे तो आज यह अपशकुन सा लग रहा है। क्या तुम्हें जीतकर दानव तो उसे नहीं ले गए ? तुम सुन रहे हो पर मुझसे अपने मुख से बात क्यों नहीं करते ? ४ तुम्हारा शरीर खिन्न दिखाई दे रहा है। किस दुःख ने

विरस दिशुछि अबयब मान ।
केउं दारुण कराइला एसन जे ॥
सीता बारता मोते बेगे तु कह ।
से थिले मुहिं सिना धरिनि देह जे ॥
लक्षमण जणाइले जोड़िण पाणि ।
तुम्भ महिमा मुं कि अछि न जाणि जे ॥ ५ ॥
असुर डाकिवार श्रबणे शुणि ।
ठाकुराणी पेशन्ते नइलि जाणि जे ॥
एथकु कटुभाषा कहिले जेते ।
सेबक हेले देह सहिब केते ॥
सीते सीते बोलिण पथे अइले ।
पर्णशाळा निकटे प्रबेश हेले जे ॥ ६ ॥
देखिले शोभा दिशुनाहिँ से पुरी ।
जेसने दिशे चन्द्रक्षय शर्बरी ॥
दशदिग चाहिँ दशरथ सुत ।
बोलइ विशि क्षणे हेले चकित जे ॥ ७ ॥

इसे ऐसा कर दिया ? तुम शीघ्र ही सीता का समाचार मुझसे कहो। उसके रहने पर ही मैं जीवन रख सकूँगा। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा कि आपकी महिमा मैं क्या जानूँ। ५ राक्षस की आवाज कान से सुनकर देवी के कहने पर भी मैं जान-बूझकर नहीं आया। इस पर उन्होंने जैसी-जैसी कटु भाषा कही, उसे सेवक होने पर भी यह देह कितना सहन कर सकती थी। सीता! सीता! कहते हुए मार्ग से चलकर वह पर्णकुटी के समीप आ पहुँचे। ६ जिस प्रकार सूर्य के अस्त हो जाने पर रात्रि हो जाती है, उसी प्रकार वह पर्णशाला अशोभनीय लग रही थी। विशि कहता है कि दशरथनन्दन दसों दिशाओं को ताकते हुए क्षण मात्र के लिए आश्चर्यचकित हो गये। ७

एकविंश छान्द

राग–बिप्रसिंहा बाणी

लक्षमण संगरे घेनि, रघुकुळ चूड़ामणि ।
पर्णशाळा द्वारे परबेश ।
बोलन्ति आगो तरुणी, से नुहे हेम हरिणी ।
धइला त असुर से बेश ।
कि सखि गो, आस आस कह तु कथा ।
न कहिबारु दूषण, करुछि ताहा भूषण ।
मो प्राणकु लागुअछि व्यथा ।। १ ।।
एते बोलि रघुबीर, पशिले कुटी भितर ।
न देखिले से चन्द्रमामुखी ।
बाहारकु करि आश, पर्णशाळा चउपाश ।
बुलि बुलि बोले आस सखि ।
कि सखि गो ! लुचिअछु कि पाइँ मोते ।
तरु ओहाड़रे किम्पा कथा न कहुछु ।
मुँ कि सखि देखि नाहिँ तोते ।। २ ।।
आस आस सीते मोर, तो शोकनदी भितर ।
बुड़ि जाउअछि उद्धर ।
देखि एबे दया कर, दारुण कोप संहार ।

छान्द—२१

राग–विप्रसिंह की धुन

रघुकुल चूडामणि श्रीराम लक्ष्मण को साथ लेकर पर्णकुटी के द्वार में प्रविष्ट होते हुए कहने लगे, हे तरुणी ! वह हेममृग नही था, उसने तो राक्षस का शरीर धारण कर लिया था । हे सखी ! आओ और बात करो, बात न करने के दोष को तुमने अपना भूषण बना लिया है । इससे मेरे प्राणों को कष्ट हो रहा है । १ इतना कहकर पराक्रमी राघव कुटी के भीतर घुसे । उन्होंने चन्द्रमा के समान मुखवाली सीता को नहीं देखा । बड़ी आशा के साथ बाहर आकर, 'हे सहचरी ! आओ' कहते हुए पर्णकुटी के चारों ओर घूमने लगे । हे सखी ! किसलिए तुम मुझसे छिप गयी हो ? वृक्ष की आड़ से मुझसे बात क्यों नही कर रही हो ? क्या मैंने तुम्हें देख नही लिया ? २ अरे मेरी सीता ! आओ तुम्हारे शोक से मैं नदी में डूबा जा रहा हूँ । मुझे बचाओ ! देखकर

शशीमुख देखाअ तोहर ।
कि सखि गो, छाड़ि मोते अछु तु काहिं ।
सहि न पारु कि दुःख ।
लुचिछु होइ बिमुख, संगते अइल किस पाइँ ॥ ३ ॥
जगि जे थिला लक्ष्मण, के घेनिगला मो प्राण ।
से देलात कषणे कषण ।
कि बोलिबे राजा गण, ए कथा मोर शुणिण ।
तपनर कुळकु दूषण ।
कि सखि गो, मरिबार ए कथा मन्द ।
तळ उपरकु अबा, केमन्ते करि चाहिँबा ।
न देखिले तो श्रीमुख चान्द ॥ ४ ॥
आम्भे अजोध्याकु गले, जनक राजा अइले ।
पचारिबे जानकी मो काहिं ।
आम्भे तांकु कि कहिबु, काहा मुखकु चाहिँबु ।
बुद्धि मोते दिशइ त नाहिं ।
कि सखि गो, निश्चय तेजिबि पराण ।
आम आज्ञाकु पाळिण, अजोध्याकु एहि क्षण ।
शीघ्र होइ जाअ हे लक्ष्मण ॥ ५ ॥

अब तो दया करो। दुःखदायी क्रोध को नष्ट कर दो तथा अपना चन्द्रमा के समान मुख दिखाओ। हे सखी ! मुझे छोड़कर तुम कहाँ हो ? क्या तुम दुख को न सह पाने के कारण अन्यमनस्क होकर छिप गई हो ? फिर साथ ही किसलिए आयी थीं ? ३ लक्ष्मण तो तुम्हारी रक्षा कर रहा था फिर मेरे प्राण को कौन ले गया ? उसने दुःख के ऊपर दुःख दिया है। हमारी बातों को सुनकर राजा लोग क्या कहेंगे ? हे सखी ! यह तो सूर्यवंश के लिए कलंक है और मृत्यु से भी अधिक तुच्छ है। तुम्हारा शशिमुख न देखकर मैं ऊपर-नीचे कैसे देख पाऊँगा ? ४ हमारे अयोध्या जाने पर राजा जनक आयेंगे और पूछेंगे कि मेरी जानकी कहाँ है ? तो मैं उनसे क्या कहूँगा ? अब मैं किसका मुख देखूँगा ? मुझे कुछ भी उपाय दिखाई नहीं देता। हे सखी ! निश्चय ही मैं प्राण त्याग दूँगा। हे लक्ष्मण ! हमारी आज्ञा का पालन करते हुए इसी क्षण शीघ्र ही अयोध्या चले जाओ। ५ विलाप करते हुए रघुवंशमणि के

बिळपिण रघुमणि, मोह पड़िले धरणी ।
अश्वासना कलेक सानुज ।
पुणिहिँ केतेहेँ बेळे ।
बइदेहीर बिकळे, फिटाइले नयनसरोज ।
कि सखि गो, निश्चय खाइले असुरे ।
एबे आम्भे काहिँ जिबा ।
काहाकु एथि पुछिबा, बिशि बोले खोजिबा बनरे ।। ६ ।।

द्वाविंश छान्द

राग-कुसुम सौरभ वाणी

कोदण्डधर कामिनीबरकु हराइ ।
कारुण्य करुछन्ति बनगिरिकि चाहिँ जे ।
हा हा मो सीते गो ।। १ ।।
दशदिश न दिशइ जिबइँ मुँ काहिँ ।
केबण असुर तोते देला अबा खाइ ।
हा हा मो सीते गो ।। २ ।।
नळिनीदळ लोचने लोचने मिशाइ ।
कहु जे थाउ बचन मनकु रसाइ ।
हा हा मो सीते गो ।। ३ ।।

समान श्रेष्ठ राम अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । लक्ष्मण ने उन्हें सांत्वना दी । फिर कुछ समय के बाद जानकी के सोच में उनके कमलनयन खुल गये । हे सखी ! निश्चय ही तुम्हें राक्षस खा गये ! अब हम कहाँ जायें और किससे पूछें ? विशि कहता है कि वन में खोजेंगे । वह इस प्रकार कहने लगे । ६

छान्द—२२

राग-कुसुम सौरभ की धुन

कोदण्डधारी राम पत्नी को खोकर, जंगल और पहाड़ों को देखते हुए "हा मेरी सीता" कहते हुए क्रन्दन करने लगे । १ मुझे दसों दिशाएँ नहीं दिखाई पड़तीं, मैं कहाँ जाऊँ ? हाय सीते ! न जाने कौन राक्षस तुझे खा गया ? २ हा सीते ! तुम कमल-दल नेत्रों को मेरी आँखों से मिलाकर मन को प्रसन्न करनेवाली बातें किया करती थीं । ३ हे सीते !

अन्तःपुरे जेते तो अछन्ति प्रिय सखी :
कि बोलिबे मोते तोते सगरे न देखि ।
हा हा मो सीते गो ।। ४ ।।
अजोध्या राजपण तो विनु कलि दूर ।
तो बिनु केमन्ते होइथिब अन्तःपुर ।
हा हा मो सीते गो ।। ५ ।।
लुचिथिले आस आस मोर प्राणसखि ।
पळाइ केणिकि गलु मोर दुःख देखि ।
हा हा मो सीते गो ।। ६ ।।
पलक बिच्छेद जुग प्राये मणुथाउ ।
तनु अन्तरकु हृदे हार न पुराउ ।
हा हा मो सीते गो ।। ७ ।।
सहस्र मुखे कहिले न सरिब गुण ।
समस्त गुणमानके अटु तु निपुण ।
हा हा मो सीते गो ।। ८ ।।
तरुर लता देखिले देखाइ जे देउ ।
बाहु लतिकारे तनु भिड़ि सुख पाउ ।
हा हा मो सीते गो ।। ९ ।।
तो थिलाकु पर्णशाळा दिशुथिला शोभा ।
से शोभा केणिकि जाइ दिशुछि अशोभा ।
हा हा मो सीते गो ।। १० ।।

रनिवास की जितनी तुम्हारी प्रिय सखियाँ है वे तुम्हें मेरे साथ न देखकर क्या कहेंगी ? ४ हे सीते ! अयोध्या का राज्य विना तुम्हारे दूर कर दिया, पर तुम्हारे बिना रनिवास कैसा लगेगा ? ५ हाय मेरी सीता, हे मेरी प्राणसंगिनी ! यदि छिपी हो तो आ जाओ । अथवा मेरा दुःख देखकर कहीं चली गयी ? ६ हे सीते ! तुम्हारे एक पल के वियोग को मैं युग के समान मानता था । तथा शरीर मे अन्तर के कारण गले में हार भी नही पहनता था । ७ हे सीते ! हजार मुखों से कहने पर भी तेरे गुण समाप्त नही होंगे । तुम सभी गुणो में निपुण हो । ८ हा मेरी सीता ! वृक्ष की लता को देखकर तुम मुझे दिखा देती तो भुजा रूपी लता से शरीर को जकड़कर सुख प्राप्त होता था । ९ हे सीते ! तुम्हारे रहने से पर्णकुटो सुन्दर दिखाई देती थी । वह सौन्दर्य न जाने कहाँ चला

ए मृग शावक संगे रंगे खेळुथाउ ।
करीशाबक धरिण देले सुख पाउ ।
हा हा मो सीते गो ॥ ११ ॥
लक्ष्मण बहुत तहिं प्रबोध करन्ति ।
बोले रामचन्द्र मोर बोल न घेनन्ति ।
हा हा मो सीते गो ॥ १२ ॥

त्रयोविंश छान्द

राग–सिन्धु कामोदी

आरे क्षउणीतनया गलु केणे रे ।
तो बिना बञ्चि नुहइ क्षणे रे ॥
आहा रे चन्द्र बदना, डाळिम्बबीज-
दशना, बारे मोते देखा देउ किना ।
दुष्ट मकरकेतना, जे ते देबटि बेदना
नुहँ प्रिये अनुकम्पा हीना ॥ १ ॥
भस्मान्तर बिम्ब ओष्ठी, जथान्तर
मृगदृष्टि, तोर प्राय आउ नाहिँ सृष्टि ।
शून्य देखि पर्णकुटी, हृदय जाउछि
फाटि, पलकु मणुछि जुग कोटि ॥ २ ॥

गया ? जिससे वह अशोभनीय दिखायी दे रही है । १० हे सीते ! इस मृगछौने के साथ तुम आनन्द से क्रीडा किया करती थीं और हाथी के बच्चे को पकड़कर देने पर सुख पाती थीं । ११ हे सीते ! लक्ष्मण यहाँ अनेक प्रकार से सांत्वना दे रहा है और कहता है कि श्रीरामचन्द्र मेरा कहना नहीं मानते । १२

छान्द—२३

राग–सिधु कमोदी

हे भूमितनया ! तुम कहाँ चली गई ? तुम्हारे बिना एक क्षण भी जी नहीं सकता । हे चन्द्रमुखी ! हे अनार के दानों जैसी दाँतवाली सीते ! तुम क्या एक बार मुझे दर्शन दोगी ? दुष्ट मकरध्वज कामदेव कितना भी कष्ट क्यों न दे, परन्तु हे प्रिये ! तुम दया-शून्य मत होना । १ भस्म लगने पर भी तेरे ओष्ठ बिम्बाफल जैसे और नेत्र यथार्थ में मृग के समान हैं । इस संसार में तुम्हारे समान कोई अन्य नहीं है । पर्णशाला को शून्य देखकर मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा है । एक पल भी करोड़ युगों से लग रहे हैं । २

ब्रह्माण्डे जेते सुन्दरी, नुहन्ति तो
समसरि, अटु प्रिये मोर मनोहारी ।
दाह-कनक गउरी, जेतेक गुण तोहरि,
कहिबि मुँ केते ता बिस्तारि ॥ ३ ॥
अबळा गुरु कुन्तळा, कोमळांगी
प्रेमशीळा, अटु प्रिये साक्षाते कमळा ।
मोते न देखि जे वाळा, फाटि जाउ-
थाइ डोळा, एबे केन्हे कलु एडे हेळा ॥ ४ ॥
द्विजराज करे लाज, देखि तो मुख-
सरोज, एबे सेहि मुख देखा आज ।
धनकु चाहिँ धइर्ज्य, होइले
श्रीरामराज, बोले बिशि आबर सानुज ॥ ५ ॥

चतुर्विंश छान्द

राग–खेमटा

आरे बाबु लक्ष्मण, मोर सुलक्षणी सीता केणिकि गला ।
अन्तर करि के पतर घरु मन्तर बा करि ताहाकु नेला ॥ पद ॥

इस ब्रह्माण्ड में जितनी भी सुन्दर स्त्रियाँ हैं, कोई भी तुम्हारे समान नहीं हैं। हे प्रिये! तुम मेरे मन को लुभानेवाली हो। दग्ध-स्वर्ण सा गौरवर्ण तथा और भी तुम्हारे जितने गुण है, उन्हें मैं विस्तार से कितना वर्णन करूँ। ३ हे वरांगने! घने केशोंवाली, कोमल अंगोंवाली तथा प्रेम में तत्पर प्रिये! तुम साक्षात् लक्ष्मी हो। तुझे न देखने पर जिस स्त्री की आँखें फट जाती थीं वही अब इतना प्रमाद क्यों कर रही है? ४ तुम्हारे मुख-कमल को देखकर चन्द्रमा भी लज्जित हो जाता था। आज वह ही मुख मुझे दिखा दो। विशि कहता है कि बादल की ओर देखकर श्रीराम तथा लक्ष्मण ने धैर्य धारण किया। ५

छान्द—२४

राग–खेमटा

हे तात लक्ष्मण! मेरी सुलक्षणी सीता कहाँ गई? पर्णकुटी से हटाकर कोई मंत्रबल से उसे ले गया। मनोहर वेणीवाली षोडसी हेमगौरी की छवि देखकर उसका वर्णन न कर पाने के कारण गीतकार

आठ सात एकबयसी, सुनागोरी मंजुळबेणी;
छबि देखि कबि गजानन बर्णि न पारिण पेट पृथुळ हेला ॥ १ ॥
कोमळांगी पिकबचना, मदाळसी गिरीशस्तना;
करीन्द्रगमना शफरीनयना, बनबासे स्नेह लगाइ थिला ॥ २ ॥
आरे बाळा कुटिळ केशी, बिम्बाधरी मधुरहासी;
तार नेत्रछटा, किबा बिद्युल्लता, देखिबाकु बारे स्वपन हेला ॥ ३ ॥
अणिमादि जे सुखदायी, रसारे के तापरि नाहिँ;
जेते थिला अशा, ताठारे भरसा, दारुण दइब अन्तर कला ॥ ४ ॥
एणीठारे बाजन्ते शर, डाके रख लक्ष्मण बीर;
जाणि न पारिलि कपट ताहार, सूर्य्यबंशकु से कळंक देला ॥ ५ ॥
शून्य देखि ए पर्णकुटी, मोर नेत्र जाउछि फुटि;
काटि देइ तण्टि नेला केहु बंटि, क्षीर नीर प्रीति अन्तर कला ॥ ६ ॥
जोड़िण जे से बेनिकर, जणाइले लक्ष्मण बीर,
भणइ बिक्रम बिहि हेला बाम, कटु कथा जोगे एहा घटिला ॥ ७ ॥

गणेश का पेट फूल गया। १ कोमल अंगोंवाली पिकबयनी, गिरीश शम्भु के समान स्तनों के भार से अलसाई, हाथी के समान गमन करनेवाली मछली के समान नेत्रों वाली सीता को वन में रहना भा गया था। २ कुंचित केशोंवाली, बिम्बाफल सदृश अधरों से मधुर मुस्करानेवाली तथा बिजली के समान नेत्रों की छटावाली वरांगना का एक बार दर्शन भी स्वप्न हो गया। ३ इस भूतल पर सुख को प्रदान करनेवाली अणिमा आदि भी कोई उसके समान नहीं है। मुझे उससे जो भी आशा और भरोसा था उसे दारुण विधाता ने मुझसे छीन लिया। ४ उस (मारीच) के बाण लगने पर "पराक्रमी लक्ष्मण रक्षा करो" की आवाज जैसे उसके छल को मैं समझ नहीं पाया। उसने सूर्यवंश को कलंक लगा दिया। ५ इस सूनी पर्णशाला को देखकर मेरे नेत्र फूटे जा रहे हैं। किसी ने गला काटकर उसे प्राप्त करके दूध और पानी जैसी प्रीति को विलग कर दिया। ६ विक्रम कहता है कि दोनों हाथ जोड़कर पराक्रमी लक्ष्मण ने कहा कि विधाता के प्रतिकूल होने से कठोर वचनों के कारण ही यह घटना घट गयी। ७

पञ्चविंश छान्द

राग–खेमटा

रमणीमणि, दया तोर केणिकि
गला गो, माया तोर जणा न गला ॥ पद ॥
मायामृग होइ मारीच, ठकि नेला करिण पाञ्च । लक्ष्मण
त्राहि कहिण परपंच, मृग देह छाड़ि असुर हेला गो ॥ १ ॥
आरे बाबु बीर लक्ष्मण, सीता अटे मो पंचप्राण ।
केबण दुर्ज्जन गळा काटि पुण, कुटीरु ताहाकु हरिण नेला ॥ २ ॥
स्नेह छाड़ि न पारि सेहि, सगे आसि थिला गोड़ाइ ।
निदारुण बिहि एहा त न सहि, बनवासे पुणि बिच्छेद कला ॥ ३ ॥
बोले बिशि राम राजन, बेळु बेळ होइ उच्छन्न । शोकरे
लक्ष्मण कहन्ति बोधिण, खोजिबा कि रूपे किए से नेला ॥ ४ ॥

षट्विंश छान्द

राग–केदार कामोदी (मथुरा बिजय-वृत्त)

कान्ता हराइ दशरथ नन्दन ।
पुछन्ति बृक्षे बृक्षे होइ उच्छन्न जे ॥

छान्द—२५

राग–खेमटा

अरी स्त्रियों में श्रेष्ठ सीते ! तेरी दया कहाँ चली गई ? तुम्हारी माया कुछ समझ में नही आयी । मारीच ने कपट मृग बनकर छल करके ठग लिया । "हे लक्ष्मण रक्षा करो" कहने का प्रपंच करके वह हिरण का शरीर त्यागकर राक्षस बन गया । १ अरे पराक्रमी तात लक्ष्मण ! सीता हमारी पंचप्राण है । कौन दुष्ट गर्दन काटकर उसे कुटी से हर ले गया । २ परित्याग न कर पाने के कारण ही वह साथ में पीछे-पीछे चलीं आई थी । कठोर दैव ने इसे सहन करते हुए वन में निवास करते हुए वियोग करा दिया । ३ विशि कहता है कि राजा राम के बारम्बार व्यग्र होने पर शोकयुक्त लक्ष्मण उन्हें सान्त्वना देते हुए कहने लगे कि खोजेंगे, कौन उन्हें किस प्रकार ले गया ? ४

छान्द—२६

राग–केदार कामोदी (मथुरा-विजय की धुन)

पत्नी के हरण हो जाने पर दशरथ-नन्दन श्रीराम व्यग्र होकर एक-एक वृक्ष से पूछने लगे । वन्य जीवों को देखकर वह कहने लगते

कहन्ति बन जीबमानंकु चाहिँ के नेला सीता ।
मोर देखिल नाहिँ जे ॥
आगो हरिणीमाने मो हरिणाक्षी ! ।
के नेला काहिँ गला अछ कि देखि गो ॥ १ ॥
आहे कदम्ब मोर कदम्बस्तना ।
आहे ताळ मोर पक्व ताळस्तना हे ।
आहे तमाळ माळ तमाळकेशी ।
आहे मयूर मोर मयूरबेणी जे ॥ २ ॥
आहे डाळिम्ब मो डाळिम्बदशना ।
आहे अशोक मो अशोकबसना जे ।
आहे बिम्ब मोहर पक्व बिम्बोष्ठी ।
देखिला नाहिँ तार प्रायेक सृष्टि जे ॥ ३ ॥
आहे बकुळ मोर मध्यमा सरु ।
देखिछ रम्भातरु के मो रम्भोरु जे ॥
आहे केतकी मोर केतकीकान्ति ।
लुचाइछ कि मने करिण भ्रान्ति जे ॥ ४ ॥
आहे कुन्द मोहर मुकुन्दहासी ।
तुम्भंकु नेबा पाइँ अछि कि असि जे ॥

कि मेरी सीता को कौन ले गया ? तुमने उसे कहीं देखा ? अरे मृगगणो ! हिरनों के समान नेत्रोंवाली (मेरी सीता) को कौन ले गया ? वह कहाँ चली गई ? क्या तुमने उसे देखा है ? १ अरे कदम्ब ! अरे तालवृक्ष ! कदम्ब एवं पके हुए ताड़फल के समान स्तनों वाली, हे तमालवृन्द ! तमाल की श्यामतायुक्त केशों वाली तथा हे मयूर ! मयूरबेणी सीता को तुमने देखा है ? २ अरे दाडिम ! दाडिम (अनार) के समान दाँतोंवाली; अरे अशोक ! अशोक (शोक-रहित) वस्त्रवाली; अरे बिम्ब ! बिम्ब (लाल) ओष्ठवाली हमारी सीता को सारी सृष्टि में कहीं देखा है ? ३ अरे बगुलो ! मेरी क्षीण कटि वाली सीता को तुमने देखा है ? अरे कदली-वृक्ष ! क्या तुमने मेरी रम्भा के समान जाँघों वाली सीता को देखा है ? अरे केतकी ! केतकी के समान कान्ति वाली मेरी प्रिया को क्या तुमने मन में भ्रमित होकर छिपा लिया है ? ४ अरे कुन्द ! मेरी कुन्दहासिनी प्रिया क्या तुम्हें लेने के

आहे पिकमाने मो पिकबचना ।
ता बिना होइछि मुँ बिकळमना जे ॥ ५ ॥
आगो गो गोदाबरी तु पापहारी ।
नेबाकु सीता आसिछन्ति कि बारि गो ॥
आहे हे हंसमाने हंसगमना ।
आहे कमळ मो कमळबदना जे ॥ ६ ॥
बने समस्त स्थाने लोड़ि न पाइ ।
लक्ष्मणंकु कहन्ति बिकळ होइ जे ॥
सीतार किछि न देखिलि शकुन ।
बोलइ बिशि क्रोधे हेले सम्पूर्ण जे ॥ ७ ॥

सप्तविंश छान्द—जटायुर प्राणत्याग

राग—काळी

कोदण्डधर कान्ता हराइ पुच्छन्ति बन गिरि ।
केहि ताहांकु न कहिबारु क्रोध मनरे धरि ।
कोदण्डे काण्ड बसाइ राम गिरि मानंकु चाहिँ ।
एकाबेळके काटिबि शिर केहि कहिल नाहिँ ॥ १ ॥

लिए यहाँ आई है ? अरे पिकीवृन्द ! मेरी पिकबयनी कहाँ है ? उसके बिना मेरा मन व्याकुल हो रहा है । ५ अरी पापहारिणी गोदावरी ! क्या सीता तुम्हारा जल लेने यहाँ आई है ? अरे हंस ! अरे सरोज ! मेरी हंसगामिनी तथा कमलवदनी सीता कहाँ है ? ६ समग्र वनप्रान्त में खोजने पर भी न मिलने पर श्रीराम व्याकुल होकर लक्ष्मण से बोले कि सीता का कुछ भी शकुन नहीं दीख पड़ा । बिशि कहता है कि श्रीराम तब क्रोध में भर गये । ७

छान्द २७—जटायु का प्राण-त्याग

राग—काली

पत्नी को खोकर कोदण्डधारी राम बनों और पर्वतों से पूछने लगे । परन्तु किसी के द्वारा उन्हें कुछ भी पता न लगने पर चिन्ता में क्रोधित होकर श्रीराम ने कोदण्ड पर बाण चढ़ाकर पर्वतों की ओर देखते हुए कहा कि मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया । मैं एक बार में ही सबके सिर काट डालूंगा । १ आज मैं मेरु पर्वत को चूर-चूर कर दूंगा ।

मेरुकु आज चूर्ण करिबि ओलटाइबि मही ।
चन्द्र तपन काटि पकाइ सिन्धु देबि शुखाइ ।
सकळ गिरि करिबि धूळि देबि बासब दण्ड ।
सकळ सुर नर असुर करिबि खण्ड खण्ड ।। २ ।।
दीने दयाळु पापे दयाळु हेलाकु एते दशा ।
आज मुँ काण्डमुने काटिबि समस्त ए त्रिदशा ।
लक्ष्मण बोले शुण भो देब देब न कर कोप ।
खोजिबा सबु अरण्ये केहि करिबा थिब गोप्य ।। ३ ।।
आम्भंकु चाहिँ जाआन्ति धाइँ कि पाइँ मृगकुळ ।
ताहांक पच्छे आम्भे गले बा कार्ज्य हेब सफळ ।
शुणि राघव कोप संहरि ताहांक पच्छे गले ।
मृगशाबक निर्भय होइ पथ कढ़ाइ नेले ।। ४ ।।
देखिले सीता गळारु खसि पड़िछि पुष्पमाळा ।
बोलन्ति देख लक्ष्मण माळा थिला सीतांक गळा ।
पुणिहिँ खण्ड दूरे देखिले सुबर्णमाळा छिड़ि ।
बिचिला प्राये कि शोभा पाए भुमिरे अछि पड़ि ।। ५ ।।
देखिले खण्डे दूर अन्तरे रथे होइछि भंग ।
सारथि सहितरे बिनाश होइअछि तुरंग ।

पृथ्वी को पलट दूंगा । चन्द्रमा और सूर्य को काटकर गिराकर समुद्र को सुखा दूंगा । समस्त पर्वतों की धूल कर डालूंगा । इन्द्र को दण्ड दूंगा तथा समस्त सुर-नर-असुरों को खण्ड-खण्ड कर डालूंगा । २ इन सभी देवताओं को मैं आज बाण की नोक से काट डालूंगा । तब लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! सुनिये । देवताओं पर क्रोध न कीजिए । हम सभी जंगलों में खोज करेंगे । किसी ने छिपा लिया होगा । ३ हमें देखकर मृगनिकर किसलिए भाग जाते हैं ? उन्हीं के पीछे जाने से हमारा कार्य सफल होगा । यह सुनकर राघव क्रोध को समाप्त करके उनके पीछे चले । निर्भय होकर मृग-शावक ने मार्ग पार करा दिया । ४ उन्होंने सीता के गले से गिरी हुई पुष्पों की माला को देखते हुए कहा, हे लक्ष्मण ! देखो यह माला तो सीता के गले में थी । फिर थोड़ी दूर जाने पर उन्होंने देखा कि टूटी हुई स्वर्ण की माला पृथ्वी पर बिखरी हुई कितनी सुन्दर लग रही है । ५ थोड़ी दूरी पर उन्होंने टूटे रथ को देखा । सारथी के समेत घोड़ा भी नष्ट होकर पड़ा था । फिर उन्होंने एक

देखिले पुणि धनु गोटाए होइछि बेनि खण्ड ।
बोलन्ति ए त इतर नुहेँ दिशे शक्र कोदण्ड ।। ६ ।।
आहे सानुज सीतांकु नेला केउँ देब दानब ।
देख एमान किपाँ पड़िछि लागिला असम्भब ।
सैंन्य न थाइ एका रथरे के अबा आसिथिला ।
रुधिर दृष्टि होइछि ताहा सगे के रण कला ।। ७ ।।
देखिले दूरे गिरि समाने पड़िछि गृध्र पक्षी ।
बारता कहिबाकु रामकु जीबन अछि रखि ।
बोलन्ति राम शुण लक्ष्मण ए आम्भ पिता-मित्र ।
सीतांकु खाइ आनन्द होइ शुखाउअछि गात्र ।। ८ ।।
क्रोध करिण बिन्धन्ते बाण कहइ से जटायु ।
बिश्रबासुत सीतांकु नेला समर कलि बहु ।
रथ सारथि भांगि ताहार धनुभग्न मुँ कलि ।
बिरथि करि सेन्हा बिहारि सीतांकु रखिथिलि ।। ९ ।।
खड्ग घेनि मो डेणा बेनि काटिला बेनि पाद ।
एतक कहि प्राण हारिला देखि राम बिषाद ।
काठ कुढ़ाइ अग्नि लगाइ दहन ताकु कले ।
तार कुटुम्बे भोजन देइ पिण्ड उदक कले ।। १० ।।

धनुष को दो टुकड़ों में पड़े हुए देखकर कहा कि यह तो दूसरा नहीं बल्कि इन्द्र का धनुष दिखाई दे रहा है। ६ अरे भाई ! कौन देव, दानव सीता को ले गया ? देखो ! यह सब किसलिए पड़ा है ? असम्भव लग रहा है। बिना सेना के अकेला कौन रथ से आया था ? अरे ! खून दीख रहा है। उसके साथ युद्ध किसने किया ? ७ फिर थोड़ी दूर पर पर्वत के समान पड़ा हुआ गृध्र पक्षी दिखाई पड़ा जो श्रीराम को संवाद देने के लिए ही जीवित था। श्रीराम ने कहा, हे लक्ष्मण ! सुनो ! यह हमारे पिता का मित्र सीता का भक्षण करके आनन्दपूर्वक अपना शरीर सुखा रहा है। ८ कुपित होकर बाण छोड़ते हुए राम से जटायु कहने लगा कि विश्रवा-नन्दन रावण सीता को ले गया है। मैंने बहुत युद्ध करके रथ और सारथी को नष्ट करके उसका धनुष तोड़ डाला तथा प्रत्यञ्चा को तोड़कर सीता को बचाया था। ९ उसने तलवार लेकर मेरे पंख तथा दोनों पैर काट दिये। इतना कहते हुए उसके प्राण छूट गये। यह देखकर श्रीराम दुखी हो गये। उन्होंने लकड़ी एकत्रित करके आग जलाकर उसका दहन-संस्कार किया। उसके कुटुम्बियों को भोजन देकर

पथ त पाइ जोजने तहिँ उत्तर दिगे गले।
महाबनरे गिरि गुहारे प्रबेश जाइ हेले।
बोलन्ति राम शुण लक्ष्मण ए बन भयंकर।
बोलइ बिशि दिबसे जहिँ दिशइ अन्धकार ॥ ११ ॥

अष्टादिश छान्द

राग–कौशिक

गिरि भयंकर तुषारनिकर देखि बोलन्ति श्रीराम हे।
शिशिर ऋतु कि मह्ीकि मण्डिला देइ उरे मोतिदाम हे।
आहे लक्ष्मण। बिरही दहुछि काम हे।
जनकनन्दिनी बाम दिनु मोते कोटि जुग हुए जाम हे ॥ १ ॥
कम्पुअछि सबं जीबंक हृदय सलिळे होइला भय हे।
केबळ मात्र जीबन रखिबाकु साहा हुए धनञ्जय हे।
आहे लक्ष्मण। उत्तर अनिळ बहे हे।
तरु निबिड़ छाइ रे न दिशन्ति तपन शशी उदयेहे ॥ २ ॥
तपन तुळि तरुणी तेळ तप्त जळ ताम्बुळ आसन हे।
तपोबन्त जन ए ऋतुरे भोग करइ दिव्य अशन हे।

उसे उन्होंने पिण्डोदक दान किया। १० सन्धान पाकर वहाँ से एक योजन उत्तर दिशा की ओर जाकर महारण्य में पर्वत की गुफा में जा पहुँचे। श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि यह बन भय देनेवाला है। बिशि कहता है कि वहाँ पर दिन में भी अँधेरा दिखाई देता था। ११

छान्द—२८

राग–कौशिक

भयंकर पर्वत पर विपुल तुषार को देखकर श्रीराम बोले, "क्या शिशिरऋतु ने मेरे उर में अघात करते हुए पृथ्वी को आच्छादित कर लिया है ? हे लक्ष्मण ! कामदेव विरही को दग्ध कर रहा है। जनक-तनया के बिना दिन और रात मुझे कोटि युग के समान लगते हैं। १ समस्त जीवों के हृदय काँप रहे हैं। पानी से डर लगने लगा है। केवल जीवन बचाने के लिए धनंजय ही सहायक है। हे लक्ष्मण ! उत्तरी पवन बह रहा है। वृक्षों की सघन छाया से उदय होने पर चन्द्रमा तथा सूर्य भी नहीं दिखाई देते। २ नियमशील पुरुष इस ऋतु मे सूर्य, रुई, स्त्री, तेल, गरम जलपान तथा शय्या का उपयोग करते हैं, और दिव्य भोजन ग्रहण करते

आहे लक्ष्मण। चिर भूषण चन्दन हे।
जानकी संगरे थिबा काळे मुहिँ जाणइँ नाहिँ ए मान हे ॥ ३ ॥
एते बोलि बुलि बुलि गिरि गुहा निकटे प्रवेश हेले।
महा भयकर दिशुछि तहिँरे एक असुरी देखिले हे।
आहे लक्ष्मण। बोलन्ति भो देब देख हे।
बोलइ बिशि बिपत्ति रे बिपत्ति दइब हेले बिमुख हे ॥ ४ ॥

एकोनत्रिंश छान्द—कबन्ध वध

राग-भैरव (एकताळि)

दूरहुँ देखि असुरी श्रीराम लक्ष्मण।
गुहारु बाहार होइलाक सेहिक्षण ॥
काहुँ अइल काहिँकि जिब मोते कह।
देखिण काम काण्डरे कातर मो देह ॥ १ ॥
केळि करिब बोलिण लक्ष्मणंकु धरि।
ताहाकुहिँ सूर्पणखा प्राय बीर करि ॥
रोदन करि पळाइ गलाक असुरी।
श्रीराम लक्ष्मण गले पथ अनुसरि ॥ २ ॥

हैं। हे लक्ष्मण ! मेरी चिरभूषण चन्दन-समान जानकी के साथ रहते समय में इन वस्तुओं को कुछ भी नहीं समझता था। ३ इस प्रकार कह कर वह घूमते-घूमते पर्वत की गुफा के निकट जा पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने अत्यन्त भयानक दिखाई देनेवाली एक राक्षसी को देखा। लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! देखिये। विशि कहता है कि दैव के बिमुख हो जाने पर आपत्ति के ऊपर आपत्ति आ जाती है। ४

छान्द २९—कबन्ध-वध

राग—भैरव (एकताल)

दूर से ही श्रीराम और लक्ष्मण को उसी पर्वत की गुफा से बाहर निकलते देखकर राक्षसी ने कहा, तुम कहाँ से आए हो और कहाँ जाओगे ? यह मुझे बताओ। तुम्हें देखकर मेरा शरीर काम के बाणों से आहत हो गया है। १ रतिक्रीड़ा करने की इच्छा से उसने लक्ष्मण को पकड़ लिया। पराक्रमी लक्ष्मण ने सूर्पणखा के समान उसकी दशा बना दी। वह राक्षसी रुदन करते हुए भाग गयी। मार्ग को पकड़कर श्रीराम तथा लक्ष्मण चले गये। २ पुनः निविड़ कानन में पश्चिम दिशा

पुणि पश्चिमे गमन्ते से गहन बन ।
लक्ष्मण जणान्ति हुए अमंगळ मान ॥
बाम बाहु बाम नेत्र स्फुरुछि मोहर ।
राम बोलन्ति आम्भर तुम्भरि बिकार ॥ ३ ॥
एते बोलि बेनि भाइ चालन्ति सत्वरे ।
पशिले जोजनबाहु बनर भितरे ॥
बेनि करे साउँटि से मुखपाशे नेला ।
लक्ष्मण बोलन्ति देब निश्चय खाइला ॥ ४ ॥
देखि राम लक्ष्मण धरि खड़्ग पाणि ।
बेनि भाइ बेनि बाहु पकाइले हाणि ॥
पचारइ ज्ञान पाइ कबन्ध राक्षस ।
राम लक्ष्मण कि तुम्भे दशरथ शिष ॥ ५ ॥
पूर्बे ऋषिक शापरु होइला राक्षस ।
बज्रधर बज्र मारि कले ए भबिष्य ॥
उदरे बदन मोर हृदरे नयन ।
बाहुबळे नाना जीब करइ अशन ॥ ६ ॥
लक्ष्मण कहिले ताकु सकळ बृत्तान्त ।
शुणि बोले मोते दाह कर सीताकान्त ॥

की ओर चलते हुए लक्ष्मण ने कहा कि अपशकुन हो रहे हैं। मेरा बायाँ नेत्र तथा बायीं भुजा फड़क रही है। राम ने कहा कि यह तो हमारा-तुम्हारा भ्रम है। ३ इतना कहकर दोनों भाई शीघ्रता से चलते हुए योजन-बाहु के वन के भीतर जा पहुँचे। वह दोनों हाथों से जकड़कर इन्हें मुख के पास ले आया। लक्ष्मण बोले, हे देव ! अब निश्चय ही यह हमें भक्षण कर लेगा। ४ यह देखकर श्रीराम और लक्ष्मण दोनों भाइयों ने हाथों में तलवार लेकर उसकी दोनों भुजाएँ काट डालीं। सचेत होने पर कबन्ध राक्षस ने पूछा, क्या आप दशरथ-नन्दन श्रीराम और लक्ष्मण हैं ? ५ पूर्व-काल में ऋषि के शाप से मैं राक्षस हो गया था। इन्द्र ने बज्र से प्रहार करके मुझे ऐसा कर दिया। मेरा मुख पेट में और आँखें हृदय में हैं। मैं अपनी भुजाओं के बल से नाना प्रकार के जीवों को खाया करता था। ६ लक्ष्मण ने उससे समस्त बृत्तान्त कहा। उसे सुनकर वह बोला, हे सीता-नाथ मेरा दाह कर दीजिए। मैं दिव्यरूप धारण करके सब कुछ बता दूंगा।

दिव्यरूप होइ मुहिँ कहिदेबि सबु ।
शुणि राम लक्ष्मणंकु बोले दाह बाबु ।। ७ ।।
काठ कुढ़ाइ लक्ष्मण अनळ जाळिले ।
दिव्य पुरुषे बाहार होइला देखिले ।।
तार पाइँ रहुबर आकाशु अइला ।
बोले बिशि रामंकु कहिबाकु रहिला ।। ८ ।।

त्रिश छान्द—शबरपल्लीरे प्रबेश

राग–मुखारि

होइ कबन्ध दिव्य शरीर । जणाइला जोड़ि बेनि कर ।
देव बिश्रबा ऋषि कुमर । कामिनीकि नेला जे तुम्भर ।। १ ।।
एहि कुसुम बनरे जिब । शबरी संगे भेट होइब ।
पम्पा सरोबरहिँ देखिब । देखि सर्ब ताप उपेक्षिब ।। २ ।।
ऋष्यमूके सुग्रीबर थिब । तांक संगे मइत्र होइब ।
सेहि जाणइ सकळ बिधि । न बिचारिब बानर बुद्धि ।। ३ ।।
एते कहि बिमाने बसिला । निजपुरे प्रबेश होइला ।
राम ताहारि बचन कले । तार कहिबा मार्गरे गले ।। ४ ।।

यह सुनकर श्रीराम ने उसे जलाने के लिए लक्ष्मण को कहा । ७ काष्ठ एकत्रित करके अग्नि में जलाने पर लक्ष्मण ने एक दिव्यपुरुष को बाहर निकलते देखा । उसके लिए आकाश से रथ आ गया । विशि कहता है कि वह श्रीराम को समाचार देने के लिए रुक गया । ८

छान्द ३०—शबरी के आश्रम में प्रवेश

राग–मुखारी

कबन्ध ने दिव्य शरीर धारण करके दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा, हे देव ! विश्रवा ऋषी का पुत्र रावण आपकी पत्नी को ले गया है । १ इसी कुसुमवन में जाने पर शबरी से भेंट होगी । वहीं पम्पा सरोवर दिखाई देगा । उसे देखते ही सारा ताप मिट जायेगा । २ ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव है । उसके साथ मित्रता कर लेना । वह ही समस्त उपाय जानता है । अपने मन में उसके वानर होने की बात न लाना । ३ इतना कहकर वह विमान में बैठकर अपने धाम को चला गया । श्रीराम उसका कहना मानकर उसी के बताए हुए मार्ग पर चल पड़े । ४ शबरी के स्थान पर पहुँचकर उन्होंने घूम-फिरकर उसका

शबरी बनिकारे होइले । तार आश्रम बुलि देखिले ।
द्वारे तार प्रबेश होइले । राम शबरी कृतार्थ कले ।। ५ ।।
देखि शबरी श्रीराम पाद । भकतिरे होइ गदगद ।
प्रदक्षिण करि स्तब कला । दण्डबत होइण शोइला ।। ६ ।।
जेते फळमूळ थोइ थिला । राम आगे थोइ पूजा कला ।
देखि राम होइले संतोष । शबरीकि डाकि कहे पाश ।। ७ ।।
राम बोलन्ति धन्य तो पुण्य । सबु गुम्फामान किपाँ शून्य ।
एहि केबण ऋषिक स्थान । तुम्भे एका रहिछ निर्जन ।। ८ ।।
देब मातांक ऋषिक बन । स्वर्गे गले सर्ब तपोधन ।
तुम्भ दर्शनकु करि मन । धरिअछि ए मोर जीबन ।। ९ ।।
एते बोलि अग्निरे पशिला । जान चढ़ि स्वर्गपुर गला ।
पम्पासर देखि राम तोष । बोले बिशि आरण्यक शेष ।। १० ।।

।। आरण्यककाण्ड समाप्त ।।

आश्रम देखा। उसके द्वार मे प्रविष्ट होकर श्रीराम ने शबरी को कृतार्थ किया। ५ श्रीराम के चरणों को देखकर शबरी ने भक्ति से गद्‌गद होकर स्तुति करती हुई प्रदक्षिणा करके दण्डवत् करने को गिर पडी। ६ जितने भी फल-मूल रखे थे उन्हें श्रीराम के आगे रखकर उसने उनकी पूजा की। यह देखकर श्रीराम ने सन्तुष्ट होकर शबरी को पास बुलाकर कहा। ७ तुम्हारा पुण्य धन्य है परन्तु समस्त गुफाएँ सूनी क्यों हैं? यह किस ऋषि का स्थान है? इस निर्जन स्थान में क्या तुम अकेली रहती हो? ८ (शबरी बोली—) हे देव! यह मतंग ऋषि का वन है। सारे तपस्वी स्वर्ग चले गए। आपके दर्शन की इच्छा मन मे लिये मैंने अपना जीवन बचा रखा है। ९ इतना कहकर वह अग्नि मे प्रविष्ट हो गई और यान में चढ़कर स्वर्ग को चली गयी। पम्पासर को देखकर श्रीराम प्रसन्न हो गये। बिशि कहता है कि इस प्रकार अरण्यकाण्ड समाप्त हो गया। १०

।। अरण्यकाण्ड समाप्त ।।

किष्किन्ध्याकाण्ड

प्रथम छान्द

राग–मंगळगुज्जरी

प्रबेश राम लक्ष्मण पम्पाशर तीर ।
देखन्ति निर्मळ जळ दिशे मनोहर ।। १ ।।
कमळ कुमुद कोकनद नीळोत्पळ ।
मधुपाने मत्त होइ चुम्बन्ति भ्रसळ ।। २ ।।
चउपाशे बेढ़िछन्ति पुष्पतरुचय ।
बिरही जनंकु से कराउछन्ति भय ।। ३ ।।
देख देख लक्ष्मण ए सरोबर शोभा ।
एहा देखि केबण देब नोहिब लोभा ।। ४ ।।
बिबिध हंसमानंके दिशइ सुन्दर ।
डाहुक तित्तरि काक बके शोभाकर ।। ५ ।।
बिकाशन्ति नब नब चूतांकुर माने ।
प्रकटि बासन्ति बास सर्ब सन्निधाने ।। ६ ।।
कामतूणीशर प्राय दिशन्ति अशोक ।
सीतांक बिच्छेदे कराउछि बहु शोक ।। ७ ।।

छान्द—१

राग–मंगलगुर्ज्जरी

श्रीराम तथा लक्ष्मण ने पम्पा सरोवर के तट पर पहुँचकर उसके मनोहर निर्मल दिखनेवाले जल को देखा । १ कमल, कुमुद, कोकनद तथा नीले रंग के कमलों को मधुपायी मत्त भौंरे चूम रहे हैं । २ पुष्पित वृक्षों के समूह ने उसे चारों ओर से घेर रखा है, जो विरही व्यक्तियों को भयभीत करा रहे हैं । ३ हे लक्ष्मण ! इस सरोवर की सुन्दरता को देखो । इसे देखकर कौन ऐसा देवता है जो लुब्ध न हो जाएगा ! ४ नाना प्रकार के हंसों से यह सुन्दर दिख रहा है । डाहुक, तीतर, कौए तथा बगुले इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं । ५ आम्र वृक्ष नये-नये पल्लव अंकुरित करके, सबके समीप बासन्ती सुवास उत्पन्न कर रहे हैं । ६ अशोक के वृक्ष कामदेव के बाणों के तूणीर के समान दिखाई दे रहे हैं तथा सीता के वियोग में अत्यन्त शोक प्रदान कर रहे हैं । ७ पाटली तथा पटल के

पाटळी पटळ कामानळ प्राय दिशे ।
केतकी कळिका मनसिज-कुन्त कि से ॥ ८ ॥
मल्लिका सउरभरे मधुपनिकर ।
ध्वनि करि खोजुछन्ति सर्बदिगन्तर ॥ ९ ॥
नबगन्ध सुशीतळ प्रसरे मरुत ।
कोकिळ ध्वनि करन्ति होइ महामत्त ॥ १० ॥
लक्ष्मण बोलन्ति देब ए शिशिर अन्त ।
प्रबेश होइछि ऋतुराजन बसन्त ॥ ११ ॥
देखन्ति से पम्पासरोबरकु बुलिण ।
सीतांक बिरहे पुण करन्ति कारुण्य ॥ १२ ॥
लक्ष्मण रामचन्द्रंकु करन्ति प्रबोध ।
बोले बिशि शुणि राम दुइ गुण क्रोध ॥ १३ ॥

द्वितीय छान्द

राग–बिचित्र देशाक्ष

बसन्त अन्ते तपत ऋतु परबेश ।
तपत अनिळ प्रकाशिला दश दिग ॥

वृक्ष कामाग्नि के समान दीख रहे हैं। केतकी की कली क्या, वह तो कामदेव के भाले ही हैं। ८ मल्लिका ने अपने हृदय में भ्रमरों को समेट लिया है जो गुनगुनाकर चारों ओर खोजते घूम रहे हैं। ९ नवीन सुगन्ध से बासित शीतल वायु बह रही है। मदमस्त होकर कोयलें शब्द कर रही हैं। १० लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! यह शिशिर ऋतु का अन्त है और ऋतुराज बसन्त का प्रवेश हो चुका है। ११ वह घूम-घूम कर पम्पासर का निरीक्षण कर रहे थे और फिर सीता के विरह में करुण-क्रन्दन करने लगते थे। १२ लक्ष्मण श्रीराम को सान्त्वना देते जाते थे। विशि कहता है उसे सुनकर श्रीराम का क्रोध दुगुना होता जाता था। १३

छान्द—२

राग–विचित्र देशाक्ष

बसन्त की समाप्ति पर ग्रीष्म-ऋतु का प्रवेश हुआ। दसों दिशाओं में तप्त पवन बहने लगा। सूर्य के ताप से जंगल झुलस गया। झिक

तपन तापरे बन होइला दहन ।
शुभुअछि निरन्तरे झिंक पक्षी स्वन ॥ १ ॥
शुष्क हेले सकळ सलिळ सरोबर ।
सलिळ न पाइ जीबे होइले बिकळ ॥
प्रकटित पाटळी पादपरे कुसुम ।
बिरही जन दहन करुछि कि काम ॥ २ ॥
महीर उत्तपतरे तातुअछि पाद ।
लक्ष्मणकु कहि राम लभन्ति बिषाद ॥
तरु चय पत्रझड़ि पड़िले धरणी ।
मृगतृष्णा तृष्णा करि धामन्ति हरिणी ॥ ३ ॥
राघब बोलन्ति देख देख सउमित्रि ।
ए ऋतुरे केमन्ते बंचिब मृगनेत्री ॥
बज्राघात प्राय अग्निबात हेउथिब ।
शिरीषांगी सुकुमारी केमन्ते सहिब ॥ ४ ॥
मोर बिनु शीतभानु हुए चित्रभानु ।
भानु किरणे केमन्ते रहिबटि तनु ॥
एमन्त बोलिण राम बहु बिळपिले ।
बोले बिशि लक्ष्मण प्रबोध करुथिले ॥ ५ ॥

पक्षी का शब्द निरंतर सुनाई देने लगा । १ समस्त जलाशय तथा सरोवर सूख गये । पानी न मिलने से जीव व्याकुल हो गये । पलाश वृक्षों में पुष्प निकल आये । ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे कामदेव विरहियों को जला रहा है । २ भूमि के जलने से पैरों में ततूरी (भुलभूल) लगने लगी । लक्ष्मण से ऐसा कहते हुए श्रीराम दुःखी हो गये । वृक्षों के पत्ते झड़कर पृथ्वी पर गिर पड़े । प्यास के कारण हरिण, मृगमरीचिका में दौड़ने लगे । ३ राघव ने कहा, हे सौमित्र ! देखो । इस ऋतु में मृग के समान नेत्रोंवाली (सीता) कैसे रहेगी ? लू-लपट वज्र के आघात जैसी लग रही होगी । सिरीष पुष्प के समान अंगवाली सुकुमारी सीता इसे कैसे सहन करेगी ? ४ मेरे वियोग में चन्द्रमा भी सूर्य हो जायेगा । सूर्य की रश्मियों में उसका शरीर कैसे रह पायेगा ? इस प्रकार बोलते हुए श्रीराम बहुत विलाप करने लगे । विशि कहता है कि लक्ष्मण उन्हें सान्त्वना प्रदान कर रहे थे । ५

तृतीय छान्द—चक्रबाककु शाप प्रदान

राग–कौशिक

जळ भितरे श्रीराम पशन्तेण चक्रबाक कला तम हे ।
मुँ जुबती संगे बिहरइ रंगे पम्पासरर आराम हे ॥ १ ॥
आहे श्रीराम ! किपा भगन कर काम हे ।
तुम्भ भारिजाकु रावण नेइछि पारिले कर संग्राम हे ॥ २ ॥
के जाणइ सीता काहार बनिता कि कारण हुए भ्रम हे ।
शिरे जटा बान्धि कषाबस्त्र पिन्धिकि के धनु धरि बाम हे ॥ ३ ॥
मोर रति भाञ्ज तुम्भ मन रंज जुबतीरे तो उद्दाम हे ।
चक्रबाक बाणी लक्ष्मण शुणिण शाप देले करि तम हे ॥ ४ ॥
पक्षी पक्षिणी एक संग नोहिब न करिबु तु रमण रे ।
एहा मेण्टि जेबे रमण करिबु अबश्य तोर मरण रे ॥ ५ ॥
लक्ष्मणंक बाणी चक्रबाकी शुणि पतिकि कहइ पुण हे ।
एबे जे तुम्भर सम्पद सरिला शाप देलेक लक्ष्मण हे ॥ ६ ॥
शुणि पक्षीमणि पक्षिणीकि घेनि श्रीराम पादे पड़िला हे ।
भो देब न जाणि दोषकलि पुणि अपराध खण्ड बोइला हे ॥ ७ ॥

छान्द ३—चक्रवाक को शाप देना

राग–कौशिक

श्रीराम के जल के भीतर घुसने पर चक्रवाक कुपित होकर कहने लगा, हे राम ! मैं अपनी स्त्री के साथ आराम से पम्पासर में विहार-क्रीड़ा कर रहा था । तुम हमारा काम क्यों बिगाड़ रहे हो ? तुम्हारी पत्नी रावण ले गया है । यदि सामर्थ्य हो तो उससे युद्ध करो । १-२ क्या पता सीता किसकी स्त्री है ? न जाने क्यों भ्रम हो रहा है ? शिर में जटा बाँधकर काषाय वस्त्र पहनकर तथा हाथों में धनुष लिये तुम मेरी मनोरम पत्नी के साथ स्वतंत्रतापूर्ण रतिक्रीड़ा में विघ्न क्यों डाल रहे हो ? चक्रवाक की बातों को सुनकर लक्ष्मण ने क्रुद्ध होकर शाप दिया । ३-४ पक्षी और पक्षिणी (तुम दोनों) एक साथ न तो रह पाओगे और न रमण ही कर सकोगे । यदि इसे मिटाकर तुम रमण करोगे तो निश्चय ही तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी । ५ चक्रवाकी ने लक्ष्मण के वचन सुनकर पति से कहा कि लक्ष्मण ने शाप दे दिया है । अब तुम्हारा ऐश्वर्य-सुख समाप्त हो गया । ६ यह सुनकर श्रेष्ठ पक्षी अपनी स्त्री को लेकर श्रीराम के चरणों में गिर पड़ा । हे देव ! अनजाने में मुझसे अपराध

शुणि रघुमणि पक्षींकर बाणी बोलन्ति हेब कारण हे ।
लक्ष्मण बचन केबे नुहे आन रात्रे नोहिब रमण हे ॥ ८ ॥
दिबसरे रंग कान्ता कान्त संग होइब एहि प्रमाण हे ।
रजनीकाळे अंग संग नोहिब हेले हराइब प्राण हे ॥ ९ ॥
पक्षींकु रहाइ गले रघुसाइँ पशिले गिरि गहन हे ।
व्याध बुलुथिला पक्षींकि देखिला अठारे कला बन्धन हे ॥ १० ॥
पेड़िरे पूराइ घेनि गला व्याध प्रबेश निज भुवन हे ।
पक्षी पक्षिणी आकुळ होइ मने चिन्तन्ति रघुनन्दन हे ॥ ११ ॥
राम राम बाणी चक्रबाक गुणि फाटिला पेड़ा बहन हे ।
बन्धनु फिटि दुइ पक्षी हरषे बिहार कले कानन हे ॥ १२ ॥
श्रीराम चरण संसार कारण सुर मुनि कले ध्यान हे ।
सेहि चरणकु आश्रा करि बिशि बंचुअछि निशिदिन हे ॥ १३ ॥

हो गया। मेरे अपराध को क्षमा करें। ७ पक्षियों की बात सुनकर रघुमणि राम ने कहा कि दोष तो क्षमा होगा। परन्तु लक्ष्मण का वाक्य कभी झूठा नहीं हो सकता। रात्रि में तुम्हारा रमण नहीं हो सकेगा। ८ दिन में तुम अपनी पत्नी के साथ रसक्रीड़ा करोगे। यह बात प्रमाणित है। रात के समय तन-संगम नहीं होगा और यदि हुआ तो प्राण नष्ट हो जायेंगे। ९ पक्षी को वहीं रोककर रघुनाथजी गहन कानन में चले गये। एक बहेलिया व[illegible] घूम रहा था उसने पक्षियों को देखकर लासा लगाकर उन्हें पकड़ [illegible]या। १० वह उन्हें पिजड़े में [illegible]कर ले गया और अपने घर जा पहुँचा। पक्षी और पक्षिणी व्याकुल होकर मन में रघुनन्दन राम का चिन्तन करने लगे। ११ चक्रवाक द्वारा की गई राम-नाम की ध्वनि से पिंजड़ा फट गया और बन्धनमुक्त होकर दोनों पक्षी जंगल में प्रसन्नतापूर्वक विहार करने लगे। १२ श्रीराम के चरण संसार से त्राण दिलानेवाले हैं, जिनका ध्यान देवता तथा मुनि-जन करते हैं। उन्हीं चरणों के भरोसे विशि रात और दिन बिताया करता है। १३

चतुर्थ छान्द—गो गोष्ठरे गोपाळंकु शापप्रदान

राग—केदार

श्रीराम लक्ष्मण पशिले गहन बन निकटे गोधन।
सउमित्रि कहे शुण रामराये क्षुधारे अधोर जीबन।
रघुनन्दन ! बारे रक्षा कर आम्भ जीबन ।। १ ।।
भाइ बिकळ देखि रघुनन्दन आगरे देखि गोधन।
बेगे बेगे जाइँ गो गोष्ठरे पाइ गोपाळे जाचन्ति रतन।
मणि बन्धा निअ किछि दुध दिअ भाइ मोर करु पान ।। २ ।।
बोलन्ति गोपाळे केउँ गच्छे फळे तुम्भे बोल मणिरतन।
क्षुधार बिकळे सउमित्रि बोले रकत दुहान्तु गोधन।
ततक्षणे गाई रकत दुहँइ दुहान्ते दुग्ध रगबर्ण ।। ३ ।।
गाईंकर दुग्ध रकत देखिण हजिगलाक तांक ज्ञान।
श्रीरामंकु बेढ़ि पादतळे पड़ि बोलन्ति किछि दिअ दान।
तांकर बिकळे श्रीराम बोलन्ति दुहान्तु गाई क्षीरमान ।। ४ ।।
ततक्षणे गाई क्षीरमान देइ हरष बरज राजन।

छान्द ४—गोशाला में गोपों को शाप देना

राग—केदार

श्रीराम और लक्ष्मण के गहन कानन में घुसने पर एक गोशाला के समीप लक्ष्मण ने कहा, हे महाराज राम ! सुनिये। भूख से जीवन दुखी हो रहा है। हे रघुनन्दन ! एक बार मेरे जीवन की रक्षा करें। १ भाई को दुखी देखकर रघुनन्दन राम ने सामने गायों को देखा। उन्होंने शीघ्र ही गोशाला में जाकर गोपों से याचना करते हुए कहा कि हमारा रत्नमणि-कंकण लेकर हमें कुछ दूध दे दो। मेरा भाई उसे पी लेगा। २ गोप बोले कि तुम बताओ मणिरत्न कौन से वृक्ष में फलते हैं ? तभी भूख से व्याकुल लक्ष्मण ने कहा कि तुम्हारे गोधन, दूध के स्थान पर रक्त दुहावें। उसी क्षण गायों को दुहने पर दूध लाल रंग का हो गया। ३ गायों के दूध को रक्त में परिणत देखकर उन सबका ज्ञान हर गया। वह सभी श्रीराम को घेरकर उनके चरणों में गिर पड़े तथा कहने लगे कि आप हमें कुछ दान दीजिए। उनकी व्याकुलता को देखकर श्रीराम ने कहा कि तुम्हारी गायें अब दूध देंगी। ४ उसी समय गायों द्वारा दूध देने पर गोपराज प्रसन्न हो गये। उन्होंने दुग्ध-पात्र श्रीराम को देकर अपने

दुधभाण्ड नेइ श्रीरामंकु देइ तोष कलेक पिण्डमान ।
श्रीरामचन्द्रंक चरण पंकजे निश्चळे रहु बिशि मन ॥ ५ ॥

पंचम छान्द—हनुमान-भेट

राग—राजबिजे धनाश्री

सरोबर तटुं बिजे राम ।
बोलन्ति कह ए गिरि नाम ।
लक्ष्मण जणान्ति ऋष्यमूक गिरि
सुग्रीबर ए आश्रम । हे देब ॥ १ ॥
एहि गिरि तळे आम्भे थिबा ।
तार बिषयमान बुझिबा ।
बिश्वास आम्भंकु कले सिना
आम्भे ता संगे मइत्र हेबा । हे देब ॥ २ ॥
एहा बिचारन्ते सुग्रीबर ।
देखु थिला से गिरि शिखर ।
राम लक्ष्मणंक रूपकु अनाइ
दुरान्त से सुग्रीबर । हे देब ॥ ३ ॥
आरोहिला आन गिरिशिर ।
मंत्रीमाने मिळिले कतिर ।

को सन्तुष्ट किया । बिशि का मन श्रीरामचन्द्रजी के चरण-कमलों में निश्चल बना रहे । ५

छान्द ५—हनुमान से भेंट

राग—राजविजय धनाश्री

श्रीराम सरोवर के तट पर पहुँचकर लक्ष्मण से उस पर्वत का नाम पूछने लगे । लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! यह ऋष्यमूक पर्वत सुग्रीव का वासस्थान है । १ हम इसी पर्वत के अंचल में रहकर उसके विषय में जानकारी करेंगे । हे देव ! यदि वह हम पर विश्वास करेगा तो हम लोग भी उससे मित्रता स्थापित करेंगे । २ यह विचार करते हुए उन्हें, सुग्रीव पर्वत के शिखर से देख रहा था । वह श्रेष्ठ सुग्रीव दूर से ही श्रीराम और लक्ष्मण के रूप को निहार रहा था । ३ वह दूसरे पर्वत के शिखर पर चढ़ गया । मंत्रीगण उसके निकट आ गये । हनुमान ने कहा कि आप

हनु बोलइ काहांकु भयकरि
पळाइल एते दूर ।
शुणि बोलन्ति बानरराज ।
बाळि हत नुहइटि बुझ ।
हरि हर प्राय शोभा
पाउछन्ति धनुशर धरि सज । हे हनु ॥ ४ ॥
शुणि हनु हेले भिक्षु सज ।
देखि राम लक्ष्मणंक तेज ।
चरण तळे पड़िण पचारइ
तुम्भे केउँ देबराज ।
सबु लक्ष्मण तांकु कहिले ।
रामचन्द्रटि एहु बोइले ।
सुग्रीबर संगे मइत्र होइबे
तांकर दया होइले । हे भिक्षु ॥ ५ ॥
सेहु बोलन्ति मुँ बीर हनु ।
मुहिँ अटइ पबन सूनु ।
मोर कन्धे बस सुग्री भेटाइबि
बोलि बिस्तारिला तनु । से हनु ॥ ६ ॥
हनु चिह्निला निज गोसाइँ ।
बेनि भाइंकु कन्धे बसाइ ।
ऋष्यमूक गिरि शिखरे मिळिण गला ताहांकु बसाइ ।

किससे डरकर इतनी दूर भाग आये ? यह सुनकर वानरराज सुग्रीव बोला, पता लगाओ यह बालि द्वारा भेजे हुए तो नहीं हैं ! हे हनुमान ! धनुष-बाण से सजे हुए यह विष्णु और शंकर के समान शोभित हो रहे है । ४ यह सुनकर हनुमान ने भिक्षुक का रूप धारण किया । राम और लक्ष्मण के तेज को देखकर उनके चरणों में गिरकर पूछने लगे, हे देवराज ! आप लोग कौन हैं ? लक्ष्मण ने उनसे सब कुछ बताते हुए कहा कि यह श्रीरामचन्द्र हैं । हे भिक्षुक ! यदि सुग्रीव की दया हुई तो उसके साथ मित्रता करेंगे । ५ उन्होने भी कहा कि मैं पवन का पुत्र पराक्रमी हनुमान हूँ । आप मेरे कंधे पर बैठ जायें, मैं सुग्रीव से भेंट करा दूंगा । इतना कहते हुए हनुमान ने अपना शरीर विस्तारित किया । ६ हनुमान ने अपने स्वामी को पहचान कर दोनों भाइयों को कंधे पर बैठाया और ऋष्यमूक

जाईं कहिला सुग्रीब पाश ।
आज भय गला तोर नाश ।
बोले बिशि तुम्भ पाप
नाशजिब दर्शन करिब आस ॥ ७ ॥

षष्ठ छान्द—सुग्री सह मित्रता स्थापन

राग—सिन्धुड़ा

श्रीराम लक्ष्मण ऋष्यमूके रखि हनु सुग्री पाशे गले ।
रामंक उदन्त सकळ सुग्रीबे बुझाइ करि कहिले ॥
से दशरथ नन्दन । बुलु अछन्ति सकळ बन ।
तुम्भ मित्र होइबाकु मन । भय न कर कपिराजन ॥ १ ॥
आस आस तांक संगतरे ऋष्यमूके जाइ कर भेट ।
शुणि सुग्रीब नळ नीळ सुषेण अइले होइण हृष्ट ॥
देखि राम उठिले । सुग्री आसि आलिंगन कले ।
मंत्रीमाने चरणे पड़िले । सेहिक्षणि अग्नि लगाइले ॥ २ ॥
अग्नि साक्षी करि मइत्र होइले श्रीराम कपिराजन ।
पुण पुण करि अग्नि प्रदक्षिणे कहन्ति सत्य बचन ॥

पर्वत के शिखर पर मिलने हेतु गये । वहाँ सुग्रीव के पास जाकर कहा कि आज आपका भय नष्ट हो गया । विशि कहता है कि तुम्हारा पाप नष्ट हो जायेगा । तुम आकर दर्शन करो । ७

छान्द ६—सुग्रीव के साथ मित्रता-स्थापन

राग—सिन्धुर

श्रीराम और लक्ष्मण को ऋष्यमूक पर छोड़कर हनुमान सुग्रीव के पास गये । उन्होंने सुग्रीव से श्रीराम के समस्त चरित्र समझाकर कहे । वह दशरथ के पुत्र है, सम्पूर्ण जंगलों में घूम रहे हैं । उनका मन आपसे मित्रता करने का है । हे कपिराज ! आप भय न करें । १ आइये और ऋष्यमूक पर चलकर उनसे भेंट कीजिए । यह सुनकर सुग्रीव नल-नील तथा सुषेण प्रसन्न होकर आ गये । उन्हें देखकर श्रीराम उठ पड़े । सुग्रीव ने आकर उनका आलिंगन किया । मंत्रीगण ने उनके पैर छुए और उसी समय अग्नि प्रज्वलित की । २ श्रीराम तथा कपिराज अग्नि को साक्षी बनाकर मित्र हो गये । बारम्बार अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए

आहे कपि ईश्वर । आजु आम्भर दुःख तुम्भर ।
तुम्भ दुःख सहजे आम्भर । सुग्री बोले करुणा तुम्भर ।। ३ ।।
एमन्त कहिण डाळ भाँगिदेइ राम लक्ष्मणे बसाइ ।
सुग्रीब बसिले आउमाने उभा होइले मण्डली होइ ।।
चेति कहे लक्ष्मण । बनबास जेबण कारण ।
खर दूषणंकर मरण । एबे सीतांकु नेला राबण ।। ४ ।।
होइ देब आम्भे देखिलुँ देखिलुँ सुग्री रामंकु कहिले ।
राबण नेबाकाळे देखि आम्भकु भूषण पकाइ देले ।।
राम बोलन्ति आण । बिळम्बर केबण कारण ।
गुहारु आणि देले सुषेण । रामंकु बोइले एहा घेन ।। ५ ।।
देखि श्रीराम लक्ष्मणंकु बोलन्ति सीतार टिकि भूषण ।
लक्ष्मण बोइले नूपुर चिह्नइ न चिह्नइ मुँ एमान ।।
राम अश्रु लोचन । सुग्री सहिते कले रोदन ।
पुणि होइले धइर्ज्य मन । देखि रखाइले आयमान ।। ६ ।।
बोलन्ति राम शुण सखे सुग्रीब, मित्रर जेतेक गुण ।
तुम्भें आम्भे सेहि काळरे जाणिबा मारिबा जेबे रावण ।।

कहने लगे कि हे कपिपति ! मैं सत्य कहता हूं, आज से हमारा दुःख तुम्हारा और तुम्हारा दुःख सहज रूप से हमारा हो गया। सुग्रीव ने कहा कि यह आपकी कृपा है। ३ इस प्रकार कहते हुए उन्होंने एक डाल तोड़कर श्रीराम और लक्ष्मण को बैठाया, सुग्रीव भी बैठ गये। अन्य लोग मण्डली बनाकर खड़े हो गये। तब लक्ष्मणजी ने वनवास का कारण और खर-दूषण का मरण बताते हुए कहा कि सीता को रावण ले गया है। ४ सुग्रीव ने श्रीराम से कहा कि हाँ देव ! हमने भी देखा है। रावण द्वारा ले जाते समय (सीता ने) हमें देखकर आभूषण गिरा दिये थे। राम ने कहा कि अब विलम्ब का क्या कारण है ? उन्हें ले आओ। सुषेण ने गुफा से लाकर राम से, उन्हें ग्रहण करने को कहा। ५ उन्हें देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा, क्या यह सीता के आभूषण हैं ? लक्ष्मण बोले, मैं इन्हें पहचान नहीं सकता। मै तो केवल नूपुर को ही पहचानता हूँ। श्रीराम के नेत्रों में आँसू भर गये और साथ में सुग्रीव भी रुदन करने लगे। फिर मन में धैर्य धारण कर उन अलकारों को देखकर रखवा दिया। ६ श्रीराम ने कहा, "हे मित्र सुग्रीव ! सुनो। मित्र के समस्त गुण हम और तुम उसी समय समझेंगे जब रावण को मारा जायेगा। हे कपीश ! हमारे

आहे कपि ईश्वर। आम्भ तूणीरे जेतेक शर।
सर्प प्रायक तेज प्रखर। बिशि बोले काळ मृत्यु कर॥ ७॥

सप्तम छान्द—श्रीरामचन्द्रंक शोक

राग–तोड़ि (खेमटा)

मित हे गला मो बइदेही। चाण्डाळ रावण नेला चोराइ॥ घोषा॥
सीता शाढ़ी चड़ि हृदरे लदि। बिकळे राम गद गदे कान्दि॥ १॥
आहा से जानकी मो प्राण सम। निर्लज जीबन न नेला जम॥ २॥
ता भ्रूलता कामधनु आकार। नयने रखिछि कुसुमशर॥ ३॥
चन्द्रमा बदन अति सुन्दर। काहिँ लुचाइला सजनी मोर॥ ४॥
शिरीषअंगी कुरंगी नयना। गिरीशस्तनी से पक्वबचना॥५॥
चारु सुकुमारी नब बयसी। क्षीण तनु पुणि से मीनदृशी॥६॥
आहा दइब एहा पुणि कला। पिण्ड रखि प्राण के घेनि गला॥७॥
ए रसे रसिण नारण कहि। जाणिलि ए देह सबु सहइ॥८॥

तरकश में जितने भी बाण हैं वह सब सर्प के समान तेज और प्रखर हैं।" विशि कहता है वह काल को भी मारने में समर्थ हैं। ७

छान्द ७—श्रीरामचन्द्र का शोक

राग–तोड़ी (खेमटा)

हे मित्र! मेरी वैदेही चली गयी। दुष्ट रावण उन्हें चुरा कर ले गया॥ पद॥ सीता के वस्त्र-आभूषणों को हृदय से लगाकर श्रीराम गद्‌गद होकर विकलता से क्रन्दन करने लगे। १ हा जानकी! वह मेरे प्राणों के समान थी। मेरे इस निर्लज्ज जीवन को यमराज ने क्यों नहीं ले लिया? २ उसकी भौंहें कामदेव के धनुष के आकार की थीं, उसके नेत्रों में पुष्पबाण रखे थे। ३ हे मेरी प्रिये! चन्द्रमा के समान अत्यन्त सुन्दर मुख कहाँ छिपा लिया? ४ शिरीष पुष्प से अंगोंवाली, हिरन के समान नेत्रोवाली, पर्वतराज के समान स्तनोंवाली और मधुर बोलनेवाली सुन्दर सुकुमारी नवयौवना सीता, छरहरे बदनवाली, चंचलता से देखने वाली थी। ५-६ हा दैव! यह क्या किया? शरीर को छोड़कर प्राण लेकर चला गया। ७ इस रस में निमग्न होकर नारण कहता है कि मैं समझ गया कि इस शरीर को सब कुछ सहना पड़ता है। ८

अष्टम छान्द—दुन्दुभि अस्थि फिंगिबा

राग–काफि

लक्ष्मण कहे कपिराजन शुण ।
श्रीराम श्रीचरणे सकळे हे लोकंकर शरण ॥ १ ॥
एबे से राम हेले तुम्भर शरण ।
जेमन्ते ए बनिता पाइबे हे कह तहिँ कारण ॥ २ ॥
सुग्री बोले स्वर्ग मर्त्य पाताळ ।
खोजि पारइ त्रिभुबन हे नाहिँ बानर बळ ॥ ३ ॥
लुचिण अछि एथि बाळी भयरे ।
होइलि तुम्भ संगरे हे एड़े असमयरे ॥ ४ ॥
राम आज्ञा देले आम्भ कार्य्य थाउ ।
तुम्भर कार्य्यं आगे करिबा हे तुम्भर भय जाउ ॥ ५ ॥
शुणि सुग्रीव राम श्रीभुज धरि ।
एकान्ते बेनि मित्र बसिण जे बहु बिचार करि ॥ ६ ॥
सुग्री कहे भरसा नुहइ चित्ते ।
दुन्दुभि शब फिंगि देलेटि हे तेबे जिबि मुं प्रते ॥ ७ ॥
बाळी शतेक बेळ फिंगि देइछि ।
सेकाळुं गिरि सम होइण हे अस्थि पड़ि रहिछि ॥ ८ ॥

छान्द ८—दुन्दुभि की अस्थियों को फेंकना

राग–काफी

लक्ष्मण ने कहा, हे कपिराज ! सुनो, श्रीराम के चरण सभी लोगों के लिए शरणस्थल हैं। १ अब श्रीराम आपकी शरण में आ गये हैं। अब जिस तरह इनकी पत्नी मिल जाए वह उपाय बताइये। २ सुग्रीव ने कहा कि मैं स्वर्ग, मृत्युलोक, पाताल तीनों लोकों में खोज सकता हूँ, परन्तु (मेरे पास) वानरदल नहीं है। ३ बालि के भय से छिपकर यहाँ रह रहा हूँ। इस असमय में तुम्हारा साथ हुआ है। ४ श्रीराम ने कहा कि "मेरा कार्य रहने दो तुम्हारा कार्य हम पहले करेंगे जिससे तुम्हारा भय समाप्त हो जाए।" ५ यह सुनकर सुग्रीव ने श्रीराम का हाथ पकड़कर एकान्त में बैठकर दोनों मित्रों ने बहुत प्रकार से विचार किया। ६ सुग्रीव बोला, "मेरे मन में भरोसा नहीं हो रहा है, दुन्दभि का शव यदि आप फेंक दें तो मुझे विश्वास हो जायेगा। ७ बालि ने उसे सैकड़ों बार फेंका

एमन्त कहि पाशकु नेला ।
एहि से अस्थि बोलि रामंकु जे सुग्री देखाइ देला ।। ९ ।।
राम चापिले बाम अंगुष्ठि मुन ।
बोलइ बिशि फिंगि देले से जे गला दश जोजन ।। १० ।।

नवम छान्द—सप्तशाळा छेदन

राग–कानड़ा

अस्ति फिंगि देबा देखिण सुग्रीब लक्ष्मण कर्णरे कहिला ।
मित्र न जाणिबेटि से बोइला ।
शुष्क होइण अपारकाळु थिला मोर मनकु नइला हे सानुज ।
जेबे सातशाळुँ शाशे बिन्धिबे । मित्र तेवे सिना शाढ़ी बान्धिबे ।
बाळी सम बळ तेबे से जाणिबि ऋक्ष मर्कट बन्दिबे हे ।। १ ।।
लक्ष्मण कहन्ते श्रीराम जाणि ता कोदण्डे गुण चढ़ाइले ।
काण्ड बाछिण गुणे बसाइले ।
बिन्धन्ते सपतशाळा फाटि शर पाषाणे उल्लसाइले से ।
श्रीराम ! ताहा देखिण सुग्रीव हरष ।

है, उस समय से उसकी अस्थियाँ पर्वत के समान पड़ी हैं ।" ८ ऐसा कहकर सुग्रीव श्रीराम को उसके पास ले गया और यही वह अस्थियाँ हैं, कहकर उसने श्रीराम को दिखा दिया । ९ विशि कहता है कि श्रीराम ने बायें अँगूठे की नोक से दबाकर उस (अस्थिसमूह) को फेंक दिया जो दस योजन पर जाकर गिरा । १०

छान्द ९—सप्तताल-छेदन

राग–कान्हरा

अस्थियों का फेंकना देखकर सुग्रीव ने लक्ष्मण के कान में कहा, "हे मित्र ! कुछ समझ में नही आ रहा । यह अस्थिसमूह बहुत काल से पड़े रहने के कारण सूख गया था । अत: हे भाई ! मेरे मन को संतोष नहीं हुआ । जब सात ताल के वृक्षों को एक बार में बेध देंगे तभी मित्र को सेहरा बंधेगा । तभी मैं समझूँगा कि यह बालि के समान बलवान हैं । तभी रीछ और वानर इनकी वन्दना करेंगे ।" १ लक्ष्मण से कहने पर श्रीराम समझ गये । उन्होंने धनुष पर डोरी चढ़ा ली । छाँटकर उन्होंने एक बाण प्रत्यंचा पर रखा । श्रीराम द्वारा छूटे हुए बाण ने पाषाणों को

पादे पड़ि बोलइ मोर दोष ।
क्षमाकर आहे अजोध्या ठाकुर संशय कल बिनाश हे ।। २ ।।
आलिंगन करि श्रीराम पुच्छन्ति सोदरे किपाइँ बइरी ।
सुग्री बोले दोष नाहिँ मोहरि ।
ज्येष्ठ भाइ होइ मो बनिता नेइ देइछि बाहार करि हे ।
हे देब । पूर्बे मायाबी दैत्य जे अइला ।
रात्रे बाळीकि समर मागिला ।
बेनि भाइ आम्भे बाहार हुअन्ते देखि सेहि बाहुड़िला हे ।। ३ ।।
बेनि भाइ आम्भे गोड़ान्ते डरि से बिबर भितरे पशिला ।
ताहा देखि बाळी मोते बोइला ।
मोर आसिबा जाए तु द्वारे थिबु बोलि बिबरे पशिला हे ।
भो देब ! सम्बत्सरे मुँ जगिण रहिलि ।
तहिँ संकेत किछि न पाइलि ।
जेते बेळे हेला रुधिर बाहर बाळी मला भय कलि हे ।। ४ ।।
बिबर द्वारे पथर देइ मुहिँ नग्ररे हुअन्ते प्रबेश ।
मंत्री माने मिळिले मोर पाश ।

फाड़कर सातों तालों के वृक्षों को बेधकर उलट दिया । यह देखकर सुग्रीव प्रसन्नता से पैरों मे गिरकर बोला, "हे अयोध्यानाथ ! हमारे दोषों को क्षमा करें । आपने हमारी शंका को नष्ट कर दिया ।" २ श्रीराम ने उसका आलिंगन करते हुए प्रश्न किया कि "आपका सगा भाई किस कारण से शत्रु बन गया" ? सुग्रीव बोला कि "मेरा कोई दोष नहीं है । बड़ा भाई होकर उसने मेरी स्त्री को ले लिया और मुझे बाहर निकाल दिया । हे देव ! पूर्वकाल में मायावी नाम के दैत्य ने आकर रात्रि के समय वालि से युद्ध की याचना की । हम दोनों भाइयों को बाहर निकलते देख वह लौट पड़ा । ३ हम दोनों भाइयों द्वारा खदेड़े जाने पर वह भय से गुफा के भीतर घुस गया । यह देखकर वालि ने मुझसे कहा कि मेरे आने तक तुम द्वार पर रहना । यह कहकर बालि विवर में घुस गया । हे देव ! मैं एक वर्ष तक बाट देखता रहा पर वहाँ से कुछ भी संकेत नहीं मिला । जिस समय रक्त बाहर निकला तो मैं यह सोचकर डर गया कि लगता है बालि मर गया । ४ विवर के द्वार पर पत्थर लगाकर मेरे नगर में प्रवेश करते समय मन्त्रीगण मेरे समीप आये । उनके द्वारा अभिसिक्त होकर सिंहासन पर बैठते ही बालि वहाँ आ पहुँचा । हे देव ! उसने क्रोध से मुझे

अभिषेक होइ सिंहासने थिलि बाळी होइला प्रबेश हे ।
ओ देब । मोते क्रोधरे बिधाए माइला ।
किपाँ बिळे शिळ देलु बोइला ।
राजा हेबा देखि सुमन्त्र सहिते बाहार करिण देला हे ।। ५ ।।
श्रीराम बोलन्ति एबे जाइँ तुम्भे बाळी संगरे जुद्ध कर ।
आम्भे पच्छे पच्छे थिबु तुम्भर ।
शुणि सुग्रीब बाळी संगे समर करिबा पाइँ बाहार हे ।
सुजने । जाइँ बाळी सिंहद्वारे डाकिला ।
शुणि बाळी बीर धाइँ अइला ।
बेनि भाइंकर बिबिध प्रकारे बहु समर होइला हे ।। ६ ।।
श्रीराम तरु उहाड़े थाइ बेनि भाइंकि चिह्नि न पारिले ।
एणु करि से शर संहरिले ।
सुग्रीब समरे बालीकि हारिण बहु अशकत हेले हे ।
सुजने । बाळी माड़ि बसिण मारुथिला ।
प्राणे थाउ बोलिण दया कला ।
बोले बिशि छाड़ि दिअन्ते पळाइ ऋष्यमूकरे पशिला से ।। ७ ।।

एक थप्पड़ मारा और कहने लगा कि तुमने विवर में पत्थर क्यों लगाया ? उसने मुझे राजा बना देखकर मंत्रियों के साथ बाहर निकाल दिया ।" ५ श्रीराम ने कहा, अब जाकर तुम बालि के साथ युद्ध करो । हम तुम्हारे पीछे रहेंगे । यह सुनकर सुग्रीव बालि के साथ युद्ध करने के लिए निकल पड़ा । हे सुजन पुरुषो ! उसने जाकर सिंहद्वार पर बालि को ललकारा । पराक्रमी बालि सुनते ही दौड़कर आ गया । दोनों भाइयों का विविध प्रकार से बहुत युद्ध हुआ । ६ वृक्ष की आड़ से श्रीराम दोनों भाइयों को पहचान न सके । इसलिए उन्होंने बाण नहीं छोड़ा । युद्ध में बालि से हारकर सुग्रीव बहुत असक्त हो गया । हे सुजनो ! बालि उसको दबोचकर मारनेवाला था परन्तु दया करके उसने उसे जीवित रहने दिया । विशि कहता है कि छोड़ देने पर सुग्रीव भागकर ऋष्यमूक पर्वत पर जा पहुँचा । ७

दशम छान्द—वाळी बध

राग–धनाश्री दोहरि पड़िताळ

पळाइण सुग्री ऋष्यमूकरे प्रबेश ।
रामचन्द्र सहिते अइले तार पाश ॥
न कहइ कथा आउ न टेकइ मुख ।
भूमि कि चाहिँण रामचन्द्रे कहे दुःख ॥ १ ॥
मान लाज मिशि मने करइ बिचार ।
चाटु तांकु कहुछन्ति दशरथ बाळ ॥
अ स आस मित आउ थरे एबे जुझ ।
एक बाणके मारिबि आज ठाख बुझ ॥ २ ॥
न पारिलु चिह्नि बेनि भाइ एक रूप ।
तुम्भ बधरे लागन्ता मित्रद्रोह पाप ॥
एबे आम्भ चिह्न एहि नागेश्वरमाळा ।
एते बोलि लम्बाइले सुग्रीबंक गळा ॥ ३ ॥
शुणि कपिराज संग्रामकु हेले सज ।
संगे संगे घेनि अछन्ति श्रीराम राज ॥

छान्द १०—बालि-वध

राग–धनाश्री

भागकर सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर जा पहुँचा । श्रीरामचन्द्र उसके पास आ गये । वह न तो कोई बात करता था और न मुख को ऊपर उठा रहा था । उसने पृथ्वी की ओर देखते हुए, श्रीराम से अपना दुःख व्यक्त किया । १ मान तथा लज्जा से मिले-जुले मन में वह विचार करने लगा । तभी दशरथ के पुत्र श्रीराम ने उसको सांत्वना देते हुए कहा कि हे मित्र ! जाओ और एक बार फिर युद्ध करो । आज तुम समझ लो कि मैं उसे एक ही बाण से मार डालूंगा । २ मैं एक ही रूप के दो भाइयों में न पहचान सका और तुम्हारी मृत्यु से मुझे मित्र-द्रोह का पाप लगता । अब हमारा चिह्न यह नागेश्वर पुष्पों की माला है, ऐसा कहते हुए उन्होंने सुग्रीव के गले में माला पहना दी । ३ यह सुनकर वानरराज सुग्रीव, साथ में राजा रामचन्द्रजी को लिये हुए युद्ध के लिए तैयार होकर किष्किन्धापुर के द्वार पर जा पहुँचा । कुपित होकर

परबेश हेले किष्किन्ध्यार पुरद्वारे ।
कोपे सुग्रीब डाकइ आरे बाळी आरे ॥ ४ ॥
सुग्री बाणी शुणि बाळी हुअन्ते बाहार ।
तारा आगे ओगाळिण कहइ बिचार ॥
सोदर तुम्भर तांकु नुह तुम्भे बाम ।
शुणिछि अंगद मुखु साहा तांकु राम ॥ ५ ॥
हारि गला पुणि किम्पा लेउटि अइला ।
तुम्भे जेबे जिब तेबे प्रमाद होइला ॥
शुण प्रिये एबे मोते डाकुछि रणकु ।
एते बेळे प्रीति कले लाज आपणाकु ॥ ६ ॥
बोलइ जे रामताकु होइछन्ति साहा ।
अधर्मी नुहन्ति सेहि शुणिछि मुँ जाहा ॥
एते बोलि आसि सुग्री संगे रण कला ।
बेनि भाइंकर माल बन्धे जुद्ध हेला ॥ ७ ॥
देखिले सुग्रीब रणे होइला निसत ।
श्रीरामंकु चाहिँ करे पळाइबा चित्त ॥
राम तरु उहाड़ु प्रहारन्ते काण्ड ।
बज्र सम होइण पड़िला बाळी पिण्ड ॥ ८ ॥

ललकारते हुए सुग्रीव बोला, अरे बालि ! आ जा । ४ सुग्रीव की आवाज सुनकर बाहर निकलते हुए बालि के समक्ष आगे से आकर तारा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वह तुम्हारा छोटा भाई है । तुम उससे वैर न करो । मैंने अंगद के मुख से सुना है कि उसके सहायक श्रीरामचन्द्र हैं । ५ हारकर फिर ये क्यों लौट आया ? तुम यदि जाओगे तो प्रमाद हो जायेगा । बालि ने कहा, अरी प्रिये ! सुनो, अभी वह हमको युद्ध के लिए ललकार रहा है । इस समय यदि हम उससे प्रीति करेंगे तो हमारे लिए लज्जा की बात होगी । ६ वह बोला कि श्रीराम उसके सहायक बने हैं, पर जहाँ तक मैंने सुना है, वह अधार्मिक नहीं हैं । इतना कहकर, उसने जाकर सुग्रीव के साथ युद्ध किया । दोनों भाइयों का मल्लयुद्ध हुआ । ७ उसने देखा कि युद्ध में सुग्रीव अशक्त हो गया । वह श्रीराम की ओर ताककर भागने का मन कर रहा है । तभी वृक्ष की आड़ से श्रीराम के बाण के प्रहार से वज्र के समान बालि का शरीर गिर पड़ा । ८ सुग्रीव को

सुग्रीबकु छाड़ि देइ कपिन्द्र पड़िले ।
बेनि भाइ ताहार सम्मुखे उभा हेले ॥
बाम करे कोदण्ड दक्षिणे तीक्ष्ण शर ।
बोले बिशि लक्ष्मणंकु देइ भुजभार ॥ ९ ॥

एकादश छान्द

राग–भहिआरी पड़िताळ

हृदरे बाजिण शर, पड़िला से कपिबीर,
देखिला राम लक्ष्मण रूप ।
त्रिभुबन नाथ होइ, अनीति कल किम्पाइ,
मोते बिना दोषे कल एड़े कोप हे ॥ १ ॥
रघुनायक ! लुचि बिन्धिल किपाइँ एड़े शायक ।
मुँ जे शुणिथिलि तुम्भे बड बिबेक ।
इक्ष्वाकुकुळे लगाइल कळंक ॥ २ ॥
गजंकु बिन्धिले दन्त, गजमोति पाइथान्त,
सिंहकु बिन्धि दिशन्ता बळ ।

छोड़कर वानरों में इन्द्र के समान बालि पड़ा था । दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण उसके समक्ष खड़े हो गये । विशि कहता है कि श्रीराम के बायें हाथ में धनुष और दाहिने हाथ में तीक्ष्ण बाण था और लक्ष्मण के ऊपर अपनी भुजा रखकर वह खड़े थे । ९

छान्द—११

राग–महियारी पड़ताल

हृदय में बाण लग जाने से पराक्रमी वानर बालि गिर पड़ा । उसने श्रीराम और लक्ष्मण के रूप का अवलोकन करते हुए कहा कि तीनों लोकों के स्वामी होते हुए आपने किस कारण से ऐसी अनीति की ? मेरे बिना किसी अपराध के आपने हम पर इतना कोप किया ? १ हे रघुवंश के नायक ! आपने छिपकर किसलिए ऐसे बाण से प्रहार किया ? मैंने तो सुना था कि आप बड़े विवेकशील हैं ? आपने इक्ष्वाकु-कुल में कलंक लगा दिया ? २ यदि हाथी के दाँत को बेधते तो तुम्हें गजमुक्ता प्राप्त होता । यदि सिंह को मारते तो बल का प्रदर्शन

मृगकु बिन्धिले मृगमांस होइथान्ता भोग,
वृद्ध कपि बिन्धि कि लभिल फळ हे ।। ३ ।।
तेड़े कुळे जात होइ, एड़े अनीति किपाइँ,
क्षत्रिकर निकि ए बेभार ।
माता भ्राता संगे मुहिँ, समर करु थिलइँ,
तुम्भे किपाइँ मोते कल प्रहार हे ।। ४ ।।
आसिबा बेळरे तारा, लेउटाइ नेउथिला,
जाणि तुम्भ अबिबेक पण ।
मुँ बोइलि रामचन्द्र, धर्मकुळे जात होइ,
मोते अधर्म करिबे कि कारण हे ।। ५ ।।
श्रीराम बोलन्ति तांकु, नृप पेषिले आम्भंकु,
अधर्मीकु दण्ड देबा पाइँ ।
ज्येष्ठ भाइ होइ कनिष्ठ भाइ भारिजा,
हर ए पाप मने बिचार कर नाहिँ हे ।। ६ ।।
कपिराजन । एहि दण्डकु अट तुम्भे राजन ।
आउ दण्ड तुम्भंकु न देब शमन ।
बोले बिशि होइला से मउन हे ।। ७ ।।

होता । यदि मृग को मारते तो मृग-मांस का भोजन मिलता । इस वृद्ध वानर को मारकर आपको कौन सा फल प्राप्त हुआ ? ३ इतने बड़े कुल में जन्म लेकर ऐसी अनीति आपने किसलिए की ? क्या क्षत्रियों का यही व्यवहार है ? मैं तो अपने भाई के साथ युद्ध कर रहा था । आपने मुझ पर प्रहार क्यों किया ? ४ आने के समय आपका अविवेक समझकर तारा मुझे लौटा रही थी, परन्तु मैंने कहा कि रामचन्द्र धार्मिक कुल में उत्पन्न हुए हैं । वह किस कारण से मुझ पर अधर्म करेंगे ? ५ श्रीराम ने उससे कहा कि राजा दशरथ ने मुझे अधर्मी को दण्ड देने के लिए भेजा है । बड़े भाई होकर छोटे भाई की पत्नी का हरण कर लेने का पाप क्या तुमने अपने मन में नहीं विचारा । ६ हे वानरराज ! तुम्हारे लिए यही दण्ड है । यमराज तुम्हें और कोई अन्य दण्ड नहीं देगा । विशि कहता है यह सुनकर वह चुप हो गया । ७

द्वादश छान्द—तारा शोक

राग-कळसा बाणी

अन्त:पुरे तारा राणी बारता पाइ ।
रोदन करि अइला बिह्वळ होइ ॥
देखिला से बाळि होइ लाणि अबश ।
राम काण्ड लागिअछि हृदय देश ॥ १ ॥
चरण धरिण उच्चे रोदन कला ।
आहा प्राणनाथ छाड़ि गल बोइला ॥
तुम्भ अनुराग जाणिलि एतेकाळे ।
मो कोळ तेजि शोइल धरणी कोळे ॥ २ ॥
अनाथ सुग्रीब राम होइले नाथ ।
आम्भे एबे अनाथ हेलु कपिनाथ ॥
अति सुकुमार त अंगद कुमर ।
एहाकु काहाकु देल हे कपिबर ॥ ३ ॥
मो बोल न कला फळ लभिल एबे ।
सोदरे अनीति किम्पा होइल तेबे ॥
राम लक्ष्मण सहिते बानर बळ ।
पटोआरि समस्ते देखिण बिकळ ॥ ४ ॥

छान्द १२—तारा का शोक

राग-कलश

अंत:पुर में महारानी तारा समाचार पाकर व्याकुलता से रुदन करती हुई आ पहुँची। उसने देखा कि बालि अशक्त पड़ा है। राम का बाण उसके हृदय में लगा है। १ उसने पैर पकड़कर बड़ी जोर से रोते हुए कहा कि हे प्राणनाथ! आप मुझे छोड़कर चले गये। इस समय मैं आपके प्रेम को समझ गयी कि आप मेरी गोद को छोड़कर पृथ्वी की गोद में पड़े हैं। २ श्रीराम अनाथ सुग्रीव के नाथ बन गये और हे कपिनाथ! अब हम अनाथ हो गये। कुमार अंगद तो अत्यन्त सुकुमार है। हे कपिश्रेष्ठ! आपने इसे किसको प्रदान किया है? ३ मेरा कहना न मानने का फल इस समय आपको मिल गया है। आपने अपने भाई से अनीति क्यों की? राम-लक्ष्मण के सहित सम्पूर्ण वानरदल तथा अधिकारीगण देखकर व्याकुल थे। ४ बालि श्रीराम के मुख को देखकर

बाळि बोलइ श्रीराम मुखकु चाहिँ ।
अपराध क्षमा मोर कर गोसाइँ ।।
एकइ नन्दन मो अंगदकुमर ।
एबे एहा ठारे राम करुणाकर ।। ५ ।।
एते बोलि अंगद मुखकु चाहिँला ।
सुग्रीकि तु सेबु थिबु बोलिण बोइला ।।
सुग्रीकि कहिला राम कार्य्य करिब ।
हेळा कले ए मोर प्रायेक होइब ।। ६ ।।
जेउँ हेममाळा देइथिले बासव ।
ताहा बाळि दत्त कला सुग्रीब ग्रीव ।
माळा देइ पिण्डरु जीबन तेजिला ।
बहु जुबतींकर कारुण्य शुभिला ।। ७ ।।
पति मृत्यु देखि तारा बिकळ चित्त ।
बोलइ स्वामी संगते जिबि निश्चित ।।
एते बोलि स्वामी मुखे मुख लगाइ ।
शब आलिंगन करि शोइला भुइँ ।। ८ ।।
चरण धरिण से अंगद कुमर ।
बिकळे नयनु दहे नीरनिकर ।।
एमन्त बिकळ देखि सर्ब मर्कट ।
सुग्रीब हृदये हेला शोक प्रकट ।। ९ ।।

कहने लगा, हे नाथ ! हमारे अपराध क्षमा करें ? मेरा एक ही पुत्र अगद है । आप उस पर दया करें । ५ इतना कहकर उसने अगद के मुख की ओर ताकते हुए कहा कि तुम अब सुग्रीव की सेवा करते रहना । फिर उसने सुग्रीव से कहा कि तुम राम का कार्य करना । प्रमाद करने से तुम्हारी भी मेरे समान गति होगी । ६ इन्द्र की दी हुई जो स्वर्णमाला थी उसे उसने सुग्रीव के गले मे डाल दिया । माला देने के पश्चात् शरीर प्राण से निकल गये । अनेक युवतियों का करुण-क्रन्दन सुनायी देने लगा । ७ पति की मृत्यु देखकर व्याकुल-मन तारा कहने लगी कि मैं भी निश्चित रूप से पति के साथ प्रस्थान करूँगी । इतना कहकर वह अपने स्वामी के मुख में अपना मुख लगाकर शव को आलिंगन करके पृथ्वी पर लेट गयी । ८ अंगदकुमार ने व्याकुल होकर आँखों से आंसू बहाते हुए उसके पैर पकड़ लिये । यह देखकर समस्त

तारा जेबे जिबेटि स्वामीङ्क संगर।
आउ निकि जीइँबे अंगद कुमर॥
मुहिँ जेबे भ्राता सगरे न मरिबि।
अकीर्त्ति पाइण मही भोग करिबि॥ १०॥
एते बोलि बहुत करन्ते रोदन।
ताहा देखि बिचारन्ति रघुनन्दन॥
सुग्री जेबे भ्रात संगतरे मरिब।
आम्भ कार्य्य केमन्त प्रकारे होइब॥ ११॥
एमन्त बिचारि तांकु कहन्ति चाटु।
बिबिध प्रकारे कहि प्रबोध पटु॥
तेते बेळे मित ता न कल बिचार।
बोले बिशि एबे किपाँ शोक प्रचार॥ १२॥

त्रयोदश छान्द

राग—कामोदी

तारा कहइ बाणी शुण हे रघुमणि,
एड़े अधर्म किपाँ कल।
बनबासकु आसि, मोर पतिकु नाशि,
एथिरे कि जश पाइल हे।

वानरगण व्याकुल हो गये। सुग्रीव के हृदय में शोक प्रकट हो गया। ९ यदि तारा स्वामी के साथ चली जायेगी तो क्या अंगदकुमार जीवित रह सकेगा? यदि मैं भाई के साथ नहीं मरूँगा तो अपयश पाकर मैं इस पृथ्वी का भोग करूँगा। १० इतना कहकर उसे नाना प्रकार से क्रन्दन करता हुआ देखकर रघुनन्दन राम ने विचार किया कि यदि सुग्रीव भाई के साथ मर जायेगा तो हमारा कार्य किस प्रकार होगा। ११ ऐसा विचार करके प्रबोध प्रदान करने में चतुर श्रीराम ने उसे अनेक प्रकार से समझाते हुए कहा कि मित्र उस समय क्या आपने यह विचार नहीं किया था? विशि कहता है कि अब शोक क्यों कर रहे हैं? १२

छान्द—१३

राग—कमोदी

तारा ने कहा, हे रघुमणि! आपने इतना बड़ा अधर्म क्यों किया? वनवास में आकर मेरे पति को नाश करके आपको कौन सा यश मिला? हे रघुनाथ! आज मैं अनाथ हो गयी। मेरी इस

रघुनाथ । आज मुँ होइलि अनाथ ।
धिक धिक हे पण, धिक हे रघुराण,
धिक हे कोदण्ड भारत हे ।। १ ।।
तुम्भ अधर्मी पण, देखि हे रघुराण,
दशरथहिँ तहिँ देले ।
कैकेयी सुत भ्रत, अजोध्यारे राजत्व,
राजेन्द्र पण तांकु देले जे ।। २ ।।
तुम्भ उपर वंश, भगीरथ नरेश,
गंगांकु स्वर्गरु आणिले ।
कपिळ कोपानळे, दग्ध हुअन्ते काळे,
ढाळि शीतळ तांकु कले हे ।। ३ ।।
पूर्बे मुँ शुणिथिलि, बड़ धार्मिक बोलि,
एबे देखिलि बड़ मन्द ।
एड़े प्राकर्म जेबे, बहिछ भुजदण्डे,
किम्पां हरिला दशकन्ध हे ।। ४ ।।
राम बोलन्ति सती, मोर दोष नाहिँटि,
तांक अधर्मे सेहि मले ।
ज्येष्ठ भाइ होइण, कनिष्ठ भारिजाकु,
बळत्कार पणे हरिले गो ।। ५ ।।

अवस्था को धिक्कार है। हे रघुराज ! तुम्हें धिक्कार है और इस भार-स्वरूप धनुष को धिक्कार है। १ हे रघुराज ! तुम्हारे अधार्मिकपन को देखकर राजा दशरथ ने अयोध्या का राज्य तुम्हें न देकर कैकेयी-नन्दन भरत को सौंप दिया। २ तुम्हारे पूर्वपुरुष महाराज भगीरथ गंगा को स्वर्ग से लाये। कपिल मुनि के क्रोध की आग में जलते हुए अपने पूर्वजों पर गंगाजल डालकर उन्हें शीतल कर दिया अर्थात् तार दिया। ३ पहले मैंने सुना था कि आप बड़े धार्मिक हैं, परन्तु अब मैंने देखा कि आप बड़े मूर्ख हैं। यदि तुम्हारे भुजदंडों में इतना पराक्रम था, तो रावण सीता को कैसे हर ले गया ? ४ राम ने कहा, हे सती ! मेरा अपराध नहीं है। अपने अधर्म के कारण ही उसकी मृत्यु हुई है। बड़े भाई होकर उसने अपने छोटे भाई की पत्नी को बलात्कार से हरण कर लिया था। ५ हे महासती ! आज मैं दुर्गति को समाप्त कर दूंगा।

महासती ! आज मुँ फेड़िबि दुर्गति ।
अउषधि देइण, रखिबि तार प्राण,
सचेत होइ उठि बसि ।
राम मुखकु चाहिँ, कहइ बिकळाइ,
शुण धार्मिक रघुबंशी ।
हे रघुनाथ ! आज मुँ होइलि कृतार्थ ।
तुम्भ हस्ते मरण, पाइ हे रघुराण,
जाउछि बइकुण्ठ पथ ।। ६ ।।
एते बोलिण बाळि, गड़िला महीस्थळी,
अन्तरीक्षरे प्राण गला ।
बोलइ बिशि शुण, देख बाळि मरण,
बैकुण्ठपुररे मिळिला ।।
हे रघुनाथ ! आज मुँ होइलि कृतार्थ ।
धिक धिक इत्यादि ।। ७ ।।

चतुर्दश छान्द
राग–भैरव सरिमान

सखे सुग्रीब शोक संहर एबे
मन किपा करुअछ बिकळ ।
आम्भ तूणीभार शर अनिबार
काळदेबर अटन्ति एहि काळ ।

औषधि देकर उसके प्राणों की रक्षा करूँगा, तभी बालि सचेत होकर उठ बैठा । वह व्याकुल होकर श्रीराम के मुख को ताकते हुए बोला; "हे धार्मिक रघुवंशी राम ! सुनो । आज मैं कृतार्थ हो गया । हे रघुनाथ ! आपके हाथों से मरकर मैं वैकुंठ को जा रहा हूँ ।" ६ इतना कहकर बालि पृथ्वी पर लुढ़क गया और उसके प्राण अंतरिक्ष में चले गये । विशि कहता है, सुनिये ! मरने पर बालि को स्वर्ग मिला । हे रघुनाथ ! आज मैं कृतार्थ हो गया । धिक्कार है, धिक्कार है —इत्यादि । ७

छान्द—१४
राग–भैरव

हे मित्र सुग्रीव ! अब शोक को समाप्त करो । मन को दुःखी क्यों कर रहे हो ? मेरे तरकश से निकला हुआ बाण अमोघ है । वह काल

कि सखे हे। शीघ्रे बाळिकि कर दहन।
आम्भे आज्ञा देउअछुँ,
आगो तारा एबे मुञ्च तुम्भर रोदन ॥ १ ॥
अंगदकु घेनि एबे मित्र संगे रंगे
भोग कर किष्किन्ध्या-कटक।
श्रीराम आज्ञारे तारा कोळुँ आणि
बाळि बसाइले रत्न - बिमानेक ॥ २ ॥
बिबिध बाद्य बजाइ बाळि पिण्ड
कले नेइ शीघ्रे अनळे दहन।
अंगद मुखाग्नि देइ बाळि मुखे,
स्नान करि पूत होइ अइले बहन ॥ ३ ॥
बाळि दाह सारि सर्ब कपि मिळि
सुग्री संगे कले रामंकु दर्शन।
हनुकु चाहिँ श्रीराम आज्ञा देले
अभिषेक कराअ सुग्रीब राजन ॥ ४ ॥
बाळिकुमरकु कर जुबराजा,
समस्त बानरमाने कर पूजा।
रामचन्द्र आज्ञा पाइ सर्बबळ
आनन्दरे बजाइले बीर बाजा ॥ ५ ॥

का भी काल है। हे सखे ! अब शीघ्र ही बालि का दाह-संस्कार करो। मैं आज्ञा दे रहा हूँ। हे तारा ! अपना रुदन त्याग दो। १ अंगद को साथ लेकर अब किष्किन्धा दुर्ग में मित्र सुग्रीव के साथ रसमयी क्रीड़ायें करो। श्रीराम की आज्ञा से तारा की गोद से लाकर बालि को एक रत्न के बिमान में बिठाया गया। २ नाना प्रकार के बाजे बजाकर बालि का मृत शरीर शीघ्र ही अग्नि में दहन कर दिया गया। अंगद ने बालि के मुख में मुखाग्नि देकर स्नान किया और शीघ्रता से आ गये। ३ बालि का दाह-संस्कार समाप्त करके सुग्रीव के साथ सारे बानरों ने श्रीराम का दर्शन किया। हनुमान की ओर देखकर श्रीराम ने सुग्रीव का अभिषेक करके राजा बनाने की आज्ञा दी। ४ उन्होंने कहा कि बालिनन्दन अंगद को युवराज बनाकर सभी बानरगण उनकी पूजा करें। श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर सम्पूर्ण बानरदल ने आनन्द से बीर-वाद्य बजाये। ५

श्रीराम बोलन्ति आहे कपिराज
एबे बरषाऋतु हेला प्रबेश ।
तुम्भे हेळा न करिब आम्भ कार्य्यें
आम्भे माल्यबन्ते बंचु बेनि मास ॥ ६ ॥
हेउ देब बोलि सुग्रीब सहिते
सर्बसेनामाने शिरे कर देले ।
बोले बिशि लक्ष्मण संगरे घेनि
रामचन्द्र माल्यबन्ते बिजे कले ॥ ७ ॥

पञ्चदश छान्द—सुग्रो अभिषेक

राग–केदार (गोपजीबन बृत्ते)

श्रीराम श्रीमुखु शुणि, कपिकुळ-चूड़ामणि,
किष्किन्ध्या कटके परबेश ।
सकळ तीर्थर जळ आणिले बानर बळ,
कले हेमकुम्भे अधिबास से ।
कपिराजन । अंगदकु घेनि अधिबास,
नृत्य गीत करिबारे निशि शेष ॥ १ ॥
निजे हेम सिंहासन, कपिकुळ राजन,
अंगदकु बसाइ कोळरे ।

श्रीराम ने कहा, हे कपिराज सुग्रीव ! अब बर्षाऋतु आ गयी है। तुम हमारे कार्य में प्रमाद न करना। हम माल्यवंत पर्वत पर दो महीने व्यतीत करेंगे। ६ हे देव ! ऐसा ही हो, कहकर सुग्रीव के सहित सम्पूर्ण सेना ने अपने हाथ सिर से लगा लिये। विशि कहता है कि लक्ष्मण को साथ लेकर श्रीरामचन्द्र माल्यवंत पर्वत पर चले गये। ७

छान्द १५—सुग्रीव का अभिषेक

राग–केदार (गोपजीवन की धुन)

श्रीराम के मुख से यह सुनकर कपिकुलचूड़ामणि सुग्रीव किष्किन्धा-दुर्ग में प्रविष्ट हुआ। वानरदल सभी तीर्थों का जल लाये और स्वर्ण-कलश से उन्हें स्नान कराया। कपिराज सुग्रीव अंगद को साथ लेकर अधिवास में रहे। नृत्य-गीतों में रात्रि समाप्त हो गयी। १ सुग्रीव स्वयं

करे जळ अभिषेक, कले ब्राह्मण अनेक,
श्वेतछत्र धराइ शिररे से।
कपिराजन। बेनि पाशरे बेनि चामर,
खटिछन्ति कपिबर निरन्तर ॥ २ ॥
बाजइ बिबिध बाद्य, शुभइ स्वर्गकु नाद,
नृत्य करुछन्ति बार नारी।
तारा रोमा बेनि पाशे, आबर नारी बिशेषे,
सम्पदरे सुनासीर सरि से।
कपिराजन ! बढ़ाइण जळ अभिषेक,
अंग पोछि मण्डि होइले कनक ॥ ३ ॥
मुकुट कुण्डळ चूळ, बाहुटि अंगद माळ,
चापसरि दोसरि पदक।
नूपुर बेनि चरण, दिव्यमणि रत्नगण,
अंगरे मंडिले से अनेक।
कपिराजन। नबतन कनक बसन,
पिन्धि बिजे कले कपिक राजन ॥ ४ ॥
अंगद जे एहि बेशे, बिजे सुग्री अग्रदेशे,
सर्बसेना बिजे एके एके।
अमूल्य भूषणगण, समस्त कपिभूषण,
शोभा दिशन्ति इतर लोके।

वानरदल के स्वर्णिम राज्यसिंहासन पर अंगद को अपनी गोद में लेकर बैठे। अनेक ब्राह्मणों ने श्वेत छत्र उनके सिर पर लगाकर जल से उनका अभिषेक किया। कपिराज के दोनों ओर श्रेष्ठ वानर बराबर चँवर डुलाने लगे। २ अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे जिनका शब्द स्वर्ग तक सुनायी दे रहा था। वेश्याएँ नाच रही थी। तारा और रोमा दोनों ओर थीं। अन्य विशेष प्रकार के स्त्रीरत्नों से वह इन्द्र की समता कर रहा था। कपिपति ने जलाभिषेक समाप्त करके अपने अंग पोंछकर आभूषण धारण किये। ३ मुकुट, कुण्डल, बाजूबन्द, माला, दो लड़ीवाली पदकयुक्त जंजीर, दोनों चरणों में नुपूर, दिव्य मणियों और रत्नों से नाना प्रकार से उसने अपने अंगों को सजाया। कपिराज युवा शरीर में पीले रंग के वस्त्र पहनकर वहाँ विराजमान हो गया। ४ अगद भी इसी वेष में सुग्रीव के सामने विराजमान था। सम्पूर्ण सेना के सारे श्रेष्ठ वानर अमूल्य भूषण

कपिराजन । बिजय जे श्वेतछत्र तळे,
बेनि पुच्छ बेनि पाखशरे लुळे ॥ ५ ॥
तारा रोमा बेनिपाश, होइण दिव्य सुबेश,
सुग्रीब बेनि पारुशे दिशे ।
शुक्ल अश्विन रोहिणी, पूर्णिमी तिथि
रजनी, उदय शुकळशशी दिशे ।
कपिराजन । पुष्पवृष्टि करन्ति तरुणी,
बन्दापना कले कपिचूड़ामणि ॥ ६ ॥
दर्शन करन्ति आसि, ऋक्ष कपिमाने मिशि,
निउछाळि करिण चरणे ।
द्विजे देले बहु दान, बस्त्र अळंकार धन,
सन्तोष कराइ जणे जणे ।
कपिराजन । बढ़ाइण जळ अभिषेक,
सुखे भोग कले किष्किन्ध्या कटक ॥ ७ ॥
तारा घेनि अन्तःपुर, सुखे करइ बिहार,
पाशोरिले मनु सर्ब दुःख ।
मधुपाने होइ मत्त, कराइण नृत्यगीत,
भोग करइ बिपुळ सुख ।

धारण किये हुए थे । उनकी शोभा अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रही थी । श्वेत-छत्र के नीचे वानरराज विराजमान थे । दोनों की पूँछें दोनों ओर झूल रही थीं । ५ सुन्दर वेष धारण किये हुए रोमा और तारा सुग्रीव के दोनों ओर दिखाई दे रही थीं । लगता था जैसे शुक्लपक्ष की पूर्णिमा तिथि की रात्रि में अश्विनी और रोहिणी नक्षत्र रुपहले चन्द्रमा के साथ उदित हुए दिखाई दे रहे हो । युवतियाँ फूलों की वर्षा करके श्रेष्ठ कपिराज की आरती उतार रही थीं । ६ रीछ और वानर मिलकर चरणों की बलइयाँ लेते हुए आकर कपिराज के दर्शन कर रहे थे । ब्राह्मणों को अनेक दान दिये गये । वस्त्र-आभूषण और धन से एक-एक को संतुष्ट किया गया । कपिराज सुग्रीव जलाभिषेक समाप्त करके सुखपूर्वक किष्किन्धादुर्ग में रमण करने लगे । ७ तारा को लेकर अंतःपुर में सुखपूर्वक विहार करते हुए वह मन के सारे दुःख भूल गये । वह मधुपान करके उन्मत्त होकर, नृत्य-गीत आदि करवाकर महान सुख

कपिराजन। मनोबाञ्छा होइला सम्पूर्ण,
बोले बिशि सम्पद पाइ अज्ञान ।। ८ ।।

षोडश छान्द—माल्यबन्त आरोहण

राग—आशावरी

माल्यबन्त गिरि शिखरे उठिण बुलिण राम प्रशंसा कले ।
देख लक्ष्मण ए गिरि स्तिरी प्राय मनकु मोर अबश करे ।
हे लक्ष्मण ! देख देख तमाळ । गिरिनारीकर कि कुचकुळ ।। १ ।।
प्रफुल्ल पुष्प बाहुलतिका शृङ्ग उच्च कुच शोभादिशे ।
नबीन पल्लब, कि करपल्लब, रंगशीलता अधर कि से ।
हे लक्ष्मण। हेम प्रायेक कान्ति, स्थूळशिळरे ए नितम्बबती ।। २ ।।
मृगलोचनी केशरी कटि देश, कोकिळभाषी ए बरांगने ।
गजगामिनी सुकुन्तळकामिनी, बिबिध रंगरे शिळमाने ।
हे लक्ष्मण ! कुन्दपुष्पदशना, रम्भोरु बिपुळ स्थूळजघना ।। ३ ।।
रंग शुकळ धरिबारे ए गिरि बसन पिन्धिबा प्राय दिशे ।

से भोग करने लगे। वानरराज की सम्पूर्ण मनोकामनायें पूरी हो गयी। बिशि कहता है कि ऐश्वर्य पाकर उसका ज्ञान लुप्त हो गया। ८

छान्द १६—माल्यवंत-आरोहण

राग—असावरी

माल्यवंत पर्वत के शिखर पर चढ़कर टहलते हुए श्रीराम ने प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण से कहा कि यह पर्वत स्त्री के रूप में मेरे मन को विवश कर रहा है। हे लक्ष्मण ! देखो यह तमाल के वृक्ष क्या इस पर्वतरूपी नारी के स्तन हैं। १ खिले हुए पुष्पों की लता बाँहें हैं और शिखर उठे हुए कुच के समान सुन्दर दिखाई दे रहे हैं। नवीन पत्ते क्या इसके हाथ हैं? और वह लालिमा इसके अधर है। हे लक्ष्मण ! स्वर्ण की कांतिवाली बड़ी-बड़ी शिलाओं से यह नितम्बवती हो गयी है। २ मृग के समान नेत्र वाली सिंह के समान कमरवाली, कोयल के समान बोलनेवाली यह श्रेष्ठ स्त्री नाना प्रकार के रंगवाली शिलाओं से सुन्दर सजे हुए बालोंवाली, कामिनी हाथी के समान गमन करनेवाली हैं। हे लक्ष्मण ! कुन्द-पुष्प के समान इसके दाँत हैं और केले के समान इसकी स्थूल जाँघें हैं। ३ श्वेत रंग धारण करने के कारण यह पर्वत वस्त्र पहने के समान दिखाई पड़ रहा है। देखो इस पर्वत की गुफा पाषाण के घर के समान दिखाई

देख गिरिक्रोट प्रकट होइछि पाषाण सउप प्राय कि से ।
हे लक्ष्मण ! सेहि क्रोटरे बास, बञ्चिबा ए बरषा बेनि मास ।। ४ ।।
क्रोटे रहि धनु तूणीशर थोइ बिबिध फळ मणोहि कले ।
घनमाळा कोळे बिजुळिकि चाहिँ मनरे बहु आरत हेले ।
हे लक्ष्मण ! काहिँथिबे जानकी, जीइथिबे आउ पाइबानिकि ।। ५ ।।
असुरे ताहांकु न खाइण भोग न करिण कि से रखिथिबे ।
केउँ दिन आम्भ काण्ड हुताशरे से भस्मराशि होइ जिबे ।
तांकु लक्ष्मण कहे प्रबोधिबा, बोले बिशि सीता पतिबरता ।। ६ ।।

सप्तदश छान्द

राग–कळशा

देख हे लक्ष्मण आसिण ए घन गगन गोडाइ देला ।
जळधाराचय धनञ्जय जय करिण मही पुरिला ।
आहे लक्ष्मण प्रखर चक्रपवन ।
बारिदकाळरे बारिनुहेँ एबे निशा दिबसर भिन्न ।। १ ।।
सउदामिनी कामिनी कोळे घेनि आरोहिछि नीळगज ।
सैन्य घेनि महा सम्भारे बिजय करिछि जळदराज

दे रही है । हे लक्ष्मण ! उसी गुफा में रहकर हम इस वर्षाऋतु के दो महीने व्यतीत करेंगे । ४ गुफा में पहुँचकर धनुष-बाण और तरकश रखकर नाना प्रकार के फल खाये । मेघमाला के अंक में बिजली को देख कर वह मन में बहुत दुःखी हो गये । हे लक्ष्मण ! जानकी कहाँ होगी ? यदि जीवित होंगी तो उसे और कैसे प्राप्त करेंगे ? ५ राक्षस ने उसे न खाकर तथा उसका उपभोग न करके क्या उसे रखा होगा ? किसी दिन हमारे बाण की आग में वह जलकर राख ही जायेगा । बिशि कहता है कि सीता पतिव्रता है, इस प्रकार कहकर लक्ष्मण उन्हें समझाने लगे । ६

छान्द—१७

राग–कलश

हे लक्ष्मण ! देखो, यह बादल आकाश में भर गये । इन्द्र ने जलधारा से विजय प्राप्त करके पृथ्वी को तेज चक्कर काटनेवाली हवाओं से भर दिया । वर्षाकाल में पता नहीं चल पाता कि अभी दिन है अथवा रात । १ हे लक्ष्मण ! बिजली रूपी कामिनी को गोद में लिये हुए

आहे लक्ष्मण। गिळि देउअछि गिरि।
ए गिरि सहिते गिळिले आम्भंकु ओडारु हुअन्ति पारि॥ २॥
बककुळ मोतिमाळ प्राय देख सर्बाङ्गे होइछि मण्डि।
दशने महाभयद कराउछि आसे कि बिरही दण्डि।
आहे लक्ष्मण। फणीङ्क मणि उज्ज्वळे।
महाराज दिगबिजय समये मर्कत दिहुड़ि कि जळे॥ ३॥
धराउछि पुण्डरीक छत्र चय मयूरपुच्छ तरास।
माळती कुसुम निकर चामर ढाळुछन्ति चउपाश।
आहे लक्ष्मण! धरि शक्रशरासन।
वृष्टि करुअछि जळधारा शर कराइण तीक्ष्ण मुन॥ ४॥
केतकी केतन प्राय शोभाबन बीरबाद्य घड़घाड़।
बज्राघात गिरि शिखरे करन्ते पडुछन्ति शिळे झड़ि।
आहे लक्ष्मण! काहाळी फणिक बाणी।
जळजन्तुचय प्रबळ शबद मउन कोकिळ शुणि॥ ५॥
शिखी बारांगना करुछन्ति नृत्य संगीत करे डाहुक।
भाट परायक ए बार करन्ति सकळ दिगरे भेक।

मेघराज नीले हाथी पर बैठकर सेना को साथ लिये हुए बड़े ठाट-बाट से उपस्थित होकर इस पर्वत को निगल रहा है। इस पर्वत के साथ यदि यह हमें भी खा जाता तो पीड़ा से मुक्ति मिल जाती। २ बगुलों का समूह मोतियों की माला के समान देखो! इसके सर्वांग को सुशोभित कर रहा है। देखने में बड़ा भयदायक है। क्या यह विरही को दण्ड देने के लिए आ रहा है? हे लक्ष्मण! सर्पों की उज्ज्वलमणि इस प्रकार लग रही है जैसे महाराज के दिग्विजय के समय में मरकतमणि की दियट पर दिया जल रहा हो। ३ पुण्डरीक तथा मोर की पूंछ का छत्र लगा है। मालतीपुष्पों का समूह चारों ओर चँवर डुला रहा है। हे लक्ष्मण! इन्द्रधनुष लेकर वह तीखी नोकोंवाले बाणों के समान जलधारा की वृष्टि कर रहा है। ४ केतकी-ध्वज के समान शोभित हो रही है। गर्जना वीरवाद्य है। गिरि के शिखर पर वज्राघात करते ही शिलाएं झड़कर गिर जाती हैं। हे लक्ष्मण! साँपों की सीटी पिपिहरी के समान बज रही हैं जिसे सुनकर जल-जन्तु के समूह के प्रबल शब्द सुनकर कोयल मौन हो जाती है। ५ मयूर वेश्याओं के समान नृत्य कर रहे है। डाहुक पक्षी संगीत गाता है। भाट के समान चारों ओर मेंढक शब्द कर रहे हैं। हे लक्ष्मण! चातक का

आहे लक्ष्मण ! चातक दु:खकु खण्डे ।
कदम्ब कादम्ब पुष्पबती होइ चन्द्रातप कि से मण्डे ।। ६ ।।
ए घनकाळरे थाइ मो कोळरे डरु जे थाइ जानकी ।
ए घन स्वन शुणिण अबिच्छन्न जीबनरे थिब निकि ।
आहे लक्ष्मण । बिद्युकु करइ भीति ।
चमकि मो अंगरे लीन हुअइ प्रेमशीळा रसबती ।। ७ ।।
पृथिबी बोलिबे मोर नन्दिनीकि रखि न पारिले राम ।
तपन बोलिबे शशधर प्राय लगाइबे मोते श्याम ।
आहे लक्ष्मण । ऋषिमाने कि बोलिबे ।
ऋषिनन्दिनीकि संगते न देखि रोष निकि न करिबे ।। ८ ।।
आम्भंकु मुरुछि न पारि जानकी अइले घोर बनकु ।
काळबेळ जाणि सेबा करिथान्ति टाकिण मोर मनकु ।
आहे लक्ष्मण । मृगयाकु जाइथिले ।
जिबा पथकु अनुसरि शरीरे जीबन न थाइ भले ।। ९ ।।
कान्ता गुण गुणि पुणि रघुमणि नयनु बहइ नीर ।
चरण चापिण प्रबोधि बचन कहन्ति लक्ष्मण बीर ।

दु:ख नष्ट हो रहा है । कदम्ब सुर से मदमाती पुष्पावली से मानों विमान सजा रहा है । ६ इस वर्षाकाल में जानकी मेरी गोद में हृदय से लगी रहती थी । यह घन-गर्जन सुनकर उसका जीवन क्या अविच्छिन्न न होगा ? हे लक्ष्मण ! बिजली से डर जाती थी और चौंककर वह रसवती प्रेमशीला मेरे शरीर में चिपक जाती थी । ७ पृथ्वी कहेगी कि राम मेरी पुत्री को न रख सके । सूर्य निन्दा करके चन्द्रमा के समान मुझ पर कलंक लगायेंगे । हे लक्ष्मण ! ऋषि लोग क्या कहेंगे ? ऋषिनन्दिनी को साथ में न देखकर क्या वे क्रोध नहीं करेंगे ? ८ हमें छोड़ न सकने के कारण जानकी घोर जंगल में आयी । समय-समय पर वह मेरे मन के अनुकूल मेरी सेवा करती रहती थी । हे लक्ष्मण ! आखेट के लिए जाने पर वह निर्जीव के समान हमारे गतिपथ को देखती रहती थी । ९ पत्नी के गुणों का बार-बार चिन्तन करते हुए रघुकुलमणि श्रीराम के नेत्रों से जल बहने लगा । पराक्रमी लक्ष्मण उनके चरण दबाते हुए उन्हें प्रबोधित कर रहे थे । जिसे सुनकर श्रीराम ने मोह का परित्याग

शुणि श्रीराम ! कथने तेजिले मोह ।
बोलइ बिशि केते दिन अन्तरे शेष हुए जळबाह ॥ १० ॥

अष्टादश छान्द—रामंक शोक

राग–गुज्जरी खेमटा

माल्यबन्त शिखे रघुमणि । बिकळे जानकी गुण गुणि ।
चोराइ नेला मो प्राणबल्लभीकि से दुष्ट सपतसिन्धु जिणि ।
गो बइदेही ! तु त रहिलु दरिआ पारि होइ गो ।
तोर मुखकु चन्द्रमा सरि नोहि गो ॥ १ ॥
मेघमाळ माने मेघे जाअ । जे जाहा देशरे रहिथाअ ।
सीतांक रूपकु केते बाहुनिबि, झुर झुर क्षीण हेला देह गो ॥ २ ॥
अनेक देशर दण्डधारी । आसिथिले तोते आश्रे करि ।
तोहर मनकु केहि न अइले, बरमाळा देइ मोते बरि गो ॥ ३ ॥
केते दिन बसि बिशवकर्मा, गढ़ि थिले तोर रूप सीमा ।
चरण ठारु अंगुळि परिजन्ते बर्णि न पारिबे हर ब्रह्मा गो ॥ ४ ॥

कर दिया । विशि कहता है कि कुछ दिनों में वर्षा समाप्त हो जायेगी । १०

छान्द १८—श्रीराम का शोक

राग–गुर्ज्जरी (खेमटा)

माल्यवंत पर्वत के शिखर पर रघुमणि श्रीराम व्याकुल होकर सीता के गुणों का वर्णन करते हुए बोले कि उस दुष्ट ने सप्तसागरों को जीतकर मेरी प्राणवल्लभा सीता को चुरा लिया । हे वैदेही ! तुम तो सागर के उस पार रह रही हो । तुम्हारे मुख की समानता में चन्द्रमा भी नहीं आता । १ हे वारिदसमूह ! तुम आकाश में चले जाओ और सब अपने-अपने स्थान पर जाकर रहो । सीता के रूप को मैं कैसे भूल जाऊँ ! यह देह अश्रुभरण से क्षीण हो गई है । २ तुम्हें पाने की लालसा से अनेक देशों के महिपाल आये थे । तुम्हारे मन को कोई भी नहीं रुचा । तुमने वरमाला देकर मुझे वरण किया । ३ विश्वकर्मा ने कितने दिनों बैठकर तुम्हारी रूप-सीमा को गढ़ा था । चरण से लेकर उंगली पर्यन्त शोभा का वर्णन भी शिव और ब्रह्मा नहीं कर पाएँगे । ४ श्रीरामचन्द्र की व्याकुलता को सुनकर लक्ष्मण ने कहा, हे देव !

श्रीरामचन्द्र व्याकुळ शुणि, आकुळे लक्ष्मण बोले बाणी ।
काहिँ पाइँ देब करुअछ चिन्ता, निश्चय पाइब ठाकुराणी हे ।
सीताकान्त ! छार असुर कि एड़े बळबन्त हे ।
बोले बिशि शुणि राम तोष चित्त हे ।। ५ ।।

एकोनविंश छान्द

राग—रामकेरी

सुग्री राजसम्पद पाइ करइ बड़भोग ।
तारा राणीरे बढ़ाइला से महा अनुराग ।। १ ।।
न जाणइ खरा बरषा अन्तःपुररे पशि ।
करे बिबिध केळिरंग घेनिण चारुकेशी ।। २ ।।
एक दिने अस्थान करि बिजे सुग्रीबराज ।
देखिले मंत्री माने तांकु बळि बळिरु तेज ।। ३ ।।
दर्शन करि कपि सेना माने जे उभा हेले ।
जार जेतेक कथा थिला सकळ जणाइले ।। ४ ।।
साबधान होइण कपि समस्त कथा शुणि ।
जाहा जेमन्ते उचित तेन्हे कहइ बाण ।। ५ ।।

आप चिन्ता क्यों कर रहे हैं ? निश्चय ही महारानी सीता हमें मिल जायेंगी । हे सीताजी के नाथ ! क्या वह तुच्छ दानव इतना बलवान है ? विशि कहता है कि यह सुनकर श्रीराम का मन सन्तुष्ट हो गया । ५

छान्द—१९

राग—रामकेरी

राज्य और सम्पत्ति प्राप्त करके सुग्रीव महारानी तारा से अत्यन्त प्रीति बढ़ाकर वैभव का भोग करने लगा । १ वर्षा तथा गर्मी का उसे ज्ञान नहीं रहा । अन्तःपुर में प्रवेश करके मनोहर बालोंवाली तारा के साथ वह नाना प्रकार की रंगरेलियाँ करने लगा । २ एक दिन राजा सुग्रीव सिंहासन पर विराजमान था । मंत्रियों ने उसके तेज को देखा जो बालि से भी अधिक था । ३ दर्शन करने के पश्चात् वानर-सेना खड़ी हो गई । जिसकी जो भी बातें थीं उससे निवेदित कीं । ४ सावधान होकर उसने समस्त कपियों की बातें सुनीं । और जिसको जैसा उचित था उसे वैसा ही कहा । ५ सम्पत्ति के मद में वह सब कुछ भूल गया, यद्यपि श्रीराम के कारण

सम्पदरे मत्त होइला से सबु पासोरिण ।
राम सकाशुँ होइअछि सुग्रीब पूर्णकाम ॥ ६ ॥
मन्त्रीबर हनुमन्त जे एहि समये कहे ।
एकइ कथाकु भो देब मते हुअइ भये ॥ ७ ॥
बरषाऋतु शेष होइ हुए शरदकाळ ।
श्रीरामंकु कंट करिण देब होइल भोळ ॥ ८ ॥
परोपकार महापुण्य करिले स्वर्गपाइ ।
प्रति उपकार न कले बहुत पाप होइ ॥ ९ ॥
राम तुम्भ संगे मइत्र होइ ए सुख देले ।
तुम्भे तांकु मना न कल माल्यबंतकु गले ॥ १० ॥
जेउँ कंटकरि थिल इँ सेहि हेलाणि पारि ।
शुणि ता चकित होइले सुग्रीब दण्डधारी ॥ ११ ॥
आहे हनु भल कहिल मोहर नाहिँ मने ।
आम्भर उलरी लगान्तु एबे जे कपिमाने ॥ १२ ॥
एते बोलि कपिराजन कपिसेनाकु चाहिँ ।
चारि दिगकु जाअ एबे आम्भर आज्ञा पाइ ॥ १३ ॥
महीरे जेते ऋक्ष कपि सबकु आस घेनि ।
पंचदश दिने नइले छेदिबइँ मूर्द्धनी ॥ १४ ॥

ही उसकी सारी कामनाएँ पूरी हुई थीं । ६ इसी समय श्रेष्ठ मंत्री हनुमान ने कहा, हे देव ! मुझे एक ही बात से डर लग रहा है । ७ वर्षा-ऋतु समाप्त हो गयी और शरदऋतु आ गयी परन्तु आपने श्रीराम के कष्ट को भुला दिया । ८ परोपकार करने से बड़ा पुण्य तथा स्वर्ग की प्राप्ति होती है । प्रति-उपकार न करने से बहुत पाप लगता है । ९ राम ने आपके साथ मित्रता करके आपको यह सुख दिया है । अब आप उन्हें माल्यवत पर्वत पर जाने से मना नहीं किया । १० जो कष्ट आपको था उससे तो आप उबर गये । यह सुनकर राजा सुग्रीव आश्चर्य में पड़ गये । ११ हे हनुमान ! आपने ठीक कहा । मैं तो भूल ही गया था । अब हमारे वानर लोग पता लगायें । १२ इतना कहकर वानरों के राजा सुग्रीव ने सेना की ओर देखते हुए कहा कि अब हमारी आज्ञा पाकर तुम लोग चारों दिशाओं में जाओ । १३ पृथ्वी पर जितने भी वानर और भालू हैं, उन सबको ले आओ । पांच दिनों के अन्दर न आने पर मैं तुम्हारा सिर काट डालूँगा । १४ आज्ञा पाकर वानर-दूत चारों

आज्ञा पाइँ बानर दूते चउदिगकु गले ।
जाहाकु जेउँ रूपे आज्ञा सनमत से कले ।। १५ ।।
आस्थान भांगिण सुग्रीब अन्त:पुररे पशे ।
बोले बिशि तारा आसिण खटे सुग्रीब पाशे ।। १६ ।।

विंश छान्द

राग–बंगळाश्री

बरषा अन्ते माल्यबन्ते स्फटिकशिळारे बिजय हरि ।
लक्ष्मण मृगया बिजय करन्ते प्रबेश हुए शर्बरी ।। १ ।।
पूर्ण शरद सुधाकर देखिण दशरथंकनन्दन ।
बेनि लोचनु अश्रुधारा बहइ चिन्ति प्रियार बदन ।। २ ।।
आहारे जनकनन्दिनी जानकी तो प्राय सुन्दरी नाहिँ ।
जुवती अमूल्य रतन हराइ लोड़िले पाइबि काहिँ ।।
जोषामणि आरे जामिनी शेषरे बसु जे उन्निद्र होइ ।
अपह्नुडकाळे मोहर श्रीमुख दर्शन करिबा पाइँ ।। ३ ।।
एबे काहा मुख प्रभाते चाहिँबु कहिबु काहाकु हसि ।
शरद शशी देखाइ देउथिबु काहार अंकरे बसि ।।

दिशाओं में गये और जैसे भी हो सका सबसे आज्ञा बता दी । १५
सभा भंग करके सुग्रीव अन्त:पुर में प्रविष्ट हुआ । विशि कहता है
कि तारा आकर सुग्रीव के पास उसकी सेवा करने लगी । १६

छान्द—२०

राग–बंगलाश्री

वर्षा के समाप्त होने पर माल्यवंत पर्वत की स्फटिक-शिला पर श्रीराम विराजमान थे । लक्ष्मण के आखेट पर जाने के समय रात हो गयी । १ दशरथनन्दन श्रीराम शरद-ऋतु के पूर्णचन्द्र को देखकर प्रिया के मुख का चिन्तन करते हुए दोनों नेत्रों से अश्रुधारा बहाने लगे । २ हा जनकनन्दनी जानकी ! तुम्हारे समान कोई सुन्दरी नहीं है । अमूल्य कामिनी-रत्न को खोकर, अब खोजने पर कहाँ मिलेगी ? हे स्त्रियों में मणि के समान सीते ! रात बीतने पर तुम प्रभातकाल में मेरे मुख का दर्शन करने के लिए जागकर बैठी रहती थी । ३ अब प्रभातकाल मे किसका मुख देखूँगा ? और किससे हँस-हँस कर बातें करूँगा ? किसकी गोद में बैठकर तुम शरद-ऋतु का चन्द्रमा दिखाती

के तोते शरधा पाइण सुबेश करिब रे चान्दमुखी ।
आरे बरांगने काहा आलिंगने होइबु परमसुखी ।। ४ ।।
मोते के मन जाणि सेबा करिब भोजन शयनकाळे ।
के मोते सप्रेम करिण कहिब भुजबळे छन्दि गळे ।।
के मोते जळधरि एबे जगिब मृगया बाहुडा बेळे ।
मन दु:ख देखि के चाटु कहिब बसिण मोहर कोळे ।। ५ ।।
के मोर चरण पखाळि पादुक पाइण शिरे सिंचिब ।
के मोर अंगरे स्वेदबिन्दु देखि बसनांचळे बिञ्चिब ।
के मोर शयने चरण चापिण बसि उन्निद्र होइब ।
राजनन्दिनी होइण के तोहर प्रायेक दु:ख सहिब ।। ६ ।।
श्रीराम कारुण्य करु करु मृग घेनि लक्ष्मण अइले ।
लक्ष्मणहिं शोके आतंक होइण प्रबोध करि कहिले ।
सानुज कहन्ते शोक मनु तेजि कहन्ति जानकीपति ।
देख लक्ष्मण हृदय दहुअछि शरद रजनीपति ।। ७ ।।
शरदऋतु प्रबेश चाहिं देख निर्मळ हुए आकाश ।
सरित सरोबर जळ निर्मळ बहु बिकशित काश ।

होंगी ? अरी चन्द्रमुखी ! तुझे प्यार करके कौन तेरा श्रृंगार करता होगा ? अरी वरांगने ! किसके आलिंगन से तुम परमसुख प्राप्त करती होंगी ? ४ भोजन और शयन-काल में मेरे मन के अनुरूप कौन मेरी सेवा करेगा ? मुझे हाथों से गले लगाकर कौन प्रेम करेगा ? आखेट से लौटने के समय पानी लेकर कौन मेरा रास्ता देखेगा ? मेरे मन को दु:खी देखकर मेरी गोद में बैठकर कौन मुझसे रसमयी बातें करेगा ? ५ मेरे चरणों को धोकर उस जल का सिंचन सिर पर कौन करेगा ? मेरे शरीर में पसीने की बूँदें देखकर अपने वस्त्र के अंचल से उन्हें कौन पोंछेगा ? सोते समय मेरे चरण दाबकर कौन बैठकर जागेगा ? राजकुमारी होकर तुम्हारे समान कौन दु:ख सहन करेगा ? ६ श्रीराम के शोक करते-करते, मृग को लेकर लक्ष्मण आ गये। शोक से आतंकित होकर लक्ष्मण ने सांत्वना दी। भाई के कहने से सीतापति श्रीराम ने मन से दु:ख को हटा दिया। वह बोले, हे लक्ष्मण ! यह शरद-ऋतु की रात्रि का स्वामी, चन्द्रमा मेरे हृदय को जला रहा है। ७ शरद-ऋतु का प्रवेश देखकर आकाश निर्मल हो गया। नदियों और तालाबों का जल बहुत स्वच्छ है। कास फूल रहे हैं। हंस मदमस्त होकर उच्च स्वर में कलरव कर रहे हैं। मानों

मराळमाने जे होइ महामत्त उच्चे करुछन्ति ध्वनि ।
शोभा देखाइ से सकळ दिगरे शरदऋतु कामिनी ।। ८ ।।
तनु निर्मळ मुख चन्द्रमण्डळ नीळ उत्पळ-नयना ।
बिम्बअधरी सेफाळिका कळिका-दशनी काश-बसन ।
कइरब-हासी मनोहर-केशी बर्तुळ-तुंग सुस्तना ।
मधुकरकेशी बीणाजिणाभाषी मत्तमराळगमना ।। ९ ।।
ए ऋतु जामिनी देखि मो कामिनी का संगे बंचिब दिन ।
काहा संगतरे लीळा करिब से होइण मो संग भिन्न ।
लक्ष्मण जणान्ति शुण आहे देब तुम्भ रामा अग्निराशि ।
असुरचय मधुमाछि पराय तहिँ कि पारिबे पशि ।। १० ।।
जानकी तुम्भर साक्षात कमळा तुम्भे स्वयं नारायण ।
ए कथामान मनरे न बिचारि किपाइँ कर कारुण्य ।
भला ए बरषा होइला भरसा मारिबा असुरकुळ ।
बोलइ बिशि सउमित्रि कहन्ते तेजिले राम बिकळ ।। ११ ।।

शरद-ऋतु-कामिनी सम्पूर्ण दिशाओं को सुशोभित कर रही हो । ८ शरीर पर निर्मल मुख के समान चन्द्रमण्डल, नीलकमल के समान नेत्र, बिम्ब के समान अधर, शेफाली कलिका के समान दाँत, कास के वस्त्र पहने हुए कुमुदिनी के समान हँसनेवाली, मनोहर केशोंवाली, टेढ़े और ऊँचे स्तनों वाली, भ्रमर के समान बालोंवाली, वीणा को जीतनेवाली वाणी बोलने वाली, मत्त हंस के समान गमन करनेवाली, इस ऋतु की यामिनी को देखकर, मेरी कामिनी किसके साथ दिन बितायेगी ? मुझसे अलग होकर वह किसके साथ लीला करेगी ? लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! सुनिये । आपकी स्त्री अग्नि की राशि है । असुरों का समूह मधुमक्खी के समान क्या वहाँ घुस पायेगा ? ९-१० आपकी जानकी साक्षात् लक्ष्मी और स्वयं भगवान विष्णु हैं । यह बात अपने मन में न सोचकर आप किसलिए दुःख कर रहे हैं ? अच्छा हुआ यह वर्षा भरोसा बन गई । राक्षस-समुदाय को अब मारेंगे । विशि कहता है कि सुमित्रानन्दन लक्ष्मण के समझाने पर श्रीराम की व्याकुलता छूट गई । ११

एकोनविंश छान्द

राग–धनाश्री पड़िताळ

शुण हे सानुज सुग्रीबर ज्ञान हारिला।
सम्पद मदिरा पाने आम्भकु पासोरिला ॥ १ ॥
बरषा शेष शरद ऋतु एबे होइला।
कंठ पूरिगला आम्भ पाशकु से नइला ॥ २ ॥
आम्भे ताकु जेउँ उपकार करि होइला।
प्रत्युपकार करिबा कथा न चित्तोइला ॥ ३ ॥
सुग्रीब जेबे आम्भर कार्य्य हेळा करिब।
बाळि प्राय होइ आम्भ कांड मुने मरिब ॥ ४ ॥
तुम्भे जाइँ तांकु भय देखाइण कहिब।
आम्भर मइत्र बोलि उप्रोध न करिब ॥ ५ ॥
बोलिब जेबण बाणे बाळी बीर मलाटि।
से काण्डे लेउटि राम तूणे सम्भाइलाटि ॥ ६ ॥
बाळि जिबा मार्गकु शरधा जेबे नाहिंटि।
तेबे राम चरण दर्शन कर जाइंटि ॥ ७ ॥
लक्ष्मण बोलन्ति देब सुग्री बड़ दुष्ट हे।
तांकु मारि अगदकु देबा एहि राष्ट्र हे ॥ ८ ॥

छान्द—२१

राग–धनाश्री

श्रीराम ने कहा, हे भाई ! सुनो। सुग्रीव का ज्ञान लुप्त हो गया। सम्पत्ति की मदिरा-पान कर लेने से वह हमें भूल गया। १ वर्षा समाप्त होकर अब शरद-ऋतु आ गई। वह गले तक भर गया, परन्तु हमारे पास नहीं आया। २ हमने उसका जो भी उपकार किया उसका बदला देने की बात उसके मन में नहीं आयी। ३ यदि सुग्रीव हमारे कार्य में प्रमाद करेगा तो बालि के समान ही मेरे बाण की नोक से मरेगा। ४ तुम जाकर उसे भय दिखाकर बात करना। वह अपना मित्र है, इसलिए उससे कलह न करना। ५ उससे कहना कि जिस बाण से पराक्रमी बालि मरा है, वह बाण लौटकर राम के तरकश में रखा हुआ है। ६ यदि बालि के मार्ग पर तुम्हें श्रद्धा नहीं है तो जाकर श्रीराम के चरणों का दर्शन करो। ७ लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! सुग्रीव बड़ा दुष्ट है, उसे मारकर

शुणिण श्रीराम करे छुइँ भूमि श्रुति जे।
एहा कले नाश जिब सकळ सुकृति जे॥ ९ ॥
जाणिअछ जेउँ रूपे होइ थाइ मित्र हे।
मित्र द्रोह कले कि बोलिबे ए जगते हे॥ १० ॥
तुम्भे तांकु उचित बेभारे बाणी कहिब।
तार अपराध कले मनरे न धरिब॥ ११ ॥
श्रीरामंक आज्ञारे लक्ष्मण हेले बाहार।
बोले बिशि धनु तूणी घेनि गमे प्रखर॥ १२ ॥

द्वाविंश छान्द

राग–मंगळ गुज्जरी

किष्किन्ध्या गुहार द्वारे लक्ष्मण प्रबेश।
देखिण बानर द्वारी करि बहु रोष॥ १ ॥
शाळ शिळ करे धरि ओगाळिले द्वार।
दिशन्ति बानरे मत्तगजर आकार जे॥ २ ॥
के बोलइ रामभाइ होइछन्ति क्रोध।
के बोले बाळिकि परा एहु कले बध॥ ३ ॥

यह राज्य अंगद को दे दें। ८ यह सुनकर श्रीराम ने अपने हाथ से पृथ्वी को छूकर कानों को छुआ और बोले, ऐसा करने से सारा पुण्य नष्ट हो जायेगा। ९ तुम्हें पता है कि किस प्रकार से हम उसके मित्र बने। मित्र का द्रोह करने से संसार में लोग हमें क्या कहेंगे। १० तुम उससे उचित व्यवहार की बात करना। यदि वह अपराध भी करे तो उसे अपने चित्त में न धारण करना। ११ श्रीराम की आज्ञा से लक्ष्मण निकल पड़े। विशि कहता है कि धनुष और तूणीर लेकर वह प्रखर गति से चलने लगे। १२

छान्द—२२

राग–मंगलगुज्जरी

लक्ष्मण किष्किन्धा गुहा के द्वार पर जा पहुँचे। उन्हें देखकर बानर द्वारपाल ने बहुत क्रोध किया। १ वानर सैनिक मत्त गजराज के समान दिखाई दे रहे थे। उन्होंने शाल वृक्ष और पत्थर की शिलाएँ लेकर द्वार पर उन्हें ललकारा। २ कोई कह रहा था कि श्रीराम के भाई क्रुद्ध हो गये हैं। कोई कह रहा था कि इन्होंने ही बालि का वध

के बोलइ एबे आसिछन्ति कि बिचारे।
के बोलइ जणाइबा राजाङ्क छामुरे ॥ ४ ॥
एते बोलि जणाइले राजांक छामुरे।
भो देब राम सानुज आसिछि कोपरे ॥ ५ ॥
शिळामान धरिण ओगाळिछन्ति कपि।
उभा होइछन्ति द्वारे होइ महाकोपी ॥ ६ ॥
कनकगिरि पराये पाउछन्ति शोभा।
निधूम अनळ प्राये नयनर प्रभा ॥ ७ ॥
धनुरे देइण गुण धरिछन्ति शर।
शुणिण सुग्रीब भये होइले कातर ॥ ८ ॥
आज्ञा देले अंगद हे घेनि आस जाइँ।
राम भ्रात कोप करिछन्ति काहिँ पाइँ ॥ ९ ॥
अंगद दर्शन करि घेनिण अइले।
किष्किन्ध्या कटक देखि बहु प्रशंसिले ॥ १० ॥
धबळ मेघमानंक प्राय पुर शोभा।
राजांक नबर स्वर्गराजा पुर किबा ॥ ११ ॥
बेनि पाशे सेनापति मानंकर पुर।
उच्च प्रांगणे दाण्डकु दिशइ सुन्दर ॥ १२ ॥

किया है। ३ कोई बोला कि यह अब न जाने किस विचार से आये हैं! किसी ने कहा कि चलो राजा के समक्ष चलकर बता दें। ४ इतना कहकर उन्होंने कपिराज के समक्ष निवेदन किया, हे देव! श्रीराम के छोटे भाई कुपित होकर आये हैं। ५ वानररक्षकों ने शिला-खण्ड लेकर उन्हें ललकारा है। वह अत्यन्त क्रोध में भरे द्वार पर खड़े हैं। ६ सोने के पर्वत के समान वह शोभायमान हो रहे हैं। उनके नेत्रों की प्रभा निर्धूम अग्नि के समान है। ७ धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उन्होंने बाण पकड़ रखा है। यह सुनकर सुग्रीव भय से कातर हो गया। ८ उसने अंगद को, जाकर उन्हें ले आने की आज्ञा दी। पता नहीं श्रीराम के भाई क्यों क्रोध कर रहे हैं! ९ अंगद उनका दर्शन करके उन्हें ले आये। उन्होंने किष्किन्धा दुर्ग को देखकर उसकी बहुत प्रशंसा की। १० श्वेत बादलों के समान नगर शोभित हो रहा था। राजा का महल तो स्वर्ग के राजा इन्द्र का ही सदन लग रहा था। ११ दोनों ओर सेनापतियों के महल थे। ऊँचे-ऊँचे प्रांगण मार्ग से सुन्दर दिखाई देते थे। १२ ओसारे दिव्य

पसरा मानंके पाउअछि दिव्य शोभा ।
बोले बिशि लक्ष्मण मनरे कले लोभा ॥ १३ ॥

त्रयोविंश छान्द

राग—दक्षिण कामोदी

कटक भितरे पशि देखि देखि गले ।
नबरर सिंहद्वारे परबेश हेले ॥ १ ॥
पाञ्च द्वार पारि होइ जाइ उभा हेले ।
अन्तःपुर छाड़िण से अपसरि गले ॥ २ ॥
हेममय स्तम्भे अछि हेमखट दोळि ।
हेम शिकुळिरे खञ्जा शोहे हेमतुळी ॥ ३ ॥
तारा रोमा स्कन्धे देइअछि बेनि भुज ।
मध्यरे करिछि बिजे कपिकुळराज ॥ ४ ॥
चिबुक धरिण से चुम्बइ बिम्बओष्ठी ।
से काळे पड़िला जाइ लक्ष्मणंक दृष्टि ॥ ५ ॥
धनुर्गुण आमंत्रण टंकार से कले ।
घुंचि आसन्ते सुग्रीब कातर होइले ॥ ६ ॥
ताराङ्कु बोइले तुम्भे जाइँ कर भेट ।
जेमन्त तांकर मन हुए महाहृष्ट ॥ ७ ॥

शोभा से युक्त थे। बिशि कहता है उसे देखकर लक्ष्मण का मन भी लुभा गया। १३

छान्द—२३

राग—दक्षिण कामोदी

दुर्ग के भीतर घुसकर देखते हुए चलकर वह राजमहल के सिंहद्वार में प्रविष्ट हुए। १ पाँच द्वार पार करके वह जा खड़े हुए। अन्तःपुर को छोड़कर वह हट गये। २ स्वर्णमय खम्भों में सोने का बना हुआ पालना था जो सोने की जंजीरों से बँधा हुआ स्वर्ण के समान था। ३ तारा और रोमा के कन्धों पर दोनों भुजाएँ रखे हुए, मध्य में कपिकुलाधीश सुग्रीव विराजमान था। ४ वह ठोढ़ी पकड़कर बिम्बाधरी का चुम्बन कर रहा था। उसी समय लक्ष्मण की दृष्टि उस पर जा पड़ी। ५ धनुष की प्रत्यञ्चा खींचकर उन्होंने टंकार दी, तब उन्हें घुसे हुए आते देख सुग्रीव भयभीत हो गया। ६ उसने तारा से कहा कि तुम

दोळिरु ओह्लाइण आसइ बर नारी ।
नितम्बबतीर दुइ उच्च कुच भारि ।। ८ ।।
चाळन्तेण नूपुर जे रुणझुण बाजे ।
डिण्डिम बाजइ कि मदन कले बिजे ।। ९ ।।
कुसुम सहिते तार फिटिअछि बेणी ।
तुटि पड़ुअछि तार उरहार श्रेणी ।। १० ।।
नितम्बरु कांचिदाम पड़ुअछि खसि ।
ताम्बुळ पिक पकाइ मन्द मन्द हसि ।। ११ ।।
ओढ़णा बसन मही चरणरे लोटि ।
निबिबन्ध छन्द अछि मन्द मन्द फिटि ।। १२ ।।
मधुपाने रंगिमा दिशे नयन बेनि ।
रंगाधरी रंगबिन्दु भाले अछि घेनि ।। १३ ।।
लक्ष्मणंकु देखिण से शिरे कर देले ।
सम्मुखे चन्द्रबदनी उभा जे होइले ।। १४ ।।
देखिण लक्ष्मण लाजे हेले हेट मुख ।
बोले बिशि कहिले श्रीरामचन्द्र दुःख ।। १५ ।।

जाकर भेंट करो जिससे उनका मन अत्यन्त प्रसन्न हो जाय । ७ पालने से उतरकर वह श्रेष्ठ कामिनी आ रही थी । उसके नितम्ब मांसल तथा उरोज उन्नत थे । ८ चलने से उसके नूपुर रुनझुन का शब्द कर रहे थे । लगता था मानो कामदेव के चलने पर डिमडिमी बज रही हो । ९ फूलों सहित उसकी वेणी खुल गई थी । उसके गले की मालाएँ टूट-टूटकर गिर रही थीं । १० नितम्बों से साया खिसका जा रहा था । वह पान का पीक थूककर मन्द-मन्द मुस्कराने लगी । ११ उसके ओढ़ने का वस्त्र पैरों तले पृथ्वी पर गिर गया था । नाड़े की गाँठ भी थोड़ी ढीली हो गई थी । १२ मधुपान के कारण उसके दोनों नेत्र लाल रंग के दिखाई दे रहे थे । लाल अधरोंवाली वह मस्तक पर सिन्दूर-बिन्दु लगाये हुए थी । १३ लक्ष्मण को देखकर उसने हाथों को शिर से लगा लिया । और चन्द्रमुखी कामिनी लक्ष्मण के सामने खड़ी हो गई । १४ उसे देख कर लक्ष्मण ने मुख नीचे कर लिया । विशि कहता है कि लक्ष्मण ने श्रीराम का कष्ट उससे कहा । १५

चतुर्विंश छान्द

राग–आहारी

से तारा राणी, कहे मधुर बाणी,
सुग्रीब कि तुम्भ काज्यं अछि त जाणि ॥ १ ॥
पेषिछि दूत, से आसिबे त्वरित,
बानर बळ त घेनि भेटिब मित ॥ २ ॥
चिन्ति राघब, मने प्रियार भाब,
रजनी दिबस तांकु सरु न थिब ॥ ३ ॥
तुम्भे त जाण, सर्ब शास्त्र पुराण,
सञ्चिला जनरे कोप केउँ कारण ॥ ४ ॥
शुणि सुमन, दशरथनन्दन,
सुग्रीब एबे से आसि करु दर्शन ॥ ५ ॥
शुणिण तारा, जुबतीङ्कर हीरा,
बाहुड़िण जाइँ सुग्रीकि कला धीरा ॥ ६ ॥
सुग्रीब आणि, भेटाइला तरुणी,
लक्ष्मणंकु आलिंगन कला से पुणि ॥ ७ ॥
कलाक पूजा, तांकु मर्कट राजा,
बोलइ खोजाइ देबि मित्र भारिजा ॥ ८ ॥

छान्द—२४

राग–अहारी

वह रानी तारा मधुर बचनों में बोली कि सुग्रीव को आपके कार्य के विषय में पता है। उसने दूत भेजे हैं वह शीघ्र आयेंगे तब वह वानर दल लेकर मित्र से भेंट करेंगे। १-२ मन में प्रिया के विषय में सोचकर राघव के दिन और रात नहीं कट रहे होंगे। ३ आपको समस्त शास्त्र और पुराणों का ज्ञान है। शरणागत व्यक्ति पर किस कारण से क्रोध कर रहे हैं? ४ यह सुनकर दशरथनन्दन ने प्रसन्न होकर कहा कि अब सुग्रीव आकर मुझसे मिलें। ५ यह सुनकर युवतियों मे हीरा के समान तारा ने वापस जाकर सुग्रीव को धीरज प्रदान किया। ६ उस कामिनी ने सुग्रीव को लाकर भेंट करायी। उसने लक्ष्मण का आलिंगन किया। ७ वानरराज ने उनकी पूजा की और कहा कि मैं मित्र-पत्नी की खोज करा दूंगा। ८ वानरों का अधिपति श्रीराम के दर्शन के

बानरसाइँ, राम दर्शन पाइँ;
लक्ष्मणंकु हेम सुखासने बसाइ ॥ ९ ॥
किष्किन्ध्या राज्ये, सुखासनरे बिजे,
बिबिध बाद्य मारि त छामुरे बाजे ॥ १० ॥
बानर बळ; चळे महागहळ,
जान चढ़ि आरोहण कले अचळ ॥ ११ ॥
सुमित्रा सुत; पेषि बिकळ चित्त,
बोले बिशि राम होइथिले दु:खित ॥ १२ ॥

पंचविंश छान्द—सन्य प्रवेश

राग–काफि

लक्ष्मण संगे सुग्रीब कले दर्शन ।
देखिण उठि तांकु श्रीराम जे कलेक आलिंगन । १ ॥
राम बोलन्ति हेळा कलकि मित ।
सुग्रीब कर जोड़ि जणाइ हे देब पेषिछि दूत ॥ २ ॥
आजि कालि भितरे आसिबे बळ ।
ए कथाकु भो देब सन्देह हे तुम्भे मने न भाळ ॥ ३ ॥
सुग्री राम कथा होइबा भितरे ।
दिन कर अदृश्य होइले जे सैन्य पादधुळिरे ॥ ४ ॥

लिए लक्ष्मण को पालकी में बैठाकर और स्वयं पालकी में बैठकर किष्किन्धा से चला । उसके आगे-आगे नाना प्रकार के वाद्य बज रहे थे । ९-१० वानरी सेना बड़ी धूम-धड़ाके से चली जा रही थी । वह यान पर चढ़कर पर्वत पर चढ़े । ११ विशि कहता है कि सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण को भेजकर श्रीराम व्याकुल चित्त से दु:खी हो रहे थे । १२

छान्द २५—सेना का प्रवेश

राग–काफी

लक्ष्मण के साथ सुग्रीव ने दर्शन किये । देखते ही श्रीराम ने उठकर उनका आलिंगन किया । १ राम ने कहा कि आपने आलस्य कैसे कर दिया ? सुग्रीव ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! मैंने दूत भेजे है, आज-कल में ही दल आ जायेगा, हे देव ! इस बात को आप सन्देह की दृष्टि से मन में न सोचें । २-३ सुग्रीव और राम की बातचीत होते समय ही सैनिकों की पदधूलि से सूर्य अदृश्य हो गये । ४ मुख से निकले हुए शब्द से

मुखराव शबदे उछुळे मही ।
कूळ लंघिण दिबा सागर हे आसुअछइ बहि ॥ ५ ॥
राम बोलन्ति शुभइ त चहळ ।
सुग्री बोलन्ति देब अइले हे आम्भ बानर बळ ॥ ६ ॥
प्रथमे शतदळ दर्शन कला ।
दशकोटि सहस्र बानर हे संगे घेनि अइला ॥ ७ ॥
सुषेण संगे दश सस्र कोटि ।
दश सहस्र कोटि बानर हे घेनि केशरी भेटि ॥ ८ ॥
द्वादश सस्र कोटि घेनिण नीळ ।
पन्दर सहस्र गबाक्षर हे संगे बानर बळ ॥ ९ ॥
गबय संगे सस्र कोटि बन्दर ।
दधिमुख घेनिण भेटिला जे शत कोटि बानर ॥ १० ॥
महेन्द संगे पाञ्च सहस्र कोटि ।
द्विबिद संगे कोटि सहस्र जे कपि घेनिण भेटि ॥ ११ ॥
रामजान संगतरे पचिश कोटि ।
बोलइ बिशि मही पूरिण हे आसन्ति कपि घोटि ॥ १२ ॥

पृथ्वी भर गयी । लगता था मानों किनारों को लाँघकर सागर बहता हुआ चला आ रहा हो । ५ राम ने कहा कि हल्ला तो सुनायी पड़ रहा है । सुग्रीव बोला, हे देव ! हमारा वानरदल आ गया है । ६ पहले शतदल ने दर्शन किया । वह दस करोड़ हजार वानर साथ लेकर आया था । ७ सुषेण के साथ दस हजार करोड़ और दस सहस्र करोड़ वानर लेकर केशरी ने भेंट की । ८ बारह सहस्र करोड़ नील लाया था । गवाक्ष के साथ पन्द्रह हजार वानरदल था । ९ गवय के साथ हजार करोड़ बानर और द्विविद कोटि सहस्र बानर लेकर मिला । महेन्द्र के साथ पाँच हजार करोड़ और दधिमुख सौ करोड़ वानर लेकर मिला । १०-११ बिशि कहता है कि रामयान के साथ पचीस करोड़ वानर पृथ्वी को घेरते हुए चले आ रहे थे । १२

षड्‌विंश छान्द

राग–नळिनी गौड़ा

राज सेनापति भेटि, संगे पाञ्च सस्र कोटि,
जाम्बव कला दर्शन, शत सस्र कोटि सैन्य ॥ १ ॥
गन्धमारदन भेट, सहस्र कोटि मर्कट,
अंगद कला दर्शन, किष्किन्ध्यार घेनि सैन्य ॥ २ ॥
शत शत सस्र कोटि, घेनि सैन्य संगे भेटि,
तार कला दरशन, अयुत कोटि ता सैन्य ॥ ३ ॥
इन्द्रजान हुए भेट, सहस्र कोटि मर्कट,
रम्भा कला दरशन, पाञ्च सस्र कोटि सैन्य ॥ ४ ॥
दुर्मुख दर्शन करि, षट सस्र कोटि हरि,
हनु कला दरशन, षाठिए कोटि ता सैन्य ॥ ५ ॥
नीळ संगरे मर्कट, शत कोटि घेनि भेट,
दधिमुख भेट कला, आठ सस्र कोटि थिला ॥ ६ ॥
शरभ दर्शन करि, पंचदश कोटि हरि,
कुमुद दर्शन कला, कपि कोटि दश थिला ॥ ७ ॥
बह्नि कला दरशन, द्वादश कोटि ता सैन्य,
दर्शन कला द्विबिद, संगरे कपि अर्बुद ॥ ८ ॥

छान्द—२६

राग–नलिनी गौड़ा

पाँच सहस्र करोड़ वानरों के साथ सेनापतियों ने राजा से भेंट की। जामवंत ने सौ हजार करोड़ सेना के साथ उनके दर्शन किये। १ गन्धमार्दन ने सहस्र करोड़ वानर लेकर भेंट की। किष्किन्धा की सेना लेकर अंगद ने दर्शन किये। २ शत ने सौ हजार करोड़ सेना के साथ भेंट की। और तार ने अयुत कोटि सेना लेकर दर्शन किये। ३ इन्द्रयान हजार करोड़ वानर लेकर और रम्भा ने पाँच हजार करोड सेना के साथ दर्शन किये। ४ छः हजार करोड़ वानरों के साथ दुर्मुख ने और साठ करोड़ सेना लेकर हनुमान ने दर्शन किये। ५ नील ने सौ करोड़ वानरों के साथ और दधिमुख आठ सहस्र करोड़ वानरों के साथ मिला। ६ पचास करोड़ वानरो के साथ शरभ और दस करोड़ वानरों के साथ कुमुद ने दर्शन किये। ७ बह्नि ने दर्शन किये। बारह करोड़ उसकी सेना थी। एक अरब वानरों

बनगिरि भूमि पूरि, रहिलेक ऋक्ष हरि,
देखिण राघब तोष, सुग्रीबकु राइ पाश ॥ ९ ॥
कले तांकु आलिंगन, आनन्द होइण मन,
बोलन्ति श्रीरघुनाथ, होइण थिलु अनाथ ॥ १० ॥
तुम्भंकु पाइण नाथ, जुझिबुं असुर साथ,
सुग्रीब जोड़िण कर, बोलइ भो रघुबीर ॥ ११ ॥
अइले बानर बळ, का संगे करिब गोळ,
होइ राम हस हस, बोलन्ति सीता सन्देश ॥ १२ ॥
पाइले सिना जुझिबा, जीबने थिबा बुझिबा,
जे आज्ञा हेब तुम्भर, खोजाइबि मंच पुर ॥ १३ ॥
श्रीरामंक आज्ञा पाइ, सेनापतिगण राइ,
राम आगे कले उभा, बिशि बोले दिशे शोभा ॥ १४ ॥

सप्तविंश छान्द—दूत बरगा

गड़मालिआ बृते

उभा जूथपतिगण, नाम धरि धरि चिह्नाइ द्यन्ति जे ।
रामंकु तारा रमण ! देख देब हे ॥ १ ॥

के साथ द्विविद ने दर्शन किये। ८ वन-पर्वत और पृथ्वी पर रीछ और वानर भर गये। यह देखकर राघव श्रीराम ने संतुष्ट होकर सुग्रीव को पास बुलाया। ९ उन्होंने प्रसन्न मन से उन्हें आलिंगन किया। और कहा कि मैं अनाथ हो गया था। तुमको नाथ पाकर असुर के साथ युद्ध करूँगा। सुग्रीव ने हाथ जोड़कर कहा, हे रघुवीर ! वानर-दल आ गया। किसके साथ युद्ध करेंगे ? श्रीराम हँसते-हँसते सीता का सन्देश कहने लगे। १०-१२ मिलने से ही तो जूझेंगे और जीवन रहने पर्यन्त समझेंगे। आपकी यदि आज्ञा होगी तो मृत्युलोक में उनकी खोज कराऊँगा। १३ विशि कहता है कि श्रीराम की आज्ञा पाकर उसने सेनापतियों को बुलाकर श्रीराम के आगे खड़ा कर दिया। सब कुछ सुन्दर दिखाई दे रहा था। १४

छान्द २७—दूत-प्रस्थान

गड़मालिआ की धुन

खड़े हुए यूथपतियों का दल तारा के स्वामी सुग्रीव को, नाम ले-लेकर परिचय दे रहा था। हे देव ! देखो। १ अंगद, हनुमान, सुषेण, गज

अंगद हनु सुषेण, गज जाम्बुबन्त केशरी बीर हे ।
पंचबिश सेना एहि, एहांक संगे कोटि कोटि कपि हे ।
कळना हेबाकु नाहिँ देख देब हे ॥ २ ॥
बिनोद सेनाकु राइ, आज्ञा देले कपिकुळर साइँ जे ।
पूर्बदिगे खोज जाइँटि मो बन्धु हे ॥ ३ ॥
उदेगिरि जाए जिब, बन गिरि ग्राम पुर कटक जे ।
समस्त बुलि खोजिब, कि मो बन्धु हे ॥ ४ ॥
जनक राजा दुलणी, बारता मासके न देले आणि जे ।
पकाइबि शिर हाणि, कि मो बन्धु हे ॥ ५ ॥
गबय गबाक्ष गज; दुर्बिन्द तार नळ नीळ सुषेण जे ।
हनुमन्त जुबराज, कि मो बन्धु हे ॥ ६ ॥
जाम्बब गन्धमार्दन, बोले कपिराज तुम्भे से बेगे हे ।
दक्षिणे जाअ बहन, कि मो बन्धु हे ॥ ७ ।
मासे न पुरु आसिब, दक्षिण सिन्धुमध्ये जेते गिरि हे ।
सबु बुलिण खोजिब, कि मो बन्धु हे ॥ ८ ॥
केशरी बीरकु चाहिं, कहन्ति ताहाकु पाशकु राइ जे ।
खोजिब पश्चिमे जाइ, कि मो बन्धु हे ॥ ९ ॥
श्रीरामचन्द्र घरणी, बारता मासके न देले आणि जे ।
दण्ड देबि सत्य बाणी, कि मो बन्धु हे ॥ १० ॥

जामवंत और पराक्रमी केशरी, इनकी सौ सेनायें हैं और इनके साथ करोड़ों-करोड़ों वानर हैं। हे देव ! देखो इनकी गिनती नहीं हो पा रही है। २ कपिकुलनायक सुग्रीव ने विनोद की सेना को बुलाकर कहा, मेरे भाइयो ! पूर्व दिशा की ओर जाकर खोज करो। ३ उदयगिरि पर्यन्त जाना। हे मेरे भाई जंगल, पहाड़, गाँव, नगर और कटक सब जगह घूम-घूमकर खोजना। ४ भाइयो ! राजा जनक की कुमारी की वार्ता एक महीने के भीतर न लाने पर मैं सिर काट डालूंगा। ५ हे बन्धु ! गवय, गवाक्ष, गज, दुर्विन्द, तार, नल, नील, सुषेण, हनुमान, युवराज अंगद, जामवंत तथा गन्धमार्दन ! आप लोग शीघ्र ही दक्षिण दिशा की ओर जायें —ऐसा कपिराज ने कहा। ६-७ एक माह के भीतर दक्षिण सागर के बीच जितने भी पर्वत हैं। सब जगह घूमकर खोजना। ८ पराक्रमी केशरी की ओर देखकर उसे पास बुलाकर कपीश ने कहा, हे मेरे भाई ! तुम पश्चिम में जाकर खोजना। ९ श्रीराम की पत्नी की खबर एक माह में

शतबळ सेनापति, ताहांकु राइण कहन्ति कति जे ।
उत्तरे जाअ तड़ति, कि मो बन्धु हे ।। ११ ।।
पृथिबीर स्थान जेते, सुग्रीब ताहांकु कहिले केते जे ।
बिशि कि कहिब गीते, कि मो बन्धु हे ।। १२ ।।

अष्टायिश छान्द

राग–कौशिक

राम पचारन्ति सखे सुग्री मीत आम्भंकु कहिब त सत ।
पृथिबीरे जेते जेते स्थानमान कहिला से केबण दूत ।। १ ।।
कर जोड़िण सुग्रीब जणान्ति भो देब !
बाळि भयरे पृथिबी बुलिण लुचिबाकु मुं खोजिलि ठाब ।। २ ।।
जहिं तहिं गले बाळि मोते मारे रहि त ठाब न पाइलि ।
हनु कहिले ऋष्यमूके लुचिबा तांकर बोलरु अइलि ।। ३ ।।
पूर्बे बाळि दुन्दुभि कि मारि तार अस्थि बुलाइ फिंगि देला ।
तार रुधिर मातंग महाऋषि कानन मध्यरे पड़िला ।। ४ ।।

न देने से मैं दण्ड दूंगा । इस बात को सत्य मानो । १० सेनापति शतबल को पास में बुलाकर उन्होंने कहा, हे मेरे बन्धु ! शीघ्र ही उत्तर की ओर जाओ । ११ विशि कहता है कि पृथ्वी में जितने स्थान थे, सबके विषय में सुग्रीव ने उन्हें बता दिया । हे भाई ! मैं इस गीत में आपको कहाँ तक बताऊँ ? १२

छान्द—२८

राग–कौशिक

श्रीराम ने मित्र सुग्रीव से पूछा, हे सखे ! हमसे सच-सच बताओ । आपने पृथ्वी के अनेकानेक स्थानों के विषय में दूतों को कैसे बताया ? १ सुग्रीव ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! बालि के भय से छिपने के लिए मैं समस्त भूमण्डल पर स्थान खोज रहा था । २ जहाँ मैं जाता था वहीं पहुँचकर बालि मुझे मारता था । मैं उस स्थान पर रह नहीं पाता था । हनुमान के कहने से ऋष्यमूक पर आकर छिप गया । ३ पूर्वकाल में बालि ने दुन्दुभि को मारकर उसकी अस्थियों को घुमाकर फेंका । मतंग ऋषि के तपोवन में उसका रुधिर जाकर गिरा । ४ ऋषि ने कुपित

ऋषि क्रोधरे शाप देले बाळिकि मोर सीमारे न पशिबु ।
जेबे तु मो गिरि बनरे पशिबु रुधिर उद्गारि मरिबु ॥ ५ ॥
तेणु करि देब ऋष्यमूक गिरि जिबाकु बाळि भय कला ।
तेणु करि देब मोहर लुचिबा स्थान एहि गिरि होइला ॥ ६ ॥
एहा शुणि राम हनुकु राइण देले अनामिका मुद्रिका ।
बोले बिशि हनु शिररे लगाइ बान्धे कटि देशे पटुका ॥ ७ ॥

एकोनत्रिंश छान्द—सीतांक अनुसन्धान

श्रीभागवत वृत्ते

श्रीराम आज्ञा पाइ दूते । गमिले पबनु त्वरिते ॥ १ ॥
संगरे नेले कपिबळ । खोजिले पृथिबी मण्डळ ॥ २ ॥
काहिँ सीतांकु न देखिले । बाहुड़ि बारता कहिले ॥ ३ ॥
दक्षिणे गले जेते दूते । खोजिले कानन पर्बते ॥ ४ ॥
न देखि मने क्षोभ कले । बिन्ध्यगिरिकि बोलि गले ॥ ५ ॥
क्षुधा तृषारे पीड़ा पाइ । देखिले बिबर अछइ ॥ ६ ॥
जळ लोभरे तहिँ पशे । अन्धारे किछिहिँ न दिशे ॥ ७ ॥

होकर शाप दिया । अरे वालि ! मेरी सीमा में न घुसना । यदि तू मेरे पर्वत तथा वन में घुसेगा तो रक्त वमन करते हुए मृत्यु को प्राप्त होगा । ५ हे देव ! इसीलिए वालि ऋष्यमूक पर्वत पर जाने में भय करने लगा । यही कारण था कि मेरे छिपने का स्थान यही पर्वत बना । ६ यह सुनकर श्रीराम ने हनुमान को बुलाकर अनामिका-मुद्रिका दी । विशि कहता है कि हनुमान ने उसे शिर से लगाकर वस्त्र में, कमर में बाँध लिया । ७

छान्द २९—सीता का अन्वेषण

श्री भागवत की धुन

श्रीराम की आज्ञा पाकर दूत पवन से भी तीव्र गति से चल पड़े । १ कपियों का दल साथ में लेकर उन्होंने सम्पूर्ण भूमण्डल खोज डाला । २ कहीं पर भी सीता के न दिखाई देने का समाचार उन्होंने लौटकर दिया । ३ जो दूत दक्षिण की ओर गये थे उन्होंने जंगलों और पर्वतों पर खोज की । ४ सीता के न दिखने पर क्षुब्ध मन से वह विन्ध्य पर्वत पर घूमने लगे । ५ क्षुधा-तृषा से पीड़ित होकर उन्होंने एक विवर देखा । ६ जल के लोभ से वह सभी उसमें घुसे । अन्धकार के कारण कुछ भी

सिंह शार्दूळ जेते जीब । मारि मारिण गले सर्ब ।। ८ ।।
आगे देखिले तेजोमये । अछि दिव्यपुर गोटिए ।। ९ ।।
अष्टरतने पुर शोभा । पुष्करिणीरे मन लोभा ।। १० ।।
बिबिध फळे पूरि तरु । सुन्दर दिशुअछि दूरु ।। ११ ।।
देखिले होइअछि शून्य । एक जुबती पुण्यजन ।। १२ ।।
ताहाकु जाइ पचारिले । से सर्ब बृत्तान्त कहिले ।। १३ ।।
एहि कहिलेक बृत्तान्त । आम्भेमाने श्रीराम दूत ।। १४ ।।
शुणि से फळ मूळ देला । अतिथि मते पूजा कला ।। १५ ।।
बोइला न पारिब जाइ । एथि पशिल काहिँ पाइँ ।। १६ ।।
समस्ते नेत्रमान बुज । बाहार करिबि मुँ आज ।। १७ ।।
एमन्ते सीउकार कले । नेत्र बुजि बाहार हेले ।। १८ ।।
दक्षिण जळधिर कूळे । महीन्द्र अचळर तळे ।। १९ ।।
अंगद बोलन्ति बचन । अबधि पूरि गला दिन ।। २० ।।
मासकु कंट होइथिला । द्वितीय मास आसि हेला ।। २१ ।।
सुग्रीब बिनशिब मोते । मुँ आउ जिबइँ केमन्ते ।। २२ ।।
न देले सीतांक सन्देश । न जिबि से सुग्रीब पाश ।। २३ ।।

दिखाई नहीं दे रहा था। ७ सिंह, शार्दूल आदि जो भी जीव मिलते उन्हें मारते हुए वह सब चले जा रहे थे। ८ आगे बढ़ने पर उन्हें एक दिव्य प्रकाश-युक्त महल दिखाई पड़ा। ९ वह महल अष्ट-रत्नों से जड़ित शोभायमान दिखाई दे रहा था। पुष्करिणी को देखकर मन लुब्ध हो रहा था। १० नाना प्रकार के फलों से लदे हुए वृक्ष दूर से ही सुन्दर दिखाई दे रहे थे। ११ उन्होंने एक पवित्र स्त्री एकान्त में बैठी हुई देखी। १२ उन्होंने उससे जाकर पूछा, तो उसने समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। १३ इन्होंने सम्पूर्ण वृत्तान्त बताते हुए कहा कि हम लोग श्रीराम के दूत हैं। १४ यह सुनकर उसने फल-मूल प्रदान करके अतिथि की विधि से उनकी पूजा की। १५ वह बोली कि अब यहाँ से जा नहीं सकोगे! यहाँ आप लोग क्यों घुस आये? १६ आप सब नेत्र बन्द कर लें। मैं अभी सबको बाहर निकाल दूँगी। १७ इस प्रकार स्वीकार करके सभी नेत्र बन्द करके बाहर हुए। १८ दक्षिण सागर के तट पर महेन्द्र पर्वत के तल में सभी पहुँच गये थे। १९ अंगद ने कहा कि अवधि पूर्ण होकर एक दिन अधिक हो गया। एक माह की बात हुई थी। अब तो दूसरा महीना लग गया। २०-२१ सुग्रीव मुझे नष्ट कर देंगे! अब मैं कैसे जाऊँगा? २२ सीता का संदेश न देने पर मैं उस सुग्रीव के पास नहीं जाऊँगा। २३

अधर्मी अटइ सुग्रीब । मोते से जीबने मारिब ॥ २४ ॥
ज्येष्ठ भाइर भार्ज्या हरे । पातक मने न बिचारे ॥ २५ ॥
भाइ मराइ हेला राजा । राम दयारु मोते पूजा ॥ २६ ॥
अंगद मुखुं एहा शुणि । समस्ते बोलुछन्ति बाणी ॥ २७ ॥
राजनन्दन अट तुम्भे । तुम्भंकु छाड़िबु कि आम्भे ॥ २८ ॥
नीळ बोइला चाल जिबा । सेहि बिबरे सुखे थिबा ॥ २९ ॥
हनु बोले बिस्तारि चित्ते । एमन्त न जोगाइ मोते ॥ ३० ॥
कुटुम्बछन्ति राजा पाश । केमन्ते हेब अबिश्वास ॥ ३१ ॥
अंगद किपाँ कर तप । सुग्रीब तुम्भ धर्मबाप ॥ ३२ ॥
किपाँ तुम्भंकु देबा दण्ड । ए कथामान मनु खण्ड ॥ ३३ ॥
अंगद नास्ति ताहा कले । मरिबा बोलिण बसिले ॥ ३४ ॥
समस्ते होइ एकमन । आरम्भ कलेक आसन ॥ ३५ ॥
कुश सज्या करि बसिले । श्रीराम चरित घोषिले ॥ ३६ ॥
अंगद कहे सर्बं शुणि । ए रसे दीन बिशि भणि ॥ ३७ ॥

सुग्रीव अधर्मी है, वह मुझे जान से मार देगा । २४ बड़े भाई की भार्या का हरण करके इस पाप को अपने मन में नहीं सोचता है । २५ भाई को मरवाकर राजा बन गया । वह तो श्रीराम की दया से मुझे मान्यता दे रहा है । २६ अंगद के मुख के वचनों को सुनकर सभी कहने लगे । २७ आप तो राजकुमार हैं, क्या हम सब आपको छोड़ देंगे । २८ नील ने कहा, चलो चलें, और उसी विवर में सुखपूर्वक रहेंगे । २९ हनुमान ने मन में विचार कर कहा कि यह तो मुझे उपयुक्त नहीं जान पड़ता । ३० हमारे सारे कुटुम्बी राजा के समीप हैं, फिर अविश्वासी कैसे बनें । ३१ हे अंगद ! तुम पश्चाताप न करो । सुग्रीव तुम्हारा धर्म का पिता है । ३२ वह तुम्हें दण्ड कैसे देंगे । यह बात अपने मन से निकाल दो । ३३ अंगद ने नहीं माना और आत्महत्या के लिए बैठ गये । ३४ समस्त एकमत होकर अनशन पर बैठ गये । ३५ वह कुशशय्या बनाकर बैठ गये और श्रीराम का चिन्तन करने लगे । ३६ अंगद श्रीराम का चरित्र कहता था और अन्य सभी सुन रहे थे । दीन विशि इस चरित्र का वर्णन करता है । ३७

त्रिश छान्द—सम्पाति सम्बाद

राग–तोड़ि

सर्बबीरे बसि कुशासने
अंगद कहन्ति साबधाने ।
श्रीरामंक किछि कार्य्य न करिण
बिअर्थे मरिबा आम्भेमाने ।। १ ।।
धन्य से जटायु पक्षी थिला,
राबण संगरे जुद्ध कला ।
रावणर रथसेन्हा धनु काटि
श्रीराम निमित्त प्राण देला ।। २ ।।
श्रीराम ताहांकु दाह कले,
पिता मित्र बोलि पिण्ड देले ।
गृध्रपक्षी केउँठारे केते,
तप पुण्य बसिण से करिथिले ।। ३ ।।
तांक प्राय जेबे जान्ता प्राण,
राबण संगते करि रण ।
सुग्रीब भयरे सीता खोजिबारे
मरुथाइँ आम्भे अकारण ।। ४ ।।

छान्द ३०—सम्पाती-संवाद

राग–तोडी

समस्त वीरगण कुशासन पर बैठे थे । सावधान होकर अंगद ने कहा कि श्रीराम का कुछ भी कार्य न करके हम लोग व्यर्थ में ही मर रहे हैं । १ वह जटायु पक्षी धन्य था जिसने रावण के साथ युद्ध करके, उसके रथ तरकश तथा धनुष को काटकर श्रीराम के लिए अपने प्राण त्याग दिये । २ श्रीराम ने उसका दाह-संस्कार किया और पिता का मित्र समझ कर उसे पिण्डदान दिया । वह गीध पक्षी था । उसने बैठकर कहाँ और कितना तप किया था । ३ यदि रावण के साथ युद्ध करके उसके समान प्राण जाते, तो कितना अच्छा होता । सुग्रीव के भय से सीता को खोजते हुए हम अकारण ही मर रहे हैं । ४ पर्वत-शिखर पर

गिरिशिखे बसि शुणुथिला,
सम्पाति मने बिचार कला।
एते दिने आसि मर्कट गुड़ाए
बिधाता आणि आहार देला ।। ५ ।।
भाइर मरण कर्णे शुणि,
पचारइ ताकु पुण पुणि।
कह कह मोर भाइर बारता
बिकळ हेला मरण शुणि ।। ६ ।।
अंगद कहइ सर्ब कथा,
माइला ताहांकु दशमथा।
रामदूत आम्भे सीतांकु खोजुछुँ
न पाइ मरुछुँ एबे बृथा ।। ७ ।।
शुणि सम्पाति कहइ बाणी,
स्नान कराअ हे सिन्धुपाणि।
किपाइँ मरिब समस्त कहिबि
मोहर मुखरु शुणि बाणी ।। ८ ।।
गिरि शिखु समुद्रकु नेले,
स्नान कराइ से पचारिले।
से तांकु समस्त सन्देश कहन्ते
शुणि परम आनन्द हेले ।। ९ ।।

बैठे हुए सम्पाती ने यह सुनकर मन में विचार किया कि इतने दिनों के बाद भाग्य ने इतने वानरों का आहार प्रदान किया है। ५ भाई की मृत्यु की बात अपने कानों से सुनकर उसने उनसे बारम्बार कहा कि आप लोग मेरे भाई के समाचार बताएं। मैं उनकी मृत्यु का बात सुनकर व्याकुल हो रहा हूँ। ६ अंगद ने सम्पूर्ण वृत्तान्त बतलाते हुए कहा कि उन्हें दशानन ने मारा है। हम लोग श्रीराम के दूत है। सीता को खोज रहे हैं। उन्हें न पाकर अब व्यर्थ ही मर रहे है। ७ यह सुनकर सम्पाती ने कहा कि आप लोग हमे सागर जल में स्नान करा दें। आप लोग किसलिए मरेंगे। मैं अपने मुख से तुम्हें सब कुछ बता दूंगा। ८ सब उसे पर्वत शिखर से उतारकर समुद्र के निकट ले गये और स्नान कराकर पूछने लगे। उसने उनसे सब समाचार बताये जिसे सुनकर सभी अत्यन्त प्रसन्न हो गये। ९ सौ योजन पर वह लंका का दुर्ग है। चारों ओर खाई के रूप

शत जोजन ता लंकागड़,
चउपाशरे जळधि बाड़
रबि सकाशुं मो पक्ष पोड़ि गला,
मोते से केबेहें नुहें बड़ ॥ १० ॥
आकाशमार्गे रथरे थिला,
एंहि बाटे सीता घेनि गला।
मोहर कनिष्ठ भाइ जटायुकु
अदोषे चाण्डाळ मारि गला ॥ ११ ॥
दिशुअछि मोते लंकापुर,
आबर दिशुछि सीता चोर।
दिशुअछि मोते जानकी अशोक
बनरे रखिछि दशशिर ॥ १२ ॥
श्रीराम दूत दर्शन पाइ,
सम्पाति पक्ष पाइला तहिं।
बोलइ बिशि कपिमाने बिचार
करन्ति सिन्धु डेइँबा पाइँ ॥ १३ ॥

एकत्रिंश छान्द—सिन्धु डेइँबा परामर्श

राग—चळघण्ट

अंगद बीर कपिकि अनाइ,
बोलइ सिन्धु के पारिब डेइँ।

मे समुद्र है। सूर्य के कारण मेरे पंख जल गये हैं नहीं तो वह कभी भी मुझसे अधिक बड़ा नहीं। १० वह आकाशमार्ग में रथ पर था और इसी मार्ग से सीता को ले गया है। वह चाण्डाल मेरे निर्दोष छोटे भाई जटायु को मारकर चला गया। ११ मुझे लंका दिखाई दे रही है और वह सीता का चोर भी दिखाई दे रहा है। मुझे सीता दिखाई दे रही है जिसे रावण ने अशोक वन में रखा है। १२ श्रीराम के दूतों के दर्शन पाकर सम्पाती के पंख जम आये। विशि कहता है कि वानर-समुदाय समुद्रोल्लंघन के विषय में विचार-विमर्श करने लगा। १३

छान्द ३१—सागर-संतरण पर विचार

राग—चलघण्ट

पराक्रमी अंगद ने वानरों की ओर देखकर कहा कि समुद्र को कौन

काहा अंगरे अछि केते बळ,
आम छामुरे कह कपिकुळ ॥ १ ॥
गज बोलन्ति मुँ दश जोजन,
डेइँ जे पारइ बाळिनन्दन ।
गबय बोलन्ति जोजन बिश,
डेइँ जाइ आसिबि तुम्भ पाश ॥ २ ॥
गबाक्ष बोले तिरिश जोजन,
डेइँ मुँ पारइ सत्य बचन ।
द्विबिन्द बोले जोजन चाळिश,
एते डेइँले हेब अबा किस ॥ ३ ॥
नळ बोलइ जोजन पञ्चाश,
डेइँ पारिबि मुँ एते अबश्य ।
नीळ बोलन्ति जोजन षाठिए,
मुँ डेइँबि एथि नाहिँ संशये ॥ ४ ॥
तार बोलन्ति जोजन सतुरि,
डेइँ मुँ पारिबि जळधिबारि ।
सुषेण बोलन्ति अशी जोजन,
मुँ डेइँबि एथिरे नाहिँ आन ॥ ५ ॥
जाम्बव बोलन्ति नउ जोजन,
ता शुणि अंगद बोले बचन ।
डेइँ मुँ पारिबि जोजन शत,
लेउटिबारे हेब्नि अशकत ॥ ६ ॥

लाँघ सकता है ? हे वानरो ! मेरे समक्ष कहो कि किसके शरीर में कितना बल है ? १ गज ने कहा, हे वालिनन्दन ! मैं दश योजन छलाँग लगा सकता हूँ ; गवय ने कहा कि मैं बीस योजन लाँघकर पुनः आपके पास आ सकता हूँ । २ गवाक्ष ने कहा कि मैं सत्य कहता हूँ, मैं तीस योजन लाँघ सकता हूँ । द्विविद ने कहा कि मैं चालीस योजन लाँघ सकता हूँ परन्तु इतना लाँघने से भी क्या होगा । ३ नल ने कहा कि मैं पचास योजन तो अवश्य ही लाँघ सकता हूँ । नील ने कहा कि मैं साठ योजन लाँघ सकता हूँ । इसमें कोई सन्देह नहीं है । ४ तार बोला कि मैं सत्तर योजन समुद्र का जल लाँघ सकता हूँ । सुषेण ने कहा कि मैं अस्सी योजन जा सकता हूँ, इसमें झूठ नहीं है । ५ जामवन्त ने कहा कि

उन्हे दुरे बसि शुणन्ति हनु,
जाम्बब बोलन्ति पबनसुनु।
मउन होइ रहिछ कि पाइँ,
तुम्भ पराक्रम सबु जाणइ ॥ ७ ॥
पवनदेव तुम्भ निज तात,
केशरीङ्क भारिजा तुम्भ मात।
जन्मरु कलटि एड़े साहस,
लक्षे जोजन डेइँल आकाश ॥ ८ ॥
सुरंग देखि गिळुथिल भानु,
इन्द्र बज्र माइला तुम्भ तनु।
जगत निरोधिलेटि पिअर,
धाता सह बर देले अमर ॥ ९ ॥
आम्भमानंकु कर प्रतिकार,
श्रीराम कार्ज्यें हुअ ततपर।
कपिकुळ सिंह पाअ हे जश,
तुम्भ जिबा शत जोजन किस ॥ १० ॥
बयस थिले मुं पारन्ति जाइ,
बृद्ध होइलि अंगे बळ नाहिँ।
त्रिबिक्रम काळे हरि स्मरण,
सात बार कलि मुं प्रदक्षिण ॥ ११ ॥

मैं नब्बे योजन तक जा सकता हूँ, ऐसा सुनकर अंगद बोला कि मैं सौ योजन लाँघ तो जाऊँगा पर लौटने में असमर्थ हो जाऊँगा। ६ थोड़ी दूर पर बैठे हनुमान सुन रहे थे। जामवन्त ने कहा, हे पवनपुत्र ! तुम चुप-चाप कैसे बैठे हो ? तुम्हारे पराक्रम को सभी जानते हैं। ७ पवनदेव तुम्हारे पिता हैं। केशरी की पत्नी तुम्हारी माता है। तुमने तो जन्म धारण करते ही ऐसा साहस किया कि लाख योजन आकाश को लाँघ गये। ८ सूर्य को लाल देखकर तुम उसे निगल गये। इन्द्र ने तुम्हारे शरीर पर वज्र मार दिया। तब तुम्हारे पिता ने संसार की वायु को रोक दिया। तब अर [illegible] देवताओं ने वर-प्रदान किये। ९ हम लोगों पर अहसान [illegible] कार्य में जुट जाओ। हे कपिकुल के सिंह के समान ह[illegible] की प्राप्ति करो। सौ योजन तुम्हारे लिए क्या [illegible] होने से मैं जा सकता था।

महीन्द्रगिरि आरोहिले हनु,
काया बिस्तारिले पवनसूनु।
आकाशमार्गकु लागिला शिर,
उड़न्ते लसि गले गिरिबर ॥ १२ ॥
जेते जीब गिरि कोटरे थिले,
गिरि लसिबारे दळि होइले।
मही भितरे पशिला से गिरि,
बोले बिशि किष्किन्ध्याकाण्ड पूरि ॥ १३ ॥

॥ किष्किन्ध्याकाण्ड समाप्त ॥

वृद्ध हो गया। शरीर में बल नहीं है। तीन पग नापते हुए नारायण के चरणों की मैंने सात बार प्रदक्षिणा की थी। ११ पवनपुत्र हनुमान महेन्द्र पर्वत पर चढ़ गये और उन्होंने अपनी काया का विस्तार किया। उनका शिर आकाश को छूने लगा और उनके उड़ने से पर्वत उखड़ गये। १२ पर्वत की गुफा में जितने भी जीव थे वह पर्वत के उलटने से दब गये। पर्वत भूमि में धँस गया। विशि कहता है, इस प्रकार किष्किन्धाकाण्ड सम्पूर्ण हो गया। १३

॥ किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥

सुन्दराकाण्ड

प्रथम छान्द

राग–पाहाड़िआ केदार

अंजनासुत बढ़ाइ काये, बिक्रमि उड़ि गगने जाए;
देखिण देबे तार निर्भये कले उपाय जे।
हनु प्राकर्म बुझिबा पाइँ, सुरसा आगे कहिले जाइँ;
तुम्भे ता जिबा पथरे रहि गिळिब माए गो।
शुणि सुरसादेबी पथ ओगाळि जे।
हनुकु बोले आज देबि मुँ गिळि जे॥ १ ॥
मन्दर सम बदन तोळि, देखाइ बक्र दशनाबळी;
बोले अपार दिन क्षुधारे होइलु बळि रे॥ २ ॥
हनु बोलन्ति शुण गो मात, श्रीरामचन्द्रंकर मुँ दूत;
सीतांकु खोजिबइँ नियत, कहिलि सत गो।
तु जेबे क्षुधातुरे पीड़ित, आसिबि तो पाशे नियत;
केबळ रामचन्द्र अग्रत, देबि बारत गो।
शुणि से नागमाता पाटि बिस्तारि जे।
दश जोजन काया बिस्तार करि जे॥ ३ ॥

छान्द—१

राग–केदार (पहाड़िया)

अंजनी के पुत्र काया का विस्तार करके पराक्रम के साथ आकाश-मार्ग से उड़कर जा रहे थे। उन्हें देखकर देवताओं ने उन्हें निर्भय करने का उपाय किया। हनुमान के पराक्रम को जानने के लिए उन्होंने सुरसा के आगे जाकर कहा। हे माताजी ! आप हनुमान के गतिपथ पर पहुँचकर उन्हें निगल लो। यह सुनकर देवी सुरसा हनुमान का मार्ग रोककर उनसे कहा कि मैं आज तुम्हें निगल जाऊँगी। १ मंदराचल पर्वत के समान मुख को उठाकर अपनी टेढ़ी दन्तावली दिखाते हुए उसने कहा कि मैं बहुत दिन से भूख से व्याकुल थी। तुम बलि बनकर आये हो। २ हनुमान ने कहा, हे माँ ! मैं श्रीरामचन्द्र का दूत हूं। मैं सत्य कह रहा हूँ कि मैं सीता को खोजने जा रहा हूँ। यदि तुम भूख से पीड़ित हो तो मैं श्रीराम से सीता के समाचार कहकर निश्चित रूप से तुम्हारे पास आऊँगा। यह

देखिण हनुमन्त बिचारि, केमन्ते एथु जिबि उबुरि;
षष्टि जोजन बिस्तार करि शरीर धरि जे ॥
देखिण हनुमन्तर पिण्ड, द्विगुण करि बिस्तारे तुण्ड
बोलइ हनु दिअन्ति दण्ड, ए त अदण्ड्य जे ॥
एमन्त बोलि मेळिला तुण्ड, जब प्रमाणे करिण पिण्ड;
बाहार हेला होइ प्रचण्ड, किक्कर षण्ढ जे ॥ ४ ॥
देखि सुरसा ताकु कहे बचन जे ।
कार्य्य सिद्धि कि तु कर हनुमान रे ।
सीतांकु खोजि आस बहन, बारता कह रघुनन्दन;
नोहिब पथे बिग्रह मान, सत्य बचन जे ॥ ५ ॥
सेठारु हनु गमे त्वरिते, बरुण देखि बिचारे चित्ते;
रामदूतकु स्थान केमन्ते देबि गुपते जे ।
हिरण्यनाभि गिरिकि चाहिँ, बरुण तांकु बिनय होइ;
हनुकु पूजा कर मो पाइँ मागुछि एते हे ॥ ६ ॥
शुणि से प्लक्षगिरि जबे बढ़िले जे ।
हनुमन्तकु चाहिँ स्तब पढ़िले जे ।

सुनकर नागों की माता सुरसा ने अपनी काया का दस योजन विस्तार करके मुख फैला दिया। ३ यह देखकर हनुमान ने विचार किया कि मैं इससे वचकर कैसे जाऊँगा। फिर उन्होंने अपना शरीर छः योजन का बना लिया। हनुमान के शरीर को देखकर उसने अपना मुख दो गुना करके फैलाया। हनुमान ने कहा, मैं तो इसे दण्ड देता परन्तु यह दण्ड देने के योग्य नहीं है। ऐसा कहकर अपना शरीर जौ के समान छोटा बनाकर उसके मुख में घुसकर प्रचंड वेग से दासों में.साँड़ के समान वह बाहर निकल आये। ४ सुरसा ने उन्हें देखकर कहा, हे हनुमान ! तुम कार्य सिद्ध करोगे, सीता को खोजकर शीघ्र ही आकर रघुनंदन श्रीराम से समाचार बता दो। तुम्हें मार्ग में कोई संकट नहीं आयेगा। यह मैं सत्य कह रही हूँ। ५ हनुमान वहाँ से शीघ्र ही चल दिये, यह देखकर वरुणदेव ने अपने मन मे विचार किया कि मैं गुप्त रूप से श्रीराम के दूत को विश्रामस्थल कैसे प्रदान करूँ। उसने सुमेरु पर्वत की ओर देखा। वरुण ने उससे विनय की कि मैं तुमसे केवल इतना ही माँग रहा हूँ कि हमारे लिए तुम हनुमान की पूजा करो। ६ यह सुनकर सुमेरु ऊपर उठ गये। उन्होंने हनुमान को देखकर स्तुति की। हे पवनपुत्र ! भय मत करो। हमारे शिखर पर

पबनसुत भय न कर, ए मोर शिरे बिश्राम कर;
सुपक्व फळरे शान्ति हर, बरुण देले हे ॥ ७ ॥
शुणिण हनु चाटु उत्तर, अंगुष्ठि अग्रे छुइँ ता शिर,
पड़िला राहुमाता मुखर, उड़ि प्रखर जे ।
सिंहिका बध करिण हरि, तहुँ सधीरे बिजय करि;
डेइण सिन्धु बिक्रम करि सुबळगिरि जे ॥ ८ ॥
लंकागड़रे हनु देलाक दृष्टि जे ।
मेरुगिरि कि पड़ुअछि ए सृष्टि जे ।
कनकमय दीर्घ पाचेरी, विश्वकर्मा जा निर्माण करि;
बोलइ बिशि जे पुर सेबइ परमेष्ठी जे ॥ ९ ॥

द्वितीय छान्द—हनुमानर लंका प्रबेश

रसकोइला बाणी

रबि अस्ते सन्ध्या हेला प्रकट ।
हनु मार्जारी समाने मर्कट ।
धेनुमानंक संगरे मिशिला ।
लंकागड़र भितरे पशिला से ।

विश्राम करो और वरुण के द्वारा दिये हुए पके फल खाकर अपनी थकावट दूर करो । ७ हनुमान प्रिय वचन सुनकर उँगली के अग्रभाग से उसके शिखर को छूकर बड़े वेग से उड़कर जाते समय राहु की माता के मुख में चले गये । फिर वानर-श्रेष्ठ हनुमान सिंहिका का वध करके वहाँ से धीरे से चल कर पराक्रम के साथ छलाँग लगाकर सुमेरु पर्वत पर पहुँचे । ८ हनुमान ने लंकादुर्ग पर दृष्टिपात किया । लगता था कि यह साक्षात् सुमेरु पर्वत की ही सृष्टि है । विशि कहता है कि उसके स्वर्णमय परकोटे का निर्माण विश्वकर्मा ने किया था और ब्रह्माजी उस नगर की सेवा में आया करते थे । ९

छान्द २ —हनुमान का लंका-प्रवेश

रसकुल्या को धुन

सूर्य के अस्त होने पर संध्या हो गयी । वह बिलाव के समान वानर का रूप धरकर गायों के साथ मिलकर लंकादुर्ग के भीतर प्रविष्ट हुए । उन्हें देखकर लंका की देवी ने रास्ता रोककर कहा, अरे वानर ! आज मैं

देखि ताकु लंकदेबी जे ।
पथ ओगाळिण बोलन्ति बानर आज मुँ तोते खाइबि जे ।। १ ।।
हनु ताहांकु चापोड़े माइले ।
भयरे देबी तांकु बर देले ।
जहिँकि आसिछु कर ता सिद्धि ।
पूर्बरु मोते कहिछन्ति बिधि से ।
असुरकुळ निपात जे ।
आजहुँ जाणिलि रावण सगोत्र सहिते होइबे हत जे ।। २ ।।
बुलइ लंका होइण निशंका ।
सीतांकु खोजइ करि आशंका ।
धूम्राक्ष बिरुपाक्ष महोदर ।
प्रशस्त महापारस्वर पुर जे ।
चिह्नइ सर्ब जुबती जे ।
सीतार किछिहिँ लक्षण न देखि बिकळ हुअइ मति जे ।। ३ ।।
अक्षय मेघनाद अकम्पन ।
कुम्भकर्ण बिभीषण सदन ।
महीरावण अतिकाय पुर ।
खोजइ सर्ब मरुतकुमर से ।
कुम्भ निकुम्भ दुर्मुख जे ।
दुर्जय दुरान्तक पुर खोजिण हनु हुअइ बिमुख जे ।। ४ ।।

तुझे खा जाऊँगी । १ हनुमान ने उसे एक थप्पड़ मारा । भयभीत होकर देवी ने उन्हें वर प्रदान किया कि तुम जिस कार्य के लिए आये हो उसे सिद्ध करो । पूर्वकाल में ब्रह्मा ने मुझसे राक्षसकुल के विनाश की बात कही थी । आज मैं समझ गयी कि अपने वंश के समेत रावण नाश को प्राप्त होगा । २ वह बिना किसी शंका के लंका में घूम-घूमकर आशंका के साथ सीता की खोज कर रहे थे । धूम्राक्ष, विरूपाक्ष, महोदर, तथा महापारुषर के महल में सब स्त्रियों को पहचान रहे थे । परन्तु सीता के कुछ भी लक्षण न देखकर उनका मन व्याकुल हो रहा था । ३ अक्षयकुमार, मेघनाद, अकम्पन, कुम्भकर्ण, विभीषण, महिरावण तथा अतिकाय के महलों में हर प्रकार से वायुनन्दन हनुमान खोज कर रहे थे । कुम्भ, निकुम्भ, दुर्मुख, दुर्विजय तथा दुरातक के महलों में खोजने पर भी हनुमान को विमुख होना पड़ा । ४ उन्होंने उन्मत्त मकराक्ष का महल खोजा ।

उन्मत्त मकराक्षसर पुर ।
मित्रघन शुक शारण घर ।
त्रिशिरा राक्षस पुर देखिला ।
लंकापुरे घरे घरे पशिला से ।
न देखिला राम नारी जे ।
खोजि खोजि जाइ प्रबेश होइला राबणर निजपुरी जे ।। ५ ।।
देखिला सर्ब रत्नमय पुर ।
शोइछि पुष्प बिमान उपर ।
अनेक नारी करिण सुरत ।
पड़िअछइ होइ अशकत से ।
बिबिध मदिरा पाने जे ।
केहि केहि नारी दिव्य सुकुमारी शोइछन्ति बिबसने जे ।। ६ ।।
नाग नर सुर गन्धर्ब नारी ।
किन्नर जक्ष राक्षसकुमारी ।
अपसरी बिद्याधरी जुबती ।
बेढि शोइछन्ति रावण कति से ।
का हातुं पड़िछि बीणा जे ।
काहा करुँ ताळ का करुँ मर्द्दळ का हस्तु हडपमुणा जे ।। ७ ।।
चामर खट आलट पकाइ ।
शोइछन्ति बाळी ज्ञान हराइ ।

मित्रघ्न, शुक, सारण तथा त्रिशिरा दैत्य के महलों में भी पता लगाया। लंकापुरी के प्रत्येक घरों मे घुसकर उन्होंने खोज की परन्तु श्रीराम की पत्नी नहीं दिखाई दी। खोजते-खोजते वह रावण के महल में जा पहुँचे। ५ उन्होंने देखा—वह सम्पूर्ण महल सोने का बना था। उसमें रत्न जड़े थे। रावण पुष्पशय्या पर पड़ा सो रहा था। अनेक स्त्रियाँ नाना प्रकार की मदिरा पीकर रतिक्रीड़ा करने के उपरान्त असक्त पड़ी थीं। कोई-कोई दिव्य सुकुमारी स्त्रियाँ नग्न पड़ी थीं। ६ नाग, नर, देवता, गन्धर्व-कामिनियाँ, किन्नर, यक्ष और राक्षस-कुमारियाँ, अप्सरायें तथा विद्याधर-युवतियाँ रावण को घेरकर उसके पास सो रही थीं। किसी के हाथ से बीणा गिर गयी थी। किसी के हाथ से मंजीरे, किसी के हाथ से मृदंग और किसी के हाथ से बाजा गिर गया था। ७ चँवर तथा आलट गिराकर स्त्रियाँ अचेत होकर सो रही थीं। पान-दान गिरे पड़े थे, स्वर्णपात्रों में

पानपात्रमान पड़िछि खसि ।
कनक कुम्भे सुराअछि पशि जे ।
जळइ प्रदीपमान जे ।
उज्ज्वळ-कनक-फरुआ पराय दिशुछन्ति स्तनघन जे ।। ८ ।।
मध्यरे शोइअछि दशशिर ।
करी कर प्रायक विंशकर ।
बेढि शोइछन्ति सकळ बाळी ।
कज्ज्वळ मेघे बेढ़ि कि बिजुळि से ।
नन्दन माळारे शोभा जे ।
चन्द्ररजनीरे तमाळ तरुरे कनकलता बेढिबा जे ।। ९ ।।
कोळरे शोइअछि एक नारी ।
कृशउदरी जउबने भारी ।
दहिला हेम निन्दइ ता तनु ।
ता देखि बिचारे पबनसूनु से ।
ए परा राम घरणी जे ।
मुख तार मद्यबासरे प्रकट नुहइ बोलि ता जाणि जे ।। १० ।।
मने बिचारे अपराध कलि ।
राम घरणी एहाकु बोइलि ।
मर्कत कलि गुंजपक्षी मुण्ड ।
स्फटिक कलि मुँ रजतखण्ड से ।

मदिरा भरी थी, प्रदीप जल रहे थे । उनके सघन-स्तन उज्ज्वल स्वर्ण के ढेर के सामान दिखाई दे रहे थे । ८ बीच में दशकंठ रावण हाथी की सूँड़ के समान बीस भुजाओं से सभी स्त्रियों को समेटकर सो रहा था । लगता था मानों काले बादल ने बिजली को घेर लिया हो । नन्दन कानन की माला ऐसी शोभा पा रही थी जैसे चाँदनी रात मे तमाल के वृक्ष को स्वर्णलताओं ने घेर लिया हो । ९ उसकी गोद में एक स्त्री सो रही थी जो कृषोदरी तथा विपुलयौवना थी । उसके शरीर की कांति तपे हुए स्वर्ण की निन्दा करनेवाली थी । उसे देखकर पवनपुत्र ने विचार किया । क्या यह राम की पत्नी हैं । उसके मुख से मदिरा की दुर्गन्धि से वह समझ गये कि यह सीता नहीं हैं । १० वह मन में सोचने लगे कि मैंने यह अपराध कर दिया । इसे राम की स्त्री समझा । मरकतकली को मैंने गुंजा और स्फटिक को चाँदी और पीतल को काँच बना दिया । मैंने

पित्तळ कलि कांचन जे ।
इन्द्रनीळमणि रतन मुँ कलि काचर संगे समान जे ।। ११ ।।
न देखि हनु सीतांक श्रीमुख ।
मने लभिलेक बहुत दुःख ।
बोलइ असुरे कले बा ग्रास ।
कि कहिबि जाइँ श्रीराम पाश मुँ ।
न पाइ सीता सन्देश जे ।
श्रीराम लक्ष्मण सुग्रीब सहिते निश्चय होइबे नाश जे ।। १२ ।।
एथिरु भल मोहर बिनाश ।
खोजिछि बोलि करिथिबे आश ।
सम्पाति कहिबा बितोइ मने ।
पशिला जाइ अशोक कानने से ।
द्वितीय खाण्डब बन जे ।
बोलइ बिशि जे देखिण प्रशंसा करुछन्ति हनुमान जे ।। १३ ।।

तृतीय छान्द

राग--बचनिका

अशोक बृक्ष डाळरे हनुमन्त बसि ।
मधुबन तोटा देखि बहुत प्रशंसि ।। १ ।।

इन्द्रनीलमणि रत्न की बराबरी काँच से कर दी । ११ हनुमान ने सीता का श्रीमुख न देखकर अपने मन में बहुत दुःख पाया । वह बोले, कहीं राक्षसों ने उसे खा तो नहीं लिया । मैं श्रीराम के समीप जाकर क्या कहूँगा ? सीता का सन्देश न पाकर लक्ष्मण और सुग्रीव के सहित श्रीराम का निश्चय ही नाश हो जायेगा । १२ इससे मेरा विनाश श्रेयस्कर है । मैं खोज रहा हूँ, वह ऐसी आशा कर रहें होंगे । फिर वह सम्पाती के कथन को मन में सोचकर अशोक वन मे घुस गये जो द्वितीय खांडव वन के समान था । विशि कहता है कि हनुमान उसे देखकर प्रशंसा करने लगे । १३

छान्द—३

राग–वचनिका

अशोक वृक्ष की डाल पर बैठे हुए हनुमान मधुवन बगीचे को देखकर बहुत प्रशंसा कर रहे थे । १ हे रावण ! तुम धन्य हो । तुम्हारा नगर

धन्यरे रावण धन्य तोर भुवन ।
जगती अट्टाळी सबु सुवर्ण निर्माण ॥ २ ॥
अळका भुवन परि दिशइ शोभित ।
मधुबन तोटा फळ पुष्परे पूरित ॥ ३ ॥
सुगन्ध कुसुम शोभे चउपाशे घेरि ।
धन्य धन्य बोलि हनु परशंसा करि ॥ ४ ॥
एड़े शिरी गोटा तुच्छा कार्ज्ये नाश जिव ।
सीतांकु न देले निश्चे रावण मरिब ॥ ५ ॥
एहा भाबि हनुमन्त क्षुद्ररूप हेला ।
बिक्रम नरेन्द्र कहे बृक्षरे वसिला ॥ ६ ॥

चतुर्थ छान्द—सीताठाव

राग—सिन्धुड़ा

फळ कुसुमे मण्डिला प्राय दिशे मधुबन तरुकुळ ।
सुबर्ण चउरा धाड़ि धाड़ि शोभा दिशुअछि तथि तळ जे ।
पारिजातक आदि ॥ १ ॥
स्वर्गुं आणिछि अमरबादी जे । रोपिअछि नाना अउषधि जे ।
शोभा दिशुछि तड़ाग नदी जे ॥ २ ॥

धन्य है । जगती, अट्टालिकाएं सभी सोने से बनी हैं । २ इसकी शोभा अलकापुरी के समान दिखाई देती है । मधुवन बाग फल और फूलों से लदा है । ३ चारों ओर गिरे हुए सुगन्धयुक्त पुष्प शोभा पा रहे हैं । धन्य-धन्य कहकर हनुमान प्रशंसा करने लगे । ४ इतना बड़ा ऐश्वर्य तुच्छ कार्य के कारण नष्ट हो जायेगा । सीता को न देने से निश्चय ही रावण मरेगा । ५ विक्रम नरेन्द्र कहता है कि यह सोचकर हनुमान ने छोटा रूप बना लिया और वृक्ष पर जा बैठा । ६

छान्द ४—सीता की खोज

राग—सिन्धुर

मधुवन के तरुसमूह फलों और फूलों से सजे से लगते थे । उनके नीचे पारिजात आदि स्वर्ण के चबूतरे पंक्तियों में शोभायमान दिख रहे थे । १ लगता था जैसे यह वादी (घाटी) देवताओं के स्वर्ग से आ गई हो जिसमें नाना प्रकार की ओषधियाँ लगी थीं । सरोवर तथा नदी शोभायमान दिखाई दे रही थी । २ हनुमान ने दिव्य-मन्दिर के प्रांगण में शिशपा

देखिला हनु दिव्य पुर प्रांगणे शिशुपा बृक्षर तळे ।
जनकसुता बिजय करिछन्ति असुरीमानंक मेळे जे ।
गण्डे देइण पाणि । मुख करिछन्ति धरणी जे ।
सुमरन्ति राम नाम बाणी जे । हनु से बृक्षे बसिले जाणि जे ।। ३ ।।
शरदपूर्ण चन्द्रमा प्राय दिशुअछि सीतांक श्रीमुख ।
मार्ज्जार जुद्धे कि लबणी पितुळा बेढ़िछन्ति चउपाख जे ।
नाना बिरुपासुरी । मुख शूकर प्राय काहरि जे ।
एकनयन अछि के धरि जे । कूला प्राय श्रबण काहारि जे ।। ४ ।।
प्रकट बिकट बदन काहार एक पाद बेनि मुण्ड ।
काहार उदर बिस्तार काहार लोळजिह्वा दीर्घ तुण्ड जे ।।
कार बंका नयन । केहि शार्दूळ अश्वबदन जे ।
तर्जि गर्जुछन्ति अनुक्षण जे । करुथान्ति खाइबाकु मन जे ।। ५ ।।
एमन्ते राबण शयन स्वपने कहिलेक लंकेश्वरी ।
सीता खोजिबाकु मर्कटे अइला सरिला तोहर शिरी रे ।
ताहा चेति रावण । खड्ग धइलाक सेहिक्षण जे ।
संगे घेनिण जुबतीगण जे । अशोक बन गला आपण जे ।। ६ ।।

वृक्ष के नीचे राक्षसियों के समूह के मध्य में सिर पर हाथ रखे हुए, मुख को पृथ्वी की ओर किये हुए जनकनन्दिनी को विराजमान देखा। वह श्रीराम का नाम स्मरण कर रही थी। हनुमान समझ-बूझकर वृक्ष में बैठ गये। ३ सीता का मुख शरद-ऋतु के चन्द्रमा के समान दिख रहा था। लगता था जैसे मक्खन की पुतली रूपी सीता की चारों ओर से घेरकर अनेक कुरूप राक्षसी रूपी बिल्लियाँ युद्धरत हों। किसी का मुख सुअर के समान था। किसी के एक ही आँख थी। किसी के कान सूप के समान थे। ४ किसी के एक पैर, दो शिर थे और किसी का मुख बड़ा भयावना था। किसी का पेट स्थूल था और किसी के विशाल जबड़ों में जिह्वा लपलपा रही थी। किसी के नेत्र टेढ़े थे। कोई सिंह और कोई घोड़े के मुखवाली थीं। वह प्रति क्षण गर्जन-तर्जन कर रही थीं और सीता को खाने का मन कर रही थीं। ५ स्वप्न में रावण को लंकेश्वरी ने बताया कि सीता की खोज करते हुए एक वानर आया है। अब तेरा वैभव समाप्ति पर है। उससे रावण जग पड़ा और उसने तलवार उठा ली। वह स्वयं युवतियों को लेकर अशोक-वाटिका में जा पहुँचा। ६ कोई

के घेनिछन्ति दिहुड़ि चन्द्रदीप के खटे खदि चामर।
काहार करे हडप धूपकाठि दर्पण धरि का कर जे।
बाजे बीणा मर्दळ। केहि भुंजाउअछि ताम्बुळ जे।
चउपाशरे असुरीबळ जे। पटुआरी चळे महीपाळ जे॥ ७॥
राजा बिजे देखि समस्त असुरी चरणतळे पड़िले।
सीताहिँ जानु जुगळ जोड़ि बसनरे तनु घोड़ाइले जे।
भये कम्पे शरीर क्रोधे कहुअछि लंकेश्वर जे।
कि के जानकी नोहु मोहर रे। राम मानब सिना तोहर गो॥ ८॥
आस आस बस बस मोर अंके जनकराजनन्दिनी।
सामान्य मणु कि सम मोते नाहिँ स्वर्ग पाताळ मेदिनी जे।
आरे नारी रतन। मोते दृढ़े कर आलिंगन रे।
चुम्बन दान दिअ बहन जे। मोते बिन्धुछि मीनकेतन जे।
बिपुळ बर्त्तुळ उच्च कुच बेनि मोर हृदरे लगाअ।
शीघ्र बेनि भुज छन्दिण चम्पकमाळा प्राय शोभा पाअ गो।
आगो नबनागरी। तोते खटिथिब मन्दोदरी गो।
सर्बनारी हेबे परिबारी गो। भोग करिबु ए लंकाशिरी गो॥ ९॥

कोई चामर और व्यजन डुला रही थी। कोई चन्द्रदीप का दियट लिये हुए थी। कोई जलती हुई अगरबत्ती लिये थी। कोई हाथ में दर्पण लिये थी। मृदंग और वीणा बज रहे थे। चारों ओर हाथों में ताम्बूल लिये थी। राक्षसियों का दल लेकर राजा रावण जुलूस बनाकर चल रहा था। ७ राजा की उपस्थित देखकर समस्त राक्षसियाँ चरणों में गिर पड़ीं। सीता ने दोनों जाँघों को जोड़ते हुए वस्त्र से शरीर ढक लिया। भय से उनका शरीर काँप रहा था। तभी लंकाधिपति क्रुद्ध होकर बोला, अरी जानकी! क्या तू मेरी नहीं है? मानव राम ही तुम्हारा है। ८ हे जनकराजनन्दिनी! आकर मेरे अंक में बैठो। मुझे क्या सामान्य समझ रही हो। अरी मेरी समता करनेवाला कोई पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में नहीं है। मुझे शीघ्र ही चुम्बन नारी-रत्न! दृढ़ता के साथ मेरा आलिंगन करो। कामदेव मुझे पीड़ित कर रहा है। अपने दोनों उन्नत का दान दो? वर्तुल उरोजों को मेरे हृदय से लगा दो। तुम शीघ्र ही चम्पकमाला के समान अपनी भुजाओं से शोभा को प्राप्त करो। अरी नवनागरी! मन्दोदरी तुम्हारी सेवा करती रहेगी। सभी नारियाँ तुम्हारी परिचारिकाएँ बनेंगी। तुम इस लंका के ऐश्वर्य का उपयोग करोगी। ९ मैं ऋषिकुमार

मुँ ऋषिकुमर तु ऋषिकुमारी नोहिला कि समसरि ।
शरण पशुछि शरणवत्सळा चरणतळे तोहरि रे ।
आरे कोमळअंगि । बिशनेत्रे नेत्र कर संगि रे ।
त्रयलोचन खंजित भंगिरे । जिके झुरुछु रम्य अपांगि रे ।। १० ।।
एमन्त मणु कि सिन्धु पारि होइ आसिबे से बेनि जति ।
तोते एथु नेबे तु पुण तांकर होइबु प्रिय जुबती रे ।
तेज मनु से कथा । दिन जामिनी हेउछि बृथा रे ।
एबे भुमिकि न पोत मथा रे । भणे बिशि राम रसकथा जे ।। ११ ।।

पंचम छान्द

राग–सिन्धुड़ा

रावणर बाणी शुणि ठाकुराणी बोलन्ति आरे पामर ।
राम जाणिथिले जीबने न थान्तु न थान्ता ए लंकापुर रे ।
नाश जिब सम्पद । राम संगे जे कलु बिबाद रे ।
शुणि नाहुँ धनुर्गुण नाद रे । निकटरे अछि तो बिपद रे ।। १ ।।
तु छार पापिष्ठ दुराचार नष्ट छुइँबु मोर शरीर ।
निश्चे जाणि थाअ तोते मारि मोते नेबे एथु रघुबीर रे ।

और तुम ऋषिकुमारी हो, इसमें क्या समानता नहीं हुई ? हे शरणवत्सले ! मैं तुम्हारे चरणों की शरण ग्रहण करता हूँ । अरी कोमलांगी ! त्रिलोचन की खंजित भंगिमा से अपने नेत्रों को हमारे बीस नेत्रों से मिला लो । हे सुन्दर अपांगी ! मेरा जीवन झुलस रहा है । १० क्या तुम ऐसा समझ रही हो कि दोनों तपस्वी सागर को पार करके आएँगे । तुम्हें यहाँ से ले जाएँगे और तुम उनकी प्रिय युवती बनोगी । अपने मन से यह बात निकाल दो । दिन और रातें बेकार जा रही हैं । अब पृथ्वी की ओर अपना मस्तक न गड़ाओ । विशि श्रीराम की रसमयी कथा का वर्णन करता है । ११

छान्द—५

राग–सिन्धुर

रावण के वचन सुनकर देवी सीता ने कहा, अरे नीच ! यदि श्रीराम को पता होता तो न तो तुम्हारा जीवन बचता और न यह लंकापुरी ही । श्रीराम के साथ युद्ध करने से यह सम्पत्ति नष्ट हो जाएगी । तुमने उनके धनुष की टंकार नहीं सुनी है । विपत्ति तुम्हारे निकट ही है । १ तू तुच्छ दुराचारी, पापिष्ठ ! मेरा शरीर छुएगा । यह तू निश्चय समझ ले कि

पोड़िजिब ए लंका। पर जुबतीकि नाहिँ शंका रे।
मरिबाकु नाहिँ तोर दकारे। राम पाइ नाहान्ति आशंका जे ॥ २ ॥
जाहा तु कहुछु अप्राध पाउछु छिड़ि न पड़े रसना।
छिड़िब एकाबेळके दशशिर राम हेले कोपमना से।
रघुकुळ करता। पाइ नाहान्ति मोर बारता से।
खोजु थिबे बन गिरि लता से। झुरुथिबे होइण कृशता से ॥ ३ ॥
जानकी बचन शुणि दशानन कोपे बोलइ वचन।
बेनि मासे मोते राम देखाइबु नोहिले हेबु व्यञ्जन से।
एहि समय जाणि। मिळिगला मन्दोदरी राणी जे।
कोप किम्पा कर बिंशपाणि हे। मोर सगते बंच रजनी हे ॥ ४ ॥
ऋषिकुमारी मानुषी अतिकृशा केश बसन मळिन।
तो पुरे केते सुन्दरीमाने छन्ति एहाकु बहु बळिण जे।
आस हे प्राणपति। मोर संगते कर सुरति हे।
घेन नाथ मोहर बिनति.। मुहिँ हरिबि तुम्भर मति जे ॥ ५ ॥
मोर जुबती सम्पत्ति देखि अबा जानकी होइव बश।
एमन्त बिचार करि नारी घेनि होइथिला परवेश से।

रघुवीर तुझे मारकर मुझे यहाँ से ले जाएँगे। यह लंका जल जाएगी। परायी स्त्री की शंका तुझे नही है। तेरे धमकाने से मैं मरनेवाली नहीं। श्रीराम को पता नहीं मिला, मुझे इसी की आशंका है। २ जो तू कह रहा है, उससे तुझे पाप लग रहा है। तेरी जीभ टूटकर क्यों नहीं गिर जाती। श्रीराम के क्रुद्ध हो जाने पर एकबारगी तेरे दश शिर कट जाएँगे। रघुकुलकर्ता को मेरे समाचार नहीं मिले हैं। वह बन-गिरि-लताओं में खोज रहे होंगे। वह दुबले होकर झुलस रहे होंगे। ३ जानकी के वचनों को सुनकर दशानन कुपित होकर बोला कि दो माह के भीतर मुझे राम को दिखा दे, नहीं तो मेरा भोजन बन जाएगी। इसी समय महारानी मन्दोदरी वहाँ आ गई और बोली, हे विंशबाहु ! आप कोप क्यों कर रहे हैं ? आप मेरे साथ रात्रि व्यतीत करें। ४ यह मानव ऋषिकुमारी अत्यन्त. कृश है। इसके केश और वस्त्र मलिन हैं। इससे अधिक सुन्दर कितनी ही स्त्रियाँ आपके महल में हैं। हे प्राणेश्वर ! आइये और हमारे साथ रतिक्रीडा करिए। हे नाथ ! आप मेरी विनती स्वीकार करें। मैं आपके मन का हरण करूँगी। ५ मेरी युवती-सम्पदा. को देखकर जानकी वश में हो जाएगी, यही विचार लेकर वह नारियों के साथ वहाँ आया था। अब उसका मुख निराश हो गया।

तांक मुखु निराश । शुणि तेजिला खर निःश्वास से ।
कहे त्रिजटा होइण बश जे । देब मन न कर बिरस से ।। ६ ।।
रखि असुरींकु शिखाइ रावण मन्दिरकु बाहुड़िला ।
मन्दोदरीकि घेनि पुणि पुष्पक जानोपरे पहुड़िला जे ।
बेढि रक्षा दनुजी । भय करान्ति बहु गरजि जे ।
कि कारणे राबणे न भजि गो । तोर मांसकु खाइबु भाजि जे ।। ७ ।।
समस्त राक्षसी तोहर मांसकु बाण्टि खाइबु गो सीते ।
किपाँ राबणर भारिजा तु नोहु बिभूति भुञ्जन्तु केते जे ।
मने चिन्ता कले रघुबीर जे । बिशि भजइ सीता पयर जे ।। ८ ।।

षष्ठ छान्द

राग–कुम्भ कामोदी

असुरी भर्त्सना शुणि ठाकुराणी करन्ति कारुण्य ।
आहा स्वामी खर-दूषण-अन्तक आहा हे लक्ष्मण ।। १ ।।
अनाथ तरुणी प्राये मोते आणि कलुरे दइत्य ।
बेळुँ बेळुँ कटुबाणी शुणि शुणि तनु कि रहिब ।। २ ।।

वह निःश्वास छोड़ने लगा । तब त्रिजटा ने कहा, हे देव ! मन को दुखी न करो । ६ राक्षसियों को सिखाकर रावण महल को लौट गया और फिर मन्दोदरी को लेकर पुष्पकयान के ऊपर लेट गया । राक्षसियाँ सीता को घेरकर बहुत गर्जन करके भय दिखाने लगीं । तुमने रावण को किस कारण से नहीं अपनाया ? तुम्हारा मांस भूनकर हम खा जाएँगी । ७ अरी सीता ! सभी राक्षसियाँ तेरे मांस को बाँटकर खा जाएँगी । तुम रावण की भार्या किसलिए नहीं बनीं । तुम कितने ऐश्वर्य का उपभोग करतीं । सीता ने मन में रघुवीर श्रीराम का चिन्तन किया । विशि श्री सीताजी के चरणों का भजन करता है । ८

छान्द—६

राग–कुम्भ कामोदी

राक्षसियों की भर्त्सना सुनकर देवी सीता करुण-क्रन्दन करती हुई बोलीं, हा खर-दूषण-हन्ता मेरे स्वामी ! हा लक्ष्मण ! अरे दैत्य ! तूने मुझे यहाँ लाकर अनाथ युवती-सा बना दिया । समय-समय पर तेरे कटु वचनों को सुनकर क्या यह शरीर बचेगा । १-२ मैं रावण के नगर में

रावणपुरे अछि बोलि केमन्ते जाणिबे मो पति ।
दारुण दइब बिपत्ति उपरे देउछि बिपत्ति ।। ३ ।।
बहु जे थिब निरन्तरे नयनकमळु लोतक ।
दहु जे थिब मो बिहीने हृदय कुसुमशायक ।। ४ ।।
कहु जे थिबे बनजीबमानंकु होइण बिनता ।
रहुण थिबे जे कहुथिबे पुण मोहर बारता ।। ५ ।।
प्राणनाथ मोर कुचर चन्दन मण जे अन्तर ।
एबे अन्तर होइ मोते रहिल पर्बत सागर ।। ६ ।।
केमन्ते करि प्राणनाथ बिहीने धरिबि जीबन ।
आउ निकि मोते बारे देखाइबे सुन्दर बदन ।। ७ ।।
निश्चय मरिबि कष्टरु तरिबि खाअ मोर अंग ।
बोले बिशि शुण त्रिजटा कहइ स्वपन प्रसंग ।। ८ ।।

सप्तम छान्द—त्रिजटार प्रबोध

कान्दि कउशल्या वृत्ते

त्रिजटा कहइ शुण प्रिय सहि बृथारे बिकळ हुअ ।

हूं, यह मेरे पति को कैसे ज्ञात होगा ! दारुण दैव ! विपत्ति के ऊपर विपत्ति दे रहा है । ३ नयन-कमलों से निरन्तर अश्रु बहते होंगे । मेरे बिना कुसुमशायक कामदेव हृदय को चला रहा होगा । ४ वह विनीत भाव से वन्य जीवों से पूछ रहे होंगे । न रह पाने के कारण बारम्बार मेरी ही बातें करते होंगे । ५ हे प्राणेश्वर ! मेरे वक्ष पर लगे चन्दन को तुम भी अन्तर माना करते थे । अब पर्वत और सागर के अवरोध से तुम मुझसे पृथक् रह रहे हो । ६ प्राणनाथ के बिना अब मैं कैसे जीवन धारण करूँगी ? क्या एक बार और आप मुझे अपना सुन्दर मुख नहीं दिखाओगे ? ७ सीता ने कहा कि तुम लोग मेरे शरीर को अवश्य ही खा लो, जिससे मैं मरकर निश्चय ही कष्ट से पार हो जाऊँगी । विशि कहता है कि त्रिजटा ने कहा कि मैं स्वप्न की बात कहती हूं, उसे सुनो । ८

छान्द ७—त्रिजटा का प्रबोध

कान्दि कौशल्या की धुन

त्रिजटा बोली, हे प्यारी सखी ! सुनो ! व्यर्थ में व्याकुल न हो । सामान्य प्राणियों की भाँति कातर होकर आँखों से आँसू बहा रही हो ।

इतर जनंक पराये कातर नयनु बुहाअ लुह गो ।
तुम्भे जगतमाता । तुम्भ जोगुं पृथ्वी आतजात गो ।। १ ।।
स्वयं नारायणी बिष्णु पाटराणी लक्ष्मी नामरे बिदित ।
असुर नाशने मर्त्ये जात होइ देबंक कामना हित गो ।
तुम्भे मिथिळापुरे । जन्म ग्रहण कल सेठारे गो ।। २ ।।
शिब शरासन भांगि नारायण तुम्भंकु तहुं आणिले ।
राज्ये अभिषेक हेबा जाणि सर्ब दिगपाळे बिचारिले गो ।
जेबे राम राजन । हेबे न मरे दुष्ट राबण गो ।। ३ ।।
देबता ए कूट पाञ्चन्ते कपट कले कैकेयी जननी ।
घेनि संगे भाइ आबर बैदेही बने बिजे रघुमणि गो ।
पंचबटीरे बास । होन्ते सूर्पणखा मिळे पाश गो ।। ४ ।।
ता नासा श्रबण करन्ते छेदन लंकारे प्रबेश हेला ।
कहन्ते तो गुण लंकार राबण तहुं चोराइ आणिला गो ।
एबे अशोक बने । रखिअछि असुरीगहणे गो ।। ५ ।।
निश्चे लंकापुर हेब छारखार मरिब दुष्ट राबण ।
कालि रात्रे जाहा स्वपने देखिछि ताहा कहुअछि शुण गो ।
पद्मनाभ कहइ । चित्ते चिन्तिण जानकीसाइँ जे ।। ६ ।।

तुम जगज्जननी हो । तुम्हारे कारण ही पृथ्वी का आना-जाना होता है । १ तुम स्वयं विष्णु की पटरानी लक्ष्मी के नाम से विख्यात हो । देवताओं के हित-साधन के लिए असुरों का विनाश करने के लिए तुमने मृत्युलोक मे मिथिलापुर में जन्म-ग्रहण किया है । २ शंकर के धनुष को तोड़कर भगवान विष्णु तुम्हें वहाँ से ले आए । राज्य में अभिषिक्त होना देखकर सभी दिग्पालों ने विचार किया कि जब श्रीराम राजा बन जाएँगे तो दुष्ट रावण नहीं मरेगा । ३ देवताओं के इस प्रकार षड्यंत्र करने पर माता कैकेयी ने छल किया । फिर रघुमणि राम भाई तथा वैदेही को लेकर वन में प्रविष्ट हुए । पंचवटी में निवास करते समय शूर्पणखा उनके पास आई । ४ उसके नाक और कान कट जाने पर वह लका पहुँची और उसने रावण से तुम्हारे गुणों को बताया । वह सीता को वहाँ से चुरा लाया और अब उसने सीता को राक्षसियों के बीच अशोक वन में रख दिया है । ५ निश्चय ही लंकापुर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा और दुष्ट रावण मरेगा । कल रात्रि में जो स्वप्न देखा है वह मैं कह रही हूँ । उसे सुनो ! पद्मनाभ मन में जानकी-नाथ का चिन्तन करके वर्णन कर रहा है । ६

अष्टम छान्द

राग–सिन्धु कामोदी

आगो सखि देखिलि स्वपन गो ।
आगो, राबण चढ़िअछि बिमान ॥ पद ॥
जोचिअछि बहु खर गमे दक्षिण दिगर ।
तैळ होइअछि जरजर गो ॥ १ ॥
पिन्धिछि रंग बसन रंग कुसुम चन्दन ।
नेउछन्ति कृतान्तकगण गो ॥ २ ॥
राम चढ़ि श्वेत गज होइछन्ति मोति सज ।
श्वेत बसन श्वेत चन्दन गो ॥ ३ ॥
श्वेत पुष्पमाळ चूळ बिजे श्वेत छत्रतळ ।
श्वेत चामर खटन्ति जन गो ॥ ४ ॥
जेबे अछि प्राणे आश सेबिथाअ
एहा पाश निश्चे नाश । होइब रावण गो ॥ ५ ॥
शुणि त्रिजटा बचन आनन्द जानकी मन ।
शान्त होइले असुरीगण गो ॥ ६ ॥
स्वपन कहि शोइले हनु सबु शुणुथिले ।
बिचारिले एहि से जानकी जे ॥ ७ ॥

छान्द—८

राग–सिन्धु कामोदी

हे सखी ! मैंने स्वप्न देखा है कि रावण विमान पर चढ़ा है । पद रथ को जोतकर तेल से सना हुआ तीव्र वेग से दक्षिण दिशा की ओर जा रहा है । १ उसने लाल चन्दन, लाल पुष्प तथा लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं । यमदूत उसे लिये जा रहे हैं । २ श्रीराम मोतियों से सजे हुए श्वेत हाथी पर विराजमान हैं । ३ उनकी जटाओं में श्वेत पुष्प की मालाएं हैं । वह श्वेत छत्र के नीचे हैं और लोग उन पर श्वेत चामर डुला रहे हैं । ४ यदि प्राणों की आशा हो तो इनके समीप सेवा करती रहो । रावण का नाश निश्चित रूप से होगा । ५ त्रिजटा की बातें सुनकर सीता का मन प्रसन्न हो गया और राक्षसियां शान्त हो गयीं । ६ स्वप्न की बातें कहकर वह सो गई । हनुमान सब सुन रहे थे । उन्होंने विचार किया कि यह ही जानकी है । ७ यदि बिना भेंट किये मैं श्रीराम

भेट नोहि गले पाश। राम न जिबे बिश्वास।
बोलिबे से देखिलु तु आन रे॥ ८ ॥
उभा हेउँ ठाकुराणी। हनु से समय जाणि।
दशरथंक कीर्त्ति कहिला जे॥ ९ ॥
पछे पछे गुण गुणि बोलइ से पुण पुणि।
कहइ से हनुमान बीर जे॥ १० ॥
बोले बिशि एहा शुणि। रावण प्रायेक भणि।
आशका होइला सीत मने हे॥ ११ ॥

नवम छान्द

राग-तोड़ि (एकताळी)

शिशपा बृक्षर डाळे, हनु मने मने भाळे,
निश्चय जानकी जनकनन्दिनी देखिलइँ बेनि डोळे।
कि भाग्यबळे॥ १ ॥
शुखिछि चन्द्रबदन, निरते नीर लोचन,
तेबेहेँ शोभाकु, उपमा देबाकु नाहिँना त्रय भुबन।
नारीरतन॥ २ ॥
बिहि कि न करे पुणि, श्रीरामचन्द्र घरणी,

के पास जाऊँगा तो उन्हें विश्वास नहीं होगा। वह कहेंगे कि तुमने किसी दूसरे को देखा होगा। ८ देवी सीता के खड़े होते ही हनुमान सुसमय जानकर दशरथ की कीर्ति का बखान करने लगे। ९ पराक्रमी हनुमान पीछे-पीछे उनके गुणों का स्मरण करते हुए बार-बार बखान करने लगे। १० बिशि कहता है कि इसे सुनकर रावण के समान ही (माया) समझकर सीता के मन में शंका उत्पन्न हो गई। ११

छान्द—९

राग-तोड़ी (एकताल)

शिशपा वृक्ष की डाल पर हनुमान मन ही मन सोच रहे थे कि मैंने भाग्य के बल से निश्चित ही जनककुमारी सीता को अपनी आँखों से देख लिया है। १ मैंने सुना था कि उनका चन्द्र-वदन है। निरन्तर आँखों में अश्रु भरे रहते हैं। इस पर भी इस नारी-रत्न की शोभा की उपमा देने के लिए तीनों लोकों में कोई नहीं है। २ भाग्य ने क्या नहीं किया ?

असुरपुरे असुरी जगिछन्ति, जगतर ठाकुराणी।
रमणीमणि ॥ ३ ॥
कहन्ते बंशानुगुण, शुभन्ते सती श्रवण,
तरुकु चाहान्ते मर्कट गोटिए कहे रामकीर्त्ति गुण।
से पुण पुण ॥ ४ ॥
कपि तु काहुँ अइलु, श्रीराम नाम धइलु,
हृदय मोहर दहन काळरे चन्दन लेपन कलु।
जाहा बोइलु ॥ ५ ॥
हनु बोलन्ति गो मात, श्रीरामचन्द्रंक दूत,
एमन्त कहिण चरण तळरें पड़िला जाइँ त्वरित।
से राम दूत ॥ ६ ॥
श्रीराम मुद्रिका देले, संकेत मान कहिले,
तुम्भंकु पृथिबीजाक खोजुअछुँ अंजनासुत कहिले।
प्रतीति गले ॥ ७ ॥
राम कले बाळी हत, सुग्री संगे हेले मित,
कोटि कोटि कपि मोहरि समाने होइछुँ प्रभुंक भृत्य।
कहिलि सत्य ॥ ८ ॥
समुद्र डेइँ अइलि, लंकागड़रे पशिलि,

श्रीरामचन्द्र की पत्नी स्त्रियों में श्रेष्ठ जगज्जननी देवी सीता इस राक्षसपुरी में राक्षसियों के पहरे में रह रही हैं। ३ कही गई वंश की गुणगाथा सती के कानों में पड़ने पर, वृक्ष की ओर ताकने पर बारम्बार श्रीराम के गुण तथा कीर्ति का वर्णन करते हुए एक वानर दिखा। ४ वह बोलीं, हे वानर ! तू कहाँ से आया है जो श्रीराम का नाम ले रहा है ? तूने जो कुछ कहा, उससे तूने मेरे दग्ध होते हुए हृदय पर चन्दन का लेप कर दिया। ५ हनुमान ने कहा, हे माता ! मैं श्रीरामचन्द्र का दूत हूँ। इतना कहकर वह राम-दूत शीघ्र ही जाकर उनके चरण-तल पर गिर पड़ा। ६ उन्होंने श्रीराम की मुद्रिका देकर संकेत बताते हुए अंजनीलाल ने कहा कि तुम्हें सम्पूर्ण पृथ्वी में खोज रहा हूँ। तब सीता को विश्वास हुआ। ७ श्रीराम ने वालि का वध करके सुग्रीव से मित्रता की। हमारे जैसे करोड़ों वानर प्रभु श्रीराम के दास हो गये हैं। यह मैं सत्य कह रहा हूँ। ८ समुद्र फाँदकर आकर मैं लंका दुर्ग में आ घुसा। आपके श्रीचरणों के दर्शन न पाकर मैं अपने प्राण दे रहा था। अच्छा

तुम्भ श्रीचरण दर्शन न पाइ प्राण मुँ हराउथिलि ।
भला देखिलि ।। ९ ।।
राम माल्यबन्त गिरि, शिखे छन्ति बिजे करि,
सुग्रीब सहिते अनेक मर्कट बन गिरि छन्ति पुरि ।
से ऋक्ष हरि ।। १० ।।
आस मोर कन्धे बस, घेनि जिबि राम पाश,
रावण सहिते मारन्ति प्रभुंक प्रतिज्ञा होइब नाश ।
देख साहस ।। ११ ।।
शुणिण देबी हरष, हनुकु बसाइ पाश,
बोलइ बिशि बिश्वास कथा शुणि संशय हेला बिनाश ।
ए रामरस ।। १२ ।।

दशम छान्द

राग—तोड़ि

राम आज्ञा हनु शिरे घेनि । अंजनासूनु सागर जिणि ।
सीतांक अग्रते मुद्रिका दिअन्ते देखि रोदन्ति क्षितिनन्दिनी ।
हे रत्नमुदि । जाणु जाणु हराइलि मोर बुद्धि ।
शून्य अंगे बसिथिबे दयानिधि ।। १ ।।

हुआ, आप दिख गयीं । ९ श्रीराम माल्यवन्त पर्वत के शिखर पर विराजमान हैं । वह रीछ और वानर सुग्रीव के सहित वन तथा पर्वत पर भरे पड़े हैं । १० आइए मेरे कन्धे पर बैठ जाइए, मैं आपको श्रीराम के समीप ले जाऊँगा । मैं रावण के सहित सबको मारकर आपको साहस दिखाता, परन्तु इससे प्रभु की प्रतिज्ञा नष्ट हो जाएगी । ११ यह सुनकर देवी सीता प्रसन्न हो गयीं और उन्होंने हनुमान को पास बिठा लिया । विशि कहता है कि श्रीराम के रसमय चरित्त की विश्वसनीय कथा को सुनकर सीताजी के संशय का विनाश हो गया । १२

छान्द—१०

राग—तोड़ी

श्रीराम की आज्ञा शिर पर धारण करके अंजनीनन्दन ने समुद्र को पार करके सीता के आगे मुद्रिका देने पर भूमिजा रुदन करने लगीं । हे रत्न-मुद्रिके ! जान-बूझकर मेरी बुद्धि का लोप हो गया । दयानिधि

शिब कोदण्ड भांगिबा बेळे । तोते मोते पिता घेनि कोळे ।
गदगद होइ लोतक बुहाइ तोते मोते देले राम कोळे ॥ २ ॥
सर्ब अळंकार कले दूर । आज्ञा न भांगिले पितांकर ।
निकाञ्चन बेश होइ दाशरथि तोते मात्रक धइले कर ॥ ३ ॥
कि के अइल सागर जिणि । एका होइथिबे रघुमणि ।
न सहि दइब ए दण्ड बिहिला जीब जाउ राम नाम गुणि ॥ ४ ॥
परिक्रमा करि मोर अंग । जुबाकाळे बिहि कला भंग ।
केबळ भाबिबि करुणा कोदण्ड भाग्य थिले हेब कान्तसंग ॥ ५ ॥
आहे मारुति बहन जिब । राम अग्रते प्रबेश हेब ।
बोले बिशि महासती आज्ञा देले मथामणि पद्मपदे देब ॥ ६ ॥

एकादश छान्द

राग–खेमटा

मुदि सन्तक पाइ कनकतनया ।
बिचारन्ति असुर बा करिछि माया ॥ १ ॥

श्रीराम शून्य अंग में बैठे होंगे । १ शिव का धनुष तोड़ने के समय पिताजी ने तुझे और मुझे गोद में ले लिया और गद्‌गद होकर अश्रु बहाते हुए तुझे और मुझे श्रीराम के अंक में दे दिया । २ समस्त अलंकारों को दूर करके श्रीराम ने पिता की आज्ञा भंग नही की । दशरथनन्दन ने अलंकार-रहित वेश बनाकर मात्र तुझे ही अपने हाथ में धारण किया था । ३ तुम सागर पार करके क्यों आ गई ? रघुमणि अकेले हो गये होंगे । दैव ने सहन न कर पाने के कारण ही यह दण्ड दिया । यह जीवन श्रीराम का नाम स्मरण करते बीत जाय । ४ फेरे होने के बाद भाग्य ने युवाकाल मे ही मेरे शरीर को पृथक् करा दिया, केवल कोदंड-धारी राम की करुणा के बारे में ही सोचती रहती हूँ । भाग्य में होने से फिर से पति का साथ मिलेगा । ५ हे वायुनन्दन ! तुम शीघ्र ही श्रीराम के समीप जाओ । विशि कहता है कि महासती सीता ने श्रीराम को देने के लिए अपना चूड़ामणि देकर उन्हें आज्ञा दी । ६

छान्द—११

राग–खेमटा

मुद्रिका को सन्देश के रूप में पाकर भूमितनया सीता विचार करने लगी कि कहीं यह राक्षसी-माया तो नहीं है । १ वनपशु होकर यह वन

बन पशु होइ बने ए बुलुथान्ता ।
देबतांक अळंकार काहुँ पाआन्ता ॥ २ ॥
बनपशु होइ पुणि एड़े सुन्दर ।
काहिँकि देखिला नाहिँ नेत्र मोहर ॥ ३ ॥
कपि जीबर एड़ेक साहस काहिँ ।
केमन्त अइला एहु सागर डेइँ ॥ ४ ॥
एते बोलि बिचारन्ति जनकसुता ।
निश्चय राबण ए इन्द्रजित पिता ॥ ५ ॥
एते भाळि पचारन्ति हनुकु चाहिँ ।
पूर्बे तोहर मोहर देखिला नाहिँ ॥ ६ ॥
जेमन्त प्रते जिबइँ से कथा कह ।
मोर मनकु त तोते लागे सन्देह ॥ ७ ॥
एहा शुणि हनुमन्त जोड़इ कर ।
मुहिँ अटइ केशरी कपिकुमर ॥ ८ ॥
बाळी सुग्रीबंक मुँ भणजा अटइ ।
एबे रघुनाथर चरणे खटइ ॥ ९ ॥
जानकी बोलन्ति जाणे के सुग्रीबर ।
के जाणइ बळी राजा काहा कुमर ॥ १० ॥

में घूमता । देवता का अलंकार इसे कहाँ मिलता । २ वन्य-पशु होकर यह इतना सुन्दर है कि हमारे नेत्रों ने तो कही ऐसा नहीं देखा । ३ वानर का जीव होकर इतना साहस कहाँ से आ गया कि यह सागर पार करके आ पहुँचा । ४ ऐसा कहकर जनककुमारी विचार करने लगी कि यह निश्चय ही इन्द्रजित् का पिता रावण है । ५ ऐसा सोचकर उन्होने हनुमान की ओर देखकर पूछा कि पहले हमारी तुम्हारी जान-पहचान तो थी नहीं । ६ मुझे जिस प्रकार से विश्वास हो, वह बात कहो । हमारा मन तो तुम्हारे प्रति सन्देह कर रहा है । ७ यह सुनकर हनुमान ने हाथ जोड़कर कहा कि मैं केशरी वानर का पुत्र हूँ । ८ मैं बालि और सुग्रीव का भाञ्जा हूँ । इस समय रघुनाथ जी के चरणों की सेवा करता हूँ । ९ जानकी ने कहा कि क्या पता, सुग्रीव कौन है ! किसे मालूम है कि वालि राजा किसका पुत्र है ! १०

जाणिथिले कह तु गुपत सन्देश ।
न कहिले निश्चे तोते करिबि नाश ।। ११ ।।
हनुमन्त बोलइ शुण बइदेही ।
चित्रकूटे बरषेक थिल जे रहि ।। १२ ।।
तहिँरे जेते कल तुम्भे क्रीड़ारस ।
गुपते कहिले राम सेहि सन्देश ।। १३ ।।
दिने गल लक्ष्मणंकु बसा जगाइ ।
बनरे बिहार कल एकान्त होइ ।। १४ ।।
बनमध्ये तुम्भंकु लुचि रघुपति ।
खोजि खोजि ठाबकल गो महासती ।। १५ ।।
तहुँ नागेश्वर बने जाइ पशिल ।
नाना पुष्प तोळि क्रीड़ारसे मातिल ।। १६ ।।
पुणि मन्दाकिनी जळे पशिल जाइ ।
जळक्रीड़ा सारि कूळे मिळिल दुइ ।। १७ ।।
धातु शिळारे बसाइ जगतजिता ।
गेरु घोरि तुम्भ मुण्डे देलेक चिता ।। १८ ।।
तहुँ हस्त धराधरि होइण गल ।
वनरे बुलि देखिल मर्कट पल ।। १९ ।।

यदि तुम जानते हो तो गुप्त सन्देश कहो । न कहने से मैं निश्चय ही तुझे नष्ट कर दूँगी । ११ हनुमान ने कहा, हे वैदेही ! सुनो । आप चित्रकूट में एक वर्ष रही थीं । १२ वहाँ आपने जो रसमयी क्रीड़ा की, श्रीराम ने वही गुप्त सन्देश कहा है । १३ एक दिन लक्ष्मण को कुटी की रक्षा का भार देकर आप गयीं और एकान्त वन में जाकर आपने विहार किया । १४ वन के मध्य में श्रीराम आपसे छिप गये । हे महासती ! आपने खोज-खोजकर उन्हें ढूँढ लिया । १५ वहाँ से जाकर नागेश्वर वन में घुसकर नाना प्रकार के फूलों को तोड़कर आप क्रीड़ा में मस्त हो गयीं । १६ फिर आप मन्दाकिनी के जल में घुस गयीं और दोनों ने मिलकर जलक्रीड़ा समाप्त की और तट पर आ गये । १७ धातु की शिला पर बैठकर जगज्जयी श्रीराम ने गेरू घोलकर आपके सिर पर तिलक लगाया था । १८ वहाँ से एक-दूसरे का हाथ पकड़कर जंगल में घूमते हुए आपने वानरों का दल देखा । १९

ताहा देखि भय पाइ गल पळाइ ।
लेउटिण रामंकु धइल कुण्डाइ ॥ २० ॥
कोळ करन्तेण गेरु चिता लागिला ।
तहुँ दुइ जणंकर लीळा बढ़िला ॥ २१ ॥
गुपत करिण राम एहा कहिले ।
ए कथा कहिबु सीता प्रते न गले ॥ २२ ॥
एहा शुणि जानकी होइले हरष ।
बोइले तु प्रभुंकर बड़ बिश्वास ॥ २३ ॥
कह कह हनुमन्त कुशळ बाणी ।
कुशळे लक्ष्मण सेबा करन्ति जाणि ॥ २४ ॥
मोह ठारे ताहांकर अछि कि मन ।
बोलइ बिक्रम कह हे हनुमान ॥ २५ ॥

द्वादश छान्द

राग–आहारी (आह्ममार्गशीर बाणी)

कह हनु मोर कान्तर कुशळ लक्ष्मणर सर्ब कुशळ ।
मरकत हेम बेनि कळेबर होइ नाहान्ति ना दुर्बळ ।
हनु हे, बेनि भाइंकर कुशळ ।
कुशळ करि लक्ष्मण सेबा करिथान्तिटि कि पादकमळ ॥ १ ॥

उन्हें देखकर आपने भय से भागकर लौटकर श्रीराम को अपने गले से लगा लिया । २० आलिंगन करते समय गेरू का तिलक उनके लगने से आप दोनों की लीला बढ गयी । २१ श्रीराम ने गुप्तरूप से यह कहा है कि यदि सीता को विश्वास न हो तो यह कथा कह देना । २२ यह सुनकर जानकी प्रसन्न होकर बोलीं कि तुम प्रभु के बड़े विश्वासपात्र हो । २३ हे हनुमान ! उनकी कुशलता का समाचार बताओ । सेवा करनेवाले लक्ष्मण का भी कुशल-समाचार दो । २४ विक्रम कहता है कि सीता ने कहा, हे हनुमान ! क्या उनका मन मुझे याद करता है । २५

छान्द—१२

राग–अहारी (आह्ममार्गशीर की धुन)

हे हनुमान ! मेरे स्वामी तथा लक्ष्मण के सभी कुशल-समाचार कहो । मरकत और स्वर्ण दोनों के समान शरीरवाले दुर्बल तो नहीं हो गये ? हे हनुमान ! दोनों भाइयों की कुशलता कहो । लक्ष्मण कुशलता से क्या उनके चरण-कमलों की सेवा करते हैं ? १ मेरे विच्छेद होने से उनका

मोर बिच्छेद होइला दिनु तनु दुर्बळ होइथिबे परा।
अधैर्य होइले लक्ष्मण ताहांकु कराउथान्तिटि कि धीरा।
हनु हे, मोते एथु निश्चें नेबेकि।
बानर बळंकु घेनि सिन्धु पारि होइ एथकु आसिबेकि ।। २ ।।
मोतेटि कि हनु चिन्ता करुथान्ति चित्तरे चित्तोइ मो भाव।
स्नेह अछिटि कि मोर बिषयरे जथार्थं करिण कहिब।
हनु हे, सते कि श्रीमुख देखिबि।
सत कह हनु केते दिन जाए तनुरे जीबन रखिबि ।। ३ ।।
बोलइ जे हनु कन्धरे बसाइ श्रीराम पाशे घेनिजिबि।
स्वइच्छारे मुहिं केमन्त प्रकारे पुरुष अंगकु छुइंबि।
हनु हे, चोराइ राबण आणिला।
तुम्भे चोराइ घेनि गले प्रभुंक जश आउ काहिं रहिला ।। ४ ।।
बिश्वबानन्दन आसिण एठाकु कंट जे बेनि मास कला।
बेनि मासे मोते श्रीराम लक्ष्मण देखाइबु बोलि बोइला।
हनु हे, एक मास थिब प्राण हे।
प्राण थाउँ थाउँ श्रीराम लक्ष्मण शीघ्र करि तुम्भे आण हे ।। ५ ।।
किपां हनु मोर पाइँ राम देले करपल्लबर मुद्रिका।
शून्ये जे दिशुथिब मो प्रभुंकर कर कमळ अनामिका।

शरीर दिन-दिन दुर्बल होता जा रहा होगा, अधीर होने पर लक्ष्मण उन्हें सांत्वना देते हैं ? हे हनुमान ! क्या मुझे यहाँ से निश्चय ही ले जायेंगे ? क्या वह वानरदल को लेकर समुद्र पार करके यहाँ आयेंगे ? २ क्या वह अपने मन में मेरे बारे में सोचकर चिन्ता करते हैं ? उन्हें क्या हमारे विषय में स्नेह है ? हे हनुमान ! तुम यथार्थ कहो कि क्या मैं उनके श्रीमुख का दर्शन सचमुच करूँगी ? हे हनुमान ! तुम सत्य कहो कि कितने दिनों तक शरीर में जीवन रखूंगी ? ३ हनुमान ने कहा कि कन्धे में बैठाकर मैं आपको श्रीराम के पास ले जाऊँगा। हे हनुमान ! अपनी इच्छा से मैं किस प्रकार से पुरुष के अंग का स्पर्श करूँगी ? हे हनुमान ! रावण चुराकर लाया था। तुम्हारे द्वारा चुराकर ले जाने से फिर प्रभु का यश क्या रह जायेगा ? ४ विश्ववानन्दन ने आकर यहाँ पर दो मास की अवधि दी है। उसने कहा है कि दो मास के अन्दर मुझे श्रीराम और लक्ष्मण को दिखा। हे हनुमान ! एक मास तक मेरे प्राण रहेंगे। प्राण रहते-रहते तुम शीघ्र ही श्रीराम और लक्ष्मण को ले आओ। ५ हे हनुमान !

हनु हे, ए मुद्रिका नोहे अन्तर।
प्रभुंक करे थाइण मोर तनु भ्रमु जे थाइ निरन्तर ॥ ६ ॥
मुद्रिका मस्तके लगाइ आपणा पणतरे बान्धि रखिले।
मस्तकुं मणि बाहार करि पुणि हनुकररे समर्पिले।
हनु हे, मो ठारे करुणा करिबे।
दीनजन ठारे करुणा कलेटि करुणासिन्धु बोलाइबे ॥ ७ ॥
कहिब हनु हे, एतेक मात्रक मोहर बिनय उदन्त।
केबळ मोहर कला अपराध क्षमा करिबे मोर कान्त।
हनु हे, प्रबोध करिण कहइ।
बोले बिशि राम छामुरे जणाइ निकटे आणिबि बोलइ ॥ ८ ॥

त्रयोदश छान्द

राग–काफि

कहे अञ्जनासुत जोड़िण पाणि।
कमळपत्र नेत्र सन्ताप गो शुणिमा ठाकुराणी ॥ १ ॥
तुम्भ बिहीने दशरथनन्दन।
निशि दिबसे मु न देखिलि गो तांक निद्रा भोजन ॥ २ ॥

श्रीराम ने मेरे लिए अपने करपल्लव की अँगूठी कैसे दी ? हमारे प्रभु के कर-कमल की अनामिका उँगली सूनी दिखाई दे रही होगी। हे हनुमान ! यह मुद्रिका उनसे दूर नहीं होती थी। प्रभु के हाथ में रहकर यह निरन्तर मेरे शरीर पर घूमा करती थी। ६ मुद्रिका मस्तक से लगाकर सीता ने अपने छोर मे बांधकर रख ली और मस्तक से चूड़ामणि निकालकर हनुमान के हाथ में समर्पित कर दी। सीता ने कहा, हे हनुमान ! श्रीराम से कहना मुझ पर दया करें। दीन-जन पर दया करने से ही वह करुणासागर कहलायेंगे। ७ हे हनुमान ! तुम कह देना कि यही मेरी एक मात्र विनय है। मेरे किये हुए अपराधों को मेरे स्वामी क्षमा कर देंगे। विशि कहता है कि हनुमान ने सांत्वना देते हुए कहा कि मैं श्रीराम के समक्ष समाचार देकर उन्हें आपके पास ले आऊँगा। ८

छान्द—१३

राग–काफि

अंजनीनन्दन ने हाथ जोड़कर कहा, हे देवी ! कंजलोचन श्रीराम के संताप के विषय में सुनो। १ मैंने आपके वियोग में दशरथनन्दन श्रीराम को रात-दिन सोते और खाते कभी नहीं देखा। २ वह रात-दिन तुम्हारे

तुम्भर गुण गुणन्ति अहर्निशि ।
जेसने अनुदिने तुटइ गो कृष्णपक्षर शशी ॥ ३ ॥
खसि पड़इ अंगुळिरु मुद्रिका ।
नयन नीर स्थिर नुहइ गो से त झुरन्ति एका ॥ ४ ॥
केतेहें बेळे धनुशर छाड़न्ति ।
केतेहें बेळे तुम्भ बिहीने गो धरणीरे पड़न्ति ॥ ५ ॥
केते बेळे चन्द्र भणन्ति तपन ।
केतेहें बेळे मन्द मरुत गो कुळिशर समान ॥ ६ ॥
संशय फिटाइ कह ठाकुराणी ।
केमन्ते प्रते मोते करिबे गो प्रभु कोदण्डपाणि ॥ ७ ॥
संतक करि देल मस्तकमणि ।
पचारिले मुँ किस कहिबि गो कह गुपत बाणी ॥ ८ ॥
आउ केतेक दिने राम राजन ।
राबणकु मारिण तुम्भंकु गो एथु नेबे बहन ॥ ९ ॥
नुह बिकळ चिन्ता छाड़ि सकळ ।
बोलइ बिशि कह बिश्वास गो श्रुति हेउ सफळ ॥ १० ॥

गुण गाया करते हैं और कृष्णपक्ष के चन्द्रमा के समान दिन-दिन क्षीण हो रहे हैं। ३ उनकी उँगली से मुद्रिका खिसक पड़ती है। नेत्रों से अश्रु ही नहीं रुकते। अकेले वह सूखते ही जाते हैं। ४ किसी समय वह धनुष-बाण छोड़ देते हैं और कभी तुम्हारे वियोग में पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। ५ कभी चन्द्रमा को सूर्य समझ बैठते हैं और कभी मन्दपवन को वज्र के समान मानते हैं। ६ हे देवी! आप संशय का त्याग करके बताएं कि कोदण्डधारी प्रभु श्रीराम मेरे ऊपर कैसे विश्वास करेंगे। ७ सहदानी के रूप में सीता ने मस्तकमणि दी। हनुमान ने पूछा कि मैं उनसे गुप्त सन्देश में क्या कहूँगा? ८ कुछ दिनों में महाराज श्रीराम रावण को मारकर शीघ्र ही तुम्हें यहाँ से ले जायेंगे। ९ विशि कहता है कि आप व्याकुल मत हों और सभी चिन्ताओं को छोड़कर विश्वास के साथ श्रीराम कहो, जिससे काम सफल हो जाए। १०

चतुर्दश छान्द

राग–वंगळाश्री

कहइ हनु चित्रकूट बृत्तान्त गुपत बारता तोते ।
से कथा प्रभु छामुरे जणाइले दया बा करिबे मोते ॥ १ ॥
दिने हे शक्रकुमर देखि मोते मदने होइला बश ।
मांस शुखाइबा समयरे हेला मोर पाशरे प्रबेश ॥ २ ॥
स्तने मोहरि नखान्तरे मारन्ते रुधिर होइला जात ।
ताहा देखि रघुकुळर चन्द्रमा कले ताकु कोपचित्त ॥ ३ ॥
कुश गोटिए आसनु काढ़ि ब्रह्ममंत्ररे प्रयोग कले ।
काकर जीबन घेनि तु आसिबु बोलि ताकु आज्ञा देले ॥ ४ ॥
काक पळाइ त्रिभुबने बुलिला शरण केहि न देला ।
पुणि श्रीराम चरणतळे पड़ि शरण आसि पशिला ॥ ५ ॥
जाहार शर त्रिभुबने गोड़ाइ शत्रु करइ बिनाश ।
से शरमान तूणीरु कि पेशिले राबण नुहन्ता नाश ॥ ६ ॥
एणु बिचारइ मोहठारे आउ नाहिँ पूर्ब अनुराग ।
आहुरि गुपत कथाए कहिबि पबनसुत तो आग ॥ ७ ॥

छान्द—१४

राग–बंगला श्री

हे हनुमान ! मैं तुमसे चित्रकूट की गुप्त घटनाएँ बता रही हूँ, जिन्हें प्रभु के समक्ष कहने से वह मुझ पर दया करेंगे । १ एक दिन इन्द्र का पुत्र जयन्त मुझे देखकर कामातुर हो गया । मांस सुखाते समय वह मेरे निकट आया । २ मेरे स्तन पर नख से प्रहार करने पर रक्त निकल पड़ा । उसे देखकर रघुकुल-चन्द्र श्रीराम ने क्रोध करते हुए आसन से एक कुश निकालकर ब्रह्ममंत्र से मन्त्रित करके उस पर छोड़ दिया और उसे कौए का जीवन लेकर लौट आने की आज्ञा दी । ३-४ कौआ तीनों लोकों में भागता फिरा पर उसे किसी ने शरण नहीं दी । फिर उसने आकर श्रीराम के चरणों की शरण ग्रहण की । ५ जिसका बाण तीनों लोकों में खदेड़ कर शत्रु का नाश करता हो वह बाण तरकश से भेजने पर क्या रावण का नाश न कर पाता ? ६ इससे मैं सोच रही हूँ कि पहले जैसा स्नेह अब मुझ पर नहीं रहा । हे पवनात्मज ! एक और गुप्त रहस्य बताती हूँ ।

दिने मोते बेश करिण जानुरे बसाइले चित्रकूटे ।
मनशिळे गेरु घोरिण तिळक रचिले मोर ललाटे ।। ८ ।।
एहि समयरे चिबुक धरिण बोलिण अछन्ति जाहा ।
से कथा चित्तोइ दया बा करिबे चितुआइबु तु ताहा ।। ९ ।।
जाहा देखुछ ए बेदना मोहर बारे मात्र जणाइब ।
लक्ष्मण सहिते प्रभुंकु तुम्भर बारे हेले अणाइब ।। १० ।।
जाणिलि प्रभुंक बिश्वासी सेबक अट हे अञ्जनासुत ।
केबळ जीबन मासे मोर थिब आसिब तुम्भे तुरित ।। ११ ।।
ठाकुराणी बाणी शुणि कपिमणि मनरे बिचार कले ।
कार्य्य सिद्ध हेब असुर थोकाए मारि एथु मुहिं गले ।। १२ ।।
पुणि बिचारिले पुत्रहुं अधिक करिछि ए मधुबन ।
एहा मुँ भांगिले असुर अइले तेबे होइबे निधन ।। १३ ।।
एते बिचारिण मेलाणि होइण मधुबने परबेश ।
समस्त तरु भांगिबारे लागिले भणे बिशि रामरस ।। १४ ।।

एक दिन चित्रकूट में मेरा शृंगार करके मुझे श्रीराम ने अपनी गोद में बिठाकर मेरे मस्तक पर गेरू घोलकर अपने मनोनुकूल तिलक लगाया । ७-८ उसी समय ठोढ़ी पकड़कर जो कहा था वही बात तुम उन्हें याद दिला देना । वह याद आने से मुझ पर दया करेंगे । ९ तुम जो यह मेरा कष्ट देख रहे हो उसे एक बार उन्हें बता देना और लक्ष्मण के सहित अपने प्रभु को एक बार ले आना । १० हे अंजनीनन्दन ! मैं समझ गई कि तुम प्रभु के विश्वासपात्र सेवक हो । हमारा जीवन केवल एक माह रहेगा । तुम शीघ्र ही लौट आना । ११ देवी सीता की बात सुनकर कपियों में श्रेष्ठ हनुमान ने मन में विचार किया कि यहाँ पर कुछ राक्षसों का वध करके जाने से कार्य सिद्ध होगा । १२ फिर उन्होंने विचार किया कि रावण ने पुत्र से भी अधिक (प्यार से) इस अशोक वन को बनाया है इसे मेरे द्वारा नष्ट करने पर राक्षसों के आने पर उनका निधन होगा । १३ ऐसा विचार कर विदा लेकर वह मधुवन में घुसकर सभी पेड़ों को तोड़ने लगे । विशि श्रीराम के चरित्र का वर्णन कर रहा है । १४

पंचदश छान्द—अक्षयकुमार बध

राग—काफि

श्रीराम दूत करिण कार्य्य सिद्ध। हरिबीर।
असुर मारिबाकु से करे सध्र ।। १ ।।
राबणर स्नेह अति मधुबन। हरिबीर।
भांगिबाकु बिचार करइ मन ।। २ ।।
एते भाळि बनिका भितरे पशि। हरिबीर।
तरु उपाड़िण फळ भुंजे हसि ।। ३ ।।
स्वर्गसार तरु करे नारखार। हरिबीर।
भसाइण देला सेहि जळधिर ।। ४ ।।
प्रळयकाळरे कि प्रखर बात। हरिबीर।
हाते मधुबनिका हेला हत ।। ५ ।।
रक्षासुरमानंकु जीबने मारि। हरिबीर।
नामरे गुहारि कले अमरारि ।। ६ ।।
सीता पांशे देब कि कि कहिथिला। हरिबीर।
कि शुणि ताहार मुखु एहा कला ।। ७ ।।
शुणि राबण पेशु किंकरगण। हरिबीर।
शिळा तरुरे सबुरि नेला प्राण ।। ८ ।।

छान्द १५—अक्षयकुमार-वध

राग—काफी

श्रीराम के दूत ने कार्य सिद्ध करके असुरों का वध करने की तैयारी की। १ मधुवन पर रावण का अत्यन्त स्नेह था, इसीलिए पराक्रमी वानर हनुमान उसे नष्ट करने का विचार करने लगे। २ ऐसा सोचकर पराक्रमी वानर हनुमान बाग में घुसकर वृक्षों को उखाड़कर हँसते हुए फल खाने लगे। ३ वह स्वर्ग के सार के समान वृक्षों को नष्ट कर रहे थे और उन्हें तोडकर समुद्र में फेंक देते थे। ४ प्रलयकाल के प्रखर पवन के समान पराक्रमी हनुमान के हाथों वाटिका नष्ट हो गई। ५ उन्होंने रक्षक राक्षसों को मार डाला। उन्होंने रावण के समक्ष गुहार की। ६ आपने सीता से क्या कहा था अथवा सीता के मुख से सुनकर उसने ऐसा किया। ७ यह सुनकर सेवकों को भेजने पर पराक्रमी वानर ने शिला और वृक्षों से सबके प्राण ले लिये। ८ यह सुनकर राजा रावण ने मन्त्री

शुणि राजा मंत्री पुत्र पेषिदेला । हरिबीर ।
हाते सात बीरंकर प्राण गला ॥ ९ ॥
शुणि पुणि पेषिला अक्षयबीर । हरिबीर ।
ता संगे समर कला आकाशर ॥ १० ॥
बहु रण करि कला ताकु हत । हरिबीर ।
सैन्य संगे माइला राबण सुत ॥ ११ ॥
जाम्बुमाळि सहितरे सेना पाञ्च । हरिबीर ।
पंचत्व करन्ते रड़ि कले उच्च ॥ १२ ॥
पुत्र बध शुणि राजा शोक कला । हरिबीर ।
एतेकाळे मोते पुत्रशोक हेला ॥ १३ ॥
बाळी सुग्रीब अबा दुबिन्द हनु । हरिबीर ।
एते सैन्य माइला पबनसूनु ॥ १४ ॥
कहि बिळाप करन्ते दशानन । हरिबीर ।
बोले बिशि शक्राजित कोपमन ॥ १५ ॥

षोडश छान्द—नागपाश-बन्धन

राग–कळशा बाणी

राबण बिळाप शुणि शक्राजित बीर ।
कर जोड़ि बोलइ शुणिमा दशशिर ॥ १ ॥

के पुत्र को भेजा। तब पराक्रमी वानर के हाथों सात वीर मारे गए। ९ यह सुनकर फिर उसने पराक्रमी अक्षयकुमार को भेजा। महाबली हनुमान ने आकाश में उसके साथ युद्ध किया। १० बहुत युद्ध करके उसे आहत करके पराक्रमी वानर हनुमान ने सेना के समेत रावण के पुत्र को मार डाला। ११ जम्बुमाली-सहित पाँच सेनापतियों को हनुमान द्वारा मारने पर उन्होंने बड़ी जोर से चीत्कार किया। १२ पुत्र के वध को सुनकर राजा रावण ने बहुत शोक किया। वह कहने लगा कि इस समय हमें पुत्र का शोक प्राप्त हुआ है। १३ वालि, सुग्रीव, दुविन्द अथवा हनुमान ने इतनी सेना का सहार कर डाला। १४ इस प्रकार कहते हुए दशानन विलाप करने लगा। विशि कहता है कि इससे इन्द्रजित् क्रोधित हो गया। १५

छान्द १६—नागपाश-बन्धन

राग–कलश

रावण का विलाप सुनकर पराक्रमी इन्द्रजित् ने हाथ जोड़कर कहा,

संताप तेजिण एबे आज्ञा दिअ मोते ।
एहि क्षणि बान्धि आणिबइँ मुं त्वरिते ।। २ ।।
पुत्रर मुखुँ शुणि बोलइ दशशिर ।
जाअ बाबु बेग होइ बानरकु धर ।। ३ ।।
सामान्य नुहइ कपि न जिब भरसि ।
सिन्धु डेइं करिटि लंकाकु अछि आसि ।। ४ ।।
साबधान होइ तार संगे कर रण ।
एसन कहि पुत्रकु पेषिला राबण ।। ५ ।।
रथ चढ़ि शक्राजित धनुशर धरि ।
बाहार हुअन्ते सैन्य लंकादाण्ड पूरि ।। ६ ।।
देखिला अशोक बन होइअछि पदा ।
दिशुअछि सबु ठारे शब गदा गदा ।। ७ ।।
बसिअछि तृणास्तम्भे कपि महाबळी ।
देखि राबण कुमर सम्मुखरे मिळि ।। ८ ।।
सस्र सस्र नाराच करन्ते ताकु बृष्टि ।
महामुनाशर तार अंगरे न फुटि ।। ९ ।।
अनेक सइन हनुमन्त क्षयकला ।
राबणकुमर ताकु समरे हारिला ।। १० ।।

है दशशिर ! सुनिए । १ दुःख को त्यागकर अब मुझे आज्ञा दीजिए । मैं उसे इसी क्षण शीघ्र ही बाँधकर ले आऊँगा । २ पुत्र के मुख से ऐसा सुनकर दशशिर ने कहा, हे पुत्र ! तुम शीघ्रता से जाकर उस वानर को पकड़ लो । ३ वह वानर सामान्य नहीं है । उसका कोई भरोसा नहीं है । वह समुद्र को फलांगकर लंका में आया है । ४ सावधान होकर उसके साथ युद्ध करना । इस प्रकार कहकर रावण ने पुत्र को भेज दिया । ५ इन्द्रजित् के धनुष-वाण लेकर रथ पर चढ़कर निकलने पर लंका के मार्ग में सेना भर गई । ६ उसने अशोक वन को उजाड़ और सभी जगह शवों के अम्बार देखे । ७ छप्पर के स्तम्भ पर महान पराक्रमी वानर को बैठा हुआ देखकर रावण का पुत्र उसके समक्ष पहुँच गया । ८ अत्यन्त नोक वाले हजारों बाणों की वर्षा उसके ऊपर करने पर भी उसका अंग छिद न सका । ९ हनुमान ने बहुत सी सेना का संहार कर दिया । रावणनन्दन उससे युद्ध मे हार गया । १० लज्जित होकर राक्षस ने

लज्जा पाइण असुर कला मायारण।
ब्रह्मपाश मंत्रिण पेषिला सेहि क्षण॥ ११॥
शीघ्रे पाश बिन्धिलाक हनुमन्त गात्र।
देखिण सानन्द हेला रावणर पुत्र॥ १२॥
हनु बिचारिला मने एत ब्रह्मपाश।
एहा जश किपाँ मुहिँ करिबि बिनाश॥ १३॥
रावणकु देखिबि बन्धन हेले सिना।
एमन्त बिचारि हनु होइला बन्धन॥ १४॥
असुरंक हातरे घेनाइ गला हनु।
रावण छामुरे कला रावणर सूनु॥ १५॥
देखिण आनन्द होए बिश्रबाकुमर।
हनुकु चाहिँण क्रोधे बोलइ उत्तर॥ १६॥
केबण देशरु कपि अइलु तु केणे।
लंकारे पशिलु मोर केबण कारणे॥ १७॥
ए मोहर मधुबन किपाँ कलु नष्ट।
अक्षयकुमर क्षय कलु रे पापिष्ठ॥ १८॥
हनुमन्त बोलन्ति शुणरे दशशिर।
नाम मोर हनुमन्त पबनकुमर॥ १९॥
बाळी सुग्रीबंकर मुहिँ भणजा अटइ।
एबे रघुनाथंकर चरणे खटइ॥ २०॥

मायायुद्ध किया। उसने मंत्र पढ़कर उसी क्षण ब्रह्मपाश छोड़ दिया। ११ शीघ्र ही पाश से हनुमान का शरीर बिंध गया। यह देखकर रावण का पुत्र प्रसन्न हो गया। १२ हनुमान ने मन में विचार किया कि यह तो ब्रह्मपाश है। मैं इसके यश को क्यों नष्ट करूँ? १३ बँधने से ही तो रावण को देख सकूँगा। यह सोचकर हनुमान बँध गए। १४ असुरों के हाथों से हनुमान को लेकर रावण का पुत्र रावण के समक्ष गया। १५ विश्रवानन्दन देखते ही प्रसन्न हो गया। उसने हनुमान को देखकर क्रोध से कहा। १६ अरे वानर! तू कौन से देश से यहाँ आया था? कौन से कारण से तू मेरी लंका में घुसा? १७ मेरे इस मधुवन को तूने किसलिए नष्ट किया है? अरे पापी! तूने अक्षयकुमार को मार डाला। १८ हनुमान ने कहा, हे दशशिर! सुनो! मेरा नाम हनुमान है। मैं पवन का पुत्र हूँ। १९ मैं बालि और सुग्रीव का भाञ्जा हूँ।

सुग्री संगे मित्र हेले दशरथ सुत ।
एका काण्डके बाळीर प्राण कले हत ॥ २१ ॥
किष्किन्ध्या कटके कले सुग्रीकि नृपति ।
श्रीरामंकु सेबा कला घेनिण बिभूति ॥ २२ ॥
ऋक्ष बानर होइलु श्रीरामंक दास ।
सीता खोजिबाकु पेषिछन्ति दशदिश ॥ २३ ॥
समुद्र डेइण मुहिँ लंकाकु अइलि ।
अशोक बनरे तोर सीतांकु देखिलि ॥ २४ ॥
जुबती चोराइ आणि बोलाउ तु बीर ।
आज्ञा नाहिँ नोहिले मोड़न्ति दशशिर ॥ २५ ॥
बिचारुछु पाशे मोते करिछु बन्धन ।
ओपाड़ि नेइ पारइ तो लंका भुबन ॥ २६ ॥
कोपरे राबण प्रहस्तकु आज्ञा देला ।
बानरकु आणि शूळि दिअरे बोइला ॥ २७ ॥
आज्ञा पाइण असुरे चउपाशे बेढ़ि ।
बोले बिशि नाना शस्त्रमान त पहुड़ि ॥ २८ ॥

अब मैं श्री रघुनाथ जी की सेवा कर रहा हूँ । २० दशरथनन्दन श्रीराम सुग्रीव के साथ मित्र बन गए । उन्होंने एक ही बाण में बालि के प्राण ले लिये । २१ किष्किन्धा दुर्ग का राजा उन्होंने सुग्रीव को बना दिया । उसने विभूति प्राप्त करके श्रीराम की सेवा की है । २२ रीछ और वानर श्रीराम के दास बन गए हैं । सीता को खोजने के लिए उन्होंने दशों दिशाओं में उन्हें भेजा है । २३ मैं समुद्र को फाँदकर लंका में आया हूँ । मैंने तेरे अशोक वन मे सीता को देखा है । २४ स्त्री को चुराकर लाने पर तुम वीर कहलाते हो । मुझे आज्ञा नहीं है, नहीं तो तेरे दश शिरो को मैं तोड़ देता । २५ तू सोच रहा है कि तूने मुझे बाँध लिया है । मैं तेरी लंका नगरी को उखाड़कर ले जा सकता हूँ । २६ रावण ने कुपित होकर प्रहस्त को वानर को लेकर सूली पर चढ़ा देने को आज्ञा दी । २७ आज्ञा पाते ही राक्षसों ने चारों ओर से उन्हें घेर लिया । विशि कहता है कि नाना प्रकार के अस्त्र उन पर पड़ने लगे । २८

सप्तदश छान्द—लंका पोड़ि

राग–तोड़ि

कर जोड़ि कहे बिभीषण। भो देव मोर बिनय शुण।
दूत अबध्य बध नोहे उचित लांगुड़ एहार कर खूण ॥ १ ॥
एहाकु बन्धनु कर मोक्ष। अनळ लगाअ एहा पुच्छ।
डेंगुरा बजाइ लंकारे बुलाइ छाड़ि न दिअ पवनवत्स ॥ २ ॥
हसिण बोलइ लंकेश्वर। बिशेषे कपि लांगुळ सार।
लांगुळे बसन गुड़िआइ एबे ढाळ तहिँरे तइळधार ॥ ३ ॥
आज्ञा पाइ परिचारमाने। बसन आणिले तोषमने।
हनु लांगुळे गुड़िआन्ते बढ़इ कळि न पारन्ति अनुमाने ॥ ४ ॥
जेते बस्त्र लंकागढ़े थिला। हनु लांगुड़कु न अण्टिला।
लज्जा पाइ पुणि राबण भण्डारु बहुत बसन अणाइला ॥ ५ ॥
लांगुळे बसन बेढ़ाइले। अनेक तइळ इड़ाइले।
ब्रह्माबरुँ ब्रह्मपाशु मुक्त हेला अनळे त पुच्छ पोड़ाइले ॥ ६ ॥
लंका राक्षस राक्षसीमाने। देखन्ति बन्धन हनुमाने।
बिचारि बोलन्ति शक्राजित किम्पा आगु न पेषिले दशानने ॥ ७ ॥

छान्द १७—लंका-दहन

राग–तोड़ी

विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! मेरी विनय सुनिए। दूत अवध्य होता है। अतः इसका वध करना उचित नहीं है। इसकी पूँछ समाप्त कर दीजिए। १ इसके बन्धन खोलकर इसकी पूँछ में आग लगा दीजिए। ढोल बजाकर लंका में घुमाकर पवनपुत्र को छोड़ दीजिए। २ लंकेश्वर ने हँसकर कहा कि वानर की पूँछ ही सार होती है, अतः पूँछ में कपड़े लपेटकर उसमें तेल डालो। ३ आज्ञा पाकर सेवकों ने प्रसन्न मन से वस्त्र ले आए। हनुमान की पूँछ पर लपेटते समय वह बढ़ने लगी। वह उसे समझ नहीं पाये। ४ जितने भी वस्त्र लंका में थे वह उनकी पूँछ के लिए पूरे नही पड़े। लज्जित होकर रावण ने भण्डार से बहुत वस्त्र मँगा लिये। ५ पूँछ में वस्त्र लपेटकर तेल डाल दिया गया। ब्रह्मा के वर से वह ब्रह्मास्त्र से मुक्त हो गए। आग से पूँछ जला दी गई। ६ लंका के राक्षस और राक्षसियाँ हनुमान का वन्धन देख रहे थे। वह सब सोचकर कह रहे थे कि रावण ने पहले ही इन्द्रजित् को क्यों नहीं भेज दिया

रज्जुरे जेणु बन्धन कले । ब्रह्मपाश हतमान्य हेले ।
असुरे से कथा जाणि न पारिले हनु पाशरु अन्तर हेले ।। ८ ।।
लंकागड़ जाक् बुलाइले । द्वारे द्वारे माड़ मराइले ।
मिछेहें हनु अशकत हुअन्ते राबण छामुरे जणाइले ।। ९ ।।
पुच्छरे अनळ जळुथिला । छामुकु हनुकु अणाइला ।
बोलइ पामर अक्षय निहत करिणटि एबे आपे मला ।। १० ।।
हनु शुणिण फेड़िले आक्षि । बोलन्ति शुणरे बिंश आक्षि ।
एहि क्षणि तोर भुबन दहिबि पारिबुटि कि आपणे रखि ।। ११ ।।
एते बोलि जगतिरे बसि । पुरे पुरे कला भस्मराशि ।
लांगुळ अनळे समस्त दहिला अनाथ होइले लंकबासी ।। १२ ।।
दोषी अदोषी सबुरि पुर । घरे न छाड़इ कपि बीर ।
केबळ अशोक कानन छाड़िण अंगार करुछि रत्नपुर ।। १३ ।।
पुष्पक बिमाने लंकपति । बसाइ कुटुम्ब पुत्र नाति ।
बोलइ बिशि लंकादाह देखइ आकाशे रहि बिकळ मति ।। १४ ।।

था । ७ वह ब्रह्मपाश से न बंधकर रस्सी से बँधे हैं । हनुमान बन्धन से मुक्त हो चुके हैं, यह बात राक्षस लोग समझ नहीं पाए । ८ उन्होंने हनुमान को सारे लंका नगर में घुमवाया और द्वार-द्वार पर उन्हें पिटवाया । हनुमान झूठ-मूठ ही रावण के समक्ष अशक्त से लगने लगे । ९ पूँछ में आग जल रही थी । रावण ने हनुमान को सामने बुलाकर कहा, अरे नीच ! तूने अक्षय को मारा है । अब स्वयं ही मर । १० हनुमान ने यह सुनकर आँख खोलते हुए कहा, अरे बीस आँखोंवाले रावण ! सुन ! इसी क्षण मैं तेरे नगर को जलाऊँगा । क्या तू उसे बचा सकेगा ? ११ ऐसा कहकर जगती के ऊपर बैठकर उन्होंने प्रत्येक घर को भस्म कर दिया । पूँछ की आग से उन्होंने सब कुछ जला डाला । लंकावासी अनाथ हो गए । १२ अपराधी और निर्दोषों सभी के घर उन्होंने जला दिये । पराक्रमी वानर ने एक भी घर नहीं छोड़ा । केवल अशोकवन को छोड़कर उन्होंने रत्नपुरी को अंगार बना दिया । १३ विशि कहता है कि लंकापति रावण पुष्पक विमान में अपने पुत्र, नाती तथा कुटुम्बियों को बैठाकर आकाश से व्याकुल मन से लंकादहन देख रहा था । १४

अष्टादश छान्द

राग-बसन्त

एक असुरी अशोक बने जाइ कहिला जानकी पाशे ।
जेउँ मर्कट मधुबन भागिला ताकु नेले नागपाशे ॥ १ ॥
लांगुळे तार बसन गुड़िआइ तइळमान त इड़ि ।
अनेक प्रकारे माड़ मराइण देले तार पुच्छ पोड़ि ॥ २ ॥
बंचिला प्रकारे दिशु नाहिँ मोते जाहा मुँ अइलि देखि ।
निश्चये अनळे पोड़ि मरुछन्ति के ताकु पारिब रखि ॥ ३ ॥
बानर होइ असुरंकु माइला अक्षय कला बिनाश ।
एबे असुरंक हातरे पड़िछि आउ कि जीबने आश ॥ ४ ॥
शुणिण जनकनन्दिनी आतंक होइण बिळाप कले ।
अग्नि देबतांकु कृतांजळि होइ बहुत स्तब पढ़िले ॥ ५ ॥
सलिळ प्राय होइब हनु तनु पुच्छ नोहिब बिनाश ।
जेबे मुँ निश्चे पतिब्रता अटइ हनु जिब स्वामी पाश ॥ ६ ॥
महासती आज्ञा पाइण अनळ चन्दनु शीतळ हेले ।
हनुमन्त एहा देखिण हरष बिस्मय होइ रहिले ॥ ७ ॥

छान्द—१८

राग-बसन्त

एक राक्षसी ने अशोक वन में जाकर सीता से कहा कि जिस वानर ने मधुबन विध्वस किया था उसे वह नागपाश में बांधकर ले गए । १ उसकी पूंछ में कपड़ा लपेटकर तेल डालकर अनेक प्रकार से मार लगवाकर उसकी पूंछ जला दी । २ मैं जो देखकर आई हूँ उससे लगता है कि वह बचेगा नहीं । निश्चय ही आग से जलकर मरने से उसे कौन बचा सकेगा । ३ वानर होकर उसने राक्षसों को मारा । अक्षय का संहार कर दिया । अब वह राक्षसों के हाथ में पड़ गया है। अब उसके जीवन की क्या आशा है ? ४ यह सुनकर जनकनन्दिनी आतंकित होकर विलाप करने लगी । उन्होने हाथ जोड़कर अग्निदेव की बहुत स्तुति की । ५ हे अग्निदेव ! तुम जल के समान हो जाना जिससे हनुमान का शरीर तथा पूंछ नष्ट न हो । यदि मैं निश्चित ही पतिव्रता हूँ तो हनुमान स्वामी के पास पहुंच जाए । ६ महान सती की आज्ञा पाकर अग्निदेव चन्दन से भी अधिक शीतल हो गए । हनुमान यह देखकर हर्ष से आश्चर्यचकित रह गए । ७ वह मन में सोचने लगे कि यह श्रीराम

मने बिचारिले श्रीराम करुणा कि अबा जानकी दया ।
कि अबा अनळ दया करि मोते दहन न कले काया ॥ ८ ॥
अनाइँ अछन्ति महा महा बीरे मुखुँ न स्फुरइ बाणी ।
बोले बिशि हनु असुरकु दिशे प्रळय अनळ जाणि ॥ ९ ॥

एकोनबिंश छान्द

राग–मुखारी

प्रळयकाळर हुताशन । जेन्हे दहइ त्रय भुबन ।
सेहि रूपे राबण भुबन । दहुअछि पबननन्दन ॥ १ ॥
शंका पाइले लंका राक्षस । जीबनकु करि प्रतिआश ।
रत्नकोषुँ छड़ाइण आश । बास कले सरोबर पाश ॥ २ ॥
सर्ब असुरे करन्ति हा हा । देखुअछि देख बिशबाहा ।
बानर लंका करुछि दाहा । बाबु दइब न करे काहा ॥ ३ ॥
राबणकु करन्ति धिक्कार । केन्हे बिजयी तु त्रयपुर ।
पुर दहुअछि बनचर । देखि हसन्ति सकळ सुर ॥ ४ ॥
छाड़ि कुटुम्ब प्रति आश । सेहि जळधिरे देले झास ।
केहि करिण अति साहस । कूपभितरे कले निबास ॥ ५ ॥

की करुणा है अथवा जानकी जी की दया है । या फिर अग्नि ने दया करके मेरे शरीर को नहीं जलाया । ८ महान योद्धा उन्हें ताकते रह गये उनके मुख से बात नहीं निकल रही थी । विशि कहता है कि हनुमान असुरों को प्रलयाग्नि के समान दिख रहे थे । ९

छान्द—१९

राग–मुखारी

जिस प्रकार प्रलयकाल में आग तीनों लोकों को जलाती है, उसी प्रकार पवन-पुत्र हनुमान रावण के नगर को जला रहे थे । १ सशंकित होकर लंका के राक्षस जीवन बचाने के लिए रत्नकोष की आशा त्यागकर सरोवर के पास जाकर रह गए । २ सभी राक्षस हाहाकार करके कहने लगे कि देखो बीस नेत्रों वाला रावण देख रहा है । वानर लंका को जला रहा है । अरे भाई ! भाग्य क्या नहीं कर सकता । ३ वह रावण को धिक्कारते हुए कहने लगे कि तेरा त्रिपुरविजयीपन कहाँ गया ? एक वनचारी नगर को जला रहा है और देवता लोग देखकर हँस रहे हैं । ४ उन्होंने कुटुम्ब

केते दनुज पोड़िण मले । केते काहिँ पळाइण गले ।
केहि पुत्रकु पिठिरे कले । केहि दन्ते तिरण धइले ।। ६ ।।
सुरपुरे जेबण दुर्ल्लभ । रखिथिले ता असुर सर्ब ।
हनुरे करि पाइ आहब । हव्य बाहन ता कले गर्भ ।। ७ ।।
लंकापोड़ि मरुत नन्दन । लाञ्ज कराइ सागरे स्नान ।
बइदेहींकि कले दर्शन । कर जोड़िण कहे बचन ।। ८ ।।
शुणिमा जगत ठाकुराणी । घेनि आसइ कोदण्डपाणि ।
नाशिबे से राघब राबणी । हेउअछि छामुरु मेलाणि ।। ९ ।।
शुणि हृष्ट जनककुमारी । बाबु न रह असुरपुरी ।
अबिळम्बे आण चापधारी । हनु शुणे प्रणमित करि ।। १० ।।
हनु लंकारु बाहार हेले । सुबळ गिरि शिखे उठिले ।
फळ जळे तनु शान्ति कले । से ठाबरु सिन्धु डेइँगले ।। ११ ।।
बसिथिले जूथ पतिमाने । आकाशे करि अबलोकने ।
हनु खसि पड़िले से स्थाने । बिशि बोले गिरि कम्पमाने ।। १२ ।।

की आशा छोड़कर समुद्र में छलांग लगा दी । कोई साहस करके कुएँ के भीतर घुस गए । ५ कितने ही राक्षस जलकर मर गए । कितने ही कहीं भाग गए । किसी ने पुत्र को पीठ पर लाद लिया और किसी ने दाँतों में तृण दबा लिया । ६ जो वस्तुएँ स्वर्गलोक में भी दुर्लभ थीं, वह सभी राक्षसों के पास थीं । वह सभी हनुमान के हाथों से ध्वंस होकर अग्नि के गर्भ में चली गयीं । ७ पवनात्मज ने लंका को जलाकर पूँछ को समुद्र में डुबो दिया । फिर उन्होंने वैदेही के दर्शन करके हाथ जोड़कर कहा । ८ हे जगज्जननी माँ सीते ! सुनिए । मैं कोदण्डधारी श्रीराम को लेकर आ रहा हूँ । वह राघव रावणी-सेना का विनाश करेंगे । अब मैं आपसे विदा ले रहा हूँ । ९ यह सुनकर जनकनन्दिनी प्रसन्न हो गयीं । उन्होंने कहा, हे वत्स ! इस असुरपुरी में अब मत रुको । बिना विलम्ब किए धनुर्धारी श्रीराम को लिवा लाओ । हनुमान ने यह सुनकर प्रणाम किया और लंका से निकलकर सुबेल पर्वत शिखर पर चढ़ गए । फल और जल से शरीर को शान्त करके वह उसी स्थान से समुद्र को फाँद गए । १०-११ यूथपति लोग आकाश की ओर दृष्टि किए बैठे थे । हनुमान उसी स्थान पर उतर पड़े । विशि कहता है कि उनके उतरने से पर्वत काँप रहा था । १२

विंश छान्द

राग–कल्याण (आहारी)

धाता सहिते सकळ असुरे । प्रबेश हेले राबण छामुरे ।। १ ।।
देखिले राबण कुपित मन । स्तुति करिण कहन्ति बचन ।। २ ।।
आहे राबण तु नुह बिमन । गतु शतगुणे हेब भुबन ।। ३ ।।
बिश्वकर्मा चाहिँ कमलासन । बोलन्ति देख ए लंकाभुबन ।। ४ ।।
दहन करि गला हनुमान । एथकु क्रोध कले दशानन ।। ५ ।।
तुम्भे एबे लंका कर निर्माण । जेमन्त तोष होइब राबण ।। ६ ।।
जगतपितांक आज्ञा प्रमाणे । लंका निर्माण कले सेहिक्षणे ।। ७ ।।
नग्र देखि तोष बिश्रबासुत । धातांकु प्रशंसा कला बहुत ।। ८ ।।
गतहुँ सुन्दर हेला निर्मित । बोले बिशि लंका हेला निश्चिन्त ।। ९ ।।

एकविंश छान्द

राग–गुज्जरी

अंगद सहिते जेते मर्कटमाने ।
पुच्छन्ति हनुकु करिण आलिंगने ।। १ ।।

छान्द—२०

राग–कल्याण (आहारी)

ब्रह्मा सभी देवताओं को साथ लेकर रावण के समक्ष पहुँचे । १ उन्होंने रावण को क्रुद्धमन देखकर स्तुति करके कहा । २ हे रावण ! तुम दुखी मत हो । पहले से सौ गुना अच्छा नगर बन जाएगा । ३ कमलासन ब्रह्मा ने विश्वकर्मा की ओर देखकर कहा कि इस लंका नगर को देख लो । ४ हनुमान इसे जला गया है, इसी से दशानन कुपित है । ५ अब तुम लंका का निर्माण कर दो जिससे रावण प्रसन्न हो जाय । ६ जगत्पिता की आज्ञा के अनुसार उन्होंने उसी क्षण लंका का निर्माण कर दिया । ७ विश्रवानन्दन नगर देखकर प्रसन्न हो गया । उसने ब्रह्मा की बहुत प्रशंसा की । ८ विशि कहता है कि पहले से सुन्दर लंकानगर को निर्मित देखकर वह निश्चिन्त हो गया । ९

छान्द—२१

राग–गुर्ज्जरी

अंगद के सहित जितने भी वानर थे, वह सब हनुमान को आलिंगन

देखिलटि कि लंकारे जनकसुता ।
कह कह कपिबीर शुभ बारता ।। २ ।।
देखिलि देखिलि लंकागड़रे सीता ।
अशोकबने अछन्ति लभि कृशता ।। ३ ।।
हनु मुखरु शुणिण सकळ दूते ।
कार्य्य लभि बाहुड़ि अइले त्वरिते ।। ४ ।।
किष्किन्ध्या मधुबनरे हेले प्रवेश ।
दधिमुख दण्डा तोटा कलेक ध्वंस ।। ५ ।।
बारता पाइ सुग्रीब होइला तोष ।
कर जोड़ि जणाइला श्रीराम पाश ।। ६ ।।
एहि समये प्रवेश मर्कट बीर ।
सुग्रीकि देखिण कर देलेक शिर ।। ७ ।।
सुग्री श्री रामंकु कराइले जे भेट ।
देखिण श्री रघुनाथ होइले हृष्ट ।। ८ ।।
आस हे अंगद हनु सकळ बीर ।
देखिल देखिलटि कि जानकी मोर ।। ९ ।।
हनुकु आग करिण सकळ बीरे ।
दूरुँ देखि साष्टाङ्ग पड़िले भूमिरे ।। १० ।।

करके पूछने लगी । १ क्या लंका में आपने जनकनन्दिनी को देखा है ? हे कपिवीर ! हमसे शुभ समाचार कहो । २ हनुमान ने कहा कि हमने लंका दुर्ग में सीता को देखा । वह कृश होकर अशोक वन में रह रही हैं । ३ सभी दूत हनुमान के मुख से ऐसा सुनकर कार्य-सिद्ध होने पर शीघ्र ही लौट पड़े । ४ वह सब किष्किन्धा के मधुवन में जा पहुँचे । उन्होंने दधिमुख के बाग को विध्वंस कर दिया । ५ समाचार पाकर सुग्रीव प्रसन्न हो गया । उसने श्रीराम के समीप जाकर हाथ जोड़कर समाचार कहा । ६ इसी समय पराक्रमी वानरों ने सुग्रीव को देखकर अपने हाथ शिर से लगा लिये । ७ सुग्रीव ने उनकी भेंट श्रीराम से करा दी । उन्हें देखकर श्रीरघुनाथ जी प्रसन्न हो गए । ८ हे अंगद, हनुमान ! और सभी वीर ! आओ । क्या तुमने हमारी जानकी को देखा है ? ९ हनुमान को आगे करके सभी वीर दूर से ही देखकर साष्टांग दण्डवत करके पृथ्वी पर गिर पड़े । १० हनुमान दोनों हाथ जोड़कर बोले, हे देव ! आपकी पत्नी को मैंने लंका

बेनि कर जोड़िण कहइ मारुति ।
देखिलि लंकारे देब तुम्भ जुबती ॥ ११ ॥
समुद्र तरन्ते बिघ्न हेला बहुत ।
तुम्भ पाद चिन्ति तहुँ हेलि मुकत ॥ १२ ॥
देबता निर्माण देब लका कटक ।
प्राचीर सहिते तार पुर कनक ॥ १३ ॥
छटक नबर तार स्वर्गकु निन्दे ।
सुनासीर धाता आदि जाहाकु बन्दे ॥ १४ ॥
बहु पुत्र नाति तार असंख्य बळ ।
दशशिर बिशकर बिश्रबाबाळ ॥ १५ ॥
कुम्भकर्ण बिभीषण सोदर तार ।
बिषम सुन्दर दुर्गसिन्धु उदर ॥ १६ ॥
सूक्ष्मरूप धरि तार पुर खोजिलि ।
न देखि अशोक बने प्रबेश हेलि ॥ १७ ॥
देखिलि जुबती शशी अछन्ति बसि ।
बेढ़िछन्ति ताहाकु सहस्रे राक्षसी ॥ १८ ॥
तब नाम धरि करुथिले रोदन ।
एमन्त समये देब कलि दर्शन ॥ १९ ॥
प्रसन्न होइण से न कहिले कथा ।
अबिश्वास करि मोते पोतिले मथा ॥ २० ॥

में देखा । ११ समुद्र को पार करते समय बहुत विघ्न हुए । आपके चरणों का चिन्तन करके मैं उनसे मुक्त हो गया । १२ लंकादुर्ग देवताओं द्वारा निर्मित है । प्राचीर के सहित सारे महल सोने के हैं । १३ उस नगर की छवि स्वर्ग की निंदा करनेवाली है । इन्द्र और ब्रह्मा आदि उनकी वन्दना करते रहते हैं । १४ रावण विश्रवा का पुत्र है । उसके दश शिर और बीस भुजाएँ हैं । उसके बहुत से पुत्र तथा नाती हैं । उसके पास असंख्य सेना है । १५ कुम्भकर्ण और विभीषण उसके भाई हैं । सागर के बीच में वह दुर्ग अगम्य और सुन्दर है । १६ मैंने छोटा रूप धारण करके उसके महल में खोज की । उन्हें वहाँ न देखकर मैं अशोक वन में जा पहुँचा । १७ मैंने वहाँ पर चन्द्रवदनी सीता को हजारों राक्षसियों से घिरी बैठी देखा । १८ वह आपका नाम लेकर रुदन कर रही थीं । इसी समय में, हे देव ! मैंने उनका दर्शन किया । १९ प्रसन्न होकर भी

तुम्भ कीर्त्ति गुण देब सबु कहिलि ।
प्रते न गलारु पछे मुद्रिका देलि ।। २१ ।।
मुद्रिका देखिण बहु क्रन्दन कले ।
कुशळ बारता शुणि आनन्द हेले ।। २२ ।।
बोइले प्रभुंक मोर आण बहन ।
दर्शन आशारे रखिअछि जीबन ।। २३ ।।
देखिलि मुँ देब कृश होइछि तनु ।
श्रीमुख दिशइ किबा तुहिन भानु ।। २४ ।।
आज्ञा देले हनु तोते बाधइ नाहिँ ।
प्राण दिअन्ति रखिछि दर्शन पाइँ ।। २५ ।।
मुँ बोइलि दिअ मोते अशोक बन ।
शुणि आनन्द होइण हेले मउन ।। २६ ।।
सन्तक करिण मणि मस्तकु देले ।
फळ मूळ खाअ मधुबनुँ बोइले ।। २७ ।।
मधुबन भांगि पक्वफळ खाइलि ।
पुत्र सहिते रक्ष असुर माइलि ।। २८ ।।
इन्द्रजित ब्रह्मपाशे बांधिण नेला ।
बहु दण्ड देइ मोर पुच्छ पोड़िला ।। २९ ।।

उन्होने मुझसे बात नहीं की। मुझ पर अविश्वास करके उन्होंने मस्तक नीचे कर लिया। २० हे देव ! मैंने आपके समस्त गुणों तथा कीर्ति का बखान किया। जब उन्हें विश्वास नहीं हुआ तो मैंने उन्हें मुद्रिका दे दी। २१ मुद्रिका देखकर उन्होंने बहुत क्रन्दन किया। परन्तु कुशल-वार्ता सुनकर प्रसन्न हो गई। २२ उन्होने कहा कि मेरे स्वामी को शीघ्र ही ले आओ। मैंने दर्शनों की आशा से अपने जीवन को धारण कर रखा है। २३ हे देव ! मैंने देखा कि उनका शरीर कृश हो गया है। उनका श्रीमुख शीतकाल के सूर्य के समान दिखाई देता है। २४ उन्होंने कहा कि हनुमान ! क्या तुम्हें कष्ट नहीं हो रहा है ? मैं प्राण दे देती पर दर्शन की आशा से बची हूँ। २५ मैंने कहा कि आप मुझे अशोक वन प्रदान करें अर्थात् उसमें घुसकर उसका उपभोग करने की आज्ञा प्रदान करें। यह सुनकर वह प्रसन्न होकर चुप हो गयीं। २६ उन्होंने सहदानी के रूप में चूड़ामणि हमें दी और कहा कि मधुवन में जाकर फल-मूल खाओ। २७ मैंने मधुवन को विध्वंस करके पके फल खाए तथा पुत्र के सहित उसके रक्षक राक्षसों को मार डाला। २८ इन्द्रजित् मुझे ब्रह्मपाश में

पोड़िलि लांगुड़े तार लंका भुबन ।
बोले बिशि एबे आसि कलि दर्शन ॥ ३० ॥

द्वाविंश छान्द

राग–आहारी

जानकीकान्त, हनु संगे एकान्त ।
आलिंगन करिण पुच्छन्ति उदन्त ॥ १ ॥
किस बारता, देइअछि बनिता ।
कह कह हनु प्रते जिबइँ मुँ ता ॥ २ ॥
श्रीराम बाणी, मरुतसुत शुणि ।
बसन फेड़िण देले मस्तकमणि ॥ ३ ॥
देखिण राम, होइले पूर्णकाम ।
गळारे ताहा गुन्थिण कलेक दाम ॥ ४ ॥
आहा से रामा, मो नयन प्रतिमा ।
बिम्बाधरी गउरी सर्बसुखधामा ॥ ५ ॥
असुरीचय, तांकु करान्ति भय ।
भयाळु से मोते मने रखि निर्भय ॥ ६ ॥

बाँधकर ले गया और बहुत दण्ड देकर मेरी पूँछ जला दी । २९ मैंने मैंने अपनी पूँछ से उसका लंकानगर जला दिया । विशि करता है कि अब मैं आकर आपके दर्शन कर रहा हूँ । ३०

छान्द—२२

राग–अहारी

जानकीनाथ हनुमान से एकान्त में उनका आलिंगन करके समाचार पूछने लगे । १ मेरी पत्नी ने क्या कहा है ? हे हनुमान ! मुझे बताओ जिससे मुझे विश्वास हो जाय । २ पवनात्मज ने श्रीराम के वचनों को सुनकर वस्त्र से निकालकर चूड़ामणि उन्हें दे दी । ३ उसे देखकर श्रीराम पूर्णकाम हो गये । उन्होंने उसे कण्ठ में लगाकर शोक किया । ४ हा वरांगने ! मेरे नेत्रों की प्रतिमा ! बिम्बाधरो ! गौरी ! सर्व सुखों की भण्डार ! तुझे राक्षसियों का समूह डरा रहा है । परन्तु वह भयालु अपने मन को मुझमें स्थापित करके निर्भय है । ५-६ जनक की नन्दिनो

जनक जेमा, से मोर प्रियतमा ।
होइछि कृष्णपक्ष चतुर्थी चन्द्रमा ।। ७ ।।
जेते असुर, थिबे से लंकापुर ।
मारिण आणिबि निश्चें जानकी मोर ।। ८ ।।
श्रीरामराज, हनु कन्धे श्रीभुज ।
देइण हकराइले कपिक राज ।। ९ ।।
सुखे सुग्रीब, आरम्भ कार्य्य करिब ।
लंका बिजय करिबा सैन्य साजिब ।। १० ।।
शुणिण मित, सैन्य साजे त्वरित ।
बोले बिशि सुन्दराकाण्ड समापत ।। ११ ।।

।। सुन्दराकाण्ड समाप्त ।।

मेरी प्रियतमा कृष्णपक्ष की चतुर्थी के चन्द्रमा के समान हो गई है । ७ उस लंकापुरी में जितने भी राक्षस होंगे सबको मारकर मैं अपनी जानकी को निश्चय ही ले आऊँगा । ८ महाराज श्रीराम ने हनुमान के कन्धे पर बाँह रखकर कपिराज को बुलवाया । ९ हे मित्र सुग्रीव ! हमारा कार्य करो । सेना को सुसज्जित करो । लंका के लिए प्रस्थान करेंगे । १० मित्र ने शीघ्र ही सेना सजा ली । विशि कहता है कि सुन्दरकाण्ड समाप्त हो गया । ११

।। सुन्दरकाण्ड समाप्त ।।

लंकाकाण्ड

प्रथम छान्द

राग–पंचम बराड़ि

प्राणप्रिया कष्ट शुणि हनुमुखुँ रघुमणि,
रोदन करन्ति गुण गुणि ।
आहा रे तरुणीमणि, श्रबणे नो कष्ट शुणि,
फाटि न गला हृदय पुणि रे ।
बिम्बओष्ठि, मो कर धरि होइलु कष्टि,
एते दु:ख सहिबाकु बिधाता तुम्भ आम्भंकु,
जात निकि करिअछि सृष्टि ।। १ ।।
सहस्रे दिव्य तरुणी, खटिथान्ति मन जाणि,
तेजिलु से सुख चारुश्रेणी ।
एते दु:खकु कारेणी, होइले कैकेयी राणी,
हुअन्तु अजोध्या ठाकुराणी ।
निज पुरे चित्र लेखि, असुरीमानंकु देखि,
भये बुजुथाउ बेनि आक्षि ।
बिबिध बिरूपासुरी, जाहा देखि भय करि,
सेमाने एबे अछन्ति रखि ।। २ ।।

छान्द—१

राग–पंचम बराड़ी

हनुमान के मुख से प्राणप्रिया के कष्टों को सुनकर रघुकुल में मणि के समान श्रीराम प्रिया के गुणों का बखान करके रुदन करने लगे । अरी श्रेष्ठ कामिनी सीते ! कानों से तुम्हारी विपत्ति को सुनकर मेरा हृदय फट क्यों नहीं गया । हे बिम्बाधरी ! मेरा हाथ पकड़ने से तुम्हें दु:ख ही मिला । विधाता ने क्या तुम्हें और हमें कष्ट सहन करने के लिए ही तो नहीं बनाया । १ हजारों दिव्य स्त्रियाँ मन के अनुरूप सेवा किया करती थीं । तुमने उस विपुल सुख का भी त्याग कर दिया । इतनी विपत्ति का कारण महारानी कैकेयी बन गई, नहीं तो तुम अयोध्या की महारानी बन जातीं । अपने महल में लगे चित्रों में राक्षसियों को देखकर तुम भयभीत होकर आँखें बन्द कर लेती थीं ! नाना प्रकार की कुरूप

आरे बाळे प्रेमशीळे, कुटीळ चारु कुंतळे,
भासि जाउअछि शोक जळे।
केते काळे पुण्य बळे, बिहि लगाइब कूळे,
देखा देखि हेबा तेते बेळे॥ ३ ॥
श्रीराम बिळाप देखि, सबुरि लोतक आक्षि,
प्रबोधन्ति लक्ष्मण सुग्रीब।
धइर्य हुअ हे देब, तुम्भ हृदय कळिब,
बोले बिशि शत्रु दशग्रीब हे रामचन्द्र॥ ४ ॥

द्वितीय छान्द

राग–गुण्डबन्ध

हनु देखिण राम बिकळ, जणाइ जोरि कर जुगळ,
आज्ञा देइथिले हे मोते राजाधिराजे।
राबण दशमुण्डकु मोड़ि, लंकागड़कु तार ओपाड़ि,
आणन्ति तब प्रसादे किपाँ हुअन्त बिजे॥ १ ॥
एथकु देब किपा कारुण्य, पुण्डरीकनेत्र जे अरुण,
बरुणनन्दिनी केबळ जनकसुते।

राक्षसियाँ, जिन्हें देखकर तुम डर जाती थी; अब वह ही तुम्हारी रक्षिका हैं। २ मनोहर घुंघराले बालों वाली, प्रेम करने में दक्ष हे प्रमदे! मैं शोक के जल में डूबा जा रहा हूँ। पुण्य के बल पर भाग्य कब किनारे से लगायेगा, तभी तुमसे देखादेखी होगी। ३ श्रीराम का विलाप देखकर सबके नेत्र छलक पड़े। लक्ष्मण तथा सुग्रीव ने सान्त्वना देते हुए कहा, हे देव! धैर्य धारण कीजिए। विशि कहता है, हे रामचन्द्र! आपके हृदय का स्थिर होना ही शत्रु दशानन के विनाश का कारण बनेगा। ४

छान्द—२

राग–गुण्डबन्ध

श्रीराम को व्याकुल देखकर हनुमान ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, हे राजाधिराज! यदि आप मुझे आज्ञा देते तो मैं उसके लंका दुर्ग को आपकी दया से उखाड़कर ले आते, फिर आप किसलिए वहाँ जाते? १ इसके लिए आप दुःख क्यों कर रहे हैं? आपके कमलनयन लाल हो रहे हैं। हे देव! जनक की कुमारी सिन्धुजा लक्ष्मी हैं। आप वैकुण्ठ के

देब तुम्भे बइकुण्ठपति, देबंकर हिते जन्म स्थिति,
भस्म करि पार ब्राह्मणकु कोप चित्ते ।। २ ।।
सिन्धु हेळे डेइँ मुँ गलि, जनकसुताकु ठाब कलि,
पुत्र मारिण लंकाकु कलि भस्मराशि ।
दहिलि तार असुरबळ, कळिलि तार बळ सकळ,
तब प्रसादे देब दर्शन कलि आसि ।। ३ ।।
हनु मुखरु एमन्त शुणि, हरषरे रघुकुळमणि,
लंका कटकाइ कि जे कपिकुळ साजे,
बाहार हेले बानरबळ, कुरुम हेला टळमळ,
भजे बिशि केबळ राम चरणाम्बुजे ।। ४ ।।

तृतीय छान्द

राग—मंगळगुज्जरी

राम आज्ञा देले बेगे सुग्रीब राजन ।
नळकु हकराकर अणाअ बहन ।। १ ।।
थाटे सेनापति करि ताकु देबा शाढ़ी ।
आगुआ होइण जाउ बनगिरि माड़ि ।। २ ।।

स्वामी नारायण हैं। देवताओं की भलाई के लिए आपने अवतार लिया है। कुपित होने पर आप उस ब्राह्मण (रावण) को भस्म कर सकते हैं। २ मैं सागर को खेल-खेल में छलाँग लगाकर पार कर गया। जनकनन्दिनी का मैंने पता लगया और उसके पुत्र को मारकर लंका को भस्म कर डाला। मैंने उसकी राक्षस-सेना को जलाकर उसके बल की पूरी थाह ली। हे देव ! आपकी कृपा से वापस आकर मैंने अपके दर्शन किये। ३ हनुमान के मुख से इस प्रकार सुनकर प्रसन्न होकर रघुकुल में मणि के समान श्रेष्ठ श्रीराम ने लंका दुर्ग के लिये वानरदल को सजाया। फिर वानरदल बाहर निकल पड़ा। जिससे कच्छप कसमसाने लगा। विशि केवल श्रीराम के चरण-कमलों का भजन करता है। ४

छान्द—३

राग—मंगल गुर्जरी

श्रीराम ने शीघ्र ही राजा सुग्रीव को, नल को बुलाकर ले आने की आज्ञा दी। १ उन्होंने कहा कि हम उसे सेना का सेनापति बनाकर

आज्ञा प्रमाणे छामुकु नळकु आणिले ।
थाटे सेनापति करि शाढ़ी तांकु देले ॥ ३ ॥
एथु अनन्तरे निशा हुए अबसान ।
नित्यकर्म बढ़ाइले श्रीराम राजन ॥ ४ ॥
नळ कपि सैन्य घेनि हेले आगुआणि ।
सुग्री हनु दक्षिणे बामे रहिले जाणि ॥ ५ ॥
पृष्ठ देशे रहिले अंगद शतबळ ।
चारि पाशे बेढ़िछन्ति सेनापति कुळ ॥ ६ ॥
एथु अनन्तरे बीरबेश हेले राम ।
छबि देखि निन्दा करुअछि कोटि काम ॥ ७ ॥
बाम करे कोदण्ड दक्षिणे तीक्ष्ण शर ।
बेनि कन्धे सुन्दर अक्षय तूणभार ॥ ८ ॥
बिबिध कुसुमरे मण्डिले जटाकुळ ।
दिव्य रत्नमय कर्णे मर्कत कुण्डल ॥ ९ ॥
कृष्णाजिन परिहरि अंगे हेम सेन्हा ।
शोभा पाउअछि भुजे बीरबर बाना ॥ १० ॥
दिव्य उज्ज्वळ मर्कत निन्दा करे कान्ति ।
नब तन निशदाढ़ि सुन्दर दिशन्ति ॥ ११ ॥

सरोपा प्रदान करेंगे । वह जंगल और पर्वतों को आच्छादित करके आगे-आगे चले । २ आज्ञा के अनुसार वह नल को श्रीराम के समक्ष ले आये और उन्हें सेना का सेनापति बनाकर सरोपा भेंट किया । ३ इसके अनन्तर रात्रि शेष हो गई । महाराज राम ने नित्यकर्म सम्पन्न किया । ४ नल वानर-सेना लेकर आगे चलने लगा । सुग्रीव तथा हनुमान जान-बूझकर दाहिने और बायीं ओर रहे । ५ अंगद तथा शतबल पीछे की ओर थे । सेनापतियों का समूह उन्हें चारों ओर से घेरे था । ६ तदनन्तर श्रीराम ने वीर-वेश धारण किया । उनका सौन्दर्य देखकर करोड़ों कामदेव लज्जित हो जाते थे । ७ उनके बायें हाथ में कोदण्ड (धनुष), दाहिने हाथ में तीक्ष्ण बाण तथा दोनों कन्धों पर मनोहर अक्षय तूणीर थे । ८ उन्होंने जटाओं को नाना प्रकार के पुष्पों से सजाया । कानों में दिव्य रत्नों से युक्त मरकत-कुण्डल थे । ९ उन्होंने कृष्णाजिन का त्याग कर शरीर में पीताम्बर धारण कर लिया । उनकी भुजाओं में वीर बाना शोभा पा रहा था । १० उनके श्रीअंग की कान्ति दिव्य उज्ज्वल मरकत

मंगळ अर्पण करे सुग्रीब सुषेण ।
तदन्तरे हनु कन्धे कले आरोहण ॥ १२ ॥
लक्ष्मणहिं एहि बेशे अंगद कन्धरे ।
सुग्री सुखासने बिजे रहिले बानरे ॥ १३ ॥
आग पछ पारुश्वे चालन्ति कपिथाट ।
बनगिरि चूर्ण करि सर्ब कले बाट ॥ १४ ॥
दक्षिण सिन्धु उत्तर कूळे परबेश ।
मुखराब शुभुछि द्वितीय सिन्धु घोष ॥ १५ ॥
सिन्धु लंघि जिबा प्राय दिशे कपिबळ ।
कि अबा सागर पोति करिबे ए स्थळ ॥ १६ ॥
बेनि सिन्धु संगम करिबा प्राय शोभा ।
हनु कन्धु उतुरि होइले राम उभा ॥ १७ ॥
रहिले समुद्र तटे श्रीराम लक्ष्मण ।
दीन बिशि राम पाद कमळे शरण ॥ १८ ॥

कान्ति की निन्दा कर रही थी। नवल शरीर में दाढ़ी व मूंछें सुन्दर दिखाई दे रही थीं। ११ सुग्रीव और सुषेण द्वारा मंगलार्पण के पश्चात् श्रीराम हनुमान के कन्धे पर सवार हो गये। १२ लक्ष्मण भी इसी वेश में अंगद के कन्धे पर बैठ गये। सुग्रीव सुखासन-यान पर विराजमान थे और वानर भी साथ में थे। १३ उनके आगे-पीछे और अगल-बगल में वानरी फ़ौज चल रही थी। जंगल और पहाड़ों को चूर-चूर करके उन्होंने मार्ग बनाये। १४ वह दल दक्षिण सागर के उत्तरी तट पर जा पहुँचा। उनके मुख का शब्द दूसरे सागर-गर्जन के समान सुनाई पड़ रहा था। १५ कपिदल सागर लाँघ जाने के समान दिखाई दे रहा था। लगता था कि समुद्र को पाटकर यह स्थल बना देंगे। १६ उनकी शोभा इस प्रकार लग रही थी मानों दो सागर संगम कर रहे हों। श्रीराम हनुमान के कंधे से उतरकर खड़े हो गये। १७ श्रीराम और लक्ष्मण सागर तट पर रुक गये। दीन विशि श्रीराम के चरण-कमलों की शरण है। १८

चतुर्थ छान्द

राग—छब्ब चउतिशा वाणी

देखिण श्रीरामचन्द्र जळधितरंग ।
मनरे पड़िला निज प्रियार आतंग ।
सुग्रीब; शरदशशी समान से सकळ ।
नोहिब सीता श्रीमुखमण्डळ ।। १ ।
कुटिळ कुन्तळ नीळमणि निन्दा करे ।
मोतिदन्त अधर माणिक्य छबि धरे ।
सुग्रीब; जम्बुनद ज्योति कान्ति जे ।
त्रिगुण नेत्रीर नेत्र काम जयपात्री ।। २ ।।
भीरु भुरु चारु कृशउदरी रम्भोरु ।
मत्त गज हंस चारु सुगति पयोधर गरु ।
सुग्रीब; चम्पा कळि अंगुळि जे ।
कोकनद छबि निन्दा करे पादतळि ।। ३ ।।
समुद्र पारि होइ केमन्ते आम्भे जिबा ।
सते निकि लंकागड़े जानकी देखिबा ।
सुग्रीब; सते राबण मरिब हे ।
भूमिसुता भेट निकि दइब करिब ।। ४ ।।

छान्द—४

राग—छब्ब चौंतीसा की धुन

श्रीरामचन्द्र के मन में सागर की तरंगों को देखकर अपनी प्रिया जानकी का स्मरण हो आया । हे सुग्रीव ! शरदऋतु के चन्द्रमा की समानता सब प्रकार से सीता के मुखमण्डल से नहीं हो सकती । १ घुंघराले बाल नीलमणि की निन्दा करते हैं । उसके दाँत मोती के समान और अधर माणिक्य के समान सुशोभित होते हैं । हे सुग्रीव ! उसकी ज्योति-कान्ति स्वर्ण से भी तीन गुनी अधिक है और अपने नेत्रों से काम को भी जीतने में समर्थ है । २ उस भीरु की भृकुटि सुन्दर, उदर कृश, रम्भा के समान जाँघें, मस्त हाथी तथा हंस के समान सुन्दर चाल है और पयोधर गुरुता लिये हैं । हे सुग्रीव ! उसकी उँगलियाँ चम्पा की कली के समान हैं तथा उसके चरणों के तलवे कोकनद की छवि को निन्दित करनेवाले हैं । ३ हम किस प्रकार सागर को पार करके जायेंगे ? क्या सचमुच लंका नगर में हम

शुणि सुग्री जणाइले जोड़ि बेनि कर ।
अगस्तिक प्राय सिन्धू शोषिबे बानर ।
भो देब; तुम्भे कि करि न पार हे ।
आज्ञारे लंका उपाड़ि आणिबे बानर ।। ५ ।।
जेउँ बाळि राबणकु काखे जाकि थिला ।
से बाळि बीरटि तुम्भ काण्डमुने मला ।
भो देब; राबण प्राकर्म केते हे ।
बोलइ बिशि राबण मारि पार शते हे ।। ६ ।।

पञ्चम छान्द

राग–सरस बसन्त

रावण छामुरे जणाइलाक डगर ।
भो देब त्रिभुवन बिजयी लंकेश्वर ।। १ ।।
श्रीराम लक्ष्मण कपिराज संगे घेनि ।
बिजय कले महीन्द्र गिरिर मूर्द्धनि ।। २ ।।
लंका पोड़ा कपिदेब बारता कहिला ।
सेहि दिन कपिसैन्य घेनिण अइला ।। ३ ।।

जानकी को देखेंगे ? हे सुग्रीव ! क्या रावण सचमुच मरेगा ? क्या भाग्य हमारी भेंट भूमिजा से करायेगा ? ४ यह सुनकर सुग्रीव ने दोनों हाथ जोड़कर निवेदन किया कि यह वानर अगस्ति के समान समुद्र को सोख लेंगे। हे देव ! आप क्या नहीं कर सकते ? आपकी आज्ञा पाकर यह वानर लंका को उखाड़ ले आयेंगे। ५ जिस बालि ने रावण को कांख में दबा लिया था, वही पराक्रमी बालि तुम्हारे बाण की नोक से मारा गया। हे देव ! रावण का पराक्रम ही कितना है। विशि कहता है कि आप तो सौ रावणों को मार सकते हैं। ६

छान्द—५

राग–सरस बसंत

दूत ने रावण के समक्ष निवेदन किया, हे देव ! त्रिभुवन को जीतने वाले लंकेश ! सुनिये। १ कपिराज सुग्रीव को साथ लेकर श्रीराम और लक्ष्मण महेन्द्र पर्वत के शिखर पर उपस्थित हो गये हैं। २ हे देव ! लंका को भस्म करनेवाले वानर ने समाचार बताया और उसी दिन

गज सम कोटि कोटि अछन्ति मर्कट ।
बिबिध बर्णरे होइछन्ति से प्रकट ।। ४ ।।
बळ कळिबाकु न दिशिलाक उपाये ।
किष्किन्ध्यारु लागिछन्ति सिन्धुकूळ जाए ।। ५ ।।
शुणि चार मुखरु बारता लकेंश्वर ।
बोले बिशि शुखाइला ता दश अधर ।। ६ ।।

षष्ठ छान्द

राग–केदार गौड़ा (कोटाइ गुण्डिचा वृत्ते)

रावण समस्त असुरंकु चाहिँ क्रोध होइण कहिला ।
एका बानर गोटाए आसि मोते एते पराभब देला ।
हे बीरे; एबे जगिथाअ चारि द्वारे ।
न आसिबे जेमन्ते बानरे । निबर्त्तिबे से कि उपायरे ।। १ ।।
पुत्र भ्रातृ मंत्रीगण हकराइ सभारे बिजय कला ।
षड़ मास पूरि जाइ सेहि दिन कुम्भकर्ण उठिथिला ।
से सभा; रत्न आसनमानंके शोभा ।
जेउँ सभारे बसे मघबा । देखि त्रिदश होइबे लोभा ।। २ ।।

वानरी सेना को लेकर आ गया । ३ हाथियों के समान करोड़ों वानर हैं जो भिन्न-भिन्न वर्णों में उत्पन्न हुए हैं । ४ उनके वल का आकलन करने के लिए कोई उपाय नही दिखाई देता । दल किष्किन्धा से लेकर समुद्र-तट पर्यन्त लगा है । ५ विशि कहता है कि दूत के मुख से समाचार पाकर लंकेश के दश ओंठ सूख गये । ६

छान्द—६

राग–केदार गौड़ (कोटाइ गुण्डीचा की धुन)

रावण ने कुपित होकर सभी राक्षसों को देखकर कहा कि अकेले ही एक वानर ने आकर मुझे इतना पराभव दे दिया । हे वीरो ! अब चारों द्वारों की रक्षा करते रहना जिससे कि वानर न आ सकें । कौन सा उपाय करने से वह लौट जाएँगे । १ पुत्र, भाई तथा मन्त्रियों को बुलाकर वह सभा में उपस्थित हुआ । छः मास बीत जाने पर उसी दिन कुम्भकर्ण भी जागा था । वह सभा रत्नमय आसनों से सुशोभित हो रही थी । इन्द्र की सभा में बैठनेवाले देवता भी उसे देखकर लुब्ध हो जाते थे । २ भाई

जान चढ़िण अइले कुम्भकर्ण बिभीषण सहोदर।
महापारुष प्रहस्त शक्राजित आउ महा महा बीर।
से माने; मान्यकरि बसिले आस्थाने।
राबणकु डरि साबधाने। कहिबाकु क्षम नाहिँ आने॥ ३॥
असुरेश्वर राबणेश्वर कहे असुरमानंकु चाहिँ।
दइब बशरे सीतांकु आणिलि भोग करि पारु नाहिँ।
हे शुण; एबे बरषे होइला पुण।
मोते न भजिला कि कारण। तार बिनु दहे पञ्चबाण॥ ४॥
चन्द्रबदना चम्पादळबरना चटुळ बिपुळ स्तना।
चमरीनयना सघन जघना रम्भोरु सुनितम्बना।
से नारी; नाहिँन देखिबा तिनि पुरी।
रम्भा रति शची नुहे सरि। देखि मूर्च्छित हेबे गउरी॥ ५॥
एबे मुँ शुणिलि सुग्रीब सहिते दशरथ बेनि सुत।
महीन्द्र गिरिरे रहिले संगरे कपिबळ अप्रमित।
हे दैत्ये; एबे कि बिचार कर चित्ते।
सिन्धु पार नोहिबे जेमन्ते। एका बानर कलाटि एते॥ ६॥

कुम्भकर्ण, विभीषण, महापराक्रमी इन्द्रजित्, प्रहस्त आदि और भी जो महान वीर थे वह यान पर चढ़कर आये और रावण की अभ्यर्थना करके अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। रावण के भय से सभी सावधान थे। किसी को कुछ कहने का साहस न था। ३ राक्षसाधिपति महाराज रावण असुरों की ओर देखकर कहने लगा, भाग्यवश सीता को ले तो आया परन्तु भोग नहीं कर सका। अरे! सुनो! अब तो वर्ष भी पूरा हो गया। न जाने क्यों उसने मुझे स्वीकार नहीं किया? उसके बिना पंचबाण मुझे दग्ध कर रहे है। ४ चन्द्रमा के समान मुख वाली, चम्पा के फूल जैसी कान्ति वाली, तीखे गुरु स्तनों वाली, चंचल नेत्रों वाली, स्थूल जंघाओं वाली, रम्भोरु तथा सुन्दर नितम्बों वाली उस स्त्री के समान तीनों लोकों में अन्य कोई नहीं दिखाई देती। रम्भा, रति तथा इन्द्राणी भी उसकी समानता में नहीं हैं। उसे देखकर पार्वती भी मूर्च्छित हो जाएगी। ५ अभी मैंने सुना है कि दशरथ के दोनों पुत्र, सुग्रीव के सहित असख्य वानरदल के साथ महेन्द्र पर्वत पर जम गये हैं। हे दैत्यो! अब इस प्रकार विचार करो जिससे वह सागर को पार न कर सकें। अरे! उस एकाकी वानर ने तो इतना कर डाला था। ६ कुम्भकर्ण

कुम्भकर्ण बोले शुणिमा भो देब कल अत्यन्त अनीति ।
एते दिने अनीतिकि बिचारिबा हेउअछि लंकपति ।
हे देब; तुम्भ आज्ञा के आन करिब ।
नर बानर मारिबि सर्ब । सीता सर्बदा भोग करिब ।। ७ ।।
महोदर कर जोड़ि जणाइला हेउ देब साबधान ।
सीतांकु भोग न करिण किम्पाइँ रखिअछ एते दिन ।
हे देब; राम राजकुमार मानब ।
ताहा पराक्रमे कि करिब । रक्षअंश होइण डरिब ।। ८ ।।
एहा शुणि हसि कहे लंकपति शुण हे आम्भ उत्तर ।
ब्रह्मलोके जाउँ जाउँ अपसरी पड़िला आम्भ छामुर ।
से नारी; बळे हरिलु ताहाकु धरि ।
पिता आगे से कला गुहारी । तेणु कोप कले कुशधारी ।। ९ ।।
आउ बळे बळे जुबती हरिले फाटि जिब तो मूर्द्धनी ।
एमन्त शाप क्रोधरे पूर्बे मोते देइछि कमळजोनि ।
हे शुण, ताकु हरिथान्ति सेहि क्षण ।
किपाँ हुअन्ति ताकु कार्पण्य । एते झरिबाकु कि कारण ।। १० ।।
एमन्त शुणि बिभीषण राबण छामुरे कहे बचन ।
मोर बोलकर सीता बाहुड़ाइ देबा असुर राजन ।

बोला, हे देव ! हे राजराजेश्वर ! आपने बड़ी अनीति की है। हे लंकेश ! इतने दिनों तक उस पर क्या विचार होता रहा ? हे देव ! तुम्हारी आज्ञा का पालन कौन नहीं करेगा । मैं समस्त नर-वानरों को मार दूंगा और तुम सदा के लिए सीता का उपभोग करना । ७ महोदर ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! सावधान हो जायँ । सीता का भोग न करके उसे इतने दिनों तक किसलिए रख छोड़ा है। हे देव ! राजकुमार राम तो मानव हैं । वह पराक्रम से क्या कर पाएगा । राक्षसों का अंश होकर भय क्या ? ८ यह सुनकर लंकापति ने हँसते हुए कहा कि अब मेरा उत्तर सुनो । ब्रह्मलोक जाते समय एक अप्सरा हमारे सामने पड़ गयी । मैंने उस स्त्री को पकड़कर बलात्कार किया । पिता के समक्ष उसने गुहार लगाई जिससे कुशधारी ने क्रोध किया । ९ यदि और कभी इस प्रकार किसी स्त्री का हरण करके बलात्कार करोगे तो तुम्हारा शिर फट जायेगा । क्रुद्ध होकर कमलयोनि ब्रह्मा ने मुझे ऐसा शाप दे दिया । अरे सुनो ! मैं उसका उपभोग उसी क्षण कर लेता । उसके लिए इतना दुखी किसलिए होता । मेरे मुरझाने का और क्या कारण है । १० इतना

हे देब; राम काण्डे सर्ब मराइब ।
सीता देले निश्चिन्त होइब । आउ भय काहाकु नोहिब ।। ११ ।।
एमाने निकि से राम आगे धनु धरिबाकु सामरथ ।
पापी जन निकि स्वर्गभोग पाए करुथिले मनोरथ ।
हे देब; एते सम्पद बिअर्थ हेब ।
तुम्भ हित केहि न कहिब । मारि निश्चे राम सीता नेब ।। १२ ।।
एहा शुणि शक्राजित जे कहइ तुम्भे जीइथाअ एका ।
आम्भमानंक उत्साह भंग करि सभारे कहइ दका ।
हे तात; जाहा कहिल ए निकि हित ।
असुरी कि करि नाहिँ जात । तुम्भे रामर हेल कि मित ।। १३ ।।
रावण कोपे बोलइ ज्ञाति जेबे शत्रु आगम देखन्ति ।
नासारे अंगुळि देइण हसन्ति बिबिध बाणी भाषन्ति ।
रे कहु; निश्चे जाणिलि रामर हेउ ।
मोर बारता ताकु तु देउ । आज्ञु मोहर भ्राता तु नोहु ।। १४ ।।
रावणर कोप देखि बिभीषण सभारु उठिण गला ।
सेहि क्षणि चारि मंत्रींकि घेनिण आकाशमार्गे रहिला ।

सुनकर रावण से विभीषण ने कहा, हे राक्षसराज ! मेरा कहना मानकर सीता को लौटा दो । नहीं तो हे देव ! श्रीराम के बाणों से सबको मरवा दोगे । सीता को देकर निश्चिन्त हो जायेंगे । फिर और किसी को कुछ भी डर नहीं रहेगा । ११ क्या राम के आगे धनुष धारण करने की सामर्थ्य इनमें है ? क्या इच्छा करने पर पापियों को भी स्वर्ग का सुख प्राप्त हो सकता है ? हे देव ! इतना ऐश्वर्य, सम्पत्ति सब व्यर्थ हो जाएगी । आपके हित की बात कोई नहीं कहेगा । सबको मारकर निश्चय ही सीता को ले लेंगे । १२ यह सुनकर इन्द्रजित् बोला कि आप ही अकेले जीवित रहें । हमारे उत्साह को भंग करके आप सभा में बकवास कर रहे हैं । हे तात ! आप जो कह रहे हैं इसमें क्या हित है ? असुर क्या नहीं कर सकते हैं ? क्या आप राम के मित्र बन गये हैं ? १३ रावण ने क्रोधपूर्वक कहा कि जब कुटुम्बी ही शत्रु का भविष्य सोचें । नाक में उँगली लगाकर हँसें । नाना प्रकार के उपदेश दें तो बोलो फिर क्या होगा । मैं यह निश्चित रूप से समझ गया कि तू हमारे भेद राम को देता है । आज से तू मेरा भाई नहीं है । १४ रावण को कुपित देखकर विभीषण सभा से उठकर चला गया । उसी समय वह चार मंत्रियों को साथ लेकर आकाशमार्ग में जाकर रुक गया । आकाश से ही उसने

से गला; जहुँ राबण बोल न कला ।
शून्ये थाइ बहुत कहिला । ब्रिशि बोले सिन्धु पारि हेला ।। १५ ।।

सप्तम छान्द—ब्रिभीषण शरण पशिबा

राग—बराड़ि

अंजनघन प्राय गगने रहि बिचारन्ते बिभीषण ।
आकाशे असुर देखिण क्षेपिल बेढ़िले बानरगण हे ।
से माने, तरु शिळा त घेनिले ।
जुद्ध करिबा आरम्भ कले ।
बिभीषण मंत्रीमाने से कपिकि प्रबोध करि कहिले ।। १ ।।
राबण सोदर कहइ उत्तर कपिसमूहकु चाहिँ ।
सुग्रीबकु कह राबण अनुज आसिछि शरण पाइँहे ।
बानरे; मो बोल भ्राता न कले । प्रतिकूळ दइब होइले ।
हित बचनकु अहित बुझिण बाहार करिण देले ।। २ ।।
शुणिण सुग्रीब श्रीराम छामुरे जणाइले सेहि क्षण ।
आज्ञा देले देब दर्शन करिब आसिअछि बिभीषण हे ।
भो देब; राबण कनिष्ठ भाइ से मानंकर कपट थाइ ।
असुरंक माया देबे न जाणन्ति दिव्य चित्ते कि आसइ ।। ३ ।।

बहुत कुछ कहा । विशि कहता है कि जब रावण ने उसका कहना न माना तो वह सागर के पार चला गया । १५

छान्द ७—विभीषण-शरणागति

राग—बराड़ी

काजल के बादल के समान विभीषण आकाश में स्थित रहकर विचार ही कर रहा था तभी आकाश में राक्षस को देखकर वृक्ष और शिलायें लेकर वानरों ने छलाँग लगाकर उसे घेर लिया और युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । विभीषण के मन्त्रियों ने वानरों को समझाते हुए कहा । १ वानरदल को देखकर रावण का भाई बोला कि तुम लोग सुग्रीव से कह दो कि रावण का छोटा भाई शरण के लिए आया है । हे वानरो ! मेरी बात भाई ने नहीं मानी । भाग्य के विपरीत होने पर हितकारी वचनों को अहितकारी समझकर उसने मुझे निकाल दिया । २ ये सुनकर सुग्रीव ने उसी क्षण श्रीराम के समक्ष निवेदित किया । हे देव ! विभीषण आया

शुणि दाशरथि मन्द मन्द हसि सुग्रीकि देले उत्तर।
मंत्रीमानंकु छामुकु हकराइ कर एथिर बिचार हे।
सुग्रीब; राबणर से सोदर। एणु अटइ आम्भर पर।
शरण पशिबा निमित्त आसिछि एथकु किस बिचार॥ ४॥
आज्ञा पाइण बानर राये सबु मंत्रीमानंकु राइले।
राबण भाइ शरण पशिबाकु आसिछि बोलि कहिले हे।
सचिब; मने बिचारिण कह। एथु जय कि हेब अजय।
बोले बिशि भय नुहइ ताहांकु रखिले होइब जय हे॥ ५॥

अष्टम छान्द

राग–सिन्धुड़ा

आहे सुग्रीब आहे हनु अंगद नळ नीळ जाम्बबन्त।
आहे सुषेण दुर्बिन्द शतबळ मनकु आसे केमन्त।
कइतब न कर। तुम्भमानंकर कि बिचार।
कह कह आम्भर छामुर। भय हेउअछि कि तुम्भर॥ १॥

है। आज्ञा देने पर वह आपके दर्शन करेगा। हे देव! वह रावण का छोटा भाई है। उनके पास छल रहता है। राक्षसों की माया देवता भी नहीं समझते फिर निर्मल मन में वह कैसे समझ में आयेगा। ३ दशरथ-नन्दन राम ने यह सुनकर धीरे-धीरे मुस्कुराते हुए सुग्रीव को उत्तर दिया कि हे सुग्रीव! मन्त्रियों को सामने बुलाकर इस पर विचार करो। रावण का वह भाई इस समय हमारे स्थान पर शरणागति प्राप्त करने के लिए आया है। इस विषय में किसका क्या विचार है? ४ आज्ञा पाकर कपिराज ने सभी मन्त्रियों को बुलाकर कहा कि रावण का भाई शरण पाने के लिए आया है। हे मन्त्रियो! मन में विचार करके कहो कि इसमें जय अथवा पराजय, क्या होगी? विशि कहता है कि कोई डर नहीं है। उन्हें शरण देने पर हमारी विजय ही होगी। ५

छान्द—८

राग–सिन्धुर

हे सुग्रीव, हे हनुमान, अंगद, नल, नील, जामवन्त, सुषेण, दुविन्द, शतबल! तुम्हारे मन में कैसा लग रहा है? छल न करके बताओ कि आप लोगों का क्या विचार है? हमारे सामने बताओ। क्या आप लोगों

सुग्रीब बोले असुरंक माया जाणि त नुहइ देव ।
अंगद बोलन्ति आसिब जेबे से परीक्षा आम्भंकु देब ।
नळ छामुरे कहे । देब असुर बिश्वासी नोहे,
नीळ बोलन्ति लगाइ भये । किबा कराइब अपजये ।। २ ।।
जाम्बव सुषेण बोलन्ति भो देब ! जाणिबा ताहार मन ।
तेबे सिना ताकु विश्वास करिण करिब तार बचन ।
आम्भ शत्रुर भाइ । ताकु बिश्वास केमन्ते जाइ ।
दैत्य बुद्धि जाणि त नुहइ । दिब्य चित्ते केमन्ते आसइ ।। ३ ।।
हनु जाणन्ति मोर पाइँ राबण आगो बहुत कहिला ।
से हनु जाणिछि एहिमात्र देब आम्भर पक्ष होइला ।
एबे जाणिबा मन । आउ बुझिबाकु नाहिं धन ।
कहिथिब जथार्थ बचन । तेणु कोपिथिब दशानन ।। ४ ।।
शतबळ बोले असुर बुद्धिरे देबताकु कले दास ।
न पुणि शरण पशि बिभीषण आम्भंकु करइ नाश ।
शुणि कोदण्डपाणि । हस हस होइ कहे बाणी ।
तार मन अछुँ आम्भे जाणि । ताकु दर्शन कराअ आणि ।। ५ ।।

को डर लग रहा है ? १ सुग्रीव ने कहा, हे देव ! राक्षसों की माया समझ में नहीं आती। अंगद ने कहा, हे देव ! यदि वह हमें परीक्षा दे, तब वह आ सकता है। नल ने श्रीराम के समक्ष कहा, हे देव ! राक्षस विश्वासपात्र नहीं होते हैं। नील ने कहा कि कहीं यह डराकर हमारी पराजय तो नहीं करा देगा। २ जामवंत तथा सुषेण बोले, हे देव ! पहले उसका मन समझ लें, तब तो उसका विश्वास करके उसका कहना मानेंगे। हमारे शत्रु का भाई है। उस पर विश्वास कैसे किया जाए ? दैत्य की बुद्धि तो समझ में नहीं आती। शुद्ध हृदय में वह कैसे समझ में आयेगी ! ३ हनुमान ने कहा कि रावण ने मेरे लिए बहुत कुछ कहा, पर मुझे मालूम है कि केवल यह ही मेरा पक्षपाती बना। इस समय इसके मन को जानना चाहिए और कुछ समझना नहीं है। इसने यथार्थ बचन कहे होंगे। इसी से रावण रुष्ट हो गया होगा। ४ शतबल ने कहा कि राक्षसों ने अपनी बुद्धि से देवताओं को अपनी बुद्धि से दास बना लिया था। यह विभीषण शरण में आकर फिर कहीं हमारा नाश तो नहीं कर देगा ! यह सुनकर कोदण्डधारी श्रीराम ने हँसते हुए कहा कि हम उसके मन को समझते हैं। उसको लाकर दर्शन कराओ। ५ "शरण कहने पर ही मैं

शरण बोइले अभय दिअइ एमन्त मोर महिमा ।
शत अपराध करिण शरण पशिले करइ क्षमा ।
कि करिब से मोते । तार अंगे बळ अबा केते ।
आसुथिब से जेबे गुपते । तार प्रायेक मारिबि शते ।। ६ ।।
मोर बाम भुज कनिष्ठ अंगुळि अग्रेअछि जेते बळ ।
एते बळबन्त ब्रह्माण्डरे नाहिँ ए छार असुरकुळ ।
आसु से बिभीषण । आम्भ चरणे पशु शरण ।
तार आउ नोहिब मरण । बिशि बोले होइब कारण ।। ७ ।।

नवम छान्द

राग—कनड़ा

सुग्री संगे बिभीषण भेट होइ श्रीराम छामुकु आणिले ।
बिभीषण राम बोलि जाणिले ।
चरणे शरण पशिलि बोलि मुँ से बिभीषण भाषिले जे ।
दनुज ! दयानिधि नाम शुणि श्रबणे ।
तेणु शरण अभय चरणे ।
मन बचन कर्त्तव्य आने थिले बिअर्थ सुकृत मने ।। १ ।।

अभयदान देता हूँ । यह मेरी महिमा है । यदि सौ अपराध करके भी कोई शरण में आ जाए तो मैं उसे क्षमा कर देता हूँ । वह हमारा क्या करेगा । उसके शरीर में बल ही कितना है । और यदि वह गुप्तरूप से आया है तो उसके समान सैकड़ों को मैं मार दूँगा । ६ मेरी बायें हाथ की छिगुनी के अग्रभाग में जितना बल है उतना बलवान इस ब्रह्माण्ड में यह तुच्छ राक्षस-कुल नहीं है । वह विभीषण आ जाए और हमारे चरणों में शरण ग्रहण करे तब उसकी मृत्यु नहीं होगी । विशि कहता कि उसका उद्धार हो जायेगा । ७

छान्द—९

राग—कान्हरा

सुग्रीव के साथ विभीषण की भेंट होने पर उन्हें श्रीराम के समक्ष लाया गया । विभीषण समझ गये कि यह राम हैं । वह बोले, मैं विभीषण हूँ । आपके चरणों की शरण में आया हूँ । आपका दयानिधि नाम कानों से सुनकर यह दनुज आपके अभय चरणों की शरण में आया है । यदि मन,

रावणकु मुहिं बहुत प्रकारे हित कथामान कहिलि ।
सीता समर्पिबा बोलि बोइलि ।
क्रोध करि मोते कुभाषा बोलन्ते बाहार होइ अइलि हे ।
भो देब ! ताकु दइब निश्चय छाड़िला ।
अधर्मरे बेळु बेळ बढ़िला ।
एबे आसि देब तुम्भ काण्डमुने मृत्युमुखरे पड़िला ॥ २ ॥
एते जणाइ चरण तळे पुणि साष्टाङ्ग होइण पड़िला ।
त्राहि त्राहि कर बोलि बोइला ।
श्रीराम करुणा अबलोकनरे जनम मृत्यु एड़िला से ।
दनुज ! रोम पुलक होए घन घन ।
अश्रु आनन्दे हेउछि पतन ।
करुणासिन्धु अभय पद्मपादे मग्न हेला तार मन से ॥ ३ ॥
राम पचारन्ति आहे बिभीषण कह लंकार समाचार ।
किस बिचारि अछि दशशिर ।
केते तार सैन्य केते पराक्रम कह ता आम्भ छामुरे हे ।
राजन । कहे कर जोड़िण बिभीषण ।
देब त्रैलोक्य बिजयी राबण ।
भ्राता कुम्भकर्ण स्वर्ग जूर करे पुत्र पराक्रम शुण हे ॥ ४ ॥

वचन और कर्म झूठे हों तो मानसिक पुण्य भी व्यर्थ है । १ रावण से मैंने अनेक प्रकार की हितकारी बातें कहीं । सीता को समर्पित करने की बात भी कही । क्रुद्ध होकर मुझे बुरा-भला कहने पर मैं बाहर निकल आया । हे देव ! भाग्य ने उसे निश्चित रूप से छोड़ दिया । उसका अधर्म धीरे-धीरे बढ़ गया है और अब वह आकर आपके बाणों की नोकों से मृत्यु के मुख में गिर पड़ा है । २ इतना कहकर साष्टांग होकर वह पैरों पर गिर पड़ा और 'रक्षा करो, रक्षा करो !' कहकर चिल्लाने लगा । श्रीराम की करुणामयी दृष्टि से जन्म और मृत्यु से वह मुक्त हो गया । उस दैत्य के रोमांच हो रहा था । आनन्द के अश्रु गिर रहे थे । करुणा के सागर श्रीराम के अभयचरण-कमलों मे उसका मन मग्न हो गया । ३ राम ने पूछा, हे विभीषण ! लंका के समाचार बताओ । दशकंधर का क्या विचार है ? उसकी कितनी सेना है और उसका पराक्रम कैसा है ? यह हमारे समक्ष कहो । विभीषण ने कहा, हे देव ! रावण त्रैलोक्य-विजयी है । उसका भाई कुम्भकर्ण है जो स्वर्ग मे भी युद्ध का डंका बजा

सातबार पुत्र शक्रकु जिणिला संग्रामे अदृश्य हुअइ ।
केहि जिणिबार ताकु नुहइ ।
महापारुश्व महोदर प्रशस्त्र नामरे मही कम्पइ हे ।
भो देब ! दशसस्र कोटि से असुर ।
प्रतिदिनहिँ पिबन्ति रुधिर ।
आउमाने देब दिगपाळ सम देखिण डरन्ति सुर हे ।। ५ ।।
राम आज्ञा देले स्वर्गे बा पाताळे लुचिले मारिबि रावण ।
सत्य करुछि तिनिभ्रात राण ।
पुत्र भ्राता नाति समस्त मारिण लंकादेबि बिभीषण हे ।
सुग्रीब ! एते बोलिण पाशकु राइले ।
तांकु आलिंगन करि बोइले ।
आजहुँ तुम्भंकु लंका आम्भे देलु लंकेश आजहुँ मले हे ।। ६ ।।
कोदण्डपाणि ताहांक मन जाणि आज्ञा देले आहे लक्ष्मण ।
तीर्थजळ अणाअ एहि क्षण ।
लंकागड़े राजअभिषेक आज कराइबा बिभीषण हे ।
लक्ष्मण ! आजुँ बोलाइबे ए लंकापति ।
आज देलि मुँ लंकार बिभूति ।
जेते दिन थिब मोर राम नाम चन्द्र तपन धरित्री हे ।। ७ ।।

देता है । अब आप उसके बेटे के पराक्रम के विषय में सुनिये । ४ रावणपुत्र इन्द्रजित् ने सात बार इन्द्र को जीता । वह युद्ध में अदृश्य भी हो जाता था । उससे जीतनेवाला कोई भी नहीं था । महोदर महापराक्रमी था और प्रशस्त के नाम से पृथ्वी काँपने लगती थी । हे देव ! रावण के दस हजार करोड़ असुर है, जो प्रतिदिन रक्तपान करते हैं । देवता दिग्पाल के समान उसे देखकर डर जाते हैं । ५ राम ने कहा कि रावण चाहे स्वर्ग में या पाताल में छिप जाए तो भी मैं उसका वध करूँगा । हे सुग्रीव ! मैं तीनों भाइयों की शपथ-पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं पुत्र-भाई-नाती आदि सभी का वध करके लंका विभीषण को प्रदान करूँगा । इतना कहकर उन्होंने उसे पास बुलाया तथा उसका आलिंगन करके कहने लगे कि आज से मैंने तुम्हें लंका प्रदान की । आज से लंकेश्वर रावण को मृत समझो । ६ उसके मन की बात समझकर कोदण्डधारी राम ने लक्ष्मण को उसी समय तीर्थों का जल मँगाने की आज्ञा दी । उन्होंने कहा, हे लक्ष्मण ! लंका के दुर्ग पर आज विभीषण का राज्याभिषेक करवाऊँगा । आज से इन्हें लंकापति कहा जायेगा । आज मैंने इन्हें लंका की विभूति

आज्ञा प्रमाणे लक्ष्मण तीर्थजळ अणाइ अभिषेक कले।
बिभीषण लंकेश बोलाइले।
राम आज्ञा पाइ सर्ब ऋक्ष कपि लंकेश बोलि बोइले हे।
सुजने! सुग्री जणान्ति शुणिमा भो देब।
जेबे राबण शरण पशिब
बिभीषणकु त लंका आज्ञा हेला से पुण किस करिब हे॥ ८॥
शुणि दाशरथि बोलन्ति हे मित्र राबण पशिले शरण।
ताकु अजोध्या देबुँ ए प्रमाण।
दुष्ट राजांकु मारिण अभिषेक होइबु क्षिति परेण हे।
सुग्रीब! शुणि समस्ते आनन्द होइले।
राम श्रीमुखरे एहा बोइले।
बोले बिशि बिभीषण एहि दिनु श्रीराम सेबक हेले हे॥ ९॥

दशम छान्द
राग–आनन्द भैरबी

शार्द्दूळकु पेषिथिला राबण। जेउँ दिन कला सीता हरण।

प्रदान कर दी। जब तक मेरा राम नाम रहेगा और जब तक इस पृथ्वी पर चन्द्रमा और सूर्य रहेगा तब तक यह विभूति भोगेगा। ७ आज्ञा के अनुसार लक्ष्मण ने तीर्थों का जल मँगाकर अभिषेक कराया और विभीषण को लंकेश कहकर सम्बोधित किया गया। राम की आज्ञा पाकर समस्त रीछ और वानर भी उसे लंकेश कहने लगे। हे सज्जनो! सुग्रीव ने श्रीराम से कहा, हे देव! यदि रावण शरण में आ जाय तो आप क्या करेंगे? क्योंकि आपने विभीषण को लंका प्रदान कर दी है। ८ यह सुनकर दशरथनन्दन श्रीराम ने कहा, हे मित्र! यदि रावण मेरी शरण में आ जाए तो मैं उसे अयोध्या दे दूँगा। यह बात मेरी प्रमाणिक है। दुष्ट राजाओं को मारकर इस पृथ्वी पर अभिषिक्त होऊँगा। यह सुनकर सुग्रीव आदि सभी प्रसन्न हो गये। श्रीराम ने अपने मुख से यह कहा विशि कहता है कि इसी दिन से विभीषण राम के सेवक बन गये हैं। ९

छान्द—१०
राग–आनन्द भैरव

जिस दिन रावण ने सीता-हरण किया था। तभी उसने शार्दूल

सेहिँ देखि अइला । महा बिस्मय हेला ।
आजहुँ लंक गला । राबणकु कहिला ॥ १ ॥
कोटि कोटि देब बानर बळ । पूरि रहिछन्ति बन शइळ ।
समस्ते बळबन्त । लंका पोड़ा जेमन्त ।
कळि नुहइ प्रान्त । निश्चे करिबे अन्त ॥ २ ॥
राम लक्ष्मण सुग्री बिभीषण । निश्चय देब ए करिबे रण ।
पारिले प्रीति हुअ । देइ जनक झिअ ।
भेद प्रीति ए द्वय । रणे नोहिब जय ॥ ३ ॥
निश्चय नाश गला तोर लंका । शुणिण राबण पाइला शंका ।
शुककु अणाइला । बहु पृषार्थ कला ।
सुग्री पाशे पेषिण । एहा कह बोइला ॥ ४ ॥
बोलिबु राबण पेशिला मोते । तुम्भे किपाँ कोप करिछ एते ।
तुम्भे आम्भर भ्रात । आम्भ संगे अनर्थ ।
करिबार बिअर्थ । कि नेलु तुम्भ अर्थ ॥ ५ ॥
बा संगे मोहर मित्रपण । जाणिण किपाँ आसिछ आपण ।
घेनि आम्भर प्रीति । बाहुड़ कपिपति ।
जेबे हेब अप्रीति । आम्भे असुर जाति ॥ ६ ॥

को भेजा था। वह सब कुछ देखकर आया। देखकर उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। आज उसने लंका पहुँचकर रावण से सब कुछ बताया। १ करोड़ों देव-वानरों के दल से वन और पर्वत भरे पड़े हैं। जिसने लंका को जलाया था। उसी के समान सभी बलवान हैं। उनकी गणना नहीं की जा सकती। निश्चित रूप से वह सबको समाप्त कर देंगे। २ हे देव ! श्रीराम, लक्ष्मण, सुग्रीव तथा विभीषण निश्चित रूप से युद्ध करेंगे। यदि हो सके तो जनक-तनया को समर्पित करके मित्रता कर लो। भेद और प्रीति दो वस्तुएँ हैं। युद्ध से जय की प्राप्ति नहीं होगी। ३ निश्चय ही अब आपकी लंका नष्ट हो गई। यह सुनकर रावण सशंकित हो गया। उसने शुक को बुलाकर उसकी बहुत प्रशंसा करके उसे सुग्रीव के समीप यह कहने को भेजा। ४ तुम कहना कि रावण ने मुझे आपके पास भेजा है, तथा कहा है कि आप किस कारण से इतना क्रोध कर रहे हैं ? आप हमारे भाई हैं और मेरे साथ अनर्थ करना व्यर्थ है। मैंने आपकी कौन सी सम्पदा ले ली है ? ५ बालि के साथ मेरी मित्रता थी, यह जानकर भी आप किसलिए आये हैं ? हे कपीश ! हमारी प्रीति को स्वीकार करके आप लौट जायें। यदि आप हमसे

जेबे से बोलिबे हरिल सीता । तु बोलिबु नुहें तुम्भ वनिता ।
आम्भे अटु भूपाळ । हरिपारु सकळ ।
दशरथर बाळ । एका करु से गोळ ।। ७ ।।
जेबे से तोते नोहिबे प्रसन्न । कहिबु तांकु जथार्थ वचन ।
आहे नर बानर । तुम्भे भक्ष आम्भर ।
जिणि लोड़ असुर । एड़े गर्ब तुम्भर ।। ८ ।।
एमन्त आज्ञा घेनि शुक गला । विचित्र विहंग गोटिए हेला ।
सैन्य मध्ये पशिला । सुग्री संगे भेटिला ।
राजा बाणी कहिला । दीन विशि भणिला ।। ९ ।।

एकादश छान्द

राग–घण्टारव

सुग्रीब कहइ शुक । देब मुं रावण लोक ।
तुम छामुकु पेषिछि रावण करिण स्तुति अनेक ।। १ ।।
रावण कहिछि जेते । मुं ताहा कहिबि केते ।
सबु दिने तुम्भ तांकर पीरति एणु से पेषिले मोते ।। २ ।।

शत्रुता करेंगे तो हम भी राक्षस-जाति के हैं । ६ हे शुक ! यदि वह कहें कि सीता का हरण क्यों किया, तो कह देना कि वह तो तुम्हारी स्त्री नहीं है ? हम भूपाल हैं । हम सर्वस्व हरण कर सकते है । दशरथ-पुत्र अकेले ही हमसे युद्ध करें । ७ यदि सुग्रीव हमसे प्रसन्न न हो तो उससे यथार्थ बात कह देना, अरे नर और वानर ! तुम लोग मेरे भक्ष्य हो । तुम्हारा गर्व इतना बढ़ गया है कि असुर को खोजकर उसे जीतना चाहते हो । ८ इस प्रकार आज्ञा लेकर शुक एक विचित्र पक्षी बनकर चला गया । वह सेना के मध्य जा पहुँचा । उसने जाकर सुग्रीव से भेंट की । उसने राजा की बात उससे कही । दीन विशि उसका ही वर्णन कर रहा है । ९

छान्द—११

राग–घण्टारव

शुक ने सुग्रीव से कहा, हे देव ! मैं रावण का आदमी हूँ । रावण ने आपकी नाना प्रकार से स्तुति करके मुझे आपके पास भेजा है । १ रावण ने जो भी मुझसे कहा है, वह मैं आपसे क्या कहूँ ? सदा से आपकी और उनकी मित्रता रही है । इसी कारण से उन्होंने मुझे भेजा है । २

रावण जा कहिथिला। सबु सुग्री कि कहिला।
शुणि करि कपिराजन मनरे बहु क्रोध जात हेला ॥ ३ ॥
बोलइ एहाकु धर। जेते इच्छा तेते मार।
श्रीराम छामुरे जणाइ एहाइ छेदन करिबा शिर ॥ ४ ॥
आज्ञा पाइ कपि नेले। बन्धन ताहाकु कले।
सकळ सैन्यरे बुलाइ ताहाकु अनेक माड़ माइले ॥ ५ ॥
कान्दिण शुक कहइ। दूतकु मार किपाइँ।
तांकर सेबक तुम्भर सेबक मोर दोष अछि काहिँ ॥ ६ ॥
श्रीराम छामुकु नेले। सबु बृत्तान्त कहिले।
दयानिधि तार बिकळ देखिण छड़ाइ ताहाकु देले ॥ ७ ॥
पळाइण तहुँ गला। पुणि सुग्री आगे हेला।
रावण छामुरे कि बोलि कहिबि बोलि शून्यरे रहिला ॥ ८ ॥
शुणि ता सुग्री राजन। बोलन्ति कोपे बचन।
सीता देइ जेबे शरण पशिब तेबे से हेब सन्धान ॥ ९ ॥
जेणु सीता कला चोरि। तेणु से आम्भ बइरी।
राम शत्रु जेणु आम्भ शत्रु तेणु मोते से बाळिर सरि ॥ १० ॥

रावण ने जो भी कहा था उसने सब कुछ सुग्रीव से कह दिया। यह सुनकर कपिराज सुग्रीव के मन में अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हो गया। ३ उसने कहा कि इसे पकड़ लो और जितनी इच्छा हो उतना इसे पीटो। उन्होंने श्रीराम के समक्ष कहा कि मैं इसका शिर-छेदन करूँगा। ४ आज्ञा पाते ही वानरों ने उसे बाँध लिया और सारी सेना में उसे घुमाकर उसकी खूब धुनाई की। ५ शुक ने रोते हुए कहा कि दूत को आप किसलिए मार रहे है? मैं उनका सेवक हूँ और आपका भी। इसमें मेरा दोष क्या है? ६ वह उसे श्रीराम के समक्ष ले गये और सारा वृत्तान्त उनसे निवेदित किया। दयासिन्धु श्रीराम ने उसे व्याकुल देखकर छुड़ा दिया। ७ वह वहाँ से भागकर सुग्रीव के समक्ष जा पहुँचा तथा आकाश-मार्ग से ही पूछने लगा कि रावण से जाकर क्या कहूँगा? ८ यह सुनकर राजा सुग्रीव ने क्रुद्ध होकर कहा कि कह देना, वह जब सीता को समर्पित करके शरणापन्न होगा तभी सन्धि हो पाएगी। ९ उसने सीता को चुराया है, अतः वह हमारा शत्रु है। जब वह राम का शत्रु है तो उसी प्रकार वह मेरा भी बालि के समान शत्रु है। १० अंगद ने सुग्रीव से कहा,

अंगद बोले ताहांकु । कि कह देव एहाकु ।
दूत होइ चोर पणे आसिअछि आम्भ सैन्य कळिबाकु ।। ११ ।।
जिबटि एहाकु धर । बन्धन त्वरित कर ।
अंगद बचन शुणिण सुग्रीब आज्ञा देले हेउ धर ।। १२ ।।
बानर धरि आणिले । तुरिते बन्धन कले ।
बोले बिशि राम छामुरे जणाइ बन्धन करि रखिले ।। १३ ।।

द्वादश छान्द—सिन्धुप्रति श्रीरामंकर प्रार्थना

राग—माळश्री

सिन्धुकूळरे बिजे रघुपति । सुग्री बिभीषण अछन्ति कति ।
श्रीराम बोलन्ति कपि ईश्वर । केमन्ते जळधि होइबा पार ।
शुणि सुग्रीब कर जोड़ि जणान्ति शुणिमा हेउ भो देब ।
बन्ध बांधिले सिन्धु पार हेब ।। १ ।।
आज्ञा देले कपि आणन्ति शिळ । बन्धन करिबा जळधिजळ ।
आज्ञा पाइण कपिमाने गले । गिरि आणि समुद्रे पकाइले ।
बुड़िगले केहु काहिँरे पड़िले अगाध जळधिजळ ।
थोके शिळामान कले कबळ ।। २ ।।

हे देव ! इससे क्या कहना ? यह तो दूत होकर भी चोरी से हमारी सेना का आकलन करने आया था । ११ इसे पकड़कर शीघ्रता से बाँध लीजिए, अन्यथा यह भाग जाएगा । अंगद की बात सुनकर सुग्रीव बोला, अच्छा ठीक है । इसे पकड़ लो । १२ वानर शीघ्र ही उसे बाँधकर पकड़ लाये । विशि कहता है कि उसे बाँधकर उन्होंने श्रीराम से सब बता दिया । १३

छान्द १२—श्रीराम की सिन्धु से प्रार्थना

राग—मालश्री

रघुनायक श्रीराम सिन्धुतट पर विराजमान थे । सुग्रीव तथा विभीषण समीप ही थे । श्रीराम ने कहा, हे कपीश्वर ! सागर को कैसे पार किया जाय ? यह सुनकर सुग्रीव ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! सुनिए । हम पुल बनाकर सागर पार करेंगे । १ आज्ञा देने से वानर शिलायें ले आयेंगे और सागर-जल का बन्धन करेंगे । आज्ञा पाते ही कपि-दल चला गया और पर्वत लाकर समुद्र में गिराने लगे । अगाध जल होने से कोई कहीं गिरा और कोई कहीं डूब गया । विपुल शिलाएँ पानी

राम छामुरे थिले लंकेश्वर। सुग्री हनु धरि ता बेनि कर।
बोलन्ति कह आम्भंकु बिचार। कि रूपे जळधि होइबा पार।
बिभीषण बोले सागर कीरति अटइ सूर्य्यबंशर।
प्रार्थना करन्तु कोदण्डधर ॥ ३ ॥
एमन्त शुणि श्रीराम छामुरे। कर जोड़ि जणाइले सत्वरे।
शुणि राघब संतोष होइले। समस्त मंत्री राइ पचारिले।
आज्ञा पाइ समस्त मंत्री बोलन्ति एहि रूपे कर देब।
बिभीषण बिचार जे दुर्ल्लभ ॥ ४ ॥
शुणि राम सिन्धुरे स्नान कले। सन्ध्या तर्पण त्वरिते सारिले।
सिन्धुकु बहु रूपे करि स्तब। कुश सज्या कले जानकीधब।
तिनि दिन तिनि रजनी तहिँरे जळहिँ न कले पान।
प्रसन्न नोहिले जळ राजन ॥ ५ ॥
क्रोधरे राम नयन अरुण। बोलन्ति देख देख हे लक्ष्मण।
सिन्धु देखाइला लघुतापण। शीघ्र करिण आण धनुर्बाण।
मुर्ख जाति भय पाइले पीरति देबइ एहाकु दण्ड।
भणे बिशि जे धइले कोदण्ड ॥ ६ ॥

का ग्रास बन गईं। २ राम के समक्ष लंकेश्वर विभीषण थे। सुग्रीव तथा हनुमान ने उनके दोनों हाथों को पकड़कर कहा कि आप अपना मन्तव्य व्यक्त करें कि हम लोग किस प्रकार समुद्र को पार करेंगे? विभीषण ने कहा कि सूर्यवंश ही समुद्र की कीर्ति का कारण है। कोदण्डधर! श्रीराम उससे विनय करें। ३ ऐसा सुनकर उन्होंने शीघ्र ही जाकर हाथ जोड़कर श्रीराम से सब कुछ कह दिया। यह सुनकर राघव प्रसन्न हो गये। उन्होंने सभी मंत्रियों को बुलाकर पूछा। आज्ञा पाकर सभी मंत्रियों ने कहा, हे देव! ऐसा ही करें। विभीषण का विचार उत्तम है। ४ यह सुनकर श्रीराम ने सागर में स्नान किया। शीघ्र ही उन्होंने सन्ध्या और तर्पण समाप्त किया। जानकीनाथ ने सागर की नाना प्रकार से स्तुति करके कुशशय्या स्थापित की। तीन दिन, तीन रात वहीं रहे और उन्होंने जल तक नहीं पान किया। परन्तु फिर भी वरुणदेव प्रसन्न नहीं हुए। ५ क्रोध से श्रीराम के नेत्र लाल हो गये। श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा, हे लक्ष्मण! देखो। [illegible]द्र ने अपनी नीचता दिखा दी। शीघ्रता पूर्वक धनुष अ[illegible] [illegible]र्ख व्यक्ति भय पाकर ही प्रीति करते हैं। मैं इसे [illegible] विशि कहता है, इतना [illegible] उन्होंने धनुष

अनेक दुष्ट अछन्ति रहि पेष गोसाइँ हे ।
शुणि श्रीराम ब्रह्मअस्त्र पेषिले, से दिगरु समस्त दुष्ट नाशिले जे ।
सेदिनु भूमि होइला जोग्य, देब गन्धर्बे पाइले भोग,
राम प्रसादे तहिँरे पुष्प फळ दिशिले हे ।। ६ ।।
मेलाणि पाइ सरितपति, बाहुड़ि निजपुरे तड़ति;
बहु नृपति होइले मति जानकीपति जे ।
से बेनि राजांकु राइ कति, बोलन्ति देखिल सिन्धुपति,
कहिला जेते रूपे उकति कर झटति जे ।
शुणि सुग्रीब राइ बानर बळ जे ।
आज्ञा देले समस्ते आण अचळ जे ।
समस्त शिळ छुइँबे नळ । सेतु होइब न बूड़ि जळ ।
बोइले बिशि शुणि धाइँले बानर बळ जे ।। ७ ।।

चतुर्दश छान्द—सेतुबन्ध प्रस्तुत

राग—चक्रकेळि

राजा आज्ञा पाइ बानर बळ ।
समस्त ठारु आणि तरु शिळ ।। १ ।।

अब कहाँ छोड़ूँ ? यह सुनकर नदियों के स्वामी समुद्र ने कहा कि क्षीर-सागर प्रदेश में अनेक दुष्ट हैं । हे नाथ ! इसे वहीं भेज दें । यह सुन कर श्रीराम ने ब्रह्मास्त्र को वहीं भेजकर उस ओर से समस्त दुष्टों का विनाश कर दिया । उस दिन से भूमि ठीक हो गई । देवता और गन्धर्वों को भोग प्राप्त होने लगा । श्रीराम की कृपा से वह फल-फूल दिखाई देने लगे । ६ विदा लेकर सरितापति सिन्धु शीघ्र ही अपने स्थान को लौट गया । उसकी मति श्रीजानकीनाथ में अत्यधिक लग गई । श्रीराम ने सुग्रीव तथा बिभीषण दोनों ही राजाओं को अपने निकट बुलाकर कहा कि आपने सागर को देख लिया । उसने शीघ्र ही कैसे उपाय बता दिये । यह सुनकर सुग्रीव ने वानरदल को बुलाकर सभी को पर्वत-शिलाएँ लाने की आज्ञा दी । समस्त शिलाओं का स्पर्श नल करेंगे । जिससे वह पानी में न डूबकर सेतु बनेंगी । विशि कहता है, यह सुनकर वानरदल दौड़ पड़ा । ७

छान्द १४—सेतुबन्ध-निर्माण

राग—चक्रकेलि

राजा की आज्ञा पाकर वानरदल सभी ओर से तरु-शिलाएं लाने

राम नाम धरि छुअन्ते नळ ।
भासिला नउका प्राय अचळ ।। २ ।।
पाञ्च दिने सेतु कले श्रीराम ।
शत जोजन होइ परिमाण ।। ३ ।।
दश जोजन से बन्धर प्रति ।
जळुँ कि बाहार होइला क्षिति ।। ४ ।।
मृत्तिका पकाइण तुल कले ।
ऋक्ष कपिबळ सुखे चळिले ।। ५ ।।
हसिण आज्ञा देले रघुपति ।
हेलाटि कि सेतु हे लंकपति ।। ६ ।।
हेला देब बोलि जोड़िले कर ।
बिजे हेउ देब सेतु उपर ।। ७ ।।
हनु कन्धरे कले आरोहण ।
गरुड़ पिठिरे कि नारायण ।। ८ ।।
लक्ष्मण अंगद कन्धे बिजय ।
आगुआ सुग्री बिभीषण राय ।। ९ ।।
बेढि चालन्ति सेनापति बृन्द ।
मध्यरे बिजय श्रीरामचन्द्र ।। १० ।।
शत जोजन सिन्धु पारि हेले ।
सुबळ गिरि उपरे उठिले ।। ११ ।।

लगे । १ नल द्वारा राम का नाम लेकर उन्हें छू देने से वह पर्वत नाव के समान तैरने लगते थे । २ श्रीराम ने पाँच दिनों में सौ योजन की दूरी का पुल निर्मित कराया । ३ उस सेतु की चौड़ाई दश योजन थी । लगता था जैसे पृथ्वी जल के बाहर निकल आई हो । ४ मिट्टी डालकर उसे बराबर किया गया । रीछ तथा वानरदल सुखपूर्वक उस पर चलने लगे ।५ रघुपति राम ने मुस्कुराकर आज्ञा दी । हे लंकेश्वर ! पुल बन गया । ६ उन्होंने हाथ जोड़कर कहा कि हे देव ! सेतु बन गया । आप उस पर उपस्थित हों । ७ श्रीराम हनुमान के कन्धे पर सवार हो गए । लगता था [illegible] गरुड़ की पीठ पर विराजमान हों । ८ लक्ष्मण [illegible] गए । राजा सुग्रीव तथा बिभीषण आगे-आगे [illegible] त का समूह उन्हें चारों [illegible] ल [illegible] मध्य में शोभायम। [illegible] जन

चाहिँले दिशइ लंका कटक ।
प्राकार सहिते सर्ब हाटक ।। १२ ।।
सुबळ गिरि अंक दिव्यस्थान ।
बोले बिशि तहिँ कले आस्थान ।। १३ ।।

पञ्चदश छान्द

राग–भैरव; ताळ–सरिमान

सुबळ गिरि अंकरे बिजे करि राम लक्ष्मणंकु कहन्ति बचन ।
सिन्धु पारि होइ आम्भे आसि हेलइँ देख दिशुअछि शत्रुभुबन ।।
कि बत्स हे। होइथिब तुम्भे साबधान ।
उतपातमान जात हेउअछि निश्चे नाश जिबेटि उभय सैन्य ।। १ ।।
जळरु अनळ जात हेउअछि सूर्ज्यमण्डळ दिशइ नानाप्रकार ।
आकाशुँ रुधिर बृष्टि हेउछि दिग दिशुअछि महा भयंकर ।। २ ।।
जळ आहार संग्रह करथिब धरिथिब निरन्तरे धनुशर ।
असुरमाने मायावी माया बळे जिणि अछन्ति देब पुरन्दर ।। ३ ।।

सागर पार करके वह सुबेल पर्वत पर चढ़ गए । ११ देखने पर लंका दुर्ग दिखाई दे रहा था जिसकी प्राचीर आदि सभी सोने के थे । १२ विशि कहता है कि सुबेल पर्वत पर एक दिव्य स्थान था । वहीं पर उन्होंने अपना डेरा जमाया । १३

छान्द—१५

राग–भैरव; ताल–सरिमान

सुबेल पर्वत पर विराजमान होकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि समुद्र पार करके हम यहाँ आ पहुँचे । देखो शत्रु का नगर दिखाई दे रहा है । हे वत्स ! तुम सावधान होकर रहना । उत्पात मच रहे है । दोनों सेनाएँ निश्चित रूप से नष्ट होंगी । १ जल से आग उत्पन्न हो रही है । सूर्य का मण्डल विविध रूपों में दिखाई दे रहा है । आकाश से रक्त की वर्षा हो रही है । दिशाएँ अत्यन्त भयावह दिखाई दे रही हैं । २ पानी और भोजन-सामग्री का संचय करते रहना और निरन्तर धनुष-बाण धारण किये रहना । राक्षस लोग मायावी होते हैं । माया के बल पर ही उन्होंने इन्द्रदेव को भी जीत लिया है । ३ सुग्रीव

सुग्रीबंकु कह गिरि चउपाशे बड़ बड़ कपिमाने जगिथिबे ।
शत्रुर सम्मुखे आम्भे रहिथाइ ठाबे ठाबे बेगे ठणा सेहि देबे ।। ४ ।।
राम आज्ञा कपिराजन पाइण कपि पेषि ठाबे ठाबे ठणा देले ।
बोले बिशि राम आस्थान सरिकि पञ्चद्वार कपि जगाइले ।। ५ ।।

षोडश छान्द

राग–केदार पटताळ

सुबळ पर्बते बिजे करि राम छाड़िण देले शुककु ।
बन्धनु मुकत होइण से जाइँ जणाइला राबणकु ।।
आहे देब । मोते सुग्री देला पराभब ।
माड़ मराइ बन्धन करिथिला छड़ाइ देले राघब ।। १ ।।
पर्बते सिन्धु बन्धाइ पार हेले अगाध जळधि जळ ।
तरु पाषाण जळरे न बुड़िला छुइँला मात्रके नळ ।। २ ।।
एबे से सुबळ गिरिरे रहिले करिण तहिँरे गड़ ।
सुग्रीब संगरे कोटि कोटि कपि लंका पोड़ाठारु बड़ ।। ३ ।।

से कहो कि बड़े-बड़े वानर पर्वत को चारों ओर से रक्षा करते रहें । शत्रु के समक्ष रहने पर वह ही जगह-जगह पर जागरूक करेंगे । ४ राम की आज्ञा पाकर कपिराज सुग्रीव ने वानरों को भेजकर स्थान-स्थान पर चौकियाँ स्थापित करा दीं । विशि कहता है कि श्रीराम के स्थान के सहित पाँचों निकासों पर वानरों का पहरा लगवा दिया । ५

छान्द—१६

राग–केदार पटताल

सुबेल पर्वत पर पहुँचकर श्रीराम ने शुक को छोड दिया । बन्धन से मुक्त होकर उसने जाकर रावण से कहा । हे देव ! सुग्रीव ने मुझे अपमानित किया है । उसने मुझे पिटवाकर बाँध लिया था, फिर श्रीराम ने मुझे छुड़ा दिया । १ पर्वतों से समुद्र को बाँधकर वह पार आ गये हैं । सिन्धु के अगाध जल में नल के छू लेने मात्र से वृक्ष और शिलायें पानी में नहीं डूबीं । २ इस समय वह सुबेल पर्वत पर दुर्ग बनाकर रह रहे हैं । सुग्रीव के साथ लंका को जलानेवाले वानर से भी बड़े करोड़ों बन्दर है । ३ यह सुनकर रावण ने आश्चर्यचकित होकर कहा कि तू वापस

शुणिण रावण बिस्मय होइण बोलइ बाहुड़ि जाअ ।
सारण तुम्भर संगतरे जाउ सैन्य कळि मोते कह ।। ४ ।।
आज्ञा पाइण मंत्री शुक सारण मर्कट रूप धइले ।
बोले बिशि श्रीरामक सइन्यरे प्रबेश जाइँ होइले ।। ५ ।।

सप्तदश छान्द—सैन्य कळना

राग–चक्रकेळि वाणी

शुक सारण होइण मर्कट ।
सैन्य कळुछन्ति करि कपट ।। १ ।।
बिभीषण दृष्टिरे से पड़िले ।
तांकु धरि आण से आज्ञा देले ।। २ ।।
चिह्निले मंत्री शुक सारणकु ।
बान्धि घेनि गले राम छामुकु ।। ३ ।।
श्रीराम छामुरे से जणाइले ।
रावण मंत्री बोलि शुणाइले ।। ४ ।।
होइछन्ति बेनि जने मर्कट ।
सैन्य कळुछन्ति करि कपट ।। ५ ।।
आज्ञा हेले ए बेनिंकि मारिबा ।
चोर जेणु शिरच्छेद करिबा ।। ६ ।।

चला जा । सारण भी तुम्हारे साथ जायेगा और तुम सेना का आकलन करके मुझे बताओ । ४ आज्ञा पाकर मंत्री शुक और सारण ने वानर का रूप धारण किया । विशि कहता है कि वह दोनों श्रीराम की सेना में जा पहुंचे । ५

छान्द १७—सेना की गणना

राग–चक्रकेलि

शुक और सारण वानर बनकर छल से सेना का आकलन करने लगे। १ विभीषण की दृष्टि उन पर पडी । उन्होंने उन दोनों को पकड़ लाने की आज्ञा दी । २ उन्होंने दोनों मंत्रियों शुक-सारण को पहचान लिया । वह उन्हें बांधकर श्रीराम के समक्ष ले गये । ३ श्रीराम के सामने उन्होंने कहा कि यह दोनों रावण के मंत्री हैं । ४ यह दोनों बन्दर बनकर छल से सेना की गणना कर रहे हैं । ५ आज्ञा होने से इन दोनों को मारेंगे और

हसि आज्ञा देले राम न मार।
सैन्य बुलाइ देखाअ आम्भर ॥ ७ ॥
आज्ञा पाइ तांकु सैन्य देखाइ।
छामुरे कहिले तांकु रखाइ ॥ ८ ॥
आज्ञा देले छाड़ि दिअ चोरंकु।
जाइ कहन्तु जानकी चोरकु ॥ ९ ॥
आज्ञा पाइण ताहांकु छाड़िले।
बिशि बोले लंकाकु बाहुड़िले ॥ १० ॥

अष्टादश छान्द

राग-सिन्धु कामोदी (नन्दबाई चउतिशा बाणी)

रावणकु दर्शन करिण बेनि
जन रामंक बृत्तान्त कहिले।
बिभीषण आम्भंकु चिह्नि बन्धन
करि राम छामुरे उभाकले जे।
आहे देब। से आम्भंकु बन्धनु फेड़ि
छाड़ि देले सकळ सैन्यकु देखाइ।
भाग्यबळरे आम्भे जीबनरे
अइलु चिह्निनलु जुथपति तहिँ जे ॥ १ ॥

चोरों जैसे इनका सिर काट देंगे। ६ राम ने हँसते हुए आज्ञा दी कि इन्हें मारो नहीं, अपितु घुमाकर हमारी सेना दिखा दो। ७ आज्ञा पाकर उन्हें सेना दिखाकर उन्हें सामने रखकर कहा। ८ श्रीराम ने उन चोरों को छोड़ देने के लिए आज्ञा दी, जिससे कि वह लोग जाकर सीता के चोर रावण से सब कह दें। ९ विशि कहता है कि आज्ञा मिलने पर वह दोनों छोड़ दिये गये और दोनों ही लंका को वापस चले गये। १०

छान्द—१८

राग-सिन्धु कामोदी (नन्दबाई चौंतीसा धुन)

रावण के दर्शन करके उन दोनों ने श्रीराम के समाचार बताये। विभीषण ने हमें पहचानकर बाँध लिया और फिर राम के सामने खड़ा किया। हे देव! उन्होंने हमें बन्धन-मुक्त करके सारी सेना दिखाई। भाग्यवश हम लोग बचकर आ गये, परन्तु यूथपतियों को हमने पहचान

शुणि तांक बचन नृपति
दशानन से बेनि संगे घेनि गला।
उठन्ते महाभय केबळ हेममय
उच्च जगती आरोहिला से।
लंकपाळ। देखिले राम कपिबळ।
पूरिछन्ति मही आबर बन चळ।
सिन्धु कि कूळ लंघि आसइ
महाजळ अनाइ होइला तरळ से ।। २ ।।
सारणकु पुछइ कह मोते
चिन्हाइ एमाने केउँ केउँ कपि।
आम्भ लकाकु चाहिँ तनुरुह फुलाइ
हेउछन्ति त महाकोपी जे।
हे सारण। कह ए मानंकर नाम।
केमन्ते से देखा मोते लक्ष्मण राम।
बिपुळ शाखामृगमाने दिशुछन्ति
गोटि गोटिके गज सम से ।। ३ ।।
शुणि कहे सारण गुण देब
राबण लंकाकु चाहिँ जे गर्जइ।
बानर सेनापति पबन प्राय गति
एहार नाम नीळ अटइ जे।

लिया है। १ यह सुनकर महाराज दशकंधर उन्हें साथ ले गया। अत्यन्त भय के कारण वह स्वर्णमयी ऊँची जगती पर चढ़ गया। वहाँ से लंकाधिपति ने राम की वानर-सेना का निरीक्षण किया जो पृथ्वी, जंगल तथा पर्वत पर भरी थी। लगता था मानों समुद्र ही किनारों को लाँघता हुआ आ रहा है। अनन्त जलराशि के समान उन्हें देखकर वह डर गया। २ वह सारण से पूछता हुआ बोला कि तुम पहचानकर मुझे बताओ कि यह कौन-कौन से वानर हैं जो हमारी लंका को देखकर शरीर के बालों को फुलाकर महान क्रोध कर रहे हैं? हे सारण! इन लोगों के नाम बताओ। और किसी प्रकार से मुझे राम और लक्ष्मण को दिखा दो। असंख्य वानर दिखाई पड़ रहे हैं, जिनमें से एक-एक हाथी के समान है। ३ यह सुनकर सारण ने कहा कि हे देव! आप देखें। यह जो लंका की ओर देखकर गर्जन कर रहा है, यह वानर-सेनापति है।

आहे देब ! शत सहस्र कोटि कपि ।
एहा संग क्षणे न छाड़न्ति अद्यापि ।
देख ए शतबळ एहार अंग बळ
बन गिरि अछन्ति ब्यापि जे ।। ४ ।।
बिश्वकर्मार बाळ उभा होइछि नळ
एटि सागरे कला स्थळ ।
एहार कर लागि सेतु होइला
देब अइले ऋक्ष कपिबळ जे ।
आहे देब । एहा बुद्धि अपरिमित ।
शत कोटि हरि बळ छन्ति बहुत ।
एटि दुर्बिन्द स्वर्गे अमृत पान
कला जिणिण देब पुरुहुत जे ।। ५ ।।
एटि महीन्द्र देब पुच्छ हलाउअछि
एहार कोटि कपिबळ ।
एटि गन्धमादन सहस्र कोटि
सैन्य संग्रामे ए द्वितीय काळ जे ।
आहे देब ! महा बळिष्ठ ए सुषेण ।
शत लक्ष कोटि एहार कपिगण ।
सुग्रीबर श्वसुर बिश्वास ए रामर
अछि एहार बैद्य पण जे ।। ६ ।।

इसका नाम नील है और इसकी गति वायु के समान है। हे देव ! इसके साथ सौ हजार करोड़ वानर हैं जो कभी इसका साथ नहीं छोड़ते। देखो, यह शतबल है जिसके शरीर का बल जंगलों और पहाड़ों पर छाया हुआ है। ४ यह विश्वकर्मा का पुत्र नल खड़ा है। इसी ने सागर को स्थल पर बना डाला। इसी के हाथ लगने से पुल बना, जिस पर चढ़कर रीछ और वानरों की सेना पार आयी है। हे देव ! इसकी बुद्धि अपरिमित है। इसके पास सौ करोड़ वानरों की सेना है। यह दुर्विन्द वानर है, जिसने स्वर्ग के देवराज इन्द्र को जीतकर अमृत का पान किया था। ५ हे देव ! जो पूंछ हिला रहा है महेन्द्र है, इसकी वानर-सेना एक करोड़ है। यह गन्धमादन है। संग्राम में यह दूसरे काल के समान है। इसके पास सहस्र कोटि सेना है। हे देव ! यह महान बलशाली सुषेण है, इसके साथ सौ लाख करोड़ वानरदल है। यह सुग्रीव का श्वसुर तथा राम का विश्वासपात्र है।

एटि देब गबय भूमिरे पुच्छ पिटे
गबाक्ष तार पाशे उभा ।
लंकाकु अनाइण तर्जि रड़ि
छाड़िण तार पाशे पबन शोभा जे ।
आहे देब । पुच्छ टेकि जे अनाइछि ।
कोटि कोटि कपिबळ एहार अछि ।
एहा पाशरे देब बिनतासुत रहि
बाहास्फोट मन मारुछि हे ।। ७ ।।
देख भो देब गज दिशुछि
महातेज लंकाकु चाहिं जे हसइ ।
एहार बळ जेते कहिबि अबा
केते बिषम समरे मिशइ से ।
आहे देब । एहा पारुश्वे उभा रम्भ ।
बहु कपि समूहे दिशुछि आरम्भ ।
ताहा पाखरे उभा होइछि दधिमुख
संग्रामरे अटइ दम्भ से ।। ८ ।।
देख ए दधिमुख ऊर्द्ध्वंकु करि
मुख दशने ओष्ठ अछि चापि ।
एहा संगरे देब एहारि सम होइ
कोटि कोटि अछन्ति कपि हे ।

यह वैद्य है । ६ हे देव ! यह जो पृथ्वी पर पूँछ पटक रहा है, गवय है और इसके ही पास गवाक्ष खड़ा है जो लंका की ओर देखकर तर्जना के साथ किलकारी मार रहा है । इसके समीप ही पवन शोभायमान है, जो पूँछ उठाकर इधर देख रहा है । इसके पास करोड़ों-करोड़ों वानरों का दल है । हे देव ! इनके पास विनतासुत है, जो अपना मन मार कर बाँहें फड़का रहा है । ७ हे देव ! देखो, यह महातेजस्वी गज दिखाई दे रहा है । जो लंका को देखकर हँस रहा है । इसका जितना बल है, उसके विषय में कितना कहा जाए । यह बड़े-बड़े भयंकर युद्धों में भाग लेता है । हे देव ! इसके समीप ही रम्भ नाम का वानर खड़ा है जो कपियों के समूह में आरम्भ में दिखाई दे रहा है । इसके निकट ही दधिमुख खड़ा है जो बड़े गर्व से संग्राम करता है । ८ देखो, यह दधिमुख अपना मुख ऊपर करके दाँतों से होंठ चबा रहा है । हे देव !

देख देब ! ता बाम पारुश्वे कुमुद ।
आम्भ संगे करिबे बोलिण बिबाद ।
उगुइँ कहुअछि पुच्छरे तर्जुअछि
होइण अत्यन्त प्रमोद से ।। ९ ।।
देख ए देब कुन्द अटइ
महानन्द लंकाकु चाहिँ से भाषइ ।
तार पारुश्वे देब दुर्मुख मुख
देख महाभयंकर दिशइ जे ।
आहे देब ! एहा पाशे अछि सुमुख ।
एहा संगे कपिबळ छन्ति असंख्य ।
एहा पाशरे ब्रह्म अलौकिक ता
कर्म कपि अछन्ति लक्ष लक्ष जे ।। १० ।।
देख देब ऋषभ महामत्त बृषभ
प्रायक होइअछि उभा ।
देख बेगदरशी सिंहर प्राय
दिशि एहार बळ कि कहिबा जे ।
आहे देब ! ताहा पाशे हेममुकुट ।
एहा बुद्धि सकळ लोकरे प्रकट ।
एहा बळ जेते कहिबि अबा
केते कोटि कोटिछन्ति मर्कट जे ।। ११ ।।

इसके साथ इसी के समान करोड़ों वानर हैं। हे देव ! देखिए उसके बायीं ओर कुमुद है जो अपने साथ युद्ध करेगा। यह अत्यन्त प्रसन्न होकर पूँछ उठाकर तर्जन कर रहा है जो भविष्य का द्योतक है। ९ हे देव ! देखिए यह कुन्द है जो लंका की ओर देखकर बहुत आनन्दित हो रहा है। हे देव ! उसके निकट ही दुर्मुख है जिसका मुख भयावह दिखाई दे रहा है। हे देव ! इसके निकट ही सुमुख है, जिसके साथ असंख्य वानरी सेना है, इसके पास ही ब्रह्म नाम का वानर है जिसके पास अलौकिक कार्य करनेवाले लाखों वानर है। १० हे देव ! देखो, यह ऋषभ है जो बड़े मतवाले साँड़ के समान खड़ा है। देखिए, यह बेगदर्शी है जिसका बल सिंह के समान है। इसके बल के बारे में कितना कहा जाए। हे देव ! इसके पास हेममुकुट वानर है, जिसकी बुद्धिमत्ता सारे संसार में विख्यात है। इसका जितना बल है उसके विषय में हम

देख देब केशरी एहा संगरे
हरि अछन्ति कोटि कोटि होइ।
समस्ते बळबन्त शाळ शिळमान त
घेनिछन्ति संग्राम पाइँ जे।
आहे देब। इन्द्रजान ए भीमजान।
होइछन्ति उभा केशरी सन्निधान।
एहाङ्क संगे देब बेनि कोटि बानर
गोटिए नाहिँ एणि सान हे॥ १२॥
देख ए हनुमन्त पबनदेब
सुत एहार सैन्य अप्रमित।
केते सहस्र कोटि कपि एहा
संगरे न जाणे एथिर तदन्त जे।
आहे देब! ऋक्षंक पति ए जाम्बब।
एहा संगे भल्लुक बळ असम्भब।
लक्ष लक्ष होइण जाहा भल्लूक
बळ ताहा के कळना करिब॥ १३॥
देख उभा सुग्रीब हेमबाळा ए
ग्रीब एटि बानरकुळराज।
एहार पारुश्वरे देब अंगद
उभा बाळिनृपतिर आत्मज जे।

कितना बतायें। करोड़ों वानर इसके साथ हैं। ११ हे देव! देखो, यह केशरी है। इसके साथ भी करोड़ों वानर हैं। यह सारे के सारे युद्ध के लिए महाबली शालवृक्ष तथा शिलाएँ लिये हुए हैं। हे देव! यह इन्द्रयान और भीमयान हैं, जो केशरी के समीप खड़े हैं। इनके साथ दो करोड़ वानर हैं, उनमें से एक भी इनसे कम नहीं है। १२ देखो यह पवनदेव का पुत्र हनुमान है। इसकी सेना अपरिमित है। कितने हज़ार करोड़ वानर इसके साथ हैं जिनका अन्त नहीं मिलता। हे देव! यह ऋक्षपति जामवन्त है। इसके साथ असंख्य भालुओं का दल है। इसकी लाखों भल्लूकवाहिनी की गणना कौन कर सकता है। १३ देखो, यह सुग्रीव खड़ा है। यह वानरों का राजा है और इसकी ग्रीवा सुनहरे बालों से आच्छादित है। इसके बगल में बालिनन्दन अंगद खड़ा है। हे देव! यह सभी वानर कामरूपी हैं। यह नाना प्रकार के रूप धारण

आहे देब ! पारन्ति नाना रूप धरि ।
कामरूपी अटन्ति ए सकळ हरि ।
एते कहि सारण पछघुञ्चा
देइण मनरे महाभय करि से ।। १४ ।।
शुक देखाइ कहे दुर्बादळ
शरीर पुण्डरीक-नयन राम ।
एटि जानकी बर कोदण्ड शर कर
छबि निन्दा करुछि काम हे ।
आहे देब ! तांक पारुश्वरे लक्ष्मण ।
लंका चाहिं टंकार करुछन्ति गुण ।
तांक पारुश्वे उभा होइछि देब
तुम्भ सोदर भ्रात बिभीषण जे ।। १५ ।।
शुणिण लंकपति कुपित होइ
मति बहु भर्त्सना तांकु कला ।
मंत्री होइण तुम्भे राजनीति न
जाण डराउअछ रे बोइला से ।
आहे मंत्रि ! छेदन्ति तुम्भ बेनि शिर ।
पूर्बे मोरे करिछ बहु उपकार ।
जाहाकु तोष कले बहु बिभूति
पाइ ताहा कोपरे जाइ शिर जे ।। १६ ।।

कर सकते हैं। इतना कहकर सारण मन में अत्यधिक भयभीत होने से पीछे सरक गया। १४ शुक ने दूर्वादल के समान शरीरवाले तथा कमल के समान नेत्रोंवाले राम को दिखाते हुए कहा कि यह धनुष-बाण धारण किये हुए कामदेव के सौन्दर्य को निन्दित करनेवाले जानकी के स्वामी श्रीराम हैं। हे देव ! उनके समीप ही लंका को ओर ताककर प्रत्यञ्चा से टंकार मारनेवाले लक्ष्मण हैं। हे देव ! उनके निकट ही आपके सगे भाई विभीषण खड़े हैं। १५ यह सुनकर लंकेश रावण ने क्रुद्ध होकर उसकी अत्यन्त भर्त्सना करते हुए कहा कि मंत्री होकर भी तुम्हें राजनीति का ज्ञान नहीं है। तुम मुझे डरा रहे हो। हे मंत्री ! तुमने पूर्वकाल में मेरे ऊपर बहुत उपकार किये हैं नहीं तो मैं तुम दोनों के सिर काट देता। जिसे सन्तुष्ट करने से प्रभूत सम्पदा प्राप्त होती है। उसी के क्रुद्ध होने पर सिर भी कट जाता है। १६ मंत्री होकर तुम

मंत्री होइण तुम्भे राजा छामुरे
शत्रु सैन्य प्राक्रममान कह।
एणु नीति न जाणि न पढ़िण
न शुणि गर्बरे होइअछ मोह जे।
आहे मंत्रि ! क्षमा कलि मुँ आज दोष।
आउ बेळे एहा न कहिब मो पाश।
पिइब दीन बिशि सकळ दिन
निशि श्रीराम चरित पीयूष हे ॥ १७ ॥

एकोनविंश छान्द—छत्रच्छेदन

राग—कौशिक

मंत्री मुखुँ शुणि कोपे बिशपाणि पुष्पक जाने बिजे कला।
धनुशर धरि आकाशे रहिण सुबळ गिरिकि चाहिँला।
डोळे देखिला, दुर्बादळ राम शरीर।
ब्रह्माण्ड शोभा कि घेनि अबतार मदन जार परिचार ॥ १ ॥
बिचित्र मृगछाळ परे बिजय सुग्रीब उरे आउजिण।
दक्षिण भुज तारा सुत कन्धरे हनु चापे बाम चरण।

राजा के समक्ष शत्रु-सेना का पराक्रम बखान कर रहे हो। तुमने न तो नीति को समझा है न तो पढ़ा है और न सुना ही है तथा तुम लोग घमण्ड से फूल गये हो। हे मंत्रियो ! आज मैंने तुम्हारे दोषों को क्षमा कर दिया। फिर कभी मेरे समीप इस प्रकार की बातें न करना। दीन विंशि दिन-रात श्रीरामचरितामृत का पान करता रहता है। १७

छान्द १९—छत्र-छेदन

राग—कौशिक

मंत्री के मुख की बातों को सुनकर बीस भुजाओं वाला रावण कुपित होकर पुष्पकविमान में चढ़कर धनुष-बाण धारण किये आकाश में स्थिर रहकर सुबेल पर्वत को ताकने लगा। उसने अपने नेत्रों से दूर्वादलश्याम-शरीर श्रीराम को देखा। मानों ब्रह्माण्ड की समग्र शोभा ने अवतार ग्रहण किया हो और कामदेव उसका सेवक हो। १
वह विचित्र मृगछाला के ऊपर सुग्रीव के अंक में विराजमान हैं। उनका दाहिना हाथ तारानन्दन अंगद के कन्धे पर है। हनुमान बायीं

लंकागड़रे; पड़िछि कोपनेत्र कोण ।
श्रीराम बाम पारुश्वरे बसिण शर सळखन्ति लक्ष्मण ।। २ ।।
छामुरे जाम्बब बेनि कर जोड़ि जणान्ति जुद्ध अनुकूळ ।
गुण देइण कोदण्ड धरिछन्ति बाम अंग करकमळ ।
दक्षिण कर, पल्लबे शोहे तीक्ष्ण शर ।
सुबास कुसुमे सुजट मण्डित बनकुसुम माळा उर ।। ३ ।।
मेघखण्ड प्राय गगने देखिण पचारुछन्ति सीतापति ।
आहे लंकपति गगने कि दिशे कह कह ए किस रीति ।
कर्णे कहइ, कर बदने बिभीषण ।
अंगुळि घेनि देखाइ बोले देब सैन्य कळुअछि राबण ।। ४ ।।
श्रीराम श्रबणे एमन्त कहन्ते अनाइथिला दशशिर ।
बुलाइण गद प्रहार करन्ते धइला मरुत कुमर ।
देखि श्रीराम कोदण्डे काण्ड बसाइले ।
राबण धनु मुकुट सर्बछत्र छेद बोलिण आज्ञा देले ।। ५ ।।
आज्ञा पाइण शरधनु मुकुट काटिला ताहार सर्बत्र ।
एका बेळके छिड़िण कि पड़िला ग्रह संगे सर्ब नक्षत्र ।

चरण दबा रहे हैं। तभी उनकी कोपदृष्टि लंकागढ़ पर जा पड़ी। श्रीराम के बायीं ओर बैठे हुए लक्ष्मण बाण ठीक कर रहे थे। २ सामने ही जामवन्त दोनों हाथ जोड़कर युद्ध का अनुकूल समय बता रहे हैं। श्रीराम ने धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर उसे बायें कन्धे पर धारण कर रखा है। दाहिने करकमल में धार वाला बाण शोभा पा रहा है। सुवासित फूलों से जटायें सजी हैं और गले में जंगली फूलों की माला पहने हुए हैं। ३ तभी आसमान में बादल के समान देखकर जानकीनाथ श्रीराम ने पूछा, हे लंकापति विभीषण! हमें बताओ कि आकाश में यह क्या दिखाई दे रहा है? तब विभीषण ने उँगली के संकेत से दिखाकर कान में कहा, हे देव! रावण सेना का आकलन कर रहा है। ४ श्रीराम के कानों में इस प्रकार कहते समय रावण ताक रहा था। उसने घुमाकर गदा से प्रहार करते हुए वायुनन्दन हनुमान को पकड़ लिया। यह देखकर श्रीराम ने कोदण्ड (धनुष) पर बाण चढ़ा लिया और उसे रावण का धनुष मुकुट तथा सम्पूर्ण छत्र को छेदन करने की आज्ञा दी। ५ आज्ञा पाते ही बाण ने एकबारगी उसके धनुष, मुकुट, छत्र आदि को काट दिया। लगता था जैसे सारे नक्षत्र ग्रहों के साथ गिर पड़े हों। अथवा वहाँ क्या

तहिं कि अबा, गज मुकुता हेला बृष्टि ।
कि अबा मल्लिका कुसुमे रामंकु अंजळि देले परमेष्ठि ।। ६ ।।
राम बाण टाण देखिण रावण लाज भयरे पळाइला ।
छेदन कले जेते छत्र ताहार सिन्धुगर्भरे से पड़िला ।
चिन्ता जळरे, मन-मीन तार बुड़िला ।
बोले बिशि सीता हरिला दिनरु दइब ताहाकु छाड़िला ।। ७ ।।

विंश छान्द

राग—दक्षिण कामोदी

शाद्र्दूळ कर धरि दशशिर ।
आरोहण कला बहु उच्च पुर ।। १ ।।
देखिला राम बिजे सुबळगिरि ।
गड़ द्वार जाए कपि छन्ति पूरि ।। २ ।।
शुक सारण ठारु जा थिला शुणि ।
सेहि रूपे शार्दूळ कहिला बाणी ।। ३ ।।
शाद्र्दूळकु पचारन्ति लंकेश्वर ।
कह केबण कपि काहा कुमर ।। ४ ।।

गजमुक्ताओं की वर्षा हो गई थी ! अथवा क्या ब्रह्माजी ने बेले के फूलों से श्रीराम को अंजलि प्रदान की हो ! ६ राम के बाण की शान देख कर रावण लज्जा और भय से भाग गया । छेदे गए उसके सारे छत्र सागर के गर्भ में जा गिरे । उसकी मन रूपी मछली चिन्ता के जल में डूब गई । विशि कहता है कि सीता-हरण करने के दिन से भाग्य ने उसे आज तक छोड़ रखा था । ७

छान्द—२०

राग—दक्षिण कामोदी

दशशिर रावण शार्दूल का हाथ पकडकर बहुत ऊँचे महल पर चढ़ गया । १ उसने देखा कि श्रीराम सुबेल पर्वत पर विराजमान हैं और लंका दुर्ग के द्वार तक वानर भरे पड़े है । २ उसने शुक और सारण से जो कुछ सुना था, शार्दूल ने भी उसी प्रकार उससे कहा । ३ लंकापति ने शार्दूल से पूछा, बताओ, यह वानर कौन है और किसका पुत्र है ? ४ यह

शुणि शार्द्दूळ कर देखाइ कहे ।
राम आगे जे टि देब उभा हुए ॥ ५ ॥
बेदबरंकर पुत्र जाम्बबन्त ।
ऋक्षराज ऋक्षसैन्य अप्रमित ॥ ६ ॥
धन्वन्तरी पुत्रटि सुषेण बीर ।
एहांकर कपि सैन्य अगोचर ॥ ७ ॥
चन्द्रंक नन्दन देब दधिमुख ।
राम पाशे उभा होइअछि देख ॥ ८ ॥
बेगदरशा सुमुख दुरुमुख ।
ए तिनि हें मृत्युस्थित देख देख ॥ ९ ॥
अनळंकर कुमर देख नीळ ।
आगुआ होइछि घेनि कपिबळ ॥ १० ॥
देख पवननन्दन हनुबीर ।
एहु दहिलाटि आम्भ लंकापुर ॥ ११ ॥
देख ए अंगद इन्द्रकर नाति ।
बाळीनन्दन द्वितीय कपिपति ॥ १२ ॥
महीन्द्र दुर्बिन्द देब बेनि बीर ।
अश्विनीकुमार ठारु अबतार ॥ १३ ॥
गब गबाक्ष सरभ तिनि बीर ।
ऋषभ गन्धमार्दनहिँ आबर ॥ १४ ॥

सुनकर शार्दूल ने हाथ के इशारे से कहा, हे देव ! जो श्रीराम के आगे खड़ा है वह ब्रह्मा का पुत्र, रीक्षो का स्वामी जामवन्त है, जिसके पास रीछों की असंख्य सेना है । ५-६ यह धन्वन्तरि का पुत्र पराक्रमी सुषेण है, इसकी वानरी सेना भी अगोचर है अर्थात् बहुत बडी है । ७ हे देव ! यह चन्द्रमा का पुत्र दधिमुख है । देखिये यह श्रीराम के पास खड़ा है । ८ वेगदर्शी, सुमुख तथा दुर्मुख को देखो, यह तीनों ऐसे हैं कि इन्हें देखते ही लोग मृत्यु की स्थिति में पहुँच जाते हैं । ९ देखिये, यह अग्नि का पुत्र नील है, जो वानरी सेना लेकर आगे-आगे चल रहा है । १० देखिये यह पवन का पुत्र पराक्रमी हनुमान है । इसी ने हमारी लंकापुरी को दग्ध किया था । ११ देखिये, यह इन्द्र का पौत्र अंगद है जो दूसरे कपिपति बालि का पुत्र है । १२ हे देव ! यह दोनों पराक्रमी महेन्द्र और दुर्विन्द अश्विनीकुमार से उत्पन्न हुए हैं । १३ महापराक्रमी गव, गवाक्ष, शरभ,

पंच बीरे अछन्ति जमर सुत ।
एहांकर बळ देब अप्रमित ।। १५ ।।
हेमकूट कपि बरुणंक पुत्र ।
कि कहिबा देब एहांक चरित ।। १६ ।।
बिश्वकर्माङ्क कुमर एटि नळ ।
एटि सेतु करि भसाइले शिळ ।। १७ ।।
देख सुग्री बानर नृपति बर ।
महातेजस्वी ए सूर्य्यङ्क कुमर ।। १८ ।।
बिश्रबानन्दन भ्राता बिभीषण ।
एहांक बळ त देब भले जाण ।। १९ ।।
राम लक्ष्मण ए दशरथ बाळ ।
केबळ अटन्ति दनुजंक काळ ।। २० ।।
केते कहिबि छामुरे बिशनेत्र ।
दश कोटि कपि देबताङ्क पुत्र ।। २१ ।।
जुद्ध करिबि नोहिले सीता देब ।
दिव्य चित्तकु जेमन्त जोगाइब ।। २२ ।।
शुणि समस्त मंत्रीङ्कु अणाइले ।
बोले बिशि न देब बिचार कले ।। २३ ।।

ऋषभ और गन्धमादन यह पाँचों यम के पुत्र हैं। हे देव ! इनका बल अपरिमित है। १४-१५ हेमकूट वानर वरुण का पुत्र है। हे देव ! इसके चरित्र का क्या वर्णन करें। १६ यह विश्वकर्मा का पुत्र नल है। इसी ने शिलाओं को तैराकर सेतु बना दिया। १७ देखिये, यह नृपति श्रेष्ठ वानरराज सुग्रीव है। यह महान तेजस्वी सूर्य का पुत्र है। १८ विश्रवानन्दन के भाई विभीषण का बल तो, देव ! आप भलीभाँति जानते ही हैं। १९ यह दशरथ के पुत्र श्रीराम तथा लक्ष्मण हैं। यह केवल दैत्यों के काल हैं। २० हे बीस नेत्रों वाले रावण ! आपसे हम कितना कहें। दस करोड़ वानर देवताओं के पुत्र हैं। २१ या तो युद्ध कीजिए अन्यथा सीता को दे दीजिए ! आपके दिव्य हृदय में जैसा उचित जान पड़े वह करें। २२ रावण ने सब कुछ सुनकर मंत्रियों को बुलवाया। विशि कहता है कि उन्होंने यही विचार किया कि सीता को नहीं देंगे। २३

एकविंश छान्द—मायाशिर ओ धनु दर्शन

राग–राजबिजे धनाश्री

मंत्री मानंकु देइण मेलाणि ।
भितरे बिजे कला बिंशपाणि ।
बिद्युजिह्वाकु अणाइला पाश ।
करि ताहाकु बहु पउरुष जे ।
न भांगिबु आज्ञा मोर रे ।
रामर शिर रामर धनुशर कइतबे बेगे कर रे ॥ १ ॥
लंकापतिर आज्ञा परमाणे ।
कइतबे ता से कला तक्षणे ।
देखि सन्तोष होइला राबण ।
प्रशंसा ताकु कला पुण पुण से ।
बिजे कला मधुबन जे ।
बिद्युजिह्वाकु दुआरे रखि एका गला सीता सन्निधान जे ॥ २ ॥
राजा बिजे देखि असुरीगण ।
बन्दन कले राबण चरण ।
सीता अबयब मान घोड़ाइ ।
विजय कले हेठ मुख होइ से ।

छान्द २१—माया का शिर तथा धनुष-दर्शन

राग–राजविजय धनाश्री

मंत्रियों को विदा देकर बीस भुजाओं वाला रावण भीतर चला गया । उसने विद्युज्जिह्व को अपने निकट बुलाकर उसकी बहुत प्रशंसा की । वह बोला कि तुम मेरी आज्ञा का उल्लघन न करना । तुम शीघ्र ही माया से राम का शिर तथा धनुष उत्पन्न करो । १ लंकाधिपति रावण की आज्ञा के अनुसार उसने उसी क्षण माया से वैसा ही कर दिया । यह देखकर रावण सन्तुष्ट होकर बारम्बार उसकी प्रशंसा करने लगा । फिर वह मधुबन में जा पहुँचा । विद्युज्जिह्व को द्वार पर ही रोककर वह अकेले ही सीता के पास गया । २ राजा को आया हुआ देखकर राक्षसियों ने रावण के चरणों की वन्दना की । सीता अपने अंगों को छिपाकर नीचे मुख किए हुए उपस्थित हुई । उसे देखकर रावण ने कहा, हे सीते !

ता देखि कहे रावण जे ।
रागो सीते कालि निशाभागरे तो पतिर बारता शुण गो ।। ३ ।।
राम लक्ष्मण सुग्रीबंकु घेनि ।
आबर सर्ब बानर सइनी ।
सिन्धुरे सेतु करि पार हेले ।
सुबळ गिरि उपरे रहिले से ।
शोइथिले श्रान्त होइ जे ।
ताहा देखि मोते डगर कहिला एकान्त होइण जाइ जे ।। ४ ।।
मने एहा मुहिँ बिचार कलि ।
एहि काळरे मारिबि बोइलि ।
एहाठारु महाबीर जोद्धा अनेक ।
पेषिलि प्रहस्त संगे जेतेक से ।
बेढ़िले सुबळ गिरि गो ।
शोइथिले राम प्रहस्त आणिला ता शिर छेदन करि गो ।। ५ ।।
लक्ष्मण पळाइ गलाक केणे ।
बन्धन होइछन्ति बिभीषणे ।
सुग्रीब ग्रीब भांगि पकाइले ।
हनुमन्तर दर्प चूर्ण कले से ।
जाम्बब पशिले बने गो ।
थोके कपिमाने सिन्धुरे पड़िले थोके कपि मले रणे गो ।। ६ ।।

अपने पति की कल रात वाली वार्ता सुनो । ३ राम और लक्ष्मण सुग्रीव तथा समस्त वानर-सेना को साथ लेकर सागर में पुल बनाकर इस पार आ गए और सुवेल पर्वत पर अवस्थित हो गए । वह थककर सो रहे थे । यह देखकर मुझे एकान्त में ले जाकर दूत ने सब बता दिया । ४ मन में मैंने यह विचार किया कि मैं इन्हें इसी समय मारूँगा । इसके पास नाना प्रकार के पराक्रमी योद्धा हैं । उन सबको मैंने प्रहस्त के साथ भेज दिया । उन्होंने सुवेल पर्वत को घेर लिया । श्रीराम सो रहे थे । प्रहस्त उनका शिर काटकर ले आया । ५ लक्ष्मण न जाने कहाँ भाग गया । विभीषण बांध दिये गए । उसने सुग्रीव की गर्दन तोड़कर फेंक दी और हनुमान का घमण्ड चूर-चूर कर दिया । जामवन्त वन में घुस गए । बहुत से वानर समुद्र में डूब गए और बहुत से संग्राम में मार दिए गए । ६ हे जानकी ! अव तुम प्रसन्न हो जाओ और

एबे जानकी हुअ तु प्रसन्न ।
देखिथाअ तोर स्वामी बदन ।
बिद्युजिह्वा द्वारे थिला जे घेनि ।
अणाइला ताहा दश मूर्द्धनि से ।
थोइला सीता अग्रते जे ।
प्रतीति करिण सरोजलोचनी बिकळ होइले चित्ते जे ।। ७ ।।

छेदन रम्भा प्रायेक पड़िले ।
दण्डे जाए से ज्ञानहिँ छाड़िले ।
पुणि ज्ञान पाइ शिरकु चाहिँ ।
रोदन करन्ति बिकळ होइ से ।
हा हा मोर प्राणेश्वर हे ।
मोह छार पाइँ अजोध्या ठाकुर किपाँ हेल भुंजु एबे शिरी ।। ८ ।।

मनोरथ भले होइला सिद्धि ।
आगहुँ पाञ्चिण थिले ए बुद्धि से ।
कले त मोते अनाथ जे ।
बोलइ बिशि बोलन्ति ठाकुराणी जिबइँ स्वामीर साथ जे ।। ९ ।।

अपने स्वामी का मुख देख लो। विद्युज्जिह्व उसे लेकर द्वार पर खड़ा था। दशानन ने उसे बुलवा लिया। उसने उसे सीता के समक्ष रख दिया। कमलनयनी सीता उस पर विश्वास करके चित्त में व्याकुल हो गई। ७ वह कटे हुए कदली वृक्ष के समान गिर पड़ी और एक दण्ड के लिए वह अचेत हो गई। फिर चेतना लौटने पर शिर को देखकर व्याकुल होकर रुदन करने लगीं। हाय मेरे प्राणेश्वर! मुझ तुच्छ के लिए आपको क्या हो गया। अब अयोध्या का स्वामी (भरत) ऐश्वर्य का उपभोग करे। ८ उसका मनोरथ तो ठीक से पूरा हो गया। उसकी बुद्धि ने पहले ही यह सोच लिया होगा। उसने तो अब मुझे अनाथ कर दिया। विशि कहता है कि राजरानी सीता कहने लगी कि मैं भी अपने स्वामी के साथ जाऊँगी। ९

द्वाविंश छान्द—सीतांक शोक

राग–चिन्ता भैरव (गोपविळाप वृत्ते)

आहा　धनुर्द्धर　बीरवर ।
धनुशर न थिला कि　कर ।
जाहार बाण ब्रह्माण्ड दहि पारे ।
तांकु माइला प्रहस्त छार हे ।। दइव ।। १ ।।
आणु न थिले मोते मो पति ।
जाणन्ति से पड़िब　बिपत्ति ।
मूर्च्छि न पारि मुँ संगते　अइलि ।
तेणु हे कला एमन्त रीति हे ।। दइब ।। २ ।।
चिरजीबी　अटन्ति　श्रीराम ।
मुनि　बचन हेला कि　भ्रम ।
मोते बोलन्ति बिधबा जोग नाहिँ ।
एबे किपाँ हेला एड़े कर्म हे ।। दइब ।। ३ ।।
जेउँ　जुबती पति　आगरे ।
मरे　पुण्यबती बोलि　तारे ।
जुबती आगे पति जेबे मरइ ।
ताकु दूषण हुए संसारे हे ।। दइब ।। ४ ।।
जेबे　लक्ष्मण　गले　पळाइ ।
मोर　शाशुंकु कहिबे जाइँ ।

छान्द २२—सीता का शोक

राग–चिन्ता भैरव (गोप बिलाप की धुन)

हे धनुर्धारी वीरश्रेष्ठ ! क्या आपके हाथ में धनुष और बाण नहीं था ? जिनका बाण ब्रह्माण्ड को दग्ध कर देने में समर्थ है, उसे इस तुच्छ प्रहस्त ने मार डाला । १ हा दैव ! मेरे स्वामी ! मुझे साथ नहीं ला रहे थे । वह जानते थे कि कष्ट आ जाएगा । रह न पाने के कारण मैं साथ चली आई । इसीलिए विधाता ने ऐसा कर दिया । २ मुनि का यह वचन कि श्रीराम चिरजीवी हैं, क्या मिथ्या हो गया ? मुझसे कहते थे कि विधवा-योग नहीं है । हा दैव ! फिर इतना बड़ा दुष्कर्म कैसे हो गया ? ३ जो स्त्री पति के आगे मर जाती है, उसे पुण्यवती कहा जाता है । परन्तु यदि पत्नी के आगे पति मर जाय तो इस संसार में उसे दोष लगता है । ४ अरे विधाता ! जब लक्ष्मण

सीता नेइ दैत्य रामंकु माइले ।
एहा शुणिले जीइँबे नाहिं हे ।। दइब ।। ५ ।।
पुणि धनु तूणीकु अनाइँ ।
चिह्नि बिळपन्ति गुण गाइ ।
एहि काळरे प्रहस्त द्वारे रहि ।
तार छामुकु कहि पठाइ से ।। प्रहस्त ।। ६ ।।
दूत श्रबणे बेगे जणाइ ।
देब प्रहस्त आसिछि धाइँ ।
जणाइ पठिआइछि कपिमाने ।
गड़ पाचेरी पड़िले डेइँ हे ।। भो देब ।। ७ ।।
शुणि सत्वरे तहिं अइला ।
प्रहस्तकु सबु पचारिला ।
राबण आसिबा मात्रे शिर धनु ।
सेहि क्षणि अदृश्य होइला हे ।। सुजने ।। ८ ।।
दशशिर बोले मार कपि ।
दैत्यमानंकु पेषिला कोपि ।
बोले बिशि चउपाशरे जगिले ।
राजा आज्ञा पाइ थाट व्यापि से ।। असुरे ।। ९ ।।

भाग गए तब तो वह हमारी सासुओं से जाकर बताएँगे कि सीता को लेकर दैत्य ने श्रीराम का वध कर दिया। यह सुनकर वह जीवित नहीं रहेंगी। ५ हा दैव ! फिर वह धनुष और तरकश को देख उन्हें पहचानकर श्रीराम का गुणानुवाद गाती हुई विलाप करने लगीं। इसी समय प्रहस्त ने द्वार पर रहकर रावण के समक्ष कह भेजा। ६ शीघ्रता से दूत ने कान में कहा, हे देव ! प्रहस्त दौड़कर आया है। हे देव ! आपसे कहने को मुझे भेजा है कि वानरदल दुर्ग की प्राचीर लाँघकर आ गए हैं। ७ यह सुनकर रावण शीघ्र ही वहाँ आ पहुँचा और उसने प्रहस्त से सब कुछ पूछ लिया। हे सज्जन पुरुषो ! रावण के आने से ही शिर और धनुष उसी क्षण अदृश्य हो गया। ८ दशानन ने कहा कि वानरों को मार डालो। उसने क्रोधित होकर राक्षसों को भेजा। विशि कहता है कि राजा का आदेश प्राप्त कर-करके राक्षस लोग सेना बनाकर चारों ओर रक्षा करने लगे। ९

त्रयोविंश छान्द—सरमार प्रबोध

राग–काफि

सरमा नामे बिभीषण घरणी ।
प्राणु अधिक अति बिश्वासी जे जानकींक मितणी ॥ १ ॥
सीतांक मोह देखि कहन्ति वाणी ।
मिछ कथाकु मोह पाउछ गो मोर प्राण मितणी ॥ २ ॥
प्रहस्त कि कि रूपे बारता देला ।
ताहा शुणि रावण बिस्मय जे होइ उठिण गला ॥ ३ ॥
मुहिँ गलि से कथा जाणिबा पाइँ ।
देखिले जुद्धकु से गला गो अति सत्वर होइ ॥ ४ ॥
तुम्भ पति अछन्ति निश्चिन्त होइ ।
तुम्भे बोइले प्राण मितणी गो देखि आसिबि जाइ ॥ ५ ॥
सिन्धु बन्धाइ सैन्य होइले पारि ।
लंका बेढ़िण ऋक्ष मर्कट गो चउपाशरे पूरि ॥ ६ ॥
राबण बळे तांकु होए कि मारि ।
बिअर्थे चिन्ता तुम्भे न कर गो सखि ऋषिकुमारी ॥ ७ ॥

छान्द २३—सरमा का सांत्वना देना

राग–काफी

विभीषण की स्त्री, जिसका नाम सरमा था, सीता की प्राणों से भी अधिक विश्वासपात्री सहेली थी । १ उसने सीता को मोह में पड़ा देख कर कहा, हे मेरी प्राणप्रिय संगिनी ! मिथ्या बातों में इतना दुःखी क्यों हो रही हो ? २ प्रहस्त ने न जाने कौन-कौन से ढंग से समाचार दिया, जिसे सुनकर रावण आश्चर्यचकित होकर चला गया । ३ मैं भी उस बात को समझने के लिए गई थी । हमने देखा कि वह अत्यन्त वेग से युद्ध के लिए चला गया । ४ तुम्हारे स्वामी निश्चिन्त हैं । हे प्राणसंगिनी ! यदि तुम कहो तो मै उन्हें जाकर देख आऊँ । ५ समुद्र को बाँधकर सेना पार आ गई है । रीछ और वानरों ने चारों ओर भरकर लंका को घेर लिया है । ६ रावण की सेना क्या उन्हें मार सकती है ? हे सखी ! हे योगिराजकुमारी ! तुम व्यर्थ में चिन्ता नहीं करो । ७ वह तो छल करके माया का शिर तथा धनुष

मायारे शर धनु थिला से आणि ।
जाणि न पारिल ता सगात गो सत प्रायेक मणि ॥ ८ ॥
शुणि जानकी बहु आनन्द हेले ।
दगध बने जेन्हे सलिळ घन गो बहु बृष्टि बा कले ॥ ९ ॥
बोलन्ति सखि आगो जीबन देल ।
कि देबि तुम्भे प्राणनाथर गो सर्ब शुभ कहिल ॥ १० ॥
एबे तुम्भे राबण पुरकु जाअ ।
कि कि कहिब ताहा जाणिण गो मोर पाशरे कह ॥ ११ ॥
ताहा शुणिण गला सरमा सखी ।
राबण सर्ब पुरे पशिण से सर्ब बिचार देखि ॥ १२ ॥
माता मातुळ बृद्ध बृद्ध असुर ।
राबणकु मध्यरे बसाइ से करे चाटु उत्तर ॥ १३ ॥
अरबिन्दहिँ बहुरूपे कहिला ।
बोलइ बिशि ताहा जाणिण से सीउकार कला ॥ १४ ॥

लाया था। हे सखी ! तुम उसे समझ न सकी और उसे सच मान गयीं । ८ यह जानकर जानकी अत्यन्त प्रसन्न हुई। ऐसा प्रतीत होता था जैसे जलते हुए वन में बादलों ने बहुत जल-वृष्टि कर दी हो। ९ सीता ने कहा, हे सखी ! तुमने हमें जीवनदान दिया है। तुमने मेरे प्राणनाथ के समस्त शुभ-समाचार सुनाए। मैं तुम्हें एतदर्थ क्या दूं ? १० अब तुम रावण के महल में जाओ और वह क्या कहता है, वह समझकर मुझसे बताओ। ११ ऐसा सुनकर सखी सरमा चली गई। रावण के सभी महलों में घुसकर उसने उसके सभी विचारों को समझा। १२ माता, मामा तथा वयोवृद्ध राक्षस रावण को बीच में बैठाकर चाटुकारीपूर्ण बातें कर रहे थे। १३ अरविन्द ने नाना प्रकार से उससे कहा। विशि कहता है कि उसे समझकर रावण ने उसे स्वीकार किया। १४

चतुर्विंश छान्द

राग–पंचम बराड़ि

सरमा जानकी पाश, कहइ करि बिश्वास,
शुण आगो जीबन मितणी ।
एठारु जाइ राबण, भाळे घेनि मंत्रिगण,
बिचार मान अइलि शुणि ।
गो, प्राणसखि ! शुण राबण गोप्य बिचार ।
जननी ता नउकेषा, कहिला जेतेक भाषा,
तुनि होइ थिला दशशिर ॥ १ ॥
बोइला रामकु नर, प्राय मणुरे असुर,
नारायण राम अबतार ।
तांक आज्ञारे बानर, बन्धन कले सागर,
निश्चे नाशिबे सर्ब असुर ॥ २ ॥
सोदर बोल न कल, बाहार करिण देल,
से एबेटि होइले तांकर हे ।
दशरथर कुमर, सीता घेनि जाउ घर,
किम्पा आम्भंकु करिब पर ॥ ३ ॥
आबन्ध नामे राक्षस, बृद्ध राबण बिश्वास,
से बोइला कर माता बोल ।

छान्द—२४

राग–पंचम बराड़ी

सरमा ने जानकी के समीप जाकर कहा, हे जीवनसंगिनी ! तुम विश्वासपूर्वक सुनो । यहाँ से जाकर रावण मंत्रियों को साथ लेकर विचार-विमर्श करने लगा । वह सारे विचार मैं सुनकर आई हूँ । हे प्राणसंगिनी ! रावण के गुप्त विचार सुनो । उसकी माता नउकेषा ने जो कुछ भी कहा उसे सुनकर रावण आश्चर्यचकित रह गया । १ वह बोली, अरे दैत्य ! तू राम को नर के समान मान रहा है । श्रीराम नारायण के अवतार हैं । उनकी आज्ञा से वानरों ने सागर-बन्धन कर लिया । निश्चय ही वह सारे राक्षसों का नाश कर डालेंगे । २ तूने अपने भाई का कहना न मानकर उसे निकाल दिया । वह अब उनका बन गया । दशरथनन्दन सीता को लेकर घर चले जायँ । हमें विनष्ट क्यों करा रहा है ? ३ आबन्ध नाम का एक वृद्ध राक्षस था । वह

राम संगे प्रीति होइ, सीता देबा बाहुड़ाइ,
तेबे आम्भर होइब भल ॥ ४ ॥
शुणि नासिका फुलाइ, बिशनयन बुलाइ,
जननीकि एमन्त कहिला।
लंका अबा जय करु, राम पछे मोते मारु,
सीता निश्चे न देबि बोइला से ॥ ५ ॥
रंक जेबे रत्न पाइ, देब बोलि बोले नाहिं,
सेहि रूपे तुम्भंकु से पाइ।
करिब बहुत रण, मरिबे असुरगण,
सखि जे तुम्भंकु देब नाहिं ॥ ६ ॥
सक्रोधे रावण गला, जोद्धा मानंकु राइला;
चारि द्वारकु पेषिण देला।
पश्चिमकु इन्द्रजित, पूर्बदिगकु प्रहस्त,
महोदर दक्षिणकु गला ॥ ७ ॥
मध्ये रखि बिरूपाक्ष, सैन्य तार लक्ष लक्ष,
उत्तर द्वारे आपे रहिला।
उत्तर द्वार जगती, बिजे कला लंकपति,
बोले बिशि गड़ बद्ध हेला जे ॥ ८ ॥

रावण का विश्वासपात्र था। उसने कहा कि तुम अपनी माँ का कहना मानकर श्रीराम के साथ मित्रता करके सीता को लौटा दो। तभी हम लोगों का भला होगा। ४ ऐसा सुनकर नथुने फूलाकर आँखें तरेरते हुए रावण ने माँ से कहा कि राम भले ही लंका को जीत ले और बाद में मुझे मार डाले परन्तु मैं सीता को नहीं दूँगा। ५ दरिद्री को धन मिल जाय और फिर उससे वापस देने को कहा जाय तो वह नहीं कर देता है। इसी प्रकार वह तुम्हें पाकर बहुत युद्ध करेगा। भले ही राक्षसगण मारे जायँ पर वह तुम्हें वापस नहीं देगा। ६ कुपित होकर रावण चला गया। उसने योद्धाओं को बुलाकर चारों द्वारों पर भेज दिया। पश्चिम द्वार पर इन्द्रजित्, पूर्व की ओर प्रहस्त और महोदर दक्षिण की ओर गया। ७ मध्य में विरूपाक्ष को रखकर अपनी लाखों की सेना लेकर वह स्वयं उत्तर द्वार पर जम गया। विशि कहता है कि लंकाधिपति उत्तर द्वार की जगती पर जाकर गढ़ को सुरक्षित कर लिया। ८

पञ्चविंश छान्द—रावणर सैन्य सज

राग—आषाढ़ शुक्ळ

सुग्रीब लंकेश जाम्बब हनु ।
अंगद नळ नीळ चन्द्रसूनु ।
गबय गबाक्ष दुर्बिन्द बीर ।
सुषेण पनश सरभ बीर ।
सेमानंकु घेनि ।
बिचारन्ति राम लक्ष्मण बेनि ।। १ ।।
के बोले लंकागड़र भितर ।
अछन्ति तहिँ अनेक असुर ।
के बोले केउं बाटे आम्भे जिबा ।
के बोले पाचेरी डेइँ पशिबा ।
कुहा कुहि शुणि ।
बिभीषण कहे मधुर बाणी ।। २ ।।
कर जोड़ि जणाए बिभीषण ।
भो देब मोहर बारता शुण ।
मोहर देब मंत्री चारि जण ।
लंकारु अइले से एहि क्षण ।
तांक नाम शुण ।
बिबिध प्रकारे जाणन्ति रण ।। ३ ।।

छान्द २५—रावण की सैन्य-सज्जा

राग—आषाढ़ शुक्ल

सुग्रीव, लंकेश विभीषण, जामवन्त, हनुमान, अंगद, नल, नील, चन्द्रमा के पुत्र दधिमुख, गवय, गवाक्ष, पराक्रमी दुर्विन्द, सुषेण, पनश, सरभ आदि वीरों के साथ श्रीराम और लक्ष्मण दोनों विचार-विमर्श करने लगे। १ कोई कहता था कि लंकादुर्ग के भीतर बहुत से राक्षस हैं। कोई कहता कि हम किस मार्ग से जाएँ। कोई कहता था कि चहारदीवार फांदकर घसें। इस प्रकार आपसी बातों को सुनकर विभीषण ने मधुर वचन कहे। २ विभीषण ने हाथ जोड़कर निवेदन किया, हे देव ! मेरी बात सुनें। मेरे चार मंत्री इसी समय लंका से आए हैं। उनके नाम सुनिए। वह नाना प्रकार के युद्ध-कौशल से

अनळ प्रमुख शर सम्पाति ।
पक्षी होइण लंकारे थाआन्ति ।
से माने अछन्ति बारता आणि ।
शुणिबा हेउ देब चूड़ामणि ।
रावण बळ ।
सबु असुरे होइछन्ति ठुळ ।। ४ ।।
सहस्रे गजर सहस्रे नाम ।
जुद्धकु शक्र गजर समान ।
गज गोटिके दश लक्ष गज ।
मेबक्ष हेलाटि कि देब हेज ।
बेनि सस्र बाजी ।
उच्चैःश्रबा अश्व प्रायेक बुझि ।। ५ ।।
बाजीगोटिके दश लक्ष बाजी ।
बेनि मेबक्ष होइला ता हेजि ।
रथ तार देब दश सहस्र ।
मण्डिण छन्ति दिव्य रत्न बस्त्र ।
से रथ गोटिके ।
दश लक्ष रथ गोटि गोटिके ।। ६ ।।
बृन्दे रथ देब होइला जाण ।
कहइ पदातिङ्क परिमाण ।
कोटिए पदाति पदाति मुख्य ।
कोटिए बाहारे छन्ति असंख्य ।

परिचित हैं । ३ अनल, प्रमुख, शर और सम्पाती पक्षी के रूप में लंका में थे । वह लोग वहाँ के समाचार लाये हैं । हे देवचूड़ामणि ! आप सुनें। रावण का सम्पूर्ण राक्षसदल एकत्रित हो गया है । ४ हजार नामोंवाले हज़ार हाथी हैं जो युद्ध में इन्द्र के हाथी ऐरावत के समान हैं । एक हाथी के पीछे दस लाख मस्त हाथी हैं । आप तनिक विचार करें । दो हजार घोड़ों को उच्चैःश्रवा अश्व के ही समान समझें । ५ एक घोड़ा के साथ दस लाख घोड़े, दोनो के मिलाप की आप चिन्ता करें । हे देव ! उसके दश हजार रथ दिव्यरत्न तथा वस्त्रों से सुसज्जित हैं । उसका एक रथ जैसा है वैसे ही एक-एक के पास दस लाख रथ हैं । ६ इस प्रकार, हे देव ! रथ एक वृन्द हो गए । अब पदाति सैनिकों का परिमाण कह रहा हूँ ।

पदाति गोटिके ।
दश लक्ष खटिबारे ए शंखे ।। ७ ।।
एमन्त बळ देखि दशानन ।
पंच भाग करि बाण्टिला सैन्य ।
पश्चिम द्वारे गळा इन्द्रजित ।
पूर्ब द्वारे जगाइला प्रहस्त ।
बीर महोदर ।
महापारुश्व घेनि संगतर ।। ८ ।।
दक्षिण द्वार आबोरि रहिला ।
राबण उत्तर द्वारकु गला ।
बिजय कला जगती उपरे ।
चतुरंग बळ घेनि संगरे ।
से गड़ जगिले ।
गोटिए केहि बाहार नोहिले ।। ९ ।।
बिरूपाक्षकु मध्यरे रखिले ।
आयुधमान बाण्टि करि देले ।
बिबिध बाद्यनादे पुरे लंका ।
असुरे होइछन्ति रण रंका ।
कहिले मो चार ।
एथकु देब कर सुबिचार ।। १० ।।

मुख्य पैदल योद्धा एक करोड़ हैं। इसके और भी असंख्य सिपाही हैं। एक पदाति के साथ कार्य करनेवाले दस लाख हैं। इस प्रकार यह एक शख हुए। ७ इस प्रकार की वाहिनी देखकर दशानन ने सेना को पाँच भागों में बांट दिया है। पश्चिम द्वार पर इन्द्रजित् चला गया है। पूर्व द्वार प्रहस्त द्वारा रक्षित है। पराक्रमी महोदर महापारुश्व के साथ उत्तर द्वार की रक्षा में जमा है। रावण उत्तर द्वार की ओर गया है। वह जगती पर पहुँचकर चतुरंगिनी सेना के साथ दुर्ग की रक्षा कर रहा है। कोई एक भी बाहर नहीं आया। ८-९ विरूपाक्ष को उसने मध्य में रखा है। अस्त्र-अस्त्र भी सबको बाँटकर दिये है। लंका विविध प्रकार के वाद्यनाद से भर गई है। राक्षसगण युद्ध के इच्छक हो गए हैं। इस प्रकार का समाचार हमारे दूतों ने बताया है। हे देव! आप इस पर अच्छी तरह विचार करें। १० यह सभी कहेंगे कि यह रावण

बोलिब अबा ए रावण भाइ ।
डराइ मोते कहुअछि फाइ ।
तुम्भ क्रोध जात होइबा पाइँ ।
एणु करि मुँ छामुरे जणाइँ ।
से असुर केते ।
जिणि पार लंका प्रायेक शते ॥ ११ ॥
चारि मंत्रींकि दर्शन कराइ ।
तांक मुखुँ सबु देला शुणाइ ।
शुणि श्रीराम मउन होइले ।
दर हासे धनुशर चाहिँले ।
दीन बिशि भणि ।
गड़बद्ध कहे जोड़िण पाणि ॥ १२ ॥

षड्विंश छान्द—रामचन्द्रंक सैन्य सज

राग–बसन्त भैरव

पुण जणाइले कर जोड़ि बिभीषण ।
भो देब लंकागड़र दीर्घप्रति शुण ।
सिन्धु मध्ये द्वीप देब तिरिश जोजन ।
सेथि मध्ये त्रिकूट अचळ बितपन ।

का भाई हमें भयभीत करने के लिए मिथ्या बढ़ा-चढ़ाकर कह रहा है, जिससे आपका क्रोध बढ़ जाय । इसी कारण से मैंने आपके समक्ष यह निवेदन किया है । वह राक्षस कितने हैं । आप तो लंका जैसी सौ को जीत सकते हैं । ११ उसने चारों मंत्रियों को दर्शन कराकर उनके मुख से सब कुछ सुनवा दिया । यह सुनकर श्रीराम चुप हो गये । उन्होंने मुस्कराते हुए धनुष-बाण की ओर दृष्टि डाली । दीन बिशि हाथ जोड़कर लंका दुर्ग की प्रतिरक्षा का वर्णन कर रहा है । १२

छान्द २६—श्रीराम की सैन्य-सज्जा

राग–बसन्त भैरव

फिर विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! लंका दुर्ग के विस्तार की बात सुनिए । सागर के मध्य में तीस योजन का द्वीप है । उसके मध्य भाग

त्रिकूट पर्बत त्रयशृङ्ग महादीर्घ ।
मध्य शृङ्गे बिहि करिअछि लंक दुर्ग ।। १ ।।
से गड़र दीर्घ देब तिरिश जोजन ।
दश जोजन ओसार दिव्य रम्यस्थान ।
चारि पाखे बेढ़िअछि कनक पाचेरी ।
तथिपरे खाइ जळ जळ अछि पूरि ।
चारि पाशे चउद्वारे पाषाण शंकुअ ।
तथि चारि पाशे बन दिशे अतिभय ।। २ ।।
देब दानबरे देब अटइ अजेय ।
नाना रूपे जत्न मान नाना रूपे व्यूह ।
छिटिकिणीमाने जे पाचेरी बेढ़ि शोभा ।
जेउँ दुर्गकु देखिले सुर देब लोभा ।
एथकु भो देब दिव्य चित्तरे बिचारि ।
चारि द्वारे बेढ़िथान्तु आम्भ बन गिरि ।। ३ ।।
शुणिण से आज्ञा देले आम्भ कपिथाट ।
चारि द्वारे जगन्तु न पान्तु सेहि बाट ।
पूर्ब द्वारे जान्तु आम्भ सेनापति नीळ ।
दक्षिण द्वार जगिबे बाळीर दुलाळ ।

में त्रिकूट पर्वत विद्यमान है । त्रिकूट पर्वत के तीन अत्यन्त विशाल शिखर हैं । मध्यवाले शिखर पर लंका दुर्ग निर्मित किया गया है । १ उस दुर्ग के दीर्घ तीस योजन में दस योजन का ओसार बड़ा दिव्य तथा मनोरम स्थान है । उसके चारों ओर सोने की चहारदीवारी है । उसके बाद खाई है, जो जल से भरी पड़ी है । चारों ओर पाषाण के कपाट वाले चार द्वार हैं । उसके चारों ओर अत्यन्त भयावह दीखनेवाला वन है । २ हे देव ! यह देवता और दानवों से भी अजेय है । नाना प्रकार के व्यूह बना कर विविध यत्नों से रक्षित है । लगता था मानो शोभा को घेरकर सिटकिनी लगा दी गई हो । जिसके सौन्दर्य को देखकर देवता भी लुब्ध हो जाते है । हे देव ! इस पर शुद्धचित्त से विचार करके अपने वन, पर्वत के चारों द्वारो को घेरकर रखा जाय । ३ यह सुनकर श्रीराम ने आज्ञा दी कि हमारी वानरी सेना चारों द्वारों की रक्षा करें जिससे उनको आने का मार्ग न मिले । हमारे सेनापति नील पूर्व द्वार पर जायें । दक्षिण द्वार की रक्षा वालि-पुत्र अंगद करेंगे । हनुमान ! तुम पश्चिम द्वार पर

हनुमन्त पश्चिम द्वारकु तुम्भे जिब ।
लंकपति कपिराज मध्य जगिथिब ।। ४ ।।
आम्भे जिबु लक्ष्मणंकु संगतरे घेनि ।
उत्तर द्वार जगिण थिबु भाइ बेनि ।
आउ सेनापतिमाने बाण्टि होइ जिब ।
चारि द्वारे मध्य कपिबळ जगिथिब ।
एमन्त प्रकारे तुम्भे लंकागड़ बेढ़ ।
राबणकु मारि निश्चे जिणिबाटि गड़ ।। ५ ।।
राम आज्ञा पाइण सकळ कपिबीरे ।
भुमि छुइँ बेनि कर लगाइले शिरे ।
लंका देखिबाकु बहु आनन्द होइले ।
राम घेनि सुबळगिरि कि उठि गले ।
देखिले दिशइ दिव्य हेममय पुर ।
जगती अट्टाळी मेढ़ मण्डप अपार ।। ६ ।।
चन्द्र सूर्ज्य जामिनी नक्षत्र अग्नि घेनि ।
सभा करि अछन्ति कि महीर मूर्द्धनि ।
चिराळ छाररे न दिशइ दिबाकर ।
शोभा दिशुअछि कि बा स्वर्गर सोदर ।

जाओगे । लंकेश विभीषण तथा वानरराज सुग्रीव मध्य देश को रक्षा करेंगे । ४ हम लक्ष्मण को साथ लेकर जायेंगे और दोनों भाई उत्तर द्वार की रक्षा करेंगे । अन्य सेनापति विभक्त होकर जायेंगे और चारों द्वारों के मध्य वानरवाहिनी सजग रहेगी । इस प्रकार आप लोग लंका दुर्ग को घेर लो । रावण को मारकर हम लोग निश्चय लंका दुर्ग पर विजय प्राप्त करेंगे । ५ श्रीराम की आज्ञा पाकर सभी पराक्रमी वानरों ने पृथ्वी को दोनों हाथों से छूकर शिर से लगा लिये । लंका को देखने के लिए सभी बहुत प्रसन्न हुए । और श्रीराम को साथ लेकर सुबेल पर्वत पर चढ़ गये । उन्होंने देखा कि दिव्य स्वर्णमयी लंका दिखाई दे रही थी । उसमें असंख्य जगती, अट्टालिकायें, महल तथा मण्डप थे । ६ लगता था मानो पृथ्वी के शिर पर चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, रात्रि, अग्नि को साथ लेकर सभा कर रहे हों । चकमक के कारण सूर्य नहीं दीख रहा था । लंका दुर्ग स्वर्ग-सहोदर की भांति शोभावन्त दिखाई दे रहा था । वानरराज सुग्रीव ने पूछा कि

पचारन्ति कपिराज काहा काहा पुर ।
बोले बिशि पुर चिन्हाउछि लंकेश्वर ।। ७ ।।

सप्तविंश छान्द—सुग्रीव ओ रावणर प्रथम जुद्ध

राग–भटिआरी; (खेमटा)

कपिकुळ साइँ । गिरि मूर्द्धनिरे थाइ ।
मनरे बहुत कोप जात कले लंकाकु अनाइँ ।। १ ।।
सबुहिं कांचन । दीर्घ तिरिश जोजन ।
दश जोजन प्रति तार अटइ सेतुकु समान ।। २ ।।
क्षेपाए माइले । सिंह द्वारे उभा हेले ।
मउन होइण मुहूर्त्ते रावण मुखकु चाहिँले ।। ३ ।।
पुणि क्षेपा मारि । क्रोध सम्भाळि न पारि ।
रावण आसन उपरे बसिले पेलि देइ करि ।। ४ ।।
आरे रे असुर । एड़े गर्ब तोर छार ।
श्रीराम घरणी चोराइ आणि तु रखिअछु पुर ।। ५ ।।
मोड़न्ति तो ग्रीब । आज जाणन्तु सुग्रीब ।
केबळ श्रीराम ठाकुर प्रतिज्ञा बिअर्थ होइब ।। ६ ।।

कौन किसका निवास है ? विशि कहता है कि लंकेश विभीषण उन्हें महलों से परिचित करा रहे थे । ७

छान्द २७—सुग्रीव और रावण का प्रथम युद्ध

राग–भटिहारी (खेमटा)

वानरकुल के स्वामी सुग्रीव के मन में पर्वतशिखर पर से लंका को देखकर अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हो गया । १ सुदीर्घ तीस योजन तक सब कुछ स्वर्णमय था । दस योजन ऊँची प्राचीर सेतु के समान थी । २ उन्होंने छलांग लगाई और सिंहद्वार पर जा खड़े हुए । मौन होकर वह एक क्षण तक रावण का मुख ताकते रहे । ३ फिर क्रोध को सहन न कर सकने के कारण पुनः छलांग लगाकर रावण को ढकेलकर उसके आसन पर जा बैठे । ४ अरे नीच राक्षस ! तुझे इतना घमण्ड हो गया कि श्रीराम की पत्नी को चुरा लाया और उन्हें अपने महल में रख लिया । ५ तू यह समझ ले कि सुग्रीव आज तेरा शिर मोड़ देता परन्तु इससे तो भगवान श्रीराम की प्रतिज्ञा ही व्यर्थ हो जायेगी । ६ इतना कहकर पराक्रमी

एते बोलि बीर । धरि उछुड़िला गिर ।
दशशिररु दश मुकुट छिण्डाइ बिञ्चिला भूमिर ॥ ७ ॥
राबणहिँ धरि । माल बन्धे जुद्ध करि ।
गड़न्ति पड़न्ति केहि काहा कुहिँ संग्रामे न हारि ॥ ८ ॥
से बेनि शरीर । श्रमे स्वेद जरजर ।
नखक्षत मूनघाते रुधिर होइला बाहार ॥ ९ ॥
देखन्ति असुर बेनि जनंक समर ।
धरिबे बोलिण जे जाहा मतरे कलेक बिचार ॥ १० ॥
छाड़ि तांकु देले । पुणि क्षेपाए माइले ।
सुबळ गिरिरे श्रीराम पाशरे प्रबेश होइले ॥ ११ ॥
चाहिँ तांकु राम । मित्र कल त अकर्म ।
एका होइ शत्रु पुरकु जिबार नुहइं ना धर्म ॥ १२ ॥
किष्किन्ध्या ठाकुर । सर्ब हरिक ईश्वर ।
सैन्य थाउँ थाउँ आपणार जुद्ध नुहइ बिचार ॥ १३ ॥
श्रीराम भारती । शुणि कपिकुळपति ।
बोले बिशि लज्जा पाइण बदन कलेक धरित्री ॥ १४ ॥

सुग्रीव ने पर्वत लेकर प्रहार किया जिससे दशशिर के दस मुकुट टूटकर पृथ्वी पर छितरा गये । ७ रावण ने उसे पकड़ लिया और मल्लयुद्ध करने लगा । वह दोनों गिरते-पड़ते थे, परन्तु युद्ध में कोई किसी से हार नहीं रहा था । ८ उन दोनों के शरीर पसीने से लथपथ हो गये । नाखून की नोकों के आघात से रक्त निकलने लगा । ९ राक्षस दोनों व्यक्तियों का युद्ध देख रहे थे । सभी अपने-अपने विचार से पकड़ने की बात सोचने लगे । १० तभी सुग्रीव ने उसे छोड़कर छलांग लगाई और सुबेल पर्वत पर श्रीराम के निकट जा पहुँचे । ११ उन्हें देखकर श्रीराम ने कहा, हे मित्र ! यह तुमने न करनेवाला कार्य किया है । एकाकी होकर शत्रु के सदन में जाना धर्म नहीं है । १२ हे किष्किन्धा के स्वामी ! तथा सभी वानरों के अधिपति ! सेना के रहते आपका युद्ध करना विवेकपूर्ण नहीं है । १३ विशि कहता है कि श्रीराम के वचनों को सुनकर वानरकुल के स्वामी सुग्रीव ने लज्जित होकर मुख पृथ्वी की ओर नीचा कर लिया । १४

अष्टाविंश छान्द—अंगद पड़ि

राग—काळी

सुबळगिरि शिखरे स्थळी बुलि देखिले राम।
ता दीर्घ प्रति विंश जोजन अटइ मनोरम॥ १ ॥
दण्डक मात्र लंकांकु चाहिँ सुतीक्षण बुद्धि कले।
गिरि शिखरु ओह्लाइ लंका जिबाकु बिचारिले॥ २ ॥
आहे लक्ष्मण करिबा रण लंका भितरे पशि।
आज मर्कट असुरबळ होइबे मिशामिशि॥ ३ ॥
धर्मे अधर्मे जय अजय प्रान्तरे होइ जाणि।
जूथपतिक मुखकु चाहिँ शुणि कहन्ति बाणी॥ ४ ॥
आहे लक्ष्मण आहे सुग्रीब आहे लंकेश हनु।
आहे सुषेण आहे जाम्बब आहे बाळीर सूनु॥ ५ ॥
आहे गबय आहे गबाक्ष आहे हे नळ नीळ।
आहे पनस आहे दुर्बिन्द आहे हे शतबळ॥ ६ ॥
राबण संगे रण करिबा धर्मकु जिणि थिबा।
जानकी देइ शरण पशु दूतेक बरगिबा॥ ७ ॥

छान्द २८—अंगद-पैज (होड़)

राग—काली

सुबेल पर्वत की स्थली को श्रीराम ने घूम-घूमकर देखा। उसकी चौड़ाई मन को हरनेवाली बीस योजन की थी। १ केवल एक दण्ड तक लंका को ताक कर सुन्दर और तीक्ष्ण बुद्धि से पर्वतशिखर से उतरकर श्रीराम ने लंका जाने का विचार किया। २ हे लक्ष्मण! लंका के भीतर घुसकर युद्ध करेंगे। आज वानर और असुरवाहिनी का मिलाप होगा। ३ मैं समझता हूँ कि इस अधर्म के अजेय प्रान्त पर धर्म की विजय होगी। यूथपतियों के मुख को देख-सुनकर वह कहने लगे। ४ हे लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, हनुमान, सुषेण, जामवन्त, बालिनन्दन अंगद, गवय, गवाक्ष, नल, नील, पनस, दुर्विन्द तथा शतबल रावण के साथ युद्ध करेंगे और और धर्म की जय होगी। पर अभी 'जानकी को समर्पित करके शरण में आने के लिए' उसके पास दूत भेजेंगे। ५-७ सभी ने

श्रीराम बाणी समस्त शुणि बोलन्ति देब हेउ ।
श्रीमुख आज्ञा घेनिण एबे अंगद बीर जाउ ॥ ८ ॥
शुणि हरषे राबण पाशे अंगद आज्ञा देले ।
तूणीरु खर निधन शर अंगद करे देले ॥ ९ ॥
मोर ए शर बाळिकुमर देखाअ राबणकु ।
बोलिब सीता न देले एहि शरे फोड़िबि बुकु ॥ १० ॥
बिरचि देब शिब बासब सकळ दिगपाळ ।
रखिण न पारिबे मारिबि निश्चे असुरकुळ ॥ ११ ॥
दशदिगकु दशमूर्द्धनी करिबि तार बळि ।
भुमिरे पड़िथिब ता पिण्ड होइ रुधिर धूळि ॥ १२ ॥
एबे सीतांकु देइण मोते शरण आसि पशु ।
नोहिले सैन्य घेनिण एबे समर करि आसु ॥ १३ ॥
जाणिबा सेहि काळरे तार आम्भर बीरपण ।
आकाशे थाइ देखुण थिबे सर्व अमरगण ॥ १४ ॥
अंगद बीर प्रणाम करि आकाशे क्षेपि गले ।
जगती स्थान तार आस्थान सम्मुखरे बसिले ॥ १५ ॥

श्रीराम की बात सुनकर कहा, "हे देव ! ठीक है ।" आपके श्रीमुख की आज्ञा (सन्देश) लेकर इस समय पराक्रमी अंगद जायें । ८ उन्होंने यह सुनकर प्रसन्नतापूर्वक अंगद को रावण के पास जाने की आज्ञा दी और तरकश से खर को हनन करनेवाला बाण अंगद के हाथ में दे दिया । ९ हे बालिनन्दन ! मेरा यह बाण रावण को दिखा देना और कहना कि सीता को न देने पर हम इसी बाण से वक्ष विदीर्ण करेंगे । १० ब्रह्मा, महादेव, इन्द्र तथा समस्त दिग्पाल भी रक्षा न कर सकेंगे । मैं निश्चय राक्षस-कुल का संहार करूँगा । ११ दसों दिशाओं को दशशिरों की बलि प्रदान करूँगा । रक्त और धूल से आवेष्टित शरीर पृथ्वी पर पड़ा रहेगा । १२ अब सीता को देकर, आकर हमारी शरण स्वीकार करो, नहीं तो सेना लेकर अब युद्ध करने के लिए आ जाओ । १३ उसी समय उसका और हमारा पौरुष समझ में आयेगा । जब आकाश में रह कर समस्त देवगण देखेंगे । १४ पराक्रमी अंगद प्रणाम करके आकाश में छलांग लगाकर गये और जगती में उसके सिंहासन के समक्ष बैठ गये । १५

बोलइ आरे असुराधम रामंक आज्ञा शुण ।
सीता समर्पि शरण पश नोहिले कर रण ॥ १६ ॥
आरे रावण राम लक्ष्मण धर्मंकु न छाड़िले ।
एबे हे आरे जुबती चोर जुबती मगाइले ॥ १७ ॥
तुह बिनाश जेबे तोहर जीबने अछि आश ।
गळे कुठार बान्धिण सीता समर्प राम पाश ॥ १८ ॥
दया जळधि सकळ दोष करिबे तोर क्षमा ।
अबिळम्बरे शरण पश देइ जनक जेमा ॥ १९ ॥
नोहिले नाश जिबु अबश्य रखिबे नाहिँ केहि ।
बोलइ बिशि श्रीराम काण्ड चण्डीकि बळि तुहि ॥ २० ॥

एकोनत्रिंश छान्द

राग-आहारी

अंगद बाणी, दुष्ट राबण शुणि ।
शिर कम्पाइ सक्रोधे कहइ बाणी ॥
आरे मर्कट, किपाँ होइलु नष्ट ।
पिता शत्रु सेबि जीइँछु रे पापिष्ठ ॥ १ ॥

उन्होंने कहा, अरे राक्षसाधम ! श्रीराम की आज्ञा को सुन । सीता को समर्पित करके शरण ग्रहण कर, अन्यथा युद्ध कर । १६ अरे रावण ! श्रीराम और लक्ष्मण ने धर्म का त्याग नहीं किया है । अरे स्त्री-चोर ! अभी उन्होंने पत्नी को माँगा है । १७ यदि तुझे जीने की इच्छा है तो अपना नाश मत कर । गले में कुठार बाँधकर सीता को श्रीराम के समीप अर्पित कर दे । १८ कृपासागर तेरे समस्त अपराधों को क्षमा कर देंगे । तुम जनक-तनया को देकर अविलम्ब शरण ग्रहण करो । १९ नहीं तो निश्चय रूप से नाश को प्राप्त होगे । कोई भी तुझे बचा नहीं सकेगा । विशि कहता है कि तू श्रीराम के बाण रूपी चण्डीदेवी की बलि बनेगा । २०

छान्द—२६

राग-अहारी

दुष्ट रावण ने अंगद के वचनों को सुनकर शिर हिलाते हुए क्रोध से कहा, अरे वानर ! तू किसलिए नष्ट हो गया ? अरे पापी ! तू पिता के

मराइ पति जेन्हे बीट जुबती ।
जार पुरुष आबोरि बोलाए सती ॥
तेन्हे तो मति, नोहु पुरुष जाति ।
नर प्रतिज्ञा बानर कहु मो कति ॥ २ ॥
बाळिकुमर, दन्ते चापि अधर ।
बोलन्ति मो प्रभु निन्दा करु पामर ॥
त्रैलोक्येश्वर, राम नृपति बर ।
बाळि परा तुहि होइबु रे पामर ॥ ३ ॥
नाहिँ तो मन, बाळि बरे जे सन ।
से तांक किंचित शरे हेले निधन ॥
दिअन्ति दण्ड, तोर मोड़न्ति मुण्ड ।
मारिबाकु राम छुइँछन्ति कोदण्ड ॥ ४ ॥
आरे असुर, आरे ए लंकापुर ।
एथि होइलाणि बिभीषण ठाकुर ॥
तु बोलु मोर, आयुष नाहिँ तोर ।
दगधपट प्राय धरिछु शरीर ॥ ५ ॥
क्रोधे असुर, कम्पाइ दशशिर ।
असुरंकु आज्ञा देला एहाकु धर ॥

शत्रु की सेवा करते हुए जी रहा है । १ जैसे दुराचारिणी स्त्री अपने पति को मरवाकर जार पुरुष में अपने को आसक्त करके सती कहलाए, वैसी ही तेरी बुद्धि है । तुझमें पुरुषत्व नहीं है । अरे वानर ! अब तू मानव की प्रतिज्ञा मुझे बता । २ बालिनन्दन ने दाँत से अधर को चापते हुए कहा, अरे नीच ! तू मेरे स्वामी की निन्दा कर रहा है । राजाओं में श्रेष्ठ राम तीनों लोकों के स्वामी हैं । अरे दुष्ट ! तू भी बालि की समता को प्राप्त होगा । ३ तू नहीं सोच पा रहा है कि बालि जैसा वीर भी उनके बाण के किंचित आघात से मृत्यु को प्राप्त हुआ । मैं तुझे दण्ड देता । तेरे शिरों को मोड़ देता । परन्तु श्रीराम ने तुम्हें मारने के लिए कोदण्ड का स्पर्श किया है । ४ अरे असुर ! अब तो इस लंका पुरी का स्वामी विभीषण हो गया है, जिसे तू अपनी कह रहा है । तेरी आयु समाप्त हो चुकी । जले हुए वस्त्र के समान तुम शरीर धारण किए हुए हो । ५ राक्षस ने कुपित होकर दश सिरों को हिलाते हुए राक्षसों को अंगद को पकड़ लेने की आज्ञा दी । यह सुनकर चार वीर असुरों ने उन्हें

शुणि असुर, धरिले चारि बीर।
बाहु छिञ्चाड़न्ते से पड़िले भूमिर ॥ ६ ॥
असुरगण, घेनि चाहें आपण।
जगती चाळ भागि कले रण भण ॥
राम छामुर, जाइँ जोड़िले कर।
बोले बिशि नोहिला सन्धिर बिचार ॥ ७ ॥

त्रिश छान्द

कृष्णकळा बृत्ते

श्रीराम छामुरे बाळिसुत जोड़ि कर।
जणाइले राबणर सर्ब समाचार ॥ १ ॥
दुष्ट जन प्रीतिरे नुहन्ति देब साध्य।
सन्थ जनमाने सबंकाळरे आराध्य ॥ २ ॥
राबण पापिष्ठ दुष्ट दण्डकु से जोग्य।
बिभीषण करिब निश्चय लंका भोग ॥ ३ ॥
जथार्थ बचन शुणि कोप मोते कला।
असुरंक हातरे धराइ नेउ थिला ॥ ४ ॥
समस्त प्रकारे जुद्ध कला सनमत।
तृण प्राण भणइ से सकळ जगत ॥ ५ ॥

पकड़ लिया। परन्तु झिझकोर देने पर वह चारों भूलुंठित हो गए। ६ वह राक्षसगणों के साथ देखता रह गया। अंगद ने जगती और घर तोड़कर नष्ट-भ्रष्ट करके राम के समक्ष पहुँचकर दोनों हाथ जोड़ लिये। विशि कहता है कि सन्धि पर कोई विचार नहीं हो पाया। ७

छान्द—३०

कृष्णकला की धुन

बालि के पुत्र अंगद ने श्रीराम के समक्ष हाथ जोड़कर रावण के सम्पूर्ण समाचार बताये। १ हे देव! दुष्ट व्यक्ति प्रेम से साधे नहीं जा सकते। सन्त पुरुष हर समय पूजनीय होते हैं। २ पापी और दुष्ट रावण दण्ड के योग्य है। निश्चित रूप से विभीषण लंका का भोग करेगा। ३ उसने मेरी यथार्थ बातों को सुनकर मुझ पर क्रोध किया। वह हमे राक्षसों के हाथों से पकड़वा रहा था। ४ हर प्रकार से उसने युद्ध

शुणि ता श्रीरामचन्द्र जुद्ध आरम्भिले ।
लंकागड़ उत्तर द्वार पारुशे हेले ।। ६ ।।
जूथपतिमाने चारि भाग होइ गले ।
बोले बिशि राम जाहा आज्ञा देइथिले ।। ७ ।।

एकत्रिंश छान्द—गोळ युद्ध

उद्धव गीता द्वितीय छान्द बृत्तरे गाइब

उदे हुअन्ते अरुण, घेनिण बानरगण,
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लंका बेढ़िण ।
ठारि बोइले आपण, चारिद्वारे कर रण,
प्रकार डेइँण हाण असुरगण ।। १ ।।
श्रीराम आज्ञा पाइण, सर्ब जूथपति गण,
चारि द्वार निरोधिण, सैन्य घेनिण ।
क्षेपिले बानरगण, पक्षी प्रायक होइण,
बसिले से प्रकाररे भय छाड़िण ।। २ ।।
जगिथिले दैत्यगण, द्वारे अर्गळ देइण,
देखिले कांकलारेण, कपि साहाण ।

के लिए अपनी सम्मति दी। वह सारे विश्व को तिनके के समान मानता है। ५ उसकी बातों को सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया और लंका दुर्ग के उत्तर द्वार के निकट पहुँच गये। ६ विशि कहता है कि श्रीराम ने जैसी आज्ञा दी थी उसी के अनुरूप यूथपति लोग विभक्त हो गये। ७

छान्द ३१—दोनों दलों का युद्ध

उद्धव गीता के दूसरे छन्द की धुन

अरुणोदय होते ही वानरों को लेकर श्रीराम तथा लक्ष्मण ने लंका को घेर लिया। भगवान राम ने स्वयं कहा कि चारों द्वारों पर युद्ध करो और दीवार फाँदकर राक्षसों का वध करो। १ श्रीराम की आज्ञा पाकर समस्त यूथपतियों ने सेना लेकर चारों द्वारों को छेंक लिया। वानरगण पक्षियों के समान उछलकर भय का त्याग करके प्राचीर पर जा बैठे। २ रक्षक दैत्यगणों ने द्वारों को अरगला लगाकर किलकारी मारते हुए बानर-

आरे रे कार करिण, आयुधमान धरिण,
सर्बे बाहार होइण असुरगण ।। ३ ।।
फिटाइण चारि द्वार, बाहर हेले असुर,
बजाइ बिबिध तूर, सकळ बीर ।
धर धर मार मार, जेन्हे गर्जइ सागर,
तेन्हे शबद असुर, कले प्रचार ।। ४ ।।
कोटि कोटि रथ गज, होइछन्ति दिव्य सज,
जिगिबे कि देबराज, स्वर्गरे आज ।
बाजी जूथ किबा बाज, उच्चैःश्रबार सानुज,
राउते देखान्ति तेज बिन्धि नाराज ।। ५ ।।
बानर असुर कुळ, मिशिले उभय बळ,
सिन्धु कि लंघिला कूळ, प्रळयकाळ ।
जोड़ि जोड़ि होइ मेळ, कलेक संग्राम गोळ,
घेनि कपि तरु शिळ, अति बिपुळ ।। ६ ।।
शक्राजित बाळिसुत, कले रण अप्रमित,
रथी सारथी सहित कलेक हत ।
बिरथी होइ राबणी, गदाए माइले आणि,
अंगद मारिबा जाणि, धइले पाणि ।। ७ ।।

समूह को देखा और रे रे कार करते हुए अस्त्र-शस्त्रों को लेकर सारे राक्षस-गण निकल पड़े । ३ राक्षस चारों द्वारों को खोलकर बाहर आ गये । समस्त वीरगण नाना प्रकार की तुरही बजाकर "पकड़ो-पकड़ो; मारो-मारो" का सागर के समान गर्जन करते हुए इन्हीं शब्दों का प्रचार कर रहे थे । ४ करोड़ों रथ व हाथी सुन्दरता से सजाये गए । लगता है जैसे आज यह देवराज इन्द्र के स्वर्ग को जीत लेंगे । घोड़ों के यूथ थे अथवा इन्द्र के अश्व उच्चैःश्रवा के भाई ही थे । योद्धागण बाण चलाकर अपने शौर्य का प्रदर्शन कर रहे थे । ५ वानर और असुर दोनों पक्ष आपस में मिले । ऐसा लगता था मानों प्रलयकाल में समुद्र अपने तटों को लांघ गये हों । जोड़े-जोड़े मिलकर युद्ध करने लगे । वानर बड़ी-बड़ी शिलाएं और वृक्ष लिये थे । ६ इन्द्रजित् ने बालिपुत्र अंगद के साथ अपार युद्ध किया । अंगद ने सारथी के सहित रथ को नष्ट कर दिया । रावणपुत्र मेघनाथ रथ से रहित हो गया । उसने अंगद पर गदा का प्रहार किया । यह गदा मारेगा, ऐसा

सम्पाति से स्थूळजंघ, बेनि जनंकर अंग,
रुधिरे दिशे सुरंग, सुरण रंग ।
हनु जम्बुमाळि भेट, रण कलेक प्रकट,
जाणि त बानर श्रेष्ठ माइळे दुष्ट ॥ ८ ॥
प्रहस्त संगे सुग्रीब, रण कले असम्भब,
मुखे ताहा के कहिब जाणन्ति देब ।
कुमुद से सप्तघन, रण कलेक बेनिजन,
उपाड़ि दैत्य नयन, कले निधन ॥ ९ ॥
बिरुपाक्षकु लक्ष्मण, ओगाळि कलेक रण,
एका काण्डके मारिण, नेले ता प्राण ।
मित्रघन प्रेतघन, हेले राम सन्निधान,
शत्रुकेतुघ्नि केतन, घेनिण सैन्य ॥ १० ॥
राम संगे कले रण, महाबीर चारि जण,
मारि राम चारि बाण, नेले पराण ।
महीन्द्र बज्रमुष्टिक, संग्राम कले अनेक,
गला से बज्रमुष्टिक, शमन लोक ॥ ११ ॥
नीळ निकुम्बर रण, नेले सारथिर प्राण,
पळाइले छाड़ि रण, घेनि पराण ।

सोचकर अंगद ने उसका हाथ पकड़ लिया । ७ सम्पाति से स्थूलजंघ का भीषण युद्ध हुआ । दोनों के शरीर रक्त से सने लाल दिखाई दे रहे थे । हनुमान की भेंट जम्बुमाली से हुई । उन्होंने विकट युद्ध किया । वानर-श्रेष्ठ हनुमान ने उस दुष्ट को मार डाला । ८ प्रहस्त के साथ सुग्रीव ने असाधारण युद्ध किया, जिसका वर्णन मुख से कहाँ तक कहा जाए । उसे केवल देवता ही समझते हैं । कुमुद और सप्तघन दोनों ने भीषण युद्ध किया । उसने दैत्य की आँख फोड़कर उसे मार डाला । ९ लक्ष्मण ने बिरूपाक्ष को आगे से ललकारकर संग्राम किया और एक ही बाण से उसके प्राण ले लिये । मित्रघन, प्रेतघन, शत्रुकेतुघ्नि और केतन सेना लेकर राम के पास आ गये । १० पराक्रमी चारों योद्धाओं ने श्रीराम के साथ संग्राम किया । श्रीराम ने चार बाणों से उनके प्राण ले लिये । महेन्द्र के साथ बज्रमुष्टिक ने नाना प्रकार से युद्ध किया और अंत में बज्रमुष्टिक यमलोक को चला [illegible] । ११ नील [illegible] कुम्भ के साथ [illegible]रते हुए [illegible] । के [illegible] लिये, तब [illegible] छोड़कर [illegible]ाग गया ।

अश्विनी दुर्बिन्द जुद्ध, दुहें अटन्ति असाध्य,
दुर्बिन्द कले से बध, उद्‌गारि मद्य ॥ १२ ॥
बिद्युनळि संगे रण, कलेक बीर सुषेण,
शाळ शिळ प्रहारिण, नेले ता प्राण ।
अस्त हेले दिनकर, संग्राम होइला घोर,
प्रबळ हेले असुर से निशाचर ॥ १३ ॥
ऋक्ष कपि बहु मले, असुर मिशि माइले,
जाणि ता से न पारिले, मृत्यु लभिले ।
समस्त असुर मिळि, बिचारिण कले मेळि,
मूळुँ मार जाउ सरि, किपाइँ कळि ॥ १४ ॥
महापारुश्व असुर, संगे घेनि महोदर,
जमशत्रु संगे शूर, सारणि बीर ।
अतिकायकु घेनिण, रामकु आसि बेढ़िण,
बहुत बळ घेनिण, ए षड़ जण ॥ १५ ॥
जेन्हे मकर कुहुड़ि, सूर्ज्य किरण उहाड़ि,
तेसन रामंकु बेढ़ि, पड़िले माड़ि ।
खड़्ग कुन्त मुद्‌गर शकति परिघ शर,
त्रिशूळ चक्र आबर, कले प्रहार ॥ १६ ॥

अश्विनी के साथ दुर्विन्द का युद्ध हुआ । दोनों ही महान योद्धा थे । दुर्विन्द ने उसका वध कर दिया और वह मद्य वमन करते हुए मर गया । १२ विद्युनल के साथ पराक्रमी सुषेण ने युद्ध करके शाल और पत्थरों के प्रहार से उसके प्राण ले लिये । सूर्य के अस्त होने पर संग्राम और प्रखर हो गया । वह निशाचर राक्षस प्रबल हो गये । १३ बहुत से रीछ और वानर मर गये । राक्षसों ने मिलकर उन्हें मारा । वह उसे समझ न पाये और मृत्यु को प्राप्त हुए । सभी राक्षसों ने मिलकर विचार किया कि इन्हें जड़ से ही मारकर खत्म कर दिया जाए, फिर किसलिए युद्ध होगा । १४ असुर महापारुष, महोदर, जमशत्रु साथ में पराक्रमी सारणी, शूर तथा अतिकाय को लेकर इन छः व्यक्तियों ने बहुत सेना लेकर श्रीराम को जाकर घेर लिया । १५ उन्होंने खड्‌ग, भाला, मुग्दर, शक्ति, परिघ, बाण, त्रिशूल तथा चक्र से प्रहार किये । जैसे मकर ऋतु के कुहरे से सूर्य-किरण छिप जाती है वैसे ही यह सब राम को घेरे खड़े थे । १६ राम ने

राम बिन्धि शर कोटि, सकळ आयुध काटि,
हृदय गलाक फूटि, अबनी लोटि।
रथी महारथी मल्ल, अश्व गज पल पल,
मले दैत्य भल भल, पृथिवी शल ॥ १७ ॥
रामंक काण्ड प्रचण्ड, दैत्य हेले खण्ड खण्ड,
नृत्यन्ति कबन्ध रुण्ड, हराइ मुंड।
रुधिर धारा प्रखर, बहिला नदी प्रकार,
देखि भांगिले असुर, से षड़ बीर ॥ १८ ॥
तांक पळाइबा जाणि, अइला बीर राबणी,
होइ धनुशर पाणि, काळ कि जाणि।
श्राबणर नीर धार, प्राय बृष्टि कला शर,
तेम्हे असुर प्रचार, असुर बीर ॥ १९ ॥
राघब सबु काटिले, प्रति अस्त्रमान कले,
मर्मकु तार बिन्धिले, से बीर हेळे।
मने बिचारे राबणी, ए जुद्धे नोहिब जिणि,
एहा काण्ड बज्र जाणि, हृदयमणि ॥ २० ॥
एते बोलि माया कला, संग्रामे अदृश्य हेला,
गगने जाइ रहिला, शर माइला।

एक करोड़ बाण छोड़कर सब आयुधों को काट दिया और उनके हृदय फट जाने से वह जमीन पर लोट गये। रथी, महारथी, मल्ल, झुंड के झुंड हाथी और घोड़े मर गये। पृथ्वी को दहला देनेवाले अच्छे-अच्छे दैत्य भी मर गये। १७ राम के प्रचंड बाण से दैत्य खंड-खंड हो गये। उनके सिर-विहीन कबन्ध नाच रहे थे। रक्त की प्रखर धार नदी के समान बहने लगी। यह देखकर वह छः वीर राक्षसों ने युद्ध छोड़ दिया। १८ उनको भागा हुआ जानकर पराक्रमी इन्द्रजित् हाथ में धनुष-बाण लेकर काल के समान आ पहुँचा। उस पराक्रमी असुर ने ललकारते हुए श्रावण महीने की जलधारा के समान बाणों की वृष्टि की। १९ राघव राम ने सबको काट दिया, फिर अस्त्र चलाकर उसके मर्म को सहज में ही वेध डाला। मन में इन्द्रजित् ने विचार किया कि इस युद्ध में विजय नहीं होगी, क्योंकि इनका बाण वज्र के समान है यह मेरा हृदय जानता है। २० इतना कह कर उसने माया की। युद्धस्थल में वह अदृश्य होकर आकाश में जाकर

जेते से माइला शर, होइला सर्प आकार,
राम लक्ष्मण शरीर, कले प्रहार ॥ २१ ॥
गात्र करन्ते बन्धन निश्चळावयवमान,
पलाश तरु जे सन, से बेनि जन।
पुणि बिन्धे घन घन, देख अबयबमान,
राम लक्ष्मण बदन, झिक जे सन ॥ २२ ॥
बेनि अंगरु रुधिर, बहुअछि झर झर,
जेसने कुम्भरु नीर, हुए बाहार।
आज्ञा देले रघुबीर, काहिँ अछि ताकु धर,
आज्ञा पाइ कपि बीर, हेले बाहार ॥ २३ ॥
आकाशरे न देखिले, शरे पीड़ित होइले,
लेउटि तहुँ अइले, छामुरे हेले।
लक्ष्मण से रघुमणि, मोहे पड़िले धरणी,
शक्र ध्वजपात जाणि, बेनि पराणी ॥ २४ ॥
बेढ़ि सर्ब सेनापति, अनाइ जानकीपति,
बहु रोदन करन्ति, से कपिपति।
शर बृष्टि करुथिले, बिभीषणकु देखिले,
शक्ररिपु जय कले, पळाइ गले ॥ २५ ॥

बाण मारने लगा। वह जितने भी बाण मारता था वह सब सर्प बनकर श्रीराम और लक्ष्मण के शरीर में प्रहार कर रहे थे। २१ शरीर के बँध जाने से उनके अंग निश्चल हो गये थे। वह दोनों पलाश तरु के समान लग रहे थे। वह बार-बार शरों से वेध रहा था। श्रीराम-लक्ष्मण का शरीर बाणों से बिंधा हुआ झिक पक्षी के समान दिखाई दे रहा था। २२ जिस प्रकार घड़े से पानी निकलता है उसी प्रकार दोनों के अंगों से झर-झर करके रक्त बह रहा था। श्रीराम ने आज्ञा दी कि इसे पकड़ो, वह कहाँ है? ऐसी आज्ञा पाते ही पराक्रमी वानर बाहर निकल पड़े। २३ उन्होंने उसे आकाश में नहीं देखा परन्तु बाणों से पीड़ित होकर श्रीराम के समक्ष लौट आये। श्रीराम और लक्ष्मण चेतनाशून्य होकर पृथ्वी पर पड़े थे। दोनों प्राणियों का गिरना लगता था जैसे इन्द्र का ध्वज ही गिर गया हो। २४ सारे सेनापति घेरकर जानकीनाथ श्रीराम की ओर देखकर बहुत रुदन करने लगे। कपिराज सुग्रीव बाण-वर्षा कर रहे थे, उन्होने विभीषण को देखा तभी इन्द्रजित् विजय पाकर चला गया। २५ सुग्रीव को विलाप करते हुए देखकर

बिळपन्ते कपिपति, प्रबोधन्ति लंकपति,
बोलन्ति अटे अनीति, जुद्धर रीति ।
तुम्भर देखिण शोक, पळाइबे कपि जाक,
तुम्भे त अति बिबेक, कपिनायक ।। २६ ।।
मुँ एबे थाट बुलिबि, कपिकु भरसा देबि,
जगिथाअ मुँ आसिबि, सबु कहिबि ।
एते कहि सेहु गले, कपिराजन जगिले,
इन्द्रजित जय कले, बिशि भणिले ।। २७ ।।

द्वात्रिंश छान्द—सीतांकु मोह राम देखाइबा

राग-पंचम बराड़ि; बिप्रसिंहा बाणी

राम लक्ष्मण संहारि, जय शंखध्वनि करि,
बाहुड़िला रावण - कुमर ।
चतुरंग बळ संगे, बाहुड़ा बिजय रंगे,
जोद्धामानंकु पथे कहे उत्तर से ।
बीरमाने ! तुम्भमानंकु से जय कला ।
मोर हाते एबे प्राण हराइला हे ।। १ ।।

लंकापति विभीषण सांत्वना देने लगे। उन्होंने कहा कि यह तो अनीति का युद्ध है। तुम्हारे शोक को देखकर सारे वानर भाग जायेंगे। हे कपियों के नायक ! तुम तो अत्यन्त विवेकी हो। २६ मैं अभी सेना में घूमकर वानरों को ढाढ़स बँधाऊँगा। आप रक्षा करते रहें। मैं आकर सब कुछ बताऊँगा। विशि कहता है कि इतना कहकर वह चले गये। कपिराज रक्षा करने लगे और इस प्रकार इन्द्रजित् की विजय हुई। २७

छान्द ३२—सीता को मूर्च्छित राम का दर्शन

राग-पंचम बरारि; विप्रसिंहा की धुन

श्रीराम और लक्ष्मण का सहार करके विजय का शंखनाद करके रावण का पुत्र मेघनाद लौटा। चतुरंगिणी सेना के साथ विजयोपरान्त लौटने की उल्लासपूर्ण यात्रा में उसने पराक्रमी योद्धाओं से कहा कि हे वीरो ! जिसने तुम्हें जीत लिया था उसी ने अब मेरे हाथों प्राण खो दिये। १ जो लंकापति रावण, शय्या प्रदान करने पर भी श्रीराम के भय

खट देळिरे सुपति, शेजाइ न पहुड़न्ति,
श्रीराम भयरे लंकपति।
तार मृत्यु शुणि अति, आनन्द होइब मति,
सीता घेनि एबे बंचिबे से राति से।
शक्राजित। एते कहि जानु ओह्लाइला।
पिता पाद छुइँण दर्शन कला से॥ २॥
श्रीराम मरण शुणि, बहु हृष्ट बिशपाणि,
बिशभुजे आलिंगन कला।
पुत्र मोर कला, आजु मोर भय गला,
लंका नग्ररे उत्सब कराइला से।
लंकपति! आनन्दरे बिचारिला।
निश्चें एबे मोर जानकी होइला जे॥ ३॥
त्रिजटाकु हकराइ, रावणेश्वर कहइ,
पति मृत्यु देख एबे सिना।
पुष्पबिमाने बसाइ, आणिब राम देखाइ,
पड़ि अन्ते पातिव्रत्य रखिब कि ना से।
सुकुमारि! एबे हेउ मोर मनोहारी।
भोग करु एबे त्रयपुर शिरी से॥ ४॥
लंकपति आज्ञा पाइ, पुष्पक बिमाने बसाइ,
सीतांकु रणभूमिकि नेले।

से नहीं लेटते थे, वह उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर मन में अत्यधिक प्रसन्न होकर सीता को लेकर अब सुखपूर्वक रात बितायेंगे। ऐसा कहकर इन्द्रजित् ने रथ से उतरकर पिता के चरण स्पर्श करके उनके दर्शन किये। २ श्रीराम की मृत्यु सुनकर बीस भुजाओंवाले रावण ने बहुत आनन्द से बीसों भुजाओं से पुत्र का आलिंगन करते हुए कहा कि मेरा पुत्र विजयी हुआ। आज मेरा भय समाप्त हो गया। फिर उसने लंका नगर में उत्सव कराया। लंकापति रावण ने बड़े हर्ष से विचार किया कि अब निश्चय ही जानकी मेरी हो गई। ३ त्रिजटा को बुलाकर रावणेश्वर बोला कि अब सीतापति की मृत्यु को देखें। पुष्पक विमान में बिठाकर राम को दिखाकर लिवा लाओ। तब तक वह पतिव्रत भले रखे रहे। अब वह सुकुमारी सीता मेरी मनोहारिणी बनकर तीनो लोकों के ऐश्वर्य का भोग करें। ४ लकापति की आज्ञा पाकर पुष्पक विमान

धरणीरे पड़िछन्ति, कपिमाने बेढ़िछन्ति,
राम-लक्ष्मणंकु देखाइण देले से ।
भूमिसुता ! ताहा देखि होइले मूर्च्छिता ।
पुणि ज्ञान पाइ बिळपन्ति सीता से ।। ५ ।।
आहा मोर प्राणपति, मो छार पाइँ ए गति,
न मिळन्ता कि अन्य जुबती ।
हेउथिल क्षितिपति, दइब देला बिपत्ति,
एबे नयन बूजि शोइल क्षिति हे ।
प्राणपति ! मरिबि मुँ तुम्भर संगरे ।
किपाँ प्राण अछि मोहर अंगरे हे ।। ६ ।।
समुद्र बन्धन कल, सैन्य सहिते अइल,
देबंकु दुर्ल्लभ एहि कथा ।
एबे गोस्पन्द जळरे बुड़िला किम्पा स्थळरे,
बिप्रमानंक बचन हेला बृथा हे ।
हे प्राणनाथ ! मोते जे बोलन्ति सुलक्षणी ।
बिधबा नोहिबं जनकनन्दिनी हे ।। ७ ।।
जानकी बिलाप शुणि, त्रिजटा बोलइ बाणी,
तुम्भ पति होइछन्ति मोह ।

में बैठाकर वह सीता को संग्राम-स्थल पर ले गई और उन्हें पृथ्वी पर पड़े वानरों से घिरे श्रीराम और लक्ष्मण को दिखा दिया। यह देखकर भूमिजा सीता मूर्च्छित हो गई। चेतना लौटने पर वह विलाप करने लगी। ५ हा ! मेरे प्राणेश्वर ! मुझ तुच्छ के लिए आपकी यह हालत हुई है। क्या तुम्हें अन्य युवती न मिलती ? आप राजा बन रहे थे तभी दैव ने कष्ट दिया। अब आँख बन्द किये आप पृथ्वी पर पड़े हैं। हा प्राणेश्वर ! मैं आपके साथ मरूंगी। मेरे शरीर में प्राण किसलिए हैं। ६ आपने सागर को बाँध दिया और सेना लेकर आ गये। यह बात तो देवताओं के लिए भी दुलभ थी। पर वह ही अब गोपद के जल में कैसे डूब गया। यहाँ ब्राह्मणों का वाक्य व्यर्थ हो गया। हे प्राणनाथ ! वह हमें सुलक्षणी बताकर कहते थे कि जनकतनया विधवा नहीं होगी। ७ जानकी का विलाप सुनकर त्रिजटा ने कहा कि तुम्हारे पति मूर्च्छित हो गये हैं। यह जो देवयान (पुष्पक) है वह विधवा स्त्रियों को वहन नहीं

देबजान ए अटइ, बिधबांकु न बहइ,
तुम्भे ए कथाकु बहु दुःखी नुह गो ।
शशिमुखी ! एते कहि बाहुड़ाइ नेले ।
अशोकबनरे प्रबेश होइले से ॥ ८ ॥
केतेहेँक बेळे तहिँ, रामचन्द्र ज्ञान पाइ,
सुग्रीबंकु चाहिँ आज्ञा देले ।
ऋक्ष कपि न मराअ, भो मित्र बाहुड़ि जाअ,
देख लक्ष्मण आम्भर प्राण देले हे ।
कपिपति ! एहांक बिनु मुँ कि जीइबि,
सुमित्रा मातांकु कि बोलि बोलिबि हे ॥ ९ ॥
अइले संगे गोड़ाइ, नाना दुःख मान सहि,
बने मोते सेबा करिथिले ।
एबे भाइ मोर पाइँ, सागरे सेतु बन्धाइ,
दुष्ट असुरंक हाते प्राण देले हे ।
कपिपति ! न जीअइ मुँ एहा बिहीने !
अजोध्याकु मुहिँ जिबइँ केसने हे ॥ १० ॥
बिळपन्ते रघुबीर, ज्ञान सुमित्राकुमर,
पाइबारु धइर्ज्य होइले ।
प्रबोधिण कपिगण, बाहुड़न्ते बिभीषण,
शक्राजित बोले भये पळाइले हे ।

करता । हे चन्द्रवदनी ! तुम इस बात पर बहुत दुःखी न होना । ऐसा कहकर वह उन्हें लौटा ले गई और अशोक वन में जा पहुँची । ८ अधिक समय के पश्चात् चेतना लौटने पर श्रीराम ने सुग्रीव की ओर देखकर आज्ञा दी, हे मित्र ! रीछ व वानरों को न मरवाकर तुम लौट जाओ । देखो, हमारे लक्ष्मण ने प्राण दे दिये । हे कपीश ! इसके बिना मैं क्या जी सकूँगा ? सुमित्रा माता को मैं क्या उत्तर दूंगा ? ९ लक्ष्मण मेरे साथ पीछे-पीछे चला आया । साथ में नाना प्रकार के कष्ट सहते हुए वन में वह मेरी सेवा करता रहा । मेरे भाई ने मेरे लिए सेतु बँधवाया और अब उसी ने दुष्ट राक्षसों के हाथों से प्राण खो दिये । हे कपीश ! मैं इसके बिना जीवित न रह सकूँगा । मैं अयोध्या को कैसे जाऊँगा ? १० रघुवीर के विलाप करते समय सुमित्राकुमार को चेत आ जाने से उन्हें धैर्य हुआ । इन्द्रजित् के भय से भागती हुई वानर-सेना को विभीषण समझा रहे थे ।

सैन्यमाने । नुहइ बोलिण बाहुड़िले ।
सबुरि मनरु दुःख एड़िले हे ॥ ११ ॥
श्रीराम-लक्ष्मण चाहिँ, बिभीषण दुःख पाइ,
बहुत बिळाप मान कले ।
जाहार दर्शन पाइँ, लंका तेजि अइलइँ,
बेनि कुळे एबे नोहिले बोइले से ।
बिभीषण ! प्रबोधन्ति अंगद सुषेण ।
अधइर्य्य नुह तुम्भे लंका राजन हे ॥ १२ ॥
सुग्री बोलन्ति सुषेण, श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण
किष्किन्ध्यारे कर हे जतन ।
आम्भे रावण मारिबा, श्रीरामंकु सीता देबा,
तेबे सिना बाहुड़िबे मोर सैन्य से ।
सुग्रीबर ! कहन्ते नारद परबेश ।
बोले बिशि स्तब कले श्रीरामर पाश ॥ १३ ॥

त्रयोत्रिंश छान्द—नारद-स्तुति

राग—पाहाड़िआ केदार (कळहंस बाणी)

राम-लक्ष्मण सन्निधे मुनि, संगते घेनि परिबादिनी,
बोले कि भाग्य कले आम्भर नयन जे ।

अब इन्द्रजित् नहीं है, ऐसा जानकर वानरदल लौट आया। विभीषण ने सबके मन से भय दूर कर दिया। ११ श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर विभीषण ने दुखी होकर बहुत विलाप किया। उसने कहा कि जिनके दर्शन के लिए मैं लंका को छोड़कर आया। अब मैं दोनों ओर का नहीं रहा। विभीषण को समझाते हुए अंगद और सुषेण ने कहा कि हे लंकाधिराज ! आप अधीर न हों। १२ सुग्रीव बोला, हे सुषेण ! तुम किष्किन्धा में श्रीराम और लक्ष्मण को यत्नपूर्वक रखो। हम रावण का वध करके श्रीराम को सीता समर्पित करेंगे। तभी हमारी सेना लौटेगी। सुग्रीव के ऐसा कहने पर नारद जी वहाँ आये। विशि कहता है उन्होंने श्रीराम के समीप स्तुति की। १३

छान्द ३३—नारद-स्तुति

राग—पहड़िया केदार (कलहंस की धुन)

श्रीराम-लक्ष्मण के समीप मुनि ने विनय के साथ कहा कि हमारे

असुर पन्नग पाशे घेनि, बन्धन करिछि भाइ बेनि,
आन होइले जान्ता ए शर जीवन घेनि जे ।। १ ।।
एते कहि नारद स्तव पढ़िले, कृत अंजळि
होइण कर जोड़िले, भकति भावे पुलक हेले,
वीणा बजाइ से नृत्य कले, बेनि नयनु
आनन्द अश्रु पतित हेले जे ।। २ ।।
जयतु मत्स्य, कूर्म, शूकर, नृसिंह, खर्व,
परशुधर, श्रीराम, हळधर, बुद्ध, कळकी आकार जे ।
सन्थ पाळिण दुष्टकु मार उश्वास कर महीर भार,
एहि कारणे ए अवतार राम शरीर जे ।। ३ ।।
तुम्भेटि देव अखिळ तात, तुम्भर तहुँ सकळ जात,
चिन्तिबा हेउ बिनतासुत, आसु त्वरित जे ।
एमन्त कहिण धातासुत, ब्रह्मलोककु गले
त्वरित पन्नगाशन मने चिन्तिले कौशल्यासुत जे ।। ४ ।।
क्षीरसागर भितरे थिले, रम्यक द्वीपुं बाहार हेले,
आसन्ते पक्षपवने गिरिवर उड़िले जे ।
देखिण सर्पे पळाइ गले, लवण जळधिरे
पशिले बिनतासुत राम छामुरे दर्शन कले जे ।। ५ ।।

नेत्रों के कैसे भाग्य हैं। असुर ने नागपाश लेकर दोनों भाइयों को बाँध दिया। यदि कोई अन्य होता तो यह बाण उसके प्राण ले जाता। १ इतना कहकर नारद ने स्तव-पाठ किया। कृतांजलि होकर उन्होंने हाथ जोड़ते हुए भक्ति-भाव से प्रफुल्लित होकर वीणा बजाकर वह नृत्य करने लगे। उनके दोनों नेत्रों से आनन्द के आँसू झरने लगे। २ मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, प्रखर परशुराम, श्रीराम, हलधर, बुद्ध तथा कल्कि के अवतार! आपकी जय हो। सन्तों को पालन करके दुष्टों को मारने के लिए, पृथ्वी का भार उतारने के लिए ही आपने राम के शरीर में अवतार लिया है। ३ हे देव! आप विश्व के पिता हैं। आपसे ही सबकी उत्पत्ति हुई है। आप गरुड़ का चिन्तन करें जिससे वह शीघ्र ही आ जायें। ऐसा कहकर ब्रह्मा के पुत्र नारद ब्रह्मलोक को चले गये। कौशल्यानन्दन नारायण ने गरुड़ का चिन्तन किया। ४ वह क्षीरसागर के भीतर थे। रम्यक-द्वीप से निकलकर आते हुए गरुड़ के पंख की हवा से पर्वत उड़ने लगे। उन्हें देखते ही सर्प भागकर सागर के जल में घुस गये। सामने आकर

नागबन्धनु करि मुकत, बिनतासुत अमृतहस्त,
लागन्ते तेज हेला बहुत गला ब्रण त जे ।
श्रीराम आज्ञा देले ताहात, तुम्भे कि मित्र आम्भर जात,
उपकार त कल बहुत, तुम्भे मोहित जे ॥ ६ ॥
बिनता सुत कहे उत्तर, भो देब सबु दिने मुँ तोर,
पुण दर्शन करइँ सिना अजोध्यापुर जे ।
एते कहिण गरुड़ गले, बानर बळ आनन्द हेले,
पुणि जुद्धकु आरम्भ कले, बिशि भणिले जे ॥ ७ ॥

चतुस्त्रिंश छान्द—गोळ जुद्ध

जदुबोलि वृत्ते गाइब

तरु उपाड़ि, छाड़न्ति रड़ि । लंकाकु बानरे पड़न्ति उड़ि ॥ १ ॥
बजिला गोळ, उभय बळ । सिन्धु मन्थन प्रायेक चहळ ॥ २ ॥
कपिक बाणी, राबण शुणि । बोलइ केमन्त जीइले पुणि ॥ ३ ॥
बिस्मय हेला, शत्रु न मला । पुत्र धूम्राक्षकु राइ बोइला ॥ ४ ॥
असुरगण, थिबे बहन । मारि आस बाबु राम लक्ष्मण ॥ ५ ॥

विनतानन्दन गरुड़ ने श्रीराम के दर्शन किये । ५ नागपाश से मुक्ति देकर विनतासुत गरुड़ के अमृत-हस्त लगने से उनका तेज बढ़ गया और समस्त घाव समाप्त हो गये । श्रीराम ने कहा कि हे मित्र ! क्या तुम मेरे लिए ही उत्पन्न हुए हो ? तुमने हमारे लिए बहुत उपकार किया है । ६ विनतानन्दन गरुड़ ने उत्तर देते हुए कहा, हे देव ! मैं सदैव आपका हूँ । मैं फिर अयोध्यापुर में आपके दर्शन करूँगा । इतना कहकर गरुड़ चला गया । वानरदल प्रसन्न हो गया । विशि कहता है कि उन्होंने पुनः युद्ध प्रारम्भ कर दिया । ७

छान्द ३४—द्वन्द्व-युद्ध

यदुबोलि की धुन

वानरगण वृक्ष उखाड़कर हुंकार मारते हुए लंका की ओर उड़ने लगे । १ दोनों दलों में युद्ध छिड़ गया । सागर-मन्थन के समान नाद भरने लगा । २ वानरों का शब्द सुनकर रावण बोला कि यह फिर से कैसे जीवित हो गये ? ३ शत्रु के न मरने से उसे आश्चर्य हुआ । तब उसने अपने पुत्र धूम्राक्ष को बुलाकर कहा । ४ हे तात ! असुर गण को लेकर

एमन्त शुणि, कुमर मणि । पश्चिम द्वारे बाहार रावणी ।। ६ ।।
असुर श्रेणी, तेसन जाणि । बन्ध भांगिले जेन्हे जाइ पाणि ।। ७ ।।
कलक रण, बानर गण । बड़ बड़ बृक्षमान घेनिण ।। ८ ।।
कले समर, सर्ब असुर । घेनि खड्ग कुन्त धनुशर ।। ९ ।।
केहि शकति, शूळ मारन्ति । कुठार गदा घेनि प्रहारन्ति ।। १० ।।
देखिण हनु, रावण सूनु । जे सने राहु ग्रास करे भानु ।। ११ ।।
धूम्रराक्षस, कपि बिशेष । मारि प्रबेश हेला राम पाश ।। १२ ।।
पथर घेनि, थिला पाबनि । कचाड़िला धूम्राक्षर मूर्द्धनी ।। १३ ।।
असुर मले, पळाइ गले । धूम्रराक्षस मलारे कहिले ।। १४ ।।
शुणि रावण, कला कारुण्य । बज्रमुष्टि कि राइला आपण ।। १५ ।।
तू एबे जिबु, कपि मारिबु । हेळा जुद्ध केबेहें न करिबु ।। १६ ।।
सेहि अइला, सैन्य घेनिला । दक्षिण द्वारे बाहार होइला ।। १७ ।।
रथे बसिला, धनु धइला । अंगद आगे प्रबेश होइला ।। १८ ।।
शर बिन्धिला, कपि माइला । अंगद अंगे शर बृष्टि कला ।। १९ ।।
क्रोधे अंगद, करिण नाद । बृक्षेक पिटिला दैत्यर हृद ।। २० ।।
ताहा सम्भाळि, असुरबळी । शर प्रहारन्ते रुधिर गळि ।। २१ ।।

राम-लक्ष्मण को मार आओ। ५ ऐसा सुनकर पुत्रों में श्रेष्ठ धूम्राक्ष पश्चिम द्वार से बाहर निकला। ६ उसकी रक्षवाहिनी इस प्रकार बढ़ी जैसे पानी ने बाँध तोड़ दिया हो। ७ विशाल वृक्षों को लेकर वानरदल ने संग्राम किया। ८ तलवार, भाले, धनुष-बाण लेकर सारे राक्षस युद्ध करने लगे। ९ कोई शक्ति और शूल से मार रहा था। कोई कुठार लेकर प्रहार कर रहा था। १० हनुमान ने रावण के पुत्र को देखा। जिस प्रकार राहु सूर्य को ग्रास कर लेता है, उसी प्रकार कपिश्रेष्ठ हनुमान धूम्राक्ष को मारकर श्रीराम के निकट जा पहुँचे। ११-१२ हनुमान पर्वत लिये थे। उन्होंने वह ही धूम्राक्ष के शिर पर पटक दिया था। धूम्राक्ष मर गया, इस प्रकार कहते हुए कुछ राक्षस मारे गये और कुछ भाग गये। १३-१४ यह सुनकर रावण बहुत दुखी हुआ। उसने बज्रमुष्टि को बुलाकर कहा कि अब तू जाकर कपि को मार दे। प्रमादपूर्ण युद्ध कभी न करना। १५-१६ उसने जाकर सेना ली और दक्षिण द्वार से बाहर निकल पड़ा। १७ वह धनुष लेकर रथ पर बैठकर अगद के समक्ष जा पहुँचा। १८ बाण चलाकर उसने वानरों को मारा और अंगद के शरीर पर उसने बाणों की वर्षा की। १९ क्रोध से अंगद ने गर्जना करते हुए एक वृक्ष से दैत्य के हृदय पर प्रहार किया। २० पराक्रमी राक्षस उसे

घेनि पथर, बाळिकुमर । कचाड़िले रथ सारथि पर ॥ २२ ॥
रथ भांगिला, सारथि मला । असुर खड़ग करे धइला ॥ २३ ॥
अंगद धाइँ, धाइला जाइँ । खड़ग ता करु नेला छड़ाइ ॥ २४ ॥
से कपिषण्ढ, देलाक दण्ड । सेहि खड़गे काटि चारर मुण्ड ॥ २५ ॥
सैन्य भाजिला, बारता देला । अंगद करे बज्रमुष्टि मला ॥ २६ ॥
शुणि रावण, सक्रोध मन । अकम्पनकु कहइ बचन ॥ २७ ॥
तुम्भे मोहर, कर समर । उपोध न करि बानर मार ॥ २८ ॥
आज्ञा पाइला, सैन्य साजिला । पश्चिम द्वारे बाहार होइला ॥ २९ ॥
बसि रथर, सैन्य सांगर । उदय होइला कि दिबाकर ॥ ३० ॥
उभय थाट, होइले भेट । संग्रामे बेनि बळ हेले नष्ट ॥ ३१ ॥
कले समर, कपि असुर । अकम्पनकु देखि हनुबीर ॥ ३२ ॥
कोपे प्रखर, से हनुबीर । पिटिला ताहाकु हनु पथर ॥ ३३ ॥
भाजिला रथ, हेला अनर्थ । असुर काण्ड होइला बिअर्थ ॥ ३४ ॥
असुर शिर, मोड़न्ते बीर । न छिण्डन्ते पकाइले भुमिर ॥ ३५ ॥
शिळेक नेइ, देले पकाइ । असुर शिररे पड़िला जाइँ ॥ ३६ ॥

सहन करके बाणों से प्रहार करते हुए, उसके खून निकलने लगा । २१ बालिकुमार अंगद ने पाषाण-शिला लेकर उसके रथ और सारथी को कुचल दिया । २२ रथ टूट गया और सारथी मर गया । राक्षस ने हाथ में तलवार उठा ली । २३ अंगद ने दौड़कर उसके पास पहुँचकर उसके हाथ से तलवार छीन ली । २४ वानरों में साँड़ के समान अगद ने उसे दण्ड देते हुए उसी तलवार से उसके सिर के चार टुकड़े कर दिये । २५ सेना ने भागकर समाचार दिया कि अंगद के हाथों बज्रमुष्टि मारा गया । २६ यह सुनकर रावण क्रोधित मन से अकम्पन से बोला । २७ तुम मेरे हो, जाकर युद्ध करो और उपाय करके वानर को मार डालो । २८ उसने आज्ञा पाकर सेना सजायी और पश्चिम द्वार से बाहर निकल पड़ा । २९ रथ पर बैठकर सेना को साथ लेकर निकलते हुए लगता था जैसे सूर्य उदय हो गया हो । ३० दोनों सेनाओं का परस्पर मिलन हुआ । युद्ध में दोनों दल नष्ट हुए । ३१ वानरों और राक्षसों ने संग्राम किया । हनुमान ने अकम्पन को देखा । ३२ क्रोध से भरकर पराक्रमी हनुमान ने उस पर पत्थर दे मारा । ३३ रथ टूटने से अनर्थ हो गया । राक्षस का बाण भी व्यर्थ चला गया । ३४ पराक्रमी हनुमान ने राक्षस का सिर मोड़ा पर वह नहीं टूटा, तब उन्होंने उसे पृथ्वी पर पटक दिया । ३५ उन्होंने एक शिला लेकर फेंकी जो राक्षस के सिर पर जा गिरी । ३६ गर्जन करते हुए उसके

रड़ि छाड़िला, प्राण उड़िला । पथर बाजिण असुर मला ॥ ३७ ॥
भाजिले थाट, न पाइ बाट । लंकारे पशिले पाइण कष्ट ॥ ३८ ॥
बारता हेला, चार कहिला । हनु हातरे अकम्पन मला ॥ ३९ ॥
शुणि रावण, करि कारुण्य । प्रहस्तकु हकारि सेहि क्षण ॥ ४० ॥
तु मोर सबु, जुद्धरे बाबु । पुत्रकर कष्ट पासोराइबु ॥ ४१ ॥
शुणि प्रहस्त, सैन्य बहुत । घेनि बाहारन्ते बिघ्न बहुत ॥ ४२ ॥
बसि रथर, पूर्ब दुआर । संगरे सैन्य घेनिण अपार ॥ ४३ ॥
धनु धइला, सैन्य पशिला । अनेक ऋक्ष बानर माइला ॥ ४४ ॥
बिषम रण, कला आपण । कोटि कोटि मले बानरगण ॥ ४५ ॥
बानर मला, नीळ देखिळा । तरु शिळा धरि आग होइला ॥ ४६ ॥
कलेक रण, से बेनि जन । असुर बिन्धइ सायक टाण ॥ ४७ ॥
देखिण नीळ, माइले शिळ । भाजिला रथ उभा हेले तळ ॥ ४८ ॥
नीळ शरीर, बहे रुधिर । कम्पे अंगद होइ थरहर । ४९ ॥
करिण रड़ि, तरु उपाड़ि । प्रहस्त उपरे नेइ उचाड़ि ॥ ५० ॥
मला असुर, भाजिला शर । शत खण्ड होइ पड़ि भूमिर ॥ ५१ ॥

प्राण उड़ गये और पत्थर लगने से राक्षस मर गया । ३७ सेना भागने लगी, परन्तु उन्हें मार्ग नहीं मिल रहा था । बड़े कष्ट के साथ वह सब लंका में घुस पाये । ३८ दूत ने समाचार दिया कि हनुमान के हाथ से अकम्पन मारा गया । ३९ यह सुनकर रावण ने शोक करते हुए उसी समय प्रहस्त को बुलाकर कहा कि बेटे ! तुम हमारे हो। तुम हमारे सभी युद्धों के पुत्र-शोक को मिटाओगे । ४०-४१ यह सुनकर बहुत सी सेना साथ लेकर प्रहस्त के निकलते समय बहुत से विघ्न हुए । ४२ वह रथ पर बैठकर असंख्य सेना को साथ लेकर पूर्वद्वार से निकला । ४३ वह धनुष लेकर सेना में घुस गया और उसने बहुत से वानर तथा भालुओं को मार डाला । ४४ उसने स्वयं विकराल युद्ध किया जिसमें करोड़ों वानरदल मृत्यु को प्राप्त हुआ । वानरों को मरता हुआ देखकर नील वृक्ष और शिला लिये आगे बढ़ा । ४५-४६ दोनो व्यक्ति संग्राम कर रहे थे । राक्षस तीखे बाण छोड़ रहा था । ४७ यह देखकर नील ने शिला से प्रहार किया । रथ टूट गया और वह नीचे खड़ा हो गया । ४८ नील के शरीर से रक्त बह रहा था । अंगद थर-थराकर कांपने लगे । ४९ उन्होंने हुंकार भरकर वृक्ष उखाड़ा और उसे लेकर प्रहस्त के उपर प्रहार किया । ५० इससे उसका बाण टूट गया और राक्षस मर गया । उसके सो टुकड़े होकर पृथ्वी पर पड़े थे । ५१ दैत्य-सेना पृथ्वी पर पड़ी थी ।

दैत्य सइनी, पड़ि मेदिनी । केहि केहि गले जीबन घेनि ॥ ५२ ॥
रुधिर नई, समरे बही । शबरे पृथिबी दिशइ नाहिं ॥ ५३ ॥
नाचे कबन्ध, शब दुर्गन्ध । बिहरे शृगाळ शागुणावृन्द ॥ ५४ ॥
लंका राजन, बिकळ मन । शुणिण से प्रहस्तर निधन ॥ ५५ ॥
घोषणा देला, सैन्य साजिला । आज बिजे करिबि रे बोइला ॥ ५६ ॥
बाहार राजा, बजाइ बाजा । हुअन्ति असुर बड़ि तरजा ॥ ५७ ॥
अनेक रथी, अनेक हाती । अनेक अश्व अनेक पदाति ॥ ५८ ॥
करइ बिजे, असुर राजे । तुरी भेरि शंख काहाळि बाजे ॥ ५९ ॥
अश्व पच्छरे, गज आगरे । सम दण्डे निजे असुरेश्वरे ॥ ६० ॥
पढ़न्ति भाट, नटक नाट । दाण्ड पूरिण जाउ छन्ति थाट ॥ ६१ ॥
बिबिध छत्र, अति पबित्र । हरइ अखिळ जनंक नेत्र ॥ ६२ ॥
कि स्वर्गपुर, करिबे जूर । एहा बिचारि डरन्ति अमर ॥ ६३ ॥
करिबा रण, आज आपण । दीन बिशि भणे राम चरण ॥ ६४ ॥

उनमें से कुछ अपना जीवन लेकर भागे । ५२ समरांगण में रक्त की नदी बहने लगी । लाशों से पृथ्वी दिखाई नहीं दे रही थी । ५३ कबन्ध नाच रहे थे और शव की दुर्गन्ध पाकर शृगाल और गीधों के झुंड विहार करने लगे । ५४ प्रहस्त का निधन सुनकर लंकापति रावण का मन व्याकुल हो गया । ५५ उसने घोषणा की कि आज मैं संग्राम के लिए जाऊँगा । ऐसा कहकर उसने सेना सजवायी । ५६ वाद्यनाद करके राजा बाहर निकला । राक्षस बड़ा तर्जन कर रहे थे । ५७ अनेक रथी, बहुत से हाथी, असंख्य घोड़े और पैदल सैनिकों के साथ तुरही, भेरी, शंख और बिगुल बजाते हुए राक्षसराज चल पड़ा । ५८-५९ आगे-आगे हाथी, उसके पीछे घोड़े और बराबरी पर स्वयं राक्षसराज रावण था । ६० भाट प्रशंसा कर रहे थे । नट नाच रहे थे । मार्ग में भरी हुई सेना चली जा रही थी । ६१ अत्यन्त पवित्र असंख्य छत्र समस्त लोगों के नेत्रों को हरण कर रहे थे । ६२ क्या वह स्वर्गपुर पर चढ़ाई करेगा, ऐसा सोचकर देवता भयभीत हो रहे थे । ६३ वह आज स्वयं युद्ध करेगा । दीन विशि श्रीराम के चरणों का भजन करता है । ६४

पञ्चत्रिंश छान्द—रावणर प्रथम जुद्ध

राग—बसन्त भैरव

चतुरंग बळ घेनि बिजय रावण।
जान चढ़ि बेढ़िछन्ति पुत्र पौत्रगण।
गड़र उत्तर द्वारे बाहार होइले।
प्रळयकाळरे जेन्हे सिन्धु उछुळिले।
रथ गज लक्ष लक्ष पदाति अशेष।
अश्वबृन्द महिषि आबोरि राजा पाश॥ १ ॥
देखिण श्रीरामचन्द्र बिभीषणे चाहिँ।
बोलन्ति देख असुरे आसुछन्ति बाहि।
अनेक रथ संगरे आसे केउँ दैत्य।
जण जण करि आसु अग्रे कह सत्य।
शुणि बिभीषण अंगुळि देखाइ कहे।
कम्पन असुर रथ चढ़ि आगे धाएँ॥ २ ॥
देख देख देब मध्यरे असुरेश्वर।
बिजेकरि आसइ कनक रहुबर।
दशशिर दश मुकुट मणिमय।
गण्डे झलकन्ति मकरकुण्डळ चय।

छान्द ३५—रावण का प्रथम युद्ध

राग—वसन्त भैरव

चतुरंगिनी सेना सजाकर रावण चल पड़ा। उसके पुत्र तथा पौत्रगण रथ पर चढ़कर उसे घेरे थे। जिस प्रकार प्रलयकाल में समुद्र उमड़ता है, उसी प्रकार वह दुर्ग के उत्तर द्वार से निकल पड़े। राजा के चारों ओर रथ, हाथी लाखों की संख्या में, असख्य पैदल सैनिक, घोड़ों तथा भैंसों के समूह भरे पड़े थे। १ यह देखकर श्रीराम ने विभीषण की ओर दृष्टिपात करते हुए कहा कि देखो राक्षस लोग बढ़ते चले आ रहे हैं। अनेक रथों के साथ ये कौन से दैत्य आ रहे हैं ? तुम शीघ्र ही हमसे आगे आकर इनमें से एक-एक का परिचय दो। यह सुनकर विभीषण ने उँगली से दिखाकर कहा कि कम्पन दैत्य रथ पर चढ़कर आगे दौड़ रहा है। २ देखिए प्रभु ! मध्य में सोने के रथ पर चढ़कर असुरसम्राट् रावण आ रहा है। उसके दश सिरों में दश मणि-जटित मुकुट हैं। गंडस्थल पर मकरकुण्डल झिलमिला रहे हैं। दश

दशभुजरे कमाण दशभुजे बाण ।
श्याम मेघ प्राय कान्ति देब ए राबण ॥ ३ ॥
राबण दक्षिण पाशे शक्राजित बीर ।
बाम पारुशरे रथ चढ़ि महोदर ।
नरान्तक देबान्तक अछन्ति पाशर ।
ताहांक पाशरे आसु अछइ त्रिशिर ।
कुम्भ निकुम्भ ए देब कुम्भकर्ण सुत ।
अतिकाय महाकाय करइ बेदान्त ॥ ४ ॥
साबधान होइ देब करिबा समर ।
जेउंमाने आसुछन्ति महामहा बीर ॥
शुणि श्रीराम बोलन्ति एहि लंकपति ।
एहि चोराइ आणिछि जनकदुहिति ॥
एते बोलि लक्ष्मणकु पाशकु राइले ।
प्रतिज्ञा करि कोदण्डे गुण चढ़ाइले ॥ ५ ॥
ऋक्ष राक्षस मर्कट होइलेक भेट ।
मिशामिशि होइ गोळ कले बेनि थाट ॥
जूथपति माने रथीमानंक संगरे ।
जुद्ध कले बेनि बेनि एक आरकरे ॥
शाळशिळ अस्त्रमान करुछन्ति बृष्टि ।
केहि काहाकु न छाड़े होइ एका दृष्टि ॥ ६ ॥

भुजाओं में धनुष और दश में बाण हैं। हे देव! नीलमेघ के समान कांति वाला यह रावण है। ३ रावण के दक्षिण की ओर पराक्रमी इन्द्रजित् और बायीं ओर रथ पर चढ़ा हुआ महोदर है। उसके समीप ही नरान्तक तथा देवान्तक हैं। उनके पास त्रिशिरा आ रहा है। हे देव! यह कुम्भकर्ण के पुत्र कुम्भ और निकुम्भ हैं। अतिकाय और महाकाय वेदों का अंत करनेवाले हैं। ४ हे देव! सावधान होकर युद्ध करेंगे, क्योंकि यह महान-महान योद्धा चले आ रहे हैं। यह सुनकर श्रीराम ने कहा, क्या यही लंकेश है जो जनककुमारी को चुराकर ले आया है। इतना कहकर उन्होने लक्ष्मण को पास बुलाया और प्रतिज्ञा करते हुए कोदण्ड पर डोरी चढ़ायी। ५ भालू, वानर तथा राक्षसों की भिड़न्त हो गयी। दोनों सेनाओं ने आपस में भिड़कर युद्ध किया। यूथपति रथियों के साथ एक-दूसरे से युद्ध करने लगे। वृक्षों, शिलाओं और

लंकपति कि पाबनि शाळ शिळ घेनि ।
प्रहारन्ते राबण काटिला काण्डे बेनि ॥
बहु रण कळे बेनि सुग्रीब राबण ।
कोपे सुग्री हृदकु माइला एक बाण ॥
राबणर शरे सुग्री हृद गला फुटि ।
अज्ञान होइ पड़िले पृथिबीरे लोटि ॥ ७ ॥
एहा देखिण मारुति आग ओगाळिले ।
बज्र सम करि ताकु चापोड़े माइले ॥
क्षणके राबण तहिँ होइ गला मोह ।
मोह तेजि चापोड़े माइला हनु देह ॥
पुणि बिधाए मारिण राबण उरकु ।
आपणे निन्दइ हनु आपणा करकु ॥ ८ ॥
राबण मुथे माइला पुणि हनु शिर ।
मूर्च्छित होइ पड़िला तेड़े महाबीर ॥
एहा देखि नीळ सेनापति ओगाळिले ।
बज्र सम करि ताकु शिळेक माइले ॥
किंचित काण्डरे ता काटिला लंकपति ।
नीळ राबण रथरे उठिले तड़ति ॥ ९ ॥

अस्त्रों की वर्षा कर रहे थे । एक-एक पर दृष्टि लगाये, कोई किसी को नहीं छोड़ रहा था । ६ हनुमान ने शाल और शिला लेकर लंकापति-रावण पर प्रहार किया । रावण ने उन्हें दो बाणों से काट डाला । सुग्रीव और रावण दोनों ने बहुत युद्ध किया । उसने क्रुद्ध होकर सुग्रीव के हृदय में एक बाण मारा । रावण के बाण से सुग्रीव का हृदय फट गया और वह अचेत होकर पृथ्वी पर लोट गये । ७ यह देखकर हनुमान ने आगे से ललकारते हुए उसके वज्र के समान थप्पड़ मारा, एक क्षण के लिए वहाँ रावण मूर्च्छित हो गया । चेत आने पर उसने हनुमान के शरीर पर एक थप्पड़ मारा । फिर रावण के हृदय में एक मुक्का मारकर हनुमान स्वयं अपने हाथ की निन्दा करने लगे । ८ फिर रावण ने हनुमान के सिर पर एक मुक्का जमाया जिससे इतने बड़े पराक्रमी हनुमान मूर्च्छित होकर गिर पड़े । यह देखकर सेनापति नील ने ललकारते हुए वज्र के समान एक शिला से उस पर प्रहार किया, जिसे लंकापति रावण ने बाण से काट डाला । नील शीघ्रता के साथ रावण के रथ पर

क्षुद्ररूप होइ तार देहरे उठिले ।
मुकुट झिकिण तार सेन्हा बिदारिले ।।
पुणि तार रथध्वज उपररे बसि ।
देखि राम नीळकु प्रशंसा कले हसि ।।
देखिण राबण क्रोधे अग्निशर घेनि ।
मंत्री पेशन्ते पड़िला नीळर मूर्द्धनि ।। १० ।।

पुत्र बोलि अग्नि तार जीबन रखिले ।
क्षणे परिजन्ते से भुमिरे मोहगले ।।
एहा देखिण श्रीराम होइले बाहार ।
सानुज जणाइले जोड़िण बेनि कर ।।
भो देब मुँ राबणर संगरे जुझिबि ।
केते पराक्रम तार अछइ बुझिबि ।। ११ ।।

शुणि रघुनाथ ताहा सनमत कले ।
लक्ष्मण रामकु पच्छ करि आग हेले ।।
लक्ष्मणकु देखिण कलाक शर बृष्टि ।
लक्ष्मण ताहा किंचित काण्डे देले काटि ।।
बेनि जन प्रतिशर घेनिण काटन्ति ।
अनेक कपि असुर संग्रामे लोटन्ति ।। १२ ।।

चढ़ गया । ९ वह छोटा रूप धारण करके उसके शरीर पर चढ़े और उसके मुकुट को फेंककर उन्होने उसके वक्ष को विदीर्ण कर दिया । फिर वह उसके रथ के ध्वज के ऊपर जा बैठे । यह देखकर श्रीराम ने हँसते हुए नील की प्रशंसा की । यह देखकर रावण ने अग्निबाण लेकर उसे अभिमन्त्रित करके छोड़ा जो नील के सिर पर जाकर गिरा । १० अग्नि-पुत्र होने के कारण अग्नि ने उसके जीवन की रक्षा की । क्षण पर्यन्त वह पृथ्वी पर बेहोश पड़े रहे । यह देखकर श्रीराम निकल पड़े, तभी छोटे भाई लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर उनसे निवेदन किया कि हे देव ! मैं रावण के साथ युद्ध करूंगा और मैं देखूंगा कि उसके पास कितना बल है । ११ यह सुनकर श्रीराम ने इस पर अपनी सम्मति दे दी । लक्ष्मण राम को पीछे छोड़कर आगे बढ़ गये । लक्ष्मण को देखकर उसने बाणों की वर्षा की । लक्ष्मण ने उन्हें कुछ बाणों से काट दिया । दोनों ही एक-दूसरे के बाण काट रहे थे । अनेकानेक वानर और राक्षस युद्ध में लोट रहे थे । १२ लक्ष्मण रावण के मर्मस्थान पर बाण छोड़ रहे थे ।

लक्ष्मण बिन्धे रावण मर्मस्थाने शर।
सेन्हा फुटिण रुधिर बहे झर-झर॥
ब्रह्मा देला शर से लक्ष्मणकु बिन्धिला।
प्रति शर न मानि से कपाळे पड़िला॥
ज्ञान हराइण धनुमुष्टि छाड़ि देले।
ततक्षणे ज्ञान पाइ धनु आमंचिले॥ १३॥
रावण उपरकु पेशिले पाञ्च काण्ड।
धनु काटि सेन्हा तार कले खण्ड खण्ड॥
धनु छाड़िण रावण धइला शकति।
मारन्ते पड़िला आसि लक्ष्मणर छाति॥
पड़िले भुमिरे बीर होइण अज्ञान।
रथुँ उतुरि ताहाकु तोळे दशानन॥ १४॥
बिश भुजे आकर्षिण न पारिला तोळि।
बाहुड़ि रथरे वसि लज्जा पाइ भाळि॥
शकति बाहुड़ि तार रथरे होइला।
लक्ष्मणकु मारुति तोळिण घेनि गला॥
श्रीराम धनु धरिण हेले अग्रसर।
हनु बोले भो देब मो कन्धे बिजे कर॥ १५॥

वक्ष फटने से रक्त झर-झर करके वह रहा था। तब रावण ने ब्रह्मा द्वारा दिये हुए बाण से लक्ष्मण पर आघात किया। इसी बाण से बिना कटे हुए वह लक्ष्मण के मस्तक पर लगा। अचेत होकर उनका धनुष मुट्ठी से गिर गया, परन्तु उसी क्षण चेतना पाने पर उन्होंने धनुष उठा लिया। १३ उन्होंने रावण पर पांच बाण छोड़े जिनसे उसका धनुष कट गया और उसके वक्ष के टुकड़े के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। धनुष छोड़कर रावण ने शक्ति उठा ली और प्रहार करने पर वह लक्ष्मण की छाती पर आ लगी। पराक्रमी लक्ष्मण अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। रथ से उतरकर दशानन उन्हें उठाने लगा। १४ बीस भुजाओं से खींचकर भी वह उन्हें उठा न सका। वह लौटकर लजाते हुए सोच करता हुआ रथ पर बैठ गया। उसकी शक्ति भी लौटकर उसके रथ पर पहुँच गयी। हनुमान लक्ष्मण को उठा ले गये। श्रीराम धनुष धारण करके आगे बढ़े। हनुमान ने कहा, हे देव! मेरे कंधे पर विराजमान हों। १५

हनुमन्त कन्धरे बिजये दाशरथि ।
बेनि कन्धे शोभा काण्ड अक्षय भारती ॥
राम राबण सम्मुखे कले महारण ।
गरुड़ पिठिरे कि बिजय नारायण ॥
मोते जेते शर से बिन्धइ लंकपति ।
प्रति अस्त्र करि राम समस्त छेदन्ति ॥ १६ ॥
हनुकु अनेक काण्ड माइला निठाइ ।
ताहा देखिण श्रीराम क्रोधभर होइ ॥
काण्डरे काटिले राम रथ अश्व चारि ।
सारथि मारि राबण हृदरे प्रहारि ॥
मोह जाइण राबण होइला बिरथि ।
देखि मने मने बिचारन्ति दाशरथि ॥ १७ ॥
आज आम्भे क्षमा करि छाड़िबा एहाकु ।
बिरथि होइछि जाउ आपणा पुरकु ॥
एमन्त बिचारु पळाइला लंकेश्वर ।
राजांकु सम्भाळि घेनि गलेक असुर ॥
राम लक्ष्मण सुग्री कि आश्वासना कले ।
बोलइ बिशि समस्ते चेतना पाइल ॥ १८ ॥

दशरथ-नन्दन श्रीराम हनुमान के कन्धे पर चढ़ गये। उनके दोनों कन्धों पर अक्षय-तूणीर बाणों से भरा हुआ शोभा पा रहा था। उन्होंने रावण के समक्ष विकराल युद्ध किया। लगता था मानों गरुड़ की पीठ पर भगवान विष्णु ही उपस्थित हो गये हों। लंकापति रावण जितने भी बाण राम पर छोड़ रहा था, उन सभी को श्रीराम प्रतिबाण से काट देते थे। १६ उसने हनुमान को निशाना बनाकर अनेक बाण छोड़े जिसे देखकर श्रीराम क्रोध में भर गये। उन्होंने रावण के रथ-सहित चारों घोड़ों को बाण से काट दिया और सारथी को मारकर रावण के हृदय पर प्रहार किया। चेतनाशून्य होकर रावण विरथ हो गया। यह देखकर श्रीराम ने अपने मन में विचार किया। १७ आज हम इसे क्षमा करके छोड़ देंगे। यह रथ-विहीन हो गया है। यह अपने नगर को चला जाए। ऐसा विचार करते-करते लंकेश्वर रावण भागा। राक्षस राजा को सँभालकर साथ लेकर चले गये। राम ने लक्ष्मण और सुग्रीव को शांत किया। विशि कहता है कि सबको चेतना लौट आयी। १८

षट्त्रिंश छान्द—कुम्भकर्ण निद्रा भंग

राग—चोखि

सिंह मुखुँ गला गज, प्रायेक असुरराज,
पळाइण लंकारे प्रबेश होइला।
समस्त असुरराइ, मने महा भय पाइ,
पूर्ब कथा मान तांक आगे कहिला।
नर बानर मो बइरी। तांक सकाशे
गला मो ए लंका शिरी॥ १॥
बेदमती कला कोप, पूर्बे देइथिला शाप,
मोर जोगु नाशजिबु आरे असुर।
ब्रह्मा कहि थिले मोते, जिणन्ता नोहिबे तोते,
जुबती सकाशुँ मृत्यु हेब तोहर।
रम्भा मोते शाप बिहिला। आम्भ स्तिरी
जोगु तु मरिबु बोइला॥ २॥
रघुबंश दण्डधर, आरण्यक नृपबर,
ताहाकु मारन्ते शाप मोते बिहिला।
मोहर बंशरे जात, होइ तोते करु हत,
एमन्त शाप देइ से स्वर्गकु गला।

छान्द ३६—कुम्भकर्ण की निद्रा-भंग

राग—चोखी

सिंह के मुख से निकले हुए हाथी के समान राक्षसराज रावण भागकर लंका में जा पहुँचा। उसने सभी राक्षसों को बुलाकर भयभीत मन से पहले की बातें उनके समक्ष कहीं। वह बोला, नर और वानर हमारे शत्रु है और उन्हीं के कारण हमारी इस लंकापुरी की श्री समाप्त हो गई। १ पूर्वकाल में वेदमती ने कुपित होकर मुझे शाप दिया था कि मेरे कारण ही अरे राक्षस! तेरा नाश होगा। ब्रह्मा ने मुझसे कहा था कि तुझे जीतनेवाला कोई नही होगा। परन्तु युवती के कारण ही तेरी मृत्यु होगी। रम्भा ने भी मुझे शाप दिया था कि हम स्त्रियों के कारण ही तुम मरोगे। २ रघुवंश के दण्डधर नृपश्रेष्ठ आरण्यक को मारते समय उन्होंने भी मुझे शाप दिया था कि मेरे वश में उत्पन्न होकर कोई तुम्हारा वध करेगा। इस प्रकार का शाप देकर वह स्वर्ग को चले गये थे।

जेते जेते कलि मुँ तप। से पुण्य
केणिकि गला दिशिला पाप ॥ ३ ॥
मोर घोर तप देखि, धाता होइ बहु सुखी,
जेते बर मागिलि मुँ तेते से देले।
गन्धर्ब किन्नर जक्ष, नाग सुरासुर मुख्य,
एमानंके बध्य तु नोहिबु बोइले।
नर बानर मो अशन। एमानंकु
तुच्छ करि मणिलि मन ॥ ४ ॥
बिभीषण हित बोल, से काळे होइला शळ,
बृद्ध बृद्ध असुरंक बोल न कलि।
नर बानरंक हाते, मो पुत्रे मले बिअर्थे,
आपणे जाइण पराभब पाइलि।
बज्रजिणि ताकर बाण। मानब
नुहन्ति सेहि राम लक्ष्मण ॥ ५ ॥
इन्द्र आदि सुरगण, जिणिलि करि मुँ रण,
तिनि भुबनरे एका बिजयी हेलि।
नाश गला पूर्ब तप, पड़िला नन्दिर शाप,
तेणु कपि करे पराभव पाइलि।
नर कपि असुर मारे। पूर्बे न
थिला कथाहिँ दइब करे ॥ ६ ॥

जितना-जितना मैंने तप किया, वह पुण्य न जाने कहाँ चला गया। केवल पाप ही दिखाई पड़ा। ३ मेरी घोर तपस्या को देखकर ब्रह्मा अत्यन्त प्रसन्न हुए। मैंने जितने वर माँगे, उन्होंने उतने ही दिए। उन्होंने कहा कि गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, मुख्यत: नाग, सुर, असुर इनसे तुम्हारी मृत्यु नही होगी। नर और वानर तो मेरे भोजन हैं। इन्हें मैंने अपने मन में तुच्छ समझा। ४ विभीषण के हितकारी वचन उस समय शूल जैसे लगे। वयोवृद्ध राक्षसों का भी कहना नही माना। मेरे पुत्र नर और वानरों के हाथ से व्यर्थ में मारे गये। मुझे स्वयं जाकर उनसे पराभव प्राप्त हुआ। उनका बाण वज्र को जीतनेवाला है। वह राम-लक्ष्मण मानव नहीं हैं। ५ मैं युद्ध करके इन्द्र आदि देवताओं को जीत कर तीनों लोकों में एकमात्र विजयी बना। वह पूर्व तपस्या नष्ट हो गई। मुझे नन्दी का शाप लग गया। इसी से वानर के हाथों मुझे पराभव

एबे भ्राताकु उठाअ, नाना भक्षमान दिअ,
नर बानर मानंकु करु निपात ।
ता बिनु मोहर मान, फेड़िबाकु नाहिँ आन,
एक मात्र सेहि मोर अटइ हित ।
शोइबार नब दिबस । मोते
होइलाणि एबे जुग अशेष ।। ७ ।।
शुणि सर्ब परिजन, कुम्भकर्णर सदन,
द्वारे उभा होइ भितरकु न गले ।
जेउँ माने बळे गले, भितरे जाइ पशिले,
निःश्वास पबने बहु दूरे पड़िले ।
बळबन्त असुरमाने । रहिले
ताहार सदन सन्निधाने ।। ८ ।।
सहस्रेक शंखभेरी, घण्टा मर्दळ महुरी,
टमक निशाण कर्णपाशे बाइले ।
केहि घेनि लौहदण्ड, प्रहारन्ति तार पिण्ड,
केहि पाषाण त नेइ अंगे माइले ।
निद्रा जहुँ नोहिला भंग । बहु
प्रहार करन्ति ताहार अंग ।। ९ ।।

मिला । नर और वानर राक्षसों को मारें, यह तो पहले नहीं था । भाग्य करा रहा है । ६ अब भाई को उठाओ । उसे अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थ दो । वह नर और वानरों का नाश करे । उसके बिना मेरे मान को बचानेवाला अन्य कोई नहीं है । वही एकमात्र मेरा हितैषी है । उसके सोये हुए नौ दिन मेरे लिए असंख्य युग के समान हो गए । ७ यह सुनकर समस्त परिजन कुम्भकर्ण के द्वार पर खड़े हो गये । कोई भीतर नहीं गया । जो लोग बल से भीतर घुस गये थे, वह सब निःश्वास की वायु से बहुत दूर जा गिरे । बलवान राक्षससमुदाय उसके महल के निकट खड़े रहे । ८ हजारों शंख, भेरी, घण्टा, ढोल, मोहर, टमक, निशाण कानों के पास बजाए गये । कोई लौहदण्ड से उसके शरीर को पीट रहे थे । कोई उसके अंगों पर पत्थर पटक रहा था । परन्तु जब फिर भी निद्रा भंग नहीं हुई तो उसके अगों पर नाना प्रकार से प्रहार करवाने लगे । ९ उसके महल का द्वार एक योजन का था । सुदीर्घ

जोजने ता पुर द्वार, दीर्घ प्रति एकाकार,
तहिँ बहु उपद्वारमान बाढ़िले ।
पाक मांस गिरि जिणि, कुढ़ाइले दैत्य आणि,
सहस्रे पोढ़ुअ छेळि पाशे छाड़िके
बेनि सस्रभार मदिरा । सहस्रे
भार रुधिर बाढ़िले बीरा ।। १० ।।
कर्ण जळ पूराइले, अंगे गज मड़ाइले,
अंगे मोड़िण उठिला असुर बीर ।
हाइ मारि टेकि मुख, मागइ आण रे भक्ष,
एमन्त बोलन्ते ताकु देले आहार ।
राम पादपंकजे स्थिति । तहिँ
षट्पद दीन बिशिर मति ।। ११ ।।

सप्तत्रिंश छान्द

राग–मुखावरी

सारि रन्धन मांस भोजन । पच्छे कलाक रुधिर पान ।
गिलि देला बहु पशुमान । गर्भ पुराइ कला भोजन ।। १ ।।

दीवार भी इसी आकार की थी । वहीं बहुत से उपद्वार घिरे हुए थे । दैत्यों ने पके हुए मांस के पर्वताकार ढेर इकट्ठे कर दिये । एक हजार पड़वे तथा बकरे उसके पास छोड़ दिये । दो हज़ार भार शराब तथा एक हज़ार भार रक्त बीर लोग ले आए थे । १० कान में पानी भर देने पर और शरीर को हाथियों द्वारा कुचलने पर वह पराक्रमी असुर ऐंड़ाकर उठा । उसने मुख उठाकर जमुहाई ली । "अरे भक्ष्य लाओ" ऐसा बोलने पर उसे आहार दिया गया । दीन विशि की मति भ्रमर के रूप में श्रीरामचन्द्रजी के चरण-कमलों में स्थित है । ११

छान्द—३७

राग–मुखवरी

पके हुए मांस का भोजन समाप्त करके उसने रक्तपान किया । बहुत से पशुओं को वह निगल गया । उसने पेट भरकर भोजन किया । १

बेनि सहस्र कळस सुरा । पान कला से असुर बीरा ।
दिव्य बेश दिशे होइ तोरा । तार मानस करिण धीरा ॥ २ ॥
पचारइ से असुर राज । किपाँ भांगिल मो निद्रा आज ।
कह कह मोर किस कार्य्य । दिशुअछ समस्ते निस्तेज ॥ ३ ॥
सबु कहिले असुरगण । देब लका हेला रण भण ।
सुग्री सहिते राम लक्ष्मण । गड़ बेढ़िण करन्ति रण ॥ ४ ॥
जेणु माइले बहु असुर । एहि कारणरे दशशिर ।
निद्रा भंगाइले देब तोर । राम लक्ष्मणकु एबे मार ॥ ५ ॥
शुणि बहुत प्रतिज्ञा कला । राम मारिबि निश्चे बोइला ।
आग कपि खाइबि बोइला । एते बोलिण शूळ धइला ॥ ६ ॥
कर जोड़ि कहे परिजने । देब मरन्ति सिना से माने ।
आग जाअ राजा सन्निधाने । कि बिचारिबे अबा से मने ॥ ७ ॥
एते कहन्ते होइला उभा । लंकागड़कु दिशिला शोभा ।
सिन्धु मन्थन कारणे किबा । मन्दर गिरि आणन्ति देब ॥ ८ ॥
सूर्ज्य मण्डळ छुइँछि शिर । शोहे मुकुट कुण्डळ हार ।
मुख दिशे बड़ भयंकर । देखि पळाइले बनचर ॥ ९ ॥

उस पराक्रमी असुर ने दो हज़ार घड़े मदिरा पी ली । उसका प्रखर तेजोमय वेश दिखाई दे रहा था, उसे देखकर रावण के मन में धीरज बंधा । २ उसने पूछा कि असुरराज रावण ने आज मेरी निद्रा किस कारण से भंग कराई है ? बताओ मेरे लिए क्या कार्य है ? सभी निस्तेज दिखाई दे रहे हो । ३ सभा राक्षसों ने कहा, हे देव ! लंका नष्ट-भ्रष्ट हो गई है । सुग्रीव के सहित राम और लक्ष्मण दुर्ग को घेरकर युद्ध कर रहे हैं । ४ इसमें बहुत से राक्षस उनके द्वारा मारे गये । हे देव ! इसी कारण से दशानन ने आपकी निद्रा भंग करा दी । अब आप राम और लक्ष्मण को मारें । ५ सुनते ही उसने बहुत प्रतिज्ञा की । उसने कहा कि निश्चय ही राम का वध करूँगा । पहले वानरों का भक्षण करूँगा । ऐसा कह कर उसने शूल उठा लिया । ६ तब परिजनों ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! अब तो वह मरेंगे ही । पहले आप राजा रावण के समीप जाएँ, नहीं तो वह अपने मन में क्या सोचेंगे ? ७ ऐसा कहते ही वह उठकर खड़ा हो गया । लंका के दुर्ग में वह सुशोभित होने लगा । लगता था मानो सागर-मन्थन के लिए देवता मन्दराचल पर्वत को ला रहे हों । ८ उसका शिर सूर्यमण्डल का स्पर्श कर रहा था । मुकुट-कुण्डल तथा हार शोभा पा रहे थे । उसका मुख अत्यन्त भयंकर दिखाई दे रहा

लंकागड़र हेम प्राकार। दिशे कटि मेखळा प्रकार।
पदाघाते मही थर हर। चालि आसइ लंकादाण्डर ।। १० ।।
बिभीषणे चाहिँ राम भाषे। लंकपहि ए लंकारे के से।
मेरु शृङ्ग प्राय शिरे दिशे। कपि पळान्ति एहार त्रासे ।। ११ ।।
बिभीषण कहे जोड़ि कर। देब एटि राबण सोदर।
एहा प्राय नाहिं आउ बीर। भये उठाइले दशशिर ।। १२ ।।
जात होइण असुर बीर। कोटि कोटि खाइबा ए नर।
कोप कले एणु बज्रधर। बज्र प्रहारिले एहा उर ।। १३ ।।
शक्र गज गन्त उपाड़िला। सेहि दन्ते ताकु प्रहारिला।
देखि पितामह शाप देला। शोइथाअरे बोलि बोइला ।। १४ ।।
शुणि राबण निश्चय कला। षड़मासे उठिब बोइला।
एबे जुद्धकु उठि अइला। बोले बिशि ता भ्राता कहिला ।। १५ ।।

था। उसे देखते ही बनचर भागने लगे। ९ लंका दुर्ग की स्वर्णमयी प्राचीर उसकी कटि में मेखला जैसी दिखाई दे रही थी। उसके पदाघात से पृथ्वी थरथरा उठी। वह लंका के मार्ग पर चला आ रहा था। १० बिभीषण की ओर देखकर श्रीराम ने पूछा कि हे लंकेश ! यह लंका में कौन है ? इसका शिर मेरुपर्वत के शिखर-सा दिखाई दे रहा है। इसके डर से वानर भाग रहे हैं। ११ विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! यह रावण का भाई है। इसके समान और कोई बीर नहीं है। भयभीत होकर दशानन ने इसे उठा दिया है। १२ यह पराक्रमी असुर आकर कोटि-कोटि मनुष्यों को खा जायेगा। अतएव वज्रधर इन्द्र ने कुपित होकर इसके वक्ष पर वज्र से प्रहार किया। १३ इसने इन्द्र के हाथी ऐरावत का दाँत उखाड़कर उसी से इन्द्र पर प्रहार किया। यह देखकर ब्रह्मा ने शाप दिया, "अरे ! तू सोता रह।" उन्होंने ऐसा कहा। १४ यह सुनकर रावण ने निश्चित कर दिया कि अब तुम छः महीने मे उठना। बिशि कहता है कि वह भाई के कहने पर अब युद्ध के लिए उठकर आ रहा है। १५

अष्टत्रिंश छान्द

राग--केदार कामोदी

राबण पुरे कुम्भकर्ण प्रबेश ।
उठिण मान्य कले सर्ब राक्षस जे ।
होइला राबणकु से प्रणिपात ।
कोळ करि पाखे बसाइला दैत्य जे ।। १ ।।
शोक मुख होइ कहे लंकपति ।
एते काळे पड़िला घोर बिपत्ति जे ।
राम लक्ष्मण दशरथ नन्दन ।
कान्ता घेनिण थिले निर्जन स्थान जे ।। २ ।।
छेदिले सूर्पणखा नासा श्रबण ।
माइले त्रयशिर खर दूषण जे ।
एणु तार बनिता आणिलि मुहिँ ।
अशोक बनिकारे अछइ थोइ जे ।। ३ ।।
बाळि मराइ हेले सुग्रीर मित ।
लंका खोजिला आसि कपि ता दूत जे ।
अक्षयकु मारिण लंका पोड़िला ।
बानर बळ सैन्य घेनि अइला जे ।। ४ ।।

छान्द—३८

राग—केदार कामोदी

कुम्भकर्ण के रावण के महल में पहुँचने पर सभी राक्षसों ने उठकर उसका सम्मान किया। उसने रावण को प्रणाम किया। रावण ने उसे गोद में समेटकर पास बैठा लिया। १ लंकापति रावण ने दुखी होकर उससे कहा, इस समय घोर विपति आ गई है। दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण अपनी स्त्री को लेकर निर्जन जनस्थान में थे। २ उन्होंने शूर्पणखा के नाक-कान काट दिये तथा खर-दूषण और त्रिशिरा को मार डाला। इसलिए मैं उनकी स्त्री ले आया और उसे अशोक वन में रख दिया है। ३ बालि को मरवाकर सुग्रीव उनका मित्र बन गया है। उसके दूत एक वानर ने आकर लंका में खोज की। उसने अक्षय को मारकर लंका जला दी। अब वह वानर-सेना को लेकर आ गया है। ४ सागर

सागरे सेतु बान्धि पार होइले ।
एबे आसिण लंका बेढ़ि रहिले जे ।
माइले पुत्र नाति अनेक मोर ।
भस्म कले मोहर कनक पुर जे ॥ ५ ॥
तु त सर्बदा शयनरे रहिलु ।
सम्पद बिपदकु साहा नोहिलु रे ।
एबे मुँ भय पाइ तोळिलि तोते ।
राम मारि अभय कर तु मोते जे ॥ ६ ॥
राबण बदनरु शुणि एमन्त ।
कुम्भकर्ण कहिला नीति बृत्तान्त जे ।
राजा होइ किपाइँ अनीति कल ।
निरते पर जुबतीकि हरिल जे ॥ ७ ॥
एणु करि तुम्भंकु धर्म छाड़िला ।
सुकृत नाश जाइ पाप बढ़िला जे ।
एबे कि हेब आउ कहिले मोते ।
अति अधर्म, धर्म सहिब केते जे ॥ ८ ॥
एकाकी काळे त समर न कल ।
प्राणे न मारि ता जुबती आणिल जे ।
एबे से कपिराज साहा पाइला ।
तेणु करि एठाकु सिना अइला से ॥ ९ ॥

में सेतु बनाकर पार हुए हैं। इस समय आकर लंका को घेरकर जम गये हैं। मेरे अनेक पुत्रों और नातियों को मार दिया है तथा हमारे स्वर्ण-नगर को भस्म कर दिया है। ५ तुम तो सदा सोते रहे। सम्पत्ति और विपत्ति में सहायक नहीं बने। इस समय मैंने डरकर तुम्हें उठाया है। तुम राम का वध करके मुझे अभय करो। ६ रावण के मुख से ऐसी बात सुनकर कुम्भकर्ण ने नीति की बात कही। आपने राजा होकर ऐसी अनीति क्यों की ? एकान्त में दूसरे की स्त्री हर लाये। ७ इसलिए धर्म ने तुम्हें त्याग दिया है। पुण्यों का नाश होने से पाप बढ़ गये है। अब और मुझसे कहने से क्या होगा ? धर्म अत्यधिक अधर्म को कहाँ तक सहन करेगा। ८ जब वह अकेला था तब तो तुमने उससे युद्ध नहीं किया। उसे प्राण से न मारकर उसकी स्त्री ले आए। इस समय उन्हें कपिराज की सहायता मिल गई है। इसीलिए वह यहाँ आया

निश्चे जाणिलि बुद्धि हेला बिनाश।
नीति कहिबा मंत्री नाहान्ति पाश जे।
नारी चोराइबार नोहे भूषण।
बीरपणकु सिना होए दूषण हे ॥ १० ॥
एमन्त शुणि कहे से महोदर।
राजामानंक स्वइच्छा व्यबहार जे।
लंकपतिकि तुम्भे कहुछ नीति ॥
पाण्डित्यरे जे बृहस्पतिक जिति जे ॥ ११ ॥
राजा जाहा करइ सेहि से बिधि।
सकळ लोकर से हुए प्रसिद्धि जे।
राजा आज्ञा अबज्ञा करि नुहइ।
अबज्ञा कले कन्धे शिर न थाइ जे ॥ १२ ॥
कुम्भकर्ण कहे शुण महोदर।
तुम्भ मंत्री पणे हेला एते दुर जे।
राबणकु कल सकामे बिनाश।
आम्भकु कहुथाअ बसिण पाश जे ॥ १३ ॥
देखिण राबणर क्रोध बदन।
पुणि कहइ हसि साम्य बचन जे।
मारिबि एका राम लक्ष्मण जति।
जोद्धामाने मोहर न थिबे कति जे ॥ १४ ॥

है। ९ मैं निश्चित रूप से समझ गया कि तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है। नीति बतानेवाले मंत्री तुम्हारे पास नहीं हैं। स्त्री चुराना गुण नहीं है, यह तो वीरत्व के लिए दोष है। १० ऐसा सुनकर महोदर ने कहा कि राजाओं का व्यवहार अपनी इच्छा के अनुसार होता है। लंकापति से तुम नीति कह रहे हो, जिसने पाण्डित्य में बृहस्पति को जीत लिया है। ११ राजा जैसा करता है वह ही विधि बन जाता है और वह ही समस्त लोक में प्रसिद्ध हो जाता है। राजाज्ञा की अवज्ञा नहीं की जा सकती। आज्ञा-उल्लंघन करने से कन्धे पर सिर नहीं रह पाता। १२ कुम्भकर्ण ने कहा, अरे महोदर ! सुनो। तुम्हारे मंत्री रहते हुए बात इतनी दूर तक जा पहुँची। जान-बूझकर रावण का विनाश करा डाला और पास बैठकर हमको ही कह रहे हो। १३ रावण के क्रुद्ध मुख को देखकर तब वह हँसते हुए सीधी बात करने लगा। मैं राम और लक्ष्मण दोनों तपस्वियों को एक

एहा शुणिण महोदर कहिला ।
ए कथा तुम्भ बिचारकु अइला जे ।
एका होइण तुम्भे करिब रण ।
दिशिलाणि तुम्भर बिबेक पण जे ।। १५ ।।
एहा शुणि रावण सन्तोष हेला ।
असुर बळ घेनि जाअ बोइला जे ।
अंगे खंजिला तार बहु भूषण ।
दीन बिशि श्रीराम पादे शरण जे ।। १६ ।।

एकोनचत्वारिंश छान्द—कुम्भकर्ण वध

राग–मंगळगुज्जरी

रावणकु ओळगिण कुम्भकर्ण बीर ।
शूळ घेनि समरकु होइला बाहार ।
उत्पातमान जात अदभुते हेला ।
आकाशरु संतत रुधिर बरषिला ।। १ ।।
पृष्ठरे श्रृगाळ धाइँ करुछन्ति रड़ि ।
शिरोपरे गृद्धपक्षी मांस घेनि उड़ि ।।

बाण से मार डालूंगा। मेरे पास योद्धा लोग नहीं रहेंगे। १४ यह सुनकर महोदर बोला कि यह बात तुम्हारे विचार में आ गयी। तुम अकेले ही युद्ध करोगे, इसी से तुम्हारा विवेकीपन दिखाई देने लगा। १५ यह सुनकर रावण प्रसन्न होकर बोला कि राक्षस-सेना साथ में ले जाओ। उसके शरीर में नाना प्रकार के आभूषण सजा दिये गये। दीन बिशि श्रीराम के चरणों की शरण में है। १६

छान्द ३९—कुम्भकर्ण-वध

राग–मंगलगुर्ज्जरी

पराक्रमी कुम्भकर्ण रावण को प्रणाम करके शूल लेकर युद्ध के लिए बाहर निकला। विचित्र प्रकार के अपशकुन होने लगे। आकाश से निरन्तर रक्त की वर्षा होने लगी। १ पीछे श्रृगाल दौड़-दौड़कर चिल्लाने लगे। गृद्ध पक्षी मांस लेकर सिर पर उड़ने लगे। वह लंका की प्राचीर को

लंकार पाचेरी डेइँ बाहार होइले ।
चतुरंग बळ तार संगे संगे थिले ॥ २ ॥
बानर भल्लूक बळ देखि पळाइले ।
असुर सैन्य ताहांकु गोड़ाइ माइले ॥
जूथपति माने पालटिण कले रण ।
निरंतरे बृष्टि कले शाळ शिळागण ॥ ३ ॥
कोटि कोटि कपि कुम्भकर्ण मोर हेळे ।
पुणिहिँ पळान्ति कपि जीबन बिकळे ॥
ओगाळिले सुग्रीब अंगद हनुबीर ।
शाळ शिळ मारि तार अंग कले चूर ॥ ४ ॥
हनुमन्त बुलाइण माइला अचळ ।
छड़ाइण करि बेनिखण्ड कले शूळ ॥
शाळशिळ धरि दैत्य सुग्रीशिरे पिटि ।
मोह जान्ते सुग्रीबकु धइला साउँटि ॥ ५ ॥
दृढ़ करि बेनिकरे धरि कला कोळ ।
जे सने धरि निअन्ति कोळ करि बाळ ॥
बाहुड़िण लंकागड़े होइला प्रबेश ।
देखि ता लंका असुरे पूजिले बिशेष ॥ ६ ।

फ़ाँदकर बाहर निकला । चतुरंगिनी सेना उसके साथ-साथ थी । २ वानर और भालुओं का दल देखते ही भागने लगा । असुर-सेना उन्हें खदेड़-खदेड़कर मारने लगी । यूथपतियों ने पलटकर युद्ध किया और निरन्तर शस्त्र और शिलायें बरसाते रहे । ३ कुम्भकर्ण सहज में ही करोड़ों को मार रहा था । विकल जीवन से वानर फिर भागने लगे । सुग्रीव, अंगद तथा हनुमान ने आगे से उसे ललकारा और शाल तथा शिलाओं को मार कर उसके अंग को चूर कर दिया । ४ हनुमान ने पर्वत को घुमाकर मारा और उसके शूल को छीनकर उसके दो टुकड़े कर दिये । शाल और शिला को पकड़कर दैत्य ने सुग्रीव के शिर पर पटक दिया और अचेत होते हुए सुग्रीव को उसने समेटकर उठा लिया । ५ दृढ़ता के साथ दोनों हाथों से पकड़कर गोद में उठा लिया । जैसे लोग बच्चों को गोद में उठा लेते हैं । फिर वह लौटकर लंका दुर्ग में प्रविष्ट हुआ । उसे देखकर लंका के राक्षसों ने विशेष तौर से उसकी पूजा की । ६ हनुमान

हनु अंगद गोड़ाइछन्ति बेनि पाश ।
छड़ान्ति नाहिँ से राजा करिबाकु रोष ।।
एमन्त बिचारि संगे गोड़ाइण थिले ।
राबणपुरे पशिले आणिबा बोइले ।। ७ ।।
कपिराज पूर्ब पुण्यबळु ज्ञान पाइ ।
बेळि करे बेनि कर्ण नखरे छिण्डाइ ।।
दान्तरे नासिका छिण्डाइण उड़ि आसे ।
थोइण उभा होइला श्रीरामंक पाशे ।। ८ ।।
देखि रघुनाथ ताकु साधु साधु कले ।
गिरि शृङ्ग प्राय नासा श्रबण देखिले ।।
लज्जा पाइ बाहुड़िला पौलस्तिर नाति ।
ऋक्ष बानर बहुत खाइला बिकोति ।। ९ ।।
हेमगिरिरु कि गेरु बहे त्रयधार ।
से रूपे असुर मुखु बहइ रुधिर ।।
राम काहिं राम काहिँ बोलि आसे धाइँ ।
बेनि करे धरि बळ गिळइ चोबाइ ।। १० ।।
आस आस मानबरे जिबु आज काहिँ ।
खर दूषण बिराध कबन्ध नुहइ ।।

और अंगद दोनों तरफ़ पीछे-पीछे चले आ रहे थे । पर वह राजा को क्रोधित करने के कारण छीन नहीं रहे थे । इस प्रकार विचार करते हुए साथ-साथ चले आ रहे थे । रावण के महल में घुसकर ले आयेंगे, इस प्रकार वह कहने लगे । ७ पूर्वपुण्य के बल से कपिराज सुग्रीव चेतना पाकर दोनों हाथों से कुम्भकर्ण के दोनों कान नाखून से तोड़कर और दाँत से नाक काटकर श्रीराम के समीप रखकर खड़े हो गये । ८ यह देखकर रघुनाथजी ने उसे साधुवाद दिया । नाक और कान पर्वत के शिखर के समान दिखाई पड़ रहे थे । पुलस्त्य का नाती कुम्भकर्ण लज्जा पाकर लौट आया । उसने चुन-चुनकर बहुत से वानर और भालू खा डाले । ९ असुर के मुख से रक्त बह रहा था । लगता था जैसे हेमगिरि से गेरू की तीन धारायें बह रही हों । "राम कहाँ हैं !", "राम कहाँ हैं" कहते हुए वह दौड़कर आ रहा था और दोनों हाथों से सेना को पकड़कर चबाकर लील रहा था । १० अरे मानव ! आ । आज तू बचकर कहाँ जायेगा ! मैं

देखिण लक्ष्मण ताकु कले शर बृष्टि ।
पेलि आसे दनुज रामकु करि दृष्टि ॥ ११ ॥
देखिण बिरूप राम टह टह हसे ।
छिन्न कर्ण नासिका के आसे मोर पाशे ॥
एते बोलि शर बृष्टि कले तार अंग ।
हसइ असुर बीर नुहइ बिभंग ॥ १२ ॥
देखिण श्रीराम खरान्तक शर धरि ।
गुणे बसाइ असुर हृदकु प्रहारि ॥
से शर बाजन्ते दैत्य नोहिला बिभंग ।
परिघ बुलाइ पिटु थिला राम अंग ॥ १३ ॥
सेहि क्षणि बाछि राम बिन्धिलेक शर ।
परिघ सह काटिले असुरर कर ॥
बाम करे तरु उपाड़िण आसे धाइँ ।
आउ शरे मारि बाम करकु छिण्डाइ ॥ १४ ॥
अर्ध चन्द्र शररे छेदन्ते बेनि पाद ।
कोपरे असुर डेइँ करे घोर नाद ॥
डेइँ गिलन्ते कपिकु शरबृष्टि कले ।
तूणी प्राय तुण्ड देखि मुण्डकु काटिले ॥ १५ ॥

खर, दूषण, विराध और कबन्ध नहीं हूँ । लक्ष्मण ने उसे देखकर बाणों की वर्षा की । परन्तु वह राक्षस ठेलता हुआ राम को खोजता हुआ चला आ रहा था । ११ उसके कुरूप को देखकर राम ठठाकर हँसने लगे और बोले कि कटे हुए नाक-कान वाला यह मेरे ही पास आ रहा है । इतना कहकर उन्होंने उसके शरीर पर बाणों की वर्षा की, परन्तु पराक्रमी राक्षस क्षुब्ध न होकर हँस रहा था । १२ यह देखकर श्रीराम ने खर का अन्त करनेवाला बाण डोरी पर चढ़ाकर राक्षस के हृदय पर प्रहार किया । उस बाण के लगने से भी दैत्य नहीं घबराया । वह परिघ को घुमाकर श्रीराम के शरीर को पीट रहा था । १३ श्रीराम ने उसी क्षण छाँटकर बाण छोड़ा और परिघ के साथ असुर का हाथ काट दिया । बायें हाथ से वृक्ष उखाड़कर वह दौड़ा आ रहा था । श्रीराम ने दूसरा बाण छोड़कर उसका बायाँ हाथ भी काट दिया । १४ अर्धचन्द्रबाण से दोनों पैर छेदने पर क्रोध से राक्षस उछल-उछलकर घोर शब्द करने लगा । वानरों को उछल-उछलकर निगलने पर श्रीराम ने बाणों की वर्षा की और तूणीर के

लंकार अट्टाळी मुण्ड बाजि चूर्ण हेले ।
दश कोटि कपि पिण्ड पड़न्तेण मले ।
देखिण सानन्दे देबे पुष्प बृष्टि कले ।
बोले बिशि अर्द्ध अंग सिन्धुरे पड़िले ।। १६ ।।

चत्वारिंश छान्द—राबणर षडरथी बध

राग–रणबिजे (कोटाइ गुंडिचा बसंत बाणी)

कुम्भकर्ण बध शुणिण राबण मूर्च्छा पाइण पड़िला ।
केतेहेक बेळे चेतना पाइण बहुत बिळाप कला हे ।
बीर । जेउँ उरे बज्र हेला चूर । तोर मानब काटिला शिर ।
आज हृष्ट हेब सुनाशिर । मोते कि बोलिबे त्रयपुर हे ।। १ ।।
ए लंका सम्पदे मोर कार्य्य नाहिँ छड़िलि जीबन आश ।
जानकीर मोर केउँ कार्य्य अछि भ्राता जेबे गला नाश हे ।
भ्राता । मोर छिड़िला दक्षिण हात । तोते मराइलि मुँ बिअर्थ ।
तोर बिहीने हेलि अनाथ । सकामरे अर्जिलि अनर्थ हे ।। २ ।।

समान उसके मुख को देखकर उसका सिर काट दिया । १५ सिर की चोट से लंका की अट्टालिकायें चूर-चूर हो गयी और उसका धड़ गिरने से दस करोड़ वानर मर गये । यह देखकर देवताओं ने आनन्द से फूलों की वर्षा की । विशि कहता है कि उसका आधा शरीर समुद्र में जा गिरा । १६

छान्द ४०—रावण के छः रथियों का वध

राग–रण विजय (कुटायी गुंडीचा वसंत की धुन)

कुम्भकर्ण का वध सुनकर रावण मूर्च्छित होकर गिर पड़ा । कुछ समय के बाद चेतना पाकर बहुत विलाप करने लगा । हे वीर ! जिसकी छाती में लगकर वज्र भी चूर-चूर हो गया था उसी का सिर मानव ने काट दिया । आज इन्द्र प्रसन्न हो जायेगा । तीनों लोक मुझे क्या कहेंगे । १ इस लंका की सम्पदा से मेरा कोई प्रयोजन नहीं । मैंने जीवन की आशा छोड़ दी । हे भाई ! जब तेरा निधन हो गया तो जानकी से मुझे क्या काम है । हे भाई ! मेरा दाहिना हाथ टूट गया । मैंने व्यर्थ ही तुम्हें मरवा दिया । तेरे विना मैं अनाथ हो गया । मैंने जान बूझकर यह अनर्थ कमाया । २ छोटे भाई विभीषण का कहना मैंने नही माना । प्रशस्त

सानुज । बिभीषण बोल न कलि । न कलि प्रशस्त बोल ।
भल भल लोके जाहा कहुथिले मणिलि ताहा मुं शल हे ।
जिबि । राम लक्ष्मणंकु संहारिबि । ऋक्ष बानरंकु न रखिबि ।
तांकु न माइले न आसिबि । रण जश मु आज करिबि हे ॥ ३ ॥
राबण बिळाप शुणिण त्रिशिर महाकाय महोदर ।
महापारुश्व सहिते नरान्तक देबान्तक षडबीर ।
से माने । कहि प्रबोध करि बचने । देबकिपाँ कर शोक मने ।
आज्ञा देबे जिबु आम्भे माने । शत्रु मारिबु जे सावधाने ॥ ४ ॥
महोदर महापारुश्व पिटन्ति राबण कनिष्ठ भ्रात ।
ताहांकु बोइले तुम्भे न छाड़िब चारि पुत्रंकर साथ हे ।
बीरे । हेळा न करिबटि समरे । न मणिब ए नर बानरे ।
तांकु समान नुहन्ति सुरे । मले जिअन्ति कि उपायरे ॥ ५ ॥
राबण छामुरे मेलाणि होइण बाहार से षडबीरे ।
अनेक रथ गज अश्व पदाति माने अछन्ति संगरे से ।
बीरे । अतिकाय चढ़ि रहुबरे । महापारुश्व हस्ती उपरे ।
बसि त्रिशिर हय पिठिरे । शस्त्रमान धरिछन्ति करे ॥ ६ ॥

का भी कहना नहीं सुना। अच्छे-अच्छे लोगों ने जो कहा था उसे मैंने भूल समझा। अब मैं जाकर राम-लक्ष्मण का संहार करूँगा। वानर और भालुओं को नहीं छोड़ूंगा। बिना उन्हें मारे मैं नहीं लौटूंगा। आज मैं रणयुद्ध करूँगा। ३ रावण का विलाप सुनकर त्रिशिरा, महाकाय महोदर, महापारुश्व, नरान्तक और देवान्तक ये छः वीर सान्त्वना के वाक्य कहते हुए बोले, हे देव! आप अपने मन में शोक क्यों कर रहे हैं? आज्ञा होने से हम लोग जाएँगे और सावधानी से शत्रु को मार डालेंगे। ४ महोदर और महापारुश्व से रावण ने समझाते हुए कहा कि तुम चारों पुत्रों का साथ न छोड़ना। वह पुनः बोले, हे वीरो! तुम युद्ध में प्रमाद न करना! इन्हें नर और वानर न समझना। देवता भी उनके समान नहीं हैं। मरकर भी न जाने कौन से उपाय से जीवित हो जाते हैं। ५ रावण से विदा लेकर यह छः वीर अनेक रथ, घोड़े, हाथी और पैदल सैनिक साथ में लेकर निकल पड़े। पराक्रमी अतिकाय रथ पर चढ़कर, महापारुश्व हाथी पर सवार होकर, त्रिशिरा घोड़े की पीठ पर बैठकर हाथ में अस्त्र-शस्त्र लिये चले जा रहे थे। ६ नरान्तक और

नरान्तक देबान्तक बेनि भाइ महापारुश्वकु घेनि ।
गज अश्व रथ चढ़िण आगुआ होइछन्ति एहितिनि से ।
शूर । आगे बाजुअछि बीर तूर । देखे पूरि अछन्ति बानर ।
धरिछन्ति शिळ तरुबर । देखि भय पाइबे अमर ।। ७ ।।
ऋक्ष राक्षस बेनि बीर मिशिण कले बहुत समर ।
तरु शिळ नाना शस्त्रंक बृष्टिरे न दिशिले दिबाकर से ।
रणे । मले बानर राक्षस गणे । नरान्तक अश्व आरोहणे ।
बर्च्छि घेनि भूषइ आपणे । कपि माइला लक्ष प्रमाणे ।। ८ ।।
बानर मारिबा देखिण सुग्रीब अंगदकु बोले मार ।
बाळिर कुमर शून्य हस्ते उभा हेले असुर आगर से ।
बीर । बर्च्छिमारे अंगद उपर । बाजि बरछि भांगिला तार ।
चापोड़े माइले अश्वपर । अश्व मरन्ते उभा असुर ।। ९ ।।
मूथे मारन्ते अंगद नरान्तक रुधिर उद्गारि मला ।
महोदर गज चढ़िण अंगद संगते समर कला । से हनु ।
श्रान्त देखिण बाळिर सूनु । ओगाळन्ते कम्पे दैत्य तनु ।
देखि दैत्य बिन्धे धरि धनु । तार शर मणे चित्रभानु ।। १० ।।

देवान्तक दोनों भाई महापारुश्व को लेकर हाथी-घोड़े और रथ पर बैठकर यह तीनों वीर आगे हो गये थे । आगे-आगे वीरतूर्य नाद कर रहा था । इन्होंने देखा कि वानर मरे पड़े हैं । वह वृक्ष और शिलाएँ लिये हैं । उन्हें देखकर देवता भी भय करने लगे । ७ बलवान रीछ और वानर दोनों ने ही मिलकर बहुत युद्ध किया । वृक्षों, शिलाओं और अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा से सूर्य नहीं दिखाई दे रहे थे । संग्राम में वानर और राक्षसगण मर गये थे । नरान्तक ने घोड़े पर बैठकर बर्छा लेकर लगभग एक लाख वानर मार डाले । ८ वानरों को मरते हुए देखकर सुग्रीव ने अंगद से उसे मारने को कहा । बालिपुत्र अंगद असुर के समक्ष खाली हाथ खड़ा हो गया । पराक्रमी राक्षस ने अंगद पर बर्छे से प्रहार किया । बर्छा लगते ही टूट गया । अंगद ने घोड़े को थप्पड़ मारा । घोड़े के मरने पर असुर खड़ा हो गया । ९ अंगद के एक मुक्का मारने से नारन्तक रक्त वमन करता हुआ मर गया । महोदर ने हाथी पर चढ़कर अंगद के साथ बहुत युद्ध किया । हनुमान ने वालिनन्दन को श्रमित देखकर ललकारा । इससे दैत्य का शरीर काँपने लगा । देखते ही दैत्य ने धनुष उठाकर बाण छोड़ा । हनुमान उसके बाण को चित्रभानु समझ रहे थे । १० हनुमान

हनु शरघात ताहार सहिण गजदन्त उपाड़िले ।
से गजदन्त उपाड़ि महोदयु अंगरे प्रहार कले से ।
शूर । दन्त भाजिला बाजिण शिर । तहुँ रुधिर हेला बाहार ।
क्रोधे बिन्धइ से तीक्ष्ण शर । देखि हनु होइले कातर ।। ११ ।।
हनुकु साहा होइण नीळबीर महोदरर आगर ।
महापर्बत उपाड़िण बुलाइ पकाइला दैत्य शिर से ।
मला । गज सहिते चूर्ण होइला । ताहा देखि त्रिशिर धाइँला ।
हनु संगतरे रण कला । खण्डा बुलाइण हाणुथिला ।। १२ ।।
सेहि खड़्ग ता करु छड़ाइण हनु त करे धइले ।
चक्र गति करि बुलाइ ताहार ग्रीवारे प्रहार कले ता ।
मुण्ड । छिड़ि होइलाक बेनि खण्ड । त्रयमुण्ड दिशइ प्रचण्ड ।
रत्नकुण्डळ मण्डित गण्ड । रणभुमिरे पड़िला पिण्ड ।। १३ ।।
त्रिशिरा मरण देखि देबान्तक गज आरोहि धाइँला ।
बिबिध आयुध घेनि हनु संगे वहुत समर कला से । हनु ।
मुथे माइला गजर तनु । गज मला भग्न होइ जानु ।
मल्ल जुद्ध कला भांगि धनु । जुद्धे मला रावणर सूनु ।। १४ ।।

ने उसके शराघात को सहन करके हाथी का दाँत तोड़ लिया और उससे महोदर के शरीर के ऊपर प्रहार किया। उस पराक्रमी के सिर पर लगने से गजदन्त टूट गया। सिर से रक्त प्रवाहित होने लगा। वह क्रोध से तोखे बाण छोड़ रहा था। यह देखकर हनुमान कातर हो गये। ११ हनुमान के सहायक बनकर पराक्रमी नील महोदर के आगे आये। उन्होंने एक बड़ा पर्वत उखाड़ा और घुमाकर राक्षस के सिर पर दे पटका। वह हाथी के सहित चूर-चूर होकर मर गया। यह देखकर त्रिशिरा दौड़ा। उसने हनुमान के साथ युद्ध किया। वह तलवार घुमाकर प्रहार कर रहा था। १२ हनुमान ने वही तलवार उसके हाथ से छीनकर पकड़ ली। चक्र के समान घुमाकर उसकी ग्रीवा पर प्रहार करते ही उसका सिर टूटकर दो टुकड़े हो गया। उसके तीन शिर भयानक दिखाई दे रहे थे जो रत्नमय कुण्डलों से सजे थे। संग्रामस्थल में उसका धड़ पड़ा था। १३ त्रिशिरा की मृत्यु को देखकर देवान्तक हाथी पर चढ़कर दौड़ा। उसने नाना प्रकार के अस्त्र लेकर हनुमान के साथ युद्ध किया। हनुमान ने हाथी के शरीर पर एक घूंसा मारा। जंघा टूट जाने से हाथी मर गया। हनुमान ने उसके धनुष को तोड़कर उससे मल्लयुद्ध किया। उस युद्ध में

देबान्तक मृत्यु देखिण धाईंला महापारुश्व असुर ।
अश्व चढ़िण से हनुकु गोड़ान्ते ऋषभ ताहा आगर से ।
बीर । गदा माइला ऋषभ पर । गदा उछुळि धइला कर ।
सेहि गदारे कला प्रहार । प्राण गला फाटि दैत्य शिर ।। १५ ।।
एहा देखि महाकाय रथ चढ़ि बिबिध आयुध घेनि ।
शर प्रहारन्ते रामंक शरण पशिले कपि साइनी । ता चाहिँ ।
पचारन्ति जानकींक साइँ । एड़े दनुज देखिबा नाहिँ ।
कुम्भकर्ण अइला कि जीइँ । सेनामाने आसन्ति पळाइ ।। १६ ।।
बिभीषण बोले शुणिमा भो देब राबणर ए नन्दन ।
बहुत तप कलारु बर देइ अछन्ति कंज आसन हे । बीर ।
साबधान होइ जुद्ध कर । जिणि पारइ ए त्रयपुर ।
मारि पकाइब बनचर । शुणि राम हेले अग्रसर ।। १७ ।।
श्रीरामंकु पछे करिण लक्ष्मण ओगाळिले ताकु जाइ ।
असुर हसिण बोइला कुमर अइलु मरिबा पाइँ रे । बाळ ।
मृत्यु देबतार मुहिँ काळ । मोते डरन्ति ए दिगपाळ ।
तोते माइले नाहिँटि फळ । पळा धनु शर थोइ तळ ।। १८ ।।

रावण का पुत्र देवान्तक मारा गया । १४ देवान्तक की मृत्यु को देखकर महापारुश्व दैत्य दौड़ा । हनुमान को खदेड़ते हुए अश्व पर चढ़ महापारुश्व के आगे ऋषभ आ गया । पराक्रमी दैत्य ने ऋषभ पर गदा से प्रहार किया । उसने उछलकर गदा पकड़ ली और उसी से उस पर प्रहार किया । सिर फट जाने से दैत्य के प्राण निकल गये । १५ यह देखकर महाकाय अनेक आयुध लेकर रथ पर चढ़कर बाणों की वर्षा करने लगा । वानर-सेना श्रीराम की शरण में जा पहुँची । यह देखकर जानकी के स्वामी श्रीराम ने कहा कि ऐसा राक्षस तो मैंने नहीं देखा ! क्या कुम्भकर्ण ही जीवित होकर आ गया है, क्योंकि सेना भागी चली आ रही है । १६ विभीषण ने कहा, हे देव ! सुनिये । रावण के इस पुत्र के तप करने पर कमलासन ब्रह्माजी ने इसे वर प्रदान किया है । हे वीर ! सावधान होकर आप युद्ध करें । यह तीनों लोकों को जीत सकता है । यह वानरों को मारकर ढेर लगा देगा । यह सुनकर श्रीराम आगे बढ़े । १७ श्रीराम को पीछे करते हुए लक्ष्मण ने जाकर उसे ललकारा । राक्षस ने हँसते हुए कहा, अरे बालक कुमार ! तू मरने के लिए आया है । मैं मृत्यु के देवता यमराज का भी काल हूँ । दिग्पाल भी मुझसे भय करते हैं । तुझे मारने से कोई फल नहीं है । धनुष-बाण पृथ्वी पर रखकर तू भाग जा । १८

लक्ष्मण बोलन्ति शबद मेघटि गर्जि न बरषे जळ ।
तोर मोर एहि ठारे जाणिबा के बृद्ध जुबा के बाळ रे ।
बीर । एते कहिण कले समर । डरि कम्पिले सकळ सुर ।
काण्ड प्रहारिले दैत्यशिर । देखि प्रशंसा कला असुर ।। १९ ।।
दुहें महाक्षत्री केहि काहाकुहिँ नोहिलेक बड़ सान ।
एहा देखिण मारुति बिचारिण कहिले लक्ष्मण कर्ण से ।
बीर । ब्रह्मअस्त्र बेगे धर कर । शुणि बाहार कलेक शर ।
जाहा देइथिले सुनासीर । गुणे बसाइ कले प्रहार ।। २० ।।
ब्रह्म अस्त्र बाजि अतिकाय बीर भूमिरे पड़िण मला ।
ताहा देखिण लक्ष्मणंकु आकाशुँ कुसुमबृष्टि होइला ।
से मले । षड़रथी आसि क्षय गले । देखि असुरबळ भाजिले ।
पळाइण रणु जहुँ गले । बिशि बोले राबणे कहिले ।। २१ ।।

लक्ष्मण ने कहा कि गरजनेवाले बादल बरसते नहीं है । इसी स्थान पर पता चल जाएगा कि तेरे और मेरे बीच कौन युवा, वृद्ध और कौन बालक है ! पराक्रमी लक्ष्मण ने इतना कहकर युद्ध किया । समस्त देवता भय से काँपने लगे । उन्होंने दैत्य के सिर पर बाण से प्रहार किया । यह देखकर राक्षस ने उनकी प्रशंसा की । १९ दोनो ही महान पराक्रमी थे । कोई किसी से बड़ा या छोटा नहीं था । यह देखकर विचार करते हुए हनुमान ने लक्ष्मण के कान में कहा, हे पराक्रमी लक्ष्मण ! शीघ्र ही ब्रह्मास्त्र हाथ में उठाओ । सुनते ही लक्ष्मण ने ब्रह्मबाण निकाल लिया जो इन्द्र ने दिया था । उन्होंने उसे प्रत्यञ्चा पर चढ़ाकर प्रहार किया । २० ब्रह्मास्त्र के लगने से पराक्रमी अतिकाय पृथ्वी पर गिरकर मर गया । यह देखकर लक्ष्मण के ऊपर आकाश से पुष्पों की वर्षा होने लगी । उसके मरने से छः महारथियों को आकर मरा हुआ देखकर राक्षसदल भाग गया । विशि कहता है कि उन्होंने भागकर रावण से सब बता दिया । २१

एकचत्वारिंश छान्द—इन्द्रजितर जुद्ध

चक्रकेळि बाणी; दधिमंथन बोलि

पुत्रनातिकर रणे मरण ।
एहा शुणि शोक कला राबण ।।
गुणमान गुणि हेला अज्ञान ।
ताहा देखि कहे ज्येष्ठ नन्दन ।। १ ।।

तात किपाइँ हेउअछ मोह ।
जेबे मुँ अछि इन्द्रजित पुअ ।।
एथकु देब न कर कारुण्य ।
मारिण आसिबि राम लक्ष्मण ।। २ ।।

नागपाशे बेळेक मरिथिले ।
किकि प्रकारे जीइण अइले ।।
एते कहिण साजिलाक बळ ।
बजाइ बिबिध बाद्य चहळ ।। ३ ।।

बड़ बड़ असुर घेनि संगे ।
लंकारु बाहार होइला रंगे ।।
रथी मानंकु जुद्धकु पेषिला ।
आपणे होम स्थानकु अइला ।। ४ ।।

छान्द ४१—इन्द्रजित् का युद्ध

चक्रकेलि वाणी; दधिमन्थन की धुन

युद्ध में पुत्र और नातियों का मरण सुनकर रावण ने शोक किया। वह उनके गुणों का चिन्तन करते हुए मूर्च्छित हो गया। यह देखकर उसके ज्येष्ठ पुत्र इन्द्रजित् ने कहा। १ हे तात ! आप किसलिए दुःख कर रहे हैं, जब तक मैं आपका ज्येष्ठ पुत्र हूँ। हे देव ! इसके लिए आप शोक न करें। मैं राम और लक्ष्मण को मार आऊँगा। २ एक बार नागपाश से मारने पर न जाने कैसे वह जीवित होकर आ गये। ऐसा कहकर उसने सेना सजाई। नाना प्रकार के वाद्यों के वजने से शोर मच गया। ३ बड़े-बड़े राक्षसों को साथ लेकर वह बड़े सजधज के साथ लंका के बाहर निकला। उसने रथियों को युद्ध हेतु भेज दिया और स्वयं यज्ञस्थल पर जा पहुँचा। ४ वह बकरों का रक्त लोहे की स्रुवा से मंत्र पढ़कर अग्निकुण्ड

छागळ रकत लौह श्रुबरे ।
मंत्र पढ़ि ढाळे अग्निमुखरे ।।
लोहित बसनरे होम कला ।
पुणि गुआ घृतमान ढाळिला ।। ५ ।।
बुलिला अनळ दक्षिण होइ ।
शक्राजित करु आहुति पाइ ।।
कार्य्यसिद्ध चिह्नमान देखिला ।
समस्त शर ब्रह्मअस्त्र कला ।। ६ ।।
रथ चढ़िण शस्त्रमान घेनि ।
अदृश्य होइला तेजिण अवनी ।।
आकाशे थाइ बिन्धिला नाराज ।
कपिसैन्य कुळ कला निस्तेज ।। ७ ।।
आकाशे चाहान्ते बाजइ शर ।
कुढ़ कुढ़ होइ मले बानर ।।
गबयकु मारे शर अठर ।
गबाक्षकु माइलाक पन्दर ।। ८ ।।
अंगदकु माइला बिश शर ।
हनुकु चाळिश कला प्रहार ।।
ऋषभकु पाञ्च गजकु दश ।
दुर्बिन्दकु सात सुग्रीबे बिश ।। ९ ।।
बिनताकु पाञ्च ब्रह्म कु सात ।
बिन्धुअछि कोपे रावण सुत ।।

में डालने लगा । लाल वस्त्र पहनकर उसने यज्ञ किया । फिर सुपारी और घृत डाला । इन्द्रजित् के हाथो से आहुति पाकर दक्षिणावर्ती अग्नि उठने लगी । कार्यसिद्धि के सकेत दिखने पर उसने सभी बाणो को ब्रह्मास्त्र बना लिया । ५-६ शस्त्रों को लेकर रथ पर चढ़कर पृथ्वी को छोड़कर वह अदृश्य हो गया । आकाश में स्थित रहकर वह बाण छोड़ने लगा । उसने सम्पूर्ण वानरदल को तेज-रहित कर दिया । ७ आकाश की ओर देखने पर बाण लगता था और वानर कराहते हुए मर जाते थे । उसने गवय को अठारह बाण मारे । गवाक्ष को पन्द्रह बाण लगे । अंगद को बीस बाण मारे । हनुमान पर चालीस बाणों का प्रहार किया । ऋषभ को पाँच, गज को दश, दुर्विन्द को सात और सुग्रीव को उसने बीस बाण मारे । ८-९ रावण

नळ नीळकु पन्दर पन्दर ।
सुषेणकु दश कला प्रहार ॥ १० ॥
जाम्बबकु दश शररे चारि ।
दधिमुखकु आठ शर मारि ॥
एहिरूपे सर्ब सेनाकु मारि ।
ब्रह्मअस्त्रे मोह कला सबुरि ॥ ११ ॥
राम लक्ष्मणंकु बिन्धिला शर ।
श्राबण मासर कि जळधर ॥
श्रीराम बोलन्ति शुण लक्ष्मण ।
अदृश्य होइ बिन्धुअछि बाण ॥ १२ ॥
आम्भे थिबा एबे भूमिरे पड़ि ।
मले बोलि जाणि जाउ बाहुड़ि ॥
एते बोलि राम लक्ष्मण पड़ि ।
भुमिरे अज्ञान होइण पड़ि ॥ १३ ॥
एहा देखि बिचारे शक्राजित ।
राम लक्ष्मण निश्चे हेले हत ॥
बानर सेनापतिमाने मले ।
ब्रह्माअस्त्रे जीबन हराइले ॥ १४ ॥
एमन्त मनरे बिचार कला ।
असुर सैन्ये प्रबेश होइला ॥

के पुत्र मेघनाद ने कुपित होकर विनता को पाँच और ब्रह्म को सात, नल और नील को पन्द्रह-पन्द्रह तथा सुषेण पर दश बाण प्रहार किये । १० जामवन्त को दश, शर को चार, दधिमुख को आठ बाण और इसी प्रकार सम्पूर्ण सेना को बाण मारकर उसने ब्रह्मास्त्र से सबको मूर्च्छित कर दिया । ११ श्रावण मास की वारिधारा के समान उसने श्रीराम और लक्ष्मण पर बाण छोड़े । श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि यह अदृश्य होकर बाण छोड़ रहा है । १२ हम इस समय पृथ्वी पर गिर जायँ जिससे यह मरा हुआ समझ कर लौट जाए । इतना कहकर श्रीराम और लक्ष्मण मूर्च्छित होकर गिर पड़े । १३ यह देखकर इन्द्रजित् ने विचार किया कि श्रीराम और लक्ष्मण निश्चय ही मर गये हैं । बानर, सेनापति लोग भी मर गये । ब्रह्मास्त्र से उन्होंने प्राण खो दिये हैं । १४ इस प्रकार मन में विचार करके वह

संग्रामे श्रीरामंकु जय करि।
बाहुड़ि बिजे कला लंकापुरी ॥ १५ ॥
देखिला राबण करिछि सभा।
ओळगि करिण होइला उभा॥
रामंकु मारि अइलि बोइला।
शुणि राबण आनन्द होइला ॥ १६ ॥
निश्चिन्त होइण असुर माने।
सुखे निद्रा गले जेझा सदने॥
एथु अनन्तरे शुणिबा रस।
बेनि घड़ि मात्र थिला दिबस ॥ १७ ॥
बिभीषण आड़ होइ जे थिले।
उल्लुका घेनि सैन्यरे पशिले॥
अज्ञाने पड़ि छन्ति कपिबळ।
राम लक्ष्मण पड़िछन्ति तळ ॥ १८ ॥
थाट जाक देखि बिकळ मन।
देखिले ज्ञाने अछि हनुमान॥
ब्रह्मांक बर पूर्बे पाइथिले।
ब्रह्म अस्त्रे हनु मोह नोहिले ॥ १९ ॥
हनु उठाइ कले आलिंगन।
पीड़ा नाहिँ ना मरुतनन्दन॥

राक्षस-सेना में जा पहुँचा। संग्राम में श्रीराम पर विजय पाकर यह लंकापुरी को लौट गया। १५ उसने रावण को सभा करते हुए देखकर प्रणाम किया और खड़ा हो गया। उसने कहा कि मैं राम को मार आया हूँ। यह सुनकर रावण प्रसन्न हो गया। १६ राक्षस लोग निश्चिन्त होकर अपने-अपने घरों में सुख की निद्रा में सो गये। इसके बाद का चरित्र सुनो। दो घड़ी मात्र दिन शेष था। १७ बिभीषण, जो छिपे थे, मसाल लेकर सेना में घुसे। कपि-सेना अचेत पड़ी थी। राम-लक्ष्मण पृथ्वी पर पड़े थे। १८ सारी सेना को देखकर उनका मन व्याकुल हो रहा था। उन्होंने हनुमान को होश में देखा। उन्होंने पूर्वकाल में ब्रह्मा से वर प्राप्त किया था। इसी कारण से वह ब्रह्मास्त्र से मूर्च्छित नहीं हुए। १९ उन्होंने हनुमान को उठाकर आलिंगन किया। हे मारुति! तुम्हें पीड़ा तो नहीं हो रही। हनुमान बोले, मुझे कुछ भी पीड़ा

किछि पीड़ा नाहिँ हनु कहिले ।
संग होइ जाम्बब पाशे गले ।। २० ।।
ऋक्षपति पाशे हेले प्रबेश ।
बिभीषण तांकु कले आश्वास ।।
बिभीषण बाणी शुणि जाम्बब ।
बोलन्ति जुद्ध कला असम्भब ।। २१ ।।
ब्रह्म अस्त्रे सर्बे होइले मोह ।
जीइछि कि कह मरुत पुअ ।।
बिभीषण बोलन्ति ऋक्षपति ।
श्रीराम लक्ष्मण पड़ि अछन्ति ।। २२ ।।
ताहांक बारता न पचारिल ।
हनुठारे अनुराग बहिल ।।
एमन्त शुणि कहे ऋक्षेश्वर ।
सबुरि मंगळ हनु थिबार ।। २३ ।।
हनुबीर ताहा शुणुण थिले ।
बेनि पाद छुइँ ओळगि कले ।।
बोलन्ति सखे मुँ अछइ जीइ ।
एका होइण किस करिबइँ ।। २४ ।।
जाम्बब कहिले नुहें एमन्त ।
जाहा मु कहिबि कर तेमन्त ।।

नहीं है। तब वह उन्हें लेकर जामवन्त के पास गये। २० ऋक्षपति के समीप पहुँचकर विभीषण ने उन्हें आश्वस्त किया। विभीषण की वाणी सुनकर जामवन्त ने कहा कि उसने असाधारण युद्ध किया है। २१ ब्रह्मास्त्र से सभी मूर्च्छित हो गये हैं। बताइये! मारुति तो जीवित है। विभीषण ने कहा, हे ऋक्षपति! श्रीराम और लक्ष्मण पड़े हैं। २२ उनके समाचार न पूछकर हनुमान से इतना प्रेम क्यों? ऐसा सुनकर ऋक्षपति जामबन्त ने कहा कि हनुमान के रहने पर सभी का कल्याण है। २३ हनुमान भी यह सुन रहे थे। उन्होंने दोनों पैर छूकर उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने कहा, हे मित्र! मैं जीवित हूँ। परन्तु अकेले मैं क्या कर पाऊँगा? २४ जामवन्त ने कहा, ऐसा नहीं है। जैसा मैं कहूँ तुम वही करो। हिमालय के उत्तर दिशा में सुमेरु है और उसके उत्तर

हिमाळयर उत्तरे सुमेरु ।
कइळास गिरि तहिँ उत्तारु ॥ २५ ॥
तहुँ उत्तारु लबण जळधि ।
तदन्तरे क्षीरसिन्धु प्रसिद्धि ॥
तथि मध्यरे अछि चन्द्रगिरि ।
द्रोण गिरि अछि ताकु आबोरि ॥ २६ ॥
से बेनि गिरि मध्यरे औषधि ।
मरिबा लोके जीअन्ति अबधि ॥
के औषधि मृत्यु संजीबनी ।
बिशल्यकरणीकि घेनि बेनि ॥ २७ ॥
सन्धानकरणी औषध तिनि ।
चतुर्थे सुबर्णकरणी घेनि ॥
एमन्ते चारि औषधिक नाम ।
करिछन्ति सेहि ठारे बिश्राम ॥ २८ ॥
देबासुर जुद्धे निअन्ति देब ।
तेणु असुरंकु जिणे बासब ॥
तुम्भे जेबे जाइ आणिब ताहा ।
समस्ते जीइबे कहिलि एहा ॥ २९ ॥
जाम्बब मुखरु एमन्त शुणि ।
तनु बिस्तार कले कपिमणि ॥
रबिक आसिबा मार्गरे गले ।
जाम्बब जेउँ मार्गे कहिथिले ॥ ३० ॥

की ओर कैलाश पर्वत है । २५ उसके भी उत्तर में लवणसिन्धु है । उसके आगे प्रसिद्ध क्षीरसागर है । उसके मध्य में चन्द्रगिरि है । उसी के मध्य द्रोणाचल पर्वत है । २६ उन्ही दोनो पर्वतों के बीच में वह औषध है जिससे मरे लोग भी जीवित हो जाते हैं । वह मृतसंजीवनी, विशल्यकरिणी औषध के साथ तीसरी सन्धानकरणी और चौथी सुवर्णकरणी है । इन नामों वाली चार ओषधियाँ वहाँ विश्राम करती हैं । २७-२८ देवासुर-संग्राम में देवता उन्हें लाते थे । इसी कारण से इन्द्र असुरों पर विजय पा लेते थे । यदि तुम जाकर उन्हें ले आओ तो उससे सभी जीवित हो जाएँगे । मैं तुमसे यह कह रहा हूँ । २९ जामवन्त के मुख से इस प्रकार सुनकर कपिश्रेष्ठ हनुमान ने अपने शरीर का विस्तार किया । जामवन्त ने जो मार्ग बताया

गरुड़ंक बेगुं अधिक गले ।
गिरि शिखरे प्रबेश होइले ॥
जाणिण लुचिले औषधि मान ।
न देखि भ्रम पवननन्दन ॥ ३१ ॥
औषधि न देखि उपाय कले ।
ता मध्यु शृङ्ग उपाड़ि आणिले ॥
से शृङ्ग घेनि सेहि सूर्य्य मार्गे ।
अइले मारुति मरुतुँ बेगे ॥ ३२ ॥
श्रीराम थाटरे हेले प्रबेश ।
देखि ऋक्षपति हेले हरष ॥
औषधि नास दिअन्ते उठिले ।
मला लोकहिँ जीबन पाइले ॥ ३३ ॥
श्रीराम लक्ष्मण सचेत हेले ।
हनुकु बहुत प्रशंसा कले ॥
सुग्री सहिते जूथपति माने ।
समस्ते प्रशंसन्ति हनुमाने ॥ ३४ ॥
श्रीराम बोलन्ति हनुकु चाहिँ ।
एबे ए गिरि रखि आस जाइँ ॥
आज्ञा पाइण गिरि घेनि गले ।
हिमाचळ पाशे रखि अइले ॥ ३५ ॥

था उसी सूर्यमार्ग से वह चले । ३० वह गरुड़ के वेग से भी अधिक तेजी से जाकर पर्वत के शिखर पर जा पहुँचे । जान-बूझकर ओषधियाँ छिप गयीं । उन्हें न देखकर पवननन्दन भ्रम में पड़ गये । ३१ ओषधि को न देखकर उन्होंने एक उपाय किया । वह मध्य का शिखर उखाड़ लाये । मारुति पवन-वेग से भी अधिक तीव्र गति से चलकर वह शिखर लिये हुए सूर्य-मार्ग से आ पहुँचे । ३२ वह श्रीराम की सेना में प्रविष्ट हुए । उन्हें देखकर ऋक्षपति जामवन्त प्रसन्न हो गये । ओषधि को सुँघाते ही मरे लोग जीवित होकर उठ बैठे । ३३ श्रीराम और लक्ष्मण ने सचेत होकर हनुमान की बहुत प्रशंसा की । सुग्रीव के सहित सभी यूथपति हनुमान की प्रशंसा कर रहे थे । ३४ श्रीराम ने हनुमान की ओर देखकर कहा कि अब यह पर्वत रख आओ । आज्ञा पाकर हनुमान ने वह पर्वत उठाया और हिमालय के निकट रख आये । ३५ प्रथम युद्ध में जो भी पड़े थे वह

प्रथम रणुँ जेते पड़िथिले ।
औषधि पवन लागि जीइले ।।
असुर माने न जीइले एणु ।
सागरे रावण पकाए जेणु ।।
तहि शतगुणे होइला बळ ।
बोले बिशि सुस्थ वानरकुळ ।। ३६ ।।

द्विचत्वारिंश छान्द—कुम्भ-निकुम्भ बध

भागवत वृत्ते गाइब

एथु अनन्तरे शुण रस । सुग्रीब होइण हरष ।।
जणाइ श्रीराम छामुरे । बिचार करिण मनरे ।। १ ।।
आम्भर सुस्थ हेबा शुणि । आउ कि आसिब रावणि ।।
रावण सैन्य न पेषिब । आपणे बाहार नोहिब ।। २ ।।
एबे निशारे आम्भे जिबा । ए लंका कटके पशिबा ।।
पोड़िबा सकळ भुवन । करिबा असुर निधन ।। ३ ।।
सुग्रीब मुखुं एहा शुणि । आनन्द हेले रघुमणि ।।
जूथपतिमानंकु राइ । सुग्रीब ए बिचार कहि ।। ४ ।।

सभी ओषधि की वायु लगने से जी उठे । असुर इसलिए जीवित नहीं हो सके, क्योंकि रावण ने उन्हें समुद्र में फिकवा दिया था । विशि कहता है कि वानरदल स्वस्थ हो गया और पहले से उनमें सौ गुना बल हो गया । ३६

छान्द ४२—कुम्भ-निकुम्भ-वध

भागवत की धुन

इसके पश्चात् का चरित्र सुनो । सुग्रीव ने प्रसन्न होकर श्रीराम के समक्ष अपने मन में विचार कर कहा । १ हमारा स्वस्थ होना सुन करके रावण का पुत्र फिर आएगा । रावण न तो सेना भेजेगा और न वह स्वयं ही बाहर आएगा । २ अभी रात में हम लोग लंका दुर्ग में घुसें और सारा नगर जलाकर राक्षसों को मार डालें । ३ सुग्रीव के मुख से यह सुनकर रघुवंश में श्रेष्ठ राम प्रसन्न हो गए । यूथपतियों को बुलाकर सुग्रीव ने यह विचार कहे । ४ यह सुनकर सभी ने अपनी

शुणि से सीउकार कले। जुद्धकु बाहार होइले ॥
बहु गर्जनमान करि। उल्लू कमान करे धरि ॥ ५ ॥
पशिले लंकागड़ डेइँ। बहु बानरबळ नेइ ॥
लंका नबर शोभा चाहिँ। अनळ देलेक लगाइ ॥ ६ ॥
पोड़िले दिव्यपुरमान। दिशन्ति पर्बत समान ॥
पोड़िण पड़ुअछि झड़ि। देखि कपि दिअन्ति रड़ि ॥ ७ ॥
उल्लूक हेला दश दिश। अन्धकार होइला नाश ॥
जे घरु होइला बाहार। ताहाकु मारन्ति बानर ॥ ८ ॥
पोड़िले पाणि द्रव्यमान। कस्तुरी कर्पूर चन्दन ॥
अगुरु कुसुम सुगन्ध। आमोदे कराइ आनन्द ॥ ९ ॥
हीरा माणिक्य बइडुर्य्य। नीळमर्कतमणि तेज ॥
पुष्पराग प्रबाळचय। सर्बे हेले अंगारमय ॥ १० ॥
हेम रजत काचपुर। स्फटिक चन्दन नबर ॥
जगती अट्टाळी प्रासाद। मेढ़ मण्डप आदि सौध ॥ ११ ॥
जहिँ जेते असुर थिले। रोदन करिण उठिले ॥
असुरे करन्ति रोदन। शुभइ शक्र भुबन ॥ १२ ॥
प्रबळ होइ कपिबळ। मारुछन्ति असुरकुळ ॥
बेनि घड़ि लंकारे पशि। समस्त कले भस्म राशि ॥ १३ ॥

स्वीकृति दी और हाथ में मशालें लिये हुए बहुत गर्जना करते हुए युद्ध के के लिए बाहर निकले। ५ बहुत वानरदल लेकर कूदकर वह सब लंका दुर्ग में घुस गये। लंकानगर की शोभा को देखकर उन्होंने आग लगा दी। ६ पर्वत के समान दिखनेवाले दिव्य भवनों को जला दिया। जलने से वह सब झड़कर गिर रहे थे। यह देखकर वानर किलकारी मार रहे थे। ७ दशों दिशाओं का, उल्काओं से भर जाने के कारण अन्धकार नष्ट हो गया। जो भी घर से बाहर निकलता था उसे वानर मार देते थे। ८ तरल पेय पदार्थ जल गये। कस्तूरी, कपूर, चन्दन, अगुरु, हृदय को आमोद प्रदान करनेवाले फूलों के इत्र सभी जल गये। ९ हीरा, माणिक्य, वैदूर्य, नीलम, मरकत मणि, पुखराज तथा प्रवाल (मूँगों) के समूह सब अंगारमय हो गये। १० सोने-चाँदी तथा काँच के महल, स्फटिक तथा चन्दन के भवन, जगती, अट्टालिकाएँ, प्रासाद, बँगले तथा मण्डप जहाँ भी जितने दैत्य थे रुदन करने लगे। राक्षसों का रुदन इन्द्र के स्वर्गलोक में सुनाई दे रहा था। ११-१२ वानरदल प्रबलता से असुर-कुल का विनाश कर रहे थे। लंका में घुसकर उन्होंने दो घड़ी में ही

रावण देखिण बिस्मयी । निश्वास तेजि क्रोध होइ ॥
बहु प्रतिज्ञा मान कला । कुम्भ निकुम्भंकु राइला ॥ १४ ॥
बोइला मार कपिबळ । तुम्भंकु डरे आखण्डळ ॥
देख लंका दहन कले । बहुत असुर माइले ॥ १५ ॥
शुणि निकुम्भ कुम्भ बेनि । गर्जि उठिले शस्त्र घेनि ॥
रणकु होइले बाहार । आरोहि बेनि रहुबर ॥ १६ ॥
अकम्पन प्रजंघ बेनि । शोणिताक्षकु संगे घेनि ॥
जुळुपाक्षहिँ अछि संगे । असुर बळ घेनि रंगे ॥ १७ ॥
बाहार होइ जुद्ध कले । बानर आगे ओगाळिले ॥
देखि अंगद अकम्पन । आगरे होइले बहन ॥ १८ ॥
देखि असुर बिन्धे शर । अंगद मारन्ति पथर ॥
से दुइ क्षणे कले रण । क्षत्री अटन्ति बेनि जण ॥ १९ ॥
अंगद गिरि शृङ्ग घेनि । माइले असुर मूर्द्धनी ॥
भूमिरे पड़ि प्राण गला । देखि शोणिताक्ष धाइँला ॥ २० ॥
अगद सगे कला रण । बिन्धइ बाछि तीक्षण बाण ।
आकाशे रथ नेइ गला । अंगद आकाशकु गला ॥ २१ ॥

सब कुछ भस्म कर डाला । १३ रावण यह देख विस्मय मे पड़ गया । वह नि:श्वास छोड़ता हुआ क्रोध मे भर बहुत प्रतिज्ञा करने लगा । फिर उसने कुम्भ और निकुम्भ को बुलाया । १४ वह बोला कि कपिदल को मारो । आखण्डल तुमसे डरता है । देखो उन्होने लंका को भस्म कर दिया और बहुत से राक्षस मार ढाले । १५ यह सुनकर निकुम्भ तथा कुम्भ दोनो ही शस्त्र लेकर गरज उठे और दोनों रथ पर बैठकर युद्ध के लिए निकल पड़े । १६ अकम्पन और प्रजंघ दोनों ने शोणिताक्ष, जुलुपाक्ष तथा असुरवाहिनो को लेकर बड़े ठाट से निकलकर युद्ध किया तथा वानरों को ललकारा । यह देखकर अगद शीघ्र ही अकम्पन के सामने आ गया । १७-१८ राक्षस उन्हें देखकर बाण चलाने लगा । अंगद पत्थरो से प्रहार कर रहे थे । दो क्षणो तक वह दोनों लड़ते रहे । दोनों ही पराक्रमी थे । १९ अंगद ने पर्वतशिखर लेकर राक्षस के सिर पर दे पटका । पृथ्वी पर गिरकर उसके प्राण निकल गये । यह देखकर शोणिताक्ष दौड़ा । २० उसने अंगद के साथ युद्ध किया । वह चुन-चुनकर तीक्ष्ण बाणों से प्रहार कर रहा था । वह रथ को आकाश मे ले गया । अंगद आकाश में पहुँच गये । २१ उन्होने राक्षस के हाथ से धनुष छीन लिया

असुर करुँ धनु नेइ । भांगिण देलाक पकाइ ॥
खड़गफळा दैत्य नेला । बहु समरमान कला ॥ २२ ॥
देखि अंगद बीर धाइँ । खड़ग घेनिले छड़ाइ ॥
असुर शिरे प्रहारिले । भुमिरे पड़ि मोह गले ॥ २३ ॥
ता देखि बिरूपाक्ष बीर । अंगदे कलाक समर ॥
मोहरु उठि शोणिताक्ष । समर कलाक असंख्य ॥ २४ ॥
प्रजंघ सहिते बेढ़िले । बहुत गर्ज्जन छाड़िले ॥
बेढ़िण कले महारण । एका अंगद दैत्यगण ॥ २५ ॥
दुर्बिन्द महीन्द्र बानर । मातुळ एहि अंगदर ॥
बढ़िबा देखिण प्रत्यक्ष । ओगाळिले ए शोणिताक्ष ॥ २६ ॥
अंगद घेनिण कृपाण । प्रजंघ संगे कले रण ॥
छेदिले प्रजंघर शिर । भुमिरे पड़िला असुर ॥ २७ ॥
महीन्द्र जुळुपाक्ष रण । देखुछन्ति असुरगण ॥
मल्ल बन्धरे रण कले । पथरे नेइ कचाड़िले ॥ २८ ॥
प्राण हारिला जुळुपाक्ष । असुरे होइले निरेख ॥
दुर्बिन्द शोणिताक्ष मेळ । से बेनि कले रणगोळ ॥ २९ ॥

और तोड़कर फेंक दिया। दैत्य ने तलवार उठा ली तथा बहुत युद्ध किया। २२ यह देखकर अंगद ने दौड़कर उसकी तलवार छीन ली और राक्षस के सिर पर प्रहार किया। वह पृथ्वी पर गिरकर मूर्च्छित हो गया। २३ यह देखकर पराक्रमी विरूपाक्ष ने अंगद के साथ युद्ध किया। मूर्च्छा से उठकर शोणिताक्ष ने अपार युद्ध किया। २४ प्रजंघ के साथ उसने अंगद को घेर लिया। वह लोग बहुत गर्जन कर रहे थे और घेरकर युद्ध कर रहे थे। अंगद अकेला दैत्यों से जूझ रहा था। २५ दुर्विन्द तथा महीन्द्र दोनों अंगद के मामा थे। उन्होंने प्रत्यक्ष घिराव को देखकर शोणिताक्ष को ललकारा। २६ अंगद ने कृपाण लेकर प्रजंघ से बहुत संग्राम किया। उन्होंने प्रजंघ का सिर काट डाला, तब वह राक्षस पृथ्वी पर गिर पड़ा। २७ राक्षसगण महीन्द्र तथा जुलुपाक्ष का समर देख रहे थे। उन दोनों ने मल्लयुद्ध किया और पत्थर लेकर उसे कुचल डाला। २८ जुलुपाक्ष ने प्राण त्याग दिये। असुरदल अवाक् रह गया। दुर्विन्द को शोणिताक्ष से भिड़न्त हो गई। उन दोनों ने घनघोर युद्ध किया। २९ राक्षस ने गदा से प्रहार किया,

दनुज गदा प्रहारिला । दुर्बिन्द छड़ाइ आणिला ॥
सेहि गदारे ताकु मारि । पड़िला दैत्य प्राण हारि ॥ ३० ॥
देखिण सैन्य पळाइले । निकुम्भ शरण पशिले ॥
कुम्भकर्ण पुत्र संगर । दुर्बिन्द कलेक समर ॥ ३१ ॥
अनेक तरु शिळा घेनि । माइले कुम्भर मूर्द्धनी ॥
कुम्भ बिन्धन्ते तीक्ष्ण शर । मोह होइले कपिबीर ॥ ३२ ॥
ता देखि महीन्द्र धाईंले । ता सगे बहु रण कले ॥
बिन्धन्ते महीन्द्र कुमर । मूर्च्छित हेले कपि बीर ॥ ३३ ॥
बेनि मातुळ मोह चाहिं । अंगद अइलेक धाइँ ॥
पिटन्ते ताकु शिळा तरु । असुर काटिला दूररु ॥ ३४ ॥
असुर बिन्धे तीक्ष्ण शर । बाजइ अंगद शरीर ॥
एहि मारन्ते महाशिळ । काटइ कुम्भकर्ण बाळ ॥ ३५ ॥
असुर बाछि घेनि शर । प्रहार कलाक सत्वर ॥
अँगद कपाळे पडिला । बहुत रुधिर बहिला ॥ ३६ ॥
एणु अंगद मोह हेले । बानरे पळाइण गले ॥
श्रीरामे कहिले से जाइँ । अंगद पड़िले गोसाइँ ॥ ३७ ॥

जिसे दुर्विन्द छीन ले गया। उसने उसी गदा से उसे मार डाला। दैत्य प्राण त्यागकर गिर पड़ा। ३० यह देखकर सेना भागकर निकुम्भ की शरण में जा पहुँची। कुम्भकर्ण के पुत्र के साथ दुर्विन्द ने युद्ध किया। ३१ अनेक वृक्ष तथा शिलायें लेकर उसने कुम्भ के सिर पर प्रहार किया। कुम्भ के छोड़े हुए तीक्ष्ण बाणों से पराक्रमी वानर मूर्च्छित हो गया। ३२ यह देखकर महीन्द्र दौड़ा। उन्होने उसके साथ बहुत युद्ध किया। बाणों के प्रहार से पराक्रमी वानर महीन्द्र मूर्च्छित हो गया। ३३ दोनों मामा लोगों को मूर्च्छित देखकर अंगद दौड़कर आ गये। उस पर शिला तथा वृक्षों से प्रहार करने पर राक्षस उन्हें दूर से ही काट देता था। ३४ असुर द्वारा छोड़े गये तीक्ष्ण शर अंगद के शरीर में लगे। यह जब विशाल शिला से प्रहार करते तब कुम्भकर्ण का पुत्र उसे काट देता था। ३५ राक्षस ने शीघ्र ही चुनकर बाण से प्रहार किया जो अंगद के मस्तक पर लगा और उससे बहुत रक्त निकला। ३६ इससे अंगद मूर्च्छित हो गये। वानर भाग गये और उन्होंने श्रीराम से जाकर कहा कि हे नाथ! अंगद गिर गये हैं। ३७ सुग्रीव सामने ही थे,

सुग्रीव थिले जे छामुरे । शुणिण अइले सत्वरे ॥
शुणिण राम हेले तापी । पेषिण देले बहु कपि ॥ ३८ ॥
कुम्भकु बेढ़िले सकळ । आपणे बानर भुपाळ ॥
कुम्भकु जाइ ओगाळिले । तरु पथर बृष्टि कले ॥ ३९ ॥
टंकार करि दैत्य धनु । बिन्धइ कुम्भकर्ण सूनु ॥
सकळ तरु शिळा मान । छेदन कले घन-घन ॥ ४० ॥
कुहुड़ि प्रायेक नाराज । बिन्धे कुम्भकर्ण आत्मज ॥
सुग्रीब अंगे पड़ि शर । बाजिण गळइ रुधिर ॥ ४१ ॥
सुग्रीब बहु क्रोध कले । शाळ तरुए उपाड़िले ॥
पिटन्ते काटिला दनुज । सुग्रीब देखिण आश्चर्ज्य ॥ ४२ ॥
डेइँ ता रथरे बसिले । बहुत ताकु प्रशंसिले ॥
धन्य तोहर जोद्धापण । कुम्भकर्ण सुत प्रमाण ॥ ४३ ॥
किस करिबु एबे कर । बोलि धइले धनुशर ॥
भांगिण पकाइ ता देले । एबे कि करिबु बोइले ॥ ४४ ॥
रथे बसिबार देखिला । आलिंगन करि धइला ॥
से बेनि धरा धरि हेले । माल बन्धरे रण कले ॥ ४५ ॥

सुनते ही शीघ्र आ गये। यह सुनकर श्रीराम ने अत्यन्त कुपित होकर बहुत से वानर भेज दिये। ३८ सबने जाकर कुम्भ को घेर लिया। स्वयं कपिपति सुग्रीव ने जाकर कुम्भ को ललकारा और वह वृक्ष तथा शिला बरसाने लगे। ३९ कुम्भकर्ण का पुत्र धनुष पर टंकार देता हुआ बाण चला रहा था। उसने समस्त वृक्ष तथा शिलाओं को शीघ्रता-पूर्वक छेद डाला। ४० कुम्भकर्ण का पुत्र कोहरे के समान बाणों की वर्षा कर रहा था। सुग्रीव के शरीर में बाण लगने से रक्त बहने लगा। ४१ सुग्रीव के अत्यन्त क्रोध करते हुए शाल और शिलाओं को उखाड़कर प्रहार करने पर राक्षस ने उनको काट दिया। सुग्रीव को यह देखकर आश्चर्य हुआ। ४२ वह उछलकर उसके रथ पर जा बैठे और उसकी बहुत प्रशंसा करने लगे। तेरा पराक्रम धन्य है और कुम्भकर्ण के पुत्र के उपयुक्त है। ४३ "अब क्या करेगा, कर" कहते हुए उन्होंने उसका धनुष-बाण छीनकर उसे तोड़कर फेंक दिया। फिर उन्होंने कहा कि अब तू क्या करेगा? ४४ रथ पर बैठे हुए देखकर उसने सुग्रीव को खींचकर पकड़ लिया। उन दोनों में धरपकड़ हुई और दोनों मल्लयुद्ध करने लगे। ४५ वह दोनों पृथ्वी पर गिर पड़े।

से बेनि महीरे पड़िले । केहिँ काहाकु न छाड़िले ।।
सागरे पड़िले से जाइँ । बेनि मन्दर प्राय होइ ।। ४६ ।।
तहुँ बाहार ताकु कले । मुथे ता शिररे माइले ।।
बाहार होइला अनळ । असुर होइला बिकळ ।। ४७ ।।
भूमिरे पड़ि मोह गला । निकुम्भ आसि रण कला ।।
माइला अनेक बानर । बज्र समान तार शर ।। ४८ ।।
सुग्रीब उपरकु आसे । हनु मिळिला तार पाशे ।।
ता संगे कले बहु रण । शाळ शिळ बाण मारिण ।। ४९ ।।
असुर करे शर बृष्टि । पिछाड़ि न पारन्ति दृष्टि ।।
ता करुँ धनु हनु नेला । आण्ठुरे भांगि पकाइला ।। ५० ।।
असुर धरिण हनुकु । शून्यरे नेला आकाशकु ।।
आकाशे मालरण कले । मुथरे मरामरि हेले ।। ५१ ।।
हनु चाहिँले तार शिर । मुथेक कलेक प्रहार ।।
भूमिरे आणि पकाइले । बेनि पादे मर्द्दन कले ।। ५२ ।।
पड़िला निकुम्भ असुर । मला उद्‌गारिण रुधिर ।।
कुम्भ निकुम्भ जेणु मले । असुरे पळाइण गले ।। ५३ ।।

किसी ने किसी को नही छोड़ा। दोनों ही मन्दराचल पर्वत के समान समुद्र मे जा गिरे। ४६ सुग्रीव ने उसे वहाँ से बाहर निकाला तथा उसके सिर पर मुक्के से प्रहार किया। आग बाहर निकल पड़ी और राक्षस व्याकुल हो गया। ४७ वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। निकुम्भ ने आकर युद्ध किया। उसने अपने वज्र के समान बाणों से अनेक वानर मार डाले। ४८ वह सुग्रीव के ऊपर आ ही रहा था, तभी हनुमान उसके निकट आ गये। शाल, शिला तथा बाण मारकर उसके साथ बहुत सग्राम हुआ। ४९ असुर बाणों की वर्षा कर रहा था, इससे वह दृष्टि नहीं हटा पाते थे। हनुमान ने उसके हाथ से धनुष छीन लिया और घुटने से तोड़कर फेंक दिया। ५० राक्षस हनुमान को पकड़कर शून्याकाश में ले गया। आकाश मे दोनों ने मल्लयुद्ध किया और मुक्का-मुक्की होने लगी। ५१ हनुमान ने ताककर उसके सिर पर मुक्के से प्रहार किया, फिर उसे पृथ्वी पर पटककर दोनों पैरों से उसे कुचलने लगे। ५२ निकुम्भ राक्षस गिर पड़ा और उसने रक्त वमन करते हुए प्राण त्याग दिये। कुम्भ और निकुम्भ के मरने पर राक्षस लोग भाग गये। ५३ यह समाचार पाकर रावण ने अत्यधिक शोक किया।

से बार्त्ता पाइण राबण । कला बहुत से कारुण्य ॥
पुणि होइला कोपमति । चिन्ते बिशि जानकी पति ॥ ५४ ॥

त्रिचत्वारिंश छान्द—मकराक्षस बध

राग—पंचम बराड़ि (बिप्रसिहा बाणी)

कुम्भ निकुम्भ मरण, शुणिण कोपे राबण,
खर सुतकु चाहिँ बोइले ।
आहे हे मकराक्षस, तुम्भे एबे पाअ जश,
राम लक्ष्मण मारि आस बोइले से ।
दशशिर ! आज्ञा पाइण खर नन्दन ।
संगे घेनि बाहार असुर सैन्य से ॥ १ ॥
चढ़ि हेम रहुबर, करे धरि धनुशर,
लंका कटकु हुए बाहार ।
बाजइ शंख महुरी, आबर टमक भेरी,
श्वेत पताका उड़इ फर हर से ।
दैत्यबीर । चतुरंग बळरे अइला ।
ऋक्ष बानर थाटे प्रबेश हेला से ॥ २ ॥
एके एके कले रण, बानर असुरगण,
मिशामिशि होइ मरामरि ।

फिर वह क्रोध से भर गया और बिशि श्री सीतापति का चिन्तन करने लगा । ५४

छान्द ४३—मकराक्षस-वध

राग—पंचम बराड़ (विप्रसिहा की धुन)

कुम्भ-निकुम्भ की मृत्यु को सुनकर रावण कुपित होकर खर के पुत्र की ओर ताकते हुए बोला, हे मकराक्षस ! अब तुम जाकर राम-लक्ष्मण को मारकर यश की प्राप्ति करो। दशकन्धर की आज्ञा पाकर खर का पुत्र मकराक्षस असुर-सेना साथ में लेकर बाहर निकला । १ हाथ में धनुष-बाण लेकर स्वर्णमय रथ पर चढ़कर वह लंका दुर्ग से बाहर निकला। शंख महुरी, भेरी तथा टमक बज रहे थे । श्वेत पताका फरफर करके उड़ रही थी । पराक्रमी दैत्य चतुरंगिनी सेना के साथ आया और रीछ तथा वानरों की सेना में घुस गया । २ एक-एक करके वानर और राक्षसदल

घेनि शाळशिळकुळ, जुझिले बानरबळ,
देखि खरसुत रहिला आबोरि से।
दैत्यबीर! बिन्धे निरन्तरे तीक्ष्ण शर।
खरसुत शरे मलेक बानर से॥ ३॥
बिन्धिला होइ कोपी, पळाइण ऋक्ष कपि,
श्रीरामे शरण पशिले।
रघुबीर धनुशर, धरिण उभा भुमिर,
आसन्ते देखि राम हसिले से।
दैत्य बीर! कहइ श्रीरामकु उत्तर।
तुहि परा मारिछु आम्भ पिअर से॥ ४॥
आज मुँ तोते मारिबि, पिअर ऋण शुझिबि,
भाग्य बळे मुँ पाइलि भेट।
लक्ष्मण सुग्री सहिते, मरिबे मो शराघाते,
आज जीइँ कि जिबे ऋक्ष मर्कट हे।
रघुबीर! देखुथिबे सकळ अमर।
आज पेषिबि मुं शमन पुर हे॥ ५॥
हसिण जे रघुनाथ, कहिले नाहिँ सामर्थ्य,
पराक्रमे बीर पण जाणि।

आपस में भिड़कर मार-धाड़ करते हुए युद्ध करने लगे। वानरवाहिनी शालवृक्ष तथा शिलायें लेकर जूझ रही थी। खर का पुत्र अपने को घिरा देखकर निरन्तर तीक्ष्ण बाण छोड़ने लगा। उस पराक्रमी खरनन्दन के बाणों से बहुत से वानर मर गये। ३ कुपित होकर उसकी बाण-वर्षा से वानर और भालू भागते हुए श्रीराम की शरण में पहुँच गये। रघुवीर श्रीराम धनुष-बाण लेकर पृथ्वी पर खड़े हो गये। वह उसे आते हुए देखकर मुस्कराये। पराक्रमी दैत्य ने श्रीराम से कहा कि क्या तुम्हीं ने हमारे पिता को मारा है? ४ आज मैं तेरा वध करके पिता का ऋण चुकाऊँगा। भाग्यवश तुझसे मेरी भेंट हो गयी। मेरे बाणों के आघात से सुग्रीव के साथ लक्ष्मण भी मरेगा। क्या आज कोई वानर या भालू जिन्दा बचकर जा सकेगा। हे रघुवीर! आज मैं तुझे यमलोक में भेज दूंगा। सारे देवता देखते रह जायेंगे। ५ श्रीरघुनाथजी ने हँसते हुए कहा कि तुझमें सामर्थ्य नहीं है। पराक्रम से ही वीरत्व का पता लगता है। हम अभी उसे समझेंगे। हम तुमसे कितना कहें। क्या तुमने हमारे पराक्रम को नहीं

एहि क्षणि ता जाणिबा, बचने केते भणिबा,
आम्भ प्राकर्म नाहिँ कि तुम्भे शुणि हे।
दैत्यसुत ! खर दूषण त्रिशिरा संगे।
एका माइलि चउद सहस्र रंगे हे॥ ६ ॥
एमन्त शुणि दनुज, बृष्टि कलाक नाराज,
कळना नोहिला तार काण्ड।
ता काण्डके शतकाण्ड, कले राम प्रति काण्ड,
जेम्हे क्षुद्र करि काटि इक्षुदण्ड से।
दैत्यबीर ! पुणि कुन्ते बुलाइ माइला।
श्रीराम तिनि काण्डे चारि खण्ड हेला से॥ ७ ॥
कोदण्डरे शर सन्धि, दैत्य उपरकु बिन्धि,
काटिले ता करु शर धनु।
पुणिहिँ शरे प्रहारि, सारथी अश्वकु मारि,
शून्यकर होइला दैत्यसूनु से।
दैत्यबीर ! जेते जेते बिन्धुथिला शर।
एहि रूपे काटुथिले रघुबीर शर से॥ ८ ॥
अग्नि शस्त्र करे धरि, बसाइ कोदण्डे करि,
दैत्य उपरकु प्रहारिले।
पशिण हृदरे काण्ड, जळिला होइ प्रचण्ड,
भुमिरे पड़ि मकराक्षस मले से।

सुना है ? हे दैत्यनन्दन ! मैंने खर-दूषण और त्रिशिरा के साथ में चौदह सहस्र असुरों का संहार किया था। ६ ऐसा सुनकर दैत्य ने बाणों की वर्षा की जिसकी गणना नहीं की जा सकती। उसके प्रत्येक बाण पर श्रीराम ने सौ बाण छोड़े और तुच्छ गन्ने के समान उन्हें काट डाला। फिर पराक्रमी दैत्य ने भाले को घुमाकर प्रहार किया। श्रीराम ने तीन बाणों से उसके चार टुकड़े कर दिये। ७ श्रीराम ने कोदण्ड पर बाण चढ़ाकर दैत्य के ऊपर छोड़ते हुए उसके धनुष और बाण को काट दिया। फिर एक बाण मारकर उसके सारथी और घोड़े को मार डाला। दैत्यपुत्र का हाथ खाली हो गया। पराक्रमी राक्षस जैसे-जैसे बाण छोड़ रहा था उसी के अनुरूप श्रीराम उसके बाणों को काट रहे थे। ८ उन्होंने क्रुद्ध होकर कोदंड पर अग्नि-बाण चढ़ाकर दैत्य के ऊपर प्रहार किया। बाण के हृदय में लगने पर वह बड़ी प्रखरता से जलता हुआ पृथ्वी पर गिरकर मर गया।

दैत्यबीर ! तार संगरे जेतेक थिले ।
रामचन्द्र बाणे प्राण हराइले से ।। ९ ।।
श्रीराम तीक्ष्ण नाराचे, मले बहुत दनुजे,
जाहा थिले पळाइण गले ।
लंकारे जाइ पशिले, राबण आगे कहिले,
देब मकराक्षस आजहिँ मले से ।
दैत्यबीर ! शुणि बहुत बिस्मय हेला ।
दन्त रटमट करि चोबाइला से ।। १० ।।
निर्धूम अनळ प्राये, नयन दुइ बुलाए,
भ्रूकुटि कला दशकपाळ ।
दशदिगकु अनाइ, खर निःश्वास पकाइ,
खर सुत मला बोलिण बिकळ से ।
दशशिर ! क्षणे जाए होइला अज्ञान ।
बिशि चिन्ते राम राजीबलोचन से ।। ११ ।।

चतुश्चत्वारिंश छान्द—मायासीता बध

राग—कौशिक

शक्राजितकु अणाइण राबण कहइ प्रशंसा करिण ।
सुरपतिकि धरि आणिला काळु जाणइ तोर बीरपण ।

और जितने भी पराक्रमी राक्षस थे, उन्होंने श्रीराम के बाणों से अपने प्राण खो दिये। ९ श्रीराम के पैने बाणों से बहुत राक्षस मर गये और बचे थे वह भागकर लंका में जाकर रावण से बोले, हे देव ! आज मकराक्षस मर गया। पराक्रमी दैत्य रावण को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। वह दाँत कटकटाकर चबाने लगा। १० निर्धूम अग्नि के समान दोनों नेत्रों को तरेरते हुए भौंहें टेढ़ी करके दश सिरों से दशो-दिशाओं को देखकर प्रखर निःश्वास को छोड़ते हुए 'खर-पुत्र मारा गया' कहकर व्याकुल हो गया। दशकंधर एक क्षण के लिए अचेत हो गया। बिशि कमलनयन श्रीराम का चिन्तन करने लगा। ११

छान्द ४४—माया-सीता का वध

राग—कौशिक

रावण ने इन्द्रजित् को बुलाकर उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि इन्द्र को पकड़ लाने के समय से मैं तुम्हारी वीरता से परिचित हूँ।

आहे कुमर। राम लक्ष्मण संहार।
तोह बिनु तांकु जिणिबाकु नाहिँ लंका भितरे एड़े बीर ॥ १ ॥
दृश्य अदृश्य होइण तार संगे करिब तुम्भे मायारण।
बेनि थर कि कि प्रकारे बर्त्तिले एबे तो शरे देबे प्राण।
शुणि कुमर। राबण मुखरु बचन।
शिरे कर देइ मेलाणि होइला आरोहिला ता निज जान ॥ २ ॥
चतुरंग बळ आगरे पेषिण होम स्थानकु बोलि गला।
बिबिध आयुधमान तहिँ रखि पशु रुधिरे होम कला।
रंग बसन। रंग कुसुम रंग गन्ध।
लौह श्रुबरे छागळर रुधिर मांस होम करि आनन्द ॥ ३ ॥
दक्षिणाबर्त्त होइण बैश्वानर बुलिण आहुति घेनिले।
जाणि कार्ज्यसिद्धि शक्राजितबीर बाहुड़ि रथ आरोहिले।
सेहि क्षणि से। रथ घेनि हेला अदृश्य।
आकाशे ताह्वाकु न देखिले केहि ताकु हुअइ सर्ब दृश्य ॥ ४ ॥
श्राबण मासर जळधारा प्राय शर बृष्टि कला गगनु।
महामेघ घोड़ाइला प्राय होइ उहाड़ कला देब भानु।

हे पुत्र ! तुम राम-लक्ष्मण का संहार करो। तुम्हारे बिना उन्हें जीतने वाला इतना बड़ा वीर इस लंका में नहीं है। १ दृश्य और अदृश्य होकर तुम उसके साथ माया का युद्ध करना। दो बार वह न जाने किस प्रकार बच गये। अब वह तुम्हारे बाण से प्राण त्याग करेंगे। पुत्र ने रावण के मुख से ऐसे वचन सुनकर हाथों को सिर से लगाकर विदा ली। और अपने रथ पर चढ़ गया। २ चतुरंगिनी सेना को आगे ही युद्ध के लिए भेजकर वह यज्ञस्थल को चला गया। अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र वहाँ रखकर उसने पशुओं के रक्त से यज्ञ किया। लाल वस्त्र, लाल पुष्प और लाल चन्दन के साथ लोहे की स्रुवा द्वारा बकरे के मांस और रुधिर से आनन्दपूर्वक हवन किया। ३ दक्षिणावर्त होकर उठती हुई अग्नि ने आहुतियाँ ग्रहण कीं। कार्य सिद्ध हो जाने पर पराक्रमी इन्द्रजित् लौटकर रथ पर बैठा और उसी क्षण रथ लेकर वह अदृश्य हो गया। आकाश में उसे कोई नहीं देख पा रहा था पर वह सबको देख रहा था। ४ उसने आकाश से श्रावण महीने की जलधारा के समान बाणों की वर्षा की जिसके कारण सूर्य छिप गये अर्थात् बाणों के बाहुल्य से सूर्य दिखाई नहीं दे

देखि चकित । होइले श्रीराम लक्ष्मण ।
ऊर्द्ध्व मुख होइ आकाशे चाहान्ते मुखे पड़इ बाण गण ॥ ५ ॥
ऋक्ष कपिबळ होइले आकुळ आकुळे बोलन्ति लक्ष्मण ।
ए शरघात मुँ सहि न पारइ बिकळ हेउछि मो प्राण ।
आज्ञा होइले । ब्रह्मअस्त्र मुहिँ करिबि ।
देब दानब मानब सहितेण एकाबेळके संहारिबि ॥ ६ ॥
राम बोलन्ति जणक अपराधे एड़े अधर्मकु करिब ।
समस्ते अबा तुम्भंकु किस कले कि पाइँ ताहांकु मारिब ।
एमन्त कहि । शरकु प्रतिशर कले ।
दण्डे मात्र रह एहाकु मारिबा बोलि श्रीमुखे आज्ञा देले ॥ ७ ॥
एते बोलि कोदण्डरे अस्त्र संधि आकाशकु चाहिँ रहिले ।
निश्चय मारिबा देखिण असुर मनरे महा भय कले ।
माया करिण । उपाय तहिँ भिआइले ।
माया करिण सीताए आरोपिण रथे ताहाकु बसाइले ॥ ८ ॥
देखिला हनु रथरे बसिछन्ति जनकराजन दुहिता ।
राम रख राम रख बोलुछन्ति बिकळे श्रीराम बनिता ।

रहे थे । श्रीराम तथा लक्ष्मण यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये । मुख उठाकर आकाश की ओर देखने पर बाण गिरने लगते थे । ५ वानर और भालुओं का दल व्याकुल हो गया । लक्ष्मण ने विकल होकर श्रीराम से कहा कि इन बाणों के आघात मैं सहन नहीं कर पा रहा हूँ । मेरे प्राण व्याकुल हो रहे हैं । आज्ञा होने से ब्रह्मास्त्र से मैं देव-दानव तथा मानवों को एक बार में ही नष्ट कर डालूंगा । ६ श्रीराम ने कहा कि एक के अपराध के कारण तुम इतना बड़ा अधर्म करोगे । सबने तुम्हारा क्या किया है ? उन्हें तुम किसलिए मारोगे ? ऐसा कहकर उन्होंने बाण का उत्तर बाण से दिया । एक क्षण रुको इसे मारूँगा इस प्रकार की उनके श्रीमुख से बात निकली । ७ इतना कहकर कोदण्ड पर अस्त्र चढाकर आकाश की ओर ताकते हुए खड़े हो गये । अब यह निश्चय मुझे मारेंगे, यह देखकर असुर इन्द्रजित् मन में बहुत भयभीत हो गया । उसने माया से एक षड्यन्त्र रचा । उसने माया की सीता बनाकर अपने रथ पर बैठा लिया । ८ हनुमान ने रथ पर बैठी हुई राजा जनक की पुत्री सीता को देखा । श्रीराम की पत्नी—हे राम ! रक्षा करो ! हे राम ! रक्षा करो ! कहती हुई व्याकुल हो रही थीं । यह देखकर

ताहा देखिण । हनु करे बहु रोदन ।
रोदन देखिण राबण नन्दन कहइ बहुत बचन ॥ ९ ॥
तुम्भे त एहाकु न नेले न जिब राजा त आम्भर न देबे ।
एहा लागि किपाँ असुर बानर आहुरि बिअर्थे मरिबे ।
एणु करिण । हाणुथिलि मुहिँ एहाकु ।
एबे मुँ तुम्भर आगरे हाणुछि तुम्भर प्रते करिबाकु ॥ १० ॥
एमन्त कहि पादे ताकु प्रहारि करे घेनिला असिबर ।
बेनि खण्ड करि हाणि पकाइला अनाइ थिले हनुबीर ।
पुणि बोइला । बाहुड़ि जाअ बनचर ।
तुम्भ आम्भ गोळ जहिँरु होइला ताकु पेषिलु जमपुर ॥ ११ ॥
एहा देखि हनु करूँ गिरिबर रथरे तार कचाड़िला ।
सारथि रथ पच्छकु घेनि गला से गिरि बिअर्थ होइला ।
बहु रोषरे । बहु रण कला मारुति ।
समस्त कपि तरु शिळा मारन्ते काटइ बिश्वबार नाति ॥ १२ ॥
बेढ़ि कपि मारिबार देखि दैत्य मनरे एमन्त पाञ्चिला ।
निकुम्भ बट तळे होम करिबि बोलि शीघ्रे रण मुंचिला ।

हनुमान रुदन करने लगे। उनको रुदन करते देख रावण का पुत्र बहुत कुछ कहने लगा। ९ तुम तो विना इसे लिये नहीं जाओगे और हमारे महाराज रावण इसे देंगे नहीं। इसके कारण व्यर्थ में बहुत से राक्षस और वानर क्यों मरे? इसीलिए मैं इसे मार रहा था। अब तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए मैं इसे तुम्हारे सामने मार रहा हूँ। १० ऐसा कहकर उसने पैर से उन पर प्रहार करते हुए हाथ मे तलवार उठा ली। उसने उन्हें मारकर दो खण्डों में विभक्त कर दिया। हनुमान देखते ही रह गये। फिर उसने कहा, अरे वनचारियो! तुम लौट जाओ। तुममे से जिसका भी युद्ध मुझसे हुआ मैंने उसे यमलोक भेज दिया है। ११ यह देखकर हनुमान ने अपने हाथ का पर्वत उसके रथ पर पटक दिया। सारथी रथ को पीछे ले गया जिससे पर्वत का प्रहार व्यर्थ हो गया। मरुतनन्दन हनुमान ने अत्यन्त क्रोध से बहुत युद्ध किया। सभी वानरों द्वारा प्रहार किये गये। वृक्षों और शिलाओं की विश्रवा का नाती काट देता था। १२ कपियों द्वारा घेरकर मारते हुए देखकर इस प्रकार मन में विचार किया। "निकुम्भ वट के नीचे हवन करूंगा" ऐसा सोचकर उसने शीघ्रतापूर्वक युद्ध करना छोड़ दिया।

जान्ते पळाइ। गोड़ाइछन्ति बनचर।
तरु शिळा रथ उपरे मारन्ते सहइ राबण कुमर ॥ १३ ॥
खण्ड दूर गोड़ाइण हनु कपि सैन्य घेनिण बाहुड़िले।
निकुम्भ बट तळरे शक्राजित जाइण प्रबेश होइले।
चउपाशरे। असुर सैन्य जगाइले।
सकळ सामग्री घेनि शुचिमन्त होइ होम करि बसिले ॥ १४ ॥
श्रीराम पश्चिम द्वारे रण शुणि ऋक्षपतिकि पेषिदेले।
ऋक्ष बळ घेनि चळन्ते जाम्बब मार्गरे हनुकु भेटिले।
दूते बाहुड़ि। श्रीराम सन्निध्ये प्रबेश।
बोले बिशि राम हनुकु देखिले दिशुअछि अतिबिरस ॥ १५ ॥

पञ्चचत्वारिंश छान्द

राग—पंचम बराड़ि

शोके जाइ हनुमान, रामंकु करि दर्शन,
कहिला से जुद्धर बिधान।
राबण ज्येष्ठनन्दन, सीतांकु बसाइ जान,
आणन्ते करुथिले रोदन।

वह भाग रहा था और कपिवृन्द उसे खदेड़ रहे थे। रथ के ऊपर किये गये वृक्ष और शिलाओं के प्रहार को रावण का पुत्र सहन कर रहा था। १३ थोड़ी दूर तक खदेड़कर हनुमान वानरी सेना को लेकर लौट पड़े। इन्द्रजित् निकुम्भ वट के नीचे जा पहुँचा। उसने चारों ओर राक्षस-सेना को पहरे पर रख दिया। समस्त सामग्री लेकर पवित्र होकर वह यज्ञ करने के लिए बैठ गया। १४ श्रीराम ने पश्चिम द्वार पर संग्राम को सुनकर ऋक्षपति जामवन्त को भेज दिया। रीछों के दल को साथ लेकर जाते हुए जामवन्त से हनुमान की भेट हो गई। रामदूत हनुमान लौटकर श्रीराम के समीप जा पहुँचे। विशि कहता है कि श्रीराम ने हनुमान को अत्यन्त दुखी देखा। १५

छान्द—४५

राग—पंचम बरार

शोकपूर्ण हनुमान ने श्रीराम के दर्शन करके युद्ध का समाचार देते हुए कहा कि रावण का ज्येष्ठ पुत्र रुदन करती हुई सीता को यान में

भो देब से। खड़्गरे बेनि खण्ड कला।
जहिँ जाइँ कलि रण, तार देखिलि मरण,
एड़े रण अकारण हेला ॥ १ ॥
हनु मुखुँ शुणि राम, ज्ञान हारिगले जाम,
धनुशर पकाइ भुमिर।
एमन्त देखि लक्ष्मण, जळ सिंचि सेहि क्षण,
आउजाइले आपणा उर।
भो देब हे। करिथाअ धर्मकु आदर।
धर्म कले केते दूर, केउँ अधर्म तुम्भर,
जाणिलि धर्मे हुए असार ॥ २ ॥
धर्म अधर्म जुझिले, दुहेँ प्राण हराइले,
एणु धर्म अधर्महिँ नाहिँ।
महा अधर्मी राबण, देख पुत्र नातिगण,
धर्म थिले कि मरन्ते नाहिँ।
भो देब हे। धर्म अधर्मकु जे डरइ।
जाणिलि मुँ एते काळे, देखिलि मुँ बेनि डोळे,
संसारे से बहु दुःख पाइ ॥ ३ ॥
पुणि बोलन्ति लक्ष्मण, धर्म करन्ति प्रमाण,
निसहा दुर्बळ जनमाने।

बिठाकर लाया। हे देव ! उसने तलवार से उनके दो खण्ड कर दिये। जहाँ पर जाकर युद्ध किया वहीं उनकी मृत्यु देखी। इतना सारा युद्ध व्यर्थ ही हो गया। १ हनुमान के मुख से ऐसा सुनकर धनुष-वाण भूमि पर फेंककर श्रीराम अचेत हो गये। ऐसा देखकर लक्ष्मण उसी क्षण जल छिड़कते हुए उन्हें अपनी छाती में समेटकर कहने लगे, हे देव ! आप सदा धर्म का आदर करते थे। धर्म ने कितनी दूर तक पहुँचा दिया। तुम्हारा अधर्म कौन सा था। मैं अब जान गया कि धर्म में कोई सार नहीं है। २ धर्म और अधर्म दोनों जूझ गये। दोनों ने ही प्राण त्याग दिये। इसलिए धर्म और अधर्म कुछ नहीं है। रावण महान अधर्मी है। उसके पुत्र तथा नातीगण क्या धर्म के रहने पर मृत्यु को न प्राप्त होते। हे देव ! धर्म अधर्म से डरता है। इस संसार में बहुत कष्ट पाकर तथा अपनी दोनों आँखों से देखकर अब मैं समझ गया हूँ। ३ लक्ष्मण ने पुनः कहा कि धर्म दुर्बल व्यक्तियों को निःसहाय प्रमाणित करता है। आपकी

सेहि रूपे तुम्भ मति, बोल मोर धर्मगति,
एणुटि पशिलि आसि बने।
भो देब हे। धर्म करि धन थिले सिना।
धर्मरे समस्त गुण, मूर्खरे पंडित पण,
पातकी हुअन्ते धन बिना ॥ ४ ॥
घेनि मुँ ब्रह्मअस्त्रकु, मारुथिलि समस्तंकु,
बोइले जणे करिछि दोष।
धर्मतः बिरोध कर, अधर्म कि पाइँ कर,
समस्त जनंकर कि दोष।
भो देब हे। से धर्म त एबे न रखिला।
प्रमाद शिरे प्रमाद, संतत हुए बिषाद,
बेळकु बेळ कषण देला ॥ ५ ॥
एमन्त श्रबणे शुणि, मोह तेजि रघुमणि,
प्रिया शोके होइले कातर।
एमन्त देखि लक्ष्मण, बोलन्ति भो देब शुण,
मारिबि मुँ निश्चे दशशिर।
भो देब हे। तेबे अजोध्याकु आम्भे जिबा।
ए लंकागड़रे जेते, असुरमाने जीबिते,
अछन्ति ताहांकु न रखिबा ॥ ६ ॥

बुद्धि भी इसी प्रकार की है। आप कहते हैं कि यह मेरी धर्म की गति है। इसीलिए जंगल में आकर रहना पड़ा। हे देव ! धन होने से ही तो धर्म किया जा सकता है। धर्म में सभी गुण होते हैं। वह मूर्ख को भी पण्डित बना देता है। धन के बिना पातकी हो जाते हैं। ४ मैं ब्रह्मास्त्र लेकर सभी को मार रहा था तब आपने कहा कि एक ने दोष किया है। धर्मपूर्वक उसका बिरोध करो। अधर्म क्यों कर रहे हो ? सभी व्यक्तियों का क्या दोष है ? हे देव ! अब तो उस धर्म ने रक्षा नहीं की। प्रमाद पर प्रमाद निरन्तर संताप का कारण बना। उसने समय-समय पर कष्ट ही दिया है। ५ इस प्रकार कानों से सुनकर रघुमणि श्रीराम चैतन्य होकर प्रियतमा के शोक में दुखी हो गये। ऐसा देखकर लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! सुनिये। मैं निश्चय दशानन को मारूँगा, तभी हम लोग अयोध्या लौटेंगे। इस लंका दुर्ग में जितने भी दैत्य जीवित हैं उन्हें नहीं छोड़ूंगा। ६

एहि काळे बिभीषण, परबेश सेहि क्षण,
देखिले श्रीरामंक बिळाप ।
सीतार बिनाश शुणि, बिळपन्ते रघुमणि,
बिभीषण बोले मुंच ताप ।
भो देब हे । सीतांकु देखिब सेहि काहिँ ।
इन्द्रजित माया कला, हनु जाणि न पारिला,
होम करुअछि एबे जाइँ ॥ ७ ॥
बिभीषण मुखुँ शुणि, हृष्ट होइ रघुमणि,
कोदण्ड धइले बाम पाणि ।
बोलइ दुष्ट राबणि, एबे निकि जिब जिणि,
शरे शिर पकाइबि हाणि ।
भो देब हे । बिभीषणे प्रशंसा करन्ति ।
छाड़िले शोक सन्ताप, बढ़िला बिषम कोप,
बिशि भजइ जानकीपति ॥ ८ ॥

षट्चत्वारिंश छान्द—लक्ष्मण इन्द्रजितर जुद्ध

राग—चळघण्ट

कर जोड़ि कहे बिभीषण ।
भो देब मोर बिनय शुण ॥

उसी समय विभीषण ने वहाँ आकर श्रीराम को विलाप करते देखा। सीता की मृत्यु को सुनकर श्रीराम विलाप कर रहे थे। विभीषण ने कहा, हे देव ! आप दुःख का त्याग करें। आप उन्हीं सीता को देखेंगे। इन्द्रजित् ने माया की थी जिसे हनुमान नहीं जान पाये। अब वह जाकर हवन कर रहा है। ७ विभीषण के मुख से ऐसे वचन सुनकर श्रीराम ने प्रसन्न होकर बायें हाथ में धनुष उठा लिया और बोले, अरे दुष्ट रावणात्मज ! अब क्या जीतकर जा सकोगे ! मैं बाण से तेरा शिर काट डालूँगा। विभीषण प्रशंसा कर रहे थे। शोक-सन्ताप को त्याग देने पर श्रीराम का विषम क्रोध बढ़ गया। विशि जानकीपति श्रीराम का भजन करता है। ८

छान्द ४६—लक्ष्मण और इन्द्रजित् का युद्ध

राग—चलघण्ट

हाथ जोड़कर विभीषण ने कहा, हे देव ! मेरी विनय सुनिये।

संग्राम तेजि गला मेघनाद ।
राजाधिराज हे । हेब बड़ प्रमाद ॥ १ ॥
लंकार पश्चिम द्वार निकट ।
अछइ तहिं निकुम्भिला बट ॥
तहिँर मूळे से होम करिब ।
राजाधिराज हे । रथे बाहार हेब ॥ २ ॥
से रथे बसि होइब बिजयी ।
एमन्त बर धाता अछि देइ ॥
साबधान होइ करिबा रण ।
राजाधिराज हे । पेष बीर लक्ष्मण ॥ ३ ॥
सामान्य नुहे राबणकुमर ।
शक्रकु जिणिअछि बहुबार ॥
एथकु देब न करिब हेळा ।
निश्चे मरिबा हे । मन्दोदरीङ्क बळा ॥ ४ ॥
शुणि राम लक्ष्मणंकु चाहिँले ।
सज होइ आस बोलि बोइले ॥
शुणि लक्ष्मण श्रीराम बचन ।
अंगे लाइले हे । अभेद कबचमान ॥ ५ ॥
बेनि कन्धे बेनि तूणी छन्दिले ।
शत्रु नाश खण्डा बामे पिन्धिले ॥

हे राजाधिराज ! मेघनाद संग्राम को छोड़कर चला गया । अब बड़ा प्रमाद घटित होगा । १ लंका के पश्चिम द्वार के निकट निकुम्भिला-वट है । उसी के नीचे वह हवन करेगा । हे महाराज ! फिर वह रथ पर बाहर आयेगा । २ उस रथ पर बैठकर वह विजयी बनेगा । ऐसा वर उसे ब्रह्माजी ने दिया है । सावधानी के साथ युद्ध करना होगा । हे महाराज ! आप पराक्रमी लक्ष्मण को भेज दें । ३ रावण का पुत्र साधारण नहीं है । उसने बहुत बार इन्द्र पर विजय प्राप्त की है । इस बार आप प्रमाद न करें । मन्दोदरीनन्दन निश्चित ही मृत्यु को प्राप्त होगा । ४ राम ने यह सुनकर लक्ष्मण की ओर ताकते हुए उनसे तैयार होकर आने के लिए कहा । लक्ष्मण ने श्रीराम के वचनों को सुनकर अपने शरीर में अभेद्य कवच आदि धारण कर लिया । ५ दोनों कन्धों पर दो तरकश लगाये । शत्रु दमनकारी तलवार बायीं ओर पहन ली ।

देबदत्त शर संग्रह कले ।
इन्द्रदेबार हे । धनु करे धइले ॥ ६ ॥
श्रीराम छामुरे होइले उभा ।
सैन्यर भितरे दिशिले शोभा ॥
श्रीराम पाद छुइँले त्वरित ।
प्रणाम कले हे । सुमित्रांकर सुत ॥ ७ ॥
राम कहन्ति बिभीषणे चाहिँ ।
एहांकर पाश छाड़िब नाहिँ ॥
हनु अंगद संगतरे थिबे ।
नळ नीळादि हे । समस्त कपि जिबे ॥ ८ ॥
जेते जेते अछन्ति महाबीर ।
समस्ते जाइण समर कर ॥
राम मुखुँ शुणि कपि सइनि ।
बाहार हेले हे ।' लक्ष्मण संगे घेनि ॥ ९ ॥
बेढ़िले लंकार पश्चिम द्वार ।
देखिले बेढ़ि अछन्ति असुर ॥
बिभीषण लक्ष्मणंकु कहिले ।
सैन्य माइले हे । जे आसिब बोइले ॥ १० ॥
शुणि संग्राम कले कपिबळ ।
पिटिले शाळ कचाड़िले शिळ ॥

उन्होंने देवताओं द्वारा दिये गये बाण एकत्रित किये तथा इन्द्र द्वारा दिया गया धनुष धारण कर लिया । ६ वह श्रीराम के समक्ष जाकर खड़े हो गये । सेना के भीतर वह शोभायमान दिखाई दे रहे थे । सुमित्रानन्दन लक्ष्मण ने शीघ्र ही श्रीराम के चरणों को छूकर प्रणाम किया । ७ श्रीराम ने विभीषण की ओर ताकते हुए कहा कि इनका साथ नहीं छोड़ना । हनुमान तथा अंगद साथ में रहेंगे । नल, नील आदि सभी वानर जायेंगे । ८ जो-जो महान योद्धा हैं वह सब जाकर युद्ध करें । श्रीराम के मुख से यह सुनकर वानरवाहिनी लक्ष्मण को साथ लेकर बाहर निकली । ९ उन्होंने लंका का पश्चिम द्वार घेर लिया । उन्होंने देखा कि असुर भी घेर कर खड़े हैं । विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि जो भी आयेगा सेना उसे मारेगी । १० यह सुनकर वानरदल ने संग्राम किया । वह शाल वृक्षों से पीटने और शिलाओं से कुचलने लगे । असुर भी प्रबलता से मारने

असुर माइले होइ प्रबळ ।
उभय बळ हे । संग्राम बेळु बेळ ॥ ११ ॥
हनु अंगद दुर्बिन्द महीन्द्र ।
नळ नीळ सुषेण से सुगन्ध ॥
पनस रम्भा महा महा बीर ।
समर कले हे । से दैत्य अगोचर ॥ १२ ॥
धनु धरिण आगे बिभीषण ।
कोपे बिन्धइ शत शत बाण ॥
चारि मंत्री घेनि करन्ते रण ।
बहु माइले हे । सेहि असुरगण ॥ १३ ॥
बड़ बड़ जहुँ असुर मले ।
जेहि थिले से समर्थ नोहिले ॥
कहिले जाइ मेघनाद आगे ।
होम न सरु । सेहु अइले बेगे ॥ १४ ॥
अंगरे नाइले बज्र कबच ।
खण्डा जमदाढ़ तूण सुसंच ॥
बीर बेश होइ बीर राबणि ।
सारथि कले हे । रहुबरकु आणि ॥ १५ ॥
कृष्ण अश्व एक रथरे जोचि ।
धनु टंकार करिण आसंचि ॥

लगे। समय के साथ-साथ दोनों दलों का संग्राम बढ़ता गया। ११ हनुमान, अंगद, दुर्विन्द, महेन्द्र, नल, नील, सुषेण, सुगन्ध, पनस, रम्भ आदि महान-महान योद्धाओं ने युद्ध किया परन्तु वह राक्षस नहीं दिखाई दिया। १२ आगे-आगे विभीषण धनुष धारण करके सौ-सौ बाण छोड़ रहा था। उन्होंने चार मन्त्रियों को लेकर युद्ध करते हुए बहुत से राक्षसों का वध किया। १३ जब बड़े-बड़े असुर मार दिये गये और जो बचे वह समर्थ नहीं हुए। उन्होंने जाकर मेघनाद से सब कह दिया। हवन की समाप्ति के पूर्व ही वह भी शीघ्रता से आया। १४ उसने अपने शरीर पर वज्र-कवच धारण किया। यमदाढ़ के सदृश तलवार तथा सुसंचित तूणीर से रावणकुमार ने वीर वेश सजाया। तभी सारथी श्रेष्ठ रथ को ले आया। १५ रथ में काले रंग का घोड़ा जुता था। धनुष को उठाकर टंकार मारते हुए

दिब्य बेशरे दिशुअछि तोरा ।
रथे बसिले हे । काळ देबता परा ।। १६ ।।
रथ आणि कले लक्ष्मण आगे ।
बिभीषणंकु चाहिँ कहे रागे ।।
आरे कुळांगार असुराधम ।
केते काळरु रे । पीरति तोर राम ।। १७ ।।
एका गर्भरु होइलु जनम ।
पिता होइ चाहुँ पुत्र मरण ।।
मोते मारिबाकु आसिछु धाइँ ।
एड़े निष्ठुररे, होइलु तु कि पाइँ ।। १८ ।।
एमन्त बोलिण करे समर ।
देखिण पळाइले बनचर ।।
लक्ष्मण धनु धरि आगुसार ।
हनु पिटिला जे । रथरे तरुबर ।। १९ ।।
पुणि हनु शिळे मारन्ते चाण्डे ।
राबण तनुज काटिला काण्डे ।।
जेते मारन्ति जूथपति माने ।
राबण सुत हे । काटन्ति साबधाने ।। २० ।।
देखिले धनु धरि बिभीषण ।
मर्मस्थानकु बिन्धुछन्ति बाण ।।

दिव्य वेश में उसका तुर्रा दिखाई दे रहा था । मालूम पड़ता था जैसे कालदेवता रथ पर विराजमान हों । १६ उसने रथ को लाकर लक्ष्मण के आगे खड़ा करके विभीषण से बड़े क्रोध में आकर कहा, अरे कुलांगार नीच राक्षस ! कितने समय से राम से तेरी प्रीति है । १७ एक ही गर्भ से उत्पन्न होकर पिता होते हुए तू पुत्र की मृत्यु की कामना करता है । मुझे मारने के लिए तू दौड़कर आ गया । तू इतना निष्ठुर किसलिए हो गया ? १८ ऐसा कहकर वह युद्ध करने लगा । यह देखकर वानर लोग भाग गये । लक्ष्मण धनुष लेकर आगे बढ़े और हनुमान ने एक वृक्ष रथ पर दे पटका । १९ फिर हनुमान द्वारा प्रखरता से शिला मारने पर रावणनन्दन मेघनाद ने उसे बाण से काट दिया । यूथपति जितने भी प्रहार कर रहे थे, रावणात्मज उन्हें सावधानी से काट देता था । २० उसने देखा कि विभीषण धनुष लेकर उसके मर्म स्थानों पर बाण-वर्षा कर

अनाइ पुणि बोलइ बचन ।
धिक् धिक् आरे । तोर निर्ल्लज पण ॥ २१ ॥
मुँ तोर पुत्र मराइबु मोते ।
राम तोर किस कि देब तोते ॥
सोदर छाड़ि परकु आबोरु ।
असती स्तिरीर । पराये धर्म करु ॥ २२ ॥
बिभीषण बोले शुण रे सुत ।
धर्म थिला जन मोहर मित ॥
रत्ने निर्मित जेउँ पुर करि ।
अग्नि लागिले जे । तहिं पशिकि मरि ॥ २३ ॥
बहुत अधर्म कला तो तात ।
तेणु ता संगु होइलि मुकत ॥
न जाणुकि तुहि मोर स्वभाब ।
बिशि बोलइ हे । कहि एबे कि हेब ॥ २४ ॥

सप्तचत्वारिंश छान्द—इन्द्रजित बध

रसकोइला बाणी

लक्ष्मण इन्द्रजित गुरु रण । महाक्षत्री अटन्ति
बेनि जण । शर आत जाते न दिशे भानु ।

रहा है तब उसने उसकी ओर देखकर कहा, अरे तुझे धिक्कार है, तेरे निर्लज्जपन को भी धिक्कार है। २१ मैं तेरा पुत्र हूं। तू मुझे मरवायेगा। राम तेरा कौन है ? वह तुझे क्या देगा ? अपने भाई को छोड़कर पराये व्यक्ति को अपना रहा है। तू असती नारी के समान धर्म कर रहा है। २२ विभीषण ने कहा, अरे बेटे ! सुत ! धार्मिक व्यक्ति ही मेरा मित्र है। रत्नों से जिस नगर का निर्माण किया है, अग्नि लगने से जा उसी में घुसकर मर जा। २३ तेरे पिता ने बहुत अधर्म किया है। इसलिए उसके संग से मैं मुक्ति पा गया। क्या तू मेरे स्वभाव को नहीं जानता ? बिशि कहता है कि अब कहने से क्या होगा। २४

छान्द ४७—इन्द्रजित्-वध

रसकुल्या की धुन

लक्ष्मण और इन्द्रजित् का भीषण युद्ध होने लगा। दोनों ही महान योद्धा थे। बाणों के आवागमन से सूर्य नहीं दिखाई दे रहे थे।

मण्डळाकार दिशे बेनिधनु से । बिन्धिबा भुज न दिशे जे ।
हनु कन्धरे आरोहि रामानुज द्वितीयेन्द्र प्राय दिशे जे ॥ १ ॥
लक्ष्मण पेषिले बाबळ शर । काटिले असुरर धनुशर ।
पुणि कोपे बिन्धिले पाञ्च काण्ड । काटिले अश्व सारथिर
मुण्ड से । रथ कले हनु भंग जे । सेहि क्षणि अन्य
रथे आरोहिण जुझिला लक्ष्मण संग जे ॥ २ ॥
बिन्धन्ते शरे शर परिताळ । जळइ तहुँ निर्धूम अनळ ।
देखि तरळ होए बेनि बळ । उत्पात जात बेळकु बेळ ।
से दनुज रणे प्रबळ जे । तिनि काण्ड बाछि
बिन्धिले बाजिला लक्ष्मणंकर कपाळ जे ॥ ३ ॥
गळु अछि तिनि धार रुधिर । फुफुकार करि
बिन्धन्ति शर । बिषम व्यथा पाइण लक्ष्मण । बाछि
बिन्धिले शर सेहि क्षण से । अंगु कबच काटिले जे ।
उर उपरे बसिण बीर शर रुधिर बाहार कले जे ॥ ४ ॥
सेन्हा उपरे काण्डमान बसे । झिक पक्षी प्राय शरीर
दिशे । कि अबा फुटिला पलाश तरु । तेसन रुधिर

दोनों के धनुष मण्डलाकार दिखाई दे रहे थे । बाण छोड़नेवाली भुजा नहीं दिखाई दे रही थी । हनुमान के कन्धे पर बैठे श्रीराम के अनुज द्वितीय इन्द्र के समान दिखाई दे रहे थे । १ लक्ष्मण ने बावल बाण छोड़ा और असुर के धनुष और बाण को काट दिया । फिर क्रुद्ध होकर उन्होंने पाँच बाण छोड़े और सारथी तथा घोड़े के सिर काट दिये । हनुमान ने उसके रथ को नष्ट कर दिया । उसी क्षण वह दूसरे रथ पर बैठकर लक्ष्मण के साथ जूझ गया । २ वह बाणों पर बाण छोड़ता जा रहा था जिससे निर्धूम अग्नि जल रही थी । जिसे देखकर दोनों दल विगलित हो रहे थे । धीरे-धीरे उत्पात अपशकुन प्रकट होने लगे । वह राक्षस युद्ध में प्रबल होता जा रहा था । उसने चुनकर तीन बाण छोड़े जो लक्ष्मण के सिर पर जाकर लगे । ३ रुधिर की तीन धाराएँ बहने लगीं । वह फुफकार करके बाण छोड़ रहा था । लक्ष्मण ने विषम वेदना पाकर उसी क्षण छाँटकर बाण छोड़े जिनसे उसके अंग का कवच कट गया । पराक्रमी लक्ष्मण के बाण उसके हृदय में घुसकर रक्त निकाल रहे थे । ४ उसके वक्ष पर लगे हुए बाणों से उसका शरीर झिक पक्षी के समान दिखाई दे रहा था । जैसे पलाश का वृक्ष प्रस्फुटित हो गया हो, उसी प्रकार से दोनों के शरीर में रक्त दिखाई दे रहा था ।

बेनि अंगरु से । नीप फूल प्राय शोभा जे । बेनि बीरे
बेळु बेळ बळबन्त निज भुजबळ प्रभा जे ।। ५ ।।
आकाशे भाळन्ति अमरगण । न पुण असुर मारे
लक्ष्मण । एमन्त बोलिण जय वाछिले । लक्ष्मण बिजयी
हेउ बोइले से । बहुत कल्याण कले जे । देवता
ऋषिक कल्याणे लक्ष्मण बहु बळबन्त हेले जे ।। ६ ।।
पुणि लक्ष्मण पेषि दिव्य शर । काटि रथ ध्वज
सारथि शिर । बिरथी होइण राबण सुत । निज
पुरकु से गले त्वरित । हेम रहुबरे चढ़ि जे । लक्ष्मण
छामुरे प्रबेश होइले करि महाघोर रड़ि जे ।। ७ ।।
पुणिहिँ संग्राम कले बहुत । प्रतिशर करि सुमित्रा सुत ।
बेळकु बेळ बढ़िला समर । देखि भाळिले बिभीषण
बीर से । मुँ करिबि एबे रण जे । दण्डे बिश्राम
करन्तु एबे श्रान्ति हरन्तु बीर लक्ष्मण जे ।। ८ ।।
एहा बिचारि बिभीषण बीर । धनु धरिण हेले अग्रसर ।
बिन्धिले कोपे अनेक नाराच । छेदइ ताहा राबण
आत्मज से । असुरे असुर रण जे । पुणि धिकार
करइ शक्राजित धिक तो पृषार्थपण जे ।। ९ ।।

दोनों नीप के पुष्पों के समान शोभायमान थे । दोनों वीर अपनी भुजाओं के बल से धीरे-धीरे प्रबल होते जा रहे थे । ५ आकाश में देवतागण सोचने लगे कि यह असुर कहीं लक्ष्मण को मार न दे । यह कहकर उन्होंने जय की कामना की । उन्होंने कहा, हे लक्ष्मण ! तुम जय प्राप्त करो । तुम्हारी जय हो । उन्होंने बहुत आशीर्वाद दिया । देवता तथा ऋषियों के आशीर्वाद से लक्ष्मण का बल बहुत बढ़ गया । ६ फिर लक्ष्मण ने दिव्य बाण छोड़कर रथ, ध्वज तथा सारथी का सिर काट डाला । रावणी विरथ होकर अपने सदन में जाकर शीघ्र ही स्वर्णरथ पर चढ़कर घनघोर गर्जन करते हुए लक्ष्मण के समक्ष आ पहुँचा । ७ उसने पुनः बहुत युद्ध किया । सुमित्रानन्दन ने बाण का उत्तर बाण से दिया । समय-समय पर युद्ध तीव्रतर होता गया । यह देखकर पराक्रमी विभीषण ने विचार किया कि अब हम युद्ध करेंगे । एक दण्ड के लिए वीर लक्ष्मण विश्राम करके अपना श्रम दूर करें । ८ यह विचार करके पराक्रमी विभीषण धनुष लेकर आगे आये और उन्होंने क्रुद्ध होकर बहुत से बाण छोड़े । रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने वह सब काट दिये । असुर से असुर का युद्ध

बिभीषण बोले शुण कुमर। आउ जे आयुष नाहिँ
तोहर। जेते बीर थिले लंका भितरे। समस्ते गले
संजीवनीपुर से। एका मात्र अछु तुहि जे। तु मले
तो पिता झुरिण मरिब बसि से एकाकी होइ जे ॥ १० ॥
एमन्त कहि करन्ति समर। शकति कुठार परिघ शर।
बिबिध अस्त्र होन्ते आत जात। देखि आग हेले
सुमित्रासुत। ता संगरे कले संग्राम जे। बेळकु बेळ
बहु तेज बढ़िला करन्ते क्षणे बिश्राम जे ॥ ११ ॥
राबण तनुजाबयबमान। बेळकु बेळ होइला निऊन।
फूटिला तनु होइ अशकत। तेबेहेँ बिन्धइ शर बहुत।
ता जाणि कहे बिभीषण जे। फुटिलाणि आउ दण्डे
जुद्ध कर मारिबाटि एहिक्षण हे ॥ १२ ॥
तिनि रात्र तिनि दिबस रण। गलाणि एहार नाहिँ
पराण। लंकारे एहि मात्र अछि बीर। फुरुणा होइण
कर समर। मारिबा करिबा जय हे। राबणकु आउ
किछि भय नाहिँ होइबा आम्भे निर्भय हे ॥ १३ ॥

हो रहा था। पुनः इन्द्रजित् ने उसको धिक्कारते हुए उससे कहा कि तेरे पुरुषार्थ को धिक्कार है। ९ विभीषण बोला, अरे बेटे! सुन। अब और तेरी आयु शेष नहीं है। लंका में जितने भी वीर थे वह सब यमलोक चले गये। एकमात्र तू ही बचा है। तेरे मरने से तेरा पिता अकेले होकर सूखकर मर जायेगा। १० ऐसा कहकर उसने युद्ध किया। शक्ति, कुठार, परिघ तथा बाण आदि विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र आ-जा रहे थे। यह देखकर सुमित्रानन्दन ने आगे बढ़कर उसके साथ युद्ध किया। समय के साथ-साथ प्रखरता बहुत बढ़ जाने के कारण एक क्षण के लिए उन्होंने विश्राम किया। ११ धीरे-धीरे रावण के पुत्र के शरीर के अवयव शिथिल हो गये। शरीर अशक्त होकर टूटने लगा, परन्तु वह तब भी बहुत बाण चला रहा था। यह जानकर विभीषण ने कहा, अरे यह थक गया और एक दंड युद्ध करें। फिर इसी क्षण इसे मार डालें। १२ तीन दिन और तीन रात तक युद्ध होता रहा पर उसके प्राण नहीं गये। लंका में मात्र यही वीर है। स्फूर्ति के साथ युद्ध करके इसे मारकर विजय प्राप्त करना है। फिर रावण से और कुछ भय नहीं रहेगा और हम लोग निर्भय हो जायेंगे। १३

बिभीषणंक एमन्त बचन । शुणि लक्ष्मण हेले हृष्टमन ।
बेळु बेळ शर कले सन्धान । दक्षिण भुज स्फुरे घनघन ।
जाणि बोले हेब जय हे । इन्द्र देबा शर
तूणीर बाहार करि देखि कला भय हे ॥ १४ ॥
इन्द्रदत्त धनुरे बसाइले । ओटारिण मंत्र पढ़ि पेषिले ।
काटिला अस्त्र शक्राजित शिर । मुकुट कुण्डल सहिते
तार से । पड़िला जाइँ भूमिरे जे । लक्ष्मण
शिरे देबराजा कुसुम बृष्टि कले निरन्तर जे ॥ १५ ॥
दुन्दुभि बजाइले सुर पुर । बहु आनन्द हेले सुनासीर ।
जूथपति माने आनन्द हेले । लक्ष्मण अंग आलिंगन
कले से । करिण बहुत स्तुति जे । लक्ष्मणंक बेढ़ि
पटुआर करि राम छामुकु आणन्ति जे ॥ १६ ॥
जुद्ध बारता कुहाकुहि होइ । श्रीराम छामुरे होइले
जाइँ । राम पाद छुइँ लक्ष्मण बीर । ओळगि उभा
होइले छामुर से । बिभीषण जाइले जे । आज देब
तुम्भ भ्रात शक्राजित मारिण अभय कले हे ॥ १७ ॥

विभीषण के ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मण ने प्रसन्न मन से बार-बार बाण छोड़े। उनकी दाहिनी भुजा जोर से फड़कने लगी। यह जानकर उन्होंने कहा कि अब विजय होगी। इन्द्र के द्वारा दिया हुआ बाण तरकश से निकालते देखकर इन्द्रजित् भयभीत हो गया। १४ लक्ष्मण ने इन्द्र के द्वारा दिये हुए धनुष पर बाण चढ़ाकर मंत्र पढ़कर खींचकर छोड़ दिया। उससे इन्द्रजित् का सिर मुकुट और कुण्डल-सहित कटकर पृथ्वी पर जा पड़ा। देवराज इन्द्र ने निरन्तर लक्ष्मण के सिर पर फूलों की वर्षा की। १५ स्वर्गलोक में दुन्दुभि बजने लगी। देवराज इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए। यूथपति प्रसन्नता से भर गए और उन्होंने लक्ष्मण का आलिंगन करके उनकी बहुत स्तुति की। वह सभी लक्ष्मण को घेरकर सम्मान के साथ श्रीराम के समक्ष ले जाने लगे। १६ युद्ध की बातें करते-करते वह श्रीराम के समक्ष जा पहुँचे। पराक्रमी लक्ष्मण ने श्रीराम के चरण स्पर्श करके प्रणाम किया और वह उनके समक्ष खड़े हो गये। विभीषण ने बताया, हे देव ! आज आपके भाई ने इन्द्रजित् को मारकर सबको निर्भय कर दिया। १७ यह सुनकर श्रीराम बहुत

शुणिण राम बहु हृष्टमन । लक्ष्मणंकु कलेक आलिंगन
शिर चुम्बिण कोळे बसाइले । शुणि पुणि शिर
आघ्राण कले । आश्वासि श्री हस्ते अंग जे । आज्ञा
देले आज लंका जय कलि तुम्भे थिलाकु मो संग हे ।। १८ ।।
एबे राबणकु मारिबि मुहिँ । आउ काहाकु मोर भय
नाहिँ । एमन्त बोलि लक्ष्मणंकु चाहिँ । अंगु काण्डमान
काढ़ि पकाइ से । सुषेणकु आज्ञा देले जे । जेमन्त
एहांक अंग ब्रण जिब औषधि दिअ बोइले जे ।। १९ ।।
राम आज्ञा पाइ बैद्य सुषेण । औषधि आणि देला
सेहि क्षण । ब्रण लभिण होइले सुब्रर्ण । गतरु अधिक
बळ सम्पन्न से । हेले समस्ते आनन्द जे ।
दीन बिशिर मति मत्त मधुप श्रीराम पदारबिन्द जे ।। २० ।।

अष्टचत्वारिंश छान्द—राबण-शोक

राग—बंगळाश्री

राबण छामुरे जणाइले जाइ निज परिजन माने ।
राम भ्रात शक्राजित बध कला देखि अइलु नयने ।।

प्रसन्न हुए। उन्होंने लक्ष्मण का आलिंगन करके सिर चूमकर उन्हें गोद में बैठा लिया और बार-बार उनका सिर सूंघने लगे। श्रीराम ने उनके अंगों को अपने हाथ से सहलाया। फिर वह बोले कि तुम हमारे साथ होने के कारण आज हमने लंका जीत ली। १८ अब रावण को मैं मारूँगा और किसी का भय मुझे नहीं है। ऐसा कहकर लक्ष्मण की ओर देखकर उनके शरीर से बाणों को निकालकर उन्होंने फेंक दिया। श्रीराम ने सुषेण को आज्ञा दी कि इन्हें ऐसी औषध दो, जिससे इनके शरीर के घाव समाप्त हो जाएं। १९ श्रीराम की आज्ञा पाकर वैद्य सुषेण ने उसी समय औषध लाकर दी जिसे घावों पर लगाने से वर्ण सुन्दर हो गया और शक्ति पहले से भी अधिक हो गयी। सभी लोग आनन्द से भर गये। श्रीराम के चरण-कमलों में दीन विशि की बुद्धि मदमस्त भौंरे के समान है। २०

छान्द—४८

राग—बंगलाश्री

अपने आत्मीय जनों ने रावण के सामने जाकर कहा कि श्रीराम के भाई ने इन्द्रजित् का वध कर दिया है। हम लोग अपनी आंखों से देख

इन्द्रजित बध शुणिण रावण मूर्च्छा जाइण पड़िला ।
केतेहेँक बेळे चेतना पाइण उच्चरे रोदन कला ।। १ ।।
आहा पुत्र मोर गुणबन्त बळवन्त हारिछु काहाकु ।
केते केते बेळे जिणि न थिलु तु स्वर्गरे शचीनाहाकु ।।
तो मुखकमळ देखि दिगपाळ माने करुथान्ति भय ।
केउँ जोगबशे रामर सानुज संग्रामरे कला जय ।। २ ।।
जाणिथिलि मोर उत्तर षोड़श करन्तु रे शक्राजित ।
बिहि एहा कला मुँ तोर से कर्म करिबाकु हेलि सुत ।।
जन्म होइ मेघ प्राय ध्वनि कलु तेणु नाम मेघनाद ।
इन्द्रंकु जिणिला दिनरु बिधाता देले इन्द्रजित पद ।। ३ ।।
किंचित जुद्धरे मानब हातरे हारिलु जे तुहि प्राण ।
शुणिले देबता सहिते आनन्द होइबे शची रमण ।।
एका करि मोते सोदर सहिते केणे गलुरे कुमर ।
मानब हाते पराभब पाइलु बिहि कला एते दूर ।। ४ ।
माया सीता माइलाकु कोपकरि प्राण माइलाक तोते ।
एबे मुँ सीताकु सतेहेँ मारिबि राम मारु आसि मोते ।।

आये हैं। इन्द्रजित् का वध सुनकर रावण मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और कुछ देर बाद चेतना पाकर ऊँचे स्वर में रुदन करने लगा। १ हे मेरे पुत्र ! तुम गुणवान थे और बलवान थे। तुम किससे हार गये? तुमने कब-कब स्वर्ग में शची के पति इन्द्र को नही जीता ? तुम्हारे मुख-कमल को देखकर भय करने लगते थे। किस जोग के कारण राम के भाई ने तुम्हें संग्राम में जीत लिया ? २ मैं तो ये समझता था कि मेरा ऊर्द्ध्व दैहिक-संस्कार इन्द्रजित् करेगा, परन्तु भाग्य ने ऐसा किया कि हे बेटे ! तुम्हारे यह कर्म मुझे करने पड़ रहे हैं। जन्म होने पर तुमने मेघ के समान गर्जना की थी, इसलिए तुम्हारा नाम मेघनाद पड़ा था। इन्द्र को जीतने के दिन से ब्रह्मा ने तुम्हें इन्द्रजित् पद प्रदान किया था। ३ थोड़े से युद्ध में मानव के हाथ से तुमने अपने प्राण खो दिये। यह सुन कर देवताओं के सहित शची के पति इन्द्र प्रसन्न हो जायेंगे। मुझे अकेला छोड़कर अरे बेटे ! भाई के साथ तुम कहाँ चले गये ? मानव के हाथ से तुम्हें पराजय मिली। भाग्य ने यहाँ तक पहुँचा दिया। ४ तुमने माया की सीता को मारा और उसने क्रोध करके तुम्हें ही मार डाला। अब मैं सीता को सत्य ही मार डालूंगा। भले ही राम पीछे

एमन्त कहिण खड्ग धरिण पुत्र शोकरे उठिला ।
सीताकु हाणिब बोलिण बिचारि अशोक बनकु गला ।। ५ ।।
दूररु देखिण सीतांक सहिते असुरीए भय कले ।
मोते ए मारिब बोलि आसुअछि सीता मने बिचारिले ।
मुँ किपाँ हनुबीर संगे न गलि निअन्ता कान्त पाशकु ।।
तेते बेळ हुड़ि एबे बिचारिले कि हेब प्राण नाशकु ।। ६ ।।
धाइँ आसि अरबिन्द नामे मंत्री छामुरे से ओगाळिले ।
सुपाश्व बोलि आर मंत्री तार बहु देखाइ कहिले ।।
ब्रह्मार चतुर्थ पुरुष भो देब करिब जुबती बध ।
किपाइँ एहाकु घेनिण अइल ए कि करुथिला सध ।। ७ ।।
भो देब रावण आम्भ बाणी शुण स्तिरी बध कि कारण ।
पापबुद्धि कले पुत्र नाति तोर जीइ कि आसिबे पुण ।।
देखु देखु जगन्मोहिनी सुन्दरी नाश करिब केमन्ते ।
बिहि एहाकु संजोग करि अछि तुम्भरि भोग निमन्ते ।। ८ ।।
एमन्त शुणिण सीतांकु अनाइ मदने होइला बश ।
पुणिहिँ ताहाकु अनेक देखाइ कहिलेक सुपारुश्व ।।

आकर मेरा वध कर दें। ऐसा कहकर तलवार लेकर पुत्र के शोक से उठ पड़ा और सीता को मारूँगा, ऐसा विचार करके वह अशोक वन को गया। ५ दूर से देखकर सीता के सहित सभी राक्षसियाँ डर गयीं। सीता ने अपने मन में विचार किया कि यह मुझे मारने के लिए आ रहा है। मैं किसलिए हनुमान के साथ नहीं गयी। वह हमें स्वामी के पास ले जाता। उस समय तो चूक हो गयी, अब प्राणान्त के विषय में सोचने से क्या होगा। ६ इसी समय अरविन्द नाम के मंत्री ने दौड़कर उसे आगे ही रोका। सुपाश्व नामक अन्य मंत्री ने उससे बहुत समझाते हुए कहा कि हे देव! आप ब्रह्मा की चौथी पीढ़ी के व्यक्ति हैं। आप स्त्री का वध करेंगे? आप किसलिए इसे लेकर आये थे, क्या इसकी इच्छा थी? ७ हे देव रावण! आप हमारी बात सुनें। स्त्री का वध क्यों कर रहे हैं? क्या यह पापकर्म करने से तुम्हारे पुत्र और नाती फिर से जीवित होकर आ जायेंगे? देखो, इस विश्वमोहिनी सुन्दरी का विनाश कैसे करोगे? ब्रह्मा ने इसे संयोग से तुम्हारे भोग के लिए बनाया है। ८ ऐसा सुनकर सीता की ओर देखकर वह काम के वश में हो गया। सुपारुश्व ने फिर से उसे समझाते हुए

एहि कोप देब रामठारे कले सीता होइब आम्भर ।
एमन्त कहि बाहुड़ाइ पुरकु आणिले असुरेश्वर ।। ९ ।।
आस्थान करिण समस्त असुर मानंकु राइ कहिला ।
पुत्र मला बोलि मोह पराक्रम ताहा संगते कि गला ।।
ब्रह्मार देबार अभेद्द कबच नाहिं कि रे मोर पुरे ।
ब्रह्मा देला अस्त्र ब्रह्मा देला धनु न बहइ कि मुँ करे ।। १० ।।
एका होइ त्रिभुवनकु जिणिलि केउँ पुत्र मोर थिले ।
आज ठारु जाण श्रीराम लक्ष्मण सुग्री बिभीषण मले ।।
असुर मानंकु भरसा होइवा पाइँ एमन्त कहिला ।
बोल बिंशि लकापुर शून्यकरि असुर वळ पेषिला ।। ११ ।।

ऊनपञ्चाशत् छान्द—महीरावण चरित

राग–खेमटा

एथु अनन्तरे कथा शुण सुजन ।
जुद्धरे पड़न्ते रावणर नन्दन ।। १ ।।
असुरंकु धरि रणभूमिकि गला ।
पुत्रकु देखिण बहु शोक से कला ।। २ ।।

कहा, हे देव ! ऐसा ही क्रोध राम के साथ करने से सीता अपनी हो जायेगी। ऐसा कहकर वह असुर राज्य रावण को महल में लौटा लाया। ९ रावण ने सभा करके सभी राक्षसों को बुलाकर कहा कि मेरा पुत्र मर गया तो क्या मेरा पराक्रम भी उसी के साथ चला गया ? मेरे भवन में क्या ब्रह्मा का दिया हुआ अभेद कवच नहीं है ? क्या मैं ब्रह्मा का दिया हुआ धनुष और बाण नहीं वहन करता हूँ ? १० मैंने अकेले ही तीनों लोकों को जीता है, तब मेरे पुत्र कहाँ थे ? आज से समझ लो कि श्रीराम-लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण मर गये। राक्षसों को भरोसा देने के लिए उसने ऐसा कहा। विशि कहता है कि लंका को खाली करके उसने राक्षसों का दल भेज दिया। ११

छान्द ४९—महिरावण-चरित्र

राग–खेमटा

हे सुजनो ! इसके बाद की कथा सुनो। युद्ध में रावण के पुत्र के गिर जाने के बाद रावण राक्षसों को लेकर रणभूमि में गया। उसने पुत्र को देखकर बहुत शोक किया। १-२ इसी समय मित्रघ्न ने समाचार

ए समये मित्रघन देला उदन्त ।
शुणि करि रावण होइला चकित ।। ३ ।।
इन्द्रजित पड़िबार शुणिला रणे ।
सात पुत्र पड़िले जे श्रीराम बाणे ।। ४ ।।
अलोपी सलोपी कंक धंक जे बीर ।
सिंह तुरंग जे देबदत्त कुमर ।। ५ ।।
गड़रे पशन्ते ओगाळिले से जाइँ ।
सान जति गड़रे पशिले झसाइ ।। ६ ।।
श्रीरामंकु सात बीरे छाड़ि न देले ।
श्रीराम बाणरे सात बीरे जे मले ।। ७ ।।
बारता पाइण जे रावण कातर ।
हृदय मध्ये रामंकु कलाक डर ।। ८ ।।
मृत पिण्ड छाड़ि उठिला कोप करि ।
बोइला जतिकि आज के देब मारि ।। ९ ।।
अभिमान समुद्र के पारि करिब ।
एमन्त बोलि भाळइ से दशग्रीब ।। १० ।।
भाइ बिभीषण मोर कुळकु शत्रु ।
हनुमन्त जाणे मोर मरण हेतु ।। ११ ।।
नळ सेनापति जोगुँ बान्धिले बन्ध ।
आबर जे सेनामाने जाणन्ति छन्द ।। १२ ।।

दिया। जिसे सुनकर रावण आश्चर्यचकित हो गया। ३ युद्ध में इन्द्रजित् के गिरने का समाचार सुना था। फिर उसके सात पुत्र श्रीराम के बाण से खेत रहे। ४ अलोपी, सलोपी, कंक, धंक, सिंह, तुरंग तथा देवदत्त आदि राजकुमारों ने दुर्ग में घुसते हुए श्रीराम को ललकारा। परन्तु छोटा यति (लक्ष्मण) बलपूर्वक दुर्ग में घुस गया। ५-६ सातों वीरों ने श्रीराम को नहीं छोड़ा, तो उनके बाणों से वे सातों वीर मृत्यु को प्राप्त हुए। ७ समाचार पाकर रावण क्षुब्ध हो गया। वह हृदय में श्रीराम का भय करने लगा। ८ वह मृत शरीर को छोड़कर उठ बैठा और कहने लगा कि आज उस तपस्वी का वध कर डालूंगा। ९ दशानन ऐसा सोच रहा था कि वह अभिमान के सागर को पार कर जायेगा। १० भाई विभीषण मेरे कुल का वैरी है। हनुमान मेरी मृत्यु का कारण जानता है। ११ सेनापति नल के कारण ही सागर में उसने पुल

जाम्बबर हाते मंत्र पोथि अछइ ।
मरिबा लोककु से जीआइ पारइ ।। १३ ।।
सुग्रीबकु घेनि दशकाळ जे बृद्ध ।
एमाने जुद्धरे न करन्ति उप्रोध ।। १४ ।।
श्रीराम लक्ष्मण ह्लादे से दुइ भाइ ।
धनु धइले पृथिबी जिणि पारइ ।। १५ ।।
एते बोलि लंकपति बिरस चित्त ।
बुद्धिए बिचार कला मने त्वरित ।। १६ ।।
इन्द्रजित सुत महीराबण बीर ।
पाताळ भुबने अटे से दण्डधर ।। १७ ।।
ताहाकु से लंकपति मने चिन्तिला ।
पाताळपुरे ता आसन कम्पिला ।। १८ ।।
बिचारिला लंकपति चिन्तिला मोते ।
बोलइ बिक्रम बाहारिले त्वरिते ।। १९ ।।

पञ्चाशत् छान्द

राग–केदार

एथु अन्ते कथा शुण । बिजये महीराबण ।। १ ।।
मकरध्वजकु राइ । बोले द्वार रख तुहि ।। २ ।।

बाँध लिया । उनकी सेना के वीर युद्ध का भेद जानते हैं । १२ जामवन्त के हाथों में मंत्र की पुस्तक है । वह मरे हुए व्यक्ति को भी जीवित कर सकता है । १३ सुग्रीव को लेकर दश काल जो वृद्ध हैं यह सभी युद्ध में ढील नहीं डालते । १४ श्रीराम और लक्ष्मण यह दोनों भाई सहसा धनुष धारण करने से पृथ्वी को जीत सकते हैं । १५ ऐसा कहकर लंकापति रावण ने खिन्न मन से अपने हृदय में शीघ्र ही विचार किया । १६ इन्द्रजित् का पुत्र पराक्रमी महिरावण पातालपुरी का राजा है । १७ रावण ने मन में उसी का स्मरण किया । पातालपुरी में उसका आसन डिगने लगा । १८ उसने सोचा कि लंकापति रावण ने मुझे याद किया है । विक्रम कहता है कि शीघ्रता से बाहर निकला । १९

छान्द—५०

राग–केदार

इसके पश्चात् की कथा सुनो ! महिरावण ने उपस्थित होकर मकरध्वज को बुलाकर कहा कि तुम द्वार की रक्षा करो । १-२ तुम

द्वार तुहि जगिथिबु । काहाकु छाड़ि न देबु ।। ३ ।।
आकट ताहाकु कला । बिळरु बाहार हेला ।। ४ ।।
चळइ अति प्रखर । प्रबेश लंका नबर ।। ५ ।।
देखिला से लंक देश । रोदन्ति नारी पुरुष ।। ६ ।।
मने भाळे महाबीर । जाकु सेबे देबासुर ।। ७ ।।
ताकु के बिपत्ति देला । एते भालि बेगे गला ।। ८ ।।
प्रबेश जे अन्त:पुर । भेटिला से दशशिर ।। ९ ।।
तत्क्षणे पादे पड़िला । उठि शिरे कर देला ।। १० ।।
पचारे महीराबण । बिरस किपाइँ पुण ।। ११ ।।
नयनु लोतक धार । पड़ुअछि झर झर ।। १२ ।।
शुणि राबण उठिला । नाति कि से कोळ कला ।। १३ ।।
कहे ताकु दशशिर । शुण आहे महाबीर ।। १४ ।।
श्रीराम लक्ष्मण बेनि । संगरे कपिसइनि ।। १५ ।।
समुद्रे बन्ध बांधिले । सुबळयारे रहिले ।। १६ ।।
भाइ बिभीषण गला । तारे शरण पशिला ।। १७ ।।
भांगिले मो लंका देश । कुम्भकर्ण गला नाश ।। १८ ।।
कालि आसि जुद्ध कले । पिताकु तोर माइले ।। १९ ।।

द्वार की रक्षा करते हुए किसी को भीतर न जाने देना । ३ उसे सचेत करके वह विवर के बाहर निकला । ४ वह अत्यन्त प्रखरतापूर्वक चलकर लंका नगर में जा पहुँचा । ५ उसने लंकापुरी में स्त्री पुरुषों को रोते हुए देखा । ६ महापराक्रमी महिरावण मन में विचार करने लगा कि देवता और असुर जिसकी सेवा करते रहते हैं उसे किसने दुख दिया है ! ऐसा सोचकर वह शीघ्रता से चल पड़ा । ७-८ अन्त:पुर में पहुँचकर उसने दशानन से भेंट की । उसी क्षण उसने रावण के चरणों में प्रणाम करके उठकर हाथ शिर से लगा लिये । ९-१० महिरावण ने फिर प्रश्न किया कि आप खिन्न क्यों है ? आपके नेत्रों से अश्रुधारा क्यों झर रही है ? ११-१२ यह सुनकर रावण ने उठकर पोते को गोद में बिठा लिया । दशानन ने उससे कहा कि हे महापराक्रमी ! सुनो । १३-१४ श्रीराम और लक्ष्मण दोनों वानरसेना के साथ समुद्र में सेतु बाँधकर सुवेल पर्वत पर रह रहे हैं । १५-१६ भाई विभीषण उनकी शरण चला गया । उन्होंने मेरे लंकापुरी को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला । कुम्भकर्ण का भी विनाश हो गया । १७-१८ कल उन्होंने आकर युद्ध किया और तुम्हारे पिता को मार

बंश कले मोर नाश । एबे मुँ करिबि किस ॥ २० ॥
पिता मृत्यु शुणि बीर । ढळि पड़िला भूमिर ॥ २१ ॥
उच्चरे रोदन कला । पिता गुण सुमरिला ॥ २२ ॥
आसिण से राणी हंस । मिळिले ताहार पाश ॥ २३ ॥
ताहाकु प्रबोध कले । बिक्रम गीते भणिले ॥ २४ ॥

एकपञ्चाशत् छान्द

राग–सिन्धुड़ा

महीराबणकु अंकरे बसाइ बोलइ से दशशिर ।
राम लक्ष्मणंकु संहारिबा पाइँ बुद्धि एबे बाबु कर ॥
पिता शत्रु तोहर । शुणि कोप कला महाबीर ।
निशे हात देइ तिनिबार । आज काटिबि ताहार शिर ॥ १ ॥
ऋक्ष कपिबळ श्रीराम लक्ष्मण रणे आजि बिनाशिबि ।
ए लंकानगरे तुम्भंकु जे मुहिँ अकण्टक राज्य देबि ॥
एबे शुण मो बाणी । पुत्रशोक छाड़ बिशपाणि ।
आगुँ न पारिल मोते आणि । ऋक्ष कपि देइथान्ति हाणि ॥ २ ॥

डाला मेरे वंश का नाश कर डाला। अब मैं क्या करूँ ? १९-२० पिता की मृत्यु सुनकर पराक्रमी महिरावण पृथ्वी पर लुढ़क गया। वह उच्चस्वर में रुदन करते हुए पिता के गुणों का स्मरण करने लगा। २१-२२ वह रनिवास में जाकर रानी से मिला। उसने रानी को प्रबोध प्रदान किया। विक्रम ने उसे गीत में व्यक्त किया है। २३-२४

छान्द—५१

राग–सिन्धुर

महिरावण को गोद में बिठाकर दशकन्धर ने कहा, हे वत्स ! राम और लक्ष्मण को मारने का अब उपाय करो। वह तुम्हारे पिता के शत्रु हैं। यह सुनकर महापराक्रमी महिरावण क्रुद्ध हो गया। तीन बार मूँछों पर हाथ फेरकर वह बोला कि मैं आज उसका शिर काट डालूँगा। १ वानर और भालुओं की सेना तथा श्रीराम और लक्ष्मण को मैं नष्ट कर डालूँगा। इस लंकानगर में मैं आपको अकंटक राज्य प्रदान करूँगा। इस समय मेरी बात सुनो। हे बीसबाहु ! पुत्र-शोक को त्याग दीजिए। आप आगे ही मुझे नहीं बुला सके। मैं रीछ और वानरों को मार देता। २ श्रीराम और लक्ष्मण इन दोनों भाइयों का संहार, मैं बिना युद्ध के ही, कर

श्रीराम लक्ष्मण ए बेनि भाइंकि बिना जुद्धे संहारिबि ।
रणे जय करि तुम्भर छामुरे दर्शन आसि करिबि ॥
शुणि से दशशिर । मुण्डे मुकुट बान्धिला तार ।
बोले राम लक्ष्मणंकु मार । भोग करिबु ए लंकापुर ।
शुणि महीराबण बाहार । दृष्टि कला जगती उपर ॥ ३ ॥
हस्तरे मृत्तिका धरि महाबीर हरंकु से सुमरिला ।
बिभीषण रूप धरिण असुर सुबळयारे मिळिला ॥
रात्र बेनि प्रहर । ताकु देखिलाक हनुबीर ।
लाञ्ज करिछि गड़ आकार । बोले काहिँथिल लंकेश्वर ॥ ४ ॥
बोलइ असुर शुण कपिबीर जाइथिलि सन्ध्या करि ।
बेगे छाड़ द्वार श्रीरामंकु मुहिँ जिबइँ दर्शन करि ॥
हनु छाड़िला द्वार । थाटे पशिला से निशाचर ।
तहिँ होइला कपि आकार । जाइँ मिळि श्रीराम पाशर ॥ ५ ॥
देखिला बिचित्र कुरग छालरे बिजय से रघुपति ।
करे धनुशर धरिण सेठारे जगिछन्ति सउमित्रि ॥
इन्द्रजित बिनाश । कथा कहन्ति कौशल्या शिष्य ।
कालि मारिबटि लंकईश । एते कहि हुअन्ति हरष ॥ ६ ॥

दूंगा और रण में विजय प्राप्त करके, आकर आपके दर्शन करूँगा। यह सुनकर दशानन ने उसके शिर पर मुकुट बाँध दिया और बोला कि राम-लक्ष्मण को मारकर इस लंकापुर का भोग प्राप्त करो। यह सुनकर महिरावण ने बाहर निकलकर जगती पर दृष्टिपात किया। ३ महान् योद्धा ने हाथ में मिट्टी लेकर महादेव का स्मरण किया। वह विभीषण का रूप धारण करके सुवेल पर्वत पर जा पहुँचा। रात्रि के दूसरे प्रहर में महावीर हनुमान ने उसे देखा। उन्होंने अपनी पूँछ से दुर्ग बना रखा था। उन्होंने कहा कि हे लंकेश्वर ! आप कहाँ थे ? ४ राक्षस ने कहा, हे कपिश्रेष्ठ ! मैं संध्या करने गया था। द्वार छोड़ दो। मैं शीघ्र ही जाकर श्रीराम के दर्शन करूंगा। हनुमान ने द्वार छोड़ दिया। वह राक्षस सेना में घुस गया। उसने वानर का रूप धारण किया और श्रीराम के पास जा पहुँचा। ५ उसने श्रीराम को विचित्र हिरण की छाल पर विराजमान देखा। हाथ में धनुष-बाण लिये वहीं लक्ष्मण पहरा दे रहे थे। कौशल्या के पुत्र इन्द्रजित् के वध की वार्ता कर रहे थे। वह कह रहे थे कि कल लंकेश्वर का वध होगा। ऐसा कहकर वह प्रसन्न

सुग्री बिभीषण बोलन्ति भो देब तुम्भे अट दइत्यारि ।
से छार असुर पापी दुराचार हराइला लंकाशिरी ॥
एबे हारिब प्राण । सीता लक्ष्मी तुम्भे नारायण ।
ताहा शुणुछि महीराबण ॥ ७ ॥
एहि समयरे मंत्री जाम्बबान कर जोड़ि जणाइला ।
बेनि प्रहर तिनि दण्ड रजनी प्रबेश आसि होइला ॥
शुणि से रघु साइँ । जूथपतिकि मेलाणि देइ ।
फळ मूळ कलेक मणोहि । सुखे पहुड़िले सीता साइँ ।
जगि बसिले लक्ष्मण तहिँ ॥ ८ ॥
स्वर्गे देबताए बिचार करन्ति गला इन्द्रजित सुत ।
केमन्त करिण हरिण आणिब पाशे जे सुमित्रा सुत ॥
एथि उपाय कर । नाश हेब जेमन्त असुर ।
निद्रा देबी पेषि धातिकार ॥ ९ ॥
बिजे कले लक्ष्मण नेत्रर ।
शुणि निद्राबती चळिले तड़ति कपि सैन्यरे मिळिले ।
सेना जूथपति आदि लंकपति समस्त नेत्रे घारिले ॥
निदे से अचेतन । ए जे देबता कूट बिधान ।
देखि इन्द्रजितर नन्दन ॥ १० ॥

हो रहे थे । ६ सुग्रीव और विभीषण कह रहे थे । हे देव ! आप दैत्यों के शत्रु हैं । उस तुच्छ, पापी, दुराचारी राक्षस ने लंका की श्री समाप्त कर दी । अब वह प्राण छोड़ेगा । सीता लक्ष्मी है और आप विष्णु हैं । महिरावण उसे सुन रहा था । ७ इसी समय मंत्री जामवन्त ने हाथ जोड़कर कहा, अब दो प्रहर, तीन दण्ड रात्रि हो चुकी है । यह सुनकर श्रीराम ने यूथपतियों को विदा किया । उन्होंने फल-मूल खाये और सुखपूर्वक सीता के स्वामी लेट गये । लक्ष्मण वहीं जागकर पहरा देने लगे । ८ स्वर्ग में देवता विचार कर रहे थे कि इन्द्रजित् का पुत्र गया है । वह कैसे हरकर श्रीराम को लायेगा क्योंकि पास में ही सुमित्रानन्दन लक्ष्मण बैठे हैं । अतएव ऐसा उपाय करें जिससे असुर का नाश हो जाय । अब निद्रादेवी को भेजा जाय । ९ निद्रा को लक्ष्मण के नेत्रों में जाने को आदेश हुआ । यह सुनकर निद्रादेवी शीघ्रता से चलकर वानर-सेना में जा पहुँची । सेना में यूथपति, लंकेश विभीषण तथा सभी के नेत्र नींद से बोझिल हो गये । वह सब निद्रा से अचेत हो गये । देवताओं के इस कूट-विधान को इन्द्रजित्

तहुँ निद्राबती चळिले तड़ति लक्ष्मण नेत्रे मिळिले ।
धनु शर धरि सुमित्रानन्दन घोर निद्रारे घारिले ॥
धनु मस्तके देइ । सउमित्री पड़िले घुमाइ ।
देखि असुर आनन्द होइ । बिक्रम जे राम रस कहि ॥ ११ ॥

द्विपञ्चाशत् छान्द

राग—जमक

एसन समये तहिँ इन्द्रजित सुत ।
देखिला से बेनि भाइ निद्रारे मोहित ॥ १ ॥
निज रूप धरि राम निकटकु गला ।
बेनि भाइंकु मस्तके बसाइ चळिला ॥ २ ॥
मने बिचारइ पुणि इन्द्रजित बत्सि ।
लांगुळरे हनुमन्त गड़ करि अछि ॥ ३ ॥
पिपुड़ि जिबाकु जे एथिरे नाहिँ बाट ।
भला जत्न करिअछि पबनर चाट ॥ ४ ॥
ततक्षणे बीर जे उद्ध्वंकु उड़ि गला ।
हनुर लांगुड़ बीर किंचिते जिणिला ॥ ५ ॥

का पुत्र देख रहा था । १० निद्रादेवी वहाँ से चलकर शीघ्र ही लक्ष्मण के नेत्रों में जा घुसी । धनुष को मस्तक से लगाकर सुमित्रानन्दन लक्ष्मण सो गए । यह देखकर राक्षस प्रसन्न हो गया । विक्रम ने श्रीराम के रसमय चरित्र का वर्णन किया है । ११

छान्द—५२

राग—यमक

इसी समय वहाँ पर इन्द्रजित् के पुत्र ने दोनों भाइयों को नींद में सोते देखा । १ वह अपना रूप धारण करके श्रीराम के समीप में गया और दोनों भाइयों को मस्तक पर बैठाकर चल दिया । २ इन्द्रजित्-नन्दन बार-बार मन में विचार कर रहा था कि हनुमान ने पूँछ से दुर्ग बना रखा है । ३ चीटा के जाने के लिए भी इसमें मार्ग नहीं है । ४. उसी समय वह वीर ऊपर को उड़ गया । पराक्रमी राक्षस हनुमान की पूँछ से थोड़ा ऊपर उठा । ५ हनुमान की पूँछ को फाँदने के समय रावण ने उसे अपनी

हनुमंतर लांगुड़ डेइंबार बेळे ।
रावण देखिला थाइँ जगती उपरे ।। ६ ।।
राम लक्ष्मणक रूप देखि भय कला ।
परम पुरुष एहु बोलि बिचारिला ।। ७ ।।
महीरावण ठारु उबुरिबे जेबे ।
परम पुरुष बोलि जाणिबि मुँ तेबे ।। ८ ।।
एसन्त बिचारि चित्ते अन्तःपुर गला ।
भोजन सारि पल्यंके सुखे पहुड़िला ।। ९ ।।
एथु अनन्तरे इन्द्रजितर कुमर ।
पाताळ बिळरे जाइ पशिला सत्वर ।। १० ।।
खरतर होइ बीर बगे चळि गला ।
मकरध्वज द्वारीर निकटे मिळिला ।। ११ ।।
शज्या सहितरे जे मस्तके अछि धरि ।
देखिण मकरध्वज ताहाकु पचारि ।। १२ ।।
केबण देशरु तुरे अइलु पामर ।
कह कह खड़गे काटिबि तोर शिर ।। १३ ।।
महीराबण बोलिण चिह्ना ताकु देला ।
लंकारु मुँ पिता शत्रु आणिछि बोइला ।। १४ ।।
ए बेनि भाईंकि निज पुरकु मुँ नेबि ।
निशा शेषे देबी पाशे यांकु बळि देबि ।। १५ ।।

जगती के ऊपर से देखा । ६ उसे राम-लक्ष्मण का रूप देखकर भय हो गया । उसने समझ लिया कि यह परमपुरुष ही हैं । ७ यदि यह महिरावण से बच जाएँगे तभी हम इन्हें परमपुरुष समझेंगे । ८ चित्त में ऐसा विचार करते हुए वह अन्तःपुर को चला गया और भोजन करके सुखपूर्वक पलग पर लेट गया । ९ इसके अनन्तर इन्द्रजित् का पुत्र शीघ्र ही जाकर पातालविवर में प्रविष्ट हो गया । १० बड़ी तीव्रता से चलकर वह वीर द्वारपाल मकरध्वज के निकट जा पहुँचा । ११ शय्या के समेत वह उन्हें अपने मस्तक पर रखे हुए था । देखते ही मकरध्वज ने उससे पूछा । १२ अरे नीच ! तू किस देश से आया है ? बोल ! नहीं तो तेरा सिर तलवार से काट दूंगा । १३ महिरावण ने बोलकर अपना परिचय दिया और कहा, मैं लका से अपने पिता के शत्रु को ले आया हूँ । १४ इन दोनों भाइयों को मैं अपने महल में ले जाऊँगा और रात्रि समाप्त होने

द्वारे तुहि निरोध करिण जगिथिबु ।
जे बळिआइं आसिब प्राणरे मारिबु ॥ १६ ॥
एमन्त बोलिण दैत्य निज पुरे गला ।
पथर घररे बेनि भाइंकि रखिला ॥ १७ ॥
दुआरे असुर बीर अनेक जगाइ ।
बेनि भाइ करु नेला धनुकु छड़ाइ ॥ १८ ॥
बेनि भाइंकर धनु निज करे धरि ।
बोलइ बिक्रम जे प्रबेश निज पुरी ॥ १९ ॥

त्रिपञ्चाशत् छान्द

राग–केदार

एथु अन्ते शुण रस । रजनी होइला शेष ॥ १ ॥
निद्राबती चळि गले । लक्ष्मण जाग्रत हेले ॥ २ ॥
काक पिक डाक शुणि । उठिलेक रघुमणि ॥ ३ ॥
देखिले पथर घर । पचारन्ति रघुबीर ॥ ४ ॥
शुण हे लक्ष्मण बीर । के नेला धनु आम्भर ॥ ५ ॥
ए नोहे सुबळगिरि । असुर आणिछि हरि ॥ ६ ॥

पर देवी के समक्ष इनकी बलि दे दूंगा । १५ तुम द्वार को अवरुद्ध करके पहरा देते रहना । जो भी बलपूर्वक आए उसके प्राण ले लेना । १६ इस प्रकार कहकर दैत्य अपने महल में चला गया । उसने दोनों भाइयों को पत्थर के घर में रख दिया । १७ द्वार पर अनेक पराक्रमी राक्षस पहरे पर लगा दिए । उसने दोनों भाइयों के हाथों से धनुष छीन लिये । १८ विक्रम कहता है कि दोनों भाइयों के धनुष अपने हाथ में लेकर वह अपने महल में जा पहुंचा । १९

छान्द—५३

राग–केदार

इसके बाद का रस सुनो । रात्रि समाप्त हो गई । १ निद्रा चली गई और लक्ष्मण जाग गये । २ काक-पिक का कलरव सुनकर रघुवंश में श्रेष्ठ राम उठ गये । ३ पत्थर का भवन देखकर पराक्रमी श्रीराम ने पूछा । ४ हे वीर लक्ष्मण ! सुनो ! हमारा धनुष किसने ले लिया है ? ५ यह तो सुवेल पर्वत नहीं है । राक्षस हरण करके ले आया है । ६ भाग्य

एहा कर्म लेखा थिला । राज भोग छाड़ हेला ॥ ७ ॥
राज्यभ्रष्ट पत्नी कष्ट । एबे हेलुँ प्राणे नष्ट ॥ ८ ॥
एते बोलि शोक कले । शुणि लक्ष्मण बोइले ॥ ९ ॥
धर्म जेबे हेब सत । कि करि पारिब दैत्य ॥ १० ॥
धनु नाहिँ मोर कर । काटन्ति असुर शिर ॥ ११ ॥
लक्ष्मण बचन शुणि । तुनि हेले रघुमणि ॥ १२ ॥
एथु अन्ते कथा आन । सुबळे कपि सइन ॥ १३ ॥
निद्रा तेजिण उठिले । श्रीरामंकु न देखिले ॥ १४ ॥
नदी पर्बत खोजिले । न पाइ निराश हेले ॥ १५ ॥
कान्दइ जे हनुमन्त । कपाळरे मारि हस्त ॥ १६ ॥
सुग्रीबर बिभीषण । जाम्बब मंत्री सुषेण ॥ १७ ॥
अंगद तारा पिअर । ऋक्ष कपि जे अपार ॥ १८ ॥
अष्टसेन जूथपति । हाहाकार से करन्ति ॥ १९ ॥
शोक सम्भाळि जाम्बब । बोलन्ति शुण सुग्रीब ॥ २० ॥
हनुमन्तकु पचार । कहिब तहिँ बिचार ॥ २१ ॥
हनु कहइ उदन्त । शुण आहे कपि नाथ ॥ २२ ॥
कालि रात्रर अर्द्धेण । द्वार मुँ थिलि जगिण ॥ २३ ॥
बिभीषण मोर पाश । आसि हेले परबेश ॥ २४ ॥

में यह ही लिखा था । राज्य का भोग भी त्यागना पड़ा । ७ राज्य चला गया ! पत्नी का दुःख सहन करना पड़ा । ८ ऐसा कहकर वह शोक करने लगे । यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा । ९ यदि धर्म सत्य होगा तो यह दैत्य क्या कर पाएगा । १० मेरे हाथ में भी धनुष नहीं है, नहीं तो मैं दैत्य का शिर काट डालता । ११ लक्ष्मण के वाक्य सुनकर रघुश्रेष्ठ राम अवाक् रह गए । १२ इसके अनन्तर अब अन्य कथा सुनो । सुबेल पर्वत पर वानर-सेना निद्रा त्यागकर उठी । उसने श्रीराम को नहीं देखा । १३-१४ नदी, पर्वत पर खोजा पर उन्हें न पाकर निराश हो गये । हनुमान सिर पीटते हुए रुदन कर रहे थे । १५-१६ सुग्रीव, विभीषण, जामवन्त, मंत्री सुषेण, तारा-पुत्र अंगद, अपार रीछ तथा कपियों का दल तथा सेना के आठ यूथपति हाहाकार करने लगे । १७-१९ शोक का संवरण करते हुए जामवन्त ने कहा, हे सुग्रीव ! सुनो । २० हनुमान से पूछो ! वह अपना विचार बताएगा । २१ हनुमान ने समाचार बताया, हे कपिराज ! सुनिए । कल अर्ध रात्रि के समय मैं द्वार पर पहरे पर था । तभी विभीषण

तांकु मुहिँ पचारिलि । केणे जाइथिल बोलि ॥ २५ ॥
से बोइले आहे हरि । जाइथिलि सन्ध्या करि ॥ २६ ॥
शुणि मुँ छाड़िलि द्वार । से गले गड़ भितर ॥ २७ ॥
एमन्त हनु कहिले । बिक्रम नरेन्द्र बोले ॥ २८ ॥

चतुःपञ्चाशत् छान्द

राग—जमक

एहा शुणि बोलइ से बिभीषण बीर ।
जाणिलि जे घेनि गला इन्द्रारि कुमर ॥ १ ॥
पाताळकु नेला कि से नेला लंकापुर ।
एहि कथा आम्भंकु त नोहिला गोचर ॥ २ ॥
चारकु पेषिण बेगे बुझिबा उदन्त ।
ताहा शुणि बोलइ जे बीर हनुमन्त ॥ ३ ॥
अशोक बनकु मुहिँ बेग होइ जिबि ।
त्रिजटार तहुँ तथ्य बारता बुझिबि ॥ ४ ॥
एते कहि हनुमन्त बिक्रमिण गला ।
शशारूप धरि पुणि पक्षी प्राय हेला ॥ ५ ॥

मेरे पास आए । २२-२४ मैंने उनसे पूछा कि आप कहाँ गये थे ? उन्होंने कहा, हे कपिश्रेष्ठ ! मैं सन्ध्या करने गया था । २५-२६ यह सुनकर मैंने द्वार छोड़ दिया । वह गढ़ के भीतर चले गये । विक्रम नरेन्द्र कहता है कि हनुमान ने इस प्रकार कहा । २७-२८

छान्द—५४

राग—यमक

यह सुनकर पराक्रमी विभीषण ने कहा कि मैं समझ गया कि उन्हें इन्द्र के शत्रु मेघनाद का पुत्र ले गया है । १ पता नहीं वह उन्हें पाताल में अथवा लंकापुरी में ले गया । यह बात हम जान नहीं पाये । २ दूत को भेज कर शीघ्र ही समाचार लेंगे । ऐसा सुनकर पराक्रमी हनुमान ने कहा । ३ मैं शीघ्र ही अशोक वन को जाऊँगा । और वहाँ त्रिजटा से तथ्य की जानकारी करूँगा । ४ इतना कहकर हनुमान ने छलाँग लगा दी । पहले वह खरगोश का रूप धारण करके, फिर पक्षी के समान हो गये । ५ वह वृक्ष की आड़ में छिप गये । सीता के मुख की ओर देखकर

बृक्षर उहाड़े जे रहिला गोप्य होइ ।
जानकींक मुख चाहिँ त्रिजटा कहइ ।। ६ ।।
राम लक्ष्मणंकु महीराबण जे नेला ।
पाताळ भुबने देबी पाशे बळि देला ।। ७ ।।
आज ठारु मोहर जे गला सर्ब दुःख ।
एबे जानकीकि घेनि करिबइँ सुख ।। ८ ।।
मन्दोदरी आगे एहा राबण कहिले ।
शुणि करि जानकी अनेक शोक कले ।। ९ ।।
त्रिजटा सीतांक शोक शान्ति कराइले ।
नयन कोणरु बेनि देबी जात हेले ।। १० ।।
बइदेही मुख चाहिँ बोलन्ति से बाणी ।
कि करिबुँ आज्ञा दिअ श्रीरामंक राणी ।। ११ ।।
देबी मुख चाहिँ सीता बोलन्ति बचन ।
मो स्वामींकि हरि नेला जे महीराबण ।। १२ ।।
संकट काळरे साहा होइल जे मोते ।
तारा जे तारिणी नाम बोलाअ जगते ।। १३ ।।
पाताळपुरकु बेनि देबी चळि जाअ ।
स्वामी देबरंकु मोर रक्षा करि थाअ ।। १४ ।।

त्रिजटा ने कहा । ६ श्रीराम और लक्ष्मण को महिरावण ले गया है। उसने उन्हें पाताललोक में ले जाकर देवी के समीप उनकी बलि दे दी है । ७ आज से मेरा सारा दुःख समाप्त हो गया । अब जानकी को लेकर मैं सुख भोगूँगा । मन्दोदरी के आगे रावण इस प्रकार कह रहा था । यह सुनकर जानकी बहुत दुःखी हो गयीं । ८-९ त्रिजटा ने सीता का शोक दूर कराया । सीता की नेत्रों की कोन से दो देवियाँ प्रकट हुई । १० सीता के मुख की ओर देखकर वह कहने लगीं कि श्रीराम की पत्नी सीता ! हमें आज्ञा दो, हम क्या करें ? ११ देवियों के मुख की ओर देखते हुए सीता ने कहा, मेरे स्वामी को महिरावण हर ले गया है । १२ संकट के समय में आप हमारी सहायक बनी हैं, अतएव आप लोगों को संसार में तारा और तारिणी नाम से पुकारा जायेगा । १३ आप दोनों देवियाँ पाताल नगरी को चली जाओ और हमारे स्वामी तथा देवर की रक्षा करती रहो । १४ यह सुनकर दोनों देवियाँ शीघ्रता से चली

ताहा शुणि बेनि देबी बेगे चळिगले ।
पाताळ भुबने बेनि भाइंकि जगिले ।। १५ ।।
एहा शुणि मारुति जे बेगे बाहुड़िला ।
बोलइ बिक्रम सुबळयारे मिळिला ।। १६ ।।

पञ्चपञ्चाशत् छान्द

राग–केदार

हनुमन्त मुखुं शुणि । सत बोलि सर्बे मणि ।। १ ।।
तहुं सर्बे चाळ गले । बिबर द्वारे मिळिले ।। २ ।।
देखिले बिबर द्वार । होइ अछि अन्धकार ।। ३ ।।
बिभीषण जे कहइ । एथे के पशिब जाइँ ।। ४ ।।
शुणिण हनु कहइ । बिबरे पशिबि मुहिं ।। ५ ।।
एहा शुणि बिभीषण । मृत्तिका धरि करेण ।। ६ ।।
हनु देहरे बोळिले । अदृश्य दृश्य होइले ।। ७ ।।
चउद गण्डा जोजन । बेनि घड़ि रे गमन ।। ८ ।।
भितर द्वारे मिळिला । मकरध्वज देखिला ।। ९ ।।
देखि तांकु कला तम । भणइ बीर बिक्रम ।। १० ।।

गयीं और पाताल में दोनों भाइयों की रक्षा करने लगीं । १५ विक्रम कहता है कि यह सुनकर पवनपुत्र हनुमान वेग से लौट पड़े और सुबेल पर्वत पर जा पहुँचे । १६

छान्द—५५

राग–केदार

हनुमान के मुख से सुने हुए वचनों को सबने सत्य मान लिया । १ वहाँ से चलकर सभी लोग विवर के द्वार पर जा पहुँचे । २ उन्होंने विवर के द्वार पर अँधेरा देखा । ३ विभीषण बोले कि इसमें कौन घुसेगा ? यह सुनकर हनुमान ने कहा कि इसमें मैं प्रवेश करूँगा । ४-५ यह सुनकर विभीषण ने हाथ में मिट्टी लेकर हनुमान के शरीर पर मल दी, जिससे न दिखाई पड़नेवाली वस्तुएँ भी दिखाई देने लगीं । ६-७ उन्होंने छप्पन योजन को दो घड़ी में पार कर लिया । ८ उन्होंने भीतरी द्वार पर पहुँचकर मकरध्वज को देखा । ९ वीर विक्रम कह रहा है कि उन्हें देखकर उसने बड़ा क्रोध किया । १०

षट्पञ्चाशत् छान्द

राग–जमक

आग ओगाळिण से बोलइ महाबीर ।
ए पुरे पशिलु तु रे काहिँकि बानर ।। १ ।।
प्राणे आशा थिले तुहि बाहुड़िण जा जा ।
न जाणु कि प्रतापी महीराबण राजा ।। २ ।।
न शुणइ बचन से अंजनार बळा ।
कहु कहु पाताळपुरकु चळि गला ।। ३ ।।
देखिण मकरध्वज प्रज्वळित हेला ।
खड़्ग घेनिण से हनुकु प्रहारिला ।। ४ ।।
बाजिण से असिबर हेला बेनि खण्ड ।
देखिण मकरध्वज हेला परचण्ड ।। ५ ।।
पुणि एक वृक्ष से जे उपाड़ि धरइ ।
पाबनिर अंगे बेगे पिटिलाक नेइ ।। ६ ।।
इन्द्रंकर बज्राघात न बाधिला जाकु ।
छार निलक्षण वृक्ष कि करिब ताकु ।। ७ ।।
कोपभरे हनुमन्त माइला पथरे ।
चुम्बन से दला जाइ ताहार मुखरे ।। ८ ।।

छान्द—५६

राग–यमक

महान पराक्रमी मकरध्वज ने आगे से रास्ता रोककर कहा, अरे वानर ! इस नगर में तू क्यों घुस आया है ? १ यदि तुझे प्राण की आशा है तो तू लौटकर चला जा । तुझे नहीं मालूम है कि यहाँ राजा महिरावण बड़ा प्रतापी है । २ अंजनी के लाल उसकी बातों को नहीं सुन रहे थे । कहते-कहते वह पातालपुर में पहुँच गये । ३ यह देखकर मकरध्वज क्रोध से प्रज्वलित होकर हाथ में खड्ग लेकर हनुमान पर प्रहार किया । ४ वह श्रेष्ठ तलवार से हनुमान से लगकर टूटकर दो टुकड़े हो गयी । ऐसा देखकर मकरध्वज अत्यन्त क्रोध से भर गया । ५ फिर उसने एक वृक्ष उखाड़कर हनुमान के शरीर पर दे पटका । ६ जिसको इन्द्र द्वारा किया हुआ वज्र का अघात चोट न पहुँचा सका, उसका तुच्छ वृक्ष क्या कर सकेगा ? ७ हनुमान ने कुपित होकर पत्थर मारा जिसने जाकर उसका

पिता पुत्र जुद्ध धर्मबळे से रखिला ।
पुणिहिँ बृक्षेक नेइ पावनि पिटिला ॥ ९ ॥
मकरध्वज अंगरे बृक्ष भाजि गला ।
देखि करि पावनि जे मल्लजुद्ध कला ॥ १० ॥
बेनि करे धइला मकरध्वज पाणि ।
भुमिरे से बेनि बीर गड़िजान्ति पुणि ॥ ११ ॥
पवननन्दनर जे बळ अप्रमित ।
सेहि त सहजे अटे हनुमन्त सुत ॥ १२ ॥
बोलइ मकरध्वज पावनि कि चाहिँ ।
कपि होइ एते बळ पाइलु तु काहिँ ॥ १३ ॥
मोहर संगरे तुहि कलु सम जुद्ध ॥
न मणइ संग्रामे मुँ इन्द्रादि बिबुध ॥ १४ ॥
एते बोलि हनुकु से भूमिरे पातिला ।
पावनिर बक्षस्थळ माड़िण बसिला ॥ १५ ॥
मुयेक उञ्चाइ बीर मारिबार बेळे ।
हनुमन्त लेउटि बसिाल बक्षस्थळे ॥ १६ ॥
लांगुळरे गुड़िआइ उद्‌र्ध्वकु टेकिला ।
इष्ट देवता तोहर सुमर बोइला ॥ १७ ॥

मुख चूम लिया । ८ पिता और पुत्र के युद्ध के धर्म की उसने रक्षा की । फिर उन्होंने एक वृक्ष लेकर उस पर दे पटका । ९ मकरध्वज के शरीर पर पड़कर वृक्ष टूट गया । यह देखकर हनुमान ने उसके साथ मल्लयुद्ध किया । १० उन्होंने मकरध्वज के दोनों हाथों को पकड़ लिया और दोनों वीर पृथ्वी पर गिर पड़े । ११ पवन-पुत्र हनुमान का बल अपरिमित था । मकरध्वज भी हनुमान का बेटा था । १२ मकरध्वज ने हनुमान की ओर ताकते हुए पूछा कि वानर होकर तुम्हें इतना बल कहाँ से मिला ? १३ तूने मेरे साथ बराबरी का युद्ध किया, जबकि मैं युद्ध में इन्द्र आदि देवताओं को भी नही मानता । १४ इतना कहकर उसने हनुमान को ज़मीन पर पटककर उनके वक्षस्थल पर चढ़ बैठा । १५ पराक्रमी मकरध्वज के द्वारा मुक्का उठाकर मारते समय हनुमान उलटकर उसकी छाती पर चढ़ गये । १६ उन्होंने उसे पूंछ में लपेटकर ऊपर उठा लिया और कहा कि अब तुम अपने इष्ट देवता का स्मरण कर लो । १७ अत्यन्त

अति ब्याकुळरे कहे से मकरध्वज ।
मो इष्टदेबता अटे पबन आत्मज ॥ १८ ॥
से मोहर पिता अटे मुँ तार नन्दन ।
हनुमान व्यत्रेक मुँ न जाणइ आन ॥ १९ ॥
ताहा शुणि हनुमान बेगे छाड़ि देला ।
केमन्ते मोहर पुत्र कहरे बोइला ॥ २० ॥
मुहिँ अटे हनुमान नाहिँ मोर नारी ।
पुत्र उपुजिला काहुँ कह तु बिचारि ॥ २१ ॥
अंजनार गर्भु जात अटे मुहिँ जति ।
मोर बीर्य्ये केमन्ते तु हेलुरे सन्तति ॥ २२ ॥
जहु से मकरध्वज एमन्त शुणिला ।
ए मोहर पिअर जे बोलिण जाणिला ॥ २३ ॥
पाबनि छामुरे बीर जोड़ि बेनिकर ।
न जाणि मुँ अपराध कलि क्षमा कर ॥ २४ ॥
बोलइ हे तात एबे मोर बोल शुण ।
जे दिन सीताकु खोजि अइल आपण ॥ २५ ॥
लंकापुर दहिण जे बाहुड़िबा बेळे ।
देहरु गळिण स्वेद पड़िलाक जळे ॥ २६ ॥
से बिन्दुकुमान बेगे कलाक आहार ।
नर देह तहिँ मोते देले बेदबर ॥ २७ ॥

ब्याकुल होकर मकरध्वज ने कहा कि मेरे इष्टदेव पवनकुमार हैं । १८ वह मेरे पिता हैं और मैं उनका पुत्र हूँ । मैं हनुमान को छोड़कर और किसी को नहीं जानता । १९ यह सुनकर हनुमान ने उसे शीघ्र ही छोड़ दिया और बोले कि बता ! तू मेरा पुत्र कैसे हुआ ? २० मैं हनुमान हूँ, मेरे कोई स्त्री नहीं है, फिर पुत्र कहाँ से उत्पन्न हो गया ? यह विचार करके तू मुझे बता । २१ मैं अजनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हूं और ब्रह्मचारी हूँ । मेरे वीर्य से कैसे तुम हमारी सन्तान हुए ? २२ जब मकरध्वज ने यह सुना तब उसे पता चला कि यह मेरे पिता हैं । २३ हनुमान के सामने उस पराक्रमी ने हाथ जोड़कर कहा कि बिना जाने मैंने अपराध किया है, आप उसे क्षमा कर दें । २४ उसने कहा, हे तात ! अब मेरी बात सुनिये । जिस दिन आप सीता खोजते हुए आये थे और लंका-पुरी को जलाकर लौटते समय आपका पसीना पानी में गिरा था उसे मकरी

से मीनकु धीबर जे धरि घेनि गला ।
राजा महीराबण छामुरे नेइ देला ॥ २८ ॥
से मीन काटन्ते मुँ होइलि उपगत ।
हनुमन्त बिचारिला अटे ए मो सुत ॥ २९ ॥
मकरध्वजकु हनुमन्त कोळ कला ।
श्रीराम लक्ष्मण काहिँ कहरे बोइला ॥ ३० ॥
शुणिण मकरध्वज बोलइ उत्तर ।
श्रीराम लक्ष्मण जे अछन्ति बन्दीघर ॥ ३१ ॥
सुलोचना नन्दन जे कालि प्राते जिब ।
भगबती छामुरे से नर बळि देब ॥ ३२ ॥
एथकु उपाय तात बेगे जाइ कर ।
महादुष्ट अटे इन्द्रजितर कुमर ॥ ३३ ॥
ताहा शुणि हनुमन्त बेग होइ गला ।
फूल घेनि जाउअछि मालुणी देखिला ॥ ३४ ॥
देखि हनुमन्त जे भ्रमर रूप हेला ।
सेइ फुल चांगुड़ारे जाइण बसिला ॥ ३५ ॥
सेहि फूल संगे हनु प्रासादे पशिला ।
देबीङ्क मस्तक परे जाइण बसिला ॥ ३६ ॥

पी गयी । वहाँ पर ब्रह्मा ने मुझे मानव-शरीर प्रदान किया । २५-२७ उस मछली को मछेरा पकड़ ले गया और उसने उसे महाराज महिरावण को प्रदान किया । २८ उस मछली के काटने के समय मैं प्रकट हुआ । हनुमान ने सोचा कि यह तो मेरा पुत्र है । २९ हनुमान ने मकरध्वज को गोद में उठाकर कहा कि अब तू बता श्रीराम और लक्ष्मण कहाँ है ? ३० यह सुनकर मकरध्वज ने उत्तर दिया कि श्रीराम और लक्ष्मण क़ैदखाने में हैं । ३१ सुलोचना का पुत्र महिरावण कल प्रातःकाल जायेगा और भगवती के सामने नर-बलि देगा । ३२ हे तात ! इसका उपाय आप शीघ्र ही जाकर करें । क्योंकि इन्द्रजित् का पुत्र बड़ा दुष्ट है । ३३ यह सुनकर हनुमान वेग से चल दिये । उन्होंने फूल लेकर जाती हुई मालिन को देखा । ३४ यह देखकर हनुमान ने भौंरे का रूप धारण किया और उसी फूल की डलिया में जाकर बैठ गये । ३५ उन्हीं फूलों के साथ हनुमान महल में घुसे और देवी के मस्तक पर जा बैठे । ३६ जिस समय फूल लेकर देवी के सिर पर चढ़ाया गया, तब पवनकुमार ने

जेते बेळे फूल नेइ देला देबी शिर ।
भीष्म रूप धइला से पबनकुमर ।। ३७ ।।
बाम गोड़ नेइण देबीर शिरे देला ।
क्रोध भर होइण से तळकु चापिला ।। ३८ ।।
महा भयंकर हेला पबनर सुत ।
सहस्रेक भुज तेज द्वितीय आदित्य ।। ३९ ।।
सहस्रेक भुजरे से शस्त्रमान धरि ।
बोलइ बिक्रम द्वार रहिला आबोरि ।। ४० ।।

सप्तपञ्चाशत् छान्द

राग–केदार

एथु अन्ते कथा शुण । देबी रूपे हनुमान ।। १ ।।
बोले बळि भोज्य दिअ । राजा आगे जाइ कह ।। २ ।।
शुणि दैत्य भय पाइ । राजांक आगे जणाइ ।। ३ ।।
बोइले भो देब शुण । देबी होइले प्रसन्न ।। ४ ।।
बळि भोज्य से मागन्ति । शुणि मने हुए भीति ।। ५ ।।
शुणि से राजा हरष । आज देबी हेले तोष ।। ६ ।।
श्रीराम लक्ष्मण दुइ । ताहांकु खाइबा पाइँ ।। ७ ।।

विकराल रूप धारण कर लिया । ३७ उन्होंने अपना बायाँ पैर देवी के सिर पर रख दिया । और क्रोधित होकर उन्होने उसे नीचे की ओर चाप दिया । ३८ पवनपुत्र अत्यन्त भयंकर हो गये उनके सहस्र भुजाएँ हो गयीं और तेज में वह दूसरे सूर्य हो गये । ३९ विक्रम कहता है कि हजार हाथों में अस्त्र-शस्त्र लेकर द्वार पर छा गये । ४०

छान्द—५७

राग–केदार

इसके पश्चात् की कथा सुनो । देवी के रूप में हनुमान ने कहा कि हमें बलि का भोग दो, तुम लोग जाकर राजा से कह दो । १-२ यह सुन कर भयभीत होकर दैत्यों ने राजा के समक्ष निवेदन किया । हे देव ! सुनिए, देवी प्रसन्न हो गयी है । ३-४ वह बलि-भोग माँग रही है । यह सुनकर मन में भय लग रहा है । ५ यह सुनकर राजा को प्रसन्नता हुई कि आज देवी सन्तुष्ट हो गयी । ६ श्रीराम और लक्ष्मण दोनों ही उनके ही खाने के लिए हैं । ७ ऐसा कहकर शीघ्रता से जाकर उसने शीतल

एते बोलि बेगे गला । शीतळ सामग्री देला ।। ८ ।।
चार गणे घेनि गले । देबी आगरे रखिले ।। ९ ।।
देखि पाबनि हरष । एका बेळे कले ग्रास ।। १० ।।
महासुखरे भुंजिले । पुणि दे दे दे बोइले ।। ११ ।।
शुणि चारे बेगे जाइ । राजांक छामुरे कहि ।। १२ ।।
देबी सन्तोष नोहिले । आबर दिअ बोइले ।। १३ ।।
शुणि राजा बेगे गला । पथर घर फेड़िला ।। १४ ।।
बोले राम लक्ष्मणंकु । नाश कल मो पिताकु ।। १५ ।।
एठारु तुम्भंकु नेबि । देबी पाशे बळि देबि ।। १६ ।।
कटुआळ डका गला । घेनि माआर बोइला ।। १७ ।।
राज दाण्डे घेनि जान्ति । देखि जने प्रशंसन्ति ।। १८ ।।
देबी पाशे नेइ गले । दूरहुँ हनु देखिले ।। १९ ।।
बहुत बिकळ होइ । मनरे स्तुति करइ ।। २० ।।
राघब पद चरणे । बिक्रम नरेन्द्र भणे ।। २१ ।।

सामग्री प्रदान की । ८ चार आदमी उस सामान को ले गये और देवी के समक्ष रख दिया । ९ यह देखकर पवननन्दन प्रसन्न हो गये और उसे एक ही ग्रास में खा गये । १० उन्होंने सुखपूर्वक भोजन किया और बार-बार कहने लगे कि और दे, और दे । ११ यह सुनकर दूतों ने जाकर राजा से कहा कि देवी संतुष्ट नहीं हुई । और दो, ऐसा कह रही है । १२-१३ यह सुनकर राजा ने शीघ्रता से जाकर पत्थर के घर को खोला । १४ उसने श्रीराम और लक्ष्मण से कहा कि तुमने मेरे पिता का वध किया है । यहाँ से तुम्हें ले जायेंगे ? और देवी के निकट तुम्हारी बलि चढ़ायेंगे । १५-१६ बलि देनेवाला बुलाया गया । उसने कहा, हम ले चलेंगे । १७ राजपथ पर ले जाने पर उन्हें देखकर लोग प्रशंसा कर रहे थे । १८ वह सब उन्हें देवी के पास ले गये । हनुमान ने दूर से देखा । १९ विक्रम नरेन्द्र कहता है कि वह अत्यन्त व्याकुल होकर मन में भगवान के चरणों की स्तुति करने लगे । २०-२१

अष्टपञ्चाशत् छान्द

राग–रसकोइला

एथु अनन्तरे असुरगण ।
रामचन्द्रंकु मारिबे बोलिण ॥
दृढ़ करि से खड़्ग धइले ।
राम चउपाशे बेढ़ि रहिले से ॥
महीराबण से काळे जे ।
शुचिमन्त होइ नबरु बाहारि
देबी पाशे जाइँ मिळे जे ॥ १ ॥
देखिला तेज अति से शंकरी ।
सबु दिनहुँ दिशे भयंकरी ॥
नर बळि पाइँ होन्ति आतुर ।
एहा बिचारि असुर पामर से ॥
रामंकु कहे बचन जे ।
साष्टाङ्ग होइण भगबतींकर चरणे
कर प्रणाम हे ॥ २ ॥
ए समये बात आसि सत्वरे ।
कहि देले एहा राम कर्णरे ॥
बोल तुम्भे आम्भे राजतनय ।
कि परि प्रणाम कहिण दिअ से ॥

छान्द—५८

राग–रसकुल्या

इसके पश्चात् रामचन्द्र को मारेंगे, ऐसा सोचकर राक्षसगणों ने दृढ़तापूर्वक खड्ग धारण करके श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया। उसी समय महिरावण महल से पवित्र होकर निकलकर देवी के पास जा पहुँचा। १ उसने देवी के प्रचण्ड तेज को देखा। वह नर-बलि पाने के लिए आतुर हो रही थी। यह सोचकर नीच दैत्य ने श्रीराम से साष्टांग होकर देवी को प्रणाम करने को कहा। २ इसी समय पवनदेव ने शीघ्रता से आकर श्रीराम के कान में कहा कि आप कहें कि हम राजकुमार हैं। किस प्रकार प्रणाम करें, हमें बता दीजिए। यह कहकर पवनदेव वहाँ से

कहि बायु तहुँ गले जे ।
जेउँठारे थिले हनु मायादेबी
ता पाशे प्रबेश हेले जे ।। ३ ।।
हनु कर्णरे कहिले एसन ।
जाहा कहुछि शुणरे नन्दन ।
प्रणाम काळे दइतकु तुहि ।
एहि खड्गे शिर देबु छिण्डाइ से ।
पुणि हनु तोष हेले जे ।
पबन देबता देबक उदन्त कहि
निज स्थाने गले जे ।। ४ ।।
पबन ठारु शुणि राम राण ।
महीराबणे कहन्ति बचन ।।
आम्भे राजपुत्र न जाणु एहा ।
जाणिथिले तुम्भे देखाअ ताहा हे ।।
श्रबणे महीराबण जे ।
आनन्दित होइ मने बिचारिला
मो कार्ज्य हेब साधन जे ।। ५ ।।
एमन्त बिचारि दैत्य राजन ।
साष्टाङ्गे देबिंकि करु प्रणाम ।।
नुआइँबा काळे ग्रीबाकु चाहिँ ।
रागे हनुमान खड्ग नेइ से ।
सत्वरे करि प्रहार जे ।

चले गये और जहाँ हनुमान माया की देवी के रूप में थे वहाँ उनके पास जा पहुँचे । ३ हनुमान के कान में उन्होंने कहा, हे पुत्र ! मैं जैसा कहता हूँ, उसे सुनो । प्रणाम करते समय तुम इस दैत्य का सिर इस खड्ग से काट देना । यह सुनकर हनुमान प्रसन्न हो गये । पवनदेव देवताओं का सन्देश कहकर अपने स्थान को चले गये । ४ पवनदेव से सुनकर महाराज राम ने महिरावण से कहा कि हम राजपुत्र हैं । हम इसे नहीं जानते । आप जानते हों तो उसे करके दिखा दें । यह सुनकर महिरावण ने आनन्द से विचार किया कि अब मेरा कार्य सिद्ध होगा । ५ ऐसा विचार कर दैत्यराज के साष्टाङ्ग देवी को प्रणाम करते समय झुकी हुई गरदन को देखकर हनुमान ने कुपित होकर तलवार लेकर शीघ्रता से

गण्डि मुण्ड तार भिन्न भिन्न करि
पेशि देला प्रेतागार जे ।। ६ ।।
बोलन्ति राम लक्ष्मणंकु चाहिँ ।
हनु भीष्मरूप देखरे भाइ ।।
हनु मोहर अटे उपकारी ।
चिन्तिला मात्रे अइला किपरि से ।
लक्ष्मण हनु देखिले जे ।
हनु भीष्म रूप देखिण सानुज तुरिते
नेत्र बुजिले जे ।। ७ ।।
श्रीराम हस्ते नाहिँ शरासन ।
देखि बिचार करि हनुमान ।
राम लक्ष्मण थिबा स्थान हेरि ।
लांगुळकु गड़ पराय करि से ।
तार मध्ये दुइ भाइ जे ।
कहइ बिक्रम असुर नाशिला
हनुमन्त क्रोध होइ जे ।। ८ ।।

प्रहार करके उसके सिर को धड़ से अलग करके यमलोक को भेज दिया । ६ लक्ष्मण को ताकते हुए श्रीराम बोले, हे भाई ! हनुमान का विकट रूप देखो । वह हमारा उपकार करनेवाला है । सोचने मात्र से वह किस प्रकार-यहाँ आ गया । लक्ष्मण ने हनुमान को देखा । उनका बिकराल रूप देखकर उन्होंने नेत्र बन्द कर लिये । ७ श्रीराम के हाथ में धनुष नहीं है, यह देखकर हनुमान ने विचार करके जिस स्थान पर श्रीराम और लक्ष्मण थे, उस पर पूंछ से दुर्ग के समान बना दिया । दोनों भाई उसके मध्य में थे । विक्रम कहता है कि हनुमान ने कुपित होकर दैत्य का विनाश कर दिया । ८

एकोनषष्टितम छान्द

राग—केदार

एथु अन्ते जने शुण । असुर होन्ते निधन ।। १ ।।
श्रीरामचन्द्र हरष । हनुकु डाकिण पाश ।। २ ।।
बोइले हे हनुबीर । जाहा इच्छा माग बर ।। ३ ।।
आम्भ जीबन रखिल । एथु कि करिब भल ।। ४ ।।
शुणि हनुमन्त कहि । जहिँ थिब थिबि तहिँ ।। ५ ।।
ए पुरे मोर नन्दन । करिब ताकु राजन ।। ६ ।।
शुणि सीउकार कले । पुत्रकु आण बोइले ।। ७ ।।
हनु हस्त बढ़ाइले । मकरध्वजकु नेले ।। ८ ।।
देखि राम पुच्छा कले । पाबनि सर्ब कहिले ।। ९ ।।
मकरध्वजकु तहिँ । राजपाट शाढ़ी देइ ।। १० ।।
राज्ये अभिषेक हेला । राम चरणे पड़िला ।। ११ ।।
बोलन्ति से रघुबीर । बेगे आण धनु शर ।। १२ ।।
भण्डारु धनु आणिला । राम पाशे समर्पिला ।। १३ ।।
करे धरि धनुशर । बिजय हनु कन्धर ।। १४ ।।

छान्द—५९

राग—केदार

हे सज्जनो ! सुनिये ! इसके अनन्तर राक्षस की मृत्यु होते ही श्रीराम ने प्रसन्नतापूर्वक हनुमान को पास बुलाकर कहा, हे पराक्रमी हनुमान ! जो इच्छा हो वह वर माँगो । १-३ हमारा जीवन बचा लिया, इससे और अधिक क्या करोगे ? ४ यह सुनकर हनुमान ने कहा कि जहाँ आप रहेंगे, वहीं पर मैं भी रहूँगा । ५ मेरे पुत्र को इस नगर का राजा बना दें । ६ सुनते ही उन्होंने स्वीकार कर लिया और पुत्र को ले आने को कहा । ७ हनुमान हाथ बढ़ाकर मकरध्वज को ले आये । उसे देखकर श्रीराम ने पूछताछ की । हनुमान ने समस्त वृत्तान्त कह सुनाया । ८-९ मकरध्वज को राजकीय पट-साड़ी देकर राज्याभिषेक किया गया, तब वह श्रीराम के चरणों पर आ गिरा । १०-११ रघुवीर श्रीराम ने शीघ्र ही धनुष-बाण लाने को कहा । १२ भण्डार से धनुष लाकर उसने श्रीराम को समर्पित किये । १३ हाथ में धनुष-बाण लेकर वह हनुमान के कन्धे में विराजमान हो गये । १४ श्रीराम और लक्ष्मण

राम लक्ष्मणंकु घेनि । वेगे चळिला पावनि ॥ १५ ॥
बिबर द्वारे मिळिले । सेनाए दर्शन कले ॥ १६ ॥
सुवळ गिरिकि गले । रावणे दूते कहिले ॥ १७ ॥
शुणि शोके दशशिर । काटिबि रामर शिर ॥ १८ ॥
एमन्ते प्रतिज्ञा कला । बिक्रम गीते कहिला ॥ १९ ॥

षष्टितम छान्द—उन्मत्तादि असुरंक बध

राग–तोड़ि

डगरकु चहिँ दशशिर । वोलइ लंकारे जेते घर ।
बाळ वृद्ध छाड़ि जेतेक असुर समस्ते जाइँ समर कर ॥ १ ॥
पुत्र भ्रात नाति जेबे मले । मोर बळ से कि घेनि गले ।
एक रामकु समस्ते बेढ़ि मार बोलिण रावण आज्ञा देले ॥ २ ॥
जाहार जेते आयुध थिव । एका राम शिरे प्रहारिव ।
एका रामकु माइले जय हेव । एका बानरंकु न डरिव ॥ ३ ॥
आज्ञा पाइण असुर बळ । बाहार होइण कले गोळ ।
रामंकु बेढ़न्ते जूथपतिमाने ओगाळि माइले तरु शिळ ॥ ४ ॥

को लेकर पवनात्मज वेग से चलकर विवर के द्वार पर जा पहुँचे । सेना ने उनका दर्शन किया । १५-१६ फिर वह सब सुवेल पर्वत को चले गये । दूतों ने जाकर रावण से हाल बताया । १७ यह सुनकर दशानन शोकपूर्वक कहने लगा कि मैं राम का शिर काटूँगा । १८ उसने इस प्रकार की प्रतिज्ञा की, जिसे विक्रम ने गीत में गाया है । १९

छान्द ६०—उन्मत्त आदि असुरों का वध

राग–तोड़ी

सन्देशवाहक की ओर देखकर दशानन ने कहा कि लंका में जितने घर हैं, उनमें बालक और वृद्धों को छोड़कर बाकी समस्त दैत्य जाकर युद्ध करें । १ यदि पुत्र-भ्राता और नाती मर गये तो क्या वह हमारी शक्ति ले गये । सब घेरकर एकाकी राम को मार डालो । उसने इस प्रकार की आज्ञा दी । २ जिसके जो भी आयुध हैं, उन सबका प्रहार एक बार में ही कर दो । अकेले राम को मारने से ही जय होगी । उस एक बन्दर से कोई भय न करना । ३ आज्ञा पाकर असुर-सेना ने बाहर निकल कर युद्ध किया । राम को घेरते समय यूथपतियों ने उन्हें आगे से ललकार

असुर मानंकु दृश्य नोहि। अदृश्य होइले सीता साइँ।
जेसने आत्माकु केहि न देखन्ति इन्द्रियमान देहरे थाइ॥ ५ ॥
सेहि रूपे असुरंकु दृष्टि। राम करुछन्ति शरबृष्टि।
एणु अनेक असुर क्षय गले उश्वास होइला सर्ब सृष्टि॥ ६ ॥
एका राम शर अंगे पड़ि। असुरे मले भुमिरे गड़ि।
प्रचण्ड बाते जेन्हे पक्व रसाळ बिसाळ तरु शिखरु झड़ि॥ ७ ॥
पुणिहिँ राम एमन्त कले। असुरटि राममय हेले।
रामप्राय मणि एककु आरेक मरामरि होइ क्षय गले॥ ८ ॥
अठर सहस्र गज मले द्विलक्ष पदाति क्षय गले।
चउद सहस्र सस्र अश्व रथी शमन भुबन चळि गले॥ ९ ॥
अनेक राक्षसगण मले। एका होइ राम क्षय कले।
लंकार सकळ राक्षस बिकळ शुणिण उठि रोदन कले॥ १० ॥
के बोलइ सूर्पणखा भला। ताहा घेनि एते दूर हेला।
कामरे आरत होइण रामकु गुरस्त करिब बोलि गला॥ ११ ॥
के बोले भबिष्य तार गात्र। बिकट दशन क्रोट नेत्र।
राम सुकुमार कुमार बयस मदन मोहन राजपुत्र॥ १२ ॥

कर वृक्ष और शिलाओं से उन लोगों पर प्रहार किया। ४ तभी सीता के स्वामी श्रीराम अदृश्य हो गये। असुरदल उन्हें देख नहीं सका। जिस प्रकार इन्द्रियों को शरीर में रहते हुए भी आत्मा को कोई देख नहीं पाता। ५ असुरों की दृष्टि उसी प्रकार की थी। राम की बाण-वर्षा से अनेक राक्षस मारे गये और सृष्टि का भार कम हो गया। ६ श्रीराम के एक बाण के ही शरीर पर पड़ने से ही राक्षस लोग पृथ्वी पर गिरकर मर गये, जिस प्रकार विशाल आम के पेड़ की फुनगी से प्रचण्ड हवा के झोंके से आम के पके फल झड़कर गिरते हैं। ७ फिर श्रीराम ने ऐसा किया कि समस्त राक्षस राममय हो गये। एक-दूसरे को राम समझ कर आपस में मारा-मारी करके वह नष्ट ही गये। ८ अठारह हजार हाथी मारे गये। दो लाख पैदल सैनिक मरे। चौदह हजार घोड़े और चौदह हजार रथी यमलोक को चले गये। ९ श्रीराम ने अकेले ही अनेक राक्षसों को मार डाला। यह सुनकर लंका के सभी राक्षसगण रुदन करने लगे। १० कोई कह रहा था कि शूर्पणखा के बहाने से बात यहाँ तक पहुँच गई। काम से आतुर होकर वह श्रीराम को ग्रस्त करने गई थी। ११ कोई कहता था कि उसका शरीर भद्दा है। दाँत विकराल और नेत्र थलकुर के समान हैं। श्रीराम सुकुमार युवक, मन को मोहित करनेवाले राज-पुत्र

एके एके कुहा कुहि हेले । नानादि भाषारे धिक्कारिले ।
खर दिनु भल जेतेक असुर गणिण असुरे विळपिले ।। १३ ।।
शुणि रावण कारुण्य स्वन । क्रोधे मन कले छन्न छन्न ।
बीर बेश होइ धनु शर धरि बिजे कले मणिमय जान ।। १४ ।।
दश मुकुट सपत शिख । बिंश कुण्डळ मकर मुख ।
जमदाढ़ छुरी कटिरे शोहइ अंगढ़ाल खण्डा बामपाख ।। १५ ।।
कृष्ण हयचय रथे जोचि । सारथि रथ बाहइ पाञ्चि ।
सकळ आयुध रथे रखिअछि सकळ ताप मनरु मुञ्चि ।। १६ ।।
संगरे उन्मत्त मत्त बीर । चढ़िछन्ति बेनि रहुबर ।
हेम रहुबर चढ़ि बिरूपाक्ष सैन्यरे होइछि अग्रसर ।। १७ ।।
नबरु बाहार लंकेश्वर । रथ गज अश्व संगतर ।
अमंगळमान देखिण आसुछि छामुरे बाजुछि बीरतूर ।। १८ ।।
जुद्धे उन्मत्तकु राइ पाश । बोलइ रे बाबु कर नाश ।
समस्तहें मले तो वेनि बाहाकु करिअछि मुहिं प्रति आश ।। १९ ।।
शुणिण जुद्धे उन्मत्त बीर । शिररे लगाइ वेनिकर ।
सुग्रीब छामुरे रहुबर कला करे धरिअछि धनुशर ।। २० ।।

हैं । १२ एक-दूसरे से आपस में बातें करके अनेक प्रकार से उसे सभी धिक्कारने लगे । खर की मृत्यु के पश्चात् जितने भी राक्षस मरे थे, उनका सुमार कर राक्षस लोग विलाप करने लगे । १३ करुण-क्रन्दन को सुन कर रावण का मन क्रोध से तमतमा उठा । वह वीरवेश सजाकर धनुष-बाण लेकर मणिमय रथ पर चढ़ गया । १४ सात शिखरों वाले दस मुकुट, बीस मकर की आकृति वाले कुण्डल, यमदाढ़ के समान कटारी, कवच, ढाल, बायीं ओर खड्ग शोभा पा रही थी । १५ काले घोड़ों से जुते हुए रथ को सारथी समझ-समझकर चला रहा था । रावण ने अपने मन से समस्त ताप हटाकर सारे आयुध रथ पर रख लिये थे । १६ उन्मत्त और मत्त वीर साथ-साथ दोनों श्रेष्ठ रथ पर चढ़े थे । स्वर्ण के यान पर चढ़कर विरूपाक्ष सेना के आगे-आगे चल रहा था । १७ रथ, हाथी और घोड़ों के साथ लंकेश्वर नगर से बाहर निकला । उसके आगे वीरतूर्य बज रहा था । वह अपशकुन देखता हुआ चला जा रहा था । १८ युद्ध में उन्मत्त को पास बुलाकर उसने कहा, अरे वत्स ! सबका विनाश कर दो । सब तो मर गये पर मुझे तुम्हारी दोनों भुजाओं पर आशा है । १९ युद्धभूमि में यह सुनकर पराक्रमी उन्मत्त ने दोनों हाथ शिर से लगा लिये । हाथों में धनुष-बाण लिये उसने अपना रथ सुग्रीव

बिन्धइ असुर शरकुळ। सुग्रीब मारन्ते तरु शिळ।
उन्मत्त संगरे जोद्धा कपिपति समर कलेक बहु बेळ ॥ २१ ॥
छाड़ि शाळशिळ धनुर्बाण। मालरण कले बेनि जण।
चापोड़े मारिण जुद्धे उन्मत्तर कपिपति हेले नेले प्राण ॥ २२ ॥
ताहा देखि बिरूपाक्ष बीर। सुग्री पाशे कला रहबर।
बहु परकारे बहुत समर होइला से बेनि बीरंकर ॥ २३ ॥
शिळे मारि रथ चूर्ण कले। सारथि अश्वंक प्राण नेले।
देखिण रावण महागजे देला ताहा आरोहि समर कले ॥ २४ ॥
पुणि धनु शर बिन्धे बाण। तरु घाते गला गज प्राण।
धनु तार करु छड़ाइ भांगन्ते खड़ग धइला सेहि क्षण ॥ २५ ॥
सुग्रीब जाउँटि खण्डा घेनि। हणा हणि हेले बीर बेनि।
मुकुट कुण्डळ सहिते काटिले बिरूपाक्ष बीर मूरधनी ॥ २६ ॥
कपिराज रणे जय कले। आकाशुं कुसुम बरषिले।
सुग्रीब जय करि शोभा पाइले बोले बिशि राम प्रशंसिले ॥ २७ ॥

के आगे खड़ा कर दिया। २० राक्षस बाणों को चला रहा था और सुग्रीव वृक्ष तथा शिलाओं से प्रहार कर रहे थे। बहुत देर तक पराक्रमी कपीश सुग्रीव उन्मत्त के साथ युद्ध करते रहे। २१ वृक्ष-शिला तथा धनुष, बाण छोड़कर दोनों ने मल्लयुद्ध किया। युद्ध में वानरराज सुग्रीव ने थप्पड़ मारकर सहज में ही उन्मत्त के प्राण ले लिये। २२ यह देखकर वीर विरूपाक्ष ने सुग्रीव के सामने अपना रथ कर लिया। उन दोनों पराक्रमी वीरों का बहुत प्रकार से युद्ध हुआ। २३ सुग्रीव ने शिला के प्रहार से रथ को चूर-चूर करके सारथी और घोड़े के प्राण ले लिये। यह देखकर रावण ने एक मदमस्त हाथी दिया जिस पर चढ़कर उसने युद्ध किया। २४ वह पुनः धनुष पर चढ़ाकर बाण छोड़ने लगा। तभी वृक्ष के आघात से हाथी मर गया। धनुष को उसके हाथ से छीनकर तोड़ते समय उसने तुरन्त तलवार उठा ली। २५ सुग्रीव ने बलपूर्वक तलवार छीन ली। फिर दोनों वीरों ने मारधाड़ की। उसमें सुग्रीव ने मुकुट और कुण्डल के समेत पराक्रमी विरूपाक्ष का शिर काट दिया। २६ कपिराज की युद्ध में विजय होने पर आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई। जय प्राप्त करके सुग्रीव सुशोभित हुए। विशि कहता है कि श्रीराम ने उनकी बहुत प्रशंसा की। २७

एकषष्टितम छान्द—लक्षण शक्ति भेद

राग–कामोदी

जुद्धे उन्मत्त हत, देखिण महामत्त,
सुग्रीब आगे रथ कला।
दखाइ बहु तेज, सस्र सस्र नाराज,
गुणरे बसाइ बिन्धिला से। कपिराज।
देखिण जुद्धकु लेउटे। शाळ तरु ए घेनि पिटे।
देखि ताहा असुर, क्रोधरे गुरुतर,
नाराज पेषि ताहा काटे॥ १॥
देखिण बालिसुत, धाइँ आसि त्वरित,
मत्त सगते कला रण।
शाळशिळरे करि, सारथि अश्व पारि,
ता करु नेले धनुर्बाण से बाळिसुत।
मालरण ता सगे कले। भूमिरे गड़ागड़ि हेले।
दैत्य धरन्ते खण्डा, धरिण सेहि खण्डा,
अंगद ता शिर छेदिले॥ २॥
देखुथिले राबण, महामत्त मरण,
राक्षसे पळान्ति हारिण।

छान्द ६१—लक्ष्मण को शक्ति लगना

राग–कामोदी

युद्ध में उन्मत्त को मरा देखकर महामत्त ने सुग्रीव के समक्ष अपना रथ कर दिया। उसने बहुत क्रोध दिखाते हुए हजार-हजार बाण धनुष पर चढ़ाकर छोड़े। वानरराज सुग्रीव देखते ही युद्ध के लिए लौट पड़े और साल वृक्ष और शिलाओं से पीटने लगे। उसे देखकर अत्यन्त क्रोध में भरा हुआ राक्षस बाणों से उन्हें काटने लगा। १ यह देखकर बालिनन्दन शीघ्रता से दौड़ आये और उन्होंने मत्त के साथ युद्ध किया। बालिपुत्र अंगद ने वृक्ष और शिलाओं से सारथी और घोड़े को मारकर उसके हाथ से धनुष और बाण छीन लिये। उन्होंने उसके साथ मल्लयुद्ध किया। पृथ्वी पर दोनों की उठा-पटक हुई। दैत्य के तलवार उठाने पर अंगद ने उसी तलवार को लेकर उसका सिर काट दिया। २ रावण देख रहा था कि महामत्त के मरने से राक्षस हारकर भाग रहे हैं। उसे देखकर रावण ने

ताहा देखि रावण, बिन्धे अनेक बाण,
बानर कला रण भण से। दशशिर।
सारथिकि कहे उत्तर। राम सम्मुखे रथ कर।
करि घोर समर, पेषिबि जमपुर,
दशरथ बेनि कुमर॥ ३॥
सारथि रहुबर, कला राम छामुर,
देखि पुच्छन्ति रघुबीर।
आहे हे लंकेश्वर, देख ए दशशिर,
एहिटि तुम्भर सोदर हे। लंकेश्वर।
पड़िला आम्भर छामुर। आउ कि जीइँ जिब घर।
आज जानकी चोर, छेदन हेब शिर,
एथकु सन्देह न कर॥ ४॥
एते बोलिण शर, बिन्धिले बीरबर,
रावण कले प्रतिशर।
पुणि बिन्धन्ते शर, पुणिहिँ प्रतिशर,
करिण काटइ असुर से। दशशिर।
जहु काटिले रामशर। देखिण राम कोप भर।
पेषिले पाञ्चशर, सारथिर उपर,
तक्षणे मृत्यु होए तार॥ ५॥
पुणिहिँ पाञ्चशर, पेषि रथ उपर,
तार मस्तकध्वज काटे।

अनेकानेक बाण छोड़े और वानरों को छिन्न-भिन्न कर दिया। दशानन ने सारथी से कहा कि राम के सामने रथ को ले चलो। मैं घनघोर युद्ध करके उन दोनों दशरथ के पुत्रों को यमपुर भेज दूंगा। ३ सारथी ने रथ राम के सामने कर दिया। देखकर श्रीराम ने कहा, हे लकेश्वर बिभीषण! देखो, यह तुम्हारा भाई लंकापति मेरे सामने पड़ गया है। अब और जी कर क्या यह घर जा सकेगा। आज जानकी के चोर का सिर कटेगा, इसमें सन्देह न करो। ४ इतना कहकर पराक्रमी राम के द्वारा बाण छोड़ने पर रावण ने उन्हें प्रतिशर से निवारण किया। इनके बाण छोड़ने पर पुनः रावण प्रतिशर से उन्हें काटने लगा। जब उस दैत्य रावण ने श्रीराम के बाण काटे तो श्रीराम इसे देखकर क्रोध में भर गये। तब उन्होंने सारथी के ऊपर पाँच बाण छोड़े जिससे उसकी मृत्यु हो गई। ५ फिर उन्होंने

समस्ते देखि साधु साधु कले
प्रमोदुं महीरे पड़ि ध्वज लोटे से।
रामानुज। पुणि बिन्धिण दशशिर।
धनु सेन्हा काटिले ताहार।
तुरिते बिभीषण, गदारे प्रहारिण,
नेले प्राण ता अश्वंकर ॥ ६ ॥
क्रोधरे दशशिर, शकति घेनि कर,
राम काये कला प्रहार।
देखि लक्ष्मण बीर, पेषिण तीक्ष्ण शर,
काटि पकाइले भुमिर से दशशिर।
लज्जा पाइला गुरुतर। बिभीषणरे क्रोधभर।
मय दैत्य देबार, शकति घेनि कर,
गर्ज्जन करइ असुर ॥ ७ ॥
से शक्तिरे शोभित, अष्टघण्टि लम्बित,
तेज द्वितीय दिबाकर।
राबण करे एहा देखिण शचीनाहा,
सहिते कम्पिले अमर से। बिभीषण।
जाणिले से राबण रुष्ट। लुचिले लक्ष्मणंक पृष्ठ।
बिभीषण लक्ष्मण पृष्ठरे पळायन,
राबण कामोड़िला ओष्ठ ॥ ८ ॥

रथ पर पाँच बाण मारकर उसके शिखर के ध्वज को काट डाला। ध्वज को पृथ्वी पर पड़ा देखकर सभी लोग प्रसन्नता से 'धन्य, है धन्य है' ऐसा कहने लगे। फिर राम के भाई लक्ष्मण ने रावण पर बाण छोड़कर उसके धनुष और तरकश को काट डाला। तुरन्त ही बिभीषण ने गदा के प्रहार से उसके घोड़े के प्राण ले लिये। ६ क्रुद्ध हुए दशकन्धर ने शक्ति हाथ में लेकर श्रीराम के शरीर पर प्रहार किया। यह देखकर वीर लक्ष्मण ने तीक्ष्ण बाण छोड़कर उसे पृथ्वी पर काट गिराया। रावण बहुत लजाकर रह गया। फिर उसने कुपित होकर गर्जन करते हुए मय दानव के द्वारा दी हुई शक्ति को हाथ में लेकर विभीषण पर छोड़ दिया। ७ आठ घंटियों से सुशोभित वह शक्ति दूसरे सूरज के समान शोभायमान लग रही थी। रावण के हाथ में उसे देखकर शचीपति इन्द्र देवताओं के सहित काँप उठे। विभीषण रावण को रुष्ट जानकर लक्ष्मण के पीछे

क्रोधे बोले राबण, आरे आरे लक्ष्मण,
विभीषणकु छाड़ि देलुँ ।
ताकु प्राणे मारन्ति, रणे जय करन्ति,
एबे तो प्राण हारिलु रे। राजपुत्र ।
नोहु तु मो शस्त्रकु पात्र ।
एमन्त बोलि बिशनेत्र ।
शकति प्रहारन्ते लक्ष्मण उरे पड़ि
फुटिण गला तांक गात्र ॥ ९ ॥

शकति बाजि उर, भूमिरे पड़ि बीर,
ज्ञान हराइ मोह गले ।
देखिण रामचन्द्र श्रीमुख शुखिगला,
आकुळे बहु रण कले से। रघुबीर ।
लक्ष्मणंक ठारे देइ मन । बिन्धे नाराच घन घन ।
रामर क्रोध मन, जाणिण दशानन,
आड़ करिण नेला जान ॥ १० ॥

राम तेजिण रण, आसि देखि लक्ष्मण,
शकति उपाड़ बोइले ।
समस्त जूथपति, उपाड़ि न पारन्ति,
राम ता श्री करे धइले से। रघुबीर ।

छिप गये । विभीषण को लक्ष्मण के पीछे भागा हुआ देखकर रावण होंठ चबाने लगा । ८ रावण क्रुद्ध होकर बोला, अरे लक्ष्मण ! आ । विभीषण को छोड़ दिया । उसको प्राणों से मारकर रण में जीत लेता, पर अरे राजपुत्र ! अब तेरे प्राण जायेंगे । तू मेरे शस्त्र का पात्र न बन । ऐसा कहकर रावण ने शक्ति छोड़ी जो लक्ष्मण के हृदय में जा लगी । उनका शरीर विदीर्ण हो गया । ९ हृदय में शक्ति के लगने से वीर लक्ष्मण अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । यह देखकर श्रीराम का मुख सूख गया । उन्होंने व्याकुल होकर बहुत युद्ध किया । रघुवीर राम मन में लक्ष्मण का ध्यान करके सन-सन वाण छोड़ने लगे । राम को कुपित देखकर रावण ने अपना रथ आड़ में कर लिया । १० श्रीराम ने रण का त्याग करके आकर लक्ष्मण को देखा और उन्होंने शक्ति उखाड़ने के लिए कहा । सारे यूथपति उसे उखाड़ नहीं पा रहे थे । तब श्रीराम ने अपने हाथ से उसे पकड़कर सहजतापूर्वक खींच लिया जैसे हाथी कमल को उठा

शकति उपाड़िले हेले । जेन्हे गज पंकज तोळे ।
बेनिखण्ड शकति, करि पकाइ देले,
गर्त्त गात्र देखिले डोळे ।। ११ ।।
हा हा आहे लक्ष्मण, तुम्भे मोहर प्राण,
संगे आणिलि एथिपाइँ ।
तुम्भे एड़े दारुण, मोते एका करिण,
तुम्भ संगते नेल नाहिँ हे । बीरबर ।
मुँ जे तुम्भर सहोदर । किपाइँ मोते कल पर ।
मउन होइ शुअ, किम्पा कथा न कह,
केउँ दोष देखिण मोर ।। १२ ।।
तेजिलि प्राण आश, जेणु मो भ्रात नाश,
सीता करिब एबे किस ।
जुद्धरे काज्यं नाहिँ शाखामृग
मराइ पाइबि अबा केते जश जे बीरबर ।
प्राणु अधिक मोते कर । सेबक प्राय चेष्टा तोर ।
बिळाप कले आम्भे, प्रबोध कह तुम्भे,
एबे कि कारणे न कर ।। १३ ।।
आहे लक्ष्मण बीर, स्नेह देखि तुम्भर,
आणिलु आम्भ संगतर ।
आम्भर देखि स्नेह, अन्तरे दया बह,

लेता है । उन्होंने शक्ति के दो टुकड़े करके फेंक दिये और शरीर के घाव को देखा । ११ हा लक्ष्मण ! हा लक्ष्मण ! तुम मेरे प्राण के समान थे, इसलिए तुम्हें अपने साथ लाया था । तुम इतने कठोर हो कि मुझे अकेला कर गये और मुझे अपने साथ नहीं ले गये । हे वीर ! मैं तुम्हारा भाई हूँ । मुझे पराया क्यों बना दिया ? तुम मौन होकर सोये पड़े हो, किसलिए बात नहीं करते ? तुमने मुझमें कौन सा दोष देखा है ? १२ अपने भाई का नाश देख करके मैंने प्राणों की आशा छोड़ दी है । अब सीता को क्या करेंगे । अब युद्ध का कोई काम नहीं है । वानरों को मरवाकर अब कौन सा यश मिलेगा । हे वीरवर ! प्राणों से अधिक मेरी सेवा करने की तुम चेष्टा करते रहते थे । जब हम विलाप करते थे तब तुम हमे प्रबोध दिया करते थे । अब इस समय क्यों नहीं कर रहे हो । १३ हे पराक्रमी लक्ष्मण ! तुम्हारे स्नेह को देखकर अपने साथ ले

आम्भंकु निअ से संगर हे। बीरबर।
न कले प्रति उपकार। अधर्म हेबटि तुम्भर।
जाणकि तुम्भे मने, तुम्भ संग बिहीने,
जिबु आम्भे अजोध्यापुर ॥ १४ ॥
राबणकु माइले, सीता घेनि अइले,
जश काहाकु देखाइबि।
अजोध्यापुर गले, जननी पचारिले,
ताहांकु कि बोलि कहिबि हे। बीरबर।
थिबारु सबु सुलक्षण। तेणुटि बोलाअ लक्ष्मण।
गुणि तुम्भर गुण, गुणिण मोर प्राण,
न जाइअछि कि कारण ॥ १५ ॥

द्विषष्टितम छान्द—रामचन्द्रंक शोक

राग–अर्द्ध सिन्धुड़ा

करन्ति रोदन कौशल्यानन्दन शुण आरे सउमित्रि।
केबण पातक पूर्बे करिथिलु बाजिला ब्रह्म शकति।
भाइ प्राणर सखा। मोते छाड़ि करि गलु एका ॥ १ ॥

आये थे। अब हमारा स्नेह देखकर अपने अन्तर में दया करो और हमें भी साथ ले चलो। हे वीर! प्रति उपकार न करने से तुम्हें पाप लगेगा। क्या तुम मन में जानते हो कि तुम्हारे बिना मैं अयोध्यापुर लौटूंगा! १४ रावण को मारने या सीता को ले आने का यश किसे दिखाऊँगा। अयोध्या जाने पर माँ के पूछने पर मैं उनसे क्या कहूँगा। हे प्रियवर! सभी सुलक्षण होने से तुम्हें लक्ष्मण कहा जाता था। तुम्हारे गुणों का स्मरण करते हुए मेरे प्राण क्यों नहीं निकल रहे है। १५

छान्द ६२—राम का शोक

राग–अर्धसिन्धुर

कौशल्यानन्दन श्रीराम रुदन करते हुए कह रहे थे, ये सुमित्रानन्दन लक्ष्मण! तुमने कौन सा पाप पहले किया था जिससे तुम्हें ब्रह्मशक्ति लगी। हे भाई! तुम मेरे प्राणों के सखा हो, मुझे अकेला छोड़कर चले गये। १

अजोध्यारे थिले सुखे त थाआन्त गोड़ाइ अइलु भाइ ।
धनुशर धरि जगि बसिथाउ रात्रे उजागर होइ ।
मने न धरु आन । तु त साबतमाता नन्दन ।। २ ।।
घरकु गले जे माता पचारिवे लक्ष्मण केणिकि गला ।
कि बोलि बोलिबि मातांक छामुरे बिधाता ए दण्ड देला ।
आउ जिबि किस्पाइँ । सीता नेबारे मो कार्य्य नाहिँ ।। ३ ।।
आहे बिभीषण हुळा जाळिआण देखिबा भाइ सानुज ।
बर्त्तिब कि नाहिँ अचळ शकति मारि गला लंकराज ।
से जे गरिष्ठ शर । एकघनी नाम अटे तार ।। ४ ।।
ओपाड़िण शक्ति बीर रघुपति हृदकु देले अनाइ ।
इअँळा पिअंळा शिशुमुना नाड़ी दिशुछि पिंगळ होइ ।
मुँ जे करिबि किस । खाइ मरिबि गरळ बिष ।। ५ ।।
आहे बिभीषण सुग्रीव राजन मंत्री जाम्बब सुषेण ।
काहार केतेक उपाय जे अछि बर्त्तिब भाइ लक्ष्मण ।
शुणि सुषेण कहे । बोले गोपी बर्त्तिबे उपाये ।। ६ ।।

अयोध्या में रहने पर सुख तो मिलता । हे भाई ! तुम मेरे पीछे-पीछे चले आये । धनुष-बाण धारण करके रात में जगकर पहरा देते हुए तुम अपने मन में यह नहीं सोच सकते कि यह तो विमाता के पुत्र हैं । २ घर जाने पर माता पूछेंगी कि लक्ष्मण कहाँ गया ? तब माता के सामने मैं क्या कहूँगा ? ब्रह्मा ने मुझे यह दण्ड दिया । और जाऊँगा भी किसलिए ? सीता को लेने से मेरे कोई प्रयोजन नहीं । ३ हे विभीषण ! मशाल जलाकर ले आओ । मैं अपने भाई को देखूँगा कि वह अचल शक्ति से बचेगा अथवा नहीं । जो उत्तम बाण, जिसका नाम एकघ्नि है, लंकापति मारकर चला गया । ४ पराक्रमी रावण ने शक्ति को खींचकर हृदय की ओर दृष्टि डाली । इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी पीली पड़ गई थीं । वह कहने लगे कि अब मैं क्या करूँ ? अब विष खाकर मैं प्राणों का त्याग कर दूँगा । ५ हे विभीषण, राजा सुग्रीव, मंत्री जामवन्त तथा सुषेण ! किसी के पास कोई उपाय है, जिससे भाई लक्ष्मण बच जाय । गोपी कहता है कि यह सुनकर सुषेण ने कहा कि उपाय करने से बच जाएँगे । ६

त्रिषष्टितम छान्द

राग–कामोदी

आहे मंत्री सुषेण, किस उपाय जाण,
कह मुँ कि बुद्धि करिबि ।
अजोध्या सम्पदर, काज्र्य नाहिँ मोहर,
सानुज संगते मरिबि हे । कपिबर ।
शुणिण शिरे देइ कर । बोलइ शुण रघुबीर ।
लक्ष्मणंकर किछि, अलक्षण न देखि,
औषधि आणु हनुबीर हे ।। १ ।।
राम हनुकु चाहिँ, बहुत दुःखी होइ,
सुषेण कि कहन्ति शुण ।
जेउँ औषधि पूर्बे, कहिथिले जाम्बबे,
ताहा आणिब एहि क्षण हे । हनुबीर ।
शुणिण श्रीराम उत्तर । शिरे देइण बेनिकर ।
काया करि बिस्तार, पबनु अति खर,
गले से आकाश मार्गर से ।। २ ।।
राबण आगे जाइँ, डगर जे जणाइ,
शुणिबा हेउ लंकेश्वर ।
औषधि आणिबाकु, गन्धमादने गला,

छान्द—६३

राग–कामोदी

हे मंत्री सुषेण ! कोई उपाय जानते हो तो मुझसे बताओ कि मैं क्या उपाय करूँ ? अयोध्या की सम्पत्ति से मुझे कोई प्रयोजन नहीं है । मैं अपने भाई के साथ ही प्राण त्याग करूँगा । तब कपिश्रेष्ठ ने हाथों को शिर से लगाते हुए कहा, हे रघुवीर ! सुनिए । मुझे लक्ष्मण में कोई अलक्षण नहीं दिखते । हनुमान जाकर ओषधि ले आएँ । १ राम ने हनुमान की ओर देखते हुए बहुत दुखी होकर कहा कि सुनो, सुषेण क्या कह रहे हैं ? जामवन्त ने जो ओषधि पहले बताई थी उसे अभी ले आओ । पराक्रमी हनुमान ने श्रीराम की बात सुनकर अपने दोनों हाथ शिर में लगाकर उन्होंने अपनी काया का विस्तार किया और आकाश-मार्ग से पवन से भी तीव्र गति से चले गये । २ रावण के आगे दूत ने जाकर निवेदन किया कि हे लंकेश्वर ! सुनिए । मैं देखकर आ रहा हूँ । वीर हनुमान ओषधि

देखि अइलि हनुबीर से। दशशिर।
ताहा शुणि बिस्मय हेला। काळनेमि कि डकाइला।
बसाइ ताकु पाश, करि अति बिश्वास,
एमन्त बचन बोइला से॥ ३॥
आज्ञा देला ताहाकु, औषधि आणिबाकु,
गला जे पबनकुमर।
जेमन्त न आसिब, लक्ष्मण न बत्तिब,
एमन्त उपाय तु कर हे। दैत्यबीर।
शुणि से मने भय कला। पुणि एमन्त बिचारिला।
मारीच प्राय नाश, हेबि आज अबश्य,
दइब प्रतिकूळ हेला से॥ ४॥
न गले एहि क्षण, मारिब ए रावण,
गले मारिब हनुबीर।
हनु मोते माइले, रावण जय कले,
कार्ज्य होइब मित्रंकर से। दैत्यबीर।
एमन्त निर्णय से कला। पबन बेगुँ बेगे गला।
हिमाचळ निकट गन्धर्ब सरोवर
तहिं तटे प्रबेश हेला से॥ ५॥
अछि तहिं कुम्भीरी, से पूर्बे अपसरी,
ताहा जाणि उपाय कला।

लाने के लिए गन्धमादन पर गये हैं। यह सुनकर रावण को आश्चर्य हुआ। उसने कालनेमि को बुलाकर उसे पास बैठाकर अत्यन्त विश्वास के साथ यह कहा। ३ ओषधि लाने के लिए पवनकुमार गया है। तुम ऐसा उपाय करो जिससे वह न आ सके और लक्ष्मण न बच पाये। वह पराक्रमी दैत्य यह सुनकर मन में भय करने लगा। फिर उसने यह विचार किया कि दैव प्रतिकूल हो गया है। मारीच के समान आज मेरा भी नाश होगा। ४ नहीं जाने से इस समय यह रावण मुझे मार देगा। जाने से हनुमान मारेगा। हनुमान के द्वारा मुझे मारे जाने से रावण जय प्राप्त करेगा। इससे मित्र का कार्य तो बन जाएगा। अतः वीर दैत्य इस प्रकार विचार करके पवन के वेग से भी तीव्र गति से जाकर हिमालय के निकट गन्धर्व सरोवर के तट पर जा पहुँचा। ५ वहाँ पर एक अप्सरा (शाप से) मकरी बनकर रह रही थी। ऐसा जानकर उसने

संगे असुरगण, मुनि वेश करिण,
आपणे तपस्वी होइला से। दैत्यबीर।
सुबर्ण प्रासाद रचिला। हेम प्रतिमाए स्थापिला।
बिबिध तरुवर, फळ पुष्पे मन्दिर,
एमन्त आराम पाञ्चिला जे ॥ ६ ॥
बिभूतिरे भूषण, शिरे जटा धरिण,
प्रासाद दुआरे बसिला।
हनु आसिबा पाइँ, आकाशकु अनाइ,
कृष्णजिन माड़ि बसिला से। मायामुनि।
हनु आसिबार जाणिला। प्रतिबचनरे डाकिला।
हनुबीर हे आस, आम्भ पाशरे बस,
श्रान्ति हरि जाअ बोइला से ॥ ७ ॥
जेबे तु न आसिबु, आज्ञा भग्न करिबु, कार्ज्य होइब
तोर नाश। तार बचन शुणि, भयरे कपिमणि,
आसि मिळिले तार पाश से। हनुबीर।
मुनिकि कले नमस्कार। शिरे लगाइ बेनि कर।
भो मुनि कृपा कर, कह काहिँक नीर, पिइ तृषा
हरिबि मोर से। शुणि मुनि हरष, बोइले बाबु
बस, कमण्डळरु पिअ नीर। हनु शुणि बोइले,

उपाय की रचना की। साथ के असुर लोगों ने मुनियो का वेश धारण कर लिया। वह स्वयं तपस्वी बन गया। उस दैत्य वीर ने सुवर्ण-प्रासाद की रचना की। उसमें स्वर्णमयी प्रतिमा स्थापित की। मन्दिर के चारों ओर नाना प्रकार के पुष्प और फलों के वृक्ष लगे थे। इस प्रकार के बगीचे की उसने रचना की। ६ वह जटाधारी भभूत से भूषित होकर प्रासाद के द्वार पर कृष्ण मृग की छाल पर हनुमान के आगमन के लिए आकाश की ओर दृष्टि रखकर बैठ गया। उस माया-मुनि ने हनुमान को आया हुआ जानकर आवाज दी। हे पराक्रमी हनुमान! मेरे समीप आओ और थकावट मिटाकर चले जाना। ७ यदि तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके नहीं आओगे तो तुम्हारा कार्य नष्ट हो जाएगा। उसके वचन सुन श्रेष्ठकपि भय से उसके समीप आ गये। हनुमान ने दोनों हाथ सिर से लगाकर मुनि को नमस्कार किया। हे मुनि! कृपा करके कहिये कि पानी कहाँ है? जिसे पीकर मैं अपनी प्यास बुझा सकूँ। मुनि ने प्रसन्नता से कहा, वत्स!

एथु जळ पिइले, तृषा त न जिब मोहर हे ।
मुनिबर । शुणि से आनन्द होइला । सरोबर देखाइ
देला । हनु तहिँरे जाइ, जळ पिअन्ते रहि,
कुम्भीरी आसिण धइला से ॥ ८ ॥
हनु चरण धरि, घोर गर्ज्जन करि, निअइ जळर
भितर । देखि पवनसुत जळे बुड़ि त्वरित वेनि
पाटि धरिला तार से । हनुबीर । कूळरे आणि
पकाइले । क्रोधे ता शरीर दळिले । प्राण छाड़ि
असुरी, होइण अपसरी, हनुकु एमन्त बोइले से ॥ ९ ॥
एटि ऋषि नुहइ, काळनेमिटि एहि, रावण
देला पठिआइ । ए जळरे बुड़ाइ तोते मारिबा
पाइँ, असुर मुनि अछि होइ हे । हनुबीर ।
एहाकु बेग करि मार । क्षणेहें बिळम्ब न कर ।
तुम्भंकु बाट चाहिँ, आकाशकु अनाइँ,
दुःखे अछन्ति रघुबीर हे ॥ १० ॥
शुणि तार उत्तर, क्रोधे हनु सत्वर, मुनिकु कहिले
से जाइ । कल जे उपकार, पिआइ मोते नीर,
सेबा मुँ करिबि गोसाइँ हे । मुनिबर । एबे मो
हस्ते पूजा पाअ । सुखे शमनपुरे जाअ ।

बैठो ! तथा कमण्डल का जल पियो । हनुमान बोले, हे मुनिश्रेष्ठ ! इतना जल पीने से तो मेरी प्यास नहीं बुझेगी । यह सुनकर वह प्रसन्न हो गया और उसने उन्हें सरोवर दिखा दिया । वहाँ उतरकर हनुमान के जल पीने पर मकरी ने आकर उन्हें पकड़ लिया । ८ वह घोर गर्जना करते हुए हनुमान का चरण पकड़कर उन्हें जल के भीतर ले जाने लगी । पानी में डूबते हुए हनुमान ने उसके दोनों जबड़े पकड़कर उसे लाकर किनारे पर पटक दिया और उसका शरीर क्रोध से कुचल दिया । वह प्राण छोड़कर अप्सरा बनकर हनुमान से बोली । ९ यह ऋषि नहीं, कालनेमि है । इसे रावण ने इस जल में डुबाकर तुम्हें मारने के लिए भेजा है । यह असुर मुनि बना है । हे महावीर ! शीघ्र ही इसका वध करो । एक क्षण का भी विलम्ब मत करो । रघुवीर राम आकाश में तुम्हारी राह देखते हुए दुःखित हो रहे हैं । १० उसकी बात सुनकर हनुमान ने क्रोध से जाकर उस मुनि से कहा, हे नाथ ! आपने मुझे जल पिलाकर जो उपकार किया है,

माया तपस्वी होइ, शिब पूजुछ रहि,
तहिंर फळ देबि निअ हे ॥ ११ ॥
एतेक कहि बीर, मुथे मारि ता उर, चरण
ताहार धइला । चक्र प्राये करिण, आकाशे
बुलाइण, प्रासाद उपरे पिटिला से । हनुबीर ।
मारि ताकु पकाइ देले । प्रासाद प्रतिमा भागिले ।
जेते असुरगण, थिले ता संगे पुण,
मारि जमपुरे पेषिले से ॥ १२ ॥
हिमाचळर तट, मेरु गिरि निकट, गन्धमादनरे
होइले । जाणि ताहा गन्धर्बे, कोप करिण सर्बे,
मारुति अग्रते मिळिले से । अति चण्डा ।
माइले तीक्षण काण्ड खण्डा । गदा गुरुजा लौह
दण्डा । सहि ता हनुमान, कोप करिण मन,
गर्जिण तर्जिले प्रचण्डा ॥ १३ ॥
तळ गोइठा मुष्टि, प्रहार कपि जष्टि, से तिनि
कोटि हतकले । हनु आसिबा जाणि, औषधि
माने पुणि, दृष्टिकि गोचर नोहिले से । हनुबीर ।
एणु होइले कोप भर । गिरि भांगि धइले शिर ।

उसके लिए मैं आपकी सेवा करूँगा । हे मुनिश्रेष्ठ ! अब मेरे हाथ से पूजा प्राप्त करके सुखपूर्वक यमलोक को प्रस्थान करो । माया तपस्वी बनकर शिव की पूजा करते हो । मैं तुम्हें उसी का फल प्रदान करूँगा । ११ वीर हनुमान ने ऐसा कहकर उसकी छाती में मुक्का मारकर उसका पैर पकड़ लिया और चक्र के समान आकाश में घुमाकर प्रासाद के ऊपर दे पटका । वीर हनुमान ने उसे मारकर फेंक दिया । मन्दिर-सहित प्रतिमा को तोड़कर उसके साथ जो भी अन्य राक्षस थे उन्हें मारकर यमलोक पहुँचा दिया । १२ फिर हनुमान हिमालय के तट पर सुमेरु पर्वत के निकट गन्धमादन पर जा पहुँचे । यह जानकर सभी गन्धर्व कुपित होकर मारुति के निकट आये । उन्होंने अत्यन्त प्रचण्डतापूर्वक तीक्षण बाण, खाँडा, गदा, गुर्ज तथा लोहे के दण्ड से प्रहार किया । हनुमान उसे सहन करके क्रुद्ध मन से प्रचण्ड गर्जन और तर्जन करने लगे । १३ उन्होंने मुक्का, थप्पड़, घूँसा तथा डण्डे से तीन करोड़ गन्धर्व मार डाले । हनुमान को को आया जानकर फिर वह ओषधियाँ दृष्टि में नहीं आईं । इससे

अति बेगे पाबनि, औषध गिरि घेनि,
गगने गले से सत्वर से ।। १४ ।।
ए रसे भाषे बिशि, ब्रिशपाणि बिनाशि, सीता
बिळासी चापधारी । काळदण्ड उद्धरि, रख
कोदण्डधारी । अजोध्या मण्डळ बिहारी हे ।
रामचन्द्र। महीबळय नृपइन्द्र । निखिळ
गुणीगण सान्द्र । कन्दर्प दर्पहर, दर्पण
झळिसार, सुन्दर जितापण चन्द्र हे ।। १५ ।।

चतुःषष्टितम छान्द

राग–मंगळाश्री

घेनिण औषधि, कपिकुळनिधि, गगन मार्गरे गमे ।
दशदण्ड लागि, रुजुबाट भांगि, मिळिला अजोध्या धामे ।। १ ।।
नन्दीग्रामपुर, गमइ प्रखर गळि झड़े श्रमझाळ ।
रजनी भ्रमणि, करि रघुमणि, से काळे कैकेयी बाळ ।। २ ।।

पराक्रमी हनुमान ने कुपित होकर पर्वत को तोड़कर शिर पर उठा लिया । पवनसुत ओषधि का पर्वत लेकर शीघ्र ही अत्यन्त वेग से आकाशमार्ग से चल दिये । १४· विशि इस रस में कहता है कि हे रावण के नाशक ! धनुष को धारण करके सीता के साथ विहार करनेवाले श्रीराम काल के पाश से उद्धार करो । अयोध्यामण्डल मे विहार करनेवाले भूमण्डल के नृपेन्द्र श्रीरामचन्द्र निखिल गुणों के भण्डार, कंदर्प का दर्प दलन करनेवाले, दर्पण के समान निर्मल झलक वाले तथा सौन्दर्य में चन्द्रमा को जीतनेवाले श्रीराम ! रक्षा करो ! रक्षा करो । १५

छान्द—६४

राग–बंगलाश्री

कपिकुल में निधि-सदृश हनुमान औषध लेकर आकाश-मार्ग से गमन कर रहे थे । दश दण्ड के लिए टेढ़े रास्ते को छोड़कर अयोध्या धाम में जा पहुंचे । १ प्रखर वेग से जाते समय नन्दिग्राम में उनका पसीना गिरा । उस समय कैकेयीनन्दन रघुमणि भरत रात्रि में घूम रहे थे । २ शब्द सुनकर स्तब्ध होकर भरत ने अपने मन में विचार

शुणिण शबद, होइण तबद, भरत अन्तरे भाळे ।
पक्षरे रहित, जेउँ परबत, आकाशरे सेहि चळे ।। ३ ।।
बिचारि एसने, बाणे शरासने, बसाइ बिन्धन्ते बीर ।
देखि शंका पाइ, आकाशरे थाइ, बिचारे बायुकुमर ।। ४ ।।
निश्चे एहि राम, बहि मने तम, मोहर बिळम्ब देखि ।
लागुअछि घट, जगिछन्ति वाट, कोदण्डरे काण्ड जोखि ।। ५ ।।
कि अबा भरत, राम सान भ्रात, दशरथ राजा बेटा ।
राघब बिहीनु, कृश करि तनु, मुण्डे बहिछन्ति जटा ।। ६ ।।
एहांकु सम्बषि, जिबि मुहिँ खसि, नोहु मोर बिघ्न कर ।
एमन्त बिचारि, गगनु उत्तरि, मिळिला भुमिरे बीर ।। ७ ।।
देखिण त्वरित, आपणे भरत, पचारन्ति तुम्भे केहु ।
गगने बिक्रमि, जाउअछ भ्रमि, पक्ष बिना महाबाहु ।। ८ ।।
शुणि हनुमान, बोले हो सुमन, मुहिँ पबनर बाळ ।
सेबा करे निति, राम रघुपति, चरण कमळ तळ ।। ९ ।।
लंका अधिकारी, सीता नेला हरि, बाळि कि श्रीराम मारि ।
होइ सुग्री मेळ, बान्धि सिन्धु जळ, प्रबेश सुबळ गिरि ।। १० ।।

किया । पर्वत तो पक्षों से रहित है, फिर यह पर्वत आकाश में कैसे चल रहा है ! ३ ऐसा विचार कर वीर भरत द्वारा धनुष पर चढ़ाकर बाण छोड़ने पर शंकित होकर आकाश में स्थित वायुनन्दन ने विचार किया । ४ मुझे विलम्ब लगाते देखकर मन से क्रुद्ध हुए यह निश्चय ही श्रीराम हैं । मुझे अन्तर में ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह कोदण्ड पर बाण चढ़ाकर वाट देख रहे हैं । ५ अथवा यह राम के छोटे भाई महाराज दशरथ के पुत्र भरत है जो श्रीराम के वियोग में अपने शरीर को दुर्बल करके सिर पर जटाओं का भार वहन कर रहे हैं । ६ इनके साथ भेंट करने के लिए मैं नीचे उतर पड़ूँ जिससे मुझे कोई विघ्न न हो । ऐसा विचार कर पराक्रमी हनुमान आकाश से उतरकर पृथ्वी पर आ गये । ७ उन्हें देखकर भरत ने स्वयं पूछा, हे महाबाहु ! आप कौन हैं और विना पंख के आकाश में भ्रमण करते हुए चले जा रहे हैं । ८ हनुमान ने कहा कि हे महाशय ! मैं पवन का पुत्र हूँ और नित्य राघवेन्द्र श्रीराम के चरण-कमलों की सेवा करता रहता हूँ । ९ लंका के अधिपति रावण ने सीता का हरण कर लिया है । श्रीराम ने बालि को मारकर सुग्रीव से मित्रता की और वह समुद्र में सेतु बनाकर सुबेल

नागपाश ब्रह्मशर आदि दिनु अनेक कलु समर।
राबण तनुज, नाशिले अनुज, श्रीराम लक्ष्मण बीर ॥ ११ ॥
घेनि पुत्र शोक लंकार नायक शकति माइला सचे।
देइ पंच प्राण, पड़िछि लक्ष्मण, निरक्ष पराये मंचे ॥ १२ ॥
अउषधि पाइँ, सेहि घेनि मुहिँ मिळिलि गन्धमादन।
होइ बिभाषित, कह कि ना सुत, अट तुम्भे केउँ जन । १३ ॥
शुणिण भरत, बोइले शुण त, मुहिँ रामचन्द्र भाइ।
दशरथ सुत, जगते बिदित, कैकेयी मोहर भाई ॥ १४ ॥
संसारे थाइ कि, ए कष्ट भाइकि, बिहिला मोर दइब।
देहे पंच प्राण, थिले केहि पुण, ए दुःख सहि रहिब ॥ १५ ॥
कपि सुधानिधि, निअ अउषधि, जिउ मोहर सानुज।
रावणकु मारि, बेगे चापधारी, आसिण करन्तु राज्य ॥ १६ ॥
शुणि ए उत्तर, मरुतकुमर, दक्षिण मूरति होइ।
महारण रंका, प्रबेश से लंका, पाखरे निःशंका होइ ॥ १७ ॥
जाणि रघुशिष, होइण संतोष, बोइले अइलु बाबु।
जूथपति बृन्द, लभिण आनन्द, बोइले तु कलु सबु। १८ ॥

पर्वत पर पहुँच गये है। १० नागपाश, ब्रह्मशर आदि अस्त्रों से अनेक दिनों से युद्ध चल रहा है। श्रीराम और लक्ष्मण ने रावण के भाई तथा पुत्रों का वध कर दिया। ११ पुत्र के शोक से दुःखी होकर लंका के स्वामी ने खींचकर शक्ति मारी जिससे पंचप्राण विसर्जित करके लक्ष्मण मृत के समान पड़े हैं। १२ हम गन्धमादन पर औषध लेने आये थे, उसे ही लिये जा रहे हैं। ऐसा कहकर उन्होंने कहा कि आप सच-सच बतायें कि आप कौन हैं ? १३ यह सुनकर भरत बोले, मैं श्रीराम का भाई, दशरथ का पुत्र हूँ। संसार में प्रसिद्ध कैकेयी मेरी माता है। १४ संसार में रहकर क्या लाभ, जबकि भाई को इस प्रकार का कष्ट मिला। मेरे भाग्य में यही था। शरीर में प्राणों के रहते हुए क्या कोई इस दुःख को सहन करके रह सकता है। १५ हे कपिसुधानिधि ! आप औषध ले जाएँ जिससे मेरा भाई जीवित हो जाए और रावण को मारकर कोदण्डधारी राम शीघ्र ही आकर राज्य करें। १६ यह सुनकर पवनपुत्र दक्षिण दिशा की ओर चल दिये और महान संग्राम के प्रेमी लंका के निकट निश्शंक भाव से जा पहुँचे। १७ रघुनन्दन श्रीराम यह जानकर प्रसन्नतापूर्वक बोले, अरे वत्स ! आ गये। यूथपतियों ने

शुणि भणे हनु, एमन्त बचनु, दोष करिछि एतेक ।
औषधि न चिह्नि, गिरि मुरधनी, आणिलि मोर मस्तक ॥ १९ ॥
शुणि सुख पाइ पर्वत ओल्हाइ, रखिले बानरगण ।
धन्वन्तरींकर, खोजिले कुमर, औषधि तहिँ सुषेण ॥ २० ॥
अउषधि चिह्नि, पत्र तहुँ आणि, शिळारे छेचिले नेइ ।
आणिण अनिळ, क्षीरसिन्धु जळ, गुड़ाए तहिँ मिशाइ ॥ २१ ॥
घेनिण बइद्य, लक्ष्मण सन्निध्य, बेनि नासा पुड़ा तोळि ।
देले दिव्य नाश, झड़िला से श्वास, मुदि देला हृदस्थळि ॥ २२ ॥
भाइ कोळु उठि, कर दुइ गोटि, जोड़ि कले नमस्कार ।
देखि जये जये, करन्ति कपिए, आनन्दे उठिले बीर ॥ २३ ॥
ए अन्ते तत्क्षणे, आज्ञा परमाणे हनुमन्त नेला गिरि ।
शून्ये दैत्य मारि, गिरि रखि करि, आसि हेला लंकापुरी ॥ २४ ॥
भणे दीन बिशि, एहि रसे रसि, दिन राति मोर जाउ ।
रावण अराति, चरणे पीरति, प्रतिक्षणे मोर थाउ ॥ २५ ॥

आनन्दित होकर कहा कि आपने सब कुछ कर दिया। १८ यह सुनकर हनुमान ने कहा, मैंने इतना ही दोष किया है कि औषध न पहचानकर पर्वत-शिखर अपने मस्तक पर धरकर ले आया। १९ यह सुनकर वानर-दल ने पहाड़ को उतराकर रख दिया और धन्वन्तरि के पुत्र सुषेण ने वहाँ औषध की खोज की। २० औषध पहचानकर उसके पत्ते लाकर शिला से पीस दिये। फिर अनिल का लाया हुआ क्षीरसागर का जल उसमें मिला दिया गया। २१ फिर वैद्य उसे लेकर लक्ष्मण के पास आये और उन्होंने नाक के दोनों नथुने उठाकर उनमें दिव्य नास दिया (सुँघाया)। जिससे उनकी चेतना लौट आयी और वक्षस्थल का घाव भर गया। २२ भाई की गोद से उठकर दोनों हाथ जोड़कर उन्होंने नमस्कार किया। यह देखकर सभी वानरगणों ने आनन्दपूर्वक वीर लक्ष्मण को उठा देखकर जयकार किया। २३ इसके अनन्तर उसी क्षण आज्ञानुसार हनुमान ने पहाड़ उठाया और आकाश में राक्षसों को मारकर पर्वत रखकर फिर लंकापुरी लौट आये। २४ दीन बिशि कह रहा है कि इस चरित्र में रमकर मेरा दिन और रात्रि व्यतीत होता रहे। और रावण के शत्रु श्रीराम के चरणों में प्रतिक्षण मेरी प्रीति बनी रहे। २५

पञ्चषष्टितम छान्द

राग–दक्षिण कामोदी

राम आज्ञा देले बिभीषणे चाहिँ।
कह लंकपति हे रावण काहिँ॥ १ ॥
शुणि बिभीषण कहे जोड़ि कर।
शुण देब जहिँ अछि दशशिर॥ २ ॥
शकति मारि मने बिचार कला।
शुक्रंक पाशकु अति बेगे गला॥ ३ ॥
चरणे पड़ि अति आकुळ होइ।
बिश कर जोड़ि जुद्ध कथा कहि॥ ४ ॥
शुणि भृगुसुत तारे दया कले।
सर्ब जय मंत्र उपदेश देले॥ ५ ॥
बोलन्ति ए मंत्र घेनि होम कर।
बाहार होइब तहुँ रहुबर॥ ६ ॥
से रथे बसिण जाइ कर रण।
न जिणिबे राम हेले नारायण॥ ७ ॥
शुणि से आनन्द मने बेगे आसि।
होम करुअछि से मंत्ररे बसि॥ ८ ॥

छान्द—६५

राग–दक्षिण कामोदी

राम ने विभीषण को देखकर कहा कि हे लंकपति! बताओ रावण कहाँ है? १ विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव! रावण जहाँ पर है उसे आप सुनें। २ शक्ति मारकर उसने मन में विचार किया और शीघ्रता से शुक्राचार्य के पास जा पहुँचा। ३ उसने व्याकुल होकर उनके चरणों में गिरकर बीसों हाथ जोड़ लिये और युद्ध के समाचार बताये। ४ यह सुनकर भृगु के पुत्र शुक्राचार्य ने उस पर दया करके सर्बजयमंत्र का उपदेश दिया। ५ उन्होंने कहा कि इस मंत्र के साथ हवन करो। उससे एक श्रेष्ठ रथ निकलेगा। ६ उस रथ पर बैठकर युद्ध करने से राम नहीं जीत पायेंगे, चाहे वह नारायण ही क्यों न हों। ७ यह सुनकर प्रसन्न मन से आकर वह बैठा हुआ उसी मंत्र से हवन कर रहा है। ८ मेरा मंत्री उसी के साथ था। उसी ने यह

मोर मंत्री तार संगतरे थिले ।
ए सर्ब बृत्तान्त जाणि से कहिले ॥ ९ ॥
सम्पूर्ण होइले होम हेब मन्द ।
मारि न पारिबा आउ दशकन्ध ॥ १० ॥
जेउँ परि बिघ्न हेब ताहा कर ।
शुणि राम डकाइले हनुबीर ॥ ११ ॥
महीन्द्र दृबिन्द नळ नीळ चाहिँ ।
अंगद जाम्बबंकुहिँ आज्ञा देइ ॥ १२ ॥
बोइले बहन तुम्भे लंके पश ।
होम करुछि राबण कर नाश ॥ १३ ॥
राम आज्ञा पाइ शिरे कर देइ ।
लंका गड़े पशिले पाचेरी डेइँ ॥ १४ ॥
खोजि न पारन्ते लंका सर्बस्थान ।
जेउँ ठारे होम करे दशानन ॥ १५ ॥
त्रिजटाकु हनु जाइ पचारिले ।
जाइ होमस्थान से देखाइ देले ॥ १६ ॥
मंत्र तेजे ता पाशे न पारे पशि ।
बिस्मय होइले हनु भणे बिशि ॥ १७ ॥

सारा वृत्तांत जानकर बताया है । ९ यज्ञ के पूर्ण होने पर अच्छा नहीं होगा और फिर रावण को नहीं मार पायेंगे । १० जैसे भी उसमें विघ्न पड़ जाए वही कीजिए । यह सुनकर श्रीराम ने महावीर हनुमान को बुलाया । ११ उन्होंने महीन्द्र, द्विविद, नल, नील, अंगद तथा जामवन्त की ओर देखते हुए आज्ञा देते हुए कहा कि तुम लोग शीघ्र ही लंका में घुसकर रावण द्वारा की जा रही यज्ञ को विध्वंस कर दो । १२-१३ श्रीराम की आज्ञा पाकर हाथों को शिर से लगाकर चहारदीवारी फाँदकर वह सब लंका में घुस गये । १४ सम्पूर्ण लंका खोज लेने पर भी उन्हें वह स्थान नहीं मिला, जहाँ रावण यज्ञ कर रहा था । १५ हनुमान ने जाकर त्रिजटा से पूछा । उसने जाकर यज्ञ का स्थान दिखा दिया । १६ विशि कहता है कि मंत्र के तेज के कारण वह उसके समीप जा नहीं पाये । इससे हनुमान को बड़ा आश्चर्य हुआ । १७

षट्षष्टितम छान्द

राग—दक्षिण कामोदी

रावणकु हनु देखि क्रोध बहि ।
रावण अन्त:पुरे पशिले जाइ ।। १ ।।
मन्दोदरी केश धरि घेनि आसि ।
रावण आगे रखि बचन भाषि ।। २ ।।
बोइले पामर आरे देख देख ।
ए तोहर मन्दोदरी राणी दु:ख ।। ३ ।।
राम न थिले सीता आणिलु तुहि ।
आम्भे मन्दोदरी नेबुँ तोते कहि ।। ४ ।।
सीतांक संगरे अजोध्याकु जिब ।
दासी होइ चरणरे खटिथिब ।। ५ ।।
आउ जेते राणी छन्ति अन्त:पुर ।
कपिकि बाण्टिण देबे रघुबीर । ६ ।।
पारिले तु कि करिबु आसि कर ।
बोलाउ परा बीरंक परे बीर ।। ७ ।।
मन्दोदरी रोदन हनुर बाणी ।
होम छाड़ि अनाइला बिंशपाणि ।। ८ ।।

छान्द—६६

राग—दक्षिण कामोदी

रावण को देखकर हनुमान कुपित होकर उसके अन्त:पुर में जा पहुँचे । १ मन्दोदरी के केश पकड़कर उसे खींचकर रावण के आगे लाकर कहने लगे । २ अरे नीच ! अपनी रानी मन्दोदरी के दु:ख को आकर देख । ३ राम के न रहने पर तू सीता को ले आया । हम तुझे बताकर मन्दोदरी को ले जाएँगे । ४ वह सीता के साथ अयोध्या जाएगी और दासी बनकर चरणों की सेवा करेगी । ५ अन्त:पुर में और भी जितनी रानियाँ हैं, उन्हें श्रीरघुवीर कपियों में बाँट देंगे । ६ तुम वीरों के भी वीर कहे जाते हो जो कुछ कर सकते हो आकर करो । ७ मन्दोदरी का रुदन और हनुमान की वाणी सुनकर बीस भुजाओं वाला रावण हवन छोड़कर ताकने लगा । ८ उसने पवन-

देखिला मन्दोदरी राणीर केश ।
बाम करे धरिछि पवन शिष्य ।। ९ ।।
क्रोध होइ कररे खड़ग धरि ।
होम छाड़ि धाईंला हनुकु मारि ।। १० ।।
मंत्र तेजे हनु रहि न पारिले ।
मन्दोदरी केश छाड़ि पळाइले ।। ११ ।।
रावण जिबा देखि अंगद बीर ।
होम स्थानु श्रूब श्रुच नेले तार ।। १२ ।।
नळ नीळ अर्घस्थाळी घेनि गले ।
मळ मूत्र अग्निकुण्डे पूर्ण कले ।। १३ ।।
महीन्द्र द्विबिन्द दुहें धाइँ जाइँ ।
होम घृतमान सबु देले पिइ ।। १४ ।।
अग्निकुण्ड भांगि होम करि नाश ।
राम आगे कहिले पवन शिष्य ।। १५ ।।
मन्दोदरी कर धरि दशशिर ।
प्रबोध करिण नेला अन्त:पुर ।। १६ ।।
पूर्बजन्म कथामान ताकु कहि ।
जुद्धकु बाहार हेला सैन्हा लाइ ।। १७ ।।

कुमार को बायें हाथ से महारानी मन्दोदरी के केश पकड़े हुए देखा। ९ कुपित होकर हाथ में खड्ग धारण करके हवन छोड़कर वह हनुमान को मारने के लिए दौड़ा। १० मन्त्र के प्रखर तेज के कारण हनुमान ठहर न सके। वह मन्दोदरी के केश छोड़कर भाग गये। ११ रावण को गया हुआ देखकर पराक्रमी अंगद ने यज्ञस्थल से उसके स्रुवा तथा पवित्री को ले लिया। १२ अर्घ्य की थाली नल-नील ले गये और अग्निकुण्ड को मल-मूत्र से भर दिया। १३ महीन्द्र और द्विविद दोनों ने जाकर हवन के घृत आदि वस्तुओं को पी लिया। १४ अग्निकुण्ड को तोड़कर यज्ञ विध्वंस करके पवनपुत्र हनुमान ने श्रीराम के समक्ष जाकर सब कुछ कह दिया। १५ दशानन मन्दोदरी का हाथ पकड़कर उसे प्रबोधित करते हुए अन्त:पुर ले गया। १६ पूर्वजन्म की बातें उससे बताकर वह सेना लेकर युद्ध के

धनु धरि पुष्पक बिमानरे बसि ।
जुद्धभूमिकि अइला भणे बिशि ।। १८ ।।

सप्तषष्टितम छान्द—राम-रावण जुद्ध

राग–पञ्चम बराड़ि

मने करि गरुतम साजि रथ तुरंगम मिळिला
से जहिँ थिले राम । एमन्त समये राम रावणर
धरि नाम आस आस कर तु सग्रामरे । दशशिर ।
शुणिण श्रीराम उत्तर । शुकंकु कहे सत्वर ।
बाहा मोर रहुबर रामर पाशे नेइण कर ।। १ ।।
बिन्धिले बिषम बाण छेदिला ताहा रावण
प्रति शरमानकु करिण । पुणि राम बिन्धे बाण
काटिला ताहा रावण प्रतिबाण मानंकु मारिण से ।
रघुबीर । बेळुँ बेळ बढ़िला जे तेज । कि अबा
प्रळयानळ दहिब भूमिमण्डळ सेहि रूपे दिशे रामराज ।। २ ।।
आकाशे शचीरमण घेनिण अमरगण देखन्ति बेनि
जनंक रण । मातळिकि चाहिँ पुण बोलन्ति से

लिए निकल पड़ा । १७ विशि कहता है कि वह धनुष धारण करके पुष्पक विमान पर बैठकर युद्धभूमि में आ गया । १८

छान्द ६७—राम-रावण-युद्ध

राग–पंचम बरार

मन में अत्यन्त क्रुद्ध होकर रथ और घोड़े सजाकर जहाँ राम थे वह वही आ पहुँचा । इसी समय श्रीराम ने रावण का नाम लेकर कहा कि तू आकर युद्ध कर । श्रीराम के वचनों को सुनकर दशशिर रावण ने शुक से कहा कि तुम शीघ्र ही मेरे रथ को राम के पास ले चलो । १ विषम बाणों को छोड़ने पर रावण ने उन्हें प्रतिशर से काट दिया । राम ने पुन बाण छोड़े, जिन्हें रावण ने बाणों से पुनः काट दिया । रघुवीर राम का तेज धीरे-धीरे बढ़ने लगा । राजा राम इस प्रकार दिखाई दे रहे थे जैसे प्रलयकालीन अग्नि भूमण्डल पर व्याप्त हो गई हो । २ आकाश से देवताओं के साथ शचीपति इन्द्र दोनों जनों का युद्ध देख रहे थे । देवराज इन्द्र ने मातलि की ओर

सुरराण आम्भ रथकु साजिण आण हे। मातळि।
श्रीरामंकु मोर रथ दिअ। रथे बिजय कराअ
आपणे सारथि हुअ मरु बेगे बिश्रबार पुअ ॥ ३ ॥
शुणि से शक्र बचन तक्षणे मण्डिले जान भूमिकि से
अइले बहन। श्रीराम सन्निधे जान करि पढ़े स्तब
मान सुरपति देले एहि जान हे। रघुबीर।
एहि रहुबरे बिजे कर। भूमिरे उभा आपण
रथरे अछि राबण ए कथा नुहइटि निकर ॥ ४ ॥
शुणि मातळि बचन प्रदक्षिण करि जान नमस्कार
कले जे बहन। रघुकुळर नन्दन तक्षणे आरोहि जान
मातळिकि भाषिले बचन हे। मातळि।
साबधान होइणटि थिब। बिचारि रथ बाहिब
राबण सम्मुखे थिब उभयंक संग्राम देखिब ॥ ५ ॥
रथरे बहुत अस्त्र देइछन्ति सस्रनेत्र धनुर्गदा कुन्त जे
कुठार। शकति परिघ शर शूळ आदि असिबर
नानाबिध आयुध से। रघुबीर। देखि बहुत
आनन्द हेले। बहुत शर सन्धिले बहुत शर
छेदिले बहु थर से संग्राम कले ॥ ६ ॥

देखकर कहा कि हमारा रथ सजाकर ले आओ। हे मातलि! श्रीराम को हमारा रथ प्रदान करो। उसमें उन्हें बिठाकर स्वयं सारथी बनो, जिससे शीघ्र ही विश्रवानन्दन रावण मृत्यु को प्राप्त हो। ३ इन्द्र के वचनों को सुनकर उसी समय यान सजाकर शीघ्र ही वह पृथ्वी पर आ गये। यान को श्रीराम के समक्ष रखकर उन्होंने स्तुति करके कहा कि इसे इन्द्र ने भेजा है। हे रघुबीर! आप इस श्रेष्ठ रथ पर विराजमान हों। आप भूमि पर खड़े हैं और रावण रथ पर है। यह बात उपयुक्त नहीं है। ४ मातलि के वचन सुनकर श्रीराम ने शीघ्र ही यान की प्रदक्षिणा करके नमस्कार किया और फिर रघुनन्दन श्रीराम ने उसी समय रथारोहण करके मातलि से कहा, हे मातलि! तुम सावधान रहना, विचारपूर्वक रथ चलाना और रावण के समक्ष रहकर दोनों का युद्ध देखना। ५ सहस्रलोचन इन्द्र ने रथ में धनुष, गदा, भाला, कुठार, शक्ति, परिघ, शर, शूल, श्रेष्ठ तलवारें आदि नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये थे जिन्हें देखकर रघुवीर श्रीराम अत्यधिक प्रसन्न

असुर अस्त्र रावण प्रहारन्ते सेहिक्षण सर्प शार्दूळ
आदि जे जीब । सहस्र सहस्र होइ आसन्ति
खाइबा पाइँ दूरुँ ताहा देखिण राघब । सेमानकु ।
अग्निशर प्रयोगकु कले । पोड़िण समस्ते मले बेनिकुळ
देखुथिले साधु साधु त अमर कले से ।। ७ ।।
पुणिहिँ पन्नग अस्त्र पेषिला पढ़िण मंत्र सर्पमाने
उड़िण अइले । श्रीराम गरुड़ अस्त्र पेषन्ते केबळ मात्र
पळाइ से सिन्धुरे पड़िले जे । से राबण । पुणिहिं
बिन्धिला रुद्र अस्त्र । राम कले प्रति शस्त्र बिन्धिले
कुबेर अस्त्र बेनि अस्त्र जुझन्ति से मात्र ।। ८ ।।
होइण अनळ जात से बेनि हेला निपात राबण जे
क्रोध कला जात । बिन्धिलाक अग्निबाण जळ बाणे
सेहिक्षण निबारिले कौशल्या सुत जे । से राबण ।
पुणि बिन्धे परबत बाण । आसन्ते परबत बाण बज्र
बाणे रामबाण काटिलेक ताहा सेहि क्षण ।। ९ ।।
पुणि बिन्धे मेघअस्त्र श्रीराम बायव्यअस्त्र उड़ाइण
नेलाता बहन । देखि बीर दशानन क्रोध जात करि मन

हुए । उन्होंने बहुत से बाण छोड़े, बहुतों को काटा और कई बार युद्ध किया । ६ रावण द्वारा छोड़े गये असुर-अस्त्र हज़ारों की संख्या में सर्प, शार्दूल आदि नाना प्रकार के जीव बनकर श्रीराम को खाने के लिए अपनी ओर आते हुए दूर से देखकर राघव श्रीराम ने अग्निबाण का प्रयोग करके सबको जलाकर मार डाला । दोनों दल इसे देख रहे थे । देवतागण यह देखकर "धन्य है", "धन्य है" करने लगे । ७ फिर रावण ने मंत्र पढ़कर पन्नगास्त्र छोड़ा । सर्पों के समूह उड़कर आने लगे । श्रीराम द्वारा गरुड़ास्त्र के प्रयोग मात्र से वह सब जाकर समुद्र में गिर पड़े । तब उस रावण ने रुद्रास्त्र का प्रयोग किया । श्रीराम ने कुबेरास्त्र छोड़ा । दोनों अस्त्रों के आपस में टकराने से आग उत्पन्न हुई और दोनों ही अस्त्र नष्ट हो गये । तब रावण ने क्रुद्ध होकर अग्निबाण छोड़ा जिसे कौशल्यानन्दन श्रीराम ने वरुणास्त्र से शान्त कर दिया । फिर रावण ने पर्वतास्त्र से प्रहार किया । उस पर्वतास्त्र के आते ही श्रीराम ने वज्र-बाण से उन्हें नष्ट कर दिया । ८-९ तब उसने मेघबाण छोड़ा । श्रीराम का वायव्यास्त्र उन्हें शीघ्र ही उड़ा ले गया ।

पुणि काण्डे कलाक सन्धान जे। से रावण। चाहिँ
दशरथंक नन्दन। अवयव छिद्रटाण शर
बिन्धे घन घन श्रीअंगरु रुधिर पतन ॥ १० ॥
देखि राम क्रोध मन वाछि दिव्य शर मान, कोदण्डरे
नेइण सन्धिले। रावणावयव चाहिँ मर्मस्थानकु
देखाइ घन घन शर कु बिन्धिले जे। से राघव।
शरे तार अंगकु छाइले। झिंक पक्षी प्राय दिशे
अंजन गिरि रे कि से बहु काश पुष्प बिकाशिले ॥ ११ ॥
बाजिण श्रीरामशर रुधिरे से जरजर होइण जे
होइला अज्ञान। रावणर मोह देखि सारथि रथरे
रखि आड़ करिण से नेला जान जे। से रावण।
सेहि क्षणि पाइलाक ज्ञान। किम्पा समर मुञ्चिलु
शत्रु मुखरु घुञ्चिलु सारथिकि बोले ए बचन ॥ १२ ॥
किबा राम देले लाञ्च किबा बिभीषण पाञ्च किबा
मोह ठारे तोर क्रोध। पराण नाहिँ बिचार जाणिलि
मुँ निश्चे तोर एहि क्षणि करिबइँ बध जे।

यह देखकर पराक्रमी दशानन मन में कुपित होकर बाणों की वर्षा की। उसने दशरथनन्दन की ओर लक्ष्य करके सनसना कर तीक्ष्ण बाण छोड़े जिससे श्रीराम के अंग से रक्तस्राव होने लगा। १० यह देखकर श्रीराम ने कुपित होकर चुने हुए बाण कोदण्ड पर चढ़ाकर छोड़े। उन्होंने रावण की ओर देखकर उसके मर्म स्थानों पर बाणों से आघात करके उसके शरीर को छलनी कर दिया। वह झिंक पक्षी की भाँति दिखाई दे रहा था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे अंजन के पर्वत पर अनेकानेक काश के फूल खिल गये हों। ११ श्रीराम के बाण के लग जाने से रावण रक्त से लथपथ होकर मूर्च्छित हो गया। यह देखकर उसका सारथी रथ को आड में ले गया। उसी समय उसे चेत आ गया। वह सारथी से कहने लगा कि तूने समर क्यों छुडा दिया? शत्रु के सामने पीठ क्यों दिखा दी? १२ क्या राम ने तुझे घूस दे दी? या विभीषण के परामर्श से तूने यह किया? अथवा मेरे प्रति तेरा क्रोध था? मैं जान गया कि तुझे प्राणों का मोह नहीं है। इसी समय मैं तेरा वध कर दूंगा। अरे सारथी! तूने आज रण में पराजय करा दी।

रे सारथि । रणे कराइलु तु अजय । कि बोलिबे
दिगपाळ देख तार प्रतिकूळ किम्पा मोते करिबेटि भय ।। १३ ।।
सारथि जोड़िण कर बोलइ कोप न कर तुम्भ स्नेहे
रथ मुँ आणिलि । सारथि स्वभाब एहि जोद्धांक रीति
जाणइ तुहि मोह हेबार जाणिलि । से दशानन ।
सारथिर बहुत जे गुण । हारिबा जिणिबा जाणे
बिषम समर रणे धिक हेउ से सारथि पण ।। १४ ।।
पुणि दशशिर तोष क्षमा कलि तोर दोष राम आगे
मोर रथ कर । आन हय मान आण जे करि पारिबे
रण जोच आणि रथरे सत्वर जे । रे सारथि । आम्भे
आज्ञा कले तु आणिबु । राम संगे अहर्निशि समर
करिबि बसि बिशि बोले गले तु जाणिबु ।। १५ ।।

अष्टषष्टितम छान्द—रावण बध

राग–बिचित्र कामोदी (पटताळ)

जोचि कृष्ण अश्वमान से । रथे चढ़ि दशानन ।
श्रीराम रथ सम्मुखे रथ करि शर बिन्धे घन घन ।।

अब दिग्पाल क्या कहेंगे ? उसका प्रतिकूल प्रभाव देखकर क्या वह मुझसे भय करेंगे ? १३ सारथी ने हाथ जोड़कर कहा कि आप क्रोधित न हों, मैं आपके स्नेह के कारण रथ ले आया था। यह तो सारथी का स्वभाव है। वह योद्धाओं की रीतियों को जानता है। मैंने आपको मूर्च्छित देखा ! हे दशानन ! सारथी में बहुत गुण होते हैं। वह विषम युद्ध में हारना-जीतना जानता है। जो नहीं जानता उसके सारथीपन को धिक्कार है। १४ फिर रावण ने सन्तुष्ट होकर कहा कि मैंने तेरे अपराध को क्षमा कर दिया। अब राम के समक्ष मेरा रथ ले चलो। अब शीघ्र ही दूसरे घोड़े लाकर रथ में जोत लो जो युद्ध कर सकें। विशि कहता है कि रावण ने कहा, हे सारथी ! अब मेरी आज्ञा पर ही तुम रथ को हटाना। मैं राम के साथ बैठकर रात-दिन युद्ध करूँगा। यदि तुम रथ को ले गये तो तुम्हीं समझ लेना। १५

छान्द ६८—रावण-वध

राग–विचित्र कामोदी (पड़ताल)

दशानन काले रंग के घोड़ों से जुते हुए रथ पर चढ़कर श्रीराम के

से जुझिला। राम भुजर प्रताप बुझिला।
श्रीरामर शर हृदे पड़ि ताळ बेळु बेळ ज्ञान हजिला ॥ १ ॥
बिन्धन्ते बिबिध बाण से परस्परे बेनि जण।
स्वर्गरु आसि आकाशरे रहिण देखन्ति अमरगण ॥
से मिशिले। महामेघ प्राय बेनि दिशिले।
सुतीक्ष्ण नाराज बिद्युत् सम तेज शर जळकि बरषिले ॥ २ ॥
कि ए बेनि मत्तगज से। चउदन्ते करे जुद्ध।
किबा बृकासुर संगरे समर करुछन्ति देबराज ॥
से पांचिले। बेनि जने बळ आंचिले।
शक्र कोदण्ड प्राय बेनि कोदण्ड बहु शर तहुँ मुंचिले ॥ ३ ॥
शरमान आत जात से। दिशइ नाहिं आदित्य।
रुधिरर नई निरन्तरे बहि कबन्ध करन्ति नृत्य ॥
से भुजरे। न दिशइ बिन्धिबार तेजरे।
केबळ मण्डळाकार प्राय धनु दिशइ कर सरोजरे ॥ ४ ॥
फुटिला पळाश संग जे। पादप कि बेनि अंग।
बेनि झिक कि से कि राम राबण करन्ति समर रंग ॥
से रसन्ति। एक आरकरे बेनि भाषन्ति।
अस्त्रमानंकर आसिबा जिबार केहि काहाकु न दिशन्ति ॥ ५ ॥

सामने रथ लगाकर घनघोर बाण-वर्षा करता हुआ जूझ गया। वह श्रीराम की भुजाओं के प्रताप को समझ गया, जब उनका बाण उसके हृदय में पड़ा और धीरे-धीरे उसका ज्ञान लोप होने लगा। १ दोनों ही व्यक्ति नाना प्रकार के बाणों का प्रहार कर रहे थे। स्वर्ग से आकर देवतागण आकाश से यह सब देख रहे थे। वह दोनों आपस में भिड़कर महान मेघों के समान दिखाई दे रहे थे। बिजली के समान प्रचण्ड तीक्ष्ण बाणों से मानों वह जल की वर्षा कर रहे थे। २ अथवा क्या वह दो मत्त गजराज चारों दाँतों को भिडाकर युद्ध कर रहे थे। अथवा वृकासुर के साथ देवराज इन्द्र युद्ध कर रहे हों। विचार करके दोनों ने ही बल का प्रदर्शन किया। इन्द्र के धनुष के समान दोनों धनुषों से उन्होंने नाना प्रकार के बाण छोड़े। ३ बाणों के आवागमन से सूर्य नहीं दिखाई देता था। रक्त की नदी में निरन्तर कबन्ध नाच रहे थे। उन भुजाओं से तीव्रता से बाण चलाने के कारण वह नहीं दिखाई देते थे। केवल कर-कमलों में मण्डलाकार धनुष ही दिखाई देता था। ४ लगता था कि दोनों के अगों में पलाश प्रस्फुटित हो गये हों। राम और रावण दोनों ही झिक पक्षी

कुम्भ सुत बेगे आसि से। राम कर्णे कहे हसि।
सूर्य्यङ्क हृदय उपदेश देले शुणि रामचन्द्र घोपि॥
ता पढ़िले। बेळुँ बेळ बहु तेज बढ़िले।
राबण अंग बेळुँ बेळ अवश अबयनुँ बळ छाड़िले॥ ६ ॥
सात रात्र सात दिन जे। जुद्ध कले अविच्छिन्न।
रुधिर बृष्टि आकाशरु होइला जात उतपातमान॥
से रणरे। महा शबद करन्ति गुणरे।
केहि काहाकु सान बड़ नुहन्ति महावीर वेनि जणरे॥ ७ ॥
बाछि राम दिव्य काण्ड जे। काटिले रावण मुण्ड।
से मुण्ड छिड़ि आउ मुण्डे बाहार होइण दिशिला पिण्ड॥
से हटिले। आउ मुण्डे आउ शरे काटिले।
पुणि तहिँ मुण्डे बाहार हुअन्ते पुणि आउ मुण्डे काटिले॥ ८ ॥
एणु होइ सात बार से। काटिले रावण शिर।
काटुथिले तार बेळुँ बेळ शिर कन्धरु होए बाहार॥
से चकिते। पचारन्ति मातळि कि गुपते।
मातळि बोइला ब्रह्मअस्त्रे बुकु फोड़िले मरिब त्वरिते॥ ९ ॥

के समान युद्ध कर रहे थे। वह एक-दूसरे से ललकारकर युद्धरत थे। अस्त्रों के आने-जाने से कोई किसी को देख नही पा रहा था। ५ कुम्भ-पुत्र ने शीघ्र ही आकर श्रीराम के कान में हँसते हुए "आदित्य हृदय" का उपदेश दिया, जिसे श्रीरामचन्द्र ने पाठ किया। धीरे-धीरे उनका तेज बढने लगा और रावण का शरीर धीरे-धीरे अशक्त होने लगा। अवयवों से बल घटने लगा। ६ सात दिन और सात रात तक निरन्तर युद्ध होता रहा। आकाश से रक्त की वर्षा होने लगी। अपशकुन दिखाई पड़ने लगे। युद्ध में प्रत्यञ्चा का घनघोर शब्द हो रहा था। कोई किसी से छोटा या बड़ा नही था। दोनों ही योद्धा महान पराक्रमी थे। ७ राम ने चुनकर एक दिव्य बाण से रावण का शिर काट दिया। वह मुण्ड कटने से पुन: धड़ से दूसरा सिर निकल आया। फिर उन्होंने दूसरे बाण से उसे काट दिया। फिर-फिर सिर के निकलने से श्रीराम उसे फिर से काट देते थे। ८ इस प्रकार उन्होंने सात बार रावण के शिर काटे। काटते ही बारम्बार उसके कन्धे से शिर निकल आता था। श्रीराम ने चकित होकर गुप्तरूप से मातलि से पूछा। मातलि ने कहा कि ब्रह्मास्त्र से हृदय को बेधने से यह शीघ्र ही मर जाएगा। ९ मातलि

शुणि मातळि उत्तर से। शरकु कले बाहार।
महा भयंकर अनळ आकार घटन बिधातंकर॥
से अस्त्ररे। अष्ट घण्टि अछि अष्ट हातरे।
पछरे मरुत मध्यरे आदित्य अग्नि अछि फळा भितरे॥ १०॥
से अस्त्र बसाइ गुणे से। कर्ण परिजन्ते आणे।
मंत्र पढ़ि छाड़ि दिअन्ते उपरे पड़ि नेला तार प्राणे॥
से पड़िले। धनु छाड़ि रथरु गड़िले।
रावण प्राण घेनि अस्त्र तत्क्षण राम तूणीकि बाहुड़िले॥ ११॥
सकळ देबता मिळि से। कले कुसुम अंजळि।
जय लक्षणरे अभिषेक प्राय दिशिला राम मउळि॥
से आकाशे। देबे दुन्दुभि बजान्ते हरषे।
बोले बिशि ऋक्ष कपिबळ हृष्ट डरि पळाइले राक्षसे॥ १२॥

एकोनसप्ततितम छान्द

राग–भैरबी (सरिमान)

रावण संहारि बीर दाशरथि रथु
ओह्लाइ भूमिरे उभा हेले।

का उत्तर सुनकर श्रीराम ने बाण निकाला। वह ब्रह्मा द्वारा निर्मित महाभयंकर अग्नि के आकार का था। उस आठ हाथ के अस्त्र में आठ गाँठें थीं। उसके पीछे मरुत, मध्य में सूर्य और फल के भीतर अग्नि का वास था। १० श्रीराम ने वह अस्त्र प्रत्यञ्चा पर चढ़ाकर कर्ण पर्यन्त तानकर मंत्र पढ़कर छोड़ा जिसके लगने से उसके प्राण निकल गये। वह धनुष छोड़कर रथ के नीचे गिर पड़ा। रावण के प्राण लेकर वह अस्त्र श्रीराम के तरकश में लौट आया। ११ समस्त देवताओं ने मिलकर कुसुमांजलि दी जो श्रीराम के शिर पर गिरकर जय-लक्षण के समान अभिषिक्त करती हुई दिखाई दे रही थी। आकाश में देवता प्रसन्नता से दुन्दुभि बजाने लगे। विशि कहता है कि रीछ और वानरों के हृदय प्रसन्नता से भर गये और असुर लोग भाग गये। १२

छान्द—६९

राग–भैरवी (सरिमान)

पराक्रमी दशरथनन्दन रावण का संहार करके रथ से उतरकर पृथ्वी

महा हृष्ट होइ सुग्रीबकु राइ बेनि
भुजे तांकु आलिंगन कले।
कि सखे हे, पड़ि अछि दशशिर।
तुम्भ साहा पाइ सिन्धु पार
होइ राबण माइलुँ ए जश तुम्भर ॥ १ ॥
राम स्नेह देखिण लक्ष्मण बीर
सुग्री पाद छुइँ शिरे देले कर।
सुग्रीब सकळ कपि सेना घेनि
पूजा कले राम बेनि श्रीपयर ॥ २ ॥
राबण मारिबा जाए उतपातमान
अबिच्छन्ने जात हेउ थिले।
मला बेळरु जे जाहा सदभावे
रहि भय तेजि निश्चिन्ते रहिले ॥ ३ ॥
मातळि कि आज्ञा देले रघुबीर
शक्रु सन्निधिकु निअ रहुबर।
आम्भे तुम्भंकु कि देइण शुझिबु
कल आम्भर बहुत उपकार ॥ ४ ॥
आज्ञा पाइण मातळि रहुबर
शीघ्र करि घेनि गला सुरपुर।

पर खड़े हो गये। उन्होने अत्यन्त प्रसन्न होकर सुग्रीव को बुलाकर दोनों भुजाओं से उनका आलिंगन किया तथा कहने लगे, हे मित्र ! दशानन पड़ा है। तुम्हारी सहायता पाकर समुद्र को पार करके रावण को मारने में यश तुम्हारा ही है। १ श्रीराम का प्रेम देखकर पराक्रमी लक्ष्मण ने सुग्रीव के चरण स्पर्श करके हाथ सिर से लगा लिये। सुग्रीव ने समस्त वानरों के साथ श्रीराम के युगल चरणों की पूजा की। २ रावण के मारने तक अपशकुन एवं उत्पात निरन्तर दिखाई देते रहे। मरने के समय वह सब अपने सद्भाव में भय को त्यागकर निश्चिन्त हो गये। ३ रघुवंश में श्रेष्ठ वीर श्रीराम ने मातलि को, रथ को इन्द्र के निकट ले जाने की आज्ञा दी। उन्होंने कहा कि तुमने हमारा बहुत उपकार किया है, जिसे मैं तुम्हें क्या देकर चुकाऊँगा। ४ आज्ञा पाकर मातलि शीघ्र ही रथ

बोले बिशि रामथाट कपिनाट
हृष्ट होइण करन्ति बनचर ।। ५ ।।

सप्ततितम छान्द—मन्दोदरी प्रभृतिक शोक

राग–चिन्ता देशाक्ष

राबणर अन्त:पुर द्वारे पळाइण
कहिले असुरे । राम संगे रण करिण
राबण प्राण हारि पड़िले
भूमिरे से । राजन ।। १ ।।
शुणि सकळ तरुणीगण । बहु उच्चरे
कले कारुण्य । मन्दोदरी संगे
समस्त जुबती अन्त:पुरु
बाहार होइले से । सुन्दरी ।। २ ।।
जुद्धभूमिरे प्रबेश हेले । पड़िअछि
राबण देखिले । हा हा नाथ बोलि
समस्त जुबती बेढ़ि बसिण
रोदन कले से । सुन्दरी ।। ३ ।।
देब राक्षसकुळ ईश्वर । त्रिभुबनरे
एकइ बीर । केउँ बीर हाते प्राण

को स्वर्ग ले गया। विशि कहता है कि श्रीराम की सेना के वानर-भालू प्रसन्न होकर नृत्य करने लगे । ५

छान्द ७०—मन्दोदरी आदि का शोक

राग–चिन्ता देशाक्ष

राक्षसों ने भागकर रावण के अन्त:पुर के द्वार पर कहा कि राम के साथ युद्ध करते हुए महाराज रावण पृथ्वी पर प्राण त्यागकर गिर पड़े हैं । १ यह सुनकर सभी स्त्रियाँ उच्च स्वर से करुण-क्रन्दन करने लगीं। मन्दोदरी के साथ सारी सुन्दर स्त्रियाँ अन्त:पुर से बाहर निकल पड़ीं । २ उन्होंने रणभूमि में पहुँचकर रावण को पड़े हुए देखा । सारी स्त्रियाँ रावण को घेरकर हा नाथ ! हा नाथ ! कहकर रुदन करने लगीं । ३ हे देव ! तुम राक्षस-वंश के ईश्वर थे । तीनों लोकों में तुम एक ही वीर

हराइण एबे शोइल
रण भूमिर। हे राजन ॥ ४ ॥
आम्भ मानंकु काहाकु देइ। तुम्भे
शोइल मउन होइ। चन्द्र तपन
आम्भंकु न देखन्ति एबे
कान्दिछुँ अनाथ होइ हे। राजन ॥ ५ ॥
गुण गुणि मन्दोदरी राणी।
बेनि नयनु बहइ पाणि।
बिकळ होइण बिळाप करइ उच्चे
मय दैत्यर दुलणी से। सुन्दरी ॥ ६ ॥
देब एबे मो अंक तेजिल।
आसि भूमिराणीकि भजिल।
काखे खट बोलि हंसुलि
लुळिकि मुञ्चि धूळिकि
सुख पाइल हे। राजन ॥ ७ ॥
मोते बसाइ पुष्पबिमान।
बुलु थाअ चउद भुबन।
जेउँ भुबने जेउँ द्रब्य अपूर्ब ताहा
देइ तोष मोर मन हे। राजन ॥ ८ ॥

थे। अब कौन से वीर के हाथों प्राण खोकर, हे राजन् ! तुम पृथ्वी पर सो रहे हो। ४ हम लोगों को इसे सौंपकर तुम मौन होकर पड़े हो। हे राजन् ! चन्द्र और सूर्य भी हम लोगों को नहीं देख पाते थे। इस समय हम सब अनाथ होकर क्रन्दन कर रही हैं। ५ रावण के गुणों का वर्णन करते हुए महारानी मन्दोदरी के दोनों नेत्रों से जल बह रहा था। मय दैत्य की सुन्दरी कन्या व्याकुल होकर ऊँचे स्वर में विलाप करने लगी। ६ हे देव ! आपने हमारी गोद को छोड़कर पृथ्वीदेवी से प्रेम किया है। रनिवास की शय्या तथा अंक की खाट को छोड़कर, हे राजन् ! इस धूल में तुम्हें क्या सुख मिल रहा है ? ७ मुझे पुष्पक विमान पर बैठाकर तुम चौदह भुवनों में घूमते रहते थे। हे राजन् ! जिस भुवन में जो भी अपूर्व वस्तु दिखाई पड़ती थी, वह देकर मेरे मन को संतुष्ट किया करते थे। ८ मैं तुम्हारी स्नेही प्रिया और महारानी थी। मेरी

तुम्भ स्नेही प्रिया मुहिँ राणी।
मोर बिकळ किपा न शुणि।
भूमि सपतणा अंकरे शोइण मोते
किपा कहु नाहिँ बाणी हे। राजन ॥ ९ ॥
सीता चोरी कल जेउँ दिन।
मुहिँ बिचारुथाइ मो मन।
राबण रामंकु बळिष्ठ देखन्ते तेणु
करि कलेटि ए सन हे। राजन ॥ १० ॥
जुद्धे मरन्ति नाहिँ कि बीर।
मरि कळंक हेला तुम्भर।
बोलिबे राबण सीता चोरी कला
तेणु माइलेटि रघुबीर हे। राजन ॥ ११ ॥
हित कहिले मणिल शल।
बिभीषणर न कल बोल।
त्रिजीबी हेबाकु बर पाइ थिल
सीता हरण किपाइँ कल हे। राजन ॥ १२ ॥
दोष अनुरूपे देले दण्ड।
तुम्भ प्राण नेला राम काण्ड।
आहे लंकनाथ आम्भंकु अनाथ करि
बसाइ गल ए दाण्ड हे। राजन ॥ १३ ॥

व्याकुलता को अब क्यों नहीं सुन रहे हो ? इस पृथ्वी-रूपी सौत के अंक में लेटकर, हे राजन् ! मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे ? ९ जिस दिन से आपने सीता का हरण किया था, उसी दिन से मैं अपने मन में सोचा करती थी कि रावण राम से बलिष्ठ है। परन्तु, हे राजन् ! देखते-देखते ऐसा हो गया। १० क्या युद्ध में वीर नहीं मरते ? परन्तु तुम्हारे मरने से कलंक लग गया। हे राजन् ! लोग कहेंगे कि रावण ने सीता चुरायी, इसीलिए राम ने उसे मार दिया। ११ हितकारी वचन कहने से आपने उन्हें शूल के समान समझा। आपने विभीषण का कहना नहीं माना। हे राजन् ! आपने भूत-भविष्य और वर्तमान में जीवित रहने का वर पाया था। फिर आपने सीता-हरण क्यों किया ? १२ श्रीराम के बाण ने तुम्हारे प्राण लेकर अपराध के अनुसार ही दण्ड दिया है। हे लंकेश ! तुम हमें अनाथ करके इस रास्ते में बैठाकर चले

तुम्भ तनु काण्डे अछि छाइ।
आलिंगन कुहिँ ठाब नाहिँ।
सकळ लोके देखुछन्ति आम्भंकु तुम्भे
कथा न कह कि पाइँ हे। राजन ॥ १४ ॥
शुणि मन्दोदरीर कारुण्य। शोके
शोकी होइ बिभीषण। भ्रातार
गुणमान गुणि रोदन उच्चे करइ
जे पुण पुण से। राजन ॥ १५ ॥
मोर हित बचन न कल।
क्रोधे बाहार करिण देल। भ्रात
पुत्र नाति ज्ञाति परिजन संगे
शमन भबन गल हे। राजन ॥ १६ ॥
एका रहिलि मुहिँ जीबिते। थिले
जाइ थान्ति बा संगते।
ऋक्ष बानर तुम्भर नारीगण
जूर करि लंकारु निअन्ते हे। राजन ॥ १७ ॥
बिभीषण करन्ते कारुण्य। शुणुथिले
ऋक्ष कपिगण। बोले बिशि राम
शुणिण ताहांकु बोले बहु
प्रबोध करिण से। श्रीराम ॥ १८ ॥

गये। १३ तुम्हारा शरीर वाणों से भरा पड़ा है। आलिंगन करने का स्थान भी नहीं है। हे राजन्! सभी लोग हमें देख रहे हैं। परन्तु तुम हमसे बात क्यों नहीं कर रहे हो? १४ मन्दोदरी का करुण-रुदन सुनकर विभीषण शोक से दुःखी होकर अपने भाई का गुणानुवाद करता हुआ बार-बार उच्च स्वर से रुदन करने लगा। १५ उसने कहा, हे राजन्! आपने मेरा कहना नहीं माना। हमें कुपित होकर बाहर निकाल दिया और आप भाई-पुत्र, जाति, जन तथा परिजन के साथ यमलोक चले गये। १६ मैं अकेला जीवित बच गया। आपके पास रहने पर मैं भी आपके साथ जाता। रीछ और वानरगण आपकी स्त्रियों को लूटकर लंका से ले जाते। १७ विभीषण को रुदन करते हुए रीछ और वानरगण सुन रहे थे। विशि कहता है कि श्रीराम ने यह सुनकर विभीषण को अनेक प्रकार से सान्त्वना दी। १८

एकसप्ततितम छान्द—बिभीषण अभिषेक

राग–कुम्भ कामोदी

राम आज्ञा देले बिभीषण तुम्भे संहर कारुण्य ।
दहन कर ए राबण पिण्डकु सन्तोष होइण ॥ १ ॥
राम आज्ञा शुणि जोड़ि बेनि पाणि कहे बिभीषण ।
दहन करिबाकु जोग्य नुहइ पापी ए राबण ॥ २ ॥
केबळ लोक बचनकु भो देब कलि मुँ कारुण्य ।
बोलिबे भाइ मराइण बिळाप न कला दारुण ॥ ३ ॥
शुणि श्रीराम संतोषे आज्ञा देले शुण लंकराण ।
तुम्भर ज्येष्ठ बड़कुळे जनम होइछि राबण ॥ ४ ॥
बहुत जागमान सेहि करिछि कर हे दहन ।
जीबन थिबा जाए ताठारे मोर थिला कोप मन ॥ ५ ॥
एमन्त श्रीमुखुँ शुणि बिभीषण गलाक बहन ।
दहन करिबा निमित्त अणाइ सेहि ज्ञाति जन ॥ ६ ॥
दोहरा मंदिरु अनळ अणाइ कलेक स्थापन ।
मंत्र पढ़ि गब्य घृतरे आहुति देलेक बहन ॥ ७ ॥

छान्द ७१ —विभीषण का अभिषेक

राग–कुम्भ कामोदी

राम ने विभीषण से कहा कि तुम अपने शोक को शान्त करो और प्रसन्नतापूर्वक रावण के मृत शरीर का दाह करो । १ राम की आज्ञा सुनकर विभीषण ने दोनों हाथ जोड़कर कहा कि यह पापी रावण दहन करने के योग्य नहीं है । २ हे देव ! केवल लोक-लाज के लिए मैंने शोक किया है नहीं तो लोग कहेंगे कि यह कैसा निष्ठुर है जिसने भाई को मरवाकर विलाप तक नहीं किया । ३ यह सुनकर श्रीराम ने सतुष्ट होकर कहा कि हे लंकेश्वर ! तुम्हारा बड़ा भाई रावण उच्च कुल में उत्पन्न हुआ था । इसने वहुत से यज्ञ किये हैं । अतः इसका दाह-संस्कार करो । जीवन-पर्यन्त उससे मेरा मन क्रुद्ध था । ४-५ इस प्रकार श्रीराम के श्रीमुख से सुनकर विभीषण शीघ्र ही दहन करने के लिए गया और उसने अपने जातिजनों को बुलवाया । ६ अग्निशाला से अग्नि मँगाकर स्थापना की गयी । मंत्र पढ़ने के लिये उसने ज्ञानी जनों को बुलवाया जिन्होंने मंत्र पढ़कर घृत की आहुतियाँ दीं । ७ दशग्रीव के शरीर

दशग्रीबकु से स्नान कराइण वास पिन्धाइले ।
बिबिध भूषण कुसुम चन्दन लागि कराइले ॥ ८ ॥
कटिरे उलूखळकु बान्धिण शकटरे लदिले ।
नाम धरि राइ सर्ब दिगपाळ मानंकु बन्दिले ॥ ९ ॥
चन्दन अगुरु कमळ काठरे अनळ लगाइ ।
राबण पिण्डकु तहिँर मध्यरे नेइण शुआइ ॥ १० ॥
गब्य घृतमान ढाळन्ते अनळ प्रचण्ड जळिला ।
क्षणक भितरे गिरि सम पिण्ड दहन होइला ॥ ११ ॥
बिभीषण सहितरे सर्ब नारी कलेक जे स्नान ।
समस्त नारींकि प्रबोधन करि नेलेक सदन ॥ १२ ॥
अन्तःपुरे छाड़ि बिभीषण राम छामुकु अइले ।
सुग्रीबंकु राइ जुद्धर प्रसंगमान कहुथिले ॥ १३ ॥
बिभीषणंकु खण्ड दूरु देखिण राइले पोखकु ।
लंकारे आउ राक्षस त नाहान्ति आम्भ बिनाशकु ॥ १४ ॥
एबे राबण सिंहासने बसिण अभिषेक हुअ ।
आउ अबा किस जणाइब ताहा एहि क्षणि कह ॥ १५ ॥
शुणि बिभीषण भुइँ छुइँ शिरे लगाइले कर ।
आउ किम जणाइबि अन्तर्यामी त्रैलोक्य ईश्वर ॥ १६ ॥

को स्नान कराकर कपड़े पहनाये गये और नाना प्रकार के भूषण और चन्दन लगाये गये । ८ उसकी कमर में मूसर को बांधकर उसे गाड़ी पर लाद दिया गया और सबके नाम ले-लेकर दिग्पालों को बुलाकर उनकी वन्दना की गई । ९ चन्दन, अगुरु और कमल की लकड़ियों में आग लगायी गयी और रावण के मृत शरीर को उसी के बीच लेकर लिटा दिया गया । १० गाय का घी डालने से अग्नि प्रचंडता से जलने लगी । एक क्षण में ही पर्वत के समान शरीर जल गया । ११ विभीषण के सहित सभी स्त्रियों ने स्नान किया और सभी स्त्रियों को सान्त्वना देते हुए वह घर ले गया । १२ उन्हें अंतःपुर में छोड़कर विभीषण श्रीराम के समीप आ गया । श्रीराम विभीषण को बुलाकर युद्ध के प्रसंगों पर चर्चा कर रहे थे । १३ विभीषण को थोड़ी दूर से देखकर उन्होंने अपने पास बुलाकर पूछा कि लंका में हमारे विनाश करने के लिए और राक्षस तो नहीं हैं । १४ अब रावण के सिंहासन पर बैठकर तुम अभिषिक्त हो । और अगर कुछ कहना है तो इसी समय कहो । १५ यह सुनकर विभीषण ने

राम आज्ञा देले लक्ष्मणंकु घेनि जाअ लंकेश्वर।
रावणर सिंहासने बसाइण अभिषेक कर ॥ १७ ॥
राम आज्ञा पाइ लक्ष्मण तत्क्षण बिभीषणे नेले।
रावण सिंहासने बिभीषणकु अभिषेक कले ॥ १८ ॥
समस्त पात्र अमात्य ताहांकर चरणे खटिले।
जेते असुरे पळाइ जाइथिले से माने भेटिले ॥ १९ ॥
लक्ष्मण ताहांकु अभिषेक करि बारता कहिले।
बोले बिशि राम लंका जय करि बिभीषणे देले ॥ २० ॥

द्विसप्ततितम छान्द

राग–काफि

श्रीराम आज्ञा देले हनुकु चाहिँ।
दशग्रीब बध बारता हे सीताकु कह जाइँ ॥ १ ॥
लंकपतिक मोर आज्ञा कहिब।
बारता देइछन्ति बोलिण हे अशोकबन जिब ॥ २ ॥
शुणि मारुति अति आनन्दे गले।
देखिण लंका द्वारी ओळगि जे पथ छाड़िण देले ॥ ३ ॥

पृथ्वी को छूकर हाथ सिर से लगा लिये और बोला कि आप तीनों लोकों के ईश्वर हैं, अन्तर्यामी हैं, और क्या कहूँ। १६ राम ने लक्ष्मण को लंकेश्वर विभीषण को ले जाकर रावण के सिंहासन पर बैठाकर अभिषेक करने की आज्ञा दी। १७ श्रीराम की आज्ञा पाकर उसी समय विभीषण को ले गये और रावण के सिंहासन पर बैठाकर उन्होंने उसका अभिषेक कर दिया। १८ सम्पूर्ण पात्र तथा मंत्री उनकी सेवा में लग गये। जो दैत्य भाग गये थे वह भी मिलने आ गये। १९ लक्ष्मण ने उनसे अभिषेक की बात बता दी। विधि कहता है कि श्रीराम ने लंका को जीतकर उसे विभीषण को समर्पित कर दिया। २०

छान्द—७२

राग–काफी

श्रीराम ने हनुमान की ओर देखकर कहा कि तुम जाकर सीता को दशानन के वध का समाचार दो। १ लंकापति से मेरी आज्ञा समझाकर कहना कि मैं उनके समाचार देने के लिए अशोक वन जाऊँगा। २ यह सुनकर मारुति अत्यन्त आनन्दपूर्वक गये। उन्हें देखकर लंका के

हनुकु देखिण सकळ असुर ।
जे जाहा अनुरूपरे मान्य हे तांकु कले अपार ।। ४ ।।
बिभीषण देखि आलिगन कले ।
राम आज्ञा देबार कहिण से अशोक बन गले ।। ५ ।।
देखिले बसिछन्ति भूमिकुमारी ।
बेढ़िण बसिछन्ति ताहांकु जे सहस्रेक असुरी ।। ६ ।।
दूररु देखि हनु प्रणाम कले ।
हनुकु देखि देबी संशय जे पाञ्चि मउन हेले ।। ७ ।।
हनु जणान्ति शुण जगतमात ।
श्रीराम नाराचरे राबण जे एबे होइला हत ।। ८ ।।
पेषिले तुम्भ पाशे राम गोसाइँ ।
आज्ञा देले बारता कहिब हे हनु सीतांकु जाइँ ।। ९ ।।
बिभीषणंकु कले लंके नृपति ।
आजहुँ गला दुष्कृति गो हुअ आनन्द मति ।। १० ।।
हनु मुखरु देबी एमन्त शुणि ।
आनन्द लभि मूक होइले जे मुखु नइला बाणी ।। ११ ।।
हनु जाणान्ति किपाँ हेले मउन ।
कि बोलि कि कहिबि छामुरे गो आज्ञा दिअ बहन ।। १२ ।।

द्वारपालों ने उन्हें प्रणाम करके मार्ग छोड़ दिया । ३ हनुमान को देखकर सभी राक्षसों ने अपने-अपने अनुसार उनका सम्मान किया । ४ विभीषण को देखकर उन्होंने आलिगन किया और श्रीराम की आज्ञा देने के लिए कहकर वह अशोक वन गये । ५ उन्होंने भूमितनया सीता को हज़ार राक्षसियों से घिरी हुई बैठे देखा । ६ हनुमान ने दूर से ही देखकर प्रणाम किया । हनुमान को देखकर देवी सीता शंकित होकर मौन हो गयी । ७ हनुमान ने कहा, हे जगत्‌जननी ! सुनिये । श्रीराम के वाण से अब रावण मर गया है । ८ प्रभु राम ने आपके पास भेजा है और हमें आपसे समाचार देने की आज्ञा दी है । ९ उन्होंने विभीषण को लंका का राजा बना दिया । आज से कष्ट समाप्त हो गये । आप प्रसन्न मन हो जायँ । १० हनुमान के मुख मे इस प्रकार सुनकर देवी आनन्द प्राप्त करके मौन हो गयीं । उनके मुख से वाणी नहीं निकल रही थी । ११ हनुमान ने कहा कि आप मौन क्यों हो गयीं ? आप हमें शीघ्र ही आज्ञा दें कि मैं श्रीराम के समक्ष क्या कहूँगा ? १२ देवी ने कहा कि मैं तुमसे

देबी बोलन्ति किस कहिबि तोते ।
बधाइ मुँ कि देबि महीरे हे किछि न दिसे मोते ।। १३ ।।
एणु करि संकोचे हेलि मउन ।
श्रीमुख दर्शनकु उत्सुक हे एबे हेउछि मन ।। १४ ।।
हनु बोलन्ति तुम्भ संतोष धन ।
पाइण आनन्द मुं होइलि गो थिबा जाए जीबन ।। १५ ।।
छामुरे मात्र मागुछि मुँ एते ।
ए असुरींकि बध करिबि गो आज्ञा दिअ मोते ।। १६ ।।
शुणिण ठाकुराणी हनु बचन ।
बोलन्ति एहांकर कि दोष हे एत सेबकी जन ।। १७ ।।
राजा जाहा बोलइ ताहा करन्ति ।
मोर सेबकी प्राय होइ त हे मोते जगिण थान्ति ।। १८ ।।
एमन्त शुणि हनु प्रणाम कले ।
मेलाणि होइ राम छामुकु जे शीघ्र होइ अइले ।। १९ ।।
दर्शन करि हनु कहे उदन्त ।
श्रीमुख दर्शनकु उत्सुक हे हेउ अछन्ति मात ।। २० ।।
शुणि श्रीराम हेले बहु हरष ।
पिइब ए दीन बिशि निरते हे राम रस पियूष ।। २१ ।।

क्या कहूँ ? मैं तुम्हें क्या बधाई दूँ ? इस पृथ्वी पर मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है । १३ इसी कारण से सकोचवश मैं मौन हो गई । इस समय मेरा मन श्रीराम के दर्शन के लिए उत्सुक हो रहा है । १४ हनुमान ने कहा कि आपकी संतुष्टि का धन पाकर मैं जीवन पर्यन्त के लिए आनन्दित हो गया । १५ आपसे मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि इन राक्षसियों का वध करने की आज्ञा मुझे प्रदान करें । १६ हनुमान के वचनों को सुनकर स्वामिनी सीता ने कहा कि यह तो दासियाँ हैं । इनका क्या दोष है ? १७ जो राजा कहता है, वही ये करती हैं । मेरी दासी के समान होकर मेरा पहरा देती रहती थीं । १८ यह सुनकर हनुमान ने प्रणाम किया और विदा लेकर श्रीराम के समक्ष शीघ्र ही आ पहुँचे । १९ हनुमान ने श्रीराम का दर्शन करके उन्हें समाचार दिया कि माता जानकी आपके श्रीमुख-दर्शन के लिए आतुर हो रही है । २० यह सुनकर श्रीराम को बहुत हर्ष हुआ । यह दीन विशि निरन्तर श्रीराम-चरित्र का अमृत पान करता रहता है । २१

त्रिसप्ततितम छान्द—राम सीताङ्क साक्षात

राग–कौशिक

महा सम्पदरे लंके बिभीषण राज अभिषेक होइले ।
बहुत भूषण आनन्द निमित्त जूथपतिंकि बाण्टि देले ।।
बहु जत्न रे । बुहाइ अमूल्य पदार्थ ।
श्रीराम छामुरे समस्त बाढ़िण मस्तके देले बेनि हात ।। १ ।।
देखि श्रीराम अंगीकार न करि भक्ष द्रब्यमान रखिले ।
बिभीषण मन आनन्द निमित्त जूथपतिमानंकु देले ।।
रत्न बसन । भूषण सहिते न नेले । सुग्रीब आदि ।
सेनापति मानंकु देबार उचित बोइले ।। २ ।।
असुर मानंकु बिनाशि एमाने तुम्भंकु लंकापुर देले ।
एमानंकु तुम्भे ए द्रब्य देइण सन्तोष कराअ बोइले ।।
लंका राजन । शुणिण श्रीराम बचन ।
सुग्रीब आदि सेनापति मानंकु देले भूषण बासमान ।। ३ ।।
सबुरि मन तोषिण लंकराण राम छामुरे उभा हेले ।
जनक सुतांकु सुबेश करिण छामुकु अणाअ बोइले ।।

छान्द ७३ —राम और सीता का मिलन

राग–कौशिक

महान उत्सव के साथ विभीषण का राज्याभिषेक हुआ । उन्होंने आनन्द से यूथपतियों को नाना प्रकार के आभूषण बाँट दिये । बहुत यत्न से अमूल्य पदार्थों को लदवाकर श्रीराम के समक्ष समर्पित करके उन्होंने अपने हाथ सिर में लगा लिये । १ यह देखकर श्रीराम ने उन्हें स्वीकार न करके केवल भक्ष्य पदार्थ ही रखे । विभीषण के मन को आनन्द देने के लिए यूथपतियों को श्रीराम ने रत्न और वस्त्र प्रदान किये । उन्होंने भूषण स्वीकार नहीं किये और बोले कि सुग्रीव आदि सेनापतियों को देना उचित है । २ असुरों का नाश करके इन लोगों ने तुम्हें लंकापुर प्रदान किया है । हे लंकेश ! यह द्रव्य इन लोगों को देकर इन्हें संतुष्ट करो । श्रीराम के वचनों को सुनकर विभीषण ने सुग्रीव आदि सेनापतियों को आभूषण और वस्त्र प्रदान किये । ३ सबका मन संतुष्ट करके लंका के राजा राम के समक्ष खड़े हो गये । श्रीराम ने कहा कि जनककुमारी को सुवेश करके हमारे समक्ष बुलवाओ । श्रीराम की आज्ञा

राम आज्ञारे। सत्वरे गले बिभीषण।
अमूल्य बसन भूषण घेनाइ मधुबन गले आपण ॥ ४ ॥
दूरु प्रणाम करिण सीतांकु त्रिजटाकु सबु कहिले।
सुबेश होइण दर्शन करिबे श्रीरामचन्द्र आज्ञा देले ॥
शुणि त्रिजटा। सीतांक छामुरे कहिले।
शुणिण देबी सीउकार न करि एहि रूपे जिबि बोइले ॥ ५ ॥
मणिमय दिव्य बिमाने बसाइ रहिले समस्त असुरी।
समस्त जनंकु आड़ कराइण आसन्ति परम सुन्दरी ॥
लोके धामन्ति। सीतांकु देखिबा निमन्ते।
बिभीषण जन निरोध करन्ति पटुआर करि अग्रते ॥ ६ ॥
लोकंकु निरोध करिबार नयने देखि रघुपति।
आज्ञा देले आम्भ छामुकु चालिण आसन्तु जनक दुहिती ॥
ऋक्ष कपिकु। कि पाइँ करुछ निरोध।
समस्ते देखन्तु ताहांक निमित्त जुद्धरे हेउ थिले बध ॥ ७ ॥
राम आज्ञा पाइ बिमानु ओल्हाइ छामुकु चालिण अइले।
श्रीमुखकु चाहिँ शिरे कर देइ हेठ बदने उभा हेले ॥

से विभीषण शीघ्र ही चले गये और स्वयं अमूल्य वस्त्र और आभूषण साथ लेकर मधुवन में जा पहुँचे। ४- दूर से ही प्रणाम करके उन्होंने सीता और त्रिजटा को सब कुछ बता दिया। श्रीरामचन्द्रजी ने सुवेश होकर दर्शन करने की आज्ञा दी है। यह सुनकर त्रिजटा ने सीता के समक्ष बताया, जिसे सुनकर देवी सीता ने उसे स्वीकार न करके उसी रूप में जाने के लिए कहा। ५ समस्त राक्षसियों ने उन्हें मणिमय सुन्दर विमान में बिठा दिया। समस्त लोगों से पर्दा कराकर परमसुन्दरी सीता आ रही थी। सीता का दर्शन करने के लिए लोग दौड़ रहे थे। विभीषण के लोग आगे-आगे छोटा घेरा बनाकर उन्हें रोक रहे थे। ६ रघुनायक ने लोगों का रोका जाना अपने नेत्रों से देखकर आज्ञा दी कि जनककुमारी हमारे सामने चलकर आये। रीछ और वानरों को किसलिए रोक रहे हो। सभी लोग उसे देखें। उन्हीं के निमित्त हुए युद्ध में इन लोगों ने प्राण त्यागे थे। ७ श्रीराम की आज्ञा पाकर सीता विमान से उतरकर सामने चलकर आ गई और श्रीमुख का दर्शन करके शिर से हाथों को लगाकर नतवदन

देखु अछन्ति। पटुआर करि सकळ।
बोले बिशि तांकु अनाइण शोक कले क्रोध हेला प्रबळ ॥ ८ ॥

चतुःसप्ततितम छान्द—सीतांक अग्नि परिक्षा

राग–राज बिजे मंगळ शोक बराड़ि

सीतांकु देखि रघुनन्दन। राम कहे निष्ठुर बचन। आगो
जानकी एबे जहिंकि इच्छा तहिंकि कर गमन गो ॥ सीते ॥ १ ॥
जन अपबादरु बंचिलुँ। एहा आपणामने पांचिलुँ। राबण
संहारि तुम्भंकु आणिलुँ जश महीरे रखिलुँ गो। सीते ॥ २ ॥
भरत शत्रुघ्न सुग्रीबर। आबरहिं सुमित्रा कुमर। शरधा
होइले एमानंकु तुम्भे स्वइच्छारे बरण कर गो। सीते ॥ ३ ॥
रघुकुळे आम्भे जेणु जात। तेणु निर्मळ हुए बिख्यात। तेड़े
कुळे तुम्भ निमित्त कळंक देबार नुहे उचित गो। सीते ॥ ४ ॥
कान्त मुखरु एमन्त शुणि। से जे जनकराज दुलणी। जणाइले
अन्य जुबती पराय मणिछ कि रघुमणि हे। देब ॥ ५ ॥
बाळ काळुँ धरि तुम्भ पाणि। भूमिसुता मुं निर्दोष प्राणी।
प्रभु होइ अनिमित्ते कोप कले किपाइँ थिबि धरणी हे। देब ॥ ६ ॥

होकर खड़ी हो गई। सभी जुलूस बनाकर उन्हें देख रहे थे। विशि कहता है कि उन्हें देखकर शोक करने से क्रोध और बढ़ गया। ८

छान्द ७४—सीता की अग्नि-परीक्षा

राग–विजय मंगल शोक बरार

सीता को देखकर रघुनन्दन श्रीराम ने कठोर वचन कहे। हे जानकी ! अब जहाँ तुम्हारी इच्छा हो वहाँ चली जाओ। १ लोकापवाद से बचाया, यही मैंने अपने मन में सोच लिया है। हे सीते ! रावण का संहार करके तुम्हें लाकर मैंने पृथ्वी पर यश की स्थापना की है। २ भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव तथा सुमित्रानन्दन लक्ष्मण से प्रेम होने पर तुम इन्हें स्व-इच्छा से वरण करो। ३ रघुकुल के प्रसिद्ध निर्मल वंश में हमारा जन्म हुआ है। हे सीते ! ऐसे कुल को तुम्हारे कारण कलक देना उचित नहीं है। ४ स्वामी के मुख से ऐसी बातें सुनकर जनकनन्दिनी ने कहा, हे रघुमणि ! हे देव ! क्या आप मुझे अन्य युवती के समान समझ रहे हैं ? ५ बाल्यकाल से ही मैंने आपका हाथ पकड़ा है। मैं भूमितनया निर्दोष प्राणी हूँ।

जेबे एमन्त बिचारि थिल । हनु मुखे बारता न देल । सेतु
बन्ध पोति असुर निपाति कषण एते सहिल हे । देब ॥ ७ ॥
मोर कायिक बाचिक मन । तुम्भ बिना थिब जेबे आन ।
तेबे मोर अंग दहन करिबे निश्चय हव्यबाहन हे । देब ॥ ८ ॥
सउमित्री मुख देबी चाहिँ । बाबु अनळ दिअ लगाइ । हव्य-
बाहन मोर तनु दहिब बिळम्ब कर कि पाइँ हे । बत्स ॥ ९ ॥
मोर आज्ञा बाबु बेगे कर । तुम्भे मनरे आन न धर ।
अनळ मो तनु दहन न कले अपबादु हेबि पार हे । बत्स ॥ १० ॥
राम इंगित लक्ष्मण जाणि । अग्नि लगाइले सेहि क्षणि ।
कोदण्ड हुळे बेनि पाणि देइण उभाछन्ति रघुमणि । देबी
कान्त प्रदक्षिण सारि । पुणि अग्नि प्रदक्षिण करि । अनळ
भितरे झसाइ पशिले हाहा कले त्रयपुरी से । काळे ॥ ११ ॥
अग्नि भितरे देबी रहिले । चाहुँ चाहुँ अदृश्य होइले । हव्य-
बाहन दिब्यासन देइण बहु पूजा तांकु कले हे । जने ॥ १२ ॥
राम होइण आतंक मन । नीर पूरिला बेनि नयन ।
चकित होइण दशदिग चाहिँ पुण हेले छन्न छन्न से । राम ॥ १३ ॥

हे देव ! नाथ होकर अकारण ही क्रोध करने से मैं पृथ्वी पर क्यों रहूँ । ६ यदि आपने ऐसा ही सोचा था तो हनुमान से कह क्यों नहीं दिया ? हे देव ! सेतुबन्ध बनाकर असुर का वध करके इतने कष्ट सहे । ७ मेरा मन, वचन और काया यदि आपको छोड़कर अन्य में लगा हो तो, हे देव ! हव्यवाहन (अग्नि) मेरे अंगों को निश्चित रूप से दहन कर दे । ८ देवी सीता ने सुमित्रानन्दन लक्ष्मण के मुख की ओर देखकर कहा, हे वत्स ! आग लगा दो । विलम्ब मत करो । अग्नि मेरे शरीर को दहन करे । ९ हे वत्स ! मेरी आज्ञा से तुम शीघ्रता करो । अपने मन में अन्यथा मत सोचो । हे वत्स ! मेरे शरीर को अग्नि से जला देने पर मैं अपवाद से पार हो जाऊँगी । १० श्रीराम का सकेत पाकर लक्ष्मण ने उसी समय अग्नि लगा दी । रघुमणि श्रीराम कोदण्ड के सिरे पर दोनों हाथ रखकर खड़े थे । देवी सीता स्वामी की परिक्रमा करने के बाद अग्नि की प्रदक्षिणा करके अग्नि के भीतर कूद पड़ी । उस समय तीनों लोक हाहाकार कर उठे । ११ अग्नि के भीतर देवी सीता देखते-देखते ही अदृश्य हो गई । हे सुजनो ! अग्निदेव ने दिव्य आसन प्रदान करके उनकी बहुत पूजा की । १२ श्रीराम का मन आतंकित हो गया । दोनों नेत्रों में जल भर आया । चकित होकर दसों

देब दानब ऋक्ष मर्कट। हाहा सबुरि मुखे प्रकट। बोलन्ति
श्रीराम कि कले कि कले बिना दोषे एड़े रुष्ट हे। राम ॥ १४ ॥
सर्बे होइले आकुळ मन। कहिबाकु के नाहिँ भाजन।
बोले बिशि राम अनुकूळ चाहिँ नेत्र कले थन थन से। राम ॥ १५ ॥

पञ्चसप्ततितम छान्द—रामचन्द्रंक सहित देबगणंक सम्भाष

राग—कनड़ा

शिब बिरंचि शक्र आदि समस्ते रहि आकाशे देखुथिले।
राम छामुकु बोलि से अइले। राम देखि धनु शर पाणि
कृत कर अंजळि होइले से श्रीराम। हसि बोलन्ति बिरंचि।
हे राम। बिना दोषे कल किम्पाँ ए कर्म। तुम्भे नारायण
सेत महालक्ष्मी पाशोरिल निज नाम कि। श्रीराम॥ १ ॥
राम बोलन्ति शुण हे पितामह मुँ त दशरथनन्दन।
तुम्भे किम्पा कहु अछ एमान। समस्ते शुणन्तु मोहर
चरित कह कह कंजासन हे। बिरंचि॥ २ ॥

दिशाओं की ओर ताककर श्रीराम फटे-फटे से रह गये। १३ देव, दानव, बानर, भालू सभी के मुख से हाहाकार की ध्वनि निकल रही थी। सभी कह रहे थे कि श्रीराम ने यह क्या किया? बिना अपराध के वह इतना रुष्ट हो गये। १४ सभी के मन व्याकुल हो गये। कहने के लिए कोई पात्र नहीं था। विशि कहता है कि श्रीराम के अनुकूलता से देखने से नेत्र छलछला गये। १५

छान्द ७५—श्रीराम और देवताओं का संवाद

राग—कान्हरा

महादेव, ब्रह्मा, इन्द्र आदि समस्त देवता आकाश से देख रहे थे। श्रीराम के सामने होने से यह सभी लोग आ गये। धनुर्बाणधारी श्रीराम को देखकर उन्होंने हाथ जोड़ दिये। ब्रह्मा ने हँसते हुए कहा, हे राम! बिना दोष के आपने ऐसा कर्म क्यों किया? आप नारायण और वह महालक्ष्मी हैं। हे श्रीराम! क्या अपना नाम आप भूल गये? १ श्रीराम ने कहा, हे पितामह! मैं तो दशरथ का पुत्र हूँ। आप यह सब क्या कह रहे हैं? हे कमलासन ब्रह्माजी! आप हमरे चरित्र सबको सुना । २ इतना सुनकर फिर ब्रह्माजी कहने लगे, हे श्रीराम!

शुणि पुण कहन्ति सेहि धाता । तुम्भे
अखिळ ब्रह्माण्ड करता । आदि अनादि अच्युत
अबिनाशी सकळ देबंक पिता हे । श्रीराम ।। ३ ।।
राबण बध कारणे आहे देब बैकुण्ठ तेजि अबतार ।
तुम्भे कपटे मानब शरीर । आम्भ मानंक हितरे
अबतारे हरिल भूमिर भार हे । श्रीराम ।। ४ ।।
एते कहिण कले स्तबराज । राम मन तोषिले कुशध्वज ।
शुणिण समस्ते जे जाहा इच्छारे पाइले मनरे लाज से । बानरे ।। ५ ।।
धाता मुखरु एमन्त शुणि हव्यबाहन परम सन्तोष ।
करि सीतांकु से दिव्य सुबेश । अनळ देबता अनळुं
बाहार देखुछन्ति चतुर्द्दश से । अनळ ।। ६ ।।
कोळे घेनि बोलन्ति धनञ्जय । राम तुम्भ
बनिता तुम्भे निअ । निर्द्दोष अटन्ति ए
ऋषितनया एहांकु सदय हुअ हे । श्रीराम ।। ७ ।।
देखि श्रीराम श्रीकर बढ़ाइण बैश्वानर कोळुं आणिले ।
सीता निर्द्दोष बोलि जणाइले । जेसने कांचन
दहन करिटि कषटिरे कषाइले हे । सुजने ।। ८ ।।

आप निखिल ब्रह्माण्ड के कर्ता, आदि, अनादि, अच्युत और अविनाशी सभी देवताओं के जनक हैं । ३ रावण का वध करने के लिए ही आपने बैकुण्ठ का त्याग करके अवतार धारण किया है । हे श्रीराम ! आपने माया-मानव का रूप हम लोगों के कल्याण के लिए धारण करके पृथ्वी का भार उतारा है । ४ ऐसा कहकर उन्होंने स्तवराज का पाठ किया । कुशध्वज ब्रह्मा ने श्रीराम का मन सन्तुष्ट कर दिया । यह सुनकर समस्त वानर-गण अपने मन में लज्जित हो गये । ५ ब्रह्माजी के मुख से ऐसा सुनकर अग्निदेव अत्यन्त प्रसन्न हुए । सीता का दिव्य श्रृंगार करके अग्निदेव चौदह भुवनों के देखते अग्नि से बाहर निकले । ६ सीता को अपनी गोद में लिये वह कहने लगे, हे श्रीराम ! अपनी पत्नी सीता को आप स्वीकार करें । यह योगिराज की कन्या निर्दोष है । इस पर आप दया करें । ७ यह देखकर सीता को निर्दोष प्रमाणित करके श्रीराम ने अपने हाथों से अग्निदेव की गोद से सीता को ग्रहण किया । जैसे हे सुजनो ! दग्ध सोने को कसौटी पर कसे जाने से उसकी प्रामाणिकता सिद्ध होती है । ८ शंकर जी ने कहा, हे राघव ! सुनिये ! आपके समीप इन्द्र

शिब बोलन्ति शुण हे राघब । आसिछन्ति
तुम्भ ठाकु बासब । तुम्भ पिता दशरथहिँ
अछन्ति तांक सगे भेट हेब हे । श्रीराम ॥ ९ ॥
दशरथंकु देखिण दाशरथि चरण छुइँ ओळगिले ।
लक्ष्मणहिँ पाद तळे पड़िले । बेनि पुत्रंकु आलिंगन
करिण मुखरे चुम्बन देले से । राजन ॥ १० ॥
तनु पुळक होए घन-घन । आनन्दरे अश्रु
होए पतन । बोलन्ति जीबन कृतार्थ
होइला देखिलि तुम्भ बदन हे । श्रीराम ॥ ११ ॥
इक्ष्वाकु बंश उद्धार करिबाकु मो कुळे होइ अबतार ।
उश्वासिल ए पृथिबीर भार । एबे जाइ अजोध्यारे
अभिषेक हुअ रघुकुळ बीर हे । श्रीराम ॥ १२ ॥
मोते स्वर्ग भोगहिँ न रुचइ । तुम्भ दरशन
लोभ बढ़इ । धन्य पुत्रबती धन्य से कौशल्या
केते तप कले नाहिँ से । सुन्दरी ॥ १३ ॥
जानकी ओळगि हेबार देखिण कले तांकु बहु साम्य ।
तुम्भ हितरे कले एते राम । तुम्भे ए कथाकु आन

आये हैं । हे श्रीराम ! उनके साथ आपके पिता श्री दशरथ भी हैं । आप उनसे मिल लें । ९ दशरथ को देखकर श्रीराम ने उनके चरण छूकर प्रणाम किया । लक्ष्मण भी उनके चरणों में गिर पड़े । राजा दशरथ ने दोनों पुत्रों का आलिंगन करके उनके मुख को चूम लिया । १० उनका शरीर प्रफुल्लित हो रहा था और नेत्रों से आनन्द के अश्रु गिर रहे थे । वह बोले, श्रीराम ! तुम्हारा दर्शन करके मेरा जीवन कृतार्थ हो गया । ११ इक्ष्वाकुवंश का उद्धार करने के लिए तुमने हमारे कुल में जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारा है । हे रघुवंश के पराक्रमी वीर श्रीराम ! अब जाकर अयोध्या के राज्य पर अभिषिक्त हो जाओ । १२ मुझे स्वर्गीय सुख अच्छा नहीं लगता था । तुम्हारे दर्शनों का लोभ बढ़ रहा था । वह पुत्रवती कौशल्या धन्य है । उस सुन्दरी ने कौन सी तपस्या नहीं की । १३ जानकी को प्रणाम करते हुए देखकर उन्होंने उसे बहुत सम्मान और सान्त्वना दी । उन्होंने कहा कि राम ने तुम्हारे लिए इतना किया है । तुम इस बात को अन्यथा न लो । हे जानकी ! तुम हमारे वंश के सौन्दर्य का अभिवर्धन करो । पृथ्वी की बेटी ! तुम सर्वकाल के लिए

बिचार मो कुळर अभिराम गो । जानकी ॥ १४ ॥
तुम्भे पृथिबी-सुता पतिब्रता । सबु काळरे
श्रीराम-बनिता । पृथिबी निमन्ते जनम
होइछ इन्दिरा लोकंक माता गो । जानकि ॥ १५ ॥
लक्ष्मणंकु चाहिँ अनेक प्रशंसा कले अजोध्या
महीपाळ । बाबु अट तुम्भे भ्रातृ बत्सळ । श्रीरामंकु
तुम्भे बहु सेबा कल जश रखिल भूतळ हे । लक्ष्मण ॥ १६ ॥
पुणि श्रीरामकु करि आलिंगन । बाबु जाअ
तुम्भे एथुँ बहन । तुम्भंकु बहुत प्रशंसा
करन्ति देखिण पाकशासन हे । श्रीराम ॥ १७ ॥
बासब बोलन्ति आहे रामचन्द्र कल बहुत
उपकार । दैत्य नाशिल महीभार । आम्भर बचन
बिअर्थ नुहइ माग तुम्भे एबे बर हे । श्रीराम ॥ १८ ॥
राम बोलन्ति जेबे बर देब । ऋक्ष कपि मोहर
जिआइँब । निद्रा गला प्राय समस्ते
उठिबे किछिहिँ ब्रण न थिब हे । बासब ॥ १९ ॥
राम आज्ञारे अमृत घेनि शक्र जुद्धभूमिरे बृष्टि कले ।
ऋक्ष कपि जाक जिइँ उठिले । जाहा राम कले केहि

पतिव्रता और श्रीराम की पत्नी हो। हे जानकी! तुम जगज्जननी माता लक्ष्मी हो। पृथ्वी के कारण ही आपने अवतार ग्रहण किया है। १४-१५ अयोध्या के महिपाल दशरथ ने लक्ष्मण की ओर देखकर उनकी बहुत प्रशसा की। हे वत्स! तुम भ्रातृवत्सल हो। हे लक्ष्मण! तुमने भाई की बहुत सेवा करके इस पृथ्वीतल पर यश की स्थापना की है। १६ वह श्रीराम को पुन: आलिंगन करके कहने लगे कि हे वत्स! अब तुम यहाँ से शीघ्र ही प्रस्थान करो। हे श्रीराम! तुम्हें देखकर इन्द्र बहुत प्रशंसा कर रहे हैं। १७ इन्द्र ने कहा, हे रामचन्द्र! आपने दैत्यों का विनाश करके पृथ्वी का भार उतार कर बहुत उपकार किया है। मेरा वचन व्यर्थ न हो। अब आप हमसे वर माँगें। १८ श्रीराम ने कहा, जब आप मुझे वर देना चाहते हैं तो हमारे रीछ और वानरों को जीवित कर दें। हे देवराज! वह लोग सोये जैसे उठ बैठें। उनके किसी प्रकार के घाव न हों। १९ राम की आज्ञा से इन्द्र ने युद्धभूमि हर अमृत को वर्षा की। समस्त रीछ और वानर जीवित

त एमन्त सृष्टिरे करि न थिले हे । सुजने ॥ २० ॥
देबे मेलाणि मागि स्वर्ग गले । देखि समस्ते
चकित होइले । बोले बिशि श्रीरामंक सेबा
करि मला लोकहिँ जिइँले । हे सुजने ॥ २१ ॥

षट्सप्ततितम छान्द
राग–दीर्घ कनड़ा

बिभीषण कर जोड़ि जणाइले मार्जना हुअ भो देब हे ।
सकळ सामग्री छामुकु आणिछि मो ठारे करुणा हेब हे ।
भो देब । शुणि बोलन्ति रघुनन्दन । दण्डे न रहि जिबु
बहन । केते बेळे जाइ भरत देखिबु पथ बहुत दुर्गम हे ॥ १ ॥
शुणि बिभीषण बोइले भो देब अर्द्धदिने घेनि जिबि हे ।
आज्ञा होइले पुष्पक रहुबर छामुकु घेनि आसिबि हे ।
भो देब । शुणि श्रीराम बोलन्ति आण ।
बिळम्बरे केबण कारण । आज्ञा पाइ अश्व
जोचि देब जाक आणिलेक सेहि क्षण से ॥ २ ॥

होकर उठ बैठे । हे सुजनो ! श्रीराम ने जो भी किया, ऐसा संसार में किसी ने नहीं किया था । २० देवता बिदा लेकर स्वर्ग को चले गये । यह देखकर सभी लोग आश्चर्य से चकित हो गये । विशि कहता है, हे सुजनो ! श्रीराम की सेवा करके मरे हुए लोग भी जीवित हो गये । २१

छान्द—७६
राग–दीर्घ कान्हरा

विभीषण ने हाथ जोड़कर निवेदन किया । हे देव ! अब आप स्नान कर लें । हे देव ! मैं समस्त सामग्री आपके निकट ले आया हूँ । आप मेरे ऊपर कृपा करें । यह सुनकर रघुनन्दन श्रीराम ने कहा, मैं एक दण्ड भी न रुककर शीघ्र ही जाऊँगा । न जाने कब भरत को देख पाऊँगा, क्योंकि मार्ग बहुत दुर्गम है । १ यह सुनकर विभीषण ने कहा, हे देव ! मैं आधे दिन में ही ले चलूंगा । हे देव ! आज्ञा होने पर मैं पुष्पक-विमान आपके समक्ष ले आऊँगा । यह सुनकर श्रीराम ने कहा कि ले आइये, अब विलम्ब किसलिए है ? आज्ञा पाते ही देवयान में घोड़े जोत कर वह उसी क्षण ले आया । २ कलश और पताकाओं से बहुत से दिव्य

दिव्य मणिमय बहु पुरमान कळश पताका शोभा हे ।
तहिँ बसिले क्षुधा तृषा हरइ जन नेत्र करे शोभा हे ।
सुजने । जेहु चउद लोक भ्रमइ । जहिँ मानस तहिँकि
जाइ हे । माया रहुबर मानसे सूचना कला मात्रके गमइ से ॥ ३ ॥
देखि दाशरथि बहु हृष्ट होइ सुग्री बिभीषणे चाहिँ हे ।
बोलन्ति आम्भे मेलाणि हेउअछुँ बिमानरे बसु जाइ हे ।
सुग्रीब । तुम्भे किष्किन्ध्याकु बिजे कर ।
मोते कल बहु उपकार । लंकापति
लंकापुर भोग कर सर्बदा तुम्भे आम्भर हे ॥ ४ ॥
शुणि सुग्रीब बिभीषण जणान्ति भो देब संगते जिबु हे ।
अजोध्यापुर देखिण आम्भेमाने नेत्र कृतार्थ करिबु हे ।
भो नाथ । प्रभु एहि अनुग्रह कर ।
भ्रातांकुहिँ देखिबु तुम्भर । अभिषेक आम्भे
दर्शन करिण आसिबु जे जाहा पुर हे ॥ ५ ॥
शुणिण राघब परम सन्तोष होइण बोलन्ति आस हे ।
एहिरूपे तुम्भमानंकर स्नेह निश्चे अछि आम्भ पाश हे ।
राजन । आसि अबिळम्बे जाने बस । परिजने

मणिमय प्रकोष्ठ शोभा पा रहे थे । वहाँ बैठने से लोगों की भूख-प्यास मिट जाती थी, आँखें सुन्दरता को देखती रह जाती थीं । हे सुजनो ! जहाँ की इच्छा होती थी वहीं वह चौदह लोकों में चला जाता था । वह माया-रथ संकल्प मात्र से ही गमन करता था । ३ यह देखकर दशरथ-नन्दन श्रीराम ने अत्यधिक प्रसन्न होकर सुग्रीव तथा विभीषण की ओर देखते हुए कहा, आप हमें विदा दें ! हम जाकर विमान में बैठें । हे सुग्रीव ! आपने मेरा बहुत उपकार किया है । अब आप किष्किन्धा को प्रस्थान करें । हे लंकापति ! आप सदैव ही हमारे रहेंगे । अब आप लंकापुर का सुख भोगें । ४ यह सुनकर सुग्रीव और विभीषण ने निवेदन किया, हे नाथ ! हम लोग भी आपके साथ चलकर अयोध्यापुर को देख कर अपने नेत्र कृतार्थ करेंगे । हे नाथ ! हमारे ऊपर यह अनुग्रह करें । हम आपके भाई (भरत) को देखेगे और आपके अभिषेक का दर्शन करके अपने स्थानों को लौट आएँगे । ५ ऐसा सुनकर राघव राम ने अत्यन्त संतुष्ट होकर कहा, आइये ! आपका इसी प्रकार का स्नेह सदा से हमारे पास है । हे राजन् ! अविलम्ब ही आकर शीघ्र यान में बैठ जाइए ।

खटिथान्ति पाश । आम्भर भकत हेबारु
महीरे पाइल बहुत जश हे ॥ ६ ॥
बिमान उपरे श्रीराम सीतांकु घेनिण बिजय कले हे ।
लक्ष्मण कपिपति बिभीषणंकु दिब्य पुरमान देले हे ।
सुजने । देखि बहुत आनन्द हेले ।
महा सुखे समस्त बसिले । श्रीराम ठाकुरे
लंका जय करि बाहुड़ा बिजय कले हे ॥ ७ ॥
शुभ्र मेघ प्राय पुष्पक बिमान आकाशे शोभा दिशिला हे ।
पृथिबी इतर प्रायेक दिशिला स्वर्गपुर कि खसिला हे ।
सुजने । बाद्यनादे आकाश पूरिला ।
समस्तकर सन्तोष हेला । बोलइ बिशि
जानकी मन दुःख सुख सिन्धुरे बुड़िला हे ॥ ८ ॥

सप्तसप्ततितम छान्द—राम सीतांकु पूर्ब परिचित स्थानमानंकु निर्देश

नन्दाबाइ चउतिशा बाणी

जानकींक संगे राम पुष्पक जाने बसि कहन्ति
मन्द मन्द हसि । जेउँ स्थानरे आम्भे जेमन्त करिथाइँ

परिजन पास मे सेवा करते रहें। हमारे भक्त होने के कारण पृथ्वी पर आपने बहुत यश अर्जित किया है। ६ श्रीराम सीता को लेकर विमान पर विराजमान हो गये। लक्ष्मण ने कपिपति सुग्रीव तथा विभीषण को दिव्य प्रकोष्ठ प्रदान किया। हे सज्जनो! वह लोग उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुए और बड़े सुख से सभी लोग बैठ गये। श्रीराम ने लंका पर विजय प्राप्त करके वापसी यात्रा प्रारम्भ की। ७ आकाश में पुष्पक विमान श्वेत मेघ के समान शोभायमान दिखाई दे रहा था। पृथ्वी से ऐसा दिखाई पड़ता था जैसे कि स्वर्ग-लोक ही खिसककर पृथ्वी पर आ गया हो। हे सज्जनो! वाद्यनादों से आकाश भर गया। सभी संतुष्ट हो गये। विशि कहता है श्री जानकी का मन दुःख के समुद्र में डूब गया। ८

छान्द ७७—राम का सीता को पूर्वपरिचित स्थानों का दर्शन कराना

नन्दाबाई चौंतीसा की धुन

जानकी के साथ श्रीराम पुष्पक विमान पर बैठकर मन्द-मन्द मुस्कराते हुए कह रहे थे कि हे शुभ्रकेशो! जिन स्थानों पर हमने

देखाइ देबा शुभ्रकेशि गो। आगो सखि। देखिण
थाआटि एमान। तुम्भंकु हेब ए स्वपन। आम्भे देखाउ
थिबा तळकु मात्र तुम्भे होइण थिब सावधान॥ १ ॥
दखरे बिशालाक्षि देख देख ए लंका एठारे माइलु राबण।
एठारे मन्दोदरी सहस्रे नारी घेनि करुण थिलेटि
कारुण्य गो। आगो सखि। एठारे कुम्भकर्ण मला।
एठारे इन्द्रजित मला। एठारे आम्भंकु
नागपाशरे इन्द्रजित बन्धन करि थिला॥ २ ॥
एठारे सखि आरे बहुजुद्ध होइला कुम्भ निकुम्भ महोदर।
महापार्श्व, शुक, शारण, अकम्पन, महीराबण,
त्रयशिर गो। आगो सखि। एमाने होइलेटि हत।
बिद्युज्जिह्वा, बज्रमुष्टि त। बिरूपाक्ष
जे जुळपाक्ष केते सैन्य पड़िण अछन्ति बहुत॥ ३ ॥
एठारे सीते आगो लक्ष्मण शक्तिभेद एटि आम्भ
सुबळ गिरि। एटि जळधि सेतुबन्ध बान्धि करिटि
तुम्भ निमन्ते हेलु पारि गो। आगो सखि।
शरण गले बिभीषण। दर्शन कलेटि बरुण।
देख ए माल्यबन्त एथिरेहिँ तुम्भर बिरहे कलुटि कारुण्य॥ ४ ॥

जो-जो किया है उसे तुम्हें दिखा देंगे। हे सखी! तुम इन्हें देख लो, अन्यथा ये तुम्हारे लिए स्वप्न हो जायेंगे। हमारे नीचे की ओर दिखाने पर तुम सावधान रहना। १ हे विशाल नेत्रों वाली सीते! देखो, यह लंका है जहाँ मैंने रावण को मारा है। इस स्थान पर हजार नारियों को लेकर मन्दोदरी ने करुण-क्रन्दन किया था। हे सखी! यहाँ पर कुम्भकर्ण और इन्द्रजित् मारे गये। इस स्थान पर इन्द्रजित् ने हम लोगों को नागपाश से बाँध दिया था। २ हे सखी! यहाँ पर बहुत युद्ध हुआ। कुम्भ, निकुम्भ, महोदर, महापार्श्व, शुक, सारण, अकम्पन, महिरावण, त्रयशिर आदि मारे गये। विद्युज्जिह्व, वज्रमुष्ठि, विरूपाक्ष और जुलूपाक्ष की कितनी सेनाएँ मरी पड़ी है। ३ हे सीते! यह हमारा सुबेल पर्वत है। यहाँ पर लक्ष्मण को शक्ति लगी थी। हे सखी! इस समुद्र पर सेतु बाँधकर तुम्हारे लिए हम पार हुए। हे सखी! यहाँ पर विभीषण शरण में आये थे और वरुण ने हमारे दर्शन किये थे। देखो, यह माल्यवंत पर्वत है। यहीं पर मैंने तुम्हारे विरह में करुण-क्रन्दन किया था। ४ हे चन्द्रमुखी! देखो, यह ऋष्यमूक पर्वत है।

देखरे चन्द्रमुखि ए ऋष्यमूक गिरि एथि सुग्रीब
हेले मित । एटि दुन्दुभि अस्थि पादरे फिंगिदेइ
शपतशाळा कलु हत गो । आगो सखि । एठारे
बाळिकि माइलु । एठारे ताराकु बोधिलुँ । एटि
किष्किन्ध्यापुर दिशइ ना सुन्दर सुग्रीबे एथि राजा कलुँ ॥ ५ ॥
शुणि जनक जेमा जणाइले भो देब ए ठारे जान
रुहाइबा । तारा रोमा सहिते समस्त कपिनारी
अजोध्या संगे घेनि जिबा कि । शुणि राम ।
सेठारे रुहाइले जान । आज्ञा देले सुग्री राजन ।
तुम्भर तारा रोमा जूथपतिङ्क
बामा अजोध्या जिबे बसि जान ॥ ६ ॥
आज्ञा मात्रे सुग्रीब तारा रोमांकु घेनि
बिमान उपरे बसिले । बानर सेनामाने
नारी मानंकु घेनि आनन्दे जान आरोहिले
से । आज्ञा पाइ । आकाशे पुष्प जान गले । बाते
कि मेघमाळा चळे । मइथिळींकि राम पम्पा
सरोंबरकु देखान्ति प्रेम कुतूहळे से ॥ ७ ॥
एठारे जानकी गो तब बिरहे एहि पम्पातीरे रोदन

यहीं पर सुग्रीव हमारे मित्र बने । यह दुन्दुभि की अस्थियाँ हैं । जिन्हें पैर से फेंककर मैंने सात ताड़ के वृक्ष गिरा दिये थे । हे सखी ! इस स्थान पर बालि को मारकर तारा को सांत्वना दी थी । यह किष्किन्धा जो सुन्दर दिखाई दे रही है, इसका राजा मैंने सुग्रीव को बना दिया । ५ यह सुनकर जनक की राजकुमारी ने कहा, हे देव ! यहाँ पर विमान रोकेंगे । तारा, रोमा के सहित सभी वानरियों को साथ में अयोध्या लेकर चलेंगे । यह सुनकर श्रीराम ने वहाँ पर विमान रोककर सुग्रीव को आज्ञा दी कि तुम्हारी तारा और रोमा तथा यूथपतियों की स्त्रियाँ यान पर बैठकर अयोध्या चलेंगी । ६ आज्ञा पाते ही सुग्रीव तारा और रोमा को लेकर विमान पर बैठ गये । वानर-सेनापति भी स्त्रियों को लेकर आनन्दपूर्वक यान पर चढ़ गये । आज्ञा पाकर पुष्पक विमान आकाश को चला गया, जैसे पवन से बादल उड़ते हैं । श्रीराम मैथिली को बड़े प्रेम तथा कौतूहल से पम्पा सरोवर दिखा रहे थे । ७ हे जानकी ! इस स्थान अर्थात पम्पा सरोवर के तट पर तुम्हारे विरह

कलुँ। एठारे तनु दहि स्वर्गभुबन गला शबरी
गोटिए देखिलुँ गो। ए ठारे गो। जोजनबाहु
दैत्य थिला। आम्भ हाते मृत्यु पाइला। जेउँ
प्रकारे आम्भे सुग्रीबे मित्र हेलु समस्त बुद्धिमान देला से ॥ ८ ॥
देखरे कृशोदरी एठारेटि जटायु राबण संगे जुद्ध कले।
एठारेटि आम्भंकु बारता कहि मले एठारे दहन होइले
गो। देख सखि। एटि आम्भर पर्णशाळा।
तुम्भंकु राबणटि नेला। एहि ठाबरे आम्भे
मायामृग मारन्ते मारीच शरीर धइला गो ॥ ९ ॥
देखरे पंकजाक्षि ए गोदाबरी नदी देख ए पंचबटी बट।
धूम चिह्न दिशुछि अगस्तिंक आश्रम एबे होइछि
परकट गो। आगो सखि। देख सुतीक्ष्ण आश्रम।
आत्रेय ऋषिक आश्रम। एठारे तुम्भंकु
अनसूया शरधा करिण देले आयुमान से ॥ १० ॥
ए सरोबर ऋषिमण्डळ क्रीड़ा करे एटि शरभंग
आश्रम। एहांक पाश कुटी शक्र आसिण थिले
एटि कले अकृतकर्म गो। एठारे गो। बिराध

में रुदन करता रहता था। यहाँ पर मुझे एक शबरी मिली थी जो अपना शरीर दग्ध करके स्वर्गलोक को चली गयी थी। इस स्थान पर योजनबाहु दैत्य ने हमारे हाथों मृत्यु प्राप्त की। जिस प्रकार हमारी और सुग्रीव की मित्रता हुई। यह बुद्धि उसी ने दी थी। ८ हे कृशोदरी! इस स्थान को देखो, जहाँ जटायु ने रावण के साथ युद्ध किया था। हे सखी! इस स्थान पर उन्होंने हमें समाचार देकर प्राण छोड़े और इस स्थान पर उनका दाह-संस्कार हुआ। हे सखी! यह हमारी पर्णशाला है। इसे देखो, यहीं से तुम्हें रावण ले गया था। इस स्थान पर हमारे द्वारा मायामृग को मारने पर उसने मारीच का शरीर धारण किया था। ९ हे कमलनयनी। देखो, यह गोदावरी नदी और यह पंचवटी का वटवृक्ष है। यहाँ से धुआँ उठता दिखाई दे रहा है, यह अगस्ति का आश्रम आ गया। हे सहचरी। देखो, यह सुतीक्ष्ण का आश्रम और यह अत्रि ऋषि का आश्रम है। यहीं पर अनसूया ने प्रेम से तुम्हें उपहार दिये थे। १० इस सरोवर में, जहाँ ऋषिमण्डल क्रीड़ा कर रहे है, यह शरभंग का आश्रम है। इन्हीं के पास वाली कुटिया में इन्द्र ने घुसकर अकार्य किया था। इस स्थान पर विराध दैत्य मारा गया, जो

दैत्य हत हेला। मारन्ते गन्धर्ब होइला। देख ए
चित्रकूट पर्णशाळा निकट बकळ पत्रिका दिशिला गो ॥ ११ ॥
एठारे आरे सखि आम्भ रहिबा देखि ऋषिमाने
बिचार कले। आम्भंकु न कहिण ठराठरि होइण
अगम्य बनरे पशिले गो। देख सखि। एटि आम्भर
चित्रकूट। एथिरे बाल्मीकि प्रकट। देख गंगा
जमुना नदी ए सरस्वती देखाइछन्ति मोक्ष बाट गो ॥ १२ ॥
एटि आगो सुन्दरी भरद्वाजंक पुरी एहाकु दर्शन करिबा।
अजोध्यार मंगळ भ्रत शत्रुघनंक कुशळ बारता पाइबा
गो। आगो सखि। एठाकु अजोध्या निकट ए
शृङ्गबेर नदी तट। एते बोलिण जान रुहाइले
से स्थान बिशि भणइ रघुचाट हे ॥ १३ ॥

अष्टसप्ततितम छान्द—अजोध्यारे रामंक बिजयबार्त्ता

राग—काळी

भरद्वाजंक दुआरे जानुँ ओल्हाइले श्रीराम।
संगे लक्ष्मण जानकी घेनि कलेक से प्रणाम॥

मरने पर गन्धर्व हो गया। देखो, यह चित्रकूट है जहाँ पर्णशाला के निकट वल्कल वस्त्र दिखाई दे रहे हैं। ११ हे सखी! यहीं पर हमारे रहने को देखकर ऋषियों ने विचार किया था और हमसे विना कहे दल के दल अगम वन में घुस गये थे। हे सखी! यह हमारा चित्रकूट है। इसे देखो, यहीं पर वाल्मीकि निवास करते हैं। देखो, यह गंगा-यमुना और सरस्वती दिखाई दे रही हैं। यह मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग है। १२ हे सुन्दरी! यह भरद्वाज की नगरी है। इसके दर्शन करेंगे। इनसे अयोध्या का मांगलिक संवाद तथा भरत और शत्रुघ्न की कुशलता के समाचार मिलेंगे। हे सखी! यह शृंगवेरपुर का नदी तट है, यहाँ से अयोध्या निकट ही है। विशि कहता है कि इस प्रकार कहकर रघुनन्दन श्रीराम ने उस स्थान पर विमान को रोक दिया। १३

छान्द ७८—अयोध्या में राम की विजय-वार्ता

राग—काली

भरद्वाज के द्वार पर श्रीराम विमान से उतर पड़े। उन्होंने लक्ष्मण और जानकी के साथ उन्हें प्रणाम किया। ऋषि ने प्रसन्नतापूर्वक

आनन्दे ऋषि कल्याण करि कलेक आलिंगन ।
आज देखिलुँ नेत्र पथरे रघुकुळनन्दन ।। १ ।।
तुम्भर जेते बिपत्ति मान समस्त जाणु आम्भे ।
असुर नाश करणे सिना जात होइछ तुम्भे ।।
आम्भे तुम्भकु प्रसन्न हेलु माग आम्भकु बर ।
राम बोलन्ति जाहा मागिबु करिब सिउकार ।। २ ।।
एहा मागुछि हे मुनिबर एमन्त बर देब ।
तुम्भ मठरु अजोध्या जाए बिबिध तरु हेब ।।
सुपक्व फळे भूमिकि करुथिबे जे आलिंगन ।
समस्त ऋक्ष कपि खाइण होइबे हृष्ट मन ।। ३ ।।
शुणिण मुनि बोलन्ति अस्तु जेमन्त कर बाञ्छा ।
खाइबे कपि बिबिध फळ जाहार जेते इच्छा ।।
भरतर सबु कुशळ टिकि पुच्छन्ति राम हसि ।
जननी मानकर कुशळ क्षेम अजोध्याबासी ।। ४ ।।
मुनि बोलन्ति शुण हे राम समस्तहिँ कुशळ ।
केबळ भरत तब बिरहे कष्टे बञ्चइ काळ ।।
बान्धिण जट अजित पट्ट पत्र करइ पान ।
केबळ तब पादुका पूजि रखि अछि जीबन ।। ५ ।।

आशीर्वाद देते हुए उनका आलिगन किया और बोले कि हे रघुकुलनन्दन ! आज अपने नेत्रों से तुम्हें देख रहा हूँ । १ तुम्हें जितनी भी विपत्तियाँ मिलीं वह सब हमें ज्ञात हैं । तुम्हारा जन्म ही राक्षसों का नाश करने के लिए हुआ हैं । हम तुमसे प्रसन्न हैं । तुम हमसे वर की याचना करो । श्रीराम ने कहा कि जो मैं माँगूंगा उसे आप स्वीकार कर लीजियेगा । २ हे मुनिश्रेष्ठ ! मैं यह माँग रहा हूँ कि मुझे आप ऐसा वर दें कि आपके आश्रम से अयोध्या तक नाना प्रकार के वृक्ष लग जायें और उनके पके हुए फल भूमि को छूते रहें । सभी रीछ और वानर उन्हे खाकर प्रसन्न हो जायेंगे । ३ यह सुनकर मुनि ने कहा, ठीक है तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो और वानर अपनी इच्छानुसार नाना प्रकार के फलों का भोजन करें । श्रीराम ने हँसते हुए भरत का कुशल समाचार तथा माताओं की कुशलता और अयोध्यावासियों का क्षेम समाचार पूछा । ४ भरद्वाज ने कहा, हे राम ! सब लोग कुशल से हैं । केवल भरत तुम्हारे विरह में कष्ट से समय बिता रहा है । वह जटा बाँधकर अजिन वस्त्र धारण करके पत्ते खाकर रह

शुणिण राम समस्त सेना मुखकु अनाइले ।
अजनासुत मुखकु चाहिँ रामहिँ आज्ञा देले ।।
जाअ हे हनु भरत पाशे आम्भर बिजे कह ।
काहा मुखरु कि अबा शुणि हेउ जे थिब मोह ।। ६ ।।
भ्रत हरष बिरस अनाइब मुखकु चाहिँ ।
तार बिरस देखिले मुहिँ अजोध्या जिबि नाहिँ ।।
शृंगबेररे शबर नृपतिकि कहिण जिब ।
सर्ब जननी मानंकु आम्भ बिजय जणाइब ।। ७ ।।
मनुष्यरूप धरिण हनु पवनु बेगे गले ।
शृंगबेररे बारता कहि नन्दीग्रामरे हेले ।।
देखिले भ्रत पादुका पूजा सारि अछन्ति बसि ।
रामंक प्राय जटा बकळ देखिण परशंसि ।। ८ ।।
मान्य करिण भ्रतकु हनु कहिले बिजे कथा ।
शुणि भरत आनन्द होइ मनु तेजिले व्यथा ।।
मुहूर्त्तजाए आनन्द भरे अचेष्ट से होइले ।
हनुकु आलिगन करिण अबिलम्बे छाड़िले ।। ९ ।।
बधाइ करि देलेक तांकु लक्षे दुहाळ गाब ।
शतेक रामा शते जुबती बाछिण देले दिव्य ।।

रहे हैं। वह केवल आपकी पादुका को पूजा करते हुए जीवन धारण किये हैं। ५ यह सुनकर समस्त सेना की ओर देखते हुए श्रीराम ने अंजनिपुत्र हनुमान के मुख की ओर देखकर बोले, हे हनुमान ! जाकर भरत से हमारी विजय-वार्ता कहो। किसी के मुख से कहीं कुछ सुनकर वह मोह में न पड़ गया हो। ६ भरत के मुख को देखकर हर्ष और विषाद को देखना। उन्हें दुखी देखकर मैं अयोध्या नहीं जाऊँगा। शृंगवेरपुर में शाबर राजा से कहते हुए जाना। सभी माताओं को हमारी उपस्थित के विषय में बता देना। ७ हनुमान मनुष्य के रूप में पवन से भी अधिक वेग से गये। शृंगवेरपुर में समाचार देकर वह नन्दीग्राम जा पहुँचे। उन्होंने भरत को पादुका पूजा समाप्त करके बैठे हुए देखा। श्रीराम के समान जटा तथा वल्कल देखकर उन्होंने प्रशंसा की। ८ हनुमान ने भरत की वन्दना करके श्रीराम के आगमन के समाचार उन्हें दिये। सुनते भरत आनन्दित हुए और उनके मन की व्यथा समाप्त हो गई। मुहूर्त मात्र के लिए आनन्द की अधिकता से वह निश्चेष्ट हो गये। हनुमान का आलिगन करके उन्हें शीघ्र ही उन्होंने छोड़ दिया। ९ भरत ने उन्हें बधाई देते हुए एक लाख दूध देने

रत्न भूषण पुष्प चन्दन कलेक आभरण ।
बारता पाइ बास भूषण देलेक मातागण ॥ १० ॥
रामंक सबु बृत्तान्त मान भरते कहि हनु ।
आनन्द अश्रु नयनु बहे पुलक हुए तनु ॥
पुण हनुकु पुच्छन्ति तोषे राम चरित्र मान ।
बोलइ बिशि श्रबणे शुणि आनन्द करे मन ॥ ११ ॥

एकोनाशीतितम छान्द—कौशल्यादि सह भरतंकर रामंक पथ अन्वेषण

राग—काफि

हनु मुखरु राम बिजय शुणि ।
आनन्द हेले भरत सहिते जे कउशल्यादि राणी ॥ १ ॥
उत्सब कराइले अजोध्यापुर ।
मण्डन कराइले समस्ते जे नन्दीग्राम आबर ॥ २ ॥
भरत शत्रुघन पादुका घेनि ।
आबर बालमीकि जाबाळी से संगे बशिष्ठ मुनि ॥ ३ ॥
सुमन्त्र सहितरे सचिब माने ।
बाहार हेले सैन्य घेनिण सेहि आनन्द मने ॥ ४ ॥

वाली गउएँ प्रदान कीं। उन्होंने सौ दासियाँ और सौ सुन्दर युवतियाँ छाँटकर प्रदान कीं। रत्न, भूषण तथा चन्दन एवं वस्त्र प्रदान किये। समाचार पाकर माताओं ने भी उन्हें वस्त्र तथा आभूषण प्रदान किये। १० श्रीराम के सम्पूर्ण वृत्तान्त को भरत से कहते हुए हनुमान का शरीर पुलकित होने लगा और नेत्रों से आनन्दाश्रु बहने लगे। सन्तुष्ट होकर वह बार-बार हनुमान से श्रीराम के चरित्र पूछने लगे। विशि कहता है कि अपने कानों से उसे सुनकर उनका मन प्रसन्न हो रहा था। ११

छान्द ७९—कौशल्यादि के साथ भरत का श्रीराम का पंथान्वेषण

राग—काफी

हनुमान के मुख से श्रीराम का आगमन सुनकर भरत के सहित कौशल्या आदि रानियाँ प्रसन्न हो गयीं। १ सम्पूर्ण अयोध्या तथा नन्दीग्राम को सुसज्जित करा कर उत्सव आयोजित किये गये। २ वाल्मीकि, जाबालि, वशिष्ठ तथा सुमन्त से सहित सभी मन्त्रियों के साथ भरत और शत्रुघ्न पादुका लेकर सेना के समेत प्रसन्न मन से बाहर निकले। ३-४

कउशल्यांकु घेनि सर्ब जननी ।
शिबिका मान चढ़ि बाहार जे शोभा दिशे मेदिनी ॥ ५ ॥
राम बिजयपथे बिजे भरत ।
पटुआर करिण चळन्ति जे हनुर धरि हस्त ॥ ६ ॥
केतेहें दूर जाएँ कले गमन ।
न देखिण हनुकु पुछन्ति जे होइ बिकळ मन ॥ ७ ॥
पुणि पुछन्ति हनु सत कि कह ।
श्रीराम श्रीचरण न देखि जे मोर कातर देह ॥ ८ ॥
केउँ ठाबरे छाड़ि अइलु हनु ।
सत करिण मोते सम्भाष हे कष्ट तेजिबि मनु ॥ ९ ॥
बोलन्ति देब पुष्पक जाने ।
एहि क्षणि बिजय करिबे हे देखिबटि नयने ॥ १० ॥
आकाशमार्गरे एबे लय कर ।
बीर बाद्यमान शुभुछि हे अइलेटि कुमर ॥ ११ ॥
एमन्त शुणि उर्ध्वे देलेक दृष्टि । धीरे
धीरे बिमान खसिला हे शोभा दिशिला सृष्टि ॥ १२ ॥
देखिण जय जय शबद कले ।
आनन्द जळधिरे बुड़िण हे सर्बे मग्न होइले ॥ १३ ॥

कौशल्या को लेकर सभी माताओं के पालकी पर चढ़कर निकलने से पृथ्वी शोभायमान दिख रही थी । ५ राम के आगमन के मार्ग पर भरत जा पहुँचे । वह हनुमान का हाथ पकड़कर छोटा घेरा बनाकर चल रहे थे । कितनी ही दूर निकल जाने पर श्रीराम को न देखकर उन्होंने हनुमान से विकल मन से पूछा । ६-७ हे हनुमान ! क्या सत्य कह रहे हो । श्रीराम के श्रीचरणों को न देखकर मेरा शरीर दुःखी हो रहा है । ८ हे हनुमान ! तुम उन्हें कहाँ छोड़ आये थे । तुम हमें क़सम खाकर बताओ जिससे हमारे मन का दुःख छूट जाये । ९ हनुमान ने कहा, हे देव ! इसी समय वह पुष्पक विमान से पधारेंगे और आप उन्हें अपने नेत्रों से देखेंगे । १० अब आप आकाश मार्ग की ओर ध्यान दें । वीर वाद्यों का शब्द सुनायी पड़ रहा है, लगता है कि प्रभु आ गये । ११ ऐसा सुनकर उनकी दृष्टि ऊपर पड़ी । धीरे-धीरे विमान नीचे उतरने लगा । सारी सृष्टि शोभित दिखाई देने लगी । १२ देखकर सभी जय-जयकार करने लगे । आनन्द के समुद्र में सभी निमग्न हो गये । १३ पुष्पक विमान

महीरे बिजे कला पुष्पक जान ।
धनुशर धरिण विजय हे रघुकुळनन्दन ॥ १४ ॥
श्वेतछत्रतळरे पादुका थोइ ।
भुमिरे दण्डबत कलेक जे भ्रत साष्टांग होइ ॥ १५ ॥
शत्रुघनहिँ कले दण्ड प्रणाम ।
जानु ओह्लाइ भ्रत चरणे जे लक्ष्मणहिँ प्रणाम ॥ १६ ॥
शत्रुघन लक्ष्मणे मानन कले ।
कोळे बसाइ राम भ्रतंकु जे आलिंगन त कले ॥ १७ ॥
भरत शत्रुघ्नकु कोळे बसाइ ।
मान्य त कले एका बेळके हे मातामानंकु चाहिँ ॥ १८ ॥
बशिष्ठ आदि पुरोहित सकळ ।
मान्यत कले राम ताहांकु हे जोड़ि कर जुगळ ॥ १९ ॥
सुग्रीब संगरे सेना सकळ ।
राम चिन्हान्ते प्रति जणके हे भरत कले कोळ ॥ २० ॥
बिभीषणंकु पच्छे चिन्हाइ देले ।
राम आज्ञा पाइण ताहांकु जे आलिंगन त कले ॥ २१ ॥
नन्दीग्रामे प्रबेशि जान तेजिले ।
बिभीषणंकु चाहिं राघव जे एमन्त आज्ञा देले ॥ २२ ॥

पृथ्वी पर आ पहुँचा । रघुकुलनन्दन श्रीराम धनुष-बाण धारण किये विराजमान थे । १४ श्वेतछत्र के नीचे पादुका रखकर भरत ने पृथ्वी पर गिरकर साष्टांग दण्डवत किया । १५ शत्रुघ्न ने भी दण्डवत प्रणाम किया, विमान से उतरकर लक्ष्मण ने भरत के चरणों में प्रणाम किया । १६ शत्रुघ्न ने लक्ष्मण की अभ्यर्थना की । श्रीराम ने भरत को गोद में बिठाकर उन्हें आलिंगन किया । १७ फिर उन्होंने भरत और शत्रुघ्न को गोद में बिठा लिया । माताओं को देखकर उन्होंने एक साथ ही सबकी अभ्यर्थना की । १८ श्रीराम ने दोनों हाथ जोड़कर वशिष्ठ आदि सभी पुरोहितों का सम्मान किया । १९ सुग्रीव के साथ सम्पूर्ण सेना का परिचय श्रीराम एक-एक से कराने पर, प्रत्येक ने भरत को आलिगन किया । २० अन्त में विभीषण का परिचय कराया । श्रीराम की आज्ञा पाकर उन्होंने भी उनका आलिगन किया । २१ नन्दीग्राम में पहुँचकर उन्होने यान को छोड़ दिया । विभीषण की ओर देखकर राघवराम ने इस प्रकार आज्ञा दी । २२ कुबेर न अबं कु प्राप्त हो ।

कुबेर जान एबे नेउ कुबेर ।
बळे छड़ाइ आणि थिला जे असुर दश शिर ।। २३ ।।
जानकु आज्ञा देले रघुनन्दन ।
सर्बदा कुबेरकु बहिब हे जाअ कुबेर स्थान ।। २४ ।।
कुबेरपुर गला पुष्पक जान ।
भणइ बिशि आज्ञा देलेक हे ताकु रघुनन्दन ।। २५ ।।

अशीतितम छान्द—रामाभिषेकर अधिवास

राग–बिप्रसिंहा

भरतपुर नन्दीग्राम, बिजे कले तहिँ राम,
सुग्री बिभीषण घेनि सगे । बिजे करि कले
सभा, कर जोड़ि सर्बे उभा, भरत जणाइ
कथा प्रसंगे हे । रघुबीर । अजोध्यारे हुअ
अभिषेक । घन देखिले चातक, प्रायेक
अजोध्या लोक, तुम्भंकु देखि रघुनायक ।। १ ।।
शुणिण रघुनन्दन, भरते शुण बचन, बोलन्ति
तुम्भे सिना राजन । पाळि पितार बचन,
पृथिबी कर पाळन, तुम्भे आम्भे नोहि

राक्षस दशानन उसे बलपूर्वक छीनकर ले आया था । २३ रघुनन्दन श्रीराम ने विमान को आज्ञा दी कि तुम कुबेर के स्थान में जाकर सदा उनके वाहन बने रहो । २४ पुष्पक विमान अलकापुरी को चला गया । विशि कहता है कि श्रीराम ने उसे जाने की आज्ञा दे दी । २५

छान्द ८०—राम के अभिषेक का अधिवास

राग–विप्रसिंहा

भरत के वासस्थान नन्दीग्राम में श्रीराम सुग्रीव और विभीषण को साथ लेकर पहुंचे । उन्होंने पहुँचकर एक सभा की । सभी हाथ जोड़कर खड़े थे । भरत ने उनसे समाचार कहे । हे रघुवीर ! अयोध्या में आप अभिषिक्त हों । बादल को देखने के पश्चात् चातक के समान अयोध्या के लोग, हे रघुनायक ! आपको देखेंगे । १ यह सुनकर रघुनन्दन ने कहा, हे भरत ! मेरी बात सुनो ! तुम्हें सभी राजा कहते हैं । पिता के वचनों का पालन करके तुम पृथ्वी का पालन करो । हे पराक्रमी

भिन्नाभिन्न हे । भरतबीर । राजा होइ कर तुम्भे
भोग । आम्भर बचन कर मनरे आन न
धर, तुम्भरे आम्भर अनुराग हे ॥ २ ॥
शुणिण कैकेयीसुत, कर जोड़िण त्वरित,
जणाइले श्रीराम छामुरे । जहिँ उदे पूर्णशशी,
शुक्र कि ता आगे दिशि, अनुग्रह कर मोह ठारे
हे । रघुबीर । पिता जेबे मोते देले राष्ट्र ।
मुँ ताहा तुम्भंकु देलि, तुम्भर सेबक हेलि,
मो ठारे हुअ सदय दृष्ट हे ॥ ३ ॥
जेउँ भार मत्त करी, पृष्ठरे पारइ धरि, से
भार कि बहइ गयळ । राज्यकु नुहइ जोग्य,
तुम्भे करि पार भोग, सिंहबळि
भक्षे कि शृगाळ हे । रघुबीर । मोर मनोरथ
पूर्ण कर । देखिण सकळ लोक,
हरन्तु सकळ शोक, पृथिबीरे हुअ दण्डधर हे ॥ ४ ॥
राम सीउकार कले, भरत सुग्रीबे कहिले,
चारि समुद्रँ अणाअ जळ । एहा शुणि

भरत ! हम और तुम भिन्न नहीं हैं । राजा बनकर तुम भोग प्राप्त करो । तुम हमारा कहना मानो और इसे अन्यथा न समझो । तुमसे हमें अनुराग है । २ कैकेयीनन्दन भरत ने यह सुनकर शीघ्र ही हाथ जोड़कर श्रीराम से कहा, हे रघुवीर ! आप मुझ पर दया करें । जहाँ पूर्णमासी का चन्द्रमा उदय हो, उसके समक्ष शुक्र कैसा दिखाई देगा । यदि पिता ने राष्ट्र मुझे दिया है तो मैं उसे आपको समर्पित करता हूँ और आपका सेवक बन रहा हूँ । आप मेरे ऊपर दया की दृष्टि डालें । ३ मदमस्त हाथी जिस भार को पीठ पर धारण कर सकता है, क्या वही भार साधारण हाथी वहन कर सकता है । मैं राज्य के योग्य नहीं हूँ । आप उसका उपभोग कर सकते हैं । हे रघुवीर ! क्या सिंह की बलि को शृगाल खा सकता है । आप मेरे मनोरथ को पूरा करें । आपको देखकर सभी लोग शोक का परित्याग करें । आप पृथ्वी के दण्डधारी राजा बन जाएँ । ४ श्रीराम ने स्वीकार कर लिया । भरत ने सुग्रीव से चारों समुद्रों से जल मँगाने के लिए कहा । यह सुनकर कपियों के राजा सुग्रीव

कपिपति, पेषिले से ऋक्षपति, सुषेण
बेगदरशी नीळ से । रावणारि । भरतरे
अनुग्रह कले । पनीर लागि कराइ,
जटामान उपुड़ाइ, मार्ज्जना ताहांकु कराइले से ॥ ५ ॥
मार्ज्जना हेले लक्ष्मण, शत्रुघन सेहि क्षण,
भ्रत संगे होइले सुवेश । सुग्री बिभीषण
नेइ, पनीर लागि कराइ, तदन्ते मुचिले जति
बेश से । रावणारि । श्रीमुखे हेले पनीर
लागि, दाढ़ि नखान्त पकाइ, त्रिमुण्ड जटा
फेराइ, तिनि भ्रात करन्ति ओलगि से ॥ ६ ॥
सुबास जळरे स्नान, झीन वसने
पोछिण, त्रिमुण्ड से पुण शुखाइले ।
साजिले कुसुम चूळ, पिन्धिले पीत
दुकूळ, मुकुट कुण्डळ लागि हेले से ।
रावणारि । लागि हेले तड़ाउ रत्नर ।
कण्ठे चाप सरि हार, सुपदक शोहे उर,
करे कचटी वाहुटी हार से । ७ ॥
श्रीरत्न मुद्रिकाबर, शोभा दिशुअछि वर,
श्रीचरणे सुरत्न नूपुर । दोषड़ ए

ने जामवंत, सुषेण, वेगदर्शी तथा नील को भेजा । रावणारि श्रीराम ने भरत पर अनुग्रह किया । उबटन इत्यादि लगाकर, जटाओं को कटवाकर उन्हें स्नान कराया गया । ५ लक्ष्मण ने भी स्नान किया । उसी समय शत्रुघन ने भरत के साथ सुवेश धारण किया । सुग्रीव और विभीषण को भी स्नान-मार्जन कराकर श्रीराम ने अपने यतिवेश का त्याग किया । श्रीमुख में जल सिंचन करने के पश्चात् दाढ़ी और नाखून कटवाकर, तीनों सिरों से जटा कटवाकर तीनों भाई प्रणाम करने लगे । ६ सुवासित जल से स्नान करके झीन वस्त्र से पोंछकर तीनों ने अपने सिर सुखाये । फिर बालों के पुष्पों से सजाकर, पीताम्बर वस्त्र धारण करके श्रीराम ने मुकुट और कुण्डल धारण किये । रत्नों के गुच्छे के गुच्छे उन्होंने धारण किये । गले मे पदक वाला हार, हाथ में कंकण, वाहुओं में बाजूबन्द शोभा पा रहे थे । ७ रत्न की श्रेष्ठ मुद्रिका की शोभा दर्शनीय थी । श्रीचरणों में सुन्दर रत्न-जटित नूपुर शोभा पा रहे थे । शरीर में चंदन और कपूर

पीताम्बर, अंगे चन्दन कर्पूर,
अधिबास बीरबरंक से । राबणारि ।
धनुशर धरि बिशि बीरहींकि साजे से ।। ८ ।।

एकाशीतितम छान्द—अजोध्या नारींकर बिचार

राग–पुरबी

राम आगमन शुणि, अजोध्यापुर तरुणी,
एक आरकरे धाईंले जे । छाड़ि सुत बित्त घर,
बसने जे ततपर, लाजभयकु छाड़िले जे ।। १ ।।
चन्द्रबदनी । देखिले श्रीरामंक मुख ।
रति घेनि कि मदन, चढ़िण आसइ जान,
बिन्धिले स्मर बिशिख से ।। २ ।।
के बोइला थिला दाढ़ि, शोभा दिशुथिला बेढ़ि,
के बोलइ थिला जट गो । धरिछन्ति धनुर्बाण,
एटि माइले राबण, त्यजिले अजिनपट्ट गो ।। ३ ।।
के बोले अपूर्ब शोभा, मानस करइ लोभा, के

लगा था । उन्होंने पीताम्बर धारण कर रखे थे । यह पराक्रमी श्रीराम का अधिवास । बिशि कहता है कि रावण के शत्रु श्रीराम ने धनुष-बाण धारण करके वीर-बेश सुसज्जित कर लिया था । ८

छान्द ८१—अयोध्या की नारियों के विचार

राग–पूरवी

श्रीराम का आगमन सुनकर अयोध्यानगर की स्त्रियाँ एक के पीछे एक घर में बच्चों और धन को छोड़कर दौड़ पड़ी । उन्होंने वस्त्र, लाज और भय को भी छोड़ दिया । १ चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्रियो ने श्रीराम का मुख देखा । लगता था मानो रति को लेकर कामदेव ही बिमान पर चढ़कर आ रहा है । जिसने काम के वाण छोड दिये हो । २ कोई बोलती थी कि उनके तो दाढ़ी थी और उनकी बँधी हुई जटाएँ सुन्दर दिखाई दे रही थीं । वह धनुष-वाण लिये हैं, जिससे उन्होंने रावण को मारा है । उन्होंने अजिन वस्त्र का त्याग कर दिया है । ३ कोई कह रही थी कि उनकी अपूर्व शोभा हमारे मन को लुभा रही है । किसी ने कहा, वह तो नवयुवक है । कोई बोली कि इन्द्र ही शची को अंक में लेकर सेना

बोलइ नबजुबा गो। के बोलइ कि मघबा, शचीङ्कि
घेनि कोळे बा, अजोध्या सैन्य कि अबा गो ॥ ४ ॥
के बोलइ महाबाहु, जुगे जुगे राजा हेउ,
आम्भंकु से सुख देउ गो। एमन्त बोलि तरुणी,
एके आरके भाषिणी, बिशि बोले दुःख दहु गो ॥ ५ ॥

द्व्यशीतितम छान्द—रामंक अजोध्या नवरकु विजय

राग—मंगळ गुज्जरी

हेम रहुबर चढ़ि रघुकुळ बीर।
बाम करे कोदण्ड दक्षिण करे शर ॥
बेनि पाशे शोभा दिशुअछि तूणभार।
जनकनन्दिनी बिजे बाम पारश्वर ॥
श्वेत छत्र धरिछन्ति शत्रुघन बीर।
भरत रथ बाहान्ति सधीर सधीर ॥
बेनि पारुशे लक्ष्मण बिभीषण बेनि।
बेनि श्वेत चामर ढाळन्ति करे घेनि ॥
महागज आरोहण करि कपिपति।
पटुआर करि आगे चळाउ अछन्ति ॥ १ ॥

के साथ अयोध्या में आ गया हो। ४ कोई कह रही थी कि महाबाहु युग-युग राजा होकर हमें सुख प्रदान करें। विशि कहता है कि इस प्रकार एक तरुणी दूसरी से कहकर अपने दुःख को दग्ध कर रही थी। ५

छान्द ८२—राम का अयोध्यानगर में प्रवेश

राग—मंगलगुर्जरी

स्वर्ण के रथ पर रघूकुल में वीर श्रीराम के बायें हाथ में कोदंड और दाहिने में बाण था। दोनों ओर तरकश शोभा पा रहे थे। बायीं ओर जनकनन्दनी विराजमान थीं। पराक्रमी शत्रुघ्न ने श्वेतछत्र धारण कर रखा था। भरत धीर भाव से रथ चला रहे थे। दोनों ओर लक्ष्मण और विभीषण दोनों हाथों में श्वेत चामर डुला रहे थे। कपिपति सुग्रीव गजराज पर चढ़कर जुलूस को आगे चला रहे थे। १

हनु अंगद जाम्बब सुषेण जे नीळ ।
गजोपरे चढ़िछन्ति बिशाळ बिशाळ ॥
एहि रूपे गज चढ़ि जूथपति माने ।
अश्व सुखासने बसिछन्ति आउमाने ॥
मणिमय आभरणे दिशुछन्ति तोरा ।
शक्र संगे बहुत देबता थिला परा ॥
अग्रे द्विजमाने करुछन्ति बेदध्वनि ।
दधि सरा मोदक के करे छन्ति घेनि ॥
मंगळ अष्टक पढ़छन्ति जउतिषे ।
भाट कएवार करु अछन्ति बिशेषे ॥ २ ॥
गणिकाए पटुआर नृत्य करुछन्ति ।
चतुरंग बळ धीरे धीरे चळि जान्ति ॥
बिबिध छत्र बिबिध पताका सुन्दर ।
बिबिध बाद्य नादरे पूरे सुरपुर ॥
श्रीजगन्नाथ कि नब दिन जात्रा सारि ।
नन्दिघोषे चढ़ि कि बाहुड़ा बिजे करि ॥
राबण संहारि जय लक्ष्मी घेनि अबा ।
रामचन्द्र दिशुछन्ति सेहि रूपे शोभा ॥
रामचन्द्र देखिण अजोध्यापुरबासी ।
आनन्द होइण महा गहळरे पशि ॥ ३ ॥

हनुमान, अंगद, जामवंत, सुषेण और नील बड़े-बड़े हाथियों पर चढ़े थे। इसी प्रकार यूथपति भी हाथियों पर सवार थे। अन्य लोग घोड़े तथा पालकियों पर बैठे थे। मणिमय आभूषणों से छविवंत दिखाई दे रहे थे। इन्द्र के बहुत से देवता थे। आगे-आगे ब्राह्मण लोग वेदध्वनि कर रहे थे। कोई दही और लड्डू आदि लेकर चल रहे थे। ज्योतिषी मंगलाष्टक का पाठ कर रहे थे। भाट विशेष प्रकार से गुणों का बखान कर रहे थे। २ गणिकायें चतुरता से नाच रही थीं। चतुरंगिनी सेना धीरे-धीरे चल रही थी। नाना प्रकार के छत्र और अनेक सुन्दर पताकाओं तथा विभिन्न प्रकार के वाद्य नाद से सारा नगर स्वर्गलोक के समान प्रतीत हो रहा था। लगता था जैसे श्री जगन्नाथ जी नौ दिन की यात्रा समाप्त करके नन्दीघोष पर चढ़कर वापसी यात्रा कर रहे हो। रावण का संहार करके विजयलक्ष्मी को लेकर श्री रामचन्द्र जी की शोभा उसी के

के बोलइ बरि कि आसइ वसुन्धरी ।
आउ थरे बिभा अबा करिबा कुमारी ॥
प्रबेश होइले जाइ अजोध्या कटके ।
शङ्कर भुबन प्राय दिशइ छटके ॥
द्वारे द्वारे रम्भा बृक्ष हेम पूर्ण कुम्भ ।
समस्त पुर मण्डित दिशइ आरम्भ ॥
राम पूर्णचन्द्र देखि अजोध्या नबर ।
तेणु करि उछुळुछि कि अबा सागर ॥
सिंहद्वार देखि राम जानु ओह्लाइले ।
नगर भितरकु बिजय करि गले ॥ ४ ॥
सीतांकु घेनिण गले प्रिय सखीगणे ।
बहुत आनन्द हेले सर्ब राणी माने ॥
बिजे कले श्रीराम सुबर्ण सिंहासने ।
सुग्रीबंकु बसा देले आपणा भबने ॥
बिभीषण रहिले लक्ष्मणंकर पुर ।
ऋक्ष कपि राक्षसे पाइले दिव्य घर ॥
जण जण के चरचा कले भरत वीर ।
दिव्य आसनमानंके पूरिला नबर ॥

समान लग रही थी । श्रीरामचन्द्र को देखकर अयोध्यापुर के निवासी प्रसन्न होकर अत्यन्त चहल-पहल में मग्न हो गये । ३ कोई बोलता था कि पृथ्वी आज वरण करके आ रही है । अथवा यह कुमारी फिर से एक बार विवाह करेंगी । वह लोग अयोध्या के दुर्ग में जाकर प्रविष्ट हुए । जिसकी शोभा इन्द्र के भुवन के समान चकमका रही थी । प्रति द्वार केले के वृक्ष और जलपूरित हेमकुम्भ थे । आरम्भ से ही सारा नगर मण्डित दिखाई दे रहा था । श्रीराम को देखकर सम्पूर्ण अयोध्यानगर उद्वेलित हो रहा था । जैसे पूर्णिमा के चन्द्रमा को देखकर समुद्र उछलने लगता है । सिंहद्वार को देखकर श्रीराम रथ से उतरकर नगर के भीतर जा पहुँचे । ४ प्रिय सखियाँ सीता को लेकर गयीं, जिससे सभी रानियाँ बहुत प्रसन्न हो गयीं । श्रीराम स्वर्ण के सिंहासन पर विराजमान हो गये । उन्होंने सुग्रीव को अपने महल में ठहरा दिया । विभीषण लक्ष्मण के महल में रहे । रीछ, वानरों और राक्षसों को दिव्य घर दिये गये । पराक्रमी भरत ने एक-एक की सेवा और सत्कार किया । सारा

महा आनन्दे रहिले चतुरंग बळ ।
बिशि मति राम पाद कमळे भ्रसळ ॥ ५ ॥

त्र्यशीतितम छान्द—श्रीरामंक अभिषेक

राग–मंगळ धनाश्री

एथु अनन्तरे शुण रस । श्रीरामंक चरित पीयूष ।
अधिबास मण्डप मण्डणि । तहिँ अधिबास रघुमणि ॥ १ ॥
अधिबास कले तीर्थ जळ । नृत्य गीते रजनी चहळ ।
प्रातु शीघ्रे श्रीराम माजणा । तड़ाउ लागि राबणजिणा ॥ २ ॥
मुकुट कुण्डळ बीर चूळ । हृदरे पदक पद्ममाळ ।
कण्ठे चाप सरि हृदे हार । बाहुबन्ध शोहे सुबाहुर ॥ ३ ॥
मणिबन्धे कंकण कचटि । सुरत्न मेखळा शोहे कटि ।
श्रीपयरे तड़ाउ नूपुर । मुद्रिका मण्डित अंगुळिर ॥ ४ ॥
हेम सम विचित्र अम्बर । लागि होइले सुन्दर बर ।
खण्डा जमदाढ़ कटि देश । बेनि तूणी भार बेनि पाश ॥ ५ ॥

महल दिव्य आसनों से भर गया। चतुरंगिनी सेना आनन्दपूर्वक ठहर गयी। विशि की बुद्धि श्रीराम के चरण-कमल में भ्रमर के समान लगी है। ५

छान्द ८३—श्रीराम का अभिषेक

राग–मंगल धनाश्री

इसके अनन्तर हे श्रीराम ! चरित्रामृत का रसास्वादन करो। सजे हुए अधिवास-मण्डप में रघुकुल में मणि के समान श्रीराम ने वहीं अधिवास किया। १ उन्होंने तीर्थ-जल से अधिवास किया। रात्रि में नृत्य और गीत की भरमार रही। प्रात.काल शीघ्र ही मार्जन करके रावण-विजेता श्रीराम ने रत्नों के गुच्छे धारण किये। २ मुकुट-कुण्डल सिर और कानों में पहने। हृदय में कमल की माला तथा स्वर्ण के नाना प्रकार के कंठे और हार धारण किये। बाहुओं में बाजूबन्द शोभित थे। ३ कलाई में कंकण और कमर में रत्नों की करधनी शोभा पा रही थी। श्रीचरणों में गुच्छे के गुच्छे नूपुर तथा उँगलियाँ मुद्रिकाओं से सजी थीं। ४ स्वर्ण के स[illegible] विचित्र [illegible] पहनकर उन्होंने कटि-प्रदेश में यमराज की दाढ़ के [illegible] [illegible]ो। दोनों ओर दो तरकश [illegible] रहे थे। ५

बामे कोदण्ड दक्षिणे शर । घेनि अछन्ति से बीरबर ।
उच्च कनक बेदिका पुर । नबरत्न मण्डप सुन्दर ।। ६ ।।
रत्न कळसी परे पताका । वीर मानंक बिजे कि एका ।
चउपाशे शोहे दिव्यपुर । मेला काठे मण्डणि अपार ।। ७ ।।
से बेदिका परे सिंहासन । तहिँ बिजे श्रीराम राजन ।
सुबेश होइ जनक जेमा । राम बाम पाशे बिजे रामा ।। ८ ।।
बिभीषण सुग्रीब ए बेनि । चामरे चामरे छन्ति घेनि ।
बेनि पाशे बिचे धीर धीर । श्वेत छत्र शत्रुघन कर ।। ९ ।।
भ्रत लक्ष्मण बेनि पारुश्वे । तीर्थजळ घेनिण कळसे ।
बशिष्ठादि पुरोहित मिळि । जळ ढाळिले राम मउळि ।। १० ।।
तदन्तरे पुनि द्विज माने । अभिषेक कले साबधाने ।
तदन्ते भ्रत लक्ष्मण बेनि । अभिषेक कले जळ घेनि ।। ११ ।।
तदन्ते क्षत्रिय जोद्धा बीरे । अभिषेक कले राम शिरे ।
तदन्तरे दिव्य नारीकुळ । अभिषेक कले शिरे जळ ।। १२ ।।
तदन्तरे मंत्री माने मिळि । अभिषेक से कले मउळि ।
तदन्ते बेश्या अजोध्याबासी । अभिषेक कले जळराशि ।। १३ ।।

बायें हाथ में कोदंड (धनुष) और दाहिने में बाण वीर श्रेष्ठ श्रीराम ने धारण कर रखा था। ऊँची स्वर्ण की वेदिका पर नवरत्नों के सजे हुए सुन्दर मण्डप शोभायमान हो रहे थे। ६ रत्नकलशों पर लगी हुई पताका मानों वीरों की उपस्थिति को दरसा रही थी। चारों ओर दिव्य सदन नाना प्रकार की पच्चीकारी से सुशोभित हो रहे थे। ७ उस वेदी पर सिंहासन था। जिस पर राजा राम सुन्दर वेश से सुसज्जित जनक-दुलारी को वाम भाग में लिये हुए विराजमान थे। ८ विभीषण और सुग्रीव, यह दोनों एक-एक चामर लेकर दोनों ओर धीरे-धीरे डुला रहे थे। शत्रुघ्न के हाथों में श्वेतछत्र था। ९ भरत और लक्ष्मण दोनों ओर तीर्थ-जल से भरे कलश लिये खड़े थे। वशिष्ठ आदि पुरोहितों ने मिलकर श्रीराम के सिर पर जल डाल दिया। १० उसके पश्चात् फिर से ब्राह्मणों ने सावधानी के साथ अभिषेक किया। इसके बाद भरत और लक्ष्मण ने जल लेकर अभिषेक किया। ११ तदनन्तर पराक्रमी क्षत्री योद्धाओं ने श्रीराम के सिर पर अभिषेक किया। उसके पश्चात् सुन्दर नारियों ने सिर पर जल डालकर अभिषेक किया। १२ फिर मन्त्रियों ने मिलकर श्रीराम के सिर पर अभिषेक किया। तदनन्तर अयोध्यानिवासी वैश्यों

पुष्या नक्षत्र कंकड़ाशशी । पुष्या पूर्णमीरे गुरु मिशि ।
से दिन श्रीराम अभिषेक । ख्यात होइला सकळ लोक ।। १४ ।।
बाजइ बिबिध बाद्यमान । शुभुअछि शक्रर भुबन ।
जाणि शक्र अभिषेक काळ । देले देब बेनि रत्नमाळ ।। १५ ।।
माळे तहुँ अगे लागि हेले । आर माळ जानकींकि देले ।
आकाशे मिळि अमरलोक । रामे कले पुष्प अभिषेक ।। १६ ।।
ऋक्ष राक्षस बानर नर । पटुआरे रहिछन्ति दूर ।
नृत्य कले बार नारीगण । सुसंगीत शास्त्रर प्रमाण ।। १७ ।।
अभिषेक जेणु हुए शेष । श्रीराम सुग्रीब राइ पाश ।
देले ताहांकु गळार हार । पउरुष कलेक अपार ।। १८ ।।
अंगदकु देले अंगच्छद । होइला से बहुत प्रमोद ।
हनुकु देले मुकुतामाळा । देले माळा बिभीषण गळा ।। १९ ।।
जूथपति समस्ते पाइले । बहु हृष्ट ऋक्षपति हेले ।
सीता देले हनुबीरे हार । लम्बाइले हनु ताहा उर ।। २० ।।
देइ देबी संतोष होइले । जेउँ माळा शक्र देइ थिळे ।
हनुकु राइण देबी पाश । देले से माळा ता ग्रीबा देश ।। २१ ।।

ने अभिषेक किया । १३ पुष्य नक्षत्र में कर्क राशि का चन्द्रमा था । पुष्य की पूर्णिमा में गुरु मिला हुआ था । उसी दिन श्रीराम का अभिषेक सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध हो गया । १४ नाना प्रकार के वाद्यों का निनाद स्वर्ग तक सुनायी पड़ रहा था । इन्द्र ने अभिषेक काल जानकर देवताओं द्वारा रत्न की दो मालाएँ भेजीं । १५ एक माला श्रीराम को पहना दी । और दूसरी माला जानकीजी को समर्पित कर दी । आकाश में देवताओं ने एकत्रित होकर श्रीराम के ऊपर फूलों का अभिषेक किया । १६ रीछ, राक्षस, वानर और मनुष्य घेरा बनाकर दूर खड़े थे । वेश्याओं के समूह सुन्दर शास्त्रीय संगीत के अनुसार नृत्य कर रहे थे । १७ जब भिषेक समाप्त हो गया तो श्रीराम ने सुग्रीव को पास बुलाकर उनके गले में हार पहनाकर उनकी अपार प्रशंसा की । १८ अंगद को उन्होंने अंगच्छद प्रदान किया । जिसे पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ । हनुमान को मुक्ताओं की माला प्रदान की । उन्होने एक माला बिभीषण के गले में डाल दी । १९ सभी यूथपतियों ने भी माला प्राप्त की । जामवंत बहुत प्रसन्न हुए । सीता ने एक हार लेकर हनुमान के गले में डाल दिया । २० देवी सीता ने संतुष्ट होकर जो माला इन्द्र ने दी थी उसे भी हनुमान को बुलाकर

देखि ता राघब हेले तोष । आज्ञा देले हनु आस आस ।
तुम्भंकुहिँ आम्भे बर देबा । सबुदिने करुथिब सेबा ।। २२ ।।
जेते दिन राम नाम थिब । तेते दिन अमर होइब ।
तुम्भंकु सेबिब जेउँ नर । कार्य्यसिद्धि होइब ताहार ।। २३ ।।
जेउँ बने तुम्भे कपि थिब । से बने समस्त फल हेब ।
बर पाइण मारुति हृष्ट । शुणि सर्ब कपि हेले तुष्ट ।। २४ ।।
शुणि बिभीषण कपिबळ । मेलाणि मागिले सेहि काळ ।
तारा रोमा सुग्रीबंक राणी । बस्त्र अळंकार देले आणि ।। २५ ।।
राम तहुँ पाइ पउरुष । बसाकु गले होइ हरष ।
राम छामुकु राइ लक्ष्मण । बोलन्ति हे कर मंत्रीपण ।। २६ ।।
लक्ष्मण सीउकार न कले । मनरे एमन्त बिचारिले ।
समस्ते बोलिबे मंत्री हेले । एथंकुटि संगे जाइ थिले ।। २७ ।।
लक्ष्मणर नास्ति कला जाणि । भरतकु राइण रघुमणि ।
देले तांकु मंत्रीपणे शाढ़ी । भरत जणाइले कर जोड़ि ।। २८ ।।

उनके गले में डाल दी । २१ उसे देखकर श्रीराम बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने हनुमान से कहा, आओ हम भी तुम्हें वर देंगे । सब दिन सेवा करते रहना । २२ जितने दिन तक राम-नाम रहेगा उतने दिनों तक तुम अमर रहोगे । जो व्यक्ति तुम्हारी सेवा करेगा । उसके कार्य सिद्ध होंगे । २३ हे कपि ! तुम जिस वन में भी रहोगे वह वन समस्त प्रकार के फलों से युक्त रहेगा । वर पाकर हनुमानजी प्रसन्न हो गये और यह सुनकर सभी वानर संतुष्ट हुए । २४ विभीषण और वानरों की सेना ने तब विदाई माँगी । श्रीराम ने सुग्रीव की रानी तारा और रोमा को वस्त्र और अलंकार लाकर दिये । २५ राम पुरुषार्थ प्राप्त करके प्रसन्न होकर घर को गये । श्रीराम ने लक्ष्मण को बुलाकर कहा कि तुम मंत्री का पद सम्भालो । २६ लक्ष्मण ने उसे स्वीकार नहीं किया । उन्होंने मन में ऐसा विचारा कि सभी लोग कहेंगे कि यह मंत्री हो गये, इसीलिए सम्भवतः ये साथ गये थे । २७ लक्ष्मण के मना करने पर रघुमणि राम ने भरत को बुलाकर उन्हें सरोपा प्रदान करके मंत्री पद दिया । तब भरत ने हाथ जोड़कर कहा । २८ हे प्रभु ! सुमन्त्र के साथ आठ मंत्रियों को सरोपा

अष्टमंत्री सुमंत्र संगर । ए मानंकु शाढ़ी आज्ञा कर ।
शुणि राम देले शाढ़ो मान । अभिषेक होइला सम्पूर्ण ॥ २९ ॥
सीता घेनि दिव्य पुरे बिजे । समस्ते रहिले जे झा कार्य्ये ।
जुद्धकाण्ड होइला सम्पूर्ण । राम पादे दीन बिशि मन ॥ ३० ॥

॥ लंकाकाण्ड समाप्त ॥

प्रदान करें। राम ने यह सुनकर उन सबको पगड़ी बाँध दी। इस प्रकार अभिषेक सम्पूर्ण हुआ। २९ श्रीराम सीता को लेकर दिव्य महल में विराजमान हुए और समस्त लोग अपने कार्यों में लग गये। श्रीराम के चरणों में दीन विशि का मन लग गया और युद्धकाण्ड पूर्ण हो गया। ३०

॥ लंकाकाण्ड समाप्त ॥

उत्तराकाण्ड

प्रथम छान्द—रामंक निकटे अगस्तिक प्रबेश

राग—मंगळ गुज्जरी

अभिषेक आरदिन देब राबणारि ।
सुग्री बिभीषण भ्रत घेनि सभा करि ।। १ ।।
बशिष्ठ जाबाळि पुरोहित मंत्री माने ।
महाराजा माने छन्ति श्रीराम आस्थाने ।। २ ।।
एमन्त समये द्वारी जणाइला जाइँ ।
अगस्ति अछन्ति सिंहद्वारे उभा होइ ।। ३ ।।
समस्त ऋषिमानंकु संगतरे घेनि ।
एमन्त जणाइ शिरे देला कर बेनि ।। ४ ।।
राम आज्ञा देले से ऋषिकि घेनि अस ।
पूजा करि आणिबटि न करिबे रोष ।। ५ ।।
आज्ञा पाइ द्वारपाळ बेगे चळिगला ।
बहु पूजा करि तांकु छामुकु आणिला ।। ६ ।।
देखि राम सिंहासनु बेगे ओह्लाइले ।
चरण छुइँण तांकु नमस्कार कले ।। ७ ।।

छान्द १—श्रीराम के निकट अगस्ति का प्रवेश

राग—मंगल गुर्जरी

अभिषेक के अगले दिन रावण के शत्रु श्रीराम सुग्रीव, विभीषण और भरत को लेकर सभा कर रहे थे । १ वशिष्ठ, जाबालि पुरोहित और मंत्री तथा अन्य राजा लोगों के बीच में श्रीराम सिंहासन पर विराजमान थे । २ इसी समय द्वारपाल ने जाकर कहा कि सिंहद्वार पर अगस्ति ऋषि खड़े हैं । ३ समस्त ऋषियों को साथ लेकर वह उपस्थित हुए हैं । ऐसा कहकर उसने हाथ सिर से लगा लिये । ४ राम ने ऋषि को ले आने की आज्ञा दी । और कहा कि पूजा करके लाने पर वह क्रुद्ध नहीं होंगे । ५ आज्ञा पाकर द्वारपाल शीघ्रता से चला गया और बहुत पूजा करके उन्हें श्रीराम के समक्ष ले आया । ६ उन्हें देखते ही श्रीराम शीघ्रतापूर्वक सिंहासन से उतर पड़े । उन्होंने उनके चरण छूकर नमस्कार किया । ७ एक-एक का पूजन और सम्मान करके उन्हें सुन्दर

जण जण करे तांकु पूजा मान्य कले।
सुबर्ण आसनमान समस्तंकु देले ॥ ८ ॥
अगस्ति बोलन्ति राम थिलु घोर बने।
अभिषेक शुणि आसिअछुँ हृष्टमने ॥ ९ ॥
देबता ऋषि मानंकु देल हे अभय।
राबणकु मारि जाहा लंका कल जय ॥ १० ॥
भाग्य बळे नेत्रे आम्भे देखिलुँ तुम्भंकु।
महासुखी कराइलुँ नयन मनकु ॥ ११ ॥
राबण कुम्भकर्णकु जाहा निबारिल।
महीरे अश्रुत अलौकिक कर्म कल ॥ १२ ॥
एथु अत्यन्त निःसह राबणीर बध।
देखि चकित होइले सकळ बिबुध ॥ १३ ॥
राम सम्भाषिले जे राबण महाबीर।
तांकु किपाँ प्रशंसा न कल मुनिबर ॥ १४ ॥
जेबे मुहिँ शुणिबाकु होइबि भाजन।
तेबे मोते समस्त कहिब तपोधन ॥ १५ ॥
मुनि बोलन्ति समस्त कथा जाणु आम्भे।
साबधान होइण शुणिब एबे तुम्भे ॥ १६ ॥
ब्रह्मांकर नन्दन पुलस्ति मुनिबर।
समस्ते जे बोलन्ति द्वितीय कुशधर ॥ १७ ॥

वर्ण के आसनों पर बैठा दिया गया। ८ अगस्ति ने कहा, मैं घोर वन में था। अभिषेक की बात सुनकर प्रसन्न मन से आया हूँ। ९ आपने रावण को मार करके लंका को जीतकर देवताओं और ऋषियों को अभय प्रदान किया है। १० भाग्य के बल से हमने अपने नेत्रों से आपका दर्शन करके नेत्रों और मन को महान सुख की उपलब्धि करायी है। ११ आपने रावण और कुम्भकर्ण का संहार करके पृथ्वी पर कभी न सुना जानेवाला अलौकिक कार्य किया है। १२ इससे भी अत्यधिक असहनीय इन्द्रजित् का वध था जिसे देखकर सारे देवता चकित हो गये। १३ श्रीराम ने कहा कि रावण तो अत्यन्त वीर था। हे मुनिश्रेष्ठ ! आपने उसकी प्रशंसा क्यों नहीं की। १४ यदि मैं उसके सुनने का योग्य पात्र हूँ तो हे तपोधन ! उसे हमसे कहिये। १५ मुनि ने कहा कि मैं सब कुछ जानता हूँ। अब आप सावधान होकर सुनें। १६ ब्रह्मा के पुत्र मुनि-

तप करिबाकु मेरु पाशकु से गले ।
तृणबिन्दु मठ किछि दूररे देखिले ॥ १८ ॥
मनोरम स्थान मेरु पाशे देखि मुनि ।
बेदाध्ययन करन्ति दिबस रजनी ॥ १९ ॥
ऋषिकन्या माने से ठाबरे रुण्ड होइ ।
क्रीड़ा कले से ऋषिक खण्डे दूर थाइ ॥ २० ॥
के बीणा बाद्य बजाइ के गाहुन्ति गीत ।
उन्मत्ते सकळ कन्या होइथान्ति मत्त ॥ २१ ॥
से कन्यांक मुखराब देबंक निरोध ।
एमन्त जाणिण मुनि कले महा क्रोध ॥ २२ ॥
से कन्या मानंकु मुनि राइ आज्ञा देले ।
एठाकु अइले गर्भ होइब बोइले ॥ २३ ॥
आजक मात्रक दोष कलुँ आम्भे क्षमा ।
कालि अइले जे गर्भ हेब सर्ब बामा ॥ २४ ॥
कन्या माने निबर्त्तिले ऋषि बाक्य शुणि ।
तृणबिन्दु नन्दिनी न थिले ताहा जाणि ॥ २५ ॥
आर दिन खेळिबाकु गले से सुमुखी ।
सखी मानंकु न देखि होइले से दुःखी ॥ २६ ॥

श्रेष्ठ पुलस्त्य हैं। जिन्हें सभी लोग द्वितीय ब्रह्मा कहते हैं। १७ वह तपस्या करने के लिए मेरु पर्वत के निकट गये। उन्होंने कुछ दूर से तृणबिन्दु का मठ देखा। १८ मेरु पर्वत के निकट उस मनोरम स्थान को देखकर मुनि रात-दिन वेदाध्ययन करने लगे। १९ ऋषिकन्याएँ उस स्थान पर एकत्रित होकर ऋषि से थोड़ी दूर पर क्रीड़ा करने लगीं। २० कोई वीणा बजाती थी, कोई गीत गाती थी। उन्मत्त होकर सारी कन्यायें मस्त हो रही थीं। २१ उन कन्याओं के मुख का शब्द बाधा देनेवाला था। ऐसा जानकर मुनि ने अत्यन्त क्रोध किया। २२ उन्होंने कन्याओं को बुलाकर आज्ञा दी। यदि तुम लोग यहाँ आओगी तो गर्भवती हो जाओगी। २३ केवल आज के दोष को हम क्षमा किये दे रहे हैं। कल आने से सभी गर्भवती हो जाओगी। २४ ऋषि के वचन सुनकर कन्यायें लौट गयीं। तृणबिन्दु की पुत्री को यह बात नहीं पता थी। २५ अगले दिन वह सुमुखी खेलने के लिए गयी। सखियों को न देखकर वह दुःखी हो गई। ऋषि के शापवश वह सुन्दरी

ऋषिक आज्ञारु से सुन्दरी गर्भ हेले ।
तृणबिन्दु ऋषि जोगबळरे जाणिले ।। २७ ।।
कन्याकु घेनिण पुलस्तिक पाशे गले ।
दुहितार कर धरि समर्पिण देले ।। २८ ।।
भो मुनि तुम्भंकु सेबा करु तपस्थाने ।
तुम्भंकु ए दुहिताकु देलि तोषमने ।। २९ ।।
शुणिण पुलस्ति तांकु अंगीकार कले ।
आपणा शापरु गर्भ होइछि जाणिले ।। ३० ।।
बोलन्ति बेदाध्ययन हेला तोर गर्भ ।
एथु जेउँ पुत्र हेब होइब दुर्ल्लभ ।। ३१ ।।
एमन्त किछि दिनान्ते होइला जनम ।
बिश्रवा ऋषि बोलिण देले तार नाम ।। ३२ ।।
द्वितीय ब्रह्मा प्राय बिश्रबा महाऋषि ।
बहु तप कले मेरु उत्तर रे बसि ।। ३३ ।।
भरद्वाज मुनिक जेमाकु बिभा हेले ।
पुत्र कामना करिण पुणि तप कले ।। ३४ ।।
बिश्रबा ऋषिरु बैश्रवण हेले जात ।
सुलक्षण बोलि कोळे घेनि जगत्तात ।। ३५ ।।

गर्भवती हो गई । तृणबिन्दु ऋषि ने योग के बल से यह जान लिया । २६-२७ वह कन्या को लेकर पुलस्त्य के पास गये और कन्या का हाथ पकड़कर उन्हें समर्पण कर दिया । २८ उन्होंने कहा, हे मुनि ! इस तप के स्थान पर यह आपकी सेवा करेगी । मैं प्रसन्न मन से इस कन्या को आपको समर्पित कर रहा हूँ । २९ यह सुनकर पुलस्त्य ने उसे अंगीकार कर लिया । और यह जान गये कि उनके ही शाप से उसे गर्भ हुआ है । ३० वह बोले वेदाध्ययन ही तेरा गर्भ बन गया । इससे जो भी पुत्र होगा वह दुर्लभ होगा । ३१ इस प्रकार कुछ दिनों में पुत्र हुआ जिसका नाम विश्रवा ऋषि रखा गया । ३२ महर्षि विश्रवा द्वितीय ब्रह्मा के समान थे जिन्होंने मेरु पर्वत के उत्तर में बैठकर बहुत तपस्या की । ३३ उन्होंने भरद्वाज मुनि की पुत्री से विवाह किया और पुत्र की कामना करके पुनः तपस्या की । ३४ विश्रवा ऋषि से वैश्रवण उत्पन्न हुए । उन्हें लक्षणों से युक्त जानकर जगत-पिता ने

दिगपाळ करिबे बोलिण बिचारिले ।
से बइश्रबण बहु तप आचरिले ॥ ३६ ॥
सहस्र बरष जाए कले अम्बुपान ।
सहस्र बरषे कले पबन अशन ॥ ३७ ॥
पुणि सहस्रे बरष किछि न खाइले ।
एणु करि धाता तांकु प्रसन्न होइले ॥ ३८ ॥
से बइश्रबणकु देले कुबेर पण ।
दिगपाळ होइले खटिले जक्षगण ॥ ३९ ॥
धाता निर्माण करि देले पुष्पक जान ।
मनोरथ कले बुले चउद भुबन ॥ ४० ॥
तांक बरकु पाइण पितांकु कहिले ।
कुबेर करिण मोते स्थान ता न देले ॥ ४१ ॥
पिता आज्ञा देले लंकापुर भोग कर ।
शून्य होइअछि पूर्बे थिलेक असुर ॥ ४२ ॥
पिता आज्ञा पाइ लंकापुरी कले स्थान ।
प्रत्यह जाइं तांकु करन्ति दर्शन ॥ ४३ ॥
राम पचारन्ति पूर्बे लंके दैत्य थिले ।
के ताहांकु माइले से माने केणे गले ॥ ४४ ॥

गोद में लेकर दिग्पाल बनाने का विचार किया। उन वैश्रवण ने बहुत तपस्या की। ३५-३६ हज़ार वर्ष पर्यन्त वह जल पीते रहे। हज़ार वर्ष तक वायु भक्षण करते रहे। ३७ फिर एक हज़ार वर्ष उन्होंने कुछ नहीं खाया, तब ब्रह्मा उनसे प्रसन्न हुए। ३८ उन्होंने वैश्रवण को कुबेर बना दिया। वह दिग्पाल हो गये और यक्षगण उनकी सेवा करने लगे। ३९ ब्रह्मा ने उन्हें पुष्पक विमान बनाकर दिया। जो इच्छा करते ही चौदह लोकों में भ्रमण करता था। ४० उनके वर को पाकर उसने पिता से कहा कि कुबेर तो बना दिया, परन्तु मुझे कोई स्थान नहीं दिया। ४१ पिता ने आज्ञा दी कि लंकापुर का भोग करो। पहले वहाँ राक्षस रहते थे इस समय खाली पड़ी है। ४२ पिता की आज्ञा पाकर उन्होंने लकापुरी को अपना स्थान बनाया और प्रत्येक दिन जाकर उनके दर्शन करने लगा। ४३ श्रीराम ने पूछा कि पहले लंका में दैत्य थे। किसने उन्हें मारा, और वह कहाँ गये ? ४४ हे मुनिवर! यह

ए कथा बिस्तारि मोते कह मुनिबर ।
भणे बिशि अहर्निशि श्रीराम पयर ॥ ४५ ॥

द्वितीय छान्द—जक्ष-राक्षसंक जन्म

राग–मुनिबर बाणी

कहन्ति कुम्भकुमर । शुणि आहे रघुबीर ।
पचारिल तुम्भे जाहा । कहिबा ताहा जे ॥ १ ॥
पद्मजोनि जन्म हेले । आगे जळ जात कले ।
पच्छे पुरुषेक जात । कलेक तात जे ॥ २ ॥
आज्ञा देले तांकु चाहिँ । ए जळ रखिब जाइँ ।
आज्ञा पाइण से गले । जळ रखिले जे ॥ ३ ॥
केते हेँक काळ अन्ते । जळ सेहि रखिजान्ते ।
क्षुधा तृषारे आकुळ । हेले सकळ जे ॥ ४ ॥
थोके लोके मन कले । जळ पिइबा बोइले ।
थोके कले ताहा नाहिँ । सभय होइ जे ॥ ५ ॥
नाहिँ जेउँ माने कले । से माने राक्षस हेले ।
पिइब जेते बोइले । जक्ष होइले जे ॥ ६ ॥

कथा हमसे विस्तार-पूर्वक कहिये । विशि दिन-रात श्रीराम के चरणों की चर्चा करता है । ४५

छान्द २—यक्ष और राक्षसों का जन्म

राग–मुनिबर बाणी

अगस्ति ने कहा, हे रघुवीर ! आपने जो पूछा है उसे मैं कहूँगा । १ पद्मयोनि ब्रह्मा के उत्पन्न होने पर उन्होंने जल उत्पन्न किया । उसके बाद एक पुरुष पैदा हुआ जिसे ब्रह्माजी ने उत्पन्न किया था । २ उन्होने उसे जल की रक्षा करने की आज्ञा दी । आज्ञा पाकर वह गया और जल की रक्षा करने लगा । ३ उसने अधिक समय तक जल को सुरक्षित रखा । तभी समस्त प्राणी क्षुधा और तृषा से व्याकुल होने लगे । ४ कुछ प्राणियों ने जल पीने की इच्छा प्रकट की । कुछ लोग डर से बोले कि वह ऐसा नहीं करेंगे । ५ जिन लोगों ने मना किया था वह राक्षस हो गये और जिन्होंने कहा था कि हम पियेंगे वह यक्ष हुए । ६ राक्षसकुल में

राक्षस कुळरे जात । हेति प्रहेति बिख्यात ।
प्रहेति बिभा नोहिला । हेति होइला जे ।। ७ ।।
काळभग्नी सर्बा नारी । हेला हार मनोहारी ।
रसिण सर्बार संगे । बिबिध रंगे जे ।। ८ ।।
से जन्म कला कुमर । महाकन्दर उपर ।
पकाइ ताहाकु गला । सेहि रोधिला जे ।। ९ ।।
भ्रमन्ते शिब गउरी । रोदन शुणि ताहारि ।
पुत्र प्राय तांकु कले । सुबर देले जे ।। १० ।।
नाम देले बिद्युत्केश । बर पाइ से हरष ।
पितांक सन्निधे गला । सबु कहिला से ।। ११ ।।
शाळकटाकटी नारी । तांकु पिता बिभा करि ।
तहिँरु जात सुकेश । महाराक्षस जे ।। १२ ।।
एक पक्षरु कुमारी । सुकेशकु बिभा करि ।
सहुँ जात तिनि पुत्र । से बळबन्त जे ।। १३ ।।
माल्यबन्त तांक ज्येष्ठ । माळी सुमाळी कनिष्ठ ।
बहु काळ तप कले । बर पाइले जे ।। १४ ।।
से माळी सुमाळी दुष्ट । माल्यबन्त धर्मनिष्ठ ।
जाग मान कले नष्ट । बेनि पापिष्ठ जे ।। १५ ।।

हेती और प्रहेती विख्यात हुई। प्रहेती ने विवाह नहीं किया और हेती का विवाह हो गया। ७ कालभग्नी उसने सभी के साथ नाना प्रकार से रति-क्रीड़ा की। ८ उसने महान कन्दरा के ऊपर पुत्र को जन्म दिया। वह उसे त्याग कर चली गई। कुमार रुदन करने लगा। ९ घूमते हुए शिव-पार्बती ने उसका रुदन सुनकर पुत्र के समान उसे मानकर, उसे वर दिया। १० उन्होंने उसका नाम विद्युत्केश रखा। वर प्राप्त करके वह प्रसन्नता से अपने पिता के पास पहुँचा और सब कुछ बता दिया। ११ साधारण सी स्त्री से पिता ने विवाह किया। उससे सुकेश नाम का राक्षस उत्पन्न हुआ। १२ एक पक्ष की कन्या ने सुकेश से विवाह करके तीन पुत्र उत्पन्न किये जो बहुत बलवान थे। १३ माल्यवन्त बड़ा और माली तथा सुमाली छोटे थे। उन्होंने बहुत समय तक तपस्या करके वर की प्राप्ति की। १४ माली और सुमाली बहुत दुष्ट थे परन्तु माल्यवन्त धर्मनिष्ठ था। उन दोनों पापियों ने यज्ञों को नष्ट किया। १५ स्वर्ण की

कनक लंका भुवन । पूर्बे जे शक्रंक स्थान ।
देवता तहिँरे थिले । पळाइ गले जे ।। १६ ।।
से माळी सुमाळी बेनि । माल्यबन्त संगे घेनि ।
से लंके कले निबास । भ्रमे त्रिदश जे ।। १७ ।।
राक्षसे रुण्ड होइले । स्वर्गपुर जुर कले ।
शक्र संग्रामे हारिले । पळाइ गले जे ।। १८ ।।
धातांकु कले गुहारि । शुणि बोले कुशधारी ।
शिबंकु कह हे जाइँ । निर्भय होइ से ।। १९ ।।
शुणि कइळास गले । शिबंकु गुहारि कले
शिब से मानंक बाणी । बोलन्ति शुणि जे ।। २० ।।
आम्भे विद्युत्केश बंश । केमन्ते करिबु नाश ।
जाअ तुम्भे बिष्णु पाश । करन्तु नाश जे ।। २१ ।।
शिब मुखुँ एहा शुणि । बाहुड़े कुळिशपाणि ।
बिष्णु सन्निधकु गले । गुहारि कले जे ।। २२ ।।
अनादि देब अच्युत । सर्बप्राणी पंचभूत ।
राम पद्म पादे चित्त । बिशि रचित जे ।। २३ ।।

लंकापुरी में पहले इन्द्र का स्थान था। पहले वहाँ देवता रहते थे पीछे वह सब भाग गये। १६ माल्यवन्त को साथ लेकर वह दोनों माली और सुमाली उसी लंका में जा बसे और देवता भ्रमण करने लगे। १७ राक्षसों ने एकत्रित होकर स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी। इन्द्र युद्ध में हार कर भाग गये। १८ उन्होंने ब्रह्मा के आगे गुहार लगाई जिसे सुनकर कुशधारी विधाता ने कहा कि आप लोग निर्भय होकर शिव से जाकर कहो। १९ यह सुनकर कैलाश जाकर उन्होंने गुहार की। शिव ने उनकी बात सुनकर कहा। २० हम विद्युत्केश के वंश को कैसे नष्ट करेंगे। तुम विष्णु के पास जाओ। वह ही उनका नाश करें। २१ शंकर के मुख से ऐसा सुनकर वज्रपाणि इन्द्र लौटकर विष्णु के निकट जा पहुँचे तथा उनसे प्रार्थना करने लगे। २२ उन अनादि, अच्युत, समस्त प्राणियों के पंच-भूत प्राण भगवान श्रीराम के चरण-कमलों में बिशि का चित्त रचा बसा है। २३

तृतीय छान्द—माळी-बध बर्णना

राग–बंगळाश्री

शुण हे राघब घेनि सर्बदेब बिष्णु छामुरे बासब ।
बेनि कर जोड़ि बहु स्तुति कले होइण भकति भाब ।। १ ।।
माळी सुमाळी माल्यबन्त भयरे स्वर्गे न पारिलुं रहि ।
सबुदिने बिष्णुदेब दया कर छामुकु अइलुं कहि ।। २ ।।
शुणि बिश्वनाथ आज्ञा देले तुम्भ स्वर्गकु जेबे आसिबे ।
से काळे तुम्भ दूत आसि कहिले तहिँर दण्ड पाइबे ।। ३ ।।
एहा शुणि बहु आनन्द होइण देबता स्वर्गकु गले ।
ए बारता पाइ माल्यबन्त बेनि भाइंकि राइ कहिले ।। ४ ।।
शुण हे बाबु देबतांक चरित आम्भंकु मारिबा पाइँ ।
शक्र सहित सकळ दिगपाळे धातांकु कहिले जाइँ ।। ५ ।।
धाता बोइले शिबक पाशे जाअ शुणि शिबपाशे गले ।
सदाशिब आम्भंकु दया बहिण सीउकार से न कले ।। ६ ।।
बिष्णुंकु कहिले बिष्णु एबे तांकु होइ अछन्ति सपक्ष ।
तुम्भे माने एबे दुष्टपण छाड़ नोहिले प्राणमरुछ ।। ७ ।।

छान्द ३—माली-वध

राग–बंगलाश्री

हे राघव ! सुनो ! समस्त देवताओं को लेकर इन्द्र विष्णु के पास जा पहुँचे । दोनों हाथों को जोड़कर बड़ी भक्ति और भाव से उन्होंने उनकी बहुत स्तुति की । १ माली, सुमाली तथा माल्यवन्त के भय से हम स्वर्ग में नही रह पा रहे हैं । आप सदा हमारे ऊपर दया करते रहे हैं, इसलिए हम सब आपके पास आये हैं । २ यह सुनकर विश्व के नाथ श्रीविष्णु ने कहा कि जब वह लोग तुम्हारे स्वर्ग में आएँगे, उसी समय दूत द्वारा समाचार मिलने पर हम उन्हें दण्ड देंगे । ३ यह सुनकर बहुत प्रसन्न होकर देवता स्वर्ग को चले गये । यह समाचार पाकर माल्यवंत ने दोनों भाइयों को बुलाकर कहा । ४ हे तात ! देवताओं के चरित्र सुनो । हमें ही वध करने के लिए इन्द्र के साथ समस्त दिगपालों ने जाकर ब्रह्मा से कहा है । ५ ब्रह्माजी के कहने पर वह सभी शिव के पास जा पहुँचे । सदाशिव ने हमारे ऊपर दया करके उसे स्वीकार नहीं किया । ६ विष्णु से प्रार्थना करने पर वह उनके पक्षधर हो गये हैं । तुम लोग अब अपनी

से बिष्णुटि आम्भ असुरमानंकु पूर्बे करि अछि नाश ।
ताहांक संगे समर कले आम्भे न पाइबा किछि जश ।। ८ ।।
माळी सुमाळी माल्यबन्त मुखरु एमन्त शुणिण कहे ।
मर्त्य मण्डळरे जात होइ निकि मरिबाकु भय होए ।। ९ ।।
सग्राम करि मरिबा जीइबाकु होइबा जेबे निसत ।
आउ बेळे आम्भे स्वर्ग जूर करि मारिबा कि पुरुहुत ।। १० ।।
एते बिचारि राक्षसमाने घेनि लंकारु हेले बाहार ।
बिबिध पशु जान मान चढ़िण प्रबेश अमरपुर ।। ११ ।।
शक्र देखिले स्वर्गपुरे प्रबेश होइले सर्ब राक्षस ।
सत्यरे सग्रामकु हेले बाहार दूत पेषि बिष्णु पाश ।। १२ ।।
अइराबत चढ़िण बज्र घेनि अइले अमरपति ।
समस्त देबता माने जुद्ध कले बेढ़ि तांक चउकति ।। १३ ।।
जुद्ध बृत्तान्त कहिले दूतमाने बिष्णु देबंक छामुरे ।
शुणि गरुड़ आरोहि नारायण मिळिले आसि सत्वरे ।। १४ ।।
शंख चक्र गदा शारंग घेनिण बिजय देबाधिदेब ।
देखिण राक्षस बेढ़िण ताहांकु जुद्ध कले असम्भब ।। १५ ।।

दुष्टता छोड़ दो अन्यथा प्राणों से हाथ धो बैठोगे । ७ उस विष्णु ने पूर्वकाल में ही हमारे असुरकुल का विनाश किया था । उनके साथ युद्ध करने से हमें कुछ भी यश नहीं प्राप्त होगा । ८ माल्यवंत से ऐसा सुनकर माली और सुमाली ने कहा कि मृत्युलोक में कोई ऐसा पैदा नहीं हुआ, जिसे मरने का भय न हो । ९ फिर हम संग्राम करके ही मरेंगे । अशक्त होकर जीवित रहने में क्या है ? अबकी बार हम स्वर्गलोक में चढाई करके इन्द्र का वध करेंगे । १० ऐसा विचार कर राक्षसों को साथ लेकर वह लंका से बाहर निकल पड़े और नाना प्रकार के पशुओं तथा यानों पर बैठकर स्वर्गलोक में जा पहुँचे । ११ इन्द्र ने देखा कि सभी राक्षस स्वर्गपुर में आ गये हैं । तब वह दूत को विष्णु के पास भेजकर युद्ध करने के लिए निकल पड़े । १२ इन्द्र वज्र लेकर ऐरावत पर चढ़कर आ गये । समस्त देवताओं ने उन्हें चारों ओर से घेरकर युद्ध किया । १३ दूतों ने विष्णु के निकट जाकर युद्ध के समाचार दिये, जिसे सुनकर शीघ्र ही भगवान विष्णु गरुड़ पर चढ़कर आ पहुँचे । १४ देवाधिदेव नारायण शंख-चक्र-गदा तथा शार्ङ्ग धनुष को लेकर आये थे । राक्षसों ने यह देखकर उन्हें घेरकर भीषण युद्ध किया । १५ सभी राक्षसों ने नाना प्रकार

समस्त राक्षस समस्त आयुध धरि परे बृष्टि कले ।
से आयुधमान श्रीअंगे पड़न्ते चक्रे ताहा निवारिले ।। १६ ।।
बज्र सम गदा करे धरि माळी हरि सम्मुखे रहिला ।
गरुड़ मुखरे प्रहार करन्ते बैनतेय घुंचि गला ।। १७ ।।
महापीड़ा पाइ कश्यपनन्दन आगकु न कला मुख ।
ताहा देखिण दैत्यारि मनरे होइले बहुत दुःख ।। १८ ।।
बक्रमुख होइ चक्र घेनि हरि काटिले माळी मस्तक ।
पुणिहि शारंग करे धरि प्रभु माइले सैन्य अनेक ।। १९ ।।
सुमाळी माल्यबन्त बेनि पळाइ रसातळरे पशिले ।
एका होइ हरि गोड़ाइ लंकारे सर्ब राक्षस नाशिले ।।
से लंकागड़ शून्य देखि बिश्रवा नन्दनकु ताहा देले ।
बोले बिशि बइश्रबण जे सेहि काळरु तहिँ रहिले ।। २० ।।

चतुर्थ छान्द—रावणेश्वर कुम्भकर्णादिक जन्म

राग–तोड़ि

शुणसि रघुनन्दन हे । गला केते हेँक दिन ।
सुमाळी सुन्दर दुहिताकु देखि मने बिचारि ए सन जे ।। १ ।।

के अस्त्रों की वर्षा करने लगे । विष्णु के अंग पर प्रहार करते समय उन्होंने उन्हें सुदर्शन चक्र से काट दिया । १६ वज्र के समान गदा धारण करके माली भगवान विष्णु के समक्ष आ गया । गरुड के मुख प्रहार करने पर पक्षिराज पीछे हट गया । १७ कश्यप के पुत्र ने महान पीड़ा पाकर अपना मुख आगे नहीं किया । इसे देखकर दैत्यों के शत्रु विष्णु के मन में अत्यन्त दुःख हुआ । १८ टेढ़ा मुख करके भगवान विष्णु ने चक्र लेकर माली का मस्तक काट दिया और फिर शार्ङ्ग उठाकर उन्होंने बहुत सी सेना को मार गिराया । १९ सुमाली और माल्यवन्त दोनों भागकर रसातल में जा घुसे । भगवान विष्णु ने अकेले ही सभी राक्षसों को खदेड़कर लंका में मार डाला । वही लंका दुर्ग खाली देखकर विश्रवानन्दन को दिया गया । विशि कहता है कि वैश्रवण उसी समय से वहाँ रहने लगे । २०

छान्द ४—रावण तथा कुम्भकर्ण आदि का जन्म

राग–तोड़ी

हे रघुनन्दन ! सुनो ! कुछ काल बीतने पर सुमाली ने सुन्दर पुत्री

केते काळ लुचिथिबि जे। पृथिब्री कि एबे जिबि।
बळबन्त देखि दुहिता गोटिकि नेइ प्रदान करिबि जे ॥ २ ॥
एमन्त भाळि असुर जे। धरि कुमारीर कर।
रसातळुँ बेगे बाहार होइला केवळ बिष्णुर डर जे ॥ ३ ॥
देखिला ता लंकापुर जे। रहि अछन्ति कुबेर।
कुमारीकि देखाइण से। बोइला ए पुर थिला आम्भर जे ॥ ४ ॥
एहि समये कुबेर जे। चढ़ि पुष्प रहुबर।
पितांकु दर्शन करिबा निमन्ते लंकारु हेले बाहार जे ॥ ५ ॥
गन्धर्ब गाबग्ति गीत जे। अपसरी करे नृत्य।
छत्र चामर आलट आदि घेनि खटिछन्ति जक्ष भृत्य जे ॥ ६ ॥
गगने पुष्प बिमान जे। सुमाळी कहे बचन।
देख गो दुहिता एटि धनपति बिश्रबा ऋषि नन्दन जे ॥ ७ ॥
पुत्र तार कोळे बेनि जे। पुत्री तार कोळे तिनि।
तु एबे ए पति बरि मोर कुळ उद्धर जगन्मोहिनी गो ॥ ८ ॥
जाहार थाइ दुहिता जे। से हुए अति सुनीता।
सेहि कन्यामाने त्रिकुळ सहिते भूषण करन्ति पिता गो ॥ ९ ॥
तु एबे मो बोल कर जे। बिश्रबा ऋषिकि बर।
देखिलुटि कि बिमाने जाउ थिला जाहापुत्र धनेश्वर गो ॥ १० ॥

को देखकर मन में ऐसा विचार किया। १ हम कब तक छिपे रहें। अब पृथ्वी पर चलकर किसी बलशाली को देखकर यह कन्या उसे प्रदान कर दें। २ ऐसा सोचकर वह असुर कन्या का हाथ पकड़कर शीघ्र ही रसातल से निकला। उसे केवल विष्णु का ही भय था। ३ उसने अपनी लंकापुरी में कुबेर को रहते देखकर कन्या को दिखाते हुए कहा कि यह नगर हमारा था। ४ इसी समय कुबेर पुष्पक विमान पर चढ़कर पिता के दर्शन करने के लिए लंका से बाहर निकला। ५ गंधर्व गीत गा रहे थे। अप्सराएँ नृत्य कर रही थीं। यक्ष, सेवक छत्र-चामर-व्यजन लेकर सेवा में लगे थे। ६ आकाश में पुष्पक विमान देखकर सुमाली ने कहा, हे पुत्री ! देखो ! यह विश्रवा ऋषि का पुत्र धनपति कुबेर है। ७ उसके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। हे जगन्मोहिनी ! तुम अब इस पति को वरण करके हमारे कुल का उद्धार करो। ८ जिसके पास पुत्री होती हैं, वह अत्यन्त पवित्र दान योग्य होती है। वह कन्याएँ तीनों कुलों-सहित पिता को ख्याति प्रदान करती हैं। ९ तुम इस समय मेरा कहना मानकर विश्रवा ऋषि का वरण करो। तुमने उसके पुत्र धनेश्वर को विमान पर

एमन्त कहन्ते तात जे । कन्या कलेक सम्मत ।
कुबेर बाहुड़ा देखि ऋषि कुटी पाशे मिळिले त्वरित जे ॥ ११ ॥
अस्त हुए अंशुमाळी जे । मठ सन्निधिरे मिळि ।
ऋषि मठ एहि जाअ बोलि ताकु देखाइ देला सुमाळी जे ॥ १२ ॥
पितार बचन करि जे । मठे प्रबेश सुन्दरी ।
उमा उषा रति प्रायेक दिशइ मोहु अछि त्रयपुरी से ॥ १३ ॥
सायंकाळर आहुति जे । देइण बिश्रबा जति ।
जाग शाळुं होमुं बाहारि देखिले उभा होइछि जुबती जे ॥ १४ ॥
होइअछि हेठ मुख जे । भुमि चिरे पदनख ।
मुनि चाहिँ बोले काहुँ ए अइला काममोहिनी बिशिख जे ॥ १५ ॥
बोलन्ति काहार नारी गो । काहार अटु कुमारी ।
कि कार्य्ये आम्भर मठकु आसिछ कह आम्भंकु सुन्दरी गो ॥ १६ ॥
शुणि बोले बारनारी जे । पितांक आज्ञाकु करि ।
तुम्भर छामुकु अइलि भो मुनि मुहिँ अबिबाही नारी हे ॥ १७ ॥
तुम्भे मनकथा जाण हे । कहिबार कि कारण ।
तुम्भर दर्शन प्रसन्ने जुबतीमाने हुअन्ति कारण जे ॥ १८ ॥

जाते हुए देखा है । १० पिता के ऐसा कहने पर कन्या ने स्वीकृति दे दी। कुबेर के लौटने के बाद वह ऋषि की कुटी के निकट जा पहुँचे । ११ सूर्य अस्त हो चुके थे । मठ के निकट पहुँचकर सुमाली ने उसे ऋषि का मठ दिखाकर जाने के लिए कहा । १२ पिता के कहने के अनुसार वह सुन्दरी मठ में प्रविष्ट होकर उमा, ऊषा और रति के समान दिखाई दे रही थी और तीनों लोकों को मोहित कर रही थी । १३ सायंकाल की आहुति देने के पश्चात् यज्ञशाला से होम करके बाहर निकलते हुए विश्रवा मुनि ने खड़ी हुई युवती को देखा । १४ वह मुख नीचे करके पैर के नाखून से भूमि कुरेद रही थी । मुनि ने उसे देखकर कहा कि कामदेव के सम्मोहन-वाण जैसी तू कहाँ से आई है ? १५ उन्होंने पूछा, तुम किसकी पत्नी तथा किसकी पुत्री हो ? हे सुन्दरी ! कहो ! तुम किस कार्य से हमारे मठ में आई हो ? १६ यह सुनकर उस अबला ने कहा कि मैं पिता की आज्ञा से आपके पास आई हूँ । हे मुनि ! मैं अविवाहिता नारी हूँ । १७ आप तो मन की बात जाननेवाले है । मैं आपसे क्या कहूँ ? आपके दर्शन मात्र से युवतियाँ प्रसन्न हो जाया करती है । १८ इतना कहकर

एते बोलि हेला तुनि जे । ध्यानरे जाणिले मुनि ।
सुमाळी आम्भर छामुकु पेषिण देइअछि नन्दिनी जे ॥ १९ ॥
करिण पुत्र कामना जे । आसि अछइ अंगना ।
एमन्त बिचारि पुलस्तिक सुत होइले सदयमना जे ॥ २० ॥
ता कर करे धइले जे । मानसिके बिभा हेले ।
मठ भितरकु नेइण ता हाकु बिबिध सुरति कले जे ॥ २१ ॥
उपगत सन्ध्या काळे जे । होइण हरिण डोळे ।
महाभयंकर पुत्र उपुजिब जिणिब से आखण्डळे गो ॥ २२ ॥
प्रथम जात कुमर जे । दश मुख बिश कर ।
द्वितीय पुत्र जात पुण होइला श्रबण कुम्भ आकार हे ॥ २३ ॥
तृतीय पुत्र होइला जे । शान्त गुणकु बहिला ।
चतुर्थे दुहिता गोटिए होइला सूर्पकार नख हेला जे ॥ २४ ॥
लोकेश समान हेले जे । रुक्ष पुत्र पुत्री हेले ।
बोले बिशि एहा देखिण सकळ देबता भय पाइले जे ॥ २५ ॥

वह चुप ही गई। ध्यान से ऋषि ने ज्ञात किया कि सुमाली ने अपनी कन्या को हमारे पास भेज दिया है। १९ यह अंगना (स्त्री) पुत्र की कामना से आई है ऐसा विचार कर पुलस्त्य ऋषि के पुत्र उस पर दयालु हो गये। २० उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उससे मानसिक विवाह किया। फिर उसे मठ के भीतर ले जाकर उन्होंने उसके साथ रमण किया। २१ उन्होंने कहा कि हे मृगनयनी ! सन्ध्याकाल आने पर महा भयंकर पुत्र उत्पन्न होगा जो सारे विश्व को जीत लेगा। २२ जब पहला पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसके दश सिर और बीस भुजाएँ थीं। फिर दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके कान कुम्भ के समान थे। २३ तीसरा पुत्र शान्त गुणों का वहन करनेवाला हुआ। चौथी कन्या हुई जिसके नाखून सूप के आकार के थे। २४ वह राक्षस-पुत्र तथा पुत्री देवराज के समान ही थे। विशि कहता है कि यह देखकर देवता भयभीत हो गये। २५

पंचम छान्द—राबणादिकर तपस्या

राग—कळशा

शुण राघब राबणर जन्म चरित ।
पृथिबीरे हेला बहु उतपात जात जे ।।
दशशिर बिशकर पिंगळ ता केश ।
कज्जळ बरण तनु दशन भबिष्य जे ।। १ ।।
ता सानुज पिंगळ मूरति जे प्रचण्ड ।
महा उच्च तड़ंति ता केश बाहु दण्ड जे ।।
ता सानुज मेघाकार कराळ ता मुख ।
भगनी क्रोटाक्षीर सूर्पप्राय सर्ब नख हे ।। २ ।।
कुम्भ प्रायकर्ण देखि कुम्भकर्ण देले ।
तृतीय पुत्रकु बिभीषण नाम कले जे ।।
सूर्पनख देखि सूर्पणखा नाम देले ।
बने बने खोजि मृग जीबकु खाइले जे ।
दशग्रीब देखि दशग्रीबा जे बोइले ।। ३ ।।
सिंह शार्द्दूळ भयरे पळाइण गले हे ।
कुम्भकर्ण स्वर्ग अपसरींकि खाइले ।।

छान्द ५—रावण आदि की तपस्या

राग—कलश

हे राघव ! रावण के जन्म का चरित्र सुनो। उसके जन्म के समय पर पृथ्वी पर बहुत उत्पात मचा। उसके दश सिर, बीस भुजाएँ थीं। उसके बाल भूरे रंग के थे। उसका रंग काजल के समान और दांत बड़े विकराल थे। १ उसका छोटा भाई पीले रंग का अत्यन्त प्रचण्ड था। उसके केश ऊपर उठे हुए थे और भुजाएं दण्ड के समान थीं। उसका भाई मेघ के आकार के समान विकराल मुख वाला था। उसकी बहिन सूप के समान नखों वाली और थलकुर के समान आँखों वाली थी। २ कुम्भ के समान कान देखकर उसका नाम कुम्भकर्ण रखा गया। तृतीय पुत्र का नाम विभीषण रखा। सूप के समान नख देखकर उसका नाम शूर्पनखा रखा। वह वन-वन में खोज-खोजकर पशुओं को खाने लगे। दश कंठ देखकर उसका नाम दशग्रीव विख्यात हो गया। ३ सिंह, शार्दूल भय से भाग गये। कुम्भकर्ण ने स्वर्ग की अप्सराओं को खा लिया। नन्दन वन को उजाड़ते समय इन्द्र

नन्दन बन भांगन्ते शक्र कोप कले जे।
दैत्य हृदे बज्र शक्र बुलाइ माइला ॥ ४ ॥
हसि करि दैत्य गजदन्तकु धइला जे।
उपाड़िण दन्त शक्र हृदरे ताड़िले।
मोहे शचीपति गज उपरे पड़िल जे ॥ ५ ॥
शक्र जिणि कुम्भकर्ण जे दिन अइले।
सेहि दिनु महाभय सुरे त पाइले हे ॥
दर्शने कुबेर पिता पाशकु अइले।
भाइ भग्नी माता तात सहिते देखिले जे ॥ ६ ॥
बहु संकोचरे तात किछि न कहिले।
ननांकु ओळगि हे रावणि माता बोले जे ॥
तिनि सहस्र बरष एहि तप कले।
कोळे धरि धाता धनपति पद देले से ॥ ७ ॥
पारिले तपस्या कर तपुँ बड़ काहिँ।
तपबळे अबळा बिभूति भोग होइ जे ॥
मातांक बचने असुरंक छळ हेला।
मेलाणि मागि कुबेर निजपुर गला हे ॥ ८ ॥
दशग्रीब बोले भाइ तप जे करिबा।
धातांकु देखिले कहाकुहिँ न डरिबा हे ॥

ने क्रोध किया। ४ इन्द्र ने वज्र घुमाकर दैत्य के हृदय पर प्रहार किया। दैत्य ने हँसते हुए हाथी का दाँत पकड़कर उखाड़ लिया और उसी से इन्द्र के हृदय पर प्रहार किया जिससे शची के पति इन्द्र हाथी के ऊपर मूर्च्छित होकर गिर गये। ५ इन्द्र को जीतकर कुम्भकर्ण जिस दिन से आया, तभी से देवता बहुत भयभीत हो गये। कुबेर पिता के दर्शन करने के लिए आये। उन्होंने वहाँ पर भाई-बहिन, माता और पिता को एक साथ देखा। ६ अत्यन्त संकोच के कारण पिता ने कुछ नहीं कहा। उन्हें प्रणाम करते हुए रावण की माता ने कहा कि इन्होने तीन हज़ार वर्ष तप किया था, तब ब्रह्मा ने इन्हें गोद में बैठाकर धनपति का पद प्रदान किया था। ७ हो सके तो तपस्या करो। तप से बड़ा कुछ नहीं है। तपस्या के बल से निर्बल व्यक्ति भी ऐश्वर्य-भोग करता है। माता के वचन के बहाने से असुरों को ज्ञान हुआ। बिदा लेकर कुबेर अपने घर चले गये। ८ दशकन्धर ने कहा, भाइयो ! चलो तप करेंगे, और ब्रह्मा की कृपा होने से

तिनि भ्रात बिचारिण बाहार होइले ।
तप करिबाकु बने प्रबेश होइले हे ॥ ९ ॥
पद छन्दि पादके से अधोमुख हेला ।
दश मुण्ड मोड़ि अग्निकुण्डे पकाइला से ॥
सहस्र बरणे मुण्ड मोड़इ अबश्य ।
एहि रूपे गला दश सहस्र बरष जे ॥ १० ॥
कुम्भकर्ण पंचाग्नि करि निदाघ काळे ।
शीतरे शिशिरे रहे घन काळे जळे जे ॥
बिभीषण उद्ध्वंमुखे पादके रहिले ।
तिनि सस्र बर्ष से जे अन्न न खाइले हे ॥ ११ ॥
महाघोर तपे बेदपति होइ तोष ।
सकळ अमर घेनि पाशरे प्रबेश जे ॥
देबतांकु बोलन्ति एहांकु बर देबा ।
अहर्निशि बिशि राम पादे करे सेबा हे ॥ १२ ॥

षष्ठ छान्द—राबणर लंका अधिकार

राग–सिन्धुड़ा

मराळ आरोहि सकळ देबता मानंकु बिरंचि घेनि ।
राबण सम्मुखे उभा होइ बोले किपाँ मोड़िल मुर्द्धनी हे ॥

फिर किसी को नहीं डरेंगे । तीनों भाई ऐसा विचार कर निकल पड़े और तपस्या करने के लिए वन में प्रविष्ट हुए । ९ रावण पैर से पैर फँसाकर अधोमुख हो गया । उसने दशों सिर मोड़कर अग्निकुण्ड में डाल दिये । हजार वर्ष में वह अवश्य सिर ही मोड़ देता था । इस प्रकार दस हजार वर्ष बीत गये । १० कुम्भकर्ण ग्रीष्मकाल में पंचाग्नि जलाकर, शीतकाल में पानी में और वर्षाकाल में भीगकर तपस्या करने लगा । विभीषण मुख ऊपर उठाकर एक पैर पर बिना खाये-पिये तीन हजार वर्ष तक रह गया । ११ घनघोर तपस्या से ब्रह्मा जी प्रसन्न होकर सब देवताओं को साथ लेकर उनके पास आये । उन्होंने देवताओं से कहा कि इन्हें वर देंगे । विभि रात-दिन श्रीराम के चरणों की सेवा करता रहता है । १२

छान्द ६— रावण का लंका पर अधिकार

राग–सिन्धुर

सब देवताओं को लेकर हंस पर बैठकर ब्रह्माजी रावण के समक्ष

आसिण माग बर। मन बाञ्छा एबे पूर्ण कर हे।
शिर मान लागन्तु तोहर हे॥ १॥
कर जोड़िण दशग्रीब बोलइ दिअ मोते देब बर।
देब दानब गन्धर्ब बिद्याधर जक्ष नागादि किन्नर हे॥
एहांक करे मृत्यु। नोहिबाटि देब कुशकेतु हे।
पितामह आज्ञा देले अस्तु हे॥ २॥
देबे कहिले पितामह देबे से कुम्भकर्णकु कि बर।
बर न पाउँ अपसरी खाइण शक्रे से कला समर हे॥
ताकु कपट कर। बर शाप प्राय हेब तार हे।
सरस्वती बसु कण्ठे तार हे॥ ३॥
कुम्भकर्णकु बर देले बिधाता माग पुत्र मोते बर।
निश्चिन्त होइ सुखे निद्रा जिबि मुँ आज्ञा हेउ कुशधर हे॥
धाता कले स्वीकार। बिभीषणे बोले माग बर हे।
जाणि मागे बिष्णु भक्ति मोर हे॥ ४॥
अस्तु अस्तु होइ त्रिजीब होइण बिष्णुंकु करिब सेबा।
ए बर देइ बाहुड़िले बिरंचि घेनिण सकळ देबा से॥
बर पाइ राबण। निद्रा घेनि मध्याह्न अरुण से।
भेटिले अजा पाइक गण से॥ ५॥

खड़े होकर बोले, अपना सिर क्यों मोड़ रहे हो ? आकर वर माँगो। इस समय मनोकामना पूर्ण करो। तुम्हारे सिर लग जाएँ। १ दशानन ने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! मुझे यह वर प्रदान करें कि देव, दानव, गन्धर्व, विद्याधर, यक्ष, नाग, किन्नर आदि के हाथों से मेरी मृत्यु न हो। कुशकेतु ब्रह्मा जी ने कहा कि ऐसा ही हो। २ देवताओं ने कहा कि पितामह कुम्भकर्ण को क्या वर देंगे ! इसने तो वर न पाकर अप्सराओं को खाकर इन्द्र से युद्ध किया था। इससे माया करो। जिससे इसका वर शाप के समान हो जाए। सरस्वती इसके कंठ में बैठें। ३ विधाता ने कुम्भकर्ण से कहा, हे पुत्र ! मुझसे वर माँगो। उसने कहा, हे कुशधर ! मैं निश्चिन्त होकर सुखपूर्वक सोता रहूँ। यही वर मुझे प्रदान करें। ब्रह्मा ने तथास्तु कह दिया। फिर उन्होंने विभीषण से वर माँगने को कहा। उसने विष्णु की भक्ति जान-बूझकर माँग ली। ४ "ऐसा ही हो, ऐसा ही हो। मन-वचन-कर्म से विष्णु की सेवा करते रहना।" इस प्रकार वर देकर ब्रह्मा देवताओं के साथ लौट गये। वर पाकर दोपहर

असुरगण भेटिण रावणकु दुष्टपण शिखाइले ।
आम्भर लंका कुबेर नेउअछि ताहाकु माग बोइले से ।।
ताहा शुणि रावण । नास्ति कला छुइँण श्रबण से ।
आम्भ नना बोलि कि न जाण हे ।। ६ ।।
मातुळ बोइले देबता दानबे अटन्तिटि बेनि भाइ ।
देबता माने अमृत भोग कले कपट करिण जाइ से ।।
भाइ सिना भगारि । कुबेरटि तुम्भर बइरी हे ।
तुम्भे न देखिब तांक शिरी हे ।। ७ ।।
मातुळ मुखुँ एसन बाणी शुणि दूते कहे दशानन ।
ननांकु कहिब आजहुँ आम्भंकु छाड़िबे लंका भुबन हे ।।
से त नोहे तुम्भर । सबु दिने से पुर आम्भर हे ।
तुम्भे न देले संग्राम कर हे ।। ८ ।।
रावण आज्ञा पाइण दूत जाइ कुबेर आगे कहिले ।
रावण तुम्भ छामुकु पेषि लंका मागइ पठिआइले हे ।।
तांक अजांक पुर । तुम्भे एबे सिना कल घर हे ।
कह न देबा देबा बिचार हे ।। ९ ।।
कुबेर बोलइ पिता सिना मोते देइछन्ति लंकापुर ।
ताहांकु आज्ञा हेले मुँ एथुँ जिबि पचारिबा जाए कर हे ।।

में निद्रा करते समय उसके नाना के दूत उससे मिले । ५ असुरों ने मिलकर रावण को दुष्टतापूर्ण परामर्श दिया कि हमारी लंका को कुबेर ने ले लिया है । उसे माँग लो । यह सुनकर रावण ने कान पकड़कर मना कर दिया । वह हमारा बड़ा भाई है, क्या तुम नहीं जानते । ६ मामा ने कहा कि देवता और दानव दोनों ही भाई थे । देवताओं ने कपट करके अमृत का उपभोग कर लिया । भाई ही तो भाग्य का हक़दार होता है । कुबेर तो तुम्हारा शत्रु है, तुमने क्या उसका वैभव नहीं देखा है । ७ मामा के मुख से ऐसी वाणी सुनकर रावण ने दूत से कहा कि भाई से कहना कि आज से लंका नगर हमारे लिए छोड़ दे । वह आपका नहीं है, वह सदैव हमारा रहा है । यदि न देना हो तो संग्राम करो । ८ रावण की आज्ञा पाकर दूत ने कुबेर से जाकर कहा कि रावण ने लंका माँगने के लिए मुझे आपके पास भेजा है । यह उसके नाना का नगर है । अब तुमने इसे अपना घर बना लिया है । आप देने न देने का विचार मुझे बता दें । ९ कुबेर ने कहा कि यह लंका नगर हमें पिता ने दिया है । उनकी

जेबे मागिल मोते । छाड़ि जिबइँ पिता अग्रते हे ।
किछि न बिचारिब सुचित्ते हे ॥ १० ॥
एमन्त शुणि से दशग्रीब दूत दशग्रीबकु कहिले ।
सकळ असुर सहिते राबण शुणिण हरष हेले से ॥
पुष्पक जाने बसि । धनपति पिता पाशे आसि से ।
कर जोड़ि बहु स्तुति भाषि से ॥ ११ ॥
कुबेर जणाए दशग्रीब दूत मोते जणाइ बारता ।
लंका छाड़ि जिव न गले जुझिब कि करिबि एबे पिता हे ॥
शुणि से मुनिबर । बोलन्ति दुष्ट स्वभाब तार हे ।
आम्भ शापकु न कला डर हे ॥ १२ ॥
एके असुर दूजे बर पाइला डरिले सचराचर ।
ऋषिकु खाइ जागमान भांगिला पापकु नाहिँ बिचार हे ॥
लंका छाड़िण जाअ । कइळासे घर करि रह हे ।
तार चरित मोते न कह हे ॥ १३ ॥
पिता आज्ञा पाइ धनपति लंका तेजि कइळासे गले ।
शिब संगे सखा होइण तहिँरे बिचित्र पुरे रहिले हे ॥

आज्ञा होने से मैं यहाँ से चला जाऊँगा । मैं उनसे जाकर पूछता हूँ । जब मुझसे माँगा ही है तो मैं तुम्हें पिता के आगे छोड़कर चला जाऊँगा । इसमें कुछ और न सोचना । १० ऐसा सुनकर रावण के दूत ने रावण से सब कहा । सभी दैत्यों के साथ यह सुनकर रावण प्रसन्न हो गया । पुष्पक विमान में बैठकर कुबेर पिता के पास आये । उन्होंने हाथ जोड़कर उनकी बहुत स्तुति की । ११ कुबेर ने उनसे कहा कि रावण के दूत ने मुझसे कहा है कि लंका छोड़कर न जाने पर युद्ध करो । हे पिताजी ! अब हम क्या करें ? यह सुनकर मुनिश्रेष्ठ कहने लगे । वह स्वभाव से दुष्ट है । उसने मेरे शाप का भी भय नहीं किया । १२ एक तो वह असुर है, दूसरे वर प्राप्त हो चुका है । चर और अचर उससे डरते हैं । ऋषियों को खाकर वह यज्ञ को विध्वंस करता रहता है । पाप को भी नहीं सोचता है । तुम लंका छोड़कर चले जाओ और कैलास में जाकर घर बसा लो । उसके चरित्र अब मुझसे मत कहो । १३ पिता की आज्ञा पाकर कुबेर लंका छोड़कर कैलास चला गया । शिव के साथ मित्रता करके वहीं विचित्रपुर में रहने लगा । रावण ने लंका ले ली । यह

रावण नेला लंका । ताहा शुणि देबे कले शंका हे ।
जिणिब बोलि कले आशंका हे ॥ १४ ॥
महापारुष्व महोदर मारीच शुक सारण प्रहस्त ।
त्रिशिरा खरदूषण मंत्री माने मिळिले असि बहुत हे ॥
खटि रावण पाश । तार हेले अत्यन्त बिश्वास जे ।
बिशि अटइ रामंक दास से ॥ १५ ॥

सप्तम छान्द—रावण कर्त्तृक कैळास उत्पाटन

राग—कळशा

शुण हे राम रावण होइला प्रतापी ।
शयनु न उठिला से कुम्भकर्ण पापी ।
एमन्त देखि रावण धाताकु कहिला ।
छ मासे उठिब निर्बन्ध करि अइला ॥ १ ॥
भ्रमन्ते रावण संगे मंत्रिगण घेनि ।
देखिले मय दैत्यर संगते नन्दिनी ।
सुन्दरी पणे निपुण जउबनवती ।
देखिले भय करिबे रम्भा शचीपति ॥ २ ॥

सुनकर देवता शंका करने लगे । यह हमें जीत लेगा, उन्हें ऐसी आशंका होने लगी । १४ महापारुष, महोदर, मारीच, शुक, सारण, प्रहस्त, त्रिशिरा खर-दूषण आदि बहुत से मंत्री आकर उससे मिल गये और उसकी सेवा करने लगे । सब उसके अत्यन्त विश्वासी बन गये । विशि श्रीराम का दास है । १५

छान्द ७—रावण का कैलास उठाना

राग—कलश

हे राम ! सुनिये ! रावण बहुत प्रतापी हो गया । वह पापी कुम्भकर्ण तो शयन से ही नहीं उठा । यह देखकर रावण ने ब्रह्माजी से कहा और उनसे उसके छः महीने में उठने की बात तय कर आया । १ मंत्रियों के साथ भ्रमण करते हुए रावण ने मय दैत्य के साथ उसकी कन्या को देखा, वह सुन्दरी अत्यन्त चतुर और युवा थी । देखने से रम्भा और शचीपति भी भयभीत हो जाते थे । २ मय दैत्य को देखकर रावण ने

मय दैत्यकु देखिण कहइ रावण ।
कन्या गोटिए घेनित भ्रमुछ आपण ।।
मयदैत्य बोले से दुहिता मन्दोदरी ।
सुबर पाइले मुँ देबइँ विभा करि ।। ३ ।।
रावण मंत्री कहिला रावणकु बर ।
बिश्रवानन्दन ज्येष्ठ भाइटि कुबेर ।।
शुणि मय दैत्य ताहा सीउकार कला ।
बिभा करिण दुहिता रावणकु देला ।। ४ ।।
जउतुक करि देला आमोघ शकति ।
लंकाकु नेला रावण पाइ प्रियबती ।।
सुबुद्धि देखिण तांकु कले पाटराणी ।
बेनि भाइ भग्नी बिभा कले बन्धु जाणि ।। ५ ।।
मन्दोदरी गर्भु हेला मेघनाद जात ।
बहुकाळ तप कला रावणर सुत ।।
दुःसह तप देखिण धाता बर देले ।
तेणु करि ताकु केहि जिणन्ता नोहिले ।। ६ ।।
शुण हे श्रीराम एथु अनन्तरे रस ।
नन्दन बन रावण कलाक बिनाश ।।
गन्धर्बकु जिणि अपसरींकि आणिला ।
एहा शुणिण कुबेर बिस्मय होइला ।। ७ ।।

कहा कि आप एक कन्या को लिये घूम रहे हैं । मय दैत्य ने कहा, यह मेरी कन्या मन्दोदरी है । सुन्दर वर पाने पर मैं इसका विवाह कर दूँगा । ३ रावण के मंत्री ने कहा कि रावण का वरण करो । यह विश्रवा का पुत्र है और कुवेर इसका बड़ा भाई है । सुनते ही मय दैत्य ने उसे स्वीकार कर लिया और विवाह करके पुत्री रावण को समर्पित कर दी । ४ दहेज में उसने अमोघ-शक्ति प्रदान की । रावण प्रियतमा को पाकर लंका में ले आया । उसे सुन्दर बुद्धिवाली देखकर पटरानी बना लिया । दोनों भाइयों तथा बहिन का भी विवाह कर दिया । ५ मंदोदरी के गर्भ से मेघनाद उत्पन्न हुआ । रावण के पुत्र ने बहुत समय तक तपस्या की । भीषण तपस्या को देखकर ब्रह्माजी ने वर प्रदान किया । इसलिए कोई उसे जीत नहीं पाया । ६ हे श्रीराम ! इसके पश्चात् का चरित्र सुनो । रावण ने नन्दन वन का विनाश कर दिया । गन्धर्वों को जीतकर

दूतकु राइ बोइला लंकाकु जे जिब ।
आम्भ आज्ञा बोलि दशग्रीबकु कहिब ॥
बोलिब स्वर्ग रे बहु अन्यान्यत कल ।
सबुरि मुखरे एबे अकीर्त्ति पाइल ॥ ८ ॥
देबता ब्राह्मणे एबे अन्याय न कर ।
एणु कहिलुटि जेणु सोदर आम्भर ॥
अधर्म कले जे अळ्प दिने नाश जाइ ।
धर्म कले सबुरि मुखरे जश पाइ ॥ ९ ॥
दूतकु कहिला कइळासर बृत्तान्त ।
पार्बती महेश होइ थिले जे एकान्त ॥
मुँ बोइलि देखिबा ए केबण बृत्तान्त ।
पार्बती परे पड़िला मो बाम नेत्रान्त ॥ १० ॥
पार्बतींक अंगे जेउँ नयन पड़िला ।
सेहिं नयनकु मोर किछि न दिशिला ॥
तप देखि सदाशिब मोते दया कले ।
बहु प्रीति करि मोर संगे सखा हेले ॥ ११ ॥
एमन्त कहिबु जाइ दशग्रीब पाश ।
अधर्म करिण केहि पाइ नाहिँ जश ॥

अप्सराओं को ले आया । यह सुनकर कुबेर आश्चर्य में पड़ गया । ७ दूत को बुलाकर उसे लंका जाने के लिए कहा, हमारी बात रावण से कह देना कि स्वर्ग में तुमने बहुत अन्याय किया है और सबके मुख से अपकीर्ति प्राप्त की है । ८ अब देवता और ब्राह्मणों पर अन्याय न करो । तुम हमारे भाई हो, इसीलिए तुमसे कह रहा हूँ । अधर्म करने से थोड़े ही दिनों में विनाश हो जाता है और धर्म करने से सबके मुख से यश प्राप्त होता है । ९ दूत को उसने कैलास का वृत्तान्त बताया । शंकर और पार्वती एकान्त में थे । मैंने कहा, देखूँगा कि बात क्या है । पार्वती पर हमारी बायें नेत्र की दृष्टि पड़ी । १० पार्वती के अंग पर मेरा जो नेत्र पड़ा उससे मुझे कुछ भी न दिखाई पड़ा । तपस्या को देखकर सदाशिव ने मुझ पर दया करके बहुत प्रीति की और हमारे मित्र बन गये । ११ तुम जाकर दशानन से ऐसा कह देना कि अधर्म करके किसी को यश नहीं मिला है । यह सन्देश लेकर दूत लंका को चला और रावण

ए सन्देश घेनि दूत लंकाकु चळिला ।
राबणर पारश्वरे जाइण मिळिला ।। १२ ।।
कुबेर दूत बोलन्ते कला पउरुष ।
कुशळ बारता पुच्छि हेला हस हस ।।
दूत कर धरिण एमन्त पचारिला ।
कि कारणरे तुम्भंकु पेषिले बोइला ।। १३ ।।
दूत जणाइला अपकीर्तिमान शुणि ।
एथकु कुबेर पेषिछन्ति बिशपाणि ।।
आज्ञा देले गन्धर्ब माने कले कि दोष ।
ऋषि पुत्र होइ ऋषि जाग कल नाश ।। १४ ।।
अधर्म कले अधर्मे जाइ बाबु नाश ।
धर्म कले धर्मरे प्रापत बहु जश ।।
किंचित दोषरे मोर नेत्र गला नाश ।
अबलोकने पार्बती कले मोते रोष ।। १५ ।।
बहु तप देखि मोते शिब दया कले ।
बहु प्रीतिरे मोहर संगे सखा हेले ।।
त्रिभुवन जने जाहा पादरे शरण ।
जाहा नेत्रानळे भस्म हेला पंचबाण ।। १६ ।।
एमन्त शुणि राबण बहु कोप कला ।
ए बारतामान मोते देइछि बोइला ।।

के पास जा पहुँचा । १२ कुबेर का दूत सुनकर रावण ने उसका बड़ा सत्कार किया और हँसते-हँसते कुशल-समाचार पूछे । फिर दूत का हाथ पकड़कर ऐसा पूछा कि उन्होंने तुम्हें किसलिए भेजा है ? १३ दूत ने कहा कि आपकी अपकीर्ति सुनकर, हे विंशबाहु ! कुबेर ने मुझे यहाँ भेजा है और कहा है कि गन्धर्व लोगों ने क्या अपराध किया था । ऋषिपुत्र होकर तुमने ऋषियों के यज्ञ नष्ट किये । १४ अधर्म करने से नाश होता है और धर्म करने से बहुत यश प्राप्त होता है । थोड़े से दोष से मेरा नेत्र चला गया । क्योंकि मेरे देखने से पार्वती मुझ पर क्रुद्ध हो गयी थीं । १५ बहुत तपस्या देखकर शिवजी ने मेरे ऊपर दया की और बहुत प्यार करके मेरे मित्र हो गये । तीन लोक जिनके चरणों की शरण में रहते हैं और जिसके नेत्रों की ज्वाला से कामदेव भस्म हो गया था । १६ यह सुनकर रावण ने बहुत क्रोध किया और बोला कि यही सन्देश मुझे भेजा है ।

शिब मोर सखा हेला पाइलि मुँ जश ।
अधर्म करुछु तुहि होइबु बिनाश ॥ १७ ॥
एमन्त बारता एबे देइअछि मोते ।
जाणिबि ताहार अंगे बळ अछि केते ॥
एमन्त बोलिण करे खड़्ग धइला ।
क्रोध भरे से दूतकु बेनि खण्ड कला ॥ १८ ॥
साजिलाक गज अश्व चतुरंग बळ ।
बारता पाइण भय कले दिगपाळ ॥
कुबेर नबरे जाइ प्रबेश होइला ।
मणिग्रीब संगतरे बहु रण कला ॥ १९ ॥
राबण हातरे मणिग्रीब मंत्री मला ।
एमन्त देखि कुबेर अन्तर होइला ॥
संग्रामे राबण बहु जक्षगण नाशे ।
एका होइण कुबेर पुरे जाइँ पशे ॥ २० ॥
कुटुम्ब बोलि जुबतीमानकु न नेला ।
पुष्पक नामरे जान ता पुरे देखिला ॥
बळे घेनि अइला से पुष्पक बिमान ।
तहिँ आरोहि भ्रमिला सकळ भुबन ॥ २१ ॥
आकाशे बिमान घेनि जान्ते न चळिला ।
ए केउँ बृत्तान्त बोलि मंत्रींकि पुछिला ॥

शिव मेरे सखा हो गये, इससे मुझे यश मिला है। तुम अधर्म कर रहे हो इससे तुम्हारा नाश होगा। १७ ऐसा सन्देश उसने मुझे दिया है। मैं देखूंगा कि उसमें कितनी शक्ति है। ऐसा कहकर उसने हाथ में तलवार उठा ली और कुपित होकर दूत के दो-खण्ड कर दिये। १८ उसने हाथी घोड़े तथा चतुरंगिनी सेना सजायी। यह समाचार पाकर दिग्पाल डर गये। वह कुबेर के नगर में जा पहुँचा। उसने मणिग्रीव के साथ बहुत युद्ध किया। १९ रावण के हाथ से मणिग्रीव मंत्री मारा गया। ऐसा देखकर कुबेर छिप गया। युद्ध में रावण ने बहुत यक्षों का विनाश कर दिया। और अकेला ही कुबेर के महल में जा घुसा। २० कुटुम्बी समझकर स्त्रियों को नहीं लिया, उसने पुष्पक नाम का विमान उसके महल में देखा। वह उसे बलपूर्वक लेकर चला आया और उस पर बैठकर सारे लोकों मे भ्रमण करने लगा। २१ आकाश में विमान ले जाते

मंत्री बोलन्ति कि अबा कुबेर शाप से ।
एमन्त बोलन्ते नन्दी मिळिला ता पाशे ।। २२ ।।
नन्दी बोले आरे एहि कइळास गिरि ।
बिजय करि अछन्ति शंकर गउरी ।।
ए गिरि उपरे डरि न उड़न्ति पक्षी ।
देब दानबे आसन्ति बिमान उपेक्षि ।। २३ ।।
केमन्ते होइ बिमान चळिब तोहर ।
एड़े गर्ब कि पाइँ करुछु दशशिर ।।
नन्दीर मुखरु शुणि एमन्त बचन ।
क्रोधे प्रज्वळित होइ कहे दशानन ।। २४ ।।
मुख हलाइ बानर कहु मोते कथा ।
एहिक्षणि छेदन करिबि तोर मथा ।।
ईश्वर पार्बतीर सहिते कइळास ।
उपाड़ि पकाइ देबि जिब सर्बे नाश ।। २५ ।।
राबण मुखरु नन्दी ए बचन शुणि ।
बोइले रे .आम्भंकु खताउ बिशपाणि ।।
आम्भ कपिकर हस्ते होइबु बिनाश ।
शाप देइ बाहुड़िण गले कइळास ।। २६ ।।

समय वह रुक गया। यह क्या बात है, कहकर उसने मंत्री से पूछा। मंत्री ने कहा, कहीं कुबेर के शाप से तो ऐसा नहीं हुआ। इस प्रकार कहते समय नन्दी उससे आकर मिला। २२ नन्दी ने कहा, अरे! यह कैलास पर्वत है। यहाँ शंकर-पार्वती विराजमान हैं। डर से इस पर्वत पर पक्षी भी नहीं उड़ते। देवता और दानव विमान को हटाकर आते हैं। २३ फिर तेरा विमान कैसे चलेगा। अरे दशानन! ऐसा गर्व क्यों कर रहा है? नन्दी के मुख से ऐसे वचनों को सुनकर रावण क्रोध से प्रज्वलित होकर बोला। २४ हे वानर! तू मुख हिला-हिलाकर मुझसे बात करता है। मैं इसी क्षण तेरा मस्तक काट दूंगा। शंकर और पार्वती-सहित कैलास को उखाड़कर फेंक दूंगा। सब नष्ट हो जायेंगे। २५ रावण के मुख से ऐसे वचन सुनकर नन्दी ने कहा। अरे विंशबाहु! मुझे डरा रहा है। हमारे वानर के हाथों से तू नष्ट हो जायेगा। फिर वह शाप देकर कैलास को लौट गये। २६ जब आकाश

जेणु आकाशे स्थकित होइलाक जान ।
महा क्रोध करि ओह्लाइला दशानन ॥
कइळास उपाड़िबि बोलि बिचारिला ।
आकर्षिण बिंश भुजे गिरिकि धड़ला ॥ २७ ॥
उपाड़न्ते कइळास हेला टळमळ ।
गिरिजा सदाशिबंकु डरि कले कोळ ॥
शिब बिचारिले किपा कम्पिला पर्बत ।
जोगरे जाणिले उपाड़े बिश्रवासुत ॥ २८ ॥
एमन्त जाणि पाद अंगुष्ठि देले माड़ि ।
माड़िण पड़िला गिरि कला घोर रड़ि ॥
सहस्र बरष जाए रड़ि छाड़ु थिला ।
महापीड़ा पाइ मर्कट प्राय दिशिला ॥ २९ ॥
मंत्री माने बोइले किपाइँ रड़ि छाड़ ।
एहि रड़ि शबदरे शिब स्तब पढ़ ॥
एमन्त शुणि राबण शिबस्तब पढ़े ।
दीन बिशि मति राम चरण न छाड़े ॥ ३० ॥

में यान रुक गया तो रावण अत्यन्त क्रोध करके उतर पड़ा । उसने कैलास को उखाड़ने का विचार किया और बीस भुजाओं से खींचकर पर्वत को पकड़ लिया । २७ उखाड़ने पर कैलास हिलने लगा । पार्वती डर कर शंकर से लिपट गयीं । शिव ने सोचा कि यह पर्वत कैसे हिला ! उन्होंने योग से जाना कि विश्रवानन्दन इसे उखाड़ रहा है । २८ ऐसा जानकर उन्होंने रावण को उँगली दबा दी । पर्वत के दबने से वह गिरकर घोर गर्जना करने लगा । हजार वर्ष पर्यन्त वह चिल्लाता रहा । वह अत्यन्त पीड़ा पाकर बन्दर के समान दिखाई पड़ने लगा । २९ मंत्रियों ने कहा, किसलिए चीत्कार रहे हो ? इसी शब्द में शिव-स्तोत्र का पाठ करो । ऐसा सुनकर रावण ने शिव-स्तोत्र पढ़ा । दीन विशि की बुद्धि श्रीराम के चरणों को कभी न छोड़े । ३०

अष्टम छान्द—रावणर दिग्‌बिजे

राग—गड़माळिआ

शुण हे राम राजन । अति रहस्य बचन । रावण स्तब
करन्ते सदाशिब ताकु होइले प्रसन्न । शुण हे राम ।। १ ।।
गिरिरु बाहार कले । रावण नामटि देले । तार
दुःख देखि जे क्रोध उपेक्षि बहु दया ताकु कले । शुण हे राम ।। २ ।।
शिब चरणे पड़िला । बिमान बुलाइ नेला । हिमाचळे
बेदमती तपस्थाने जाइण पुण होइला । शुण हे राम ।। ३ ।।
सुन्दरी नारी देखिला । ताकु आकर्षण कला । सती
निज करे निज केश काटि एमन्त शापटि देला । शुण हे राम ।। ४ ।।
मोर जोगुँ हेबु नाश । न रखिबि तोर बंश । एते बोलि
अग्नि जळाइ पशिले निज तनु कले नाश । शुण हे राम ।। ५ ।।
सेठारु कला गमन । पबनप्राय ता जान । जा देखिबाकु
प्रबेश होइला मरुतराज भुबन । शुण हे राम ।। ६ ।।
सकळ देबता थिले । दशमुखकु देखिले । नाना रूपमान
अमरे धरिण पळाइ से ठारु गले । शुण हे राम ।। ७ ।।

छान्द ८—रावण दिग्विजय

राग—गड़मालिया

हे राम राजन् ! अत्यन्त रहस्यमय वचनों को सुनो । रावण के स्तोत्र पढ़ने पर शंकरजी उससे प्रसन्न हुए । १ उन्होंने उसे पर्वत के बाहर निकाला और उसका नाम रावण रख दिया । उसका दुःख देखकर हे राम ! उन्होंने उस पर बहुत दया की । २ वह शिव के चरणों में गिर पड़ा और विमान को घुमा लिया । हे राम ! सुनिये । चलते-चलते वह हिमाचल पर्वत पर वेदमती के तपस्या के स्थान पर जा पहुँचा । ३ सुन्दर नारी को देखकर उसने उससे बलात्कार किया । सती ने अपने हाथों से अपने केश काटकर ऐसा शाप दे दिया । ४ वह बोली कि मेरे कारण ही तेरा नाश होगा । तेरे वंश को नहीं छोड़ूँगी । हे राम ! इतना कहकर उसने अग्नि जलाकर और उसमें प्रवेश करके शरीर नष्ट कर दिया । ५ वह वहाँ से चला गया, पवन के समान गतिशील यान मरुत राज्य के नगर में जा पहुँचा । ६ वहाँ पर सभी देवताओं ने रावण को देखा । हे राम ! देवता नाना प्रकार के रूप धारण करके वहाँ से भाग

शक्र होइला मयूर। सरट हेले कुबेर। जम होइले
काक हंस स्वरूप होइला बरुणंकर। शुण हे राम ॥ ८ ॥
राजा जाग करु थिले। द्वारी जाइँ जणाइले। रावण
आसिण संग्राम मागुछि शुणि से बाहार हेले। शुण हे राम ॥ ९ ॥
पुरोहित रुण्ड होइ। राजांकु कहिले जाइँ। संकळ्प तुम्भर
भग्न सिना हेब जुद्ध करि न जोगाइ। शुण हे राम ॥ १० ॥
धाता देइछन्ति बर। होइण थिब अमर। हारिलुँ
बोइले बाहुड़िण जिब एथकु कि कोप कर। शुण हे राम ॥ ११ ॥
राजा सीउकार कले। हारिलुँ बोलि बोइले। मरुत
हारिला बोलिण रावण बिमाने डिण्डिम देले। शुण हे राम ॥ १२ ॥
रावण जिबा देखिण। निजरूपे देबगण। जे जेउँ रूप धरि
थिले। ताहांकु बर देले सेहिक्षण। शुण हे राम ॥ १३ ॥
मयूरकु बर देले। सहस्र लोचन कले। हंसकु बरुण
गात्र शुभ्र करि जळे न बुड़ बोइले। शुण हे राम ॥ १४ ॥
देले धनपति बर। शरट तोर शरीर। सुबर्ण प्राय
तोहर छबि हेम मुकुट हेब तो शिर। शुण हे राम ॥ १५ ॥

गये। ७ इन्द्र मयूर बन गया। कुबेर गिरगिट बना। यमराज कौआ और वरुण ने हंस का स्वरूप रख लिया। ८ राजा जागरूक थे। द्वारपाल ने जाकर उन्हें समाचार दिया कि रावण आकर संग्राम की याचना कर रहा है। हे राम! सुनो। यह सुनकर वह बाहर निकल आये। ९ पुरोहितों ने एकत्रित हो, जाकर राजा से कहा कि तुम्हारा युद्ध संकल्प-भग्न हो जायेगा। अतः जान-बूझकर युद्ध मत करो। १० ब्रह्मा ने उसे वर दिया है। वह अमर हो गया है। "मैं हार गया" ऐसा कहने से वह लौट जायेगा। इसमें कोप क्यों कर रहे हो। ११ राजा ने इसे स्वीकार करके कह दिया कि मैं हार गया। 'मरुत हार गया' कह कर रावण ने विमान में डिमडिमी बजा दी। १२ रावण को गया देख कर देवता जो जिसके रूप में थे, उन्हें वर देकर उसी क्षण अपने रूप में आ गये। १३ हे राम! सुनिए! मयूर को वर देकर उसे सहस्रलोचन बना दिया। हंस को पानी के योग्य शुभ्र शरीर बनाकर कहा कि तुम जल में नहीं डूबोगे। १४ हे राम! सुनो! कुबेर ने गिरगिट को वर देते हुए कहा कि तुम्हारा शरीर सुवर्ण के समान हो जायेगा और तुम्हारे शिर पर स्वर्णमुकुट हो जायेगा। १५ यमराज ने कौवे को वर देकर अमर

जम काके बर देले । अमर ताहाकु कले । ए तोर
इच्छाए न मरिबु तुहि माइले मर बोइले । शुण हे राम ॥ १६ ॥
राबण भ्रमण कला । महाराजांकु जिणिला । बोले दीन
बिशि बिमान आरोहि अजोध्या प्रबेश हेला । शुण हे राम ॥ १७ ॥

नवम छान्द

बउळ वृत्त

शुण रघुबीर हे । बिश्रबा कुमर । अजोध्या
प्रबेश होइला हे । राघब । मागिला समर हे ॥ १ ॥
अरण्य राजन हे । शुणि ता बचन । जान
चढ़ि संग्रामकु हे । राघब । अइले बहन हे ॥ २ ॥
बहु जुद्ध कले हे । बहु सैन्य मले । रावण से
नृपतिकि हे । राघब । गदारे माइले हे ॥ ३ ॥
अजोध्या राजन हे । तेजन्ते जीबन । क्रोधे
तांकु बोइला हे । राघब । एमन्त बचन हे ॥ ४ ॥
मो कुळे जनम हे । होइबे श्रीराम । सगोत्र
मारिबे तोर रे । राबण । संग्राम करिण रे ॥ ५ ॥

कर दिया और बोले, तुम अपनी इच्छा से न मरके मारने पर मरोगे । १६ हे राम ! सुनिये । रावण ने भ्रमण करके महाराजाओं को जीत लिया । दीन विशि कहता है कि वह विमान पर चढ़कर अयोध्या में प्रविष्ट हुआ । १७

छान्द—९

बउल की धुन

हे रघुवीर ! सुनो । विश्रवानन्दन ने अयोध्या में पहुँचकर युद्ध की याचना की । १ हे राघव ! उसके वचनों को सुनकर राजा अरण्य शीघ्र ही रथ पर चढ़कर युद्ध के लिए बाहर निकल आये । २ बहुत युद्ध हुआ । बहुत सेना मरी । हे राघव ! रावण ने उस राजा को गदा से मार दिया । ३ अयोध्या के राजा ने जीवन का त्याग करते समय क्रोध से उससे ऐसे वचन कहे । ४ मेरे कुल में श्रीराम जन्म लेंगे । अरे रावण ! वह संग्राम करके तेरे कुल-सहित तेरा संहार करेंगे । ५ शाप देकर वह

शाप देइ मले हे । स्वर्गपुर गले । एहा शुणि
स्वर्ग रे हे । राघव । दुन्दुभि बोइले हे ।। ६ ।।
तहुँ बाहुड़िला हे । आकाशे गमिला । नारद
महाऋषि हे । राघब । पथरे भेटिला हे ।। ७ ।।
मान्य तांकु कला हे । ता मुखुँ शुणिला । पुणि
पुणि ताहांकु हे । राघब । सबु पचारिला हे ।। ८ ।।
से बोइले नर हे । केतेक मातर । पारिले
जमकु जिणि हे । राबण । बोले मुनिबर हे ।। ९ ।।
सेटि जन्तुपति हे । अचळ बिभूति । जगत जन्तु
जाहाकु हे । राघब । करुथान्ति भीति हे ।। १० ।।
मुनि मुखुँ शुणि हे । कोपे बिशपाणि ।
जन्तुपति पुरकु हे । राघब । गला सेहिक्षणि हे ।। ११ ।।
ता पुरे पशिला हे । निर्भय होइला ।
नारकीय मानंकु हे । राघब । छड़ाइण देला ।। १२ ।।
देखिण शमन । हेला कोप मन ।
राबण सम्मुखे आसि हे । राघब । होइला बहन हे ।। १३ ।।
कले घोर रण हे । क्षत्री बेनि जण ।
बरणे जुझन्ते धाता हे । राघब । अइले आपण ।। १४ ।।

मर गये तथा स्वर्गलोक में चले गये। हे राघव! यह सुनकर स्वर्ग में दुन्दुभी बजने लगी। ६ हे राघव! वहाँ से लौटकर आकाश में जाते हुए उसकी भेंट महर्षि नारद से हो गई। ७ उसने उनका सम्मान किया। उनकी बातों को सुना और हे राघव! उनसे बार-बार सब पूछने लगा। ८ उन्होंने कहा, अरे नर की क्या बात है? यदि हो सके तो यम को जीत लो। ९ रावण ने कहा, हे मुनिवर! वह तो अचल विभूतियों से युक्त जन्तुपति है। संसार के प्राणी उससे भय करते हैं। १० मुनि के मुख से इस प्रकर सुनकर कुपित होकर बिशबाहु उसी क्षण यमपुर को गया। ११ निर्भय होकर वह उसके लोक में घुसा हे राघव! उसने नारकीय जीवों को छुड़ा दिया। १२ यह देखकर यमराज कुपित होकर रावण के समक्ष शीघ्र ही आ गया। १३ उसने घोर युद्ध किया। दोनों ही वीर योद्धा थे। हे राघव! एक वर्ष लड़ते रहने पर स्वयं ब्रह्मा जी वहाँ आये। १४ हे राघव! पुलस्त्य के नाती

पुलस्तिक नाति हे। घेनिला शकति।
काळ दण्ड पाश करे हे। राघब। धरे जन्तुपति ।। १५ ।।
देखि पद्मासन हे। काले सनमान।
जन्तुपति हारिला हे। राघब। बोइले बचन हे ।। १६ ।।
तहुँ बाहुड़िला हे। पाताळकु गला। दनुजंक संगरे हे।
राघब। बहु रण कला हे ।। १७ ।।
बळिकि देखिला हे। नमस्कार कला।
तांक कोळे बसिण हे। राघब। प्रशंसा पाइला ।। १८ ।।
बरषे रहिला हे। दनुज माइला।
जय करि पाताळरु हे। राघब। रामांकु आणिला हे ।।१९।।
पुणि चढ़ि जान हे। बिश्रवा नन्दन।
जिणिब बोलि गला हे। राघब। बरुण भुबन हे ।। २० ।।
बरुण द्वारी हे। द्वारन्त आबोरि।
बोले बरुण गला हे। राघब। सुनाशीर पुरी हे ।। २१ ।।
ता मुखुँ शुणिला हे। बाहुड़ि अइला।
स्वर्गे शक्र संगर हे। राघब। बहुरण कला हे ।। २२ ।।
शक्रकु जिणिला हे। बान्धि घेनि गला।
पितामह आसिण हे। राघब।ताकु मागि नेला हे ।। २३ ।।

रावण ने शक्ति उठा ली और यमराज ने अपने हाथ में कालपाश ले लिया। १५ ब्रह्मा को देखकर यमराज ने उसका सम्मान किया। हे राघव ! उन्होंने कहा कि यमराज हार गये हैं। १६ रावण वहाँ से लौटकर पाताल गया और दैत्यों के साथ उसने बहुत युद्ध किया। १७ वलि को देखकर उसने उन्हें नमस्कार किया। हे राघव ! उसने वलि की गोद में बैठकर बहुत प्रशंसा प्राप्त की। १८ एक वर्ष वह वहाँ रहकर उसने दैत्यों को मारा और पाताल से जीतकर बहुत सी स्त्रियाँ ले आया। १९ हे राघव ! फिर विश्रवा-नन्दन रावण वरुणलोक को विजय करने के लिए जा पहुँचा। २० वरुण के द्वारपाल ने द्वार को रोककर कहा कि वरुण इन्द्रपुरी को गये हैं। २१ उसके मुख से ऐसा सुनकर वह लौट आया और हे राघव ! स्वर्ग में इन्द्र के साथ उसने बहुत युद्ध किया। २२ उसने इन्द्र को जीतकर उसे बांधकर ले गया। ब्रह्माजी ने आकर रावण से इन्द्र को माँग लिया। २३ तीनों लोकों में

जेते जेते बीर हे । थिले त्रय पुर ।
समस्तंकु जिणिला हे । राघब । प्रतापी असुर हे ।। २४ ।।
पुत्र मेघनाद हे । शक्रे कला बाद ।
बहु बार जिणिला हे । राघब । शक्राजित पद हे ।। २५ ।।
दशभुजे धनु हे । दशभुजे शर ।
त्रिभुबन बुलइ हे । राघब । पुष्प रहुबर हे ।। २६ ।।
ए रूपे राबण हे । दिग जे भ्रमिण ।
अहर्निशिरे बिशि हे । राघब ।भजे श्रीचरण हे ।। २७ ।।

दशम छान्द

राग–मुनिबर बाणी

बदन्ति अगस्ति जति । शुण आहे रघुपति ।
राबण जिणि नृपति आनन्द मति हे ।। १ ।।
लंकारे हेला प्रबेश । देखि सकळ राक्षस ।
दर्शन करि हरष । उभा ता पाश हे ।। २ ।।
कहिले राबण आग । मेघनाद कले जाग ।
निकुम्भिला बट लागे । दिबस भागे हे ।। ३ ।।

जितने भी वीर थे, उन्हें उस प्रतापी राक्षस ने जीत लिया । २४ उसके पुत्र मेघनाद ने इन्द्र से युद्ध करके उसे कई बार जीता और हे राघव ! उसने इन्द्रजित् की पदवी पायी । २५ वह दश हाथों में धनुष और दश में बाण लेकर पुष्पक विमान पर बैठकर तीनो लोकों में घूमने लगा । २६ हे राघव ! इस प्रकार वह रात-दिन दिग्विजय के हेतु भ्रमण करता रहा । बिशि श्री राघव के श्रीचरणों का भजन करता है । २७

छान्द—१०

राग–मुनिवर वाणी

अगस्ति ऋषि बोले, हे रघुपति श्रीराम ! सुनो । रावण राजाओं को जीतकर हृदय में प्रसन्न हो गया । १ लंका में प्रवेश करते समय उसे देखकर सभी राक्षस हर्ष से उसका दर्शन करके उसके पास खड़े हो गये । २ उन्होंने रावण से कहा कि मेघनाद ने दिन में निकुम्भिला वट के नीचे यज्ञ किया है । ३ यह सुनकर दशानन पुत्र पर कुपित होकर बोला कि

शुणि क्रोध दशानन । पुत्ररे कुपितमन ।
देबतांकु हबिदान । देला अज्ञान हे ॥ ४ ॥
मुँ जाग करइ नष्ट । जाग करे से पापिष्ठ ।
हबि पाइ सुरे दुष्ट । होइबे पुष्ट हे ॥ ५ ॥
राबणकु भय कला । तेणु जे जाग मुंचिला ।
पूर्ण आहुति न देला । रणे हारिला हे ॥ ६ ॥
जणाइला बिभीषण । शुण हे देब रावण ।
मधु दैत्य आसि पुण । कलाक रण हे ॥ ७ ॥
राक्षसंकु जय कला । बळे बहेणीकि नेला ।
शिब ताकु शूळ देला । अभय हेला हे ॥ ८ ॥
शुणि पुणि क्रोध कला । राक्षसंकु गाळि देला ।
पुष्प रथ आरोहिला । बाहार हेला हे ॥ ९ ॥
कोपे गला मधुपुर । देखि मधु दैत्यबीर ।
शूळर प्रतापे तार । हेला कातर हे ॥ १० ॥
पूर्बे भग्नी नेइ थिला । तेणु उपरोध कला ।
शूळ ताकु न माइला । पीरति हेला हे ॥ ११ ॥
शुणि बोले रघुबीर । शुण आहे मुनिबर ।
से काळे न थिले बीर । क्षिति भितर हे ॥ १२ ॥

उस अज्ञानी ने देवताओं को हवि प्रदान किया है । ४ मैं यज्ञ को नष्ट करता हूँ और वह पापी यज्ञ करता है । हवि पाकर दुष्ट देवता पुष्ट हो जायेंगे । ५ रावण को भय करके उसने यज्ञ छोड़ दिया और पूर्णाहुति नही दी और रण में हार गया । ६ विभीषण ने कहा, हे देव रावण ! मधु दैत्य फिर आ गया है और उसने युद्ध किया है । ७ वह राक्षसों को जीतकर बहन को ले गया । शिव ने उसे शूल दिया है । इसलिए वह निर्भय है । ८ यह सुनकर रावण ने क्रोध करके राक्षसों को गालियाँ दीं । और पुष्पक विमान पर चढ़कर बाहर निकल पड़ा । ९ वह कुपित होकर मधुपुर गया । पराक्रमी मधु दैत्य को देखकर उसके शूल के प्रताप से वह कातर हो गया । १० पूर्वकाल में बहन को लिया था, इसलिए क्षमा करके उस पर शूल का प्रहार नही किया और उससे प्रीति कर ली । ११ यह सुनकर रघुवीर ने कहा, मुनिवर ! क्या उस समय पृथ्वी के अन्दर कोई वीर नही थे । १२ रावण ने सबको जीत लिया और किसी से भी

रावण सर्ब जिणिला । पराजय न पाइला ।
मने आनन्द होइला । निर्भय हेला हे ॥ १३ ॥
शुण हे बीर राघब । रावणर पराभब ।
नदी तीरे दशग्रीब । पूजन्ति शिब हे ॥ १४ ॥
सहस्रअर्ज्जुन बीर । करइ जळबिहार ।
समस्त जुबती तार । जळ भितर हे ॥ १५ ॥
सहस्रेक भुज छन्दि । बाहुबन्धे जळ रुन्धि ।
नर्मदा होइला बन्दी । न पाइ सन्धि हे ॥ १६ ॥
बहन्ते नदी उजाणि । बिपरीत हेला पाणि ।
पचारइ बिशपाणि । मंत्रींकि पुणि हे ॥ १७ ॥
कहन्ति जे मंत्रीगण । शुण हे देब रावण ।
सस्राज्र्जुन बाहुगुण । देख हे पुण हे ॥ १८ ॥
सहस्र जुबती संगे । जळ केळि करे रंगे ।
तेणु लेउट तरंग । बाजि ता अंग हे ॥ १९ ॥
एहा शुणि दशानन । चढ़िण पुष्पक जान ।
मिळिण तार सदन । कहे बचन जे ॥ २० ॥
नृपतिकि कह जाइँ । आसिछु समर पाइँ ।
जिणि बाहुड़ि जिबइँ । कह तु जाइँ रे ॥ २१ ॥

पराजय न पाकर आनन्द मन से निर्भय हो गया। १३ हे पराक्रमी राघव ! अब रावण का पराभव सुनो। नदी के तीर पर दशानन शंकर की पूजा कर रहा था। १४ सहस्रार्जुन अपनी सभी युवतियों के साथ जल के भीतर जलविहार कर रहा था। १५ उसने अपनी हजार भुजाओं को भिड़ाकर भुजाओं के बाँध में जल को रोक लिया। नर्मदा उसकी भुजाओं में बन्दी बन गयी और उसे आगे बहने के लिए मार्ग न मिला। १६ , नदी के उलटकर बहने पर पानी विपरीत दिशा में चल पड़ा। विंशबाहु वाले रावण ने अपने मंत्री से पूछा। १७ मंत्रीगणों ने कहा, हे देव रावण ! सुनिये। और सहस्रार्जुन की भुजाओं के गुण को देखिये। १८ हजारों युवतियों के साथ वह बड़े आनन्द से रसमयी क्रीड़ायें कर रहा था। इसी से लौटती हुई तरंगें रावण के अंग से जा टकरायीं। १९ यह सुनकर दशानन पुष्पक विमान पर चढ़कर उसके महल में गया और बोला। २० हे द्वारपाल ! राजा से जाकर कहो कि मैं युद्ध के लिए आया हूँ। जीतकर वापस जाऊँगा। ऐसा तू जाकर कह दे। २१

शुणि कहे द्वारपाळ । नोहे से संग्राम काळ ।
जळबुड़ा कुतूहळ । करे भूपाळ जे ।। २२ ।।
एहा शुणि कोप कला । द्वारी सैन्य संहारिला ।
सेनामानंकु माइला । राजा शुणिला हे ।। २३ ।।
जळु होइला बाहार । नारी गले अन्तःपुर ।
रोष होइ बीर बर । हेला बाहार हे ।। २४ ।।
किञ्चित समर कला । बळे ताहाकु धइला ।
बन्धन करि आणिला । बन्दिरे देला हे ।। २५ ।।
बरषे कला बन्धन । न देला जळ अशन ।
होइण बिकळ मन । थिला सदन हे ।। २६ ।।
जाणि आसे पउलस्ति । सूर्य्य प्राय करि गति ।
देखि तांकु महीपति । कला भकति हे ।। २७ ।।
करि तांकु दिव्य पूजा । पचारे सहस्रभुजा ।
किमर्थे आगत द्विज । ब्रह्म तनुज हे ।। २८ ।।
शुणि बोले मुनिबर । राबण नाति आम्भर ।
अपराध क्षमा कर । हे बीरबर हे ।। २९ ।।
देबु त ताहाकु मोते । प्रार्थना मोहर एते ।
हारिला निश्चे से तोते । दिअ सुचित्ते हे ।। ३० ।।

यह सुनकर द्वारपाल ने कहा कि यह संग्राम का समय नहीं है। राजा इस समय जलविहार कर रहे हैं। २२ यह सुनकर उसने कुपित होकर द्वारपाल सैनिकों का संहार कर दिया और बहुत से सैनिकों को मारा। इसे राजा ने सुन लिया। २३ वह जल के बाहर निकल आया। नारियाँ अंतःपुर को चली गयीं। पराक्रमी वीर सहस्रार्जुन क्रुद्ध होकर बाहर आया। २४ थोड़ा युद्ध करके वह बलपूर्वक उसे पकड़कर बाँध लाया और बन्दीग्रह में डाल दिया। २५ एक वर्ष पर्यन्त उसे बाँधकर रखा। उसे अन्नजल भी नहीं दिया। जिससे वह मन में बहुत व्याकुल होकर घर में रहा। २६ यह जानकर पुलस्त्य ऋषि आये। सूर्य के समान उनके तेज को देखकर राजा ने उसकी बड़ी पूजा की। २७ उनकी दिव्य पूजा करके सहस्रबाहु ने पूछा कि हे ब्रह्मा के पुत्र ब्रह्मदेव! आप किसलिए पधारे हैं? २८ यह सुनकर श्रेष्ठ मुनि ने कहा कि रावण मेरा नाती है। हे वीरवर! उसके अपराध को क्षमा करो। २९ मेरी प्रार्थना है कि आप उसे मुझको दे दें। वह निश्चय ही आप से हार

शुणि राजा तोष हेला । राबणकु आणि देला ।
बहु पुरुषार्थ कला । बिशि भणिला हे ।। ३१ ।।

एकादश छान्द

राग–नळिनी गौड़ा मुनिवर बाणी

कहे कुम्भऋष बाळ । शुण हे नृप शार्द्दूळ ।
राबण किष्किन्ध्या गला । ता द्वारे हेला जे ।। १ ।।
द्वारे देखि कपि तार । कहइ राबण बीर ।
बाळि कि कह तु जाइ । जुझिबि मुहिँ हे ।। २ ।।
द्वारी बोइला बचन । शुण असुर राजन ।
बाळि संगे जे जुझइ । प्राण न पाइ हे ।। ३ ।।
अस्थि कुढ़ कूढ़ होइ । पड़िछि देख तु जाइ ।
तोहरि प्राय अइले । अस्थि होइले हे ।। ४ ।।
बाळि नाहिँ आज पुर । निश्चे आयु अछि तोर ।
दक्षिण सिन्धुर पाशे । तर्पण आशे हे ।। ५ ।।
चारि सागरे तर्पण । नित्ये करे कपिराण ।
निमिष भितरे आसे । नबरे पशे हे ।। ६ ।।

गया । अतः सुचित्त होकर प्रदान करें । ३० विशि कहता है कि यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गया । रावण को लाकर उन्हें प्रदान करते हुए उसने उनका बहुत सम्मान किया । ३१

छान्द—११

राग–नलिनी गौड़

ऋषिपुत्र कुम्भ ने कहा, हे नृप शार्दूल ! रावण किष्किन्धा के द्वार पर जा पहुँचा । १ रावण ने वानर द्वारपाल को देखकर कहा, तू जाकर बालि से कह दे कि मैं युद्ध करूँगा । २ द्वारपाल ने कहा, हे असुरराज ! बालि के साथ जूझनेवाले के प्राण नहीं बचते । ३ अस्थियों के ढेर को तू जाकर देख ले । तुम्हारे समान वह भी आये और हड्डियों में बदल गये । ४ आज निश्चय ही तुम्हारी आयु बची है क्योंकि वालि नगर में नहीं है । वह दक्षिण सागर में तर्पण करने गये है । ५ कपिराज बालि चारों समुद्रों में नित्य तर्पण करके निमिष मात्र पुनः नगर में लौट आते है । ६ उसकी बात सुनकर पुष्पक विमान

शुणिण तार बचन । चढ़िण पुष्पक जान ।
दक्षिण सिन्धुकु गला । बाळि देखिला हे ।। ७ ।।
हेमगिरि प्राय शोभा । मुख बाळ भानु आभा ।
मुकुट कुण्डळ तार । कंकणहार हे ।। ८ ।।
बाहुटि बाहुमूळरे । नूपुर शोभे पयरे ।
पिन्धिअछि पीताम्बर । कि सुनासीर हे ।। ९ ।।
रावण एहा देखिला । रथु बेगे उत्तुरिला ।
कज्जळ गिरि त काये । पाशकु जाए हे ।। १० ।।
बाळि जप करुथिला । रावण ता पाशे हेला ।
धरिबाकु कला मन । से दशानन हे ।। ११ ।।
धरन्ते असुर मणि । बाळि ता इंगित जाणि ।
बाम बाहु बुलाइला । काखे जाकिला हे ।। १२ ।।
पश्चिम सागरे गला । तहिँ सन्ध्या स्नान कला ।
उत्तर सिन्धुकु गला । तर्पण कला जे ।। १३ ।।
कामोड़इ बिशपाणि । नखे बिदारइ पुणि ।
तहुँ बाळि तर तर । जाकि काखर हे ।। १४ ।।
पक्षी जहिँरे न दिशे । से मार्गे क्षेपिण आसे ।
पूर्ब सागरे प्रबेश । घेनि राक्षस हे ।। १५ ।।

में चढ़कर उसने दक्षिण समुद्र में जाकर बालि को देखा। ७ वह मेरु पर्वत के समान शोभायमान था। बाल पतंग के समान उसके मुख की आभा थी। वह मुकुट, कुण्डल, कंकण तथा हार से विभूषित था। ८ भुजाओं में बाजूबन्द और पैरों में नूपुर शोभा पा रहे थे। उसने पीताम्बर पहन रखा था और इन्द्र के समान लग रहा था। ९ यह देखकर कज्जलगिरि के समान शरीरवाला रावण रथ से शीघ्र ही उतर कर उसके समीप चला। १० बालि जप कर रहा था। रावण ने उसके पास पहुँचकर उसे पकड़ने की इच्छा की। ११ असुर शिरोमणि द्वारा पकड़ने के संकेत को जानकर बालि ने बायाँ हाथ घुमाकर उसे पकड़कर काँख में दबा लिया। १२ फिर उसने पश्चिम सागर जाकर स्नान-सन्ध्या की। फिर उसने उत्तरी सागर में जाकर तर्पण किया। १३ बीस भुजाओंवाला रावण उसे काटता और नाखूनों से नोचता था। तब बालि ने उसे जोर से काँख में दबाया। १४ जिस मार्ग में पक्षी नहीं दिखाई देता था उसी मार्ग से छलाँग लगाकर राक्षस के लिए वह

प्रशस्त शुक सारण । गोड़ान्ते से तिनि जण ।
बाळिकि न पाइ भेट । रहिले बाट जे ॥ १६ ॥
पूर्ब सिन्धुरे तर्पण । कले कपिकुळ राण ।
सूर्ज्य उदय भितरे । आसे मन्दिरे हे ॥ १७ ॥
जेउँ रूपे प्रति दिन । तहिँरु नोहिले आन ।
केबळ तनु फुटिला । जेणु से थिला हे ॥ १८ ॥
तोटा पुरे जाइ हेला । बाहारु छाड़िण देला ।
देखिण राबणेश्वर । कहे उत्तर हे ॥ १९ ॥
कह तु काहुँ अइलु । बाहु भितरे कि थिलु ।
कह तोर नाम किस । केबण देश जे ॥ २० ॥
राबण कहे उत्तर । देब मुँ असुरेश्वर ।
जुद्ध करि त अइलि । दण्ड पाइलि हे ॥ २१ ॥
कपिपति दया कर । आजरु लंका तुम्भर ।
जेते दिन थिब प्राण । तुम्भर जाण ए ॥ २२ ॥
अग्नि स्थापि साक्षी कला । बाळि संगे मित्र हेला ।
बोले सुत दारा तोर । नोहे मोहर जे ॥ २३ ॥
राबणकु गउरब । कलेक तारा बल्लभ ।
पुरकु ताहाकु नेले । बेभार कले जे ॥ २४ ॥

पूर्वी समुद्र में जा पहुँचा । १५ पीछे-पीछे आते हुए प्रहस्त, शुक तथा सारण —इन तीनों की भेंट बालि से न हो सकी यह लोग रास्ते में ही रह गये । १६ कपिकुलाधीश ने पूर्वसागर में तर्पण किया और सूर्योदय के पहले ही घर लौट आया । १७ जैसे प्रतिदिन होता था, ठीक वैसे ही हुआ। केवल रावण के कारण शरीर में खरोंच लग गई । १८ उपवन में पहुँचकर उसे छोड़ने पर रावण को देखकर कहा, बोल ! तू कहाँ से आया है ? क्या कांख में था ? बता ! तेरा नाम क्या है और कहाँ का रहनेवाला है ? १९-२० रावण बोला, हे देव ! मैं असुरेश्वर हूँ । युद्ध करने आया था जिसका दण्ड मुझे मिल गया । २१ हे कपीश ! अब दया करो । आज से लंका आपकी हुई । जब तक यह प्राण रहेंगे, आपके ही रहेंगे । २२ उसने अग्नि स्थापित कर साक्षी बनाकर बालि के साथ मित्रता करते हुए कहा कि पुत्र और स्त्री भी आपकी हो गई मेरी नहीं । २३ ताराबल्लभ बालि ने उसे महल में ले जाकर उसके साथ बड़ा सम्मानपूर्वक व्यवहार किया । २४ उसके मंत्रीगण वहाँ आ गये

अइले ता मंत्रिगणे । घेनिण पुष्पक जाने ।
बसाइ ताकु आणिले । मेलाणि देले हे ॥ २५ ॥
शुण हे नृपशार्दूळ । बाळिर जेतेक बळ ।
से बाळिर तुम्भ बाण । नेला पराण हे ॥ २६ ॥
शुणि राम हस हस । होइले परम तोष ।
से राम बेनि चरण । बिशि शरण हे ॥ २७ ॥

द्वादश छान्द—हनुमान जन्म बृत्तान्त

राग—चोखि

बाळिर प्रसंग शुणि, आज्ञा देले रघुमणि,
आम्भ हनुमन्त बाळि बीरु बड़ ।
सीता खोजिण से गले, कपिमाने संगे थिले,
केहि जाइ न पारिले से लंकागड़ ।
जळनिधि शते जोजन ।
क्षेपाके डेइँले ए मरुत नन्दन ॥ १ ॥
एका होइ लंके पशि, असुर बळ बिनाशि,
अक्षयकुमारकु ताहार माइले ।

और विदा लेकर उसे पुष्पक बिमान में बिठाकर ले गये । २५ हे नृप शार्दूल ! सुनो । बालि में जितना भी बल हो परन्तु आपके बाण ने उसी बालि के प्राण ले लिये । २६ यह सुनकर श्रीराम हँसते हुए अत्यन्त प्रसन्न हुए । विशि के लिए वह युगल चरण ही शरणस्थल हैं । २७

छान्द १२—हनुमान का जन्म

राग—चोखी

बालि का चरित्र सुनकर रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीराम ने कहा, हमारे हनुमान पराक्रमी बालि से भी अधिक हैं । वह जब सीता को खोजने गये तो और भी वानर-समुदाय उनके साथ था । परन्तु कोई भी उस लंका दुर्ग में नहीं जा सका । सौ योजन विस्तीर्ण सागर को यह मरुतनन्दन ही छलाँग पर पार हुए । १ इन्होंने अकेले ही लंका में प्रवेश करके राक्षसदल का विनाश किया और उसके कुमार अक्षय का वध कर दिया था । रावण ने इन्हें नागपाश में बँधवा लिया । इन्होंने उससे सी-

नागपाशरे रावण, बन्धन कराए पुण,
तहुँ खसिण ताहार लंका दहिले।
सीता ठाव करि अइले।
पुणि शतेक जोजन सिन्धु डेइँले ॥ २ ॥
सुग्रीठारे स्नेह जेते, आम्भे ता कहिबा केते,
बाळिकि मारि सुग्रीकि दिअन्ते राज्य।
कळि नोहे हनुबळ जेसने जळधि जळ,
महाबळबन्त ए मरुत आत्मज।
एहांकर जेते प्राकर्म।
आपणे न जाणि सिना होइले भ्रम ॥ ३ ॥
आम्भठारे अनुराग, करिण पबनबेग,
औषधि निमित्त क्षीरसिन्धुकु गले।
गिरि उपाड़ि आणिले, त्वरिते प्रवेश हेले,
बहु अलौकिक कर्ममान त कले।
एहांकर जन्म चरित।
कह आम्भ आगे मुनिबर त्वरित ॥ ४ ॥
शुणि कहे मुनिबर, शुण देब रघुबीर,
केशरींक बनिता अटन्ति अंजना।
ऋतुमती स्नान करि, उभा होइथिले थिरि,
देखिले मरुत देव दिव्य अंगना।

निकलकर उसकी लंका जला डाली और सीता का पता लगाकर फिर एक सौ योजन का समुद्र लांघकर आ गये। २ सुग्रीव के प्रति इनका जितना स्नेह है उसके विषय में मैं कितना कहूँ। वालि को मारकर सुग्रीव को राज्य देने पर सागर जल के समान हनुमान के बल की थाह नहीं मिलती थी। यह पवनात्मज अत्यन्त बलवान हैं। इनका जितना भी पराक्रम है उसे यह स्वयं न जानकर भ्रम में पड़ गये। ३ हमसे स्नेह के कारण पवन-वेग से ओषधि लाने के लिए यह क्षीरसिन्धु गये। पर्वत को उखाड़कर शीघ्र ही ले आने का अलौकिक कार्य इन्होंने किया। हे मुनिश्रेष्ठ! इनके जन्म का चरित्र आप हमसे शीघ्र ही कहें। ४ यह सुनकर अगस्ति ऋषि ने कहा, हे रघुवीर! सुनो! केशरी की पत्नी अंजना ऋतुस्नान करके स्थिरभाव से खड़ी थी। वायुदेवता ने उस दिव्य स्त्री को देखा। उन्होंने उस सुन्दर स्त्री से रमण किया, जिससे

रमिले से दिव्य सुन्दरी ।
मरुत सकाशुं गर्भ हेले से नारी ॥ ५ ॥
जन्म करिण ए बाळ, माता खोजि गले जळ,
हनु चाहिँले उदय होए अरुण ।
फळ प्रायेक देखिले, आकाशमार्गे क्षेपिले,
अनिळ सलिळ सिन्धु थिले आपण ।
सूर्य्य रथ परे बसिले ।
दिनकर जाणिण दहन न कले ॥ ६ ॥
राहु थिला तांक पाश, करन्ता उदय ग्रास,
पळाइ जाइण से शक्रकु कहिला ।
छड़ाइण मोर ग्रास, आउ राहुए ता पाश,
उदय देखिण से सूर्य्यंकु धइला ।
आहे देब बिचार कर ।
तुम्भे सिना देइथिल मोते आहार ॥ ७ ॥
शुणि शक्र कोप बहि, अइराबत आरोहि,
राहु आगे आसन्तेण पच्छे अइले ।
देखि गोड़ाइण हनु, पळाइ सिंहिका सूनु,
बासबर पृष्ठरे शरण पशिले ।
एहा देखि से पुरन्दर ।
बज्र बुलाइ माइले हनु हृदर ॥ ८ ॥

वह गर्भवती हो गई । ५ इस बालक को जन्म देकर माता जल खोजने गई । हनुमान ने अरुण को उदय होते देखा । फल के समान उसे देखकर इन्होंने आकाशमार्ग में छलाँग लगा दी । वायु, जल और सागर में बस आप ही दिखाई देते थे । सूर्य रथ पर बैठे थे । उन्होंने जान-बूझकर इन्हें दग्ध नहीं किया । ६ राहु उदय-ग्रास करने के लिए उनके ही पास था । वह भागा और उसने इन्द्र के पास जाकर कहा कि सूर्य के पास एक और राहु था जिसने मेरा ग्रास छीनकर उदित सूर्य को पकड़ लिया है । हे देव ! अब आप विचार करें, क्योंकि आपने ही मुझे आहार दिया था । ७ यह सुनकर कुपित होकर इन्द्र ऐरावत पर चढ़कर राहु के आगे जाने पर पीछे से आ पहुँचे । देखते ही हनुमान के खदेड़ने पर सिंहिका का पुत्र भागकर इन्द्र के पीछे जाकर शरणापन्न हो गया । यह देखकर इन्द्र ने बज्र घुमाकर हनुमान के वक्ष पर मार दिया । ८ पराक्रमी

पड़िला ए हनुबीर, उदय पर्बत पर,
देखिण पबन बहु कुपित हेला।
निरोध कला जगत, रुन्धि होइले समस्त,
चउद लोकंकु बहु बिपत्ति देला।
सर्बदेब एकत्र हेले।
पितामह पारुशरे गुहारि कले ॥ ९ ॥
बोलन्ति कमळासन, शुण हे पाकशासन,
राहु बोले मरुत पुत्रकु माइले।
एते बोलि पद्मजोनि, सकळ देबंकु घेनि,
मरुत सन्निधिकि जे बेगे अइले।
अंगे घेनिछन्ति बाळुत।
महा चिन्ता करि बसिछन्ति मरुत ॥ १० ॥
पितामह देखि बात, पुत्रकु घेनि त्वरित,
चरणे पड़ि बोइले मला ए बाळ।
छुअन्ते से पितामह, हनु तेजिलाक मोह,
बहिला समस्त प्राणींकर अनिळ।
धाता कहे सर्ब देबंकु।
जण जण करे बर दिअ एहांकु ॥ ११ ॥
शचीपति देले बर, बोइले बज्र शरीर,
होइबु आम्भर बज्रे नोहिबु नाश।

हनुमान उदयाचल पर्वत पर गिर पड़े। यह देखकर पवनदेव बहुत कुपित हुए। उन्होंने संसार में अपना निरोध कर लिया, सभी लोग घुटने लगे। चौदह लोकों को महान कष्ट हुआ। सब देवताओं ने एकत्रित होकर ब्रह्मा जी के पास गुहार लगायी। ९ कमलासन ब्रह्मा ने कहा, हे इन्द्र! सुनो। तुमने राहु के कहने से वायु के पुत्र को मार दिया है। ऐसा कहकर पद्मयोनि ब्रह्माजी समस्त देवताओं को लेकर शीघ्र ही पवनदेव के समीप आये। पवनदेव महान चिन्ता में बालक को गोद में लिये बैठे थे। १० ब्रह्माजी को देखकर पुत्र को लेकर पवनदेव वेग से उनके चरणों में गिरकर बोले कि यह बालक मर गया है। पितामह के छूते ही हनुमान की मूर्च्छा भंग हो गई। सभी प्राणियों में वायु संचरित हो गई। ब्रह्मा ने सभी देवताओं से कहा कि प्रत्येक देवता इसे वर प्रदान करो। ११ इन्द्र ने वर देते हुए कहा कि तुम्हारा शरीर वज्र के समान होकर हमारे

नाम तोर हनुमन्त, आजहुँ हेब बिदित,
सबुठारे सबु काळे पाइबु जश ।
एहा शुणि बोइले भानु ।
ए आम्भर तेज बहिथिब हे हनु ॥ १२ ॥
बरुण देलेक बळ, बोइले आम्भ जळर,
न बुड़िबु न मरिबु आम्भर पाशे ।
जम बोइले अमर, हेब मरुत कुमर,
बध नोहिब आम्भ काळदण्ड पाशे ।
बैश्वानर ए बर देल ।
आम्भ तेजरे दह्य नोहिबु बोइले ॥ १३ ॥
कुबेर देलेक बर, बोइले हे कपिबीर,
जेउँ रूप चिन्तिबु से रूप होइबु ।
मरुत देलेक बर, बोइले मोर कुमर;
मोहरि प्रायक पराक्रम बहिबु ।
बिरंचि देब बर देले ।
आम्भ ब्रह्मअस्त्रे न मरिब बोइले ॥ १४ ॥
पबन घेनि नन्दन, अइले तांक सदन,
पुत्र देइ अंजनाकु सबु कहिले ।
आपणा स्थाने मरुत, गमन कले त्वरित,
दिनकु दिन हनु तेजोबन्त हेले ।

वज्र से भी नष्ट नहीं होगा । आज से तुम्हारा नाम 'हनुमन्त' विख्यात होगा । तुम्हें सब जगह सभी काल में यश मिलेगा । यह सुनकर सूर्य ने कहा कि हे हनुमान ! तुम हमारे तेज को धारण करो । १२ वरुणदेव ने जल में न डूबने तथा वरुणपाश से न मरने का वर दिया । यमराज ने कहा, हे मारुति ! तुम अमर हो । हमारे कालदण्ड तथा यमपाश से भी तुम्हारा वध नहीं होगा । अग्नि ने वर देते हुए कहा कि तुम हमारे तेज से दग्ध नहीं होंगे । १३ कुबेर ने वर देकर कहा, हे पराक्रमी वानर ! जो रूप चाहोगे वह रूप तुम धारण कर सकोगे । वायु ने वर देते हुए कहा कि मेरा पुत्र मेरे ही समान पराक्रमी होगा । ब्रह्मा ने वर देकर कहा कि तुम हमारे ब्रह्मास्त्र से नहीं मरोगे। १४ पवनदेव पुत्र को लेकर उसके घर गये । उन्होंने अंजना को पुत्र देकर सब कुछ बता दिया और वह शीघ्र ही अपने स्थान को चले गये। हनुमान्त दिन पर दिन तेजवंत होते गये ।

अंगे होइला बहु बळ ।
ऋषि कुटीमान भांग कलेक गोळ ॥ १५ ॥
पुलस्ति जे शीघ्र कोप, करिण देलेक शाप,
बोइले तोहर बळ न जाणु तुहि ।
देब कार्ज्य जेबे हेब, प्राकर्म तोहर हेब,
तेते काळ जाए तुहि होइबु मोहि ।
तेणु हनु बाळि भयरे ।
बळ न जाणि लुचिले सुग्री संगरे ॥ १६ ॥
हनुर शुणिण जश, राघब होइले तोष,
शुणिले नर, राक्षस ऋक्ष बानर ।
साधु साधु सर्बे कले, मारुतिकि प्रशंसिले,
शुणि सन्तोष हेले अंजनाकुमर ।
श्रीरामंक पाद कमल ।
दीन बिशि मति अहर्निशि भ्रसळ ॥ १७ ॥

त्रयोदश छान्द—सुग्री बिभीषणादि बिदाय

राग—मुखारी

कुम्भऋषि सुत कथा शेष । शुणि समस्ते हेले हरष ।
रामचरित अमृत रस । शुणि पशुहिँ होइबे बश ॥ १ ॥

उनके शरीर में अत्यन्त बल हो गया। वह ऋषियों की कुटियों को तोड़कर उद्दण्डता करने लगे। १५ क्रोधी पुलस्त्य ने उन्हें शाप देते हुए कहा कि तुम्हारा बल तुम्हें याद न रहे। जब देवकार्य होगा तो तुम्हारा पराक्रम भी होगा। उस समय तुमको स्मरण हो आयेगा। इसीलिए हनुमान बालि के भय से अपने बल को जानते हुए सुग्रीव के साथ छिपते रहे। १६ हनुमान का यश सुनकर श्रीराम प्रसन्न हो गये। मनुष्य, राक्षस, रीछ तथा वानर सभी लोग सुनकर मारुति की प्रशंसा करके साधुवाद देने लगे। यह सुनकर अंजनीकुमार संतुष्ट हो गये। श्रीराम के चरण-कमलों में दीन विशि का मन रूपी भ्रमर रात-दिन रमा रहे। १७

छान्द १३—सुग्रीव, विभीषण आदि की विदाई

राग—मुखारी

ऋषिपुत्र कुम्भ की कथा समाप्त होने पर सभी लोग सुनकर प्रसन्न हुए। श्रीराम-चरित्र के सुधारस को सुनकर पशु भी वश में हो जाते

राम ऋषिकु मेलाणि देले । जेझा मठकु सेमाने गले ।
मातुळगणे मेलाणि देले । भ्राता माने तांक संगे गले ।। २ ।।
राजामाने मेलाणि होइण । जे ह्मा देशकु गले गमन ।
पाइ रथ गज अश्वगण । हृष्ट होइले से जणे जण ।। ३ ।।
भ्रातामाने अजाघरे थिले । किछि दिने तहुँ बाहुड़िले ।
वहु द्रव्य अश्व त आणिले । आनन्दे जण जण के देले ।। ४ ।।
स्वदेशे गले जेते नरेश । पठिआइ देले रत्नकोष ।
राम देखिल हेले हरष । रखाइले भण्डारे सर्वस्व ।। ५ ।।
किछि दिने से पुष्पबिमान । बाहुड़िला राम सन्निधान ।
कर जोड़िण कहे बचन । देब गलि कुबेर भुबन ।। ६ ।।
मोते अंगीकार से न कले । बाहुड़ाइण तुम्भंकु देले ।
जिणि नेलेक तोते श्रीराम । मोर रखिबार नोहे धर्म ।। ७ ।।
शुणि बोलन्ति रघुनन्दन । जाअ जाअ शून्य भुबन ।
आम्भे मानस कले आसिब । एते बोलि पूजिले राघब ।। ८ ।।
राम आज्ञा पाइ जान गले । एता शुणि भ्रत जणाइले ।
तुम्भे राजा हेबार राघब । देखुअछि अति असम्भब ।। ९ ।।

हैं । १ राम ने ऋषियों को विदा दी । सब अपने-अपने आश्रम को चले गये । मामा लोगों की भी विदाई हुई । भाई लोग उनके साथ चले गये । २ राजा लोग विदा होकर रथ, हाथी और घोड़े पाकर प्रसन्नता से सभी अपने-अपने देश को चले गये । ३ भाई लोग नाना के घर में थे । कुछ दिन बाद वहाँ से बहुत सा द्रव्य, घोड़े आदि लेकर आनन्दपूर्वक लौटे । ४ जितने राजा थे, उन्होंने अपने राज्य में पहुँचकर रत्न तथा कोष भिजवा दिया । श्रीराम उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए और वह सब कुछ भण्डारगृह में रखवा दिया । ५ कुछ दिनों में वह पुष्पक विमान श्रीराम के समीप लौट आया । उसने हाथ जोड़कर कहा, हे देव ! मैं कुबेर-भुवन में गया । ६ कुबेर ने मुझे स्वीकार नहीं किया और मुझे आपके पास लौटा दिया । उन्होंने कहा कि श्रीराम तुम्हें जीतकर लाये हैं । मुझे रखना धर्म न होगा । ७ यह सुनकर रघुनन्दन श्रीराम ने कहा कि तुम शून्यलोक में चले जाओ । हमारे संकल्प मात्र से तुम आ जाना । ऐसा कहकर राघव ने उसकी पूजा की । ८ राम की आज्ञा पाकर यान चला गया, यह सुनकर भरत ने कहा, हे राघव ! आपके राजा होने पर अत्यन्त असम्भव बातें दिखाई दे रही हैं । ९ यान

जाम प्रत्यक्षे कहिला कथा । बृद्धमाने हेले सामरथा ।
जात हेले अनेक कुमर । अकाळ मृत्यु नोहे काहार ।। १० ।।
शक्र पाळन्ति जे जाहा काळे । केहि न देखन्ति ताकु बेळे ।
उपुजिले बहु शस्य फळे । मन्दगन्ध शीतळ अनिळे ।। ११ ।।
पृथ्वी हेले बहु शस्यदायी । बहु क्षीरबती धेनु होइ ।
रोग सन्ताप तेजिले जने । दयाधर्म सबुंकरि मने ।। १२ ।।
शुणि श्रीराम हेले प्रमोद । इन्दीबर से जेन्हे कुमुद ।
भोग कले बिपुळ सम्पद । पासोरिले गतर बिपद ।। १३ ।।
सुग्री बिभीषण स्नेह बशे । अजोध्यारे से रहिले मासे ।
तदन्तरे मागिले मेलाणि । राम सीउकार कले जाणि ।। १४ ।।
सुग्रीबंकु बसाइ छामुरे । हनु अंगद बेनि पाशरे ।
मित्र पुत्र तुम्भर अंगद । एहा ठारे न करिब भेद ।। १५ ।।
हनुबीर तुम्भे मंत्रिराज । एहा बिचारे करिब कार्ज्य ।
एते कहि करि देले हार । आलिंगन कले रघुबीर ।। १६ ।।
कण्ठ काढ़िण बैडूर्ज्यमाळा । पुणि देले से अंगद गळा ।
तांकु सुग्रीबे समरपिले । बेनि भुजे आलिंगन कले ।। १७ ।।

ने प्रत्यक्ष रूप से आपसे बात की । वृद्ध लोग समर्थ हो गये । उनके अनेक पुत्र उत्पन्न हो गये । किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती । १० इन्द्र काल के अनुसार सबका पालन करते हैं । एक बार भी वह किसी को दिखाई नहीं दिये । फ़सल तथा फल प्रचुरता से उत्पन्न हो गये । शीतल, मन्द सुगन्धित पवन बहने लगा । ११ पृथ्वी शस्यपूरित हो गई । गायें अधिक दूध देनेवाली हो गयीं । लोग रोग और संताप से छूट गये । सबके मन में दया और धर्म का प्रादुर्भाव हो गया । १२ यह सुनकर श्रीराम प्रसन्न हो गये । कुमुद और कमल के समान उन्होंने विपुल सम्पदा का उपभोग किया । वह अतीत की विपत्ति भूल गये । १३ सुग्रीव और विभीषण स्नेह के वश में अयोध्या में एक महीने रह गये । तदनन्तर उन्होंने बिदा माँगी । श्रीराम ने यह जानकर उसे स्वीकार कर लिया । १४ उन्होंने सुग्रीव को सामने बिठाया । हनुमान और अंगद उनके दोनों ओर थे । श्रीराम ने कहा, हे मित्र ! अंगद तुम्हारा पुत्र है । इससे भेद न करना । १५ हनुमान ! तुम श्रेष्ठ मन्त्री हो, यह विचार करके कार्य करना । ऐसा कहकर रघुवीर ने हार प्रदान करते हुए उनका आलिंगन किया । १६ कण्ठ से निकालकर वैदूर्य की माला उन्होंने अंगद के गले में डाल दी और अंगद को सुग्रीव को समर्पित करते हुए दोनों

पुण हनुकु कलेक कोळ । आउ माळे मण्डिले ता गळ ।
एहि रूपे सेनापति कुळ । स्नेह कले कउशल्या बाळ ।। १८ ।।
मेलाणि हेले किष्किन्ध्यापुर । राजा संगतरे सर्बबीर ।
एहि काळे बिभीषण बीर । जणाइले जोड़ि बेनि कर ।। १९ ।।
आज्ञा देले जिबि लंकापुर । शुणि दरहास रघुबीर ।
निज उरु काढ़ि हार बर । देले बिभीषणंकु ग्रीबार ।। २० ।।
बेनि भुजे आलिंगन कले । राजनीति तांकु शिखाइले ।
लंकपति मेलाणि होइले । बिशि बोले लंका प्रति गले ।। २१ ।।

चतुर्दश छान्द—सीतांक-बिहार

राग—आहारी

दिन अन्तरे । कले हृष्ट मनरे ।
राम सीता बिहार निशि निरन्तरे ।। १ ।।
राम राजन । चन्द्रशाळा भुबन ।
पल्यंक अंके बसाइ रामारतन ।। २ ।।

भुजाओं से उनका आलिंगन किया । १७ फिर उन्होंने हनुमान के गले को और एक माला से सुशोभित करके उन्हें अपनी छाती से लगा लिया । कौशल्यानन्दन श्रीराम ने स्नेहपूर्वक इसी प्रकार से सभी सेनापतियों का सत्कार किया । १८ राजा के साथ सभी वीर विदा लेकर किष्किन्धापुर चले गये । इसी समय पराक्रमी विभीषण ने दोनों हाथ जोड़कर कहा । १९ आज्ञा देने से मैं लंकापुरी जाऊंगा, यह सुनकर रघुवीर ने मुस्कुराते हुए अपने हृदय से उत्तम माला निकालकर विभीषण के गले में डाल दी । २० उन्होंने दोनों भुजाओं से उन्हें आलिंगन करते हुए राजनीति की शिक्षा दी । विधि कहता है कि लंकापति विभीषण आज्ञा पाकर लंका को चले गये । २१

सीता का विहार

—अहारी

दिन व्यतीत ...त्र मन से श्रीराम और सीता निरन्तर विहार ...न्द्रशाला महल में महारा- ने अपने अंक रूपी ...मान जाँघों वाली स्त्रीरत्न

रम्भा जघना। होइ रंजित मना।
दृढ़े आलिंगने मिशि बिपुळ स्तना॥ ३ ॥
बर तरुणी। शोभा दिशे कि जाणि।
हेमसूत्रे रहिला कि मर्कत मणि॥ ४ ॥
से बेनि जने। आनन्द निधुबने।
कामशास्त्र आचरन्ति चित्तोइ मने॥ ५ ॥
फिटिला बेणी। रसे सुमनाश्रेणी।
हेमकुम्भ बाहार कि कळा नागुणी॥ ६ ॥
उरजुँ हार। फिटि पड़े भुमिर।
एहा देखिण खसिला कटि अम्बर॥ ७ ॥
कटीत क्षीण। बस्त्र अटइ झीन।
बिपुळ बुकुँ हेउछि हार पतन॥ ८ ॥
एहि बिचार। मने धइला चिर।
लाजे संग करिण पड़िबा भुमिर॥ ९ ॥
ताटंक चळे। स्वेद अंगरु गळे।
केबळ नूपुर ध्वनि करे आकुळे॥ १० ॥
बेश बिभंग। रामर लुब्ध अंग।
पूर्णशशी हेउछि कि राहु संजोग॥ ११ ॥

प्रसन्न मन से उन्नत उरोजों वाली सीता का दृढ़ता से आलिंगन किया। २-३ श्रेष्ठ तरुणी की शोभा ऐसी लग रही थी जैसे हेमसूत्र में मरकत मणि पिरो दी गयी हो। ४ वह दोनों आनन्द वन में अपने मन में चिन्तन करते हुए कामशास्त्र का आचरण करने लगे। ५ क्रीड़ा करती हुई सीता की वेणी खुल जाने से ऐसा लगता था मानों स्वर्णकुम्भ से नागिन निकल पड़ी हो। ६ वक्षस्थल का हार खुलकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। यह देखकर कमर से वस्त्र नीचे खिसक गया। ७ उनकी कमर पतली थी और वस्त्र झीना था। उठे हुए वक्षस्थल से हार गिरा पड़ता था। ८ उनके प्रसंग के विषय में सोचकर हार मन में लज्जित होकर भूमि पर गिर पड़ा। ९ उनके कुण्डल हिल रहे थे। शरीर से पसीना गिर रहा था। केवल नूपुर आकुलता से ध्वनि कर रहे थे। १० राम के लोभी अंग से सीता का वेश विभंग हो गया था। लगता था कि पूर्णमासी के चन्द्रमा को राहु ने ग्रस लिया हो। ११ बाहुबन्धन तथा पति द्वारा चुम्बन करने से मानों कामदेव उसकी

बाहु बन्धन । पति चुम्बन दान ।
काम देखाउछि कि ता मुकति स्थान ॥ १२ ॥
चन्द्र सरोज । पयर तेजि आज ।
एक मुख कला बामा मकरध्वज ॥ १३ ॥
कटि रसना होइ थिला बिमना ।
बिपरीते ध्वनि कला होइ सुमना ॥ १४ ॥
मुंचन्ते रेत । लाज बास संगत ।
बोले बिशि आच्छादिला आसि त्वरित ॥ १५ ॥

पञ्चदश छान्द

राग—चक्रकेळि

एक दिने राम मने पांचिले । दिव्य बनिका गोटिए रचिले ॥ १ ॥
नाना तरुमानंकरे शोभन । हेम चउरामान बितपन ।
केउँ तरु दिशइ हेम बर्ण । केहि दिशइ माणिक्य समान ॥ २ ॥
केउँ तरु दिशइ मरकत । केउँ तरु कान्ति दिशे असित ।
केहि शुकळ नीळ नाना रंग । तहिँ क्रीडन्ति समस्त बिहंग ॥ ३ ॥

मुक्ति का स्थान दिखा रहा हो । १२ ऐसा प्रतीत होता था, मानों आज कामदेव ने चरण-कमलों से हटाकर चन्द्रवदनी कामिनी रति का आलिंगन करके उसे अभिन्न बना लिया हो । १३ कमर तथा रसना के थक जाने के कारण कामिनी (रमणकाल के समर होनेवाली) विपरीत ध्वनि करने लगीं । १४ विधि कहता है कि संगम से वीर्य स्खलित होने पर लज्जा ने आकर वस्त्र से उन्हें शीघ्र ही आच्छादित कर दिया । १५

छान्द—१५

राग—चक्रकेलि

एक दिन श्रीराम ने मन में विचार किया । उन्होंने एक दिव्य बगीचे की रचना की । १ नाना प्रकार के वृक्षों से वह सुशोभित था । सोने के चबूतरे बने हुए थे । कोई वृक्ष सुनहरे वर्ण का और कोई माणिक्य के समान दिखाई दे रहा था । २ कोई वृक्ष मरकत के समान दिख रहा था । किसी वृक्ष की कांति श्याम थी और कोई सफेद, नीले तथा अनेक रंगों के थे । समस्त पक्षी वहाँ पर विहार कर रहे थे । ३ आम, कटहल,

आम्ब पणस पुन्नाग जेउट । बेल बरुण कपित्थ प्रकट ।
रम्भा नारिकेळ ताळ खर्ज्जुरी । नरकोळि जम्बु निम्ब बदरी ।। ४ ।।
टभा जम्भीर लेम्बाउ कमळा । करमंगा गुआकोळि अएँळा ।
देबदारु गरु दिव्य अगर । दिव्य चन्दन कर्पूर तगर ।। ५ ।।
अळाइच इळाइच लबंग । लता माधबी पल्लब सुरंग ।
जाति फळ तरुकुळ मरीच । दिशुछन्ति तरुमाने सुसंच ।। ६ ।।
छुरीअना कदम्ब नागेश्वर । चम्पा बकुळ केतकी मन्दार ।
श्वेत लोहित कंचन अशोक । कुन्द मुकुन्द पाटळि कनक ।। ७ ।।
रंग अएँळा कस्तुरी पटोळ । जाली जूथी माळती मल्लीकुळ ।
काठबाण नीळबाण अएँळा । कुरुबेलि निआळी सुपियळा ।। ८ ।।
किआ कुरुबल्ली काठरंगिणी । बेनि सेबती सुबधुली श्रेणी ।
कर्णिकार कुटज सुतराट । दिव्य दयण मरुआ प्रकट ।। ९ ।।
पारिजातक कुसुम स्वर्गर । राम रोपिण अछन्ति अपार ।
पुष्प बनरे मधुकर बृन्द । ध्वनि करन्ति पिइ मकरन्द ।। १० ।।
शुक पिक सारिकार सुस्वन । शुणि आनन्द हुए राममन ।
तथि मध्यरे दिव्य सरोबर । चउपाशे पाबच्छ स्फटिकर ।। ११ ।।

पुन्नाग, शरीफा, शमी, पाकर, बेल, कैथे, केले, नारियल, ताड़, खजूर, बेर, जामुन, नीम, नींबू, जम्भीर, खट्टा नींबू, सुपारी, आँवला, देवदार, अगर, तगर, दिव्य चंदन, कपूर, इलायची छोटी और बड़ी तथा लौंग आदि के वृक्ष लगे थे। माधवी लता के पत्ते लाल रंग के थे। फल जाति के वृक्षों के साथ काली मिर्च के पेड़ लगे थे। वृक्ष सजे हुए दिखाई दे रहे थे। ४-६ नुकीली पत्ती वाले नागेश्वर, कदम्ब, चम्पा, बकुल, केतली, मन्दार सफेद और लाल, कंचन, अशोक, कुन्द, मुकुन्द, पाटली तथा कनक आदि लगे थे। ७ लाल आँवला, कस्तूरी, पटोल, जई, जूही, मालती, मल्ली आदि के पेड़ लगे थे। काठ वाण, नील वाण, आमल की कुरविल, नियाली, किआ पुष्प, कुरवल्ली, काठरंगिणी, सेवती तथा वधूली जाति की बेलें लगी थीं। कनेर, कुरइया तथा दिव्य दयणादि प्रकट थे। ८-९ श्रीराम ने स्वर्ग के अपार पारिजात आदि फूलों के वृक्ष लगा रखे थे। उस पुष्पवन में भ्रमरबृन्द मकरन्द का पान करते हुए गुंजन कर रहे थे। १० शुक, पिक तथा सारिकाओं के सुन्दर कलरव को सुनकर श्रीराम का मन प्रसन्न हो रहा था। इसके बीच में एक दिव्य सरोवर था, जिसके चारों ओर स्फटिक की सीढ़ियाँ थीं। ११ उसमें पक्षी नृत्य और क्रीड़ा कर रहे थे।

तथि क्रीडा करे नृत्य बिहंग । नीळ उत्पळ कोकनद रंग ।
फुटिछन्ति कमळ पुण्डरीक । नीळ कुमुद कमळ अनेक ॥ १२ ॥
दिव्य चन्दन काष्ठ चाप शोभा । तहिँ मण्डप कामरथ अबा ।
जळ मध्ये जळ जन्तु अनेक । दिशे दिव्य राग पुष्प स्वरूप ॥ १३ ॥
हेम कळशे सुनेत पताका । कि बासबर पुरर अळका ।
सरोबर बेढ़िण तरु शोभा । फळ कुसुमे मन करे लोभा ॥ १४ ॥
केउँ ठाबरे सुबर्ण बेदिका । केउँ बेदिका स्फटिकरे एका ।
केउँ बेदिका मरकत शिळा । केउँ बेदी केबळ मात्र नीळा ॥ १५ ॥
केउँ बेदिका मणिक्य बिहित । केउँ बेदिका अटइ रजत ।
रत्नपुर मान ठाब ठाबरे । शोभा दिशन्ति आराम भितरे ॥ १६ ॥
ताकु बेढ़िण पाषाण प्राकार । बहु कांगुळा मानंके सुन्दर ॥ १७ ॥
दिव्य चूनरे भूमि दिशे शोभा । किबा चन्द्र किरणर ए प्रभा ।
स्वर्गु अइला कि नन्दन बन । सेहिमति बनिका शोभावन ॥ १८ ॥
कुबेरंक चइत्र रथ अबा । चउपाशकु दिशुअछि शोभा ।
षड़ऋतु घेनिण तहिँ काम । करि अछन्ति तोटारे बिश्राम ॥ १९ ॥

नीले, लाल, श्वेत तथा नाना प्रकार के रंगों वाले कमलकुमुद खिले हुए थे। १२ वहीं पर दिव्य चंदन काष्ठ का सुन्दर कामदेव के रथ के समान मण्डप बना था। जल में अनेक जलजन्तु थे। दिव्य रागरंजित पुष्पों जैसे दिखाई दे रहे थे। १३ स्वर्णकलश के ऊपर लाल ध्वज लगा था। वह इन्द्रपुरी की अलका के समान था। सरोवर के चारों ओर सुन्दर वृक्ष लगे थे, जिनके फल-मूल मन को लुभा रहे थे। १४ कोई वेदी स्वर्ण की, कोई स्फटिक की, कोई मरकत पत्थर की और कोई केवल नीलम की बनी थी। १५ कोई वेदिका माणिक्य और कोई चाँदी की बनी थी। उस बाग के भीतर जगह-जगह पर रत्नमय सदन बने थे जो अत्यन्त सुन्दर दिखाई देते थे। १६ उसे घेरकर चारों ओर पत्थर की चहारदिवारी थी। उस पर बहुत से सुन्दर कंगूरे थे। सुन्दर कलई से पुती भूमि मनोहर दिखाई दे रही थी। उसकी प्रभा चाँदनी के समान थीं। वह बगीचा इतना शोभायमान लगता था कि नन्दनवन ही स्वर्ग से उतर आया हो। १७-१८ अथवा कुबेर के चैत्र वन के समान वह चारों ओर से सुन्दर दिखाई दे रहा था। षड्ऋतुओं को लेकर मानो कामदेव उसी बगीचे में विश्राम कर रहा हो। १९ वहीं पर जानकी के साथ श्रीराम नाना

तहिं जानकी संगेरघुबीर । नाना रंगरे करन्ति बिहार ।
नित्य करन्ति राम राजनीति । सीता संगे मध्यान्हे बिहरन्ति ।। २० ।।
सभा करन्ति प्रहरेक निति । एहि रूपे बंचिले दिबा राति ।
प्रजा पाळन्ति पुत्र समान । धर्म व्यतीत न जाणन्ति आन ।। २१ ।।
सीता सुबेश होन्ति दिन शेष । निशि राम सन्निधिरे प्रबेश ।
जेन्हे शची खटन्ति शक्रपाशे । सेहि रूपे राम सीता पाश्शे ।। २२ ।।
एहि मते दश सस्र बरष । सीता संगरे रजनी दिबस ।
तदन्तरे जानकी गर्भबास । राम देखिण परम सन्तोष ।। २३ ।।
हसि सीतांकु कहन्ति बचन । केउँ कथाकु हेउअछि मन ।
ताहा देबि आणि नारी रतन । बिशि बोले कुह सत्य बचन ।। २४ ।।

षोडश छान्द—सीता-बनबास

राग–आषाढ़ शुक्लबाणी

राघब अंके बसिण सुन्दरी ।
कान्तकु कहन्ति जे स्नेह करि ।

प्रकार की केलिक्रीड़ा करते हुए विहार कर रहे थे। श्रीराम नित्य राज्य का कार्य सम्हालते थे और मध्याह्न में वह सीताजी के साथ विहार करते थे। २० वह नित्य एक प्रहार के लिए सभा करते थे। वह इसी प्रकार दिन और रात बिता रहे थे। वह पुत्र के समान प्रजा का पालन करते थे और धर्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु का उन्हें ध्यान नहीं था। २१ दिन समाप्त होने पर सीता सुवेष श्रृंगार करके श्रीराम के समीप पहुँच जाती थीं। जैसे शची इन्द्र की सेवा करती है वैसे ही वह श्रीराम की सेवा में रहती थीं। २२ इसी प्रकार दिन-रात सीता के साथ विहार करते श्रीराम को दस हजार वर्ष व्यतीत हो गये। तदनन्तर जानकी जी को गर्भवती देखकर श्रीराम को परम सन्तोष हुआ। २३ फिर वह हँसकर सीता से पूछने लगे कि तुम्हारा मन किस वस्तु के लिए हो रहा है? विशि कहता है कि उन्होंने कहा कि हे नारीरत्न! तुम हमसे सचमुच बताओ। मैं तुम्हें वह ही लाकर दूंगा। २४

छाद १६—सीता-बनबास

राग–आषाढ़ शुक्लवाणी

वह सुन्दरी राघव के अक में बैठकर बड़े प्रेम से अपने स्वामी से बोलीं। मेरा मन तपोवन देखने का तथा ऋषिपत्नियों के दर्शन करने

तपोबन देखिबाकु मो मन ।
ऋषि पत्नींकि करिबि दर्शन ।
फळ मूळ देबि । बसन भूषण देइ आसिबि ।। १ ।।
शुणि राघब होइ हस-हस ।
आज्ञा देले जिब तांकरि पाश ।
ऋषिमानंक मठ देखाइबा ।
तुम्भर मनोरथ पुराइबा । तोषिबाकु मन ।
बाहार मण्डपे कले आस्थान ।। २ ।।
दिव्य मण्डप रत्नबेदी पर ।
तहिँ बिजय कले रघुबीर ।
एहि काळरे बयसिक माने ।
प्रबेश हेले राम सन्निधाने । सेमानंकु देखि ।
तांकु देखि परिजन उपेक्षि ।। ३ ।।
श्रीराम तांकु परिहास कले ।
शुणि से माने प्रतिभाष देले ।
उपुजिला तहुँ बहुत हास ।
जाणन्ति से माने कथार रस । सेमानंक संगे ।
कउतुक कथा कहन्ति रंगे ।। ४ ।।
राम बोलन्ति शुण द्विजमाने ।
आम्भंकु कि बोलन्ति पुरजने ।
निन्दा स्तुति आम्भ छामुरे कह ।

का हो रहा है । मैं उन्हें फल, मूल, वस्त्र, आभूषण देकर आ जाऊँगी । १ यह सुनकर राघव राम ने हँसते हुए उनसे कहा कि तुम उनके पास चली जाना । हम तुम्हें ऋषियों के आश्रम दिखाकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे । फिर उनके मन को प्रसन्न करने के लिए वह बाहरी मण्डप में बैठ गये । २ दिव्य वेदी पर बने रत्नमण्डप पर रघुवीर राम विराजमान हो गये । इसी समय उनकी हमजोली वाले लोग वहाँ उपस्थित हुए । उन्हें देखकर श्रीराम परिजनों को हटाकर उनके साथ परिहास करने लगे । श्रीराम की बातें सुनकर उन्होंने उत्तर दिया, जिससे और अधिक हँसी होने लगी । वह लोग बातों का रस समझते थे । उनके साथ श्रीराम आनन्द से कौतुक की बातें कर रहे थे । ३-४ श्रीराम ने कहा, हे ब्राह्मणो ! सुनो पुरवासी लोग हमारे विषय में क्या कहते हैं ? निन्दा अथवा स्तुति जो भी हो, हमारे

जथार्थ कथारे भय न पाअ ।
शुणिले अकीर्त्ति । अकीर्त्तिरे न बळाइबा मति ॥ ५ ॥
बोलन्ति हे देब तुम्भ कीरति ।
चन्द्रकर प्राय मण्डिला क्षिति ।
त्रय भुबन सन्ताप खण्डिल ।
जानकी छळे राबण दण्डिल ।
सिन्धु बन्धाइल । अलौकिक कर्ममान त कल ॥ ६ ॥
पर्शुरामंकु देब कल जय ।
से दिनु दुष्ट होइले सभय ।
जेउँ लंकागड़ देबे अजय ।
बानरंकु घेनि कल ता जय । कि बोलिबे जने ।
प्रशंसा करन्ति त्रय भुबने ॥ ७ ॥
पुणि बोलन्ति श्रीराम राजन ।
तुम्भे माने भय न कर मन ।
तथापि आम्भर कि अबिगुण ।
काहा मुखरु काहिँ अबा शुण ।
शुणि निबर्त्तिबा । धर्म कथारे सिना प्रबर्त्तिबा ॥ ८ ॥
भद्रमुख नामे एक ब्राह्मण ।
कर जोड़िण बोले देब शुण ।

सामने कहो । यथार्थ बात कहने में भय न करो । अपयश सुनने से उसमें बुद्धि न लगाना । ५ उन्होंने कहा, हे देव ! आपकी कीर्ति ने चन्द्रिका के समान सम्पूर्ण भूमण्डल को सुशोभित कर दिया है । आपने तीनों लोकों का कष्ट निवारण किया है । सीता के बहाने आपने रावण को दण्ड दिया । समुद्र में सेतु बनाया तथा अनेक अलौकिक कार्य किये हैं । ६ हे देव ! जिस दिन आपने परशुराम पर विजय प्राप्त की, उसी दिन से दुष्ट लोग भयभीत हो गये हैं । जो लंका दुर्ग देवताओं के लिए भी अजेय था उसे आपने वानरों को लेकर जीत लिया । लोग क्या कहेंगे ? तीनों लोकों में लोग आपकी प्रशंसा कर रहे हैं । ७ फिर महाराज रामचन्द्र ने कहा कि आप लोग मन में भय मत करें । हमारे दोष क्या हैं, यदि किसी के मुख से उसे सुनो तो उसे हम सुनकर दूर करेंगे और धार्मिक बातों के अनुसार कार्य करेंगे । ८ तब भद्रमुख नाम के एक ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा कि सबके मुख से आपकी यशगाथा ही सुनी है । केवल एक बात

सबुरि मुखरे तुम्भर कीर्त्ति ।
एका कथाए मात्र अपकीर्त्ति ।
शुणइ मुँ जाहा । बचने देब कहि नुहेँ ताहा ।। ९ ।।
राम बोलन्ति हे भय न कर ।
निर्भय होइ जणाअ छामुर ।
एहा शुणि द्विज कहे उत्तर ।
भो देब तुम्भर नगर नर ।
एमन्त बोलन्ति । एडे़ अनीति कले रघुपति ।। १० ।।
राबण जाहाकु चोराइ नेला ।
बरषे जाए घरे रखिथिला ।
ताहाकु आणि कले प्रियबती ।
न मिळन्ता किबा अन्य जुबती ।
एमन्त बचन । कहन्ति देब अजोध्यार जन ।। ११ ।।
जेउँ नृपति जेउँ धर्म करे ।
से देश जने तार अनुसारे ।
आम्भ भारिजा जेबे नेबे आन ।
ताहाकु तेबे आणिब सदन ।
जा कले नरेश । आम्भे माने कले हेब कि दोष ।। १२ ।।
एहा शुणि जणाइलि छामुर ।
मो दोष न धर कोदण्डधर ।
शुणि श्रीराम अरुण नयन ।

अपयश की है । हे देव ! मैंने जो सुना है वह कहा नहीं जा सकता । ९ श्रीराम ने कहा, तुम भय न करो । निर्भय होकर हमें बताओ । यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा, हे देव ! आपके नगरवासी ऐसा कहते हैं कि रघुकुल के स्वामी श्रीराम ने इतनी अनीति की । १० जिसको रावण चुरा ले गया और अपने घर में एक वर्ष रखा, उसी को लाकर उन्होंने अपनी प्रिया बना लिया । क्या उन्हें अन्य स्त्री न मिलती । हे देव ! अयोध्यावासी ऐसा कह रहे हैं । ११ जो राजा जैसा धर्म करता है, उस देश की प्रजा उसका अनुसरण करती है । यदि हमारी स्त्री को कोई दूसरा ले जाए, तो उसको क्या घर ले आया जायेगा ? जो राजा ने किया, वह हम लोगों के करने से क्या दोष होगा । १२ ऐसा सुनकर मैंने आपके समक्ष कह दिया । हे कोदंडधारी राम ! इसमें हमारा कोई दोष नहीं है ।

भुमि कि जे कले अबलोकन ।
तेजि खर श्वास । महाक्रोध मने हेला प्रबेश ॥ १३ ॥
ब्राह्मण मानंकु देले मेलाणि ।
सेमानंक कथा मनरे गुणि ।
जन अपबाद होइबा जाणि ।
बिस्मय होइले कोदण्डपाणि ।
दीन बिशि भणि। राम पाद भबसिन्धु तरणी ॥ १४ ॥

सप्तदश छान्द

राग–मंगळ गुज्जरी

भद्रमुखुं एसन शुणि रघुमणि ।
महाक्रोध जात होइला सेहि क्षणि ॥
हृदयदेश तांकर हेला आकुळ ।
बेनि नयने पूरिला लोतक जळ ॥ १ ॥
आज्ञा देले द्वारीकि अणाअ लक्ष्मण ।
पेषिबि बनकु सीता मुं ततक्षण ॥
आज्ञा पाइ द्वारी बेगे चळिण गला ।
भरत शत्रुघ्न लक्ष्मणंकु आणिला ॥ २ ॥

यह सुनकर श्रीराम के नेत्र लाल हो गये और वह पृथ्वी की ओर देखने लगे। उनके मन में बहुत क्रोध आ गया और वह तीव्र श्वास-प्रश्वास छोड़ने लगे। १३ ब्राह्मणों को विदा करके उनकी बातों को मन में सोचते हुए जनअपवाद की आशंका से कोदंडधारी राम विस्मित हो गये। दीन विशि कहता है कि श्रीराम के चरण संसार रूपी समुद्र के लिए नौका के समान हैं। १४

छान्द—१७

राग–मंगलगुर्ज्जरी

रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीराम ने भद्रमुख से ऐसा सुना। उनके हृदय में उसी समय महान क्रोध उत्पन्न हो गया। उनका हृदय व्याकुल हो गया और दोनों नेत्रों में आँसू भर गये। १ उन्होंने द्वारपाल को लक्ष्मण को ले आने की और उसी क्षण सीता को वन में भेजने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर द्वारपाल वेग से गया और भरत, शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण को ले

द्वारे तांकु रखि जणाइला छामुरे ।
भो देब आणिलि उभा करिछि द्वारे ॥
आज्ञा देले बेगे आम्भ छामुकु आण ।
द्वारे किपाँ रखिल से आम्भर प्राण ॥ ३ ॥
आज्ञा पाइण छामुरे कला प्रबेश ।
दर्शन करिण उभा होइले पाश ॥
देखिले नृपति मुख दिशे बिरस ।
जेन्हे पूर्णचन्द्र दिशे रजनी शेष ॥ ४ ॥
लक्ष्मणंकु चाहिँ आज्ञा देले राजन ।
तुम्भे सिना जाण लंका बृत्तान्त मान ॥
जेउँ रूपे सीता अग्नि परीक्षा देले ।
जेउँ रूपे आसि पितामह कहिले ॥ ५ ॥
देखिल त तात शक्र संगते आसि ।
बोइले अटन्ति बाबु सीता निर्दोषी ॥
तेणु करि तांकु आम्भे ग्रहण कलुँ ।
एबे जनमुखे अपबाद पाइलु ॥ ६ ॥
जन अपबाद नाश करे सुकीर्त्ति ।
एणु करि तहिँ कि मुँ करइ भीति ॥

आया । २ उन्हें द्वार पर रोककर उसने श्रीराम से कहा कि हे देव ! उन्हें मैं ले आया हूँ और वह लोग द्वार पर खड़े हैं । श्रीराम ने कहा कि उन्हें शीघ्र ही हमारे समक्ष ले आओ । वह हमारे प्राण हैं । उन्हें द्वार पर क्यों खड़ा किया है । ३ आज्ञा पाकर वह उन्हें श्रीराम के समक्ष ले आया । वह लोग दर्शन करके उनके समीप खड़े हो गये । उन्होंने महाराज का मुख मलीन देखा, जिस प्रकार रात्रि के समाप्त होने पर पूर्णमासी का चन्द्रमा दिखाई देता है । ४ महाराज राम ने लक्ष्मण की ओर देखकर कहा कि तुम ही केवल लंका के सारे वृत्तान्त जानते हो । जिस प्रकार सीता ने अग्निपरीक्षा दी और जिस तरह ब्रह्माजी ने आकर कहा था । ५ तुमने यह भी देखा कि इन्द्र के साथ पिताजी ने आकर कहा था कि हे वत्स ! सीता निर्दोष है । इसीलिए हमने उसे ग्रहण किया था और इस समय जनमुख से अपवाद मिल रहा है । ६ जन-अपवाद सुकीर्ति का नाश कर देता है, इसीलिए मैं उससे डर रहा हूँ । जन-अकीर्ति से

जन अकीर्त्तिरे अधोगति लभन्ति ।
जन प्रशंसिले स्वर्गपुरे वसन्ति ।। ७ ।।
अपबाद शुणि अणाइलुँ तुम्भंकु ।
ए कथारे बलाइब नाहिँ आम्भंकु ।।
आम्भर चरण राण कर शपथ ।
आम्भ आज्ञा न भांगि करिब तुरित ।। ८ ।।
सीतांकु नेइण तुम्भे बने निबेश ।
गंगा तीरे बालमिकि आश्रम पाश ।।
ऋषि कुटी देखिबाकु तांकर मन ।
कइतबे नेइ छाड़ि आस बहन ।। ९ ।।
एमन्त शुणिण भ्रातामाने आकुळ ।
सबुंकरि नयनरु गळिळा जळ ।।
राम आज्ञा देले लक्ष्मणंकु अनाइ ।
सीतांकु घेनिण जिब रथे बसाइ ।। १० ।।
सुमन्त्र सारथि होइ रथ बाहिब ।
निशि थाउँ थाउँ तांकु घेनिण जिब ।।
आज्ञा पाइ लक्ष्मण सीउकार कले ।
ओळगि करि मेलाणि समस्ते हेले ।। ११ ।।
एथु अनन्तरे निशि हुअन्ते शेष ।
सुमंत्र रथ आणिले लक्ष्मण पाश ।।

अधोगति प्राप्त होती है । लोगों की प्रशंसा से स्वर्गलोक में वास मिलता है । ७ अपवाद सुनकर मैंने तुम्हें बुलाया है । इस बात में तुम हमें मना न करना । तुम्हें मेरे चरणों की शपथ है । मेरी आज्ञा का उल्लंघन न करके उसे शीघ्र ही पालन करना । ८ सीता को लेकर तुम वन में जाना । गंगा नदी के तट पर वाल्मीकि आश्रम के निकट ऋषियों की कुटियों को देखने का उनका मन है । छल से उन्हें ले जाकर शीघ्र ही छोड़ आओ । ९ यह सुनकर सभी भाई व्याकुल हो गये और सबके नेत्रों से जल गिरने लगा । राम ने लक्ष्मण की ओर देखकर सीता को रथ में बिठाकर ले जाने की आज्ञा दी । १० उन्होंने कहा कि सुमन्त सारथी होकर रथ चलायेगा । रात रहते-रहते तुम उन्हें ले जाओ । आज्ञा पाकर लक्ष्मण ने उसे स्वीकार किया । वह सभी प्रणाम करके विदा हो गये । ११ इसके अनन्तर रात्रि के समाप्त होते ही सुमन्त लक्ष्मण के पास रथ ले आये । लक्ष्मण ने अंतःपुर

अन्तःपुरे लक्ष्मण होइले प्रबेश ।
दरशन कले जाइँ जानकी पाश ।। १२ ।।
ऋषिपत्नी देखिबाकु श्रद्धा तुम्भर ।
आज्ञा मोते देइछन्ति कोदण्डधर ।।
शुणिण जानकी बहु आनन्द हेले ।
दिव्य रत्न अळंकार बस्त्र घेनिले ।। १३ ।।
ऋषि कामिनीमानंकु देबार पाइँ ।
से मान घेनि बसिले रथरे जाइँ ।।
लक्ष्मण सहिते बसिले मंत्रीबर ।
प्रबेश होइले जाइँ नदीर तीर ।। १४ ।।
सीता बोलन्ति शुण हे लक्ष्मण बीर ।
अमंगळमान त हेउछि मोहर ।।
दक्षिण बाहु दक्षिण नेत्र स्फुरइ ।
तनु कम्पे हृदय आकुळ हुअइ ।। १५ ।।
कहु कहु गंगा तीरे प्रबेश हेले ।
सेठारु लक्ष्मण महाशोकी होइले ।।
जानकी बोलन्ति भ्रात पद कमळ ।
दिने न देखि हेउछ एड़े बिकळ ।। १६ ।।
प्राणपति अटन्ति मो प्राण पुरुष ।
मोहर हेउछि तुम्भ प्राय बिरस ।।

में जाकर श्री जानकी जी के दर्शन किये । १२ आपकी इच्छा ऋषिपत्नियों को देखने की है, अतः कोदंडधारी राम ने मुझे आज्ञा दी है । यह सुनकर जानकी बहुत प्रसन्न हुई । उन्होंने सुन्दर रत्न-अलंकार और वस्त्र ले लिये । १३ वह ऋषिपत्नियों को वह सब देने के लिए लेकर रथ पर जाकर बैठ गयीं । श्रेष्ठ मंत्री लक्ष्मण के साथ बैठ गये और नदी के तट पर जा पहुँचे । १४ सीता ने कहा, हे पराक्रमी लक्ष्मण ! सुनो ! मुझे अपशकुन हो रहे हैं । मेरा दाहिना हाथ और दाहिना नेत्र फड़क रहा है । शरीर काँप रहा है और व्याकुल हो रहा है । १५ कहते-कहते गंगा के किनारे पहुँचकर लक्ष्मण को अत्यन्त शोक हुआ । सीता ने कहा कि भाई के चरण-कमल एक दिन न देखने से तुम इतने व्याकुल हो रहे हो । १६ मेरे प्राणपति मेरे प्राणपुरुष हैं । मैं भी तुम्हारे समान दुखी हो रही हूँ । गंगा के किनारे उन्होंने नित्यकर्म समाप्त किये । लक्ष्मण जानकी को लेकर

जाह्नबी सन्निधे नित्यकर्म सारिले ।
जानकी घेनि लक्ष्मण नाबे बसिले ॥ १७ ॥
सुमन्त्र रथ घेनिण कूळे रहिले ।
लक्ष्मण ऋषि आश्रम देखाइ देले ॥
नाबुँ ओल्हाइण गंगातटरे बसि ।
सानुज कारुण्य करुछन्ति बिशेषि ॥ १८ ॥
बोलन्ति ए कार्य्यकु पेषिले भूपाळ ।
छेदन किपाँ न कले ए मोर बाळ ॥
बोलन्ति जानकी किपाँ कह ए मान ।
बाहुड़ि जिबाकु हेउअछि मो मन ॥ १९ ॥
केबळ मात्र रहिबा आजर दिन ।
समस्त ऋषिमानंकु करि दर्शन ॥
शुणिण लक्ष्मण पादे पड़ि रहिले ।
मोर अपराध न घेनिब बोइले ॥ २० ॥
जन मुखे राम तुम्भ अकीर्त्ति शुणि ।
तेजिले एबे तुम्भंकु कोदण्डपाणि ॥
शुणिण जानकी मूर्च्छा जाइ पड़िले ।
केतेहेँक बेळे तहिँ ज्ञान पाइले ॥ २१ ॥
बोलन्ति मोहर एड़े मन्द करम ।
बिधाता दुःख देबाकु कला जनम ॥

नाव में बैठ गये । १७ सुमन्त रथ को लेकर तट पर रह गये । लक्ष्मण ने ऋषि का आश्रम दिखा दिया और नाव से उतरकर गंगा तट पर बैठ गये । लक्ष्मण विशेष तौर से दुःख कर रहे थे । १८ वह सोच रहे थे कि महाराज ने इस कार्य के लिए हमें भेजा । उन्होंने हमारा सिर क्यों नहीं काट डाला । जानकी ने कहा, यह सब किसलिए कह रहे हो ? अब मेरा मन लोटने का हो रहा है । १९ केवल आज के दिन रहूँगी और सभी ऋषियों का दर्शन करूँगी । यह सुनकर लक्ष्मण उनके चरणों में गिरकर बोले कि आप मेरा अपराध न समझें । २० जनमुख से आपकी अपकीर्ति सुनकर कोदंडधारी श्रीराम ने अब आपका परित्याग कर दिया है । यह सुनकर जानकी मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं और उन्हें बहुत देर बाद चेत आया । २१ वह बोलीं, मेरे कर्म इतने मन्द हैं । विधाता ने मुझे दुःख देने के लिए ही पैदा किया । मेरे प्राण-त्याग करने से कुल को कलंक

प्राण छाड़न्ति कुळकु कळंक हेब ।
प्राणपतिकि मोहर दोष लागिब ।। २२ ।।
बिचारिबे जुबतीमाने जे आम्भंकु ।
प्राणनाथ कि दोषे छाड़िले तुम्भंकु ।।
कि बोलिबि मोते सेहि न दिशे बुद्धि ।
बिना दोषे त्याग कले करुणानिधि ।। २३ ।।
एमन्त बोलिण उच्चे कले रोदन ।
बोले बिशि चिन्ता कर पद्मलोचन ।। २४ ।।

अष्टादश छान्द—वाल्मीकि आश्रमरे सीतांक प्रवेश

राग–मंगल गुज्जरी

सीता शोक देखि लक्ष्मण शोक कले ।
शोक सम्भाळि न पारि पठिआइले ।।
लक्ष्मण अदृश्य जाए अनाइ थिले ।
मने बिचारिले मोते निश्चे तेजिले ।। १ ।।
गंगा पारि होइ रथे बसिले बीर ।
महाशोके नयनरु बहइ नीर ।।
लक्ष्मणंकु न देखिण तरुणी बर ।
लाज भय बिच्छेदरे हेले कातर ।। २ ।।

लगेगा । मेरे प्राणपति को दोष लगेगा । २२ नारियाँ सोचेंगी कि प्राणनाथ ने किस अपराध के कारण सीता का परित्याग कर दिया । मैं उनसे क्या कहूँगी ? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा । बिना अपराध के ही करुणासागर ने मुझे छोड़ दिया । २३ ऐसा कहकर वह उच्च स्वर में विलाप करने लगी । विशि कहता है कि हे कमलनयन ! आप ही चिन्ता कीजिए । २४

छान्द १८—वाल्मीकि-आश्रम में सीता का प्रवेश

राग–मंगलगुर्ज्जरी

सीता का शोक देखकर लक्ष्मण दुखी हो गये । शोक सम्हाल न सकने के कारण उन्होंने लक्ष्मण को भेज दिया और लक्ष्मण के अदृश्य होने तक उन्हें निहारती रहीं । उन्होंने मन में विचार किया कि निश्चय ही मेरा त्याग किया गया है । १ पराक्रमी लक्ष्मण गंगा पार होकर रथ पर बैठ गये । अत्यन्त शोक से उनकी आँखों से आंसू गिरने लगे । लक्ष्मण

बहु बिळपन्ते उच्चे बर तरुणी ।
बालमीकि शिष्यमाने श्रबणे शुणि ॥
देखिले जुबतीबर करे रोदन ।
गुरुंक छामुरे जणाइले बहन ॥ ३ ॥
भो देब स्वर्गुं अइला प्रायेक दिशे ।
केबण नृपति बर बनिता कि से ॥
आम्भर मठ निकटे गंगार तटे ।
रोदन करुछि देखि अइलुं बाटे ॥ ४ ॥
ध्यानरे जाणिले मुनि अइले सीता ।
दशरथंक बधू श्रीराम बनिता ॥
एमन्त बिचारि पूजा द्रब्यन्त घेनि ।
बन भितरे प्रबेश होइले मुनि ॥ ५ ॥
ऋषिकि देखिण सती तेजि कारुण्य ।
शिर लगाइले तांक बेनि चरण ॥
ऋषि बोले आम्भ पूजा घेन गो मात ।
जोगबळे आम्भेमाने जाणु समस्त ॥ ६ ॥
दशरथ बधू तुम्भे जनक सुता ।
श्रीरामंक पाटराणी अट गो सीता ॥
आम्भ मठ तुम्भ अन्तःपुर समान ।
ए कथाकु मात मने त धर आन ॥ ७ ॥

को न देखकर तरुणीमणि सीता लज्जा, भय तथा वियोग से कातर हो गईं । २ उस तरुणी का उच्च स्वर में विलाप कानों से सुनकर वाल्मीकि के शिष्यों ने उन्हें रुदन करते हुए देखा और उन्होंने शीघ्र ही गुरुदेव से निवेदन किया । ३ किसी राजा की श्रेष्ठ वनिता वह स्वर्ग से आयी हुई दिखाई दे रही है । हम लोग मार्ग में देखकर आये हैं । वह अपने आश्रम के निकट गंगा तट पर रुदन कर रही है । ४ मुनि ने ध्यान से जान लिया कि दशरथ की पुत्रवधू श्रीराम की पत्नी सीता आयी है । ऐसा विचार कर पूजन-सामग्री लेकर मुनि वन में प्रविष्ट हुए । ५ ऋषि को देखकर क्रन्दन त्यागकर सीता ने उनके युगल-चरणों में शिर लगा दिया । ऋषि ने कहा, हे माँ ! हमारी पूजा स्वीकारो । योगबल से मैं सब कुछ जान गया हूँ । ६ तुम जनक-नन्दिनी दशरथ की वधू श्रीराम की पटरानी सीता हो । मेरा आश्रम तुम्हारे अन्तःपुर के समान

शुणि जानकी बोलन्ति कहिल सत ।
महर्षि अट द्वितीय जनक तात ॥
अर्घ्य देइ बालमीकि आग होइले ।
सुता प्राय सीता पच्छे गमन कले ॥ ८ ॥
मठ पाशे तपस्विनीमानंक स्थान ।
से ठाबकु बालमीकि कले गमन ॥
ताहांकु बोइले एहि जनकसुता ।
एहांकर तुम्भेमाने होइब मात ॥ ९ ॥
एते कहि से मानंकु समर्पि देले ।
सेमानेहें तांकु पूजा करिण नेले ॥
तपस्विनी प्राय हेब राम बनिता ।
केते बेळे कि अबा न करे बिधाता ॥ १० ॥
सुमंत्र सगे लक्ष्मण रथरे बसि ।
से दिन नदीकूळरे होइले आसि ॥
लक्ष्मण शोक देखिण से मंत्रीबर ।
चाटुकरि कहन्ति ताहांकु उत्तर ॥ ११ ॥
पूर्बे मुहिं ए चरित्र अछइ शुणि ।
तुम्भंकुहिं तेजिबेटि कोदण्डपाणि ॥
काहाकुहिं न कहिब गुपतबाणी ।
दुर्बासांक मुखरु मुँ अछइ शुणि ॥ १२ ॥

है। माँ! इस बात को अन्यथा न सोचना। ७ यह सुनकर जानकी ने कहा कि आपने सत्य कहा है। हे महर्षि! आप हमारे दूसरे पिता हैं। अर्घ्य देकर वाल्मीकि आगे चले और पुत्री के समान सीता पीछे चलने लगी। ८ मठ के निकट तापसियों के स्थान थे। वाल्मीकि उधर ही चल पड़े। उन्होंने उन लोगों से कहा कि यह जनकनन्दिनी है, इनकी तुम सभी माता बनोगी। ९ ऐसा कहकर उन्हें समर्पित कर दिया। वह लोग उनकी पूजा करके उन्हें ले गईं। श्रीराम की पत्नी तपस्विनी के समान हो जाएगी। विधाता कब क्या नहीं कर डालता। १० सुमन्त्र के साथ लक्ष्मण रथ पर बैठकर उसी दिन नदी के किनारे आ पहुँचे। वह श्रेष्ठ मंत्री लक्ष्मण के शोक को देखकर उन्हें प्रसन्न करनेवाली बातें कहने लगा। ११ मैंने पहले ही यह बात सुनी थी कि कोदण्डधारी श्रीराम तुम्हें ही छोड़ेंगे। यह गुप्त भेद किसी से भी न कहना। मैंने यह दुर्वासा

एक दिने दुर्बासा अजोध्या अइले ।
तुम्भ तात बहु तांकु भकति कले ।।
पचारिले ए मोहर चारि कुमर ।
एहांकर जश कि होइब मोहर ।। १३ ।।
मुनि बोइले शुण हे नृप शार्दूळ ।
उद्धरिले रामचन्द्र तुम्भरि कुळ ।।
राम नारायण एहि नाहिंटि भेद ।
केबळ बनिता संग हेब बिच्छेद ।। १४ ।।
देबासुर जुद्ध होइला जेउँ काळे ।
देबताए असुरंकु माइले बळे ।।
असुर आसिला भृगु बनिता पाशे ।
शरण पशिले तांक जीबन आशे ।। १५ ।।
ताहा देखि बिष्णु तांकु कोप करिले ।
चक्र घेनि ऋषि पत्नी शिर छेदिले ।।
एमस्त देखिण भृगु देलेक शाप ।
बिष्णु अकारणे कल एड़ेक पाप ।। १६ ।।
मानब नृपतिपुरे जात होइब ।
भारिजा बिच्छेद महाकष्ट पाइब ।।
मानब तनु धरिण हेब अज्ञान ।
तेणु अज्ञानरे एहा कल बिधान ।। १७ ।।

के मुख से सुना था । १२ एक दिन दुर्वासा अयोध्या में आये थे । आपके पिता ने उनकी बहुत पूजा की । उन्होंने मुनि से पूछा कि क्या यह मेरे चारों पुत्र यशस्वी होंगे । १३ मुनि बोले, हे नृपशार्दूल ! श्री रामचन्द्र ने तुम्हारे कुल का उद्धार कर दिया है । श्रीराम स्वयं नारायण हैं, इसमें कोई सन्देह नही है परन्तु केवल स्त्री के साथ इनका बियोग होगा । १४ जिस समय देवताओं और असुरों का संग्राम हुआ था । तब देवताओं ने असुरों को बलपूर्वक मारा । असुर भृगु की पत्नी के पास आया और उसने जीवन की आशा से उनकी शरण ग्रहण कर ली । १५ यह देखकर विष्णु ने उन पर कोप किया । उन्होंने चक्र लेकर ऋषि-पत्नी का शिर काट दिया । ऐसा देखकर भृगु ने शाप दिया । हे विष्णु ! तुमने अकारण ही ऐसा पाप किया । १६ तुम मानव होकर राजा के घर में जन्म लोगे और पत्नी के वियोग का कष्ट प्राप्त करोगे । मानव का शरीर

सेहि बिष्णुटि तुम्भर रामनन्दन ।
केबळ बनिता कष्टे बंचिबे दिन ॥
ए रामंक होइबेटि बेनि कुमर ।
बंश बृद्धि बहुत होइब तुम्भर ॥ १८ ॥
भ्राता मानंकुहिँ त्याग करिबे राम ।
एमन्त कहिण गले मुनि उत्तम ॥
आहे लक्ष्मण एथकु किपाइँ भाळ ।
काहाकुहिँ न कहिबटिं चिरकाळ ॥ १९ ॥
एमन्त शुणि लक्ष्मण होइले तोष ।
अजोध्या कटके आसि हेले प्रबेश ॥
श्रीरामंक चरण अमळ कमळ ।
दीन बिशि बुद्धि तहिं हेला भ्रषळ ॥ २० ॥

एकोनविंश छान्द—नृग, निमि प्रभृतिक उपाख्यान

राग–आहारी

श्रीराम पाश । लक्ष्मण परबेश ।
देखिले नृपति मुख दिशे बिरस ॥
मनरे दुःख । करि भूमिकि मुख ।
झुरुछन्ति बसि तेजि सकळ सुख ॥ १ ॥

धारण कर तुमको ज्ञात नहीं रहेगा। उसी अज्ञान के कारण ऐसा हो गया। १७ तुम्हारे पुत्र राम वह ही विष्णु हैं। पत्नी-वियोग में वह दिन व्यतीत करेंगे। इन राम के दो पुत्र होंगे। तुम्हारी बंश-वृद्धि बहुत होगी। १८ श्रीराम भाइयों का भी त्याग करेंगे। ऐसा कहकर श्रेष्ठ मुनि चले गये। हे लक्ष्मण! इसमें क्या सोच रहे हो? यह किसी से कभी न कहना। १९ यह सुनकर लक्ष्मण संतुष्ट हो गये और आकर अयोध्या के दुर्ग में प्रविष्ट हुए। श्रीराम के निर्मल चरण-कमलों में दीन विशि का मन रूपी भ्रमर रम गया। २०

छान्द १९—नृग तथा निमि आदि के उपाख्यान

राग–अहारी

श्रीराम के निकट लक्ष्मण ने पहुँचकर महाराज का मुख मलीन देखा। वह दुःखी मन से सभी सुखों का त्याग करके भूमि की ओर मुख किये हुए मुरझाये से बैठे थे। १ पराक्रमी लक्ष्मण ने सिर पर हाथ लगाकर उनके

लक्ष्मण बीर। शिरे देइण कर।
दर्शन करि जणान्ति अळ्प मधुर ॥
नेलि कपटे। छाड़िलि गगा तटे।
बहु बिळपिले मुनि मठ निकटे ॥ २ ॥
जाहा दइब। लेखि अछइ पूर्ब।
एबे भो देब भाळिले किस होइब ॥
छाड़िले शोक। पुणि हेले बिबेक।
चारि दिन रहिलि कि बोलिबे लोक ॥ ३ ॥
आहे लक्ष्मण। सर्ब चरित शुण।
केबळ दुःख हेतु नृपति पुण ॥
पूर्बर रीति। नृग नामे नृपति।
कोटि धेनु दानरे पाइले बिपत्ति ॥ ४ ॥
गोबत्सि किणि। दान दिअन्ते पुणि।
दान धेनु दान कला चिह्नि न जाणि ॥
से द्विजबरे। धेनुकु अनुसरे।
अन्य ग्रामे देखिला से ब्राह्मणपुरे ॥ ५ ॥
नामे डाकिला। मास्तके से अइला।
से धेनु आणन्ते पथे द्विज धइला ॥
ए बोले मोर। सेहि बोले मोहर।
कळि करि गले नृपतिमन सिंहद्वार ॥ ६ ॥

दर्शन किये और धीरे से मधुर शब्दों में कहा। मैंने छल से सीता को ले जाकर गंगा के तट पर छोड़ दिया। मुनि के आश्रम के निकट उन्होंने बहुत विलाप किया। २ पहले से ही भाग्य ने यह लिखा था। हे देव! अब उसे सोचने से क्या होगा। वह शोक का परित्याग करके चैतन्य हो गये और बोले, मैं सीता के साथ चार ही दिन रहा, लोग क्या कहेंगे। ३ श्रीराम ने कहा, हे लक्ष्मण! सारा वृत्तान्त सुनो। राजा केबल दुःख सहन करने के लिए ही होता है। यह रीति प्राचीन है। नृग नाम के राजा को करोड़ गउएँ दान करने पर भी दुःख मिला। ४ राजा ने गाय की बछियाँ क्रय करके अनजाने में ही पुनः दान कर दी। वह ब्राह्मण गाय को लेकर चल दिया। अन्य ब्राह्मण ने, जिसे वह गाय पहले दान की गयी थी, उसे दूसरे ब्राह्मण के घर में देखा। ५ नाम लेकर बुलाने से ही वह आ गया और उसने लाते हुए ब्राह्मण को मार्ग में पकड़ लिया। यह

से बेनि द्विज। मने पाइण लाज।
बोलन्ति नृपति मन जाणिबा आज॥
द्वारे रहिले। द्वारपाळे कहिले।
गुहारि करि आसिछुं बोलि बोइले॥ ७ ॥
कहे दुआरी। देब द्विज गुहारि।
न शुणिला प्राय हेले से दण्डधारी॥
देब द्विजे कोप। करि देलेक शाप।
बोइले सरट हुअ अर्जिलु पाप॥ ८ ॥
पथरे थिब। चिरकाळ जिइब।
द्वापरे श्रीकृष्ण देखि मुकति हेब॥
नृपतिमणि। ब्राह्मण शाप जाणि।
ज्येष्ठ पुत्रकु नृपति कलाक आणि॥ ९ ॥
शिळ्पी आणिला। बहु प्रतीत कला।
चउपाशे बन रोपि एण्हुअ हेला॥
आहे लक्ष्मण। पूर्ब कथात शुण।
निमि राजा कले बशिष्ठंकु बरण॥ १० ॥
करिबि जाग। मोर बरण हेब।
से बोइले पूर्बरु बरिछि बासब॥

बोला, गाय मेरी है और वह कह रहा था कि गाय हमारी है। दोनों ही झगड़ा करते हुए राजा के सिंहद्वार पर जा पहुँचे। ६ वह दोनों ब्राह्मण मन में लज्जित होकर कहने लगे कि आज राजा के मन की बात समझेंगे। द्वार पर स्थित होकर उन्होंने द्वारपाल से कहा कि हम राजा के पास गुहार लेकर आये हैं। ७ द्वारपाल ने राजा को प्रार्थियों के विषय में बताया, पर राजा ने अनसुनी कर दी। देवता के समान ब्राह्मणों ने कुपित होकर शाप दे दिया। उन्होंने कहा, तुमने पाप कमाया है, अतएव गिरगिट हो जाओ। ८ तुम मार्ग में रहते हुए चिरकाल तक जीवित रहोगे। द्वापर में श्रीकृष्ण का दर्शन करने से तुम्हारी मुक्ति होगी। ब्राह्मणों का शाप जानकर श्रेष्ठ राजा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को बुलाकर राजा बना दिया। ९ उसने कारीगर को बुलाकर उस पर अत्यधिक विश्वास करके चारों ओर एक उपवन बनवाया और वह गिरगिट हो गया। हे लक्ष्मण! और भी पूर्वकाल की कथा सुनो। महाराज निमि ने वशिष्ठ को वरण किया था। १० उन्होंने वशिष्ठ से कहा कि मैं यज्ञ करूंगा। आपको मैं वरण करता हूं। वशिष्ठ बोले कि

से जाग सारि। आसिबु तुम्भ पुरी।
सुरपुर गले मुनि निर्णय करि॥ ११ ॥
देखि बिळम्ब। जाग कले आरम्भ।
बालमीकि ऋषिकु कले अबिळम्ब॥
भो मुनि जाण। आणिलि राजागण।
पुरोहित होइ तुम्भे हुअ बरण॥ १२ ॥
कराइ तोष। तांकु आणि हरष।
जाग आरम्भिले दश सस्र बरष॥
बशिष्ठ ऋषि। जाग करिण आसि।
द्वारी आगे कहि सिंहद्वाररे बसि॥ १३ ॥
ज्ञात न कले। राजा पहुड़िथिले।
बशिष्ठ कोप करि तांकु शाप देले॥
अज्ञान हुअ। बायु शरीर बह।
एबे मत्तगर्बे जेबे होइल मोह॥ १४ ॥
शाप बचन। शुणि सक्रोधमन।
बशिष्ठंकु सेहि शाप देले बहन॥
बिकळ मुनि। बायु शरीर घेनि।
ब्रह्मलोके जाइ देखिले पद्मजोनि॥ १५ ॥

हमें पहले इन्द्र ने वरण किया है। वह यज्ञ समाप्त करके मैं आपके नगर में आऊँगा। इस प्रकार का निर्णय करके वशिष्ठ स्वर्ग को चले गये। ११ महाराज निमि ने विलम्ब देखकर महर्षि वालमीकि का अविलम्ब वरण करके यज्ञ प्रारम्भ कर दी। उन्होंने वालमीकि से कहा कि हे महर्षि! आपको विदित ही है कि मैंने राजाओं को बुलवा लिया है। आप पुरोहित पद पर मेरा वरण स्वीकारें। १२ प्रसन्नतापूर्वक उन्हें सन्तुष्ट करके दस हज़ार वर्ष पर्यन्त उन्होंने यज्ञ किया। महर्षि वशिष्ठ यज्ञ समाप्त करके आये और सिंहद्वार पर बैठते हुए उन्होंने द्वारपाल से कहा। १३ राजा लेटे हुए थे अतः उनसे नहीं बताया गया। वशिष्ठ ने क्रोध करके उन्हें शाप दे दिया। तुम अज्ञान होकर वायु का रूप धारण करो, क्योंकि तुम अब गर्व से उन्मत्त हो गये हो। १४ उनके शाप को सुनकर राजा निमि ने भी कुपित मन से शीघ्र ही वशिष्ठ को शाप दे डाला। महर्षि व्याकुल होकर वायु शरीर धारण करके ब्रह्मलोक में जाकर पद्मयोनि ब्रह्माजी से मिले। १५ पिता ब्रह्मा ने निमि के शाप की बात जानकर

जाणिले पिता । निमि शाप बारता ।
बशिष्ठकु शाप देले अखिळ पिता ॥
बरुण रेत । हेब कुम्भरु जात ।
सूर्य्यबंशे तुम्भे होइब पुरोहित ॥ १६ ॥
शुणि से ऋषि । बरुण पुरे आसि ।
उर्बशी से दिन बरुण पाशे बसि ॥
कामे अबश । उर्बशी देखि तोष ।
आज मोर भाबिनी तु हुअ गो आस ॥ १७ ॥
कर जोड़िण । रामा कहे बचन ।
पूर्बरु बरिण छन्ति पिता बरुण ॥
तांकर अंग । भाब तुम्भर संग ।
एमन्त करिण । पच्छे करिबि भंग ॥ १८ ॥
स्वभाब बस । देखि बरुण पाश ।
तनु मित्राबरुणरे कला प्रबेश ॥
से कोप कले । भाब देलु बोइले ।
तार अंग आउ से स्परश न कले ॥ १९ ॥
बरुणदेब । तार घेनिण भाब ।
मदन आरते रेत हेला सम्भब ॥
रेत घेनिण । कुम्भरे से बरुण ।
बशिष्ठ प्रबेश से कुम्भे सेहि क्षण ॥ २० ॥

बशिष्ठ को शाप दिया कि बरुण के वीर्य से तुम कुम्भ से उत्पन्न होकर सूर्यवंश के पुरोहित बनोगे। १६ यह सुनकर वह ऋषि बरुणदेव के नगर में गये। उस दिन उर्बशी वरुण के पास बैठी हुई थी। काम के वश में हुए मुनि को उर्वशी को देखकर सन्तोष हुआ। उन्होंने उर्बशी से कहा कि तुम आज आकर मेरी संगिनी बन जाओ। १७ कामिनी ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि पिता वरुण ने पहले ही मुझे वरण किया है। पर शरीर उनका और भाव तुम्हारे साथ होगा और इस प्रकार पीछे रति-क्रीडा करूँगी। १८ वरुण को निकट देखकर स्वभाववश उसने अपने शरीर को मित्रावरुण में प्रविष्ट कर दिया। वह कुपित होकर बोले कि तुमने भाव अन्य को दिया है। अतः उन्होंने उसके अंग का स्पर्श नहीं किया। १९ उसके भाव में वरुण के कामातुर होने से उनका वीर्य स्खलित हो गया। वरुण ने वीर्य को कुम्भ में रख दिया।

कुम्भरे थिला । बेनि भाग होइला ।
प्रथमे कुम्भरु जात अगस्ति हेला ।।
ब्रह्मार सुत । पच्छे कुम्भरु जात ।
इक्ष्वाकु बंशरे से हेले पुरोहित ।। २१ ।।
निमि जे थिले । ऋषिमाने अइले ।
नेत्र निमिष करि ताकु बर देले ।
निमिर पिण्ड । रखिले तैळ भाण्ड ।
जागशाळरे मंथन कले ता पिण्ड ।। २२ ।।
तहुँ बाळक । ऋषि हेले जनक ।
मिथिळा तेणु बोलन्ति सकळ लोक ।।
बिप्रेटि देब । तांक शाप प्रमाद ।
बोले बिशि राम कहि हेले बिषाद ।। २३ ।।

बिंश छान्द—जजाति प्रभृतिक उपाख्यान

राग—काळी

लक्ष्मण बोलन्ति आहे देब ऋषि त शाप देले ।
नृपति देबा उचित नोहे अनीति किपाँ कले ।।
राम बोलन्ति तामस राजामाने करन्ति कोप ।
एका मात्रक जजाति देब बहिले गुरु शाप ।।

उसी क्षण वशिष्ठ कुम्भ में प्रविष्ट हो गये । २० कुम्भ में स्थित वीर्य दो भागों में विभक्त हो गया । कुम्भ से पहले अगस्ति उत्पन्न हुए । फिर ब्रह्मानन्दन पीछे घड़े से उत्पन्न हुए और इक्ष्वाकुवंश के वह पुरोहित बन गये । २१ जो निमि थे उन्हें ऋषियों ने आकर वर दिया कि तुम पलकों में वास करो । उन्होंने फिर निमि के शरीर को तैलपात्र में रखकर यज्ञशाला में उनके शरीर का मन्थन किया । २२ उससे बालक-रूप में जनक महर्षि उत्पन्न हुए । इसीलिए सभी लोग उन्हें मिथिला कहने लगे । यह सब ब्राह्मण-शाप के प्रमाद से हुआ । विशि कहता है कि यह कहते हुए श्रीराम दुखी हो गये । २३

छान्द २०—ययाति आदि का उपाख्यान

राग—काली

लक्ष्मण ने कहा, हे देव ! ऋषि ने तो शाप दिया, परन्तु राजा का शाप देना उचित नहीं हुआ । उन्होंने ऐसी अनीति क्यों की ? राम ने

शुण लक्ष्मण तहिँ बृत्तान्त जजाति महाराजा ।
बिभा होइले देबजानिकि दैत्य गुरु तनुजा ।। १ ।।
बृषपर्वाक दुहिता नाम अटइ शरमिष्ठा ।
द्वितीये बिभा हेले ताहांकु नृपतिकुळ श्रेष्ठा ।। २ ।।
देबजानिर जदुकुमर अटइ से दुर्भागा ।
शर्मिष्ठांकर कुमर पुरु अटइ से सुभागा ।
दिनेक देबजानिकि जदु कहिले कटु बाणी ।
तुम्भर दुःख तनु न सहे मरिबि एहि क्षणि ।। ३ ।।
पुत्र बचन शुणिण जननी बहुत शोक कले ।
पितांकु चिन्ता कला मात्रके पिता प्रबेश हेले ।
बोइले सुते किपाँ रोदन करुछ सुत घेनि ।। ४ ।।
सुता नातिर कष्ट देखिण कलेंक गुरु कोप ।
जरा हुअ तु बोलिण जजातिकु से देले शाप ।।
गुरुंक शाप जाणिण नृप जदुकु राइ पाश ।
शुक्र आम्भंकु शाप बिहिले न कलु आम्भे दोष ।। ५ ।।
थोकाए दिन तुम्भे आम्भर वृद्ध शरीर घेन ।
जुबा शरीर घेनिण भोग करे थोकाए दिन ।।

कहा कि तामसी प्रकृति के राजागण क्रोधित हो जाया करते हैं। केवल एक मात्र ययाति ने ही गुरु का शाप ग्रहण किया था। हे लक्ष्मण ! उनका वृत्तान्त सुनो ! महाराज ययाति ने दैत्यगुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। १ शर्मिष्ठा नाम की वृषपर्वा की पुत्री से नृपतिश्रेष्ठ ययाति ने दूसरा विवाह किया। २ देवयानी का पुत्र कुमार यदु दुर्भाग्यशाली और शर्मिष्ठा का पुत्र पुरु सौभाग्यशाली निकला। एक दिन देवयानी के पुत्र यदु ने उसे कटुवचन कहे कि तुम्हारा दुःख इस शरीर से सहन न हो सकने के कारण मैं इसी क्षण प्राण त्याग दूंगा। ३ पुत्र के वचन सुनकर माता को बहुत शोक हुआ। पिता की याद करते ही शुक्राचार्य वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने कहा, बेटी ! अपने पुत्र को लेकर किसलिए रुदन कर रही हो ? ४ अपनी पुत्री तथा नाती का कष्ट देखकर शुक्राचार्य ने क्रोधित होकर ययाति को वृद्ध हो जाने का शाप दे दिया। गुरु के शाप को जानकर राजा ने यदु को पास बुलाकर कहा कि शुक्राचार्य ने हमें शाप दे दिया। हमने तो कोई दोष नहीं किया था। ५ थोड़े दिनों के लिए तुम हमारे वृद्ध शरीर को ले लो। मैं तुम्हारा युवा शरीर लेकर कुछ

जदु बोइले सुभागा सुत अटइ तुम्भ पुरु ।
बहुत अनुराग ताहांकु से तुम्भ आज्ञा करु ॥ ६ ॥
मुहिँ तुम्भर ज्येष्ठ कुमर मो ठारे नाहिँ स्नेह ।
सुभागा सुत आगरे शाप जाइ तुम्भर कह ॥
शुणि राजन जदु बचन पुरु पाशकु गले ।
निज बृत्तान्त कहि तांकु त जरा घेन बोइले ॥ ७ ॥
शुणि सानन्द होइण पुरु बोइले देब दिअ ।
बृद्ध शरीर देइण मोते जुबा शरीर बह ॥ ८ ॥
शुणि नृपति आनंद होइ बृद्ध शरीर देले ।
जुबा शरीर बहिण बहु भोगमान त कले ॥ ९ ॥
दश सहस्र बरष राजा कलेक बड़भोग ।
बृद्ध शरीर घेनिण पुरु कलेक अनुराग ॥ १० ॥
आनन्द होइ नृपतिबर पुरुंकु आज्ञा देले ।
तुम्भरिठारु तुम्भ बंशरे राजा हुअ बोइले ॥ ११ ॥
जदुर बशे अबतरिण केहि नोहिले राजा ।
नृपति होइ तुम्भ बंशरे पाइबे दिव्य पूजा ॥ १२ ॥
जदु कुमरे एमन्त शाप देले महाराजा ।
आम्भर आज्ञा अबज्ञा कलु होइ आम्भ आत्मजा ॥ १३ ॥

दिन भोग प्राप्त करूं। यदु ने कहा कि आपका भाग्यवान पुत्र पुरु है। आपका उस पर बहुत स्नेह है। वही आपकी आज्ञा का पालन करे। ६ मैं आपका ज्येष्ठ पुत्र हूँ, परन्तु आपको मुझसे प्रेम नहीं है। अपने सौभाग्यशाली पुत्र के सामने जाकर अपने शाप की बात कहिये ! यदु के वचन सुनकर राजा पुरु के समीप गये। उन्होंने अपना वृत्तान्त बताते हुए उससे वृद्धावस्था ग्रहण करने को कहा। ७ सुनते ही प्रसन्नतापूर्वक पुरु ने कहा, हे देव ! आप हमें दे दें। वृद्ध शरीर देकर आप युवा शरीर ग्रहण करें। ८ सुनते ही राजा ने आनन्दपूर्वक बुढ़ापा दे दिया और युवावस्था ग्रहण कर उन्होंने बहुत भोगों को भोगा। ९ दस हजार वर्षों तक वह सुखों का भोग करते रहे। पुरु प्रेमपूर्वक वृद्ध शरीर लिये रहे। १० राजा ने प्रसन्न होकर पुरु को आज्ञा दी कि तुमसे उत्पन्न तुम्हारा वंश ही राजा हो। ११ यदुवंश में उत्पन्न हुआ कोई भी राजा नहीं बना। हे पुरु ! तुम्हारे वंशधर ही राजा बनकर दिव्य पूजा प्राप्त करेंगे। १२ महाराजा ययाति ने यदुकुमार को ऐसा शाप देते हुए कहा, हमारे ही पुत्र होकर तुमने हमारी आज्ञा की अवज्ञा की। १३ राजा

एमन्त शाप जजाति भूप कोप करिण देले ।
से दिनु जदुबंशरे दुष्ट होइ अवतरिले ॥ १४ ॥
एमन्त कहि श्री रामचन्द्र हेले सुअबकाश ।
द्वारी जणाए एहि समये शुणिबा नृप ईश ॥ १५ ॥
च्यवन ऋषि अनेक ऋषि संगरे छन्ति घेनि ।
सिंहदुआरे रहि से करु अछन्ति बेदध्वनि ॥
शुणि श्रीराम बोइले बेगे ताहांकु घेनि आस ।
आज्ञा प्रमाणे द्वारी मिळिला ऋषिमानंक पाश ॥ १६ ॥
आज्ञा होइला छामुकु जिब बोलिण घेनि आसे ।
समस्त ऋषि भेट होइले जाइँ श्रीराम पाशे ॥
देखि श्रीराम मान्य करिण कले ताहांकु पूजा ।
अर्घ्य आसन देइ ताहांकु पुछन्ति राम राजा ॥ १७ ॥
कि भाग्य आजि मोर भुबने बिजय सर्ब ऋषि ।
आज मो नेत्र सफळ हेला देखि जमुनाबासी ॥
मोर जीबित स्वराज्य बित्त अटइ ए तुम्भर ।
जाहा आम्भंकु आज्ञा करिब कर हे मुनिबर ॥ १८ ॥
शुणि श्रीराम छामुरे कहे च्यबन तपोबन्त ।
तुम्भ समान नाहिँ महीरे आउ त बळबन्त ॥ १९ ॥

ययाति ने कुपित होकर ऐसा शाप दिया। उस दिन से यदुवंशी अवतार ग्रहण करके दुष्ट होते गये। १४ इस प्रकार कहकर श्रीरामचन्द्र शांत हो गये। इसी समय द्वारपाल ने कहा, हे महाराज ! सुनिये ! १५ महर्षि च्यवन अनेक ऋषियों को साथ लेकर सिंहद्वार पर वेदध्वनि कर रहे हैं। यह सुनकर श्रीराम ने कहा कि उन्हें शीघ्र ही ले आओ। आज्ञा के अनुसार द्वारपाल ऋषियों के पास जाकर बोला कि महाराज की आज्ञा हो गई है। मैं आपको लेने आया हूँ। समस्त ऋषिमण्डल ने श्रीराम के समीप जाकर उनसे भेंट की। श्रीराम ने उन्हें देखकर उनका सम्मान और पूजा की। अर्घ्य और आसन देकर महाराज रामचन्द्र ने उनसे पूछा। १६-१७ आज मेरा कितना भाग्य है कि समस्त ऋषिमण्डल मेरे गृह में उपस्थित है। आज व्रजवासियों को देखकर मेरे नेत्र सफल हो गये। मेरा जीवन, राज्य तथा सम्पदा यह सब आपकी ही है। हे मुनिश्रेष्ठ ! आप जो भी आज्ञा मुझे देना चाहें वह प्रदान करें। १८ यह सुनकर तपस्वी च्यवन ने श्रीराम से कहा कि पृथ्वी पर आपके समान बलशाली और कोई नहीं

असुर मारि उश्वास कल महीर भाराभर ।
सकळ देबतांकु अभय देल हे रघुबीर ।। २० ।।
एणुटि आम्भे तुम्भरि आश्रे अछुँ सकळ दिने ।
बोलइ बिशि शुणि ता राम हेले संकोच मने ।। २१ ।।

एकविंश छान्द—च्यवन ऋषि ओ रामंक कथोपकथन

राग—कौशिक

च्यवन बोलन्ति शुण हे श्रीराम मधुदनुज नामे बीर ।
महातप से शिवठारे कलाकु देले ताहांकु हर बर ।।
आहे राघब । शूळरु शूळ जात कले ।
शूळ थिले तु त्रिभुवन जिणिबु बोलिण तार करे देले ।। १ ।।
से बोइला देब मोर पुत्र नाति एहि शूळे जय करिबे ।
तुम्भ प्रसन्ने मोर शत्रु मानंकु किंचित रणे संघारिबे ।।
आहे राघब । हेउ बोलि हर बोइले ।
देबता ब्राह्मणे भकति करिबु बोलिण मधुकु कहिले ।।

है । १९ आपने राक्षसों को मारकर पृथ्वी का भार उतारा है । हे रघुवीर ! आपने समस्त देवताओं को अभय प्रदान किया है । २० इसलिए हम लोग हर समय आपके आश्रित रहते हैं । विशि कहता है कि यह सुनकर श्रीराम मन में संकुचित हो गये । २१

छान्द २१—च्यवन ऋषि और राम का संवाद

राग—कौशिक

च्यवन ने कहा, हे श्रीराम ! मधु नाम का एक पराक्रमी दैत्य है । महान तपस्या करने के कारण उसे शंकर जी ने वर प्रदान किया । हे राघव ! उन्होंने अपने त्रिशूल से एक शूल उत्पन्न किया । उसे उन्होंने वर देते हुए कहा कि इस शूल के रहने पर तुम तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर सकोगे । १ मधु दैत्य ने कहा, हे देव ! मेरे पुत्र और नाती इस शूल से जय प्राप्त करेंगे और आप प्रसन्नता से मेरे कुछ शत्रुओं युद्ध में संहार करेंगे । हे राघव ! शंकर ने कहा कि ऐसा ही होगा । उन्होंने मधु दैत्य से कहा कि तुम देवता और ब्राह्मणों की भक्ति करते रहना । ऐसा सुनकर मेरे रहते-रहते उसने अपनी गति ठीक कर ली ।

एमन्त शुणिण मुहिँ थिबा जाए होइण थिला भल गति ।
मधुबन भांगि मधुपुर करि भुंजिला निश्चला बिभूति ।।
आहे राघब । तार पुत्र हेला लबण ।
महादुष्ट पणे काहाकु न मानि पृथिबी कला रण भण ।। २ ।।
शूळ तार निज पुररे रखिण प्रतिदिन ता पूजा करे ।
खाइबा निमन्ते प्रति दिबसरे दश सहस्र जीब मारे ।।
आहे राघब । ताकु बेगे तुम्भे संहार ।
शुणिण राघब मुनिक बचन कलेक ताहा सीउकार ।। ३ ।।
भरत शत्रुघ्नकु चाहिँ बोलन्ति लबण दनुजकु मार ।
शुणि भरत कर जोड़ि मारिबि बोलिण हेला अग्रसर ।।
आहे राघब । तुम्भ श्री चरण प्रसादे ।
किंचितरे मुहिँ ताहाकु मारिण आसिबि देब अप्रमादे ।। ४ ।।
शत्रुघन तांक सीउकार देखि कर जोड़िण जणाइले ।
कनिष्ठ थाउँ ज्येष्ठ भ्राता जिबार उचित नुहइ बोइले ।।
आहे राघब । मुँ जाइँ मारिबि राबण ।
मुनि मानंकु अभय कराइबि शिरे घेनि तुम्भ चरण ।। ५ ।।
शुणिण श्रीराम शत्रुघ्न बचन होइले जे सानन्द मन ।
आज्ञा देले एबे अभिषेक होइ हुअ मधुपुर राजन ।।

उसने मधुवन को नष्ट करके मधुपुर बसाकर अचल सम्पत्ति का उपभोग किया। हे राघव ! उसका पुत्र लयण हुआ। जो बड़ा दुष्ट था। उसने किसी को न मानते हुए पृथ्वी को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। २ अपने शूल को अपने महल में रखकर वह प्रतिदिन पूजा करता था। खाने के लिए प्रति दिन दस हजार जीव मारता था। हे राघव ! आप उसका शीघ्र ही संहार करें। राघव राम ने मुनियों के वचन सुनकर उसे स्वीकार कर लिया। ३ उन्होंने भरत और शत्रुघ्न की ओर देखकर लवणासुर दैत्य को मारने को कहा। भरत ने ऐसा सुनकर हाथ जोड़कर कहा कि मैं उसे मारूँगा। फिर वह आगे बढ़े और बोले, हे राघव ! आपके श्रीचरणों के प्रसाद से हे देव ! मैं उसे सहज ही अप्रमाद से मारकर आ जाऊँगा। ४ उनकी स्वीकृति देखकर शत्रुघ्न ने हाथ जोड़कर कहा कि छोटे भाई के रहते बड़े भाई का जाना उचित नहीं है। हे राघव ! मैं जाकर लवणासुर को मारूँगा और आपके चरणों को सिर पर धारण करके मैं मुनियों को अभय करूँगा। ५ श्रीराम का मन शत्रुघ्न के वचन सुनकर प्रसन्न हो गया।

आहे सानुज। अधिवास आज तुम्भर।
शत्रुघन बोले नृपति हेबाकु जोग्य नुहें देव मुं छार ॥ ६ ॥
राम आज्ञा देले आहे शत्रुघन आम्भ आज्ञा भग्न न कर।
एठारे तुम्भे अभिषेकी होइण पच्छे लवणकु संहार ॥
आहे सानुज। मधु कटके राजा हेब।
दुष्ट दनुजंकु संहारि परजामानंकु निश्चिन्ते पाळिब ॥ ७ ॥
एमन्त आज्ञा देइण अजोध्यारे बहु उत्सव कराइले।
शत्रुघनकु मथुरारे नृपति करिण अभिषेक कले ॥
आहे सानुज। लवण जेमन्त मरिब।
से कथा आम्भे तुम्भंकु शिखाइबा आम्भ आज्ञा निश्चें करिब ॥ ८ ॥
एका रथे चढ़ि मधुपुर जिब सैन्य तुम्भ संगे न थिबे।
रथ गज अश्व अनेक पदाति बुलिण अन्य बाटे जिबे ॥
आहे सानुज। भ्रमि जाइ थिब असुर।
द्वार निरोधि तार संगे जुझिब पुराइ न देब भितर ॥ ९ ॥
पुरे पशिले सिना शूळ घेनिण तहिंरे तुम्भंकु मारिब।
शूळ ता करे न थिले से निश्चे तुम्भ हाते प्राण हारिब ॥
आहे सानुज। आम्भे तुम्भंकु देबा शर।
त्रिभुवन जय करिबा निमन्ते देइ अछन्ति कुशधर ॥ १० ॥

उन्होंने मधुपुर का राजा होकर अभिषेक कराने की आज्ञा दी और कहा, हे अनुज ! आज तुम्हारा अधिवास है। शत्रुघ्न ने कहा, हे देव ! तुच्छ मैं राजा होने के योग्य नहीं हूँ। ६ श्रीराम ने कहा, हे शत्रुघ्न ! मेरी आज्ञा भंग मत करो। यहाँ तुम अभिषिक्त होकर बाद में लवण का संहार करो। हे अनुज ! मधुदुर्ग के राजा होकर दुष्ट दैत्यों का संहार करके प्रजा का निश्चिन्त होकर पालन करना। ७ इस प्रकार आज्ञा देकर उन्होंने अयोध्या में बहुत उत्सव मनाया। शत्रुघ्न को मथुरा का राजा बनाकर उनका अभिषेक किया। हे अनुज ! लवण दैत्य जिस प्रकार मरेगा वह सब बातें हम तुम्हें सिखायेंगे। तुम निश्चित रूप से हमारी आज्ञा का पालन करना। ८ तुम रथ पर चढ़कर अकेले मधुपुर जाओगे। तुम्हारे साथ सेना नहीं रहेगी। रथ, हाथी, घोड़े और अनेक पैदल योद्धा घूमकर दूसरे मार्ग से जायेंगे। हे अनुज ! असुर भ्रमित हो जायेगा। तुम द्वार छेंककर उसके साथ युद्ध करना और उसे भीतर न जाने देना। ९ घर में घुसने पर ही तो शूल लेकर वहाँ तुम्हें मारेगा। उसके हाथ में शूल न होने से वह निश्चय ही तुम्हारे हाथों से प्राण गँवायेगा। हे भाई !

एमन्त कहि तूणीरु शर काढ़ि शत्रुघनर करे देले ।
ए शरे लबणकु बध करिब संशय न कर बोइले ।।
आहे सानुज । शस्त्रमान त घेनि जाअ ।
छामुरु मेलाणि होइण आम्भर शुभ बेळरे तुम्भे जाअ ।। ११ ।।
एमन्त शुणि बीर बेश होइण छामुरे प्रबेश होइले ।
श्री चरण छुइँ नमस्कार करि त्वरिते मेलाणि होइले ।।
पुणि से बीर । भरत लक्ष्मण पादे पड़ि ।
अन्य अन्य बाटे पेषिण सैन्यंकु एका बिजय रथे चढ़ि ।। १२ ।।
समस्त ऋषिकु आगे पठि आइ गंगाकूळरे परबेश ।
बालमीकि मठे जाइण हुअन्ते दिबस होइलाक शेष ।।
सेहि निशिरे । जात होइले लबकुश ।
बोलइ बिशि मुँ निरते पिइबि श्रीराम चरित पीयूष ।। १३ ।।

द्वाविंश छान्द—लबकुश-जन्म

राग—चोखि

बालमीकि मठ देखि, शत्रुघन होइ सुखी;
पचारन्ति मुनिकि से आनन्द मने ।

हम तुम्हें बाण देंगे जो त्रिभुवन जीतने के लिए ब्रह्मा ने दिया था । १० ऐसा कहकर उन्होंने तरकश से निकालकर बाण शत्रुघ्न को देते हुए कहा कि इस बाण से लवण का वध करना । इसमें सन्देह न करना । हे भाई ! तुम शस्त्रों को ले जाओ और हमसे बिदा होकर हमारे शुभ मुहूर्त में तुम निकल जाओ । ११ यह सुनकर वीरवेश में सजकर वह श्रीराम के सामने पहुँचे । उन्होंने उनके चरण छूकर नमस्कार किया और शीघ्र ही बिदा हुए । फिर पराक्रमी शत्रुघन ने भरत और लक्ष्मण के चरण स्पर्श करके सेना को अन्यान्य मार्गों से भेजकर अकेले ही रथ पर गये । १२ समस्त ऋषियों को आगे भेजकर वह गंगा तट पर जा पहुँचे । वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचते-पहुँचते दिन समाप्त हो गया । उसी रात्रि में लव-कुश का जन्म हुआ । बिशि कहता है कि मैं निरन्तर श्रीराम-चरित्र-सुधा का पान करूँगा । १३

छान्द २२—लवकुश-जन्म

राग—चोखी

वाल्मीकि का आश्रम देखकर शत्रुघ्न ने प्रसन्न होकर मुनि से हर्षित

बहुत भस्म त दिशे, जाग करि थिले के से,
बहु होमकुण्ड अछि तुम्भर स्थाने।
शुणि बोलन्ति से महर्षि।
राउ दास नृप जोगे एमन्त दिशि ॥ १ ॥
महाबळिष्ठ से नृप, तेजिले सूर्य्यस्वरूप,
मृगयाकु करि अनेक दैत्य माइले।
रणे ताहांकु न पारि, असुरे माया बिचारि,
बशिष्ठे देखि बशिष्ठ रूप धइले।
गले सउदासर पाश।
मागिले मांस भोजन देबु अबश्य ॥ २ ॥
राजा सीउकार कले, सूपकार अणाइले,
असुरे सूपकार रूपकु धइले।
राजा कहे कर्णपाश, रान्धिण उत्तम मांस,
बशिष्ठे देइ सन्तोष कर बोइले।
रन्धिले से मनुष्य मांस।
भोजन निमन्ते देले बशिष्ठ पाश ॥ ३ ॥
बशिष्ठ से मांस देखि, क्रोधरे ताहा उपेक्षि,
सउदास राजांक मुखकु चाहिंले।
पापिष्ठ एमन्त कलु, असुर भोजन देलु,

मन से पूछा कि बहुत भस्म दिखाई दे रही है। आपके स्थान में बहुत से हवनकुण्ड हैं। यहाँ किसने यज्ञ किया था ? यह सुनकर महर्षि बोले कि सुदास राजा के कारण ऐसा दिखाई दे रहा है। १ वह राजा महान बलशाली था। वह सूर्य के समान तेजस्वी था। उसने आखेट करके अनेक दैत्यों का संहार किया। युद्ध में उसका पार न पाकर असुरों ने छल किया और वशिष्ठ को देखकर वशिष्ठ का रूप धारण करके सुदास के पास गये। उन्होंने उनसे अवश्य ही मांस का भोजन देने को कहा। २ राजा ने स्वीकार करके रसोइया को बुलवाया। दैत्य ने सूपकार का रूप धारण कर लिया। राजा ने उसके कान में कहा कि उत्तम मांस पकाकर वशिष्ठ को देकर उन्हें संतुष्ट करो। रसोइये ने मनुष्य का मांस पकाया और भोजन के लिए वशिष्ठ को दे दिया। ३ वशिष्ठ ने उस मांस को देखकर क्रोधपूर्वक उसकी उपेक्षा करते हुए राजा सुदास के मुख की ओर देखा और बोले, अरे पापी ! तूने ऐसा किया। मुझे दैत्यों का भोजन दिया।

आजहुं असुर तु हुअ हे बोइले ।
बोले सउदास नृपति ।
बिचारिण शाप मोते दिअ हे जति ।। ४ ।।
पुणिहिँ बोलइ राजा, शुण हे ब्रह्मतनूजा,
तुम्भ आज्ञारे त मांस भोजन देलि ।
अकारणे मोते कोप, करिण देल त शाप,
अपराध आउ किबा तुम्भर कलि ।
तुम्भे जेबे देलटि शाप ।
मुहिँ शाप देबि बोलि कलाक कोप ।। ५ ।।
धरिण जळ अंजळि, शाप दिअन्ते से तोळि,
राणी आसिण ताहांक कर धइले ।
जेबे गुरु देले शाप, तांकु तुम्भे प्रति शाप,
देबार त उचित नुहइ बोइले ।
शुणि राजा शान्ति भजिले ।
से जळ आपणा पादरे पकाइले ।। ६ ।।
काळिमा दिशिला तनु, कळ्मष घोटला तेणु,
बशिष्ठ बिचारि ताहा ध्याने जाणिले ।
असुरे माया रचिले, आम्भंकु से मांस देले,
एथिरे राजार दोष नाहिँ बोइले ।

आज से तुम दैत्य हो जाओ । तब राजा सुदास ने कहा, हे ऋषि ! मुझे बिचार करके शाप दीजिए । ४ राजा ने पुनः कहा, हे ब्रह्मपुत्र ! मैंने आपकी आज्ञा से ही मांस भोजन दिया है । आपने अकारण ही क्रोध करके मुझे शाप दिया है मैंने आपका क्या अपराध किया है ? यदि आपने मुझे शाप दिया है तो मैं भी आपको शाप दूंगा । ऐसा कहकर वह कुपित हो गया । ५ अंजलि में जल लेकर शाप देने के लिए उसे उठाने पर रानी ने आकर उनका हाथ पकड़ लिया । उसने कहा कि जब गुरुदेव ने शाप दे दिया, तो आपका उन्हें प्रतिशाप देना उचित नहीं है । यह सुनकर राजा शान्त हो गये और उन्होंने जल अपने पैरों में गिरा लिया । ६ उनका शरीर काला दिखाई पड़ने लगा, क्योंकि पाप ने उन्हें आच्छादित कर । वशि[illegible] बिचार करके ध्यान से उसे जाना कि असुरों ने माया [illegible] था । इसमें राजा का को [illegible] पि किया है तो थोड़े ही

जेबे आम्भे कलुटि कोप ।
किञ्चित दिने तुम्भर मुञ्चिब पाप ।। ७ ।।
मुनिकर सुबचन, शुणि करि शत्रुघ्न,
अगस्ति ऋषि मठरे प्रबेश हेले ।
करिण दिव्य भोजन, निशि करन्ते शयन,
लब-कुश जन्मित बारता जाणिले ।
प्राते मुनि पादे पड़िले ।
मेलाणि होइण निज जाने चढ़िले ।। ८ ।।
सैन्यमाने बुलि गले, मधुपुर लागे हेले,
च्यबनंक आश्रमरे हो प्रबेश ।
मुनिक चरणे पड़ि, उभा हेले कर जोड़ि,
मुनि कल्याण करिण हेले हरष ।
मुनि तांकु कलेक पूजा ।
दिन बिशि चिन्ते शर कोदण्ड भुजा ।। ९ ।।

त्रयोविंश छान्द

राग–बराड़ि एकताळि

च्यबन बोलन्ति बीर । तुम्भे अति सुकुमार ।
महाबळिष्ठ असुर । केमन्ते हेब संहार ।। १ ।।

मुक्त हो जाओगे । ७ मुनि का वचन सुनकर शत्रुघ्न अगस्ति ऋषि के आश्रम में प्रविष्ट हुए । दिव्य भोजन करके रात्रि में सोते समय उन्हें लव-कुश के जन्म की बात पता चली । प्रातःकाल मुनि के चरणों में नत होकर उनसे विदा लेकर वह अपने रथ पर चढ़ गये । ८ सेना के लोग घूमकर मधुपुर के पास पहुँच गये । शत्रुघ्न च्यवन के आश्रम में पहुँचे । वह मुनि के चरणों में नत होकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये । मुनि ने प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दिया और उनकी पूजा की । दीन विशि कोदंड (धनुष) और बाण धारण करनेवाली भुजाओं का चिन्तन करता है । ९

छान्द—२३

राग–बरार (एकताल)

च्यवन बोले, हे वीर ! तुम अत्यन्त सुकुमार हो । दैत्य अत्यन्त बलवान है, उसका संहार कैसे होगा । १ हे शत्रुघ्न ! उसका चरित्र सुनो ।

शुण आहे शत्रुघन । ताहार चरित मान ।
त्रिनयन शूळ घेनि । जिणिला त्रय भुबन ।। २ ।।
मानधाता महीपति । जिणिण सकळ क्षिति ।
स्वर्गकु कलाक गति । बसाइले शचीपति ।। ३ ।।
दिने बोइले राजन । शुण हे पाकशासन ।
तुम्भे आम्भे त अभिन्न । देबता करन्ति भिन्न ।। ४ ।।
तुम्भंकु से मान्य कले । एमन्त मने धइले ।
आम्भंकु मान्य न कले । आम्भंकु मनुष्य कले ।। ५ ।।
बोलन्ति से पुरन्दर । शुण आहे नृपबर ।
महीरे लबणासुर । माइले मानबासुर ।। ६ ।।
शुणि राजा कोप कले । मञ्चथपुरकु अइले ।
लबण संगे जुझिले । ता शूळे प्राण हारिले ।। ७ ।।
तुम्भे एबे बूझि जुझ । करिब लक्ष्मणानुज ।
चिन्ते बिशि रामराज । जुगळ पद सरोज ।। ८ ।।

चतुर्विंश छान्द—लबणासुर-बध

राग—आशाबरी

लबण द्वार उगाळिण शत्रुघन द्वितीय कृतान्त प्राय दिशे ।
दश सहस्र पशु घेनि दनुज भार करि सत्वरेण आसे से ।।

उसने त्रिनेत्र-धारी शंकर से शूल लेकर तीनों लोकों को जीत लिया है । २ महाराज मान्धाता सारी पृथ्वी को जीतकर स्वर्ग को गये । उन्हें इन्द्र ने बैठा लिया । ३ एक दिन राजा ने कहा कि हे इन्द्र ! सुनो, हम और तुम अभिन्न हैं परन्तु देवता भिन्नता का व्यवहार करते हैं । ४ ऐसा मन में सोचकर उन लोगों ने आपका सम्मान किया, परन्तु हमें मनुष्य समझकर मान्यता नहीं दी । ५ इन्द्र ने कहा, हे नृपश्रेष्ठ ! सुनिये । पृथ्वी पर लवणासुर ने मनुष्य और देवताओं को मारा है । ६ यह सुनकर राजा कुपित होकर मृत्युलोक में आये । उन्होंने लवणासुर के साथ युद्ध किया और उसके शूल से प्राण खो बैठे । ७ इस समय हे लक्ष्मणानुज ! तुम समझ-बूझकर युद्ध करना । विशि राजा रामचन्द्रजी के युगल चरणों का चिन्तन करता है । ८

छान्द २४—लवणासुर-वध

राग—आसावरी

लवणासुर का द्वार रोककर शत्रुघ्न द्वितीय यमराज के समान

ताहाकु से द्वार न छाड़िले ।
आज आम्भंकु समर देबु बोलि गुणे शर सन्धि ओटारिले से ।। १ ।।
बोले लबणपुरे पशि आसे रहिथाअ तुम्भे दण्डे मात्र ।
मृगया निमन्ते जाइथिलि सिना आणइ मोहर निज शस्त्र हे ।।
कुमर तुहि कि सामरथ ।
एहि क्षणि तोते किंचित अस्त्ररे देखाइबि मुहिं जमपथ जे ।। २ ।।
एमन्त कहन्ते पथ न छाड़न्ते बेनि तरुबर उपाड़िला ।
बुलाइ बुलाइ शत्रुघन अंगे क्रोध होइ शीघ्र कचाड़िला से ।
भूमिरे बीर मोह गले ।
चळि जान्ते द्वार शत्रुघन ज्ञान पाइण ताहाकु उगाळिले जे ।। ३ ।।
पुणि लेउटि आसिण से असुर बृक्ष धरिण समर कला ।
शत्रुघन ता हातरु तरु काटिबारु शून्य कर होइ गला से ।। ४ ।।
ता सैन्यरे सैन्य भेट हेले ।
महा संग्राम करिण राम सैन्य मारन्ते असुर पळाइले से ।। ५ ।।
श्रीराम जेबण शर देइथिले गुणरे से शर बसाइले ।
लबण उपरकु ताहा पेषिण शिर छेदि तार प्राण नेले से ।। ६ ।।

दिखाई दिये । वह दैत्य दश हज़ार पशुओं को ढोकर लिये हुए वेग से आ रहा था । उन्होंने उसके लिए द्वार नहीं छोड़ा । आज हमारे साथ युद्ध करो, ऐसा कहकर उन्होंने डोरी पर बाण चढ़ाकर उसे ललकारा । १ लवण ने कहा कि तुम दण्ड मात्र यहाँ रुको । मैं घर में होकर आ रहा हूँ । मैं शिकार के लिए गया था । अरे ! मैं अपना शस्त्र तो ले आऊँ । तू तो बच्चा है । तेरी क्या सामर्थ्य ? इसी क्षण अपने अस्त्र से मैं तुझे यमलोक का मार्ग दिखाऊँगा । २ ऐसा कहकर मार्ग न छोड़ने पर उसने दो विशाल वृक्ष उखाड़ लिये और वह उन्हें घुमा-घुमाकर क्रोध से शत्रुघ्न के शरीर पर वेग से पटकने लगा । पराक्रमी शत्रुघ्न मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । द्वार से जाने पर शत्रुघ्न को चेतना आ गयी । उन्होंने उसे रोककर ललकारा । ३ पुनः लौटकर आकर उस दैत्य ने वृक्ष पकड़कर युद्ध किया । शत्रुघ्न के द्वारा उसके हाथ से पेड़ कट जाने के कारण वह खाली हाथ हो गया । ४ उसकी सेना से शत्रुघ्न की सेना की मुठभेड़ हो गयी । भयानक संग्राम करके राम की सेना के द्वारा मारे जाने पर असुर भाग गये । ५ श्रीराम ने जो बाण दिया था उसे शत्रुघ्न ने प्रत्यंचा पर चढ़ाकर लवणासुर के ऊपर उसका प्रहार करके उसका सिर काटकर प्राण ले लिये । ६ यह देखकर देवता प्रसन्न हो गये । देवलोक में

देखि देबताए हृष्ट हेले ।
सुरपति पुरे दुन्दुभि बजाइ आकाशुँ कुसुमबृष्टि कले से ॥ ७ ॥
लबण संहारि देबबर पाइ शत्रुघन तहिँ राजा हेले ।
पुत्र प्राय करि परजा पालिण मधुपुर स्वर्गपुर कले से ॥ ८ ॥
तहिँ द्वादश बत्सर थिले ।
बोले बिशि राम दर्शन निमन्ते उत्साही होइण बिजे कले से ॥ ९ ॥

पञ्चविंश छान्द

राग–धनाश्री

बाजइ बिबिध बाजा, संगे घेनि क्षत्रि भुजा,
बहु रथ बहु गज से, मधुपुरी,
शत्रुघन होइ राजा ।
अजोध्या बिजे नृपति, श्रीराम दर्शने मति,
शीघ्र होइ करे गति ॥ १ ॥
चतुरंग बळ गति, करन्ते कम्पे धरित्री,
शत्रुघन शक्र द्युति ।
भेटि बाल्मीकि मुनि, पादे लगाइ मुर्द्धनी,
रहि मठे से रजनी ॥ २ ॥

दुन्दुभि बजाकर उन्होंने आकाश से पुष्पवर्षा की। ७ लवणासुर का संहार करके और देवताओं का वर पाकर शत्रुघ्न वहाँ के राजा बने। उन्होंने पुत्र के समान प्रजा का पालन करके मधुपुर को स्वर्ग बना दिया। ८ वह वहाँ बारह वर्ष रहे। विशि कहता है कि शत्रुघ्न श्रीराम के दर्शन के लिए उत्साहित होकर चल दिये। ९

छान्द—२५

राग–धनाश्री

नाना प्रकार के बाजे बज रहे थे। सेना को साथ लेकर बहुत से हाथी और बहुत से रथ लेकर शत्रुघ्न मधुपुरी के राजा बने। श्रीराम के दर्शन की इच्छा से महाराज शत्रुघ्न शीघ्रता के साथ अयोध्या को चल दिये। १ चतुरंगिनी सेना के चलने से पृथ्वी काँप रही थी। शत्रुघ्न का तेज इन्द्र के समान था। वह महर्षि वाल्मीकि से मिले और चरणों से सिर लगाकर रात्रि में उसी आश्रम में रुके। २ दोनों भाई लव-कुश हाथों

लव कुश भाइ वेनि, करे रामायण घेनि,
गुआइले तांकु मुनि ।
सुन्दर बेनि कुमर, गाइले अति मधुर,
शुणि न आसे उत्तर ।। ३ ।।
जाणिले रामकुमार, मनरे कले विचार,
शोके हेले जरजर ।
से दिन रजनी शेष, पथरे गले दिबस,
अजोध्या हेले प्रवेश ।। ४ ।।
श्रीरामपाद सारस, शिरे लगाइ हरष,
शत्रुघन करि जश ।
बोलन्ति राम राजन, शुण आहे शत्रुघ्न,
कि पाइँ कल गमन ।। ५ ।।
क्षत्रि मानंकर मन, बुझिथिबा प्रतिदिन,
पासोर निज सदन ।
शत्रुघन जोड़ि कर, बोलन्ति हे रघुबीर,
न देखिले श्री पयर ।। ६ ।।
कि हेब सम्पद छार, देखुथिबि श्री पयर,
एहि अनुग्रह कर ।
शुणि राम बोले जाअ, एठारे दण्डे न थाअ,
ए कथामान न कह ।। ७ ।।

में रामायण लिये थे । मुनि ने उनसे गवाया । उन दोनों सुन्दर कुमारों ने अत्यन्त मधुरता से रामायण का गान किया, जिसे सुनकर उत्तर नहीं आ रहा था । ३ शत्रुघ्न ने जान लिया कि यह राम के पुत्र हैं । मन में विचार करते हुए वह शोक से जर्जर हो गये । उस दिन रात्रि समाप्त होने पर सारा दिन मार्ग चलने पर वह अयोध्या जा पहुँचे । ४ श्रीराम के चरण-कमलों को हर्षपूर्वक सिर से लगाकर शत्रुघ्न ने उनकी जयकार की । महाराज रामचन्द्र ने शत्रुघ्न से कहा कि तुमने किसलिए आगमन किया है ? ५ योद्धाओं का मन प्रतिदिन समझते रहना चाहिए । तुमने अपने घर को भुला दिया । शत्रुघ्न ने हाथ जोड़कर कहा, हे रघुबीर ! आपके श्रीचरणों को न देखकर उस तुच्छ सम्पत्ति का क्या होगा ? आप ऐसी कृपा करें कि मैं आपके श्रीचरणों को देखता रहूँ । यह सुनकर राम ने कहा कि तुम जाओ । यहाँ एक दण्ड भी मत रुको । यह सब बातें

सम्पदरे नोहि मोह, परजारे दयाबह,
रखिथिब निज देह ।
सात दिन शत्रुघन, रहि अजोध्या भुबन,
भ्रातांकर नेले मन ।
बोले बिशि मधुबन, बाहुड़ि कले गमन,
पाळिले परजा मान ।। ८ ।।

षट्‌विंश छान्द—मृत ब्राह्मण बालकर जीबदान

राग—सिन्धुड़ा

एक ब्राह्मण घरे हत होइला पंचबरषर बालक ।
श्रीरामंक सिंहद्वारे शुआइ घोड़ाइला दिव्य चेलेक ।
शिर होइण कोड़ि । बेनि नयनरु अश्रु पड़ि से ।
बहु उच्चरे करइ रड़ि से ।। १ ।।
मोहर आजन्म काळुँ पाप नाहिँ किपाइँ मोर पुत्र मला ।
ए कथा देखिला शुणिला न थिला कि पाप बा राजा कला हे ।
नोहिले कि ए बाळ । किपाँ निअन्ता एहाकु काळ हे ।
निश्चे जाणिलि पापी भूपाळ हे ।
किपाँ बोलन्ति ए धर्मशीळ हे ।। २ ।।

मत कहो । ६-७ सम्पत्ति से मोह न करके प्रजा पर दया करते हुए अपना शरीर कायम रखो । सात दिनों तक शत्रुघ्न ने अयोध्यापुरी में रहकर भाई का मन मोह लिया । विशि कहता है फिर वह मधुवन लौट गये और उन्होंने प्रजा का पालन किया । ८

छान्द २६—मृत ब्राह्मण-बालक को जीवनदान

राग—सिन्धुर

एक ब्राह्मण के घर में पाँच वर्ष का बालक मर गया । श्रीराम के सिंहद्वार पर दिव्य कपड़े से ओढ़कर उस ब्राह्मण ने उस शव को लिटा दिया और शिर धुनता हुआ दोनों नेत्रों से अश्रु बहाता हुआ उच्च स्वर में क्रन्दन करने लगा । १ मैंने तो जन्मकाल से कोई पाप नहीं किया, फिर मेरा पुत्र कैसे मर गया ? ऐसा तो न कहीं देखा था और न सुना था । अरे राजा ने क्या पाप किया ? नहीं तो इस बालक को काल क्यों लेता ? मैं निश्चित रूप से समझ गया कि राजा पापी है । कैसे बोलते हैं कि यह धर्मशील है । २ मैं राम के राज्य में एक दण्ड भी न रहूँगा,

राम राज्यरे मुँ दण्ड न रहिबि आन राज्ये पच्छे जिबि ।
पुत्र मोर न जिइँले मुँ अबश्य राजा आगरे मरिबि हे ।
राजामाने न थिले । एड़े अधर्म केहि न कले से ।
पाञ्च बरष बालक मले से । पुत्र शोकी त होइ नथिले से ।। ३ ।।
बशिष्ठ बामदेवादि पुरोहित नारद कण्डु अंगिरा ।
समस्त ऋषि पुरोहित अइले छामुकु होइ हकरा से ।
राम मान्यत कले । बसिबाकु दिब्यासन देले से ।
सभा करि से माने बसिले से । आउ अन्यजने उभा हेले जे ।। ४ ।।
राम बोलन्ति शुण हे सर्ब मुनि ब्राह्मण बाळ कुमरे ।
सिंहद्वारे शब पकाइ आम्भंकु बहुत धिक्कार करे हे ।
आम्भर केउँ दोष । करुअछि आम्भंकु से रोष हे ।
काहा पापे होइला से नाश हे । एथकु आम्भे करिबुँ किस हे ।। ५ ।।
नारद बोलन्ति शुण रामचन्द्र ब्राह्मणर नाहिँ दोष ।
पाञ्च बरष पुत्र तुम्भ काळरे होइला जेबे बिनाश हे ।
तुम्भे जगतभूप । जगतरे जने कले पाप हे ।
राजा दण्ड दिए करि कोप हे । एथकु चिन्ता न कर आप हे ।। ६ ।।
सत्यजुगे तप ब्राह्मण करइ त्रेताजुगे क्षत्रि करे ।
द्वापरे बैश्यमाने तप करन्ति शूद्र कळिरे आचरे से ।

फिर भले ही पीछे मुझे अन्य राज्य में जाना पड़े । मेरा पुत्र जीवित न होने पर मैं निश्चय ही राजा के आगे प्राण दे दूंगा । क्या और राजागण नहीं थे ? पर ऐसा अधर्म किसी ने नहीं किया था । पाँच वर्ष के बालक के मरने से वह पुत्रशोकी तो नहीं हुए थे । ३ श्रीराम के द्वारा बुलाये जाने पर वशिष्ठ, बामदेव आदि पुरोहित तथा नारद, कण्डु, अंगिरा आदि समस्त ऋषि आ गये । श्रीराम ने उनकी अभ्यर्थना की । बैठने के लिए दिव्य आसन प्रदान किये । वह सभी सभा करने बैठ गये । अन्य लोग खड़े हो गये । ४ श्रीराम ने कहा, समस्त ऋषियो ! सुनो ! सिंहद्वार पर वह ब्राह्मण बालक के शव को लिटाकर हमें बहुत धिक्कार रहा है । हमारा क्या दोष है जिससे वह हम पर क्रोध कर रहा है । किसके पाप से वह नष्ट हुआ है । इस समय हम क्या करें ? ५ नारद ने कहा, हे रामचन्द्र ! सुनो ! ब्राह्मण का दोष नहीं है । पाँच वर्ष का बालक आपके समय में नष्ट हुआ है । आप संसार के महिपाल हैं । संसार में किसी व्यक्ति के पाप करने पर राजा उसे कुपित होकर दण्ड देता है । इससे आप चिन्ता न करें । ६ सतयुग में ब्राह्मण तप करता है ।

धर्म होइछि लीन। तप करन्ते ए तिनि बर्ण से।
जेणु त्याग बर्ण धर्म मान से॥ ७ ॥
सत्यजुगरे ब्राह्मण तप करे चारि पादे धर्म रहे।
त्रेताजुगरेटि क्षत्री तप कले पादे धर्म लोप होए हे।
द्वापर जुग तप। कळि शूद्रे त्रिपद गोप्य हे।
तिनि बर्ण न करिबे तप हे॥ ८ ॥
द्वापरे कळि होइ नाहिँ प्रबेश शूद्र करे घोर तप।
तेणु ए ब्राह्मण पुत्र नाश गला काहार हेला ए पाप हे।
तुम्भे अट राजन। दण्डदिअ होइ साबधान से।
निजधर्मे थिबे चारि बर्ण हे। एथु नोहिब जे आनमान हे॥ ९ ॥
नारद मुखरु शुणिण बोलन्ति काहिँ जाणिमा केमन्ते।
केउँठारे से तप करुथिब रहिण सहा निश्चिन्ते से।
मुनि बोले हे जिब। जेउँठारे अधर्म देखिब हे।
सेहि निकटरे रहिथिब हे। शुणि सानन्द हेले राघब से॥ १० ॥
ऋषिमानंकु मेलाणि देइ राम पुष्पक जान सुमरे।
मने चिन्तिला मात्र के देबजान मिळिला अति सत्वरे से।
तहिँ बिजे श्रीराम। बुलि खोजन्ति कानन बन से।
देखुछन्ति मुनिक आश्रम से। देखे एक स्थानरे अधर्म से॥ ११ ॥

त्रेतायुग में क्षत्री तप करता है। द्वापर में वैश्य और कलियुग में शूद्र तप करते हैं। इन तीनों के वर्ण-धर्म को त्यागकर तप करने से धर्म का लोप हो गया है। ७ सतयुग में ब्राह्मण के तप करने से धर्म चार पदों पर रहता है। त्रेतायुग में क्षत्री के तप करने से धर्म का एक पद लुप्त हो जाता है। द्वापर तथा कलियुग में शूद्र के तप करने से तीन पद लुप्त हो गये। तीनों वर्ण तप नहीं करेंगे। ८ द्वापर और कलियुग आया नहीं और शूद्र घोर तपस्या कर रहा है। इसी कारण से यह ब्राह्मण-पुत्र मृत हो गया। यह पाप किसका हुआ ? आप राजा हैं। आप सावधान होकर उसे दण्ड दें। चारों वर्ण अपने-अपने धर्म में स्थित रहें। इसके अतिरिक्त और कुछ न हो। ९ नारद के मुख से ऐसा सुनकर श्रीराम ने कहा कि यह कैसे ज्ञात होगा कि वह किस स्थान में रहकर निश्चिन्त होकर तप कर रहा है ? मुनि ने कहा, आप जाकर देखिये। जहां आपको अधर्म दिखाई पड़े वह वहीं पर रह रहा होगा। यह सुनकर राघव प्रसन्न हो गये। १० ऋषियों को विदा देकर श्रीराम ने पुष्पक का स्मरण किया। मन में सोचने मात्र से देवयान वेग से आ पहुँचा। उसी

सेहि घोर बने बुलि रामचन्द्र देखिले तहिँ भितरे।
शूद्र गोटाए उर्ध्वतप करइ पादक पाद उपरे से।
तांकु पुच्छन्ति राम। किस बर्ण किस तोर नाम से।
शुणि कोहिला ता बर्ण नाम से। पुणि बोलन्ति कलु अधर्म जे ॥ १२ ॥
खड्ग धरि तार शिर छेदन्ते जिइँला ब्राह्मणर सुत।
राम करे दण्ड पाइण से शूद्र मरणे हेला मुकत से।
पुष्पक जाने बसि। बाहुड़न्ते मुनि मठ दिशि जे।
भेट होइले अगस्ति ऋषि जे। राम पाद चिन्ते दीन बिशि से ॥ १३ ॥

सप्तविंश छान्द—दण्डकारण्य-बर्णना

राग–कामोदी

राम पुछन्ति बसि कह हे
महाऋषि दण्डक अरण्यर नाम।
किपाँ दण्डका नाम होइलाक
उद्दाम कह मुनि मोते से नाम हे।
बोले मुनि। सत्यभूपंक बोलि नाम।

पर बैठकर श्रीराम निर्जन कानन में ढूंढ़ने लगे। वह मुनियों के आश्रम देख रहे थे। उन्होंने एक स्थान पर अधर्म को देखा। ११ उसी वन में घूम-फिरकर श्रीराम ने एक शूद्र को पैर पर पैर रखे हुए उग्र तपस्या करते देखा। श्रीराम ने उससे पूछा कि तुम्हारा वर्ण तथा नाम क्या है ? यह सुनकर उसने अपना नाम तथा वर्ण बताया। श्रीराम ने कहा कि तुमने अधर्म किया है। १२ खड्ग लेकर उसका सिर काटने से ब्राह्मण-पुत्र जीवित हो गया। श्रीराम के हाथ से दण्ड पाकर वह शूद्र मरकर मुक्त हो गया है। पुष्पक विमान पर बैठकर लौटते हुए श्रीराम को मुनि का आश्रम दिखाई दिया। उन्होंने महर्षि अगस्ति से भेंट की। दीन विशि श्रीराम के चरणों का चिन्तन करता है। १३

छान्द २७—दण्डकारण्य का वर्णन

राग–कामोदी

श्रीराम ने बैठते हुए पूछा, हे महर्षि ! दण्डक वन के नाम के विषय में मुझे बताइए कि किस कारण से इसका नाम दण्डकारण्य पड़ा ? मुनि

ता पुत्र अइलाकु बीरगणे ताहाकु
केहि नोहिले सरि सम हे ।। १ ।।
तांकर शते पुत्र हेले अति
बिचित्र प्रान्तकुमर नाम दण्ड ।
ता देश बिन्ध्यतटे बिन्ध्यगिरि
निकटे शते जोजन भूमिखण्ड हे ।
दाशरथि । शुक्रंकु पुरोहित करि ।
निज बाहुर बळे शत्रु संहारि ।
हेळे हेले महीरे दण्डधारी से ।। २ ।।
मृगया जाइँ राजा देखि शुक्र-
तनुजा मदने होइला अबश ।
नास्ति जे कह कह अबिबाहिता
नारी बळे रचन्ते रति रस से ।
नृपसिंह । धूळिधूसर कन्या अंग ।
तपकु जाइ थिले शुक्र आसि
देखिले दुहिता होइछि बिभंग हे ।। ३ ।।
पचारिले से शुक्र एड़े गर्ब
काहार के कला एमन्त बोइले ।
शुणि कहि कुमारी एहि जे दण्डधारी
बळबन्ते मोते हरिले हे ।

ने कहा कि सत्यभूप नाम का एक राजा था। उसके पुत्र के आने पर कोई भी वीर उसकी समानता में नहीं आता था। १ उसके सौ पुत्र हुए। अति विचित्र प्रांत कुमार का नाम दण्ड था। विन्ध्यगिरि की उपत्यका में सौ योजन भूमि पर उसका देश था। हे दशरथनन्दन ! उसने शुक्र को पुरोहित बनाकर अपने बाहुबल से शत्रुओं का संहार करके सहज में ही राजा बन गया। २ आखेट में जाने पर वह शुक्राचार्य की पुत्री को देखकर काम के वश में हो गया। मना करते-करते उस नृपशार्दूल ने अविवाहिता नारी के साथ बलपूर्वक रतिक्रीड़ा की। कन्या का शरीर धूल से सन गया। शुक्राचार्य तपस्या के लिए वन में गये थे। उन्होंने आकर पुत्री को अस्त-व्यस्त देखा। ३ शुक्राचार्य ने उससे पूछा कि इतना गर्व किसे हो गया है और किसने ऐसा किया है ? यह सुनकर कुमारी ने कहा, यह जो बलवान राजा है। उन्होंने मुझे बलपूर्वक हरण किया था।

तात शुण। शुणि दुहितार उत्तर।
शिष्यंक मुख चाहिँ क्रोधे तनु कम्पाइ
बोलन्ति कि कला पामर से॥ ४ ॥
बोइले कोप मने आजहुँ सातदिने
भस्म हेउ ए तोर पुरी।
तोर शते जोजन स्थित जेतेक
जन पशु गाब वृक्षादि करि हे।
राबणारि। भस्म होइला तार पुरी।
के जाणि पळाइले के भस्म होइ
गले दग्ध हेला वन गिरि हे।
एक मात्रके रहि जोजन जय
पुरी पुष्करिणी एक रहिला।
तहिँरे श्वेत राज तप करिण
निज तनकु घेनि स्वर्ग गला।
रघुबीर। शुक्रशापरु एते दूर।
एणु दण्डकारण्य बोलन्ति त्रिभुबन।
जक्षमाने कलेक पुर हे॥ ५ ॥
एते कहिण मुनि रामचन्द्रंकु
घेनि सायंकाळरे सन्ध्या कले।
षड़रस भोजन कले तहिँ आसन
से मनोनीत निद्रा गले से।

पिता ने पुत्री का यह उत्तर सुनकर शिष्यों के मुख की ओर देखते हुए क्रोध कम्पित शरीर से कहा, अरे नीच! तूने क्या किया। ४ उन्होंने क्रोधित मन से कहा कि आज से सात दिन के भीतर तेरा नगर भस्म हो जाएगा। तेरे सौ योजन स्थित राज्य में जितने भी लोग, पशु, गायें तथा वृक्ष हैं, सभी जल जाएँ। हे रावणारि! उसका नगर जलकर भस्म हो गया। कोई जानकर भग गया। कोई भस्म हो गया। वन-पर्वत सभी जल गये केवल एक योजन विस्तीर्ण पुष्करिणी बच गयी। वहीं पर श्वेतराज तपस्या करके सशरीर स्वर्ग को गये। हे रघुवीर! शुक्राचार्य के शाप से ऐसा हो गया। सब लोग इसीलिए इसे दण्डकारण्य कहते हैं। यक्षों ने इसमें अपना नगर बसा लिया है। ५ ऐसा कहकर मुनि ने रामचन्द्र को लेकर सायंकालीन संध्या की। षड्रस भोजन करके वहीं अपने आसन पर इच्छानुसार सो

सीतापति ! आनन्दे पुहाइले रति ।
बोलइ दीन बिशि मेलाणि देले
ऋषि अजोध्या गलेक तड़ति से ।। ६ ।।

अष्टाविंश छान्द—अश्वमेध-जज्ञ
राग—चक्रकेळि

शुण सुजने श्रीराम चरित ।
शुणि हरिब समस्त दुरित ।।
अजोध्यारे प्रबेश राबणारि ।
हकारिले छामुकु पड़िहारी ।। १ ।।
आज्ञा देले तु पड़िहारी जिबु ।
भ्रत लक्ष्मणंकु घेनि आसिबु ।।
आज्ञा घेनिण पड़िहारी गला ।
भ्रत लक्ष्मणंकु जाइ कहिला ।। २ ।।
बाहुड़ा बिजे कलेक राघब ।
आज्ञा प्रमाणे छामुकु आसिब ।।
शुणि लक्ष्मण बाहार होइले ।
भ्रत चरणे चालि बिजे कले ।। ३ ।।
हेले प्रबेश श्रीराम छामुरे ।
भूमि छुइँण कर देले शिरे ।।

गये । सीता के स्वामी ने आनन्दपूर्वक रात्रि व्यतीत की । दीन विशि कहता है कि ऋषि के विदा देने पर वह शीघ्र ही अयोध्या चले गये । ६

छान्द २८—अश्वमेध यज्ञ
राग—चक्रकेलि

हे सुजनो ! श्रीराम का चरित सुनो । जिसे सुनने से सारे पाप नष्ट हो जाएँगे । रावण के शत्रु ने अयोध्या पहुँचकर सन्देशवाहक को बुलाया । १ उन्होंने कहा कि तुम जाकर भरत और लक्ष्मण को ले आओ । आज्ञा पाकर उसने जाकर भरत और लक्ष्मण को निवेदित किया । २ राघव श्रीराम वापस आ गये हैं । आज्ञा के अनुसार आप उनके समक्ष उपस्थित हों । यह सुनकर लक्ष्मण बाहर निकले और भरत सहित चलकर श्रीराम के समक्ष जा पहुँचे । ३ उन्होंने पृथ्वी को छूकर हाथ सिर से लगा लिये । राम ने उन्हें देखकर हँसते हुए दोनों भाइयों का आलिंगन

राम देखिण हस हस हेले ।
बेनि भाइंकि आलिंगन कले ॥ ४ ॥
तुम्भे जे बेनि भाइ अट प्राण ।
भूत भबिष्य बर्तमान जाण ॥
एणु कथाए कहिबा तुम्भंकु ।
एहा बिचारि कहिब आम्भंकु ॥ ५ ॥
आम्भे राजसू करिबाकु मन ।
करि छइंत अन्य जाग मान ॥
चन्द्रदेब राजसू जाग कले ।
तेणु सिना चन्द्रलोक पाइले ॥ ६ ॥
बरुणहिं कले से राजसूय ।
तेणु बरुण लोकरे अभय ॥
हरि चन्दन राजसूय कले ।
तेणु महीरे बिजयी होइले ॥ ७ ॥
एहा करिबाकु इच्छा आम्भर ।
तुम्भे बेनि भाइ कह बिचार ॥
भ्रत जणाग्ति जोड़ि बेनि कर ।
एहि जज्ञकु जोग्य नृपबर ॥ ८ ॥
एक मात्रके एथि अछि दोष ।
राजामाने पाइबे बहु त्रास ॥
प्रजामाने बहु पीड़ा पाइबे ।
क्षत्रियमाने संग्रामे मरिबे ॥ ९ ॥

किया। ४ तुम दोनों भाई भूत-भविष्य-वर्तमान में हमारे प्राण हो, इसलिए एक बात तुमसे कहेंगे उसे विचार कर तुम हमें उत्तर दो। ५ मेरा राजसूय यज्ञ करने का मन है। और यज्ञ तो हम कर चुके हैं। चन्द्रदेव ने राजसूय यज्ञ किया जिससे उन्हें चन्द्रलोक प्राप्त हुआ। ६ वरुण के राजसूय करने से उन्हें वरुणलोक में निर्भय वास मिला। हरिचन्दन के राजसूय करने से वह पृथ्वी पर विजयी बने। ७ हमारी यह (यज्ञ) करने की इच्छा है। तुम दोनों भाई विचार करके हमें बताओ। भरत ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, हे नृपश्रेष्ठ! आप इस यज्ञ के योग्य हैं। ८ इसमें केवल एक ही दोष है। राजाओं को इससे बहुत त्रास मिलेगा। प्रजा के लोग बहुत कष्ट पायेंगे। युद्ध में अनेक वीर मारे जायेंगे। ९

तुम्भे अट समराज्यपालक ।
महीपति माने तुम्भ बाळक ॥
तांकु बहु अपघात होइब ।
एहा शुणिण हसिले राघब ॥ १० ॥
चन्द्र नक्षत्रचय नाश कले ।
बरुणहिँ बहु जीब माइले ॥
हरिचन्दन करि एहि जाग ।
बहु नृप माइले महाभाग ॥ ११ ॥
धाता प्राये त तुम्भे महीपाळ ।
नाश करिब केमन्ते भूपाळ ।
शुणि श्रीराम हरष होइले ।
बहु प्रशंसा करि आज्ञा देले ॥ १२ ॥
तुम्भे जथार्थ कहिल आम्भंकु ।
एहि कारणे पुछिलु तुम्भंकु ॥
एहि समये सुमित्रांक सुत ।
कर जोड़ि जणाइले त्वरित ॥ १३ ॥
देब अश्वमेध जाग उत्तम ।
शक्र करि लभिले बहु काम ॥
शक्र बृत्रासुरकु मारिथिले ।
अश्वमेध करि पाप मुंचिले ॥ १४ ॥

आप समानता से राज्य का पालन करनेवाले हैं। राजे-महाराजे आपके पुत्र हैं, उन्हें बहुत आत्मघात होगा। यह सुनकर राघव मुस्कराने लगे। १० चन्द्र ने नक्षत्र-समूह का नाश किया। वरुण ने भी बहुत जीव मारे। महा भाग्यवान हरिचन्दन ने इस यज्ञ को करके बहुत से राजाओं का वध किया। ११ आप तो विधाता के समान पृथ्वी का पालन करनेवाले हैं। हे भूपाल ! आप उनका नाश कैसे करेंगे। यह सुनकर श्रीराम ने प्रसन्न होकर उनकी बहुत प्रशंसा की और कहा। १२ तुमने हमसे यथार्थ ही कहा। इसी कारण से मैंने तुमसे पूछा था। इसी समय सुमित्रानन्दन लक्ष्मण ने शीघ्रता से हाथ जोड़कर निवेदन किया। १३ हे देव ! अश्वमेध यज्ञ उत्तम है। इन्द्र ने इसे करके अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति की। इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था। वह अश्वमेध करके पाप से मुक्त

राम शुणिण होइले प्रमोद ।
पाद कमळे बिशि षट्पद ॥ १५ ॥

एकोनत्रिंश छान्द

राग–गुज्जरी पड़िताळ

शुण हे सुजन जने श्रीराम चरित ।
श्रबणे शुणन्ते हरे अशेष दुरित ॥
जहुँ बढ़िला बिचार ।
अश्वमेध करिबारे होइला निश्चर ॥ १ ॥
बशिष्ठ सहिते अणाइले मंत्रिगण ।
अश्वमेध करिबाकु शुभ दिन गण ॥
नदी गोमतीर कूळे ।
नैमिषारण्यरे ऋषि मानंकर मेळे ॥
आज्ञा देले भ्रतकु सामग्रीमान चाळ ।
नैमिषा अरण्ये नदी गोमतीर कूळ ॥
तहिँ कर जागशाळा ।
समस्त मातांकु घेनि जिबे कउशल्या ॥ २ ॥
सुबर्ण सीता गोटिए उज कराइब ।
समस्त राजामानंक पुर भिआइब ॥

हो गए। १४ यह सुनकर श्रीराम प्रसन्न हो गये। श्रीराम के चरणकमलों का विशि भ्रमर है। १५

छान्द—२९

राग–गुर्ज्जरी

हे सुजन ! श्रीराम का चरित्र सुनो। इसे सुनने से सभी पाप क्षय हो जाते हैं। विचार-विमर्श करने के पश्चात् अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया गया। १ वशिष्ठ के सहित मंत्रियों को बुलाकर अश्वमेध करने के लिए शुभ मुहूर्त निकालने के लिए कहा गया। गोमती नदी के किनारे ऋषियों से संकुल नैमिषारण्य में भरत को सामग्री भेजने की आज्ञा दी गई। उन्होंने कहा कि नैमिषारण्य में गोमती नदी के तट पर यज्ञ-शाला का निर्माण करो। समस्त माताओं को लेकर कौशल्या जायेंगी। २ एक स्वर्ण की सीता का निर्माण करवा लेना। सभी

ऋषि मानंक आश्रम ।
ब्राह्मण मानंक पुर करिब उत्तम ।। ३ ।।
तिळ तण्डुळ सुबर्ण रजत भूषण ।
रथ गज सहितरे घेनि धेनुगण ।।
समस्त सामग्री निअ ।
मातामानंकु घेनिण आग होइ जाअ ।। ४ ।।
समस्त राजा मानंकु दिअ निमंत्रण ।
सुग्रीब सहितरे आसन्तु बिभीषण ।।
आज्ञा देले नृपबर ।
बेनि भाइ आज्ञा पाइ हेले ततपर ।।
समस्त देशमानंकु दूत बरगिले ।
आज्ञा पाइण समस्त नृपति अइले ।।
सुग्रीबर बिभीषण ।
ए माने अइले संगे घेनि निजगण ।। ५ ।।
समस्त ऋषिमाने शिष्यमानंकु घेनि ।
प्रबेश होइले तांकु घेनि कुम्भजोनि ।।
अश्व घेनिण लक्ष्मण ।
सेनामानंकु घेनिण कलेक गमन ।। ६ ।।
समस्त सामग्री भ्रत चळाइण देले ।
जननी मानंकु घेनि आगे बिजे कले ।।

राजाओं के प्रकोष्ठ बनवा लेना । ऋषियों के आश्रम तथा ब्राह्मणों के रहने के स्थान बनवा लेना । ३ तिल, चावल, स्वर्ण, चाँदी के आभूषण, रथ तथा हाथियों के साथ गउएँ और सारी सामग्री लेकर माताओं को लेकर आगे से पहुँचो । ४ सभी राजाओं को निमंत्रण दे दो । सुग्रीव के साथ विभीषण भी आवें । नृपश्रेष्ठ ने ऐसी आज्ञा दी । दोनों भाई आज्ञा पाते ही तत्पर हो गये । उन्होंने सभी देशों में दूत भेजे । आज्ञा पाकर सभी राजागण आ गये । सुग्रीव तथा विभीषण भी अपने गणों के साथ आ गये । ५ समस्त ऋषियों और शिष्यों को लेकर अगस्ति ऋषि आ पहुँचे । लक्ष्मण सेना के साथ अश्व को लेकर चल पड़े । ६ भरत ने सारी सामग्री भिजवा दी । वह माताओं को लेकर आगे चल पड़े । उन्होंने बहुत वासस्थान बनवाये । रघुवीर श्रीराम चतुरंगिनी सेना लेकर

निर्माणिले बहु पुर ।
चतुरंग बळ घेनि बिजे रघुबीर ।। ७ ।।
समस्ते गोमती तीरे हेले जाइँ खण्ड ।
अरण्य उदेगिरि कि राम मारतण्ड ।।
बहुत ब्राह्मण माने ।
प्रबेश होइले जागशाळ सन्निधाने ।। ८ ।।
जागशाळा देखि राम बहु प्रशंसिले ।
सम्बत्सर परिजन्ते जाग आरम्भिले ।।
बहु हेम देले दान ।
जे जाहा मागन्ति ताहा दिअन्ति बहन ।। ९ ।।
लब-कुशकु कहन्ति बालमिक ऋषि ।
तुम्भे राजा जागशाळा सन्निधिरे बसि ।।
गाइब ए रामायण ।
बीणा बाणी ताळ लय संगीत गायन ।। १० ।।
राजा शुणि गुआइले छामुरे गाइब ।
बहुत द्रव्य जाचिले लोभ न करिब ।।
राजा जेबे पचारिब ।
आम्भ शिष्य बोलि तांक छामुरे कहिब ।। ११ ।।
गुरुंक मुखरु शुणि एहा रामसुत ।
समस्त स्थाने गाइले रामायण गीत ।।

चल पड़े । ७ सभी लोग जाकर गोमती के तट पर इकट्ठे हुए। अरण्य रूपी उदयाचल पर श्रीराम सूर्य के समान लग रहे थे। यज्ञशाला के निकट बहुत से ब्राह्मण प्रविष्ट हुए । ८ यज्ञशाला को देखकर श्रीराम ने बहुत प्रशंसा की। उन्हें यज्ञ आरम्भ करके एक वर्ष व्यतीत हो गया। उन्होंने बहुत सा स्वर्णदान किया। जो कोई जो भी माँगता था श्रीराम उसे वही तुरन्त दे देते थे । ९ वाल्मीकि महर्षि ने लव तथा कुश से कहा कि तुम राजा की यज्ञशाला के निकट बैठकर रामायण-गान करना। वीणाबाणी ताल और लय के साथ संगीत का गायन करना । १० राजा यदि तुमसे गवावें तो उनके समक्ष गा देना। बहुत द्रव्य माँगने का लोभ न करना। यदि राजा पूछे तो उनसे बता देना कि हम वाल्मीकि के शिष्य हैं। ११ श्रीराम के पुत्रों ने गुरुदेव के मुख से ऐसी वाणी सुन कर सभी स्थानों में रामायण-गीत गाये। लोग सुनकर चकित रह गये।

लोके शुणिण चकित ।
राजा शुणिण छामुकु राइले त्वरित ।। १२ ।।
समस्त ऋषि पण्डित गुणिकि अनाइँ ।
गीतरे कुशळ ताळमानंकु बसाइ ।।
राजा माने बसिथिले ।
लब-कुश रामायण सरागे गाइले ।।
राम पराये ए बेनि कुमर दिशन्ति ।
सभाजने चाहिँ मने मने बिचारन्ति ।।
काहुँ ए ग्रन्थ अइला ।
एमन्त गायन मान शुणिबा न थिला ।। १३ ।।
प्रथम दिन राम कोड़िए सर्ग शुणि ।
अठर सहस्र सुबर्ण त देले आणि ।।
ताहा ग्रहण न कले ।
आम्भे एहा बने किस करिबु बोइले ।। १४ ।।
निर्लोभ देखिण राम सन्तोष होइले ।
के तुम्भर पिता काहुँ अइल बोइले ।।
तुम्भे केउँ ऋषि शिष्य ।
मन मोहुअछि तुम्भ बाळ जति बेश ।। १५ ।।
कुश जणाइले आम्भ गुरु बालमिक ।
शुणिअछु मातांकर पिअर जनक ।।

सुनते ही राजा ने उन्हें शीघ्र ही बुला लिया। १२ सभी ऋषियों, पंडितों तथा गुणीजनों की ओर देखकर गीतों में कुशल तालों को निवेशित करके लव और कुश ने राग के साथ रामायण का गान किया। जो राजा लोग बैठे थे, वह सभाजनों की ओर देखकर मन में विचार करने लगे कि यह दोनों कुमार श्रीराम के समान दिखाई दे रहे हैं। यह ग्रन्थ कहाँ से आया? इस प्रकार का गान तो हमने नहीं सुना था। १३ पहले दिन श्रीराम ने बीस सर्ग सुने। उन्होंने लाकर अठारह हज़ार स्वर्णमुद्राएँ दीं। उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया। वह कहने लगे कि हम वन में इसका क्या करेंगे? १४ उन्हें निर्लोभी देखकर श्रीराम सन्तुष्ट हो गये। उन्होंने कहा कि तुम्हारे पिता कौन हैं और तुम कहाँ से आये हो? तुम लोग किस ऋषि के शिष्य हो? तुम्हारा बाल-यती वेश हमारा मन मोहित कर रहा है। १५ कुश ने कहा कि

सात काण्ड रामायण ।
बालमीकि ऋषि करि अछन्ति बखाण ॥ १६ ॥
राम आज्ञा देले आज एहिठारे थिब ।
कालि शुणिबा छामुरे समस्त गाइब ॥
एते कहि रावणारि ।
सभा भांगि जागशाळारे बिजय करि ॥ १७ ॥
आर दिन नित्यकर्म सारि रघुबीर ।
सभा करि छामुरे गुआइले कुमर ॥
सर्बे साधु साधु कले ।
बिशि बोले शरधारे आद्यरु गाइले ॥ १८ ॥

त्रिश छान्द—लब-कुशंक रामायण गान

राग–बराड़ि

ऋष्यशृंग चरु देबा, राम जनम होइबा,
कउशिक मागि घेनि जिबा । पथे ताड़की मारिबा,
मारीच उड़ाइ देबा, जाग रखि अभय करिबा से ।
सभाजन । शुणन्ति आनन्द होइ मन । सबुरि अश्रुपतन,
स्फुरे तनु रुहमान, पुणि तांक बिचित्र गायन से ॥ १ ॥

हमारे गुरु महर्षि वाल्मीकि हैं । हमने सुना है कि हमारी माताजी के पिता जनक हैं । महर्षि वाल्मीकि ने सात काण्ड रामायण का वर्णन किया है । १६ श्रीराम ने कहा कि आज इसी स्थान पर रुकना । अब कल सुनेंगे । हमारे सामने सम्पूर्ण रामायण का गान करना । इतना कहकर रावण के शत्रु श्रीराम सभा को भंग करके यज्ञशाला में जा पहुँचे । १७ दूसरे दिन नित्यकर्म समाप्त करके रघुवीर श्रीराम ने सभा करके उनके समक्ष बालकों को गवाया । सभी लोग साधु-साधु करने लगे । विशि कहता है कि उन्होंने प्रारम्भ से श्रद्धा के साथ गाया । १८

छान्द ३०—लव-कुश द्वारा रामायण-गान

राग–बरार

शृंगी ऋषि का चरु प्रदान करना, श्रीराम का जन्म, विश्वामित्र का श्रीराम-लक्ष्मण को माँगकर ले जाना । मार्ग मे ताड़का का वध करना, मारीच को उड़ा देना, यज्ञ करके अभयदान देना, सभी सभाजन प्रसन्न मन से सुन रहे थे । उनके विचित्र गायन से सबसे अश्रु झर रहे थे । शरीर में

तारि गउतम नारी, जाह्नबी होइले पारि,
मिथिळारे कले धनु भंग । जानकी बिभा होइबा,
बाहुड़ा बिजे करिबा, पथे भेटि पर्शुराम संग से ॥ २ ॥
चूर्ण करि तांक गर्ब, अजोध्या प्रबेश सर्ब,
पिता सत्य रखि बने गले । करिण बिराध नाश,
बुलिण तेर बरष, पंचबटीरे आश्रम कले से ॥ ३ ॥
छेंदि असुरी श्रबण, खर दूषण मरण,
मायामृग देखाइ राबण । कलाक सीता हरण,
जाटायु हेला कारण सुग्रीब संगरे मित्रपण से ॥ ४ ॥
सुग्रीबे परीक्षा देबा, सपतशाळा छेदिबा,
बालि मारि सुग्रीब स्थापिबा । हनु समुद्र डेइँबा,
लंकारे सीता खोजिबा, लंका पोड़ि अक्षय मारिबा से ॥ ५ ॥
बाहुड़ि देले बारता, सुग्रीब राम कुपिता,
सागरे सेतु बन्धन कले । ॠक्ष कपि चालि गले,
सुबळ गिरि रहिले, लंकागड़ बेढ़िण जुझिले से ॥ ६ ॥
होइला अनेक रण, माइले असुरगण,
पुत्र भ्रात सहिते राबण । शाढ़ी देइ बिभीषण,
बाहुड़िण रामराण, अजोध्यारे कले राजपण से ॥ ७ ॥

रोमांच हो रहा था । १ गौतम पत्नी का उद्धार, गंगा का पार होना, मिथिला में धनुष तोड़ना, सीता का पाणिग्रहण, बारात की वापसी तथा परशुराम से भेंट । २ उनका गर्व चूर करके अयोध्या में प्रवेश, पिता की आज्ञा से वनगमन, विराध का वध करके तेरह वर्ष घूमकर पंचवटी में आश्रम बनाना । ३ राक्षसी शूर्पणखा का नाक काटना, खर-दूषण की मृत्यु, मायामृग के छल से रावण द्वारा सीता का हरण, जटायु की मृत्यु तथा सुग्रीव के साथ मित्रता । ४ सुग्रीव के सामने परीक्षा देना, सप्तशाल का वेधन, बालि को मारकर सुग्रीव को राजा बनाना, हनुमान का समुद्र-उल्लंघन, लंका में सीता की खोज, लंका को जलाकर अक्षयकुमार को मारना । ५ लौटकर सीता के समाचार देना, सुग्रीव और श्रीराम का कोप, सागर में सेतुबन्धन, रीछ और वानरों का जाना, सुबेल पर्वत पर पड़ाव तथा लंका दुर्ग को घेरकर युद्ध करना । ६ अत्यधिक युद्ध करके राक्षसों को मारना, पुत्र-भ्राता समेत रावण का वध, विभीषण का राज्याभिषेक तथा महाराजा राम का लौटकर अयोध्या में राज्य करना । ७ जनमुख

जनमुखे अपजश, शुणि सीतांकु निवास,
बालमीक आश्रमर पाश । लबण अर्थे बिद्वेष,
शत्रुघन परबेश, से निशि जनम लब-कुश से ॥ ८ ॥
शुद्रतपीकि मारिबा, अश्वमेध त करिबा,
आपणा चरित गुआइबा । लब-कुश त पाइबा,
बइदेही अणाइँबा, देबी पृथ्वीरे गोप्य होइबा से ॥ ९ ॥
महीकि करन्ते क्रोध, बोधिले सर्ब बिबुध,
काळदूते आसि कला भेद । लक्ष्मणंक अपराध करन्ते,
न कले बध, तेजन्ते से गले बिष्णु पद से ॥ १० ॥
पूर्ब पश्चिम उत्तर, दक्षिण देश आबर,
पुत्रमानंकु कले नृपति । अजोध्यारे जेते नर,
बृक्ष पाषाण आबर, बइकुण्ठ नेले रघुपति से ॥ ११ ॥
एमन्त रामचरित, गाइ लब-कुश गीत,
सभाजने शुणिण चकित । जा नामे हरे दुरित,
अद्‌भुत एहि चरित, दीन बिशि घोषे अबिरत से ॥ १२ ॥

से अपयश सुनकर वालमीकि-आश्रम में सीता का निर्वासन, लवण से विद्वेष करने के लिए शत्रुघ्न का प्रवेश और उसी रात में लव-कुश का जन्म । ८ शूद्र तपस्वी का वध, अश्वमेध का करना तथा अपना चरित्र गवाना, लव-कुश की प्राप्ति, सीता को बुलवाना, देवी सीता का पाताल-प्रवेश । ९ पृथ्वी पर क्रोध करना, सभी देवताओं को प्रबोध प्रदान करना, कालदूत का आकर भेद करना, लक्ष्मण के अपराध करने पर उनका वध न करना, उनका त्याग कर देने से उनका विष्णुलोक-गमन । १० पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के देशों में पुत्रों को राजा बनाना । सम्पूर्ण अयोध्या के नर-नारियों, वृक्ष, पाषाण आदि सबको रघुपति श्रीराम का वैकुण्ठ ले जाना । ११ इस प्रकार लव-कुश ने श्रीराम का चरित्र गीतों में गान किया । सभी सभाजन सुनकर चकित रह गये । जिसका नाम पापों का विनाश कर देता है, उसी श्रीराम के अद्‌भुत चरित्र को दीन विशि निरन्तर स्मरण किया करता है । १२

एकत्रिंश छान्द—सीतांकर अजोध्या आगमन

राग–बिचित्र देशाक्ष

लव - कुशंकर शोभा देखिण राम ।
दिशुछन्ति बेनि सुते द्वितीय काम ।।
कषाबास परिधान कन्धे पइता ।
दोसड़ा कृष्णअजिन द्वादश चिता ।। १ ।।
मण्डि अछन्ति गळारे रुद्राक्ष माळ ।
नेत्र बेनि बाहा दुइ दिशे बिशाळ ।।
रामायण शुणि रामचन्द्र हरष ।
बिस्तारिले बेनि सुते पितांक जश ।। २ ।।
पाशकु आणि ताहांकु कोळे धइले ।
अति स्नेहरे मूर्द्धनी आघ्राण कले ।। ३ ।।
हृदरे प्रबेश हेला शोक बिबेक ।
देखु अछन्ति सभारे सकळ लोक ।। ४ ।।
आज्ञा देले ए बेनि आम्भर कुमर ।
रहि अछन्ति जानकी ऋषिक पुर ।। ५ ।।
एते कहि शत्रुघनकु अनाइले ।
कर जोड़िण सेहि समस्त कहिले ।। ६ ।।

छान्द ३१—सीता का अयोध्या-आगमन

राग–विचित्रदेशाक्ष

लव-कुश की शोभा देखकर श्रीराम को ऐसा दिखा जैसे यह दोनों बालक दूसरे कामदेव ही हों। वह काषाय वस्त्र पहने हुए थे। कन्धे पर यज्ञोपवीत था। बाहु के नीचे काले हिरन का चर्म तथा उनके बारह स्थानों पर तिलक लगा हुआ था। १ उनके गले में रुद्राक्ष की मालाएँ सुशोभित थीं। उनके दोनो नेत्र और दोनों भुजाएँ विशाल दिखाई दे रही थीं। रामायण सुनकर श्रीरामचन्द्र प्रसन्न थे। दोनों पुत्रों ने पिता के यश का विस्तार किया था। २ श्रीराम ने उन्हें अपने निकट लेकर गोद में उठा लिया। उन्होंने अत्यन्त स्नेह से उनके सिर को सूँघा। ३ सभा के सभी लोगों ने देखा कि श्रीराम के हृदय में शोक और विवेक (एक साथ) प्रादुर्भूत हुआ। ४ उन्होंने कहा कि यह दोनों पुत्र हमारे हैं। जानकी ऋषि के आश्रम में रह रही है। ५ ऐसा कहकर उन्होंने

शुणिण आनन्द हेले भ्रत लक्ष्मण ।
मंत्रीगण सहिते सुग्री बिभीषण ।। ७ ।।
कुमरंकु चाहिँ बोलन्ति सर्ब नृप ।
देख ए बेनि कुमर श्री रामंक रूप ।। ८ ।।
श्रीरामर कोळुँ नेइ भ्रत लक्ष्मण ।
आलिंगन करि शिरे देले आघ्राण ।। ९ ।।
सुग्री ब्रिभीषण आलिंगन त कले ।
आउ राजामाने शिरे करकु देले ।। १० ।।
भ्रत बिभीषणकु जे ठारिण देले ।
से बेनि नृपति तांक मन जाणिले ।। ११ ।।
सुग्री बिभीषण जोड़िण बेनि कर ।
भय तेजि जणाइले राम छामुर ।। १२ ।।
ठाकुराणींकर देब अछि कि दोष ।
किपाँ तांकु आज्ञा हेला बने निबास ।। १३ ।।
लंकारे त देखिअछ परीक्षा देले ।
एबे प्रभुंकु केबण अप्राध कले ।। १४ ।।
एबे सेहि अपराध आम्भंकु देब ।
ऋषिक मठरु घेनाइण आसिब ।। १५ ।।

शत्रुघ्न की ओर देखा । हाथ जोड़कर यही बात सबने कही । ६ यह सुनकर भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण तथा मंत्रियों के सहित सुग्रीव और विभीषण प्रसन्न हो गये । ७ सभी राजा लोग कुमारों की ओर देखकर बोले कि देखो यह दोनों कुमार श्रीराम के ही रूप हैं । ८ श्रीराम की गोद से उन्हें लेकर भरत और लक्ष्मण ने उनका आलिंगन करके उनके सिर को सूंघा । ९ सुग्रीव और विभीषण ने भी उनका आलिंगन किया । अन्य राजाओं ने उनके सिर पर हाथ रखा । १० भरत ने विभीषण को संकेत किया । उन दोनों राजाओं ने उनके मन को जान लिया । ११ सुग्रीव और विभीषण ने दोनों हाथ जोड़कर भय को त्यागकर श्रीराम के समक्ष कहा । १२ हे देव ! महारानी का क्या दोष है ? उनको वन में निवास करने की आज्ञा किसलिए हुई ? १३ आपने लंका में तो देखा था कि उन्होंने परीक्षा दी थी । अब प्रभु का कौन सा अपराध कर दिया है ? १४ ऋषि के मठ से बुलाये जाने पर अब सीता ही हमें दोष देंगी । १५ श्रीराम ने उनके वचनों को सुनकर कहा कि

शुणिण श्रीराम ताहांकर बचन।
बोलन्ति जे निन्दा कले अजोध्या जन ।। १६ ।।
तुम्भर जणाइबारु सीता आसिबे।
केबळ से आउथरे परीक्षा देबे ।। १७ ।।
एमन्त कहिण अणाइले दुआरी।
आज्ञा देले श्रीमुखरे कोदण्डधारी ।। १८ ।।
बालमीक आश्रमकु त्वरिते जिबु।
आम्भ आज्ञा बोलिण ताहांकु कहिबु ।।
बोलिबु एमन्त आज्ञा देले नृपति।
सीतांकु घेनिण बिजे करिब जति ।। १९ ।।
आज्ञा पाइ पड़िहारी त्वरिते गला।
बालमीक आश्रमरे प्रबेश हेला ।। २० ।।
जनकसुताकु जे प्रबोधि कहिले।
रघुनाथ आज्ञा तुम्भे जिब बोइले ।। २१ ।।
आम्भर संगरे माए जागकु जिब।
आज्ञा देइण अछन्ति तुम्भरि धब ।। २२ ।।
देखिण राम तुम्भंकु हेबे हरष।
देखिण देबतामाने होइबे तोष ।। २३ ।।
एते कहि जानकींकु संगते घेनि।
बोले बिशि अबिळम्बे बाहार मुनि ।। २४ ।।

अयोध्या के लोगों ने उनकी निन्दा की है। १६ तुम्हारे निवेदन पर सीता आयेगी। उसे केवल एक बार और परीक्षा देनी होगी। १७ ऐसा कहकर कोदंडधारी श्रीराम ने द्वारपाल को बुलाकर अपने श्रीमुख से आज्ञा दी। १८ तुम शीघ्र ही वाल्मीकि के आश्रम में जाकर हमारी आज्ञा उन्हें बता देना और ऋषि से कहना कि सीता को लेकर आपको अयोध्या जाने की आज्ञा महाराज ने दी है। १९ आज्ञा पाकर सन्देशवाहक वेग से जाकर वाल्मीकि के आश्रम में प्रविष्ट हुआ। २० जनकनन्दिनी को उसने प्रबोधित करते हुए कहा कि रघुनाथ जी ने आपको जाने की आज्ञा दी है। २१ हे माँ! आपके पति ने हमारे साथ यज्ञ में चलने की आज्ञा दी है। २२ श्रीराम आपको देखकर प्रसन्न होंगे। और देवता लोग भी देखकर सन्तुष्ट होंगे। २३ विशि कहता है कि इतना कहकर जानकी को साथ लेकर बिना विलम्ब किये महर्षि वाल्मीकि चल पड़े। २४

द्वात्रिंश छान्द—सीतांक पाताळ-प्रबेश

राग—चक्रकेळि बाणी

सीतांकु घेनिण मुनि प्रबेश ।
मही घेनि अइले कि भबेश ॥
आसन देइ राम पूजा कले ।
खण्डे दूरे जानकी उभा हेले ॥ १ ॥
करिछन्ति बेनि कर अंजळि ।
महीकि नुआइँछन्ति मउळि ॥
क्रोधे कोकनद देबी लपन ।
दिशु अछन्ति दहिला सुबर्ण ॥ २ ॥
बालमीकि बोलन्ति हे श्रीराम ।
काहा मुखुँ शुणि कल ए कर्म ॥
तुम्भे त पण्डित महा दयाळु ।
लोक बादकु होइल भयाळु ॥ ३ ॥
आम्भे जाणु तांकर नाहिँ दोष ।
कहिछन्ति पूर्बे दिब ओकस ॥
तुम्भ अन्तपुर आम्भ आश्रम ।
पूर्बु अटइ अभिन्न भो राम ॥ ४ ॥

छान्द ३२—सीता का पाताल-प्रवेश

राग—चक्रकेलि धुन

सीता को लेकर मुनि प्रविष्ट हुए । क्या पृथ्वी को लेकर शंकर ही आ गये ! श्रीराम ने आसन देकर उनकी पूजा की । जानकी थोड़ी दूर पर खड़ी हो गई । १ उन्होंने दोनों हाथ जोड़ रखे थे । पृथ्वी ने ही क्या सिर झुका दिया ? क्रोध से देवी सीता का मुख लाल कमल के समान हो गया । वह दग्ध स्वर्ण के समान दिखाई दे रहा था । २ वाल्मीकि बोले, हे श्रीराम ! किसके मुख से सुनकर आपने ऐसा कार्य किया ? आप तो ज्ञानी तथा अत्यन्त दयालु हैं । पर आप भी लोकापवाद से भयभीत हो गये । ३ हम जानते हैं कि उसका दोष नहीं है । यह पहले ही देवता कह चुके हैं । हमारा आश्रम ही तुम्हारा अन्तःपुर है । हे राम ! वह पूर्व की भाँति ही अभिन्न है । ४ यह दोनों आपके जुड़वाँ पुत्र हैं ।

ए तुम्भर बेनि सुत जामळ ।
बेद बेदान्तरे एहि कुशळ ।।
रामायणरे सम्पूर्ण शुणिब ।
भबिष्य बोलिण तुम्भे जाणिब ।। ५ ।।

राम बोलन्ति शुणिबाक ऋषि ।
आम्भे जाणु आम्भ सीता निद्दोंषी ।।
प्रत्यक्ष अग्नि भितरु अइले ।
निद्दोंषी बोलिण तात बोइले ।। ६ ।।
ऋक्ष राक्षस बानर देखिले ।
निद्दोंषीरे पिता तांकु लेखिले ।।
तेणु आम्भे कलु जे अंगीकार ।
अजोध्या जने कले अबिचार ।। ७ ।।
राबण पुरुँ सीतांकु आणिले लोभे ।
ताहांकु तेजि न पारिले ।।
एबे कलु अश्वमेध सम्पूर्ण ।
आसि अछन्ति बहुत राजन ।। ८ ।।
स्वदेशी बिदेशी जेते मनुष्य ।
आसिछन्ति नाना जाति बिशेष ।।
सेमाने परीक्षा थरे देखिबे ।
सीता निद्दोंषी बोलि प्रते जिबे ।। ९ ।।

यह वेद तथा वेदान्त में कुशल हैं । तुम रामायण में सब कुछ सुनना और भविष्य के विषय में ज्ञान प्राप्त करोगे । ५ श्रीराम ने कहा कि हे ऋषि वाल्मीकि ! सुनो ! हम जानते है कि हमारी सीता निर्दोष है । वह प्रत्यक्ष रूप से अग्नि के भीतर से आ गई । पिताजी ने भी उसे निर्दोषी बताया । ६ रीछ, वानर तथा राक्षसों ने देखा और पिता ने भी उसे निर्दोषी समझा । इसी से हमने अंगीकार किया था । अयोध्या के व्यक्तियों ने अविचार किया है । ७ रावण के घर से लोभ के कारण श्रीराम सीता को ले आये । उन्हें वह त्याग नहीं सके । इस समय मैंने अश्वमेध यज्ञ पूर्ण कर दिया है । बहुत से राजा लोग आये हैं । ८ स्वदेश के तथा विदेश के अनेक जातियों के लोग आये हुए हैं । वह लोग तुम्हारी परीक्षा एक बार पुनः देखेंगे । तब उन्हें विश्वास होगा कि सीता निर्दोष है । ९ तुम उनसे ऐसा ही कहना जिससे उनके मन में विश्वास हो जाए ।

तुम्भे तांकु एहि बाटे कहिब ।
जेमन्ते प्रतीति मने होइब ॥
ताहा शुणि बालमीकि उठिले ।
सीतांक छामुरे जाइँ कहिले ॥ १० ॥
शुणि देबी क्रोधरे प्रज्ज्वळित ।
शिर कम्पाइ कहन्ति ललित ॥
भुमिकि चाहिँ बोलन्ति गो मात ।
राम बिनु अन्यरे जेबे चित्त ॥ ११ ॥
तेबे मात मोते ठाब न देब ।
नोहिले मो पाइँ बिळ होइब ॥
आज्ञा पाइ बसुधा फाटि गले ।
सिंहासने सीतांकु बसाइले ॥ १२ ॥
घेनाइ रसातळकु चळिले ।
देखि राम नेत्रु नीर तेजिले ॥
चाहुँ चाहुँ भूमि हुए समान ।
देखि न देखिला प्राय लोचन ॥ १३ ॥
जान मात्र जिबा चाहिँ देखिले ।
अबश होइ चेतना हारिले ॥
बोलन्ति केणे गलुरे सुमुखि ।
भल करि न पारिलि मुँ देखि ॥ १४ ॥

यह सुनकर वाल्मीकि उठे और उन्होंने सीता से जाकर कहा । १० यह सुनते ही देवी सीता क्रोध से प्रज्वलित होकर सिर हिलाते हुए मधुर वचनों में बोली । माता सीता ने भूमि की ओर देखते हुए कहा, श्रीराम को छोड़कर यदि किसी अन्य व्यक्ति में मेरा चित्त लगा हो तो हे पृथ्वी माता ! मुझे स्थान न देना अन्यथा मेरे लिए गर्त बन जाए । आज्ञा पाते ही पृथ्वी फट गयी । भू-देवी ने सीता को सिंहासन में बैठा लिया और उन्हें लेकर रसातल को चल दी । यह देखकर श्रीराम के नेत्रों से अश्रु बहने लगे । देखते-देखते भूमि समतल हो गई । आँखों से देखकर भी ऐसा लग रहा था मानों देखा ही न हो । ११-१३ श्रीराम ने केवल सिंहासन को ही जाते देखा । वह अधीर होकर यह कहते हुए मूर्च्छित हो गये कि हे सुमुखि ! तुम कहाँ चली गयी ? मैं अच्छी तरह से तुम्हें देख भी न पाया । १४ मेरी स्त्री

अजोनि सम्भूता मोर बनिता ।
बिच्छेद कराइलुरे बिधाता ।।
एते बोलि पृथिबीकि चाहिँले ।
बोले बिशि क्रोधमन होइले ।। १५ ।।

त्रयस्त्रिंश छान्द

राग–शंकराभरण एकताळी

पद्मलोचन । प्रिया बदन । न देखि छन्न । कुपित मन ।। १ ।।
बोले महीरे । प्राण सहीरे । बइदेहीरे । नेलु काहिँरे ।। २ ।।
मोर कान्तारे । तोर सुतारे । मोते दिअरे । दण्ड्यनुहरे ।। ३ ।।
जेबे न देबु । रुष्ट करिबु । ओलटाइबि । शरे दहिबि ।। ४ ।।
रामर क्रोध । देखि बिबुध । घेनि सुरेश । मही प्रबेश ।। ५ ।।
आसि बिधाता । होइ बिनीता । कहे बारता । पृथिबी माता ।। ६ ।।
क्रोध संहर । कोप न कर । बैकुण्ठपुरी । गले सुन्दरी ।। ७ ।।
तुम्भर बामा । अनु उपमा । निकटे धब । तांकु देखिब ।। ८ ।।
कहे बज्रेश । शुण नरेश । नारी अदण्ड्य । तांकु न दण्ड ।। ९ ।।

अयोनिसम्भूता थी । अरे विधाता ! तूने हमसे वियोग करा दिया । ऐसा कहकर वह पृथ्वी की ओर देखने लगे । विशि कहता है कि उनका मन क्रोध से व्याप्त हो गया । १५

छान्द—३३

राग–शंकराभरण (एकताल)

कमलनयन श्रीराम प्रियतमा का मुख न देखकर मन में कुपित हो गये । १ उन्होंने पृथ्वी से कहा कि तुम मेरी प्राणसंगिनी वैदेही को कहाँ ले गयी ? २ तुम दण्ड से बचने के लिए मेरी पत्नी और अपनी पुत्री को मुझे दे दो । ३ यदि तुम न दोगी तो मैं क्रोध से तुम्हें उलटा दूँगा और बाण से जला डालूँगा । ४ श्रीराम का क्रोध देखकर देवता, इन्द्र, ब्रह्माजी को लेकर पृथ्वी माता वहाँ आ पहुँची और विनीत भाव से कहने लगी । ५-६ श्रीराम ! आप कुपित न होकर क्रोध का परित्याग करें । सुन्दरी सीता बैकुण्ठपुरी चली गयी । ७ आपकी स्त्री अनुपमेय है । उसे स्वामी के निकट ही आप देखेंगे । ८ इन्द्र ने कहा कि हे राजन् ! सुनो ! नारी दण्ड देने के योग्य नहीं है । अतः आप उसे दण्ड न दें । ९ यह सुनकर श्रीराम

शुणि हरष । तेजि बिरस । धाता कहिले । बोध होइले ।। १० ।।
लब कुशंकु । राइ पाशकु । कोळे धइले । हृष्ट होइले ।। ११ ।।
देब मेलाणि । समय जाणि । देबी प्रबेश । होइ हरष ।। १२ ।।
समस्त ऋषि । कल्याण भाषि । मठकु गले । मेलाणि हेले ।। १३ ।।
बानर ईश । सर्ब नरेश । राम देखिले । मेलाणि हेले ।। १४ ।।
बिभीषणंकु । राइ पाशकु । मेलाणि देले । से लंका गले ।। १५ ।।
बत्सर गला । जाग सरिला । बहुत धन । देलेक दान ।। १६ ।।
तिनि भ्रातंकु । माता मानंकु । मंत्री सहिते । पुत्र प्रोहिते ।। १७ ।।
बाहुड़ि बिजे । राजाधिराजे । अजोध्यापुरी । बिजयकरि ।। १८ ।।
हेम प्रतिमा । होइला बामा । नीति करन्ति । दिन हरन्ति ।। १९ ।।
प्रजा पाळक । निज बाळक । प्रति पाळन्ति । दुष्ट मारन्ति ।। २० ।।
न पाइ देश । पुत्र प्रबेश । तार प्रोहित । ऋषि बिहित ।। २१ ।।
राम जाणिले । पाछोटि गले । तांकु आणिले । लेख शुणिले ।। २२ ।।
बहुत धन । बहु बसन । बेभार कले । रामंकु देले ।। २३ ।।
बाजि शतक । गजबिशेष । आणिण थिले । रामकु देले ।। २४ ।।
केकय देश । देब नरेश । जणाउछन्ति । शुण नृपति ।। २५ ।।

की खिन्नता दूर हुई। ब्रह्मा ने उन्हें समझाया, जिससे वह शांत हो गये। १० लव-कुश को पास बुलाकर उन्हें गोद में लेकर वह सन्तुष्ट हो गये। ११ देवताओं की विदाई देखकर प्रसन्नता से भूदेवी भी चली गई। १२ सभी ऋषिमण्डल आशीर्वाद देते हुए विदा होकर आश्रम को चले गये। १३ वानरों के राजा सुग्रीव तथा समस्त राजागण श्रीराम के दर्शन करके बिदा हुए। १४ श्रीराम ने विभीषण को पास बुलाकर उन्हें बिदा दी और वह लका चले गये। १५ वर्ष बीत गया। यज्ञ समाप्त हो गई। श्रीराम ने बहुत धन दान किया। १६ तीनों भाइयों, माताओं, मंत्री तथा पुरीहितों के साथ राजाधिराज श्रीराम अयोध्यापुरी को वापस चल दिये। १७-१८ स्वर्णप्रतिमा उनकी स्त्री हो गई। नीति का सम्पादन करते हुए वह समय बिताने लगे। १९ प्रजापालक श्रीराम अपने बालक के समान प्रजा का पालन तथा दुष्टों का संहार करने लगे। २० देश न पाकर कैकयनरेश का पुत्र ऋषि तथा पुरोहित को लेकर वहाँ आ गया। २१ श्रीराम ने सुनते ही उसकी अगवानी की। उन्होंने उसे लाकर पत्र सुना। २२ उसने श्रीराम को प्रचुर धन तथा वस्त्र देकर उनका सम्मान किया। २३ सौ घोड़े तथा विशेष प्रकार के हाथी, जो वह अपने साथ लाये थे, वह उन्होंने श्रीराम को प्रदान किये। २४ उन्होंने श्रीराम से कहा

सिन्धु नदीर । बेनि कूळर । बहुत देश । अछि बिशेष ॥ २६ ॥
तृतीय कोटि । गन्धर्ब घोटि । तहिँ अछन्ति । राज्य करन्ति ॥ २७ ॥
तांकु संहर । हे नृपबर । राज्य तुम्भर । हेउ बिस्तार ॥ २८ ॥
भ्रतकु पेष । नोहिले आस । साहा होइबा । तांकु मारिबा ॥ २९ ॥
मामुँ बचन । शुणि राजन । हृष्ट होइले । सेहु बोइले ॥ ३० ॥
भ्रतकु पाश । राइ नरेश । सबु कहिले । जाअ बोइले ॥ ३१ ॥
गन्धर्ब नाश । नदीर पाश । तहिँरे देश । बसाइ आस ॥ ३२ ॥
कुमर बेनि । संगरे घेनि । से बेनि देश । कर नरेश ॥ ३३ ॥
श्रीराम बाणी । भरत शुणि । पादे पड़िले । मेलाणि हेले ॥ ३४ ॥
सैन्य सहिते । घेनि प्रोहिते । बाहार हुए । दिग बिजये ॥ ३५ ॥
दश दिबसे । हेले से देशे । गन्धर्ब बळ । संगरे गोळ ॥ ३६ ॥
साहा मातुळ । घेनिण बळ । जुद्ध होइला । नाहिं देखिला ॥ ३७ ॥
पड़ि शोणित । हेला सरित । शब बहुत । कबन्ध नृत्य ॥ ३८ ॥
काळदण्डरे । खण्ड खण्डरे । मले गन्धर्बे । रणरे सर्बे ॥ ३९ ॥
भ्रत हातरे । दण्ड साथरे । मिले त्रिकोटि । भुमिरे लोटि ॥ ४० ॥

कि हे राजन् ! कैकय नरेश ने आपको समाचार भेजा है, उसे आप सुनें । २५ सिन्धु नदी के दोनों तटों पर विशेष प्रकार का बहुत बड़ा प्रदेश है । २६ तीन करोड़ गन्धर्व वहाँ पर फैलकर राज्य कर रहे हैं । २७ हे नृपश्रेष्ठ ! उनका संहार करके आप अपने राज्य का विस्तार करें । २८ या तो भरत को भेजिये अथवा आप स्वयं पधारें । सहायता पाकर उनका संहार करेंगे । २९ मामा के वचनों को सुनकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की । ३० महाराज ने भरत को पास बुलाकर सब कुछ बताकर उन्हें साथ जाने के लिए कहा । ३१ तुम गन्धर्वों का विनाश करके नदी के तटवर्ती प्रदेश को बसाकर आ जाना । ३२ दोनों कुमारों को अपने साथ ले जाकर उन्हें उन दोनों देशों का राजा बना दो । ३३ भरत ने श्रीराम के वचन सुनकर उनके चरणों में प्रणाम करके विदा ली । ३४ वह पुरोहित के साथ सेना लेकर दिग्विजय हेतु निकल पड़े । ३५ दस दिनों में वह उस प्रदेश में पहुँच गये । उन्होंने गन्धर्वों की सेना के साथ युद्ध किया । ३६ दल-बल के साथ मामा ने सहायता की । बिना किसी को देखे युद्ध होने लगा । ३७ रक्त के गिरने से वहाँ नदी बन गयी । बहुत से मृत शरीर वहाँ थे और कबन्ध नृत्य कर रहे थे । ३८ कालदण्ड से खण्ड-खण्ड होकर युद्ध में सारे गन्धर्व मारे गये । ३९ भरत के हाथों से दण्डित होकर तीन करोड़ गन्धर्व पृथ्वी पर लोटकर भरत से मिले । ४० उन दोनों देशों में एक

से बेनि देशे । रहि बरषे । पुत्र तक्षक । कले रक्षक ॥ ४१ ॥
सान कुमार । नाम पुष्कर । बेनि देशरे । बेनि कुमरे ॥ ४२ ॥
हेले नृपति । भुञ्जे बिभुति । राजन श्रेष्ठ । माइले दुष्ट ॥ ४३ ॥
कैकेयी सुत । रखिण सुत । बाहुड़ि आसे । अजोध्या बासे ॥ ४४ ॥
दर्शन कले । बहु कहिले । शुणि हरष । राम नरेश ॥ ४५ ॥
रामचरण । कञ्ज अरुण । बिशि शरण । भबुँ तरण ॥ ४६ ॥

चतुस्त्रिंश छान्द—लक्ष्मण बेनि पुत्रंक राज्याभिषेक

राग—मंगळगुर्ज्जरी

राम आज्ञा देले आहे शुण सउमित्ते ।
महाबळिष्ठ अटन्ति तुम्भ बेनि पुत्ते ॥ १ ॥
उत्तम देश खोजिले करिबा राजन ।
से देश खोजि छामुरे जणाअ बहन ॥ २ ॥
शुणि भ्रत जणाइले शिरे कर देइ ।
बेनि देश अछि ताहा शुण नृप साइँ ॥ ३ ॥
एक राज्यर नाम अटइ काळुपथ ।
से देश नेवाकु होइ अछि मनोरथ ॥ ४ ॥

वर्ष रहकर अपने पुत्र तक्षक तथा पुष्कर नाम वाले छोटे राजकुमार को उन दोनों देशों का रक्षक बना दिया । ४१-४२ वह दोनों श्रेष्ठ राजा बनकर दुष्टों का संहार करके वैभव का भोग करने लगे । ४३ कैकेयी-नन्दन भरत अपने पुत्रों को वहाँ स्थापित करके अयोध्यावास के लिए लौट आये । ४४ उन्होंने दर्शन करके श्रीराम के साथ वृत्तान्त कह सुनाया, जिसे सुनकर महाराज श्रीराम बहुत प्रसन्न हुए । ४५ संसार के तारनेवाले श्रीराम के अरुण-कमल-चरण विशि के शरणस्थल हैं । ४६

छान्द ३४—लक्ष्मण के दोनों पुत्रों का राज्याभिषेक

राग—मंगलगुर्ज्जरी

श्रीराम ने कहा, हे सौमित्र ! सुनो ! तुम्हारे दोनों पुत्र अत्यन्त बलवान हैं । १ उत्तम प्रदेश खोजकर उन्हें राजा बनाएँगे । तुम वह प्रदेश खोजकर हमसे शीघ्र ही बताओ । २ यह सुनकर भरत ने हाथों को शिर से लगाते हुए कहा, हे राजेश्वर ! दो प्रदेश हैं । आप सुनिए । ३ एक राज्य का नाम कालूपथ है । उस देश को लेने की इच्छा हुई है । ४

लक्ष्मणंक ज्येष्ठ पुत्र अंगद कुमर ।
से देशरे ताहांकु करिबा नृपबर ॥ ५ ॥
चन्द्रकान्त बोलिण अछइ जेउँ देश ।
से देशरे चन्द्रध्वज होइब नरेश ॥ ६ ॥
शुणि राम आज्ञा देले एहि रूपे कर ।
शुणिण भरत जे होइले ततपर ॥ ७ ॥
लक्ष्मण सहिते बेनि पुत्र संगे घेनि ।
बेनि भाइ आरोहिण कले रथ बेनि ॥ ८ ॥
चतुरंग बळ तांक सहितरे गले ।
जेउँ रूपे रामचन्द्र आज्ञा देइ थिले ॥ ९ ॥
से बेनि कटके जाइ हेले परबेश ।
बहु जुद्ध कले आसि से देश नरेश ॥ १० ॥
संग्रामरे से बेनि नृपति हेले हत ।
से देशर राजा कले लक्ष्मणंक सुत ॥ ११ ॥
नारद से अंगदकु कले अभिषेक ।
चन्द्रकान्त देशे चन्द्रध्वज जे पाळक ॥ १२ ॥
भुमि जय करि तहिँ बरषे रहिले ।
बाहुड़िण अजोध्यारे प्रबेश होइले ॥ १३ ॥
रामंकु दर्शन करि समस्त कहिले ।
शुणिण राघब बहु हरष होइले ॥ १४ ॥

लक्ष्मण के ज्येष्ठ पुत्र अंगद कुमार को उस देश का श्रेष्ठ राजा बनाएँगे । ५ चन्द्रकान्त नाम का जो प्रदेश है उसका राजा चन्द्रध्वज होगा । ६ सुनते ही श्रीराम ने आज्ञा दी कि ऐसा ही करो । यह सुनकर भरत उस कार्य में जुट गये । ७ लक्ष्मण के सहित दोनों पुत्रों को लेकर वह दोनों भाई दो रथों पर आरूढ़ हुए । ८ श्रीरामचन्द्र ने जैसी आज्ञा दी थी उसी के अनुसार चतुरंगिनी सेना उनके साथ गई । ९ वह उन दोनों देशों में जा पहुँचे । उन दोनों राजाओं ने आकर बहुत युद्ध किया । १० संग्राम में वह दोनों राजा मारे गये और लक्ष्मण के पुत्रों को वहाँ का राजा बना दिया । ११ नारद ने अंगद कुमार का अभिषेक किया और चन्द्रध्वज चन्द्रकान्त प्रदेश का पालक बना । १२ पृथ्वी को जीतकर वह वहाँ एक वर्ष तक रहे । फिर लौटकर अयोध्या जा पहुँचे । १३ उन्होंने श्रीराम के दर्शन करके सब समाचार बता दिये । यह सुनकर राघव बहुत प्रसन्न हुए । १४ नित्य-

नित्यकर्म सारि राम भितरकु गले ।
बोले बिशि समस्तेहेँ मेलाणि होइले ॥ १५ ॥

पञ्चत्रिंश छान्द—श्वान-संन्यासी सम्बाद

राग—मंगलगुर्ज्जरी

लक्ष्मण आसन्ते श्वान रहिछि द्वारे ।
मुर्द्धनी फाटि रुधिर गळइ खरे ॥ १ ॥
देखिण तांकु पुछन्ति सुमित्रा सुत ।
कि दोषे केहु माइला कह तु सत ॥ २ ॥
लक्ष्मणंकु बचनकु प्रते न गला ।
राजांक छामुरे मुँ कहिबि बोइला ॥ ३ ॥
बाहुड़ि लक्ष्मण सिंहद्वारे होइले ।
एकान्तरे श्रीराम छामुरे कहिले ॥ ४ ॥
सिंहद्वारे श्वान देब करे गुहारि ।
पुछिले से न कहिला हे राबणारि ॥ ५ ॥
बोइला राजांक जेबे पाइबि भेट ।
तेबे जणाइबि जेहु मोहर कष्ट ॥ ६ ॥
शुणिण श्रीराम शीघ्र उठि अइले ।
सिंहद्वारे श्वान आगे उभा होइले ॥ ७ ॥

कर्म करके श्रीराम भीतर चले गये । विशि कहता है कि इसके पश्चात् सभी विदा हो गये । १५

छान्द ३५—श्वान-संन्यासी-संवाद

राग—मंगलगुर्ज्जरी

लक्ष्मण के आते-आते एक श्वान द्वार पर खड़ा था । उसका शिर फट जाने से खून बह रहा था । १ उसे देखकर सुमित्रानन्दन ने उससे पूछा कि तुम सत्य बताओ कि किस दोष के कारण किसने तुम्हें मारा है ? २ लक्ष्मण के वचनों पर उसे विश्वास नहीं हुआ । तब उसने कहा कि मैं राजा के समक्ष निवेदित करूँगा । ३ लक्ष्मण सिंहद्वार पर लौट आये और उन्होंने एकान्त में श्रीराम से कहा । ४ हे देव ! सिंहद्वार पर एक कुत्ता गुहार कर रहा है । हे रावणारि ! पूछने पर भी उसने हमें नहीं बताया । ५ उसने कहा है कि जब मेरी भेंट राजा से होगी तब मैं अपना कष्ट उनसे कहूँगा । ६ यह सुनकर श्रीराम शीघ्र ही उठकर आ

श्रीरामंकु देखि श्वान कान्दि गड़इ ।
कचाड़ि होइण पुण पुण पड़इ ॥ ८ ॥
पचारन्ति राम तोते केहु माइला ।
कि दोष काहार कलु जाणि नोहिला ॥ ९ ॥
श्वान बोइला भो देब मुँ बुलुथाइँ ।
जाहा जाहिँ पाए ताहा ग्रास करइँ ॥ १० ॥
केबळ राजदाण्डरे थाए मुँ पड़ि ।
चोरे जे देखिले मोते पळान्ति छाड़ि ॥ ११ ॥
संन्यासी गोटिए देब बुलु जे थिला ।
हाबोड़िण मोते दण्ड घेनि पिटिला ॥ १२ ॥
मोह सुखे मुहिँ देब शोइ जे थिलि ।
आज्ञा हेउ संन्यासीर कि दोष कलि ॥ १३ ॥
आज्ञा देले भिक्षु घेनि आस जे बेगे ।
श्वानकु किपाइँ दण्डे पिटिले रागे ॥ १४ ॥
आज्ञा प्रमाणे भिक्षुकु घेनि अइले ।
किपाँ माइल एहाकु राम बोइले ॥ १५ ॥
भिक्षुक जणाए मठु हेलि बाहार ।
भिक्षा करि जाइ थिलि अनेक दूर ॥ १६ ॥

गये। वह सिंहद्वार पर आकर श्वान के समक्ष खड़े हो गये। ७ श्रीराम को देखकर कुत्ता रोते हुए गिर पड़ा और बार-बार पछाड़ें खाने लगा। ८ श्रीराम ने पूछा कि तुझे किसने मारा है ? तुमने किसका क्या अपराध किया, यह तो पता ही नहीं चला। ९ कुत्ते ने कहा, हे देव ! मैं घूमता फिरता हूँ। जहाँ जो कुछ मिलता है उसे खा लेता हूँ। १० मैं केवल राजमार्ग पर पड़ा रहता हूँ। मुझे देखकर चोर भाग जाते हैं। ११ हे देव ! वहाँ एक सन्यासी घूम रहा था। उसने हड़बड़ाकर मुझे डण्डा लेकर पीटा। १२ हे देव ! मैं सुखपूर्वक सो रहा था। अब आप ही बतायें कि मैने संन्यासी का क्या अपराध किया ? १३ श्रीराम ने संन्यासी को शीघ्र ही ले आने की आज्ञा दी। क्योंकि उसने क्रोध से डण्डा लेकर कुत्ते को पीटा था। १४ आज्ञा के अनुसार भिक्षुक को लाया गया। श्रीराम ने उससे कहा कि तुमने इसे किसलिए मारा है। १५ भिक्षुक ने कहा कि मैं मठ से निकलकर भिक्षाटन करने बहुत दूर चला गया। १६

से काळरे पथे एहु पड़ि जे थिला ।
पथे हाबोड़न्ते मोर क्रोध होइला ।। १७ ।।
क्षुधारे मुँ दण्डशरे कलि प्रहार ।
जाहा इच्छा ताहा कर कोदण्डधर ।। १८ ।।
शुणिण श्रीराम श्वानमुख चाहिँले ।
कि दण्ड एहाकु देबा बोलि बोइले ।। १९ ।।
श्वान जणाइला शिबआळरे देब ।
तहिँर चरचा करि निश्चिन्ते थिब ।। २० ।।
पूर्बे शिबआळे थिला मो अधिकार ।
कर्मरु हे पुत्र लागि हेलि कुकुर ।। २१ ।।
शुणिण श्रीराम हेउ बोलि बोइले ।
शाढ़ी देइ गज चढ़ाइ बुलाइले ।। २२ ।।
हसिण जने बोलन्ति शुण गुहारि ।
एते काळरे होइला भिक्षुक शिरी ।। २३ ।।
श्रीराम पाद जुगळ रंग कमळ ।
दीन बिशि मति तहिँ हेउ भ्रसळ ।। २४ ।।

उसी समय यह मार्ग में पड़ा था । मार्ग में लड़खड़ा जाने से मुझे क्रोध हो आया । १७ मैं भूखा था, इसलिए मैंने डण्डे से प्रहार कर दिया । हे कोदंडधारी ! अब आपकी जो इच्छा हो वह कीजिए । १८ यह सुनकर श्रीराम ने कुत्ते के मुख की ओर देखते हुए पूछा कि इसे क्या दण्ड दिया जाए ? १९ कुत्ते ने कहा, हे देव ! शिवालय में प्रबन्ध करते हुए यह निश्चिन्त रहेगा । २० पूर्वकाल में वह शिवालय मेरे अधिकार में था । कर्मवश पुत्र के लिए मैं कुत्ता हुआ । २१ यह सुनकर श्रीराम ने कहा कि ऐसा ही होगा । उन्होंने भिक्षुक की पगड़ी बाँधकर हाथी पर चढ़ाकर घुमाया । २२ लोग हँसकर कह रहे थे कि यह गुहार सुनो । इस समय भिक्षुक वैभवशाली हो गया । २३ श्रीराम के लाल कमल से युगल चरणों में दीन विशि की बुद्धि भ्रमर बनकर रम जाए । २४

षट्त्रिंश छान्द—उल्लुक-गृध्र सम्बाद

राग—कल्याण एकताळ

उल्लुक गृध्र गुहारि । देब देब राबणरि ।
शुणन्ति पुरु बाहारि । बेनि ऋषीङ्कु गुहारि ।
कोदण्डपाणि । प्रतिहारी बचन शुणि ।। घोषा ।।
मन्दे हसि रघुमणि । लक्ष्मण पाशरे पाणि ।
पादुका चढ़ि धरणी । बिजे कले सेहिक्षणि ।। १ ।।
सिंहद्वारे हेले उभा । दिशिले परम शोभा ।
घेनि कि सकळ देबा । बिजय कले मघबा ।। २ ।।
देखि दशरथ बाळ । नयन कले सफळ ।
क्रोधरे होइ आकुळ । पड़िले धरणीतळ ।। ३ ।।
गृध्र कउशिक चाहिँ । आज्ञा देले सीता साइँ ।
गुहारि कल कि पाइँ । छामुरे कह बुझाइ ।। ४ ।।
गृध्र कहे मोर घर । करिछन्ति तरुपर ।
जेउँ दिन नृपबर । माने होइले प्रचार ।। ५ ।।
उल्लुक बोले बचन । भो देब मोर सदन ।
बृक्षमाने जेउँ दिने । उपुजिले ए भुबने ।। ६ ।।

छान्द ३६—गृध्र और उल्लू का संवाद

राग—कल्याण (एकताल)

प्रतिहारी द्वारा दोनों सत्यवादियों की गुहार सुनकर कोदण्डधारी देवाधिदेव, रावण के शत्रु श्रीराम महल से निकलकर उल्लू और गीध की गुहार सुन रहे थे। घोषा मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीराम लक्ष्मण के कंधे पर हाथ रखे हुए पादुका पहने पैदल ही उसी समय चल पड़े। १ सिंहद्वार पर खड़े होने से अत्यन्त शोभायमान दिखाई दे रहे थे। लगता था मानों इन्द्र सभी देवताओं को लेकर उपस्थित हो गये हों। २ दशरथनन्दन को देखकर उन्होंने अपने नेत्र सफल किये। वह दोनों क्रोध से अभिभूत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। ३ गीध तथा उल्लू की ओर देखकर सीताकान्त ने कहा कि तुम्हारी क्या गुहार है? हमारे सामने समझा कर कहो। ४ गृध्र ने कहा कि जिस दिन से राजा लोग फैले उसी दिन मैंने वृक्ष पर पर अपना घोंसला बनाया। ५ उल्लू ने कहा, हे देव! जिस दिन इस लोक में वृक्ष उत्पन्न हुए उसी दिन मैंने वृक्ष पर अपना

मंत्री मानंकु हकारि । बोलन्ति बुझ गुहारि ।
ए बसा हेला काहारि । कह समस्ते बिचारि ।। ७ ।।
मंत्रीमाने जोड़ि कर । जणाइले जे छामुर ।
दुहेँत बोलन्ति मोर । श्री मुखरे आज्ञा कर ।। ८ ।।
शुणि श्रीराम हसिले । गृध्र हारिला बोइले ।
बृक्षमान आग थिले । पच्छे सेमाने त हेले ।। ९ ।।
उल्लुक घर पाइला । आकाशबाणी होइला ।
गृध्रकु दण्ड नोहिला । पापरु मुकत हेला ।। १० ।।
रामंकु करि दर्शन । आरोहि आकाश जान ।
स्वर्गंकु कला गमन । राम पादे बिशि मन ।। ११ ।।

सप्तत्रिंश छान्द—श्रीरामंक निकटरे काळदूतर प्रबेश

राग—चोखि

श्रीरामचन्द्र राजन, करन्ते दिने आस्थान,
बशिष्ठ ऋषि जाबाळि कश्यप घेनि ।
सुमन सुदरशन, सुभद्र भद्र प्रसन्न,
उभा होइ अछन्ति जोड़ि कर बेनि ।

घोंसला बनाया था । ६ श्रीराम ने मंत्रियों को बुलाकर गुहार को समझने के लिए कहा । तुम सभी लोग विचार करके बताओ कि यह घोंसला किसका हुआ । ७ मंत्रियों ने हाथ जोड़कर श्रीराम से कहा कि यह दोनों तो अपना-अपना कह रहे हैं । अब आप ही अपने श्रीमुख से आज्ञा करें । ८ यह सुनकर श्रीराम हँस पड़े और उन्होंने कहा कि गीध हार गया । वृक्ष तो पहले से ही थे । राजा लोग तो बाद में हुए । ९ उल्लू ने घर प्राप्त कर लिया । आकाशवाणी हुई कि गीध को दण्ड भी नहीं मिला और वह पाप से मुक्त हो गया । १० वह श्रीराम के दर्शन करके आकाश यान पर बैठकर स्वर्ग को चला गया । विशि का मन श्रीराम के चरणों में लगा है । ११

छान्द ३७—श्रीराम के निकट कालदूत का प्रवेश

राग—चोखी

एक दिन महाराज श्रीराम महर्षि वशिष्ठ,जाबालि तथा कश्यप ऋषियों को लेकर सभा कर रहे थे । सुमन, सुदर्शन, सुभद्र तथा भद्र प्रसन्न होकर

एहि काळरे काळदूत ।
सिंहद्वारे प्रबेश होइला त्वरित ।। १ ।।
द्वारीकि कहे बचन, जणाअ राम राजन,
बोलिब महामुनिंक छामुरु दूत ।
आणि अछइ उदन्त, कहिब सर्ब बृत्तान्त,
दर्शन करि छामुरे जिब त्वरित ।
एहा शुणि से द्वारपाळ ।
जणाइला श्री रामंक आस्थान तळ ।। २ ।।
आज्ञा देले घेनि आस, दूतकु आम्भर पाश,
केउँ ऋषिठारु आसिछन्ति जाणिबा ।
केउँ कारणे उदन्त, देइछन्ति तपोबन्त,
निर्णय करिण तांक मुखुं शुणिबा ।
आज्ञा पाइ दूतकु नेले ।
श्रीराम छामुरे नेइ त्वरिते कले ।। ३ ।।
काळदूत कहे बाणी, शुण देब रघुमणि,
कहिबि मो संगे तुम्भे कले निर्बन्ध ।
ए स्थान हेले निर्ज्जन, कहिबि तांक बचन,
से समये जे आसिब करिब बध ।
शुणि राम निर्बन्ध कले ।
जे आसिब निश्चें बध हेब बोइले ।। ४ ।।

दोनों हाथ जोड़कर खड़े थे। इसी समय वेग के साथ कालदूत सिंहद्वार पर आ पहुँचा। १ वह द्वारपाल से बोला कि तुम जाकर महाराज रामचन्द्र को सूचित करो कि महामुनि का दूत समाचार लेकर आपके पास आया है। वह आपके दर्शन करके आपसे सब कुछ बताकर शीघ्र ही चला जाएगा। यह सुनकर द्वारपाल ने श्रीराम के सिंहासन के समीप जाकर निवेदन किया। २ महाराज ने आज्ञा दी कि दूत को हमारे निकट ले आओ। हम पता करेंगे कि वह कौन से ऋषि के पास से आये हैं। किस कारण से तपस्वी मुनि ने समाचार भेजा है। उसके मुख से सुनकर हम निर्णय करेंगे। आज्ञा पाते ही उसने दूत को ले जाकर श्रीराम के समक्ष वेग से पहुँचा दिया। ३ कालदूत बोला, हे रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीराम! सुनिये। आप जब हमें बचन देंगे कि यह स्थान एकान्त हो जाने पर मेरे द्वारा आपसे उनके समाचार बताते समय जो भी यहाँ आएगा उसका आप वध करेंगे।

पाशकु लक्ष्मण राइ, आज्ञा देले रघुसाइँ,
दुआरे रहि काहाकु छाड़ि न देब।
छामुरे केहि न थिबे, केहि आउ न आसिबे,
जेहु आसिबे से निश्चे बध होइबे।
आज्ञा पाइ बीर लक्ष्मण।
जन निरोधिले द्वारे रहि आपण॥ ५॥
दूतकु घेनि एकान्त, हुअन्ते जानकीकान्त,
दूत कहिला पेषिले कमळासन।
करुछन्ति बहु स्तब, तुम्भे अट देब देब,
महीरे बिजे करिब केतेक दिन।
बइकुण्ठ होइछि शून्य।
ए सन्देश श्रबण होइला सम्पूर्ण॥ ६॥
मुहिँ काळ होइ दूत, छामुरे कहुछि सत,
बैकुण्ठकु एबे देब बिजय कर।
राबण होइला हत, दुष्टंकु कल निपात,
राम अबतार शेष हेला तुम्भर।
शुणि राम दूत बचन।
आज्ञा देले जिबि बइकुण्ठ भुबन॥ ७॥

तभी मैं आपसे सब कुछ बताऊँगा। यह सुनकर श्रीराम ने प्रतिज्ञा की कि जो भी आएगा निश्चित ही वह मारा जाएगा। ४ लक्ष्मण को समीप बुलाकर रघुनाथ जी ने उन्हें आज्ञा दी कि तुम द्वार पर रहकर किसी को आने न देना। मेरे पास कोई नहीं रहेगा तथा और कोई नहीं आएगा। जो आएगा उसका निश्चय ही वध होगा। आज्ञा पाकर पराक्रमी लक्ष्मण द्वार पर स्थित होकर लोगों को रोकने लगे। ५ जानकी के स्वामी दूत को लेकर एकान्त में हो गये। दूत ने कहा है कि हमें कमलासन ब्रह्माजी ने भेजा है। उन्होंने आपकी स्तुति करके कहा है कि आप देवताओं के भी देवता हैं। पृथ्वी पर आप और कब तक विराजमान रहेंगे। वैकुंठ शून्य हो गया है। यह जो आपने सुना वही पूरा सन्देश है। ६ मैं काल का दूत होकर आप से सत्य कह रहा हूँ कि हे देव ! अब आप वैकुंठ पधारें। रावण मारा गया। आपने दुष्टों का संहार कर दिया। आपका राम-अवतार समाप्त हो गया है। श्रीराम ने दूत के वचनों को सुनकर कहा कि मैं वैकुण्ठलोक को जाऊंगा। ७ इसी

ए काळे दुर्बासा ऋषि, सिंहद्वारे हेले आसि,
लक्ष्मणंकु चाहिँण बोइले बचन ।
देखाअ राम राजन, करिबुँ आम्भे दर्शन,
न देखिले दहिबुँ तुम्भर भुबन ।
ताहा शुणि सुमित्रासुत !
बोलन्ति जाहा मागिब देबा त्वरित ।। ८ ।।
दर्शनकु जाहा कह, मुहूर्त्त मात्रक रह,
ठाकुरंक छामुकु मुँ घेनाइ जिबि ।
नोहिले किस बृत्तान्त, कह मोते तपोबन्त,
जाहा इच्छा कर ताहा त्वरिते देबि ।
शुणि मुनि बोले बचन ।
राम न देखिले मुँ दहिबि भुबन ।। ९ ।।
लक्ष्मण कले बिचार, महाक्रोधी मुनिबर,
एहा क्रोधे समस्ते जे होइबे नाश ।
मुँ एबे छामुकु जिबि, मुनि क्रोध जणाइबि,
एकामात्र मुहिँ सिना हेबि बिनाश ।
एहामने करि बिचार ।
दुर्बासांकु रखि सेहु गले भितर ।। १० ।।

समय दुर्वासा ऋषि सिंहद्वार पर आकर लक्ष्मण की ओर देखकर बोले, तुम हमें महाराज रामचन्द्र को दिखाओ। हम उनका दर्शन करेंगे। दर्शन न होने पर तुम्हारे नगर को जला डालेंगे। यह सुनकर सुमित्रानन्दन ने कहा कि आप जो भी माँगेंगे वह हम शीघ्र दे देंगे। ८ जो आप दर्शनों के लिए कह रहे हैं तो मुहुर्त मात्र के लिए ठहर जायें। फिर मैं आपको प्रभु के पास ले चलूंगा। अथवा यदि कोई बात हो तो हे तपस्वी ! आप हमसे कहें। जो इच्छा होगी, वह शीघ्र ही देंगे। यह सुनकर मुनि ने कहा कि राम को न देखने पर मैं नगर को दग्ध कर दूंगा। ९ लक्ष्मण ने विचार किया कि यह मुनिश्रेष्ठ महान क्रोधी हैं। इनके क्रोध से सब कुछ नष्ट हो जायेगा। इस समय मैं श्रीराम के पास जाकर मुनि के क्रोध के विषय में निवेदन करूँगा। इससे एकमात्र मैं ही नष्ट होऊंगा। मन में ऐसा विचार करके दुर्वासा को ठहराकर वह भीतर चले गये। १० उन दोनों के सम्भाषण के समय लक्ष्मण

कथा होन्ते बेनि जण, से काळे मिळि लक्ष्मण,
लक्ष्मणंकु देखि राम हेले चकित।
कहन्ति कि कार्ज्य कह, कल त अति दुःसह,
आज्ञा भांगि छामुकु अइल त्वरित।
शुणि जणाइले सानुज।
दुर्बासा कोपरे कस्वछन्ति दहिज्य ॥ ११ ॥
दूतकु मेलाणि देले, मुनि संगे भेट हेले,
दुर्बासा बोलन्ति शुणि राम राजन।
तप कलु बहु दिन, अन्न न कलु अशन,
एबे तुम्भ नबरे करिबु भोजन।
शुणि राम सानन्द हेले।
षड़रसरे भोजन मुनिकि देले ॥ १२ ॥
भोजने होइ तृपति, कल्याण करिण जति,
मेलाणि होइण निज आश्रमे गले।
राम होइ छन्न छन्न, निरते बिकळ मन,
श्रीमुख महीकि करि अश्रु मुचिले।
एहा देखि सुमित्रासुत।
जणाइले मोते बध कर त्वरित ॥ १३ ॥
लक्ष्मण वचन शुणि, आज्ञा देले रघुमणि,
आहे गुरु बशिष्ठ जाबाळि कश्यप।

वहाँ पहुँचे। लक्ष्मण को देखकर श्रीराम चौंक गये। उन्होंने कहा, कहो क्या काम है ? तुमने अत्यन्त दुःसाहस किया है। तुम आज्ञा भंग करके वेग से सामने आ गये। यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा कि दुर्वासा क्रोध से प्रज्वलित हो रहे हैं। ११ श्रीराम ने दूत को विदा करके मुनि के साथ भेंट की। दुर्वासा ने कहा- हे महाराज राम ! सुनिये। मैंने बहुत दिन तपस्या की और अन्न नहीं खाया। इस समय आपके महल में भोजन करूँगा। यह सुनकर श्रीराम प्रसन्न हो गये। उन्होंने मुनि को षड्रस भोजन दिये। १२ भोजन करके राजा को आशीर्वाद देकर महर्षि दुर्वासा विदा होकर अपने आश्रम चले गये। श्रीराम थरथराते हुए निरन्तर व्याकुल मन से पृथ्वी की ओर मुख करके अश्रुपात करने लगे। यह देखकर सुमित्रानन्दन ने कहा कि आप मेरा शीघ्र ही वध कर दें। १३ लक्ष्मण की बात सुनकर रघुमणि श्रीराम ने कहा, हे गुरु वशिष्ठ ! जाबालि तथा

करिण थिलुँ निर्बन्ध, जे आसिब हेब वध,
एबे सत्य भंग हेलु नाशिला पाप ।
लक्ष्मण आम्भर अबध्य ।
बध केमन्ते करिबुँ होइछि क्रोध ॥ १४ ॥
एमन्त शुणि बशिष्ठ, बोलन्ति हे नृपश्रेष्ठ,
आज्ञा भ्रष्ट नृप हेले हुअन्ति नष्ट ।
सुकृत होए बिनाश, नाश जान्ति सर्ब जश,
बधरु त्याग अटइ सकळ श्रेष्ठ ।
एहा शुणि राम नृपति ।
बोले बिशि लक्ष्मणंकु चाहिँ बोलन्ति ॥ १५ ॥

अष्टात्रिंश छान्द—लक्ष्मणंकर बैकुण्ठ गमन

राग—बराड़ि (बिप्रसिंह बाणी)

आहे सउमित्रि शुण, अजोध्यारु एहि क्षण,
वाहार होइण तुम्भे जाअ । आम्भे तुम्भंकु तेजिलु,
सुकृतकु भय कलुँ, प्राण घेनि जदि तहिँ थाअ हे ।
सउमित्रि । बधकु नुह तुम्भे भाजन ।

कश्यप ! मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जो आयेगा उसका वध होगा । इस समय पाप ने मुझे नष्ट कर दिया है जो मैं प्रतिज्ञा से च्युत हो गया हूँ । लक्ष्मण हमसे अवध्य है । उसका वध कैसे करूँ, इससे मुझे क्रोध हो रहा है । १४ इस प्रकार वशिष्ठ ने सुनकर कहा, हे नृपश्रेष्ठ ! प्रतिज्ञा भंग करने से भले ही राजा क्यों न हो, वह नष्ट हो जाता है । पुण्यों का नाश हो जाता है । सम्पूर्ण यश नष्ट हो जाता है । वध करने से त्याग कर देना सबसे श्रेष्ठ है । विशि कहता है कि यह सुनकर महाराज रामचन्द्र ने लक्ष्मण की ओर देखकर कहा । १५

छान्द ३८—लक्ष्मण का बैकुण्ठ-गमन

राग—बरार (विप्रसिंहा धुन)

हे सौमित्र ! सुनो । तुम इसी समय अयोध्या से बाहर निकल जाओ । हमने तुम्हारा त्याग कर दिया है । पुण्य के लिए मैंने भय किया । तुम प्राण लेकर कहीं भी रहो । हे सौमित्र ! तुम वध के पात्र नहीं हो ।

बने सेबा कल जेते, ताहा मुँ कहिबि केते,
मला गला दुहें त समान हे ॥ १ ॥
आम्भे प्रतिज्ञा करिछु, मारिबु बोलि बोलिछु,
ताहा आज जेबे न करिबा।
होइब सुकृत भंग, नरके पड़िब अंग,
आज्ञाभ्रष्ट नृप बोलाइबा हे।
सउमित्रि। तुम्भे जाण सबु व्यवहार।
तुम्भंकु मुँ कि कहिबि, तुम्भ मुख न देखिबि,
तुम्भ मनकु तुम्भे बिचार हे ॥ २ ॥
श्रीमुख निष्ठुर बाणी, लक्ष्मण श्रवणे शुणि,
पथघुंचा देइ पच्छ हेले। शिरे देले बेनि पाणि,
छामुरु होइ मेलाणि, आउ तांक पुरकु न गले से।
सउमित्रि। सरजुतट निकटे हेले।
गमन्ते नदी भितरे, आकाशे रहि अमरे,
कुसुममानंकु बृष्टि कले से ॥ ३ ॥
सुनासीर बेदबर, बिमान घेनि संगर,
लक्ष्मणंक छामुरे प्रबेश। कर जोड़ि स्तब कले,
बिमानरे बसाइले, बोइले स्वर्गरे कर बास हे।
सउमित्रि। राम संगे बैकुण्ठकु जिब।

तुमने वन में जो सेवा की है, उसके लिए मैं कितना कहूँ। मरा हुआ और गया हुआ दोनों बराबर होते हैं। १ मैंने प्रतिज्ञा की है। मैं मारूँगा, मैंने ऐसा कहा है। यदि मैं आज उसे न करूँगा तो मेरे पुण्यमय कार्य नष्ट हो जायेंगे। शरीर नर्क में गिरेगा। हमें प्रतिज्ञा-भ्रष्ट राजा कहा जायेगा। हे सौमित्र ! तुम समस्त व्यवहार जानते हो। तुमसे मैं क्या कहूँ ? तुम्हारा मुख न देख पाऊँगा। तुम अपने मन में स्वयं विचार करो। २ लक्ष्मण श्रीराम के मुख की कठोर बातें कानों से सुन कर ठिठुककर पीछे हट गये। वह दोनों हाथ जोड़कर सिर में लगाकर श्रीराम से विदा हुए और वह उनके नगर में नहीं गये। वह सरयूतट के निकट जा पहुँचे। उनके नदी के भीतर गमन करते समय देवता लोग आकाश से फूलों की वर्षा करने लगे। ३ इन्द्र तथा ब्रह्माजी साथ में विमान लेकर लक्ष्मण के पास पहुँचे। उन्होंने हाथ जोड़कर लक्ष्मण की स्तुति करके उन्हें विमान में बैठा लिया और कहा कि आप स्वर्ग में निवास

एते कहि शून्ये हेले, केहि तांकु न देखिले,
बोले बिशि रख सीता धव हे ॥ ४ ॥

एकोनचत्वारिंश छान्द—लवकुशादिकर राज्याभिषेक

राग–कुसुम सोरम

शुण सुजने राम चरित्र रस ।
दिनकु दिन रामचन्द्र बिरस ॥
अशन बसनहिँ मणिले बिष ।
कृष्णपक्षर शशी जेसने शेष ॥ १ ॥
बोले श्रीराम निश्चे आम्भे जिबु बन ।
सदनरे रहिबाकु क्षणेहेँ नोहे मन ॥
लक्ष्मण गला दिनु राजीबनेत्र ।
दिनकु दिन क्षीण होइला गात्र ॥ २ ॥
सजळ जळरुह प्राय त बदन ।
मर्कतजित कान्ति दिशे बिबर्ण ॥
केते वेळे बोलन्ति हा ! हा ! लक्ष्मण जानकी ।
दइब बसिण एहा पांचिथिला निकि ॥ ३ ॥

करें । हे सौमित्र ! आप श्रीराम के साथ बैकुण्ठ जाइयेगा । विशि कहता कि इतना कहकर वह लोग अदृश्य हो गये । किसी ने उनको नहीं देखा । हे सीतापति ! रक्षा कीजिए । ४

छान्द ३९—लव-कुश आदि का राज्याभिषेक

राग–कुसुम सोरम

हे सुजन ! श्रीराम का रसमय चरित्र सुनो । दिन पर दिन श्रीरामचन्द्र दुःखी हो गये । भोजन और परिधान को वह विष मानने लगे। कृष्णपक्ष का चन्द्रमा जिस प्रकार क्षीण होकर समाप्त हो जाता है । १ श्रीराम ने कहा कि मैं निश्चय ही वन को जाऊँगा । घर में एक क्षण रहने का मन नहीं होता । लक्ष्मण के जानेवाले दिन से कमललोचन श्रीराम का शरीर दिन-दिन क्षीण होता गया । २ सजल कमल के समान उनका मुख तथा मरकत मणि को जीतनेवाली कान्ति विवर्ण दिख रही थी । कभी वह कहते, हा लक्ष्मण ! हा जानकी ! क्या भाग्य ने बैठकर यही षड्यंत्र रचा था । ३ वशिष्ठ, बामदेव तथा कश्यप को बुलाकर और

बशिष्ठ बामदेब कश्यप राइ ।
सुमन्त्र मंत्री छामुकु हकराइ ।।
आज्ञा देले भरतंकु हुअ नृपति ।
शुणिण भरत छुइँले भुमि श्रुति ।। ४ ।।
लबकुशकु देब करिबा अभिषेक ।
राजाकु जोग्य नुहें मु तुम्भ सेबक ।।
बनकु जेबे जिब संगरे जिबि ।
लक्ष्मण प्राय सेबा करुण थिबि ।। ५ ।।
संगे जिबाकु जेबे हेलि अजोग्य ।
केन्हे महीपाळ मुँ हुअन्ति जोग्य ।।
भरत मुखरु शुणि लबकुशकु अणाइले ।
बेनि पुत्रंकु बेनि देश बाण्टि देले ।। ६ ।।
कुशकुमरकु अभिषेक कले ।
दक्षिण कोशळरे से नृप हेले ।।
लबकुहिँ उत्तर कोशळ देले ।
अभिषेक होइ तहिँ से नृप हेले ।। ७ ।।
भण्डार आयमान समस्त बाण्टि करि देले ।
स्वधन अश्व गज बाण्टि करि नेले ।।
शत्रुघन पाशकु पेषिले दूत ।
नगरे दूत हेला त्वरित ।। ८ ।।

मंत्री सुमन्त्र को समीप बुलाकर उन्होंने भरत को राजा बनने की आज्ञा दी। यह सुनकर भरत ने पृथ्वी और कान का स्पर्श किया। ४ हे देव ! लव-कुश का अभिषेक करेंगे। मैं राजा के योग्य नहीं। मैं आपका सेवक हूँ। यदि आप वन को जायेंगे तो मैं आपके साथ जाऊँगा। लक्ष्मण के समान सेवा करता रहूँगा। ५ जो मैं साथ जाने के लिए अयोग्य हुआ तो फिर राजा बनने के योग्य कहां होऊँगा ? भरत के मुख से ऐसा सुनकर उन्होंने लव-कुश को बुलाया। दोनों पुत्रों को दोनों देश बाँट दिये। ६ इन्होंने कुमार कुश का अभिषेक किया। वह दक्षिण कोशल के राजा हुए। लव को उन्होंने उत्तर कोशल दिया। अभिषेक होकर वह वहाँ के राजा हुए। ७ भण्डार तथा आय सब बाँटकर दे दिये। अपना-अपना धन, घोड़े, हाथी बाँटकर उन्होंने ले लिये। उन्होंने शत्रुघ्न के पास दूत भेजा। वह तुरन्त नगर में जा पहुँचा। ८ उसने श्रीराम

कहिले राम बन जिबा बारता ।
लक्ष्मण त्याग आदि समस्त कथा ।।
तुम्भ जिबा निमन्ते आज्ञा देइछन्ति राघब ।
तुम्भे बिजय हेब बिळम्ब नोहिब ।। ९ ।।
शुणि सुमित्रा सुत राइ पुरोहित ।
समस्त कहिण समर्पिले सुत ।।
सुबाहुकु मथुरा नृपति कले ।
शत्रुघाती बैंधब नगर देले ।। १० ।।
बेनि कुमर बेनि देशे अभिषेक ।
रथ चढ़ि अइले अजोध्या कटक ।।
शत्रुघन रामकु दर्शन कले ।
पुत्रकु राजा करिबार बोइले ।। ११ ।।
तुम्भ संगरे देब जिबाकु इच्छा ।
अइलि छामुकु करि एहा बाञ्छा ।।
शुणि रामचन्द्र नेबाकु सीउकार कले ।
एहि समयरे बशिष्ठ जणाइले ।। १२ ।।
अजोध्या जने देब बड़ बिकळ ।
पड़ि अछन्ति शोके धरणीतळ ।।
बोलन्ति आम्भे राजा संगते जिबुं ।
अजोध्यारे थाइं आम्भे काहाकु देखिबुं ।। १३ ।।

के बन जाने की बात तथा लक्ष्मण के त्याग आदि की सारी कहानी उनसे कही और बोला कि राघव राम ने आपको जाने की आज्ञा दी है। आप अविलम्ब ही पहुँच जायें। ९ यह सुनकर सुमित्रा के पुत्र शत्रुघ्न ने पुरोहितों को बुलाकर उनसे सब कुछ समझाकर अपने पुत्र समर्पित कर दिये। सुबाहु को मथुरा का राजा बनाया और शत्रुघाती को वैधव नगर दिया। १० दोनों कुमारों का दोनों देशों में अभिषेक करके रथ पर चढ़कर वह अयोध्यापुर आ गये। शत्रुघ्न ने श्रीराम के दर्शन करके पुत्रों को राजा बना देने की बात कही। ११ हे देव ! आपके साथ जाने की इच्छा है। यही इच्छा लेकर मैं आपके निकट आया हूँ। यह सुनकर श्रीरामचन्द्र ने उन्हें ले जाना स्वीकार किया। इसी समय बशिष्ठ ने निवेदन किया। १२ हे देव ! अयोध्या के लोग बड़े व्याकुल होकर शोक से पृ[illegible] पर पड़े हैं। वह कह रहे हैं कि हम भी [illegible]राज के साथ

शुणि राम तांकु नेबाकु कले सनमत ।
रुण्ड होइले गृह तेजि समस्त ।।
सुग्रीब जाम्बब हनु आदि सकळ ।
राम बिजे शुणि होइले बिकळ ।। १४ ।।
अंगदकु किष्किन्ध्यारे कले राजन ।
समस्तेहेँ अइले अजोध्या भुबन ।।
बिभीषण असुरगण घेनि अइले ।
बोले बिशि जहुँ बारता पाइले ।। १५ ।।

चत्वारिंश छान्द—श्रीराम भरत शत्रुघ्नादिकर बैकुण्ठ गमन

राग—मंगळ

श्रीराम बिजय शुणि सुग्रीब बिभीषण ।
दर्शन कले से आसि श्रीराम चरण ।।
आलिंगन करि राम हस हस हेले ।
बिजय करिब बोलि श्रीमुखे कहिले ।। १ ।।
कपिराज जणाइले बारता पाइलि ।
अंगदकु अभिषेक करिण अइलि ।।

जायेंगे । अयोध्या में रहकर हम किसका दर्शन करेंगे ? १३ यह सुनकर श्रीराम ने उन्हें ले चलने की सम्मति दी । सभी लोग घर छोड़कर एकत्रित हो गये । सुग्रीव, जामवंत, हनुमान आदि सभी श्रीराम के गमन को सुनकर व्याकुल हो गये । १४ अंगद को किष्किन्धा का राजा बनाकर सभी अयोध्यानगर में आ गये । विशि कहता है कि जब विभीषण को समाचार मिला तो वह राक्षसों को लेकर आ गये । १५

छान्द ४०—श्रीराम, भरत, शत्रुघ्न आदि का बैकुण्ठ-गमन

राग—मंगल

श्रीराम-गमन के विषय में सुनकर सुग्रीव तथा विभीषण ने आकर श्रीराम के चरणों के दर्शन किये । आलिंगन करके श्रीराम ने हँसते हुए अपने श्रीमुख से कहा कि अब हम गमन करेंगे । १ कपिराज सुग्रीव ने कहा कि मैंने समाचार पाकर अंगद का अभिषेक कर दिया और आ गया । श्रीराम ने आज्ञा देते हुए विभीषण से रुक जाने के लिए कहा । उन्होंने

आज्ञा देले आहे बिभीषण तुम्भे थिब ।
आम्भ इष्ट रघुनाथ दर्शन करिब ।। २ ।।
जेते काळ परिजन्ते आम्भ नाम थिब ।
तेते काळ परिजन्ते दीर्घजीबी हेब ।।
हनुकु बोइले तुम्भे सबु दिने थिब ।
आम्भर चरित शुणि सानन्द होइब ।। ३ ।।
महीन्द्र दुर्बिन्द जाम्बबकु आज्ञा देले ।
कळि जाए तुम्भेमाने थिब जे बोइले ।।
अजोध्या जन सकळे होइछन्ति ठुळ ।
संगते जिबाकु करिछन्ति अनुकूळ ।। ४ ।।
बेनिपाशे खटिछन्ति भ्रत शत्रुघन ।
ब्रताचारी होइ राम होइले मउन ।।
बिजे समय जाणि बशिष्ठ जणाइले ।
सेहि अनुकूळे राम बाहार होइले ।। ५ ।।
स्तिरी पुरुष बाळक बृद्ध जे सकळ ।
स्थाबर कीट पतंग आदि पशुकुळ ।।
बिबिध बाद्यनादरे पूरइ आकाश ।
समस्त दिगे शुभइ सुमंगळ घोष ।। ६ ।।

अपने इष्ट रघुनाथ (जगन्नाथ) का दर्शन करते रहने के लिए कहा । २ जितने समय तक हमारा नाम रहेगा, हे विभीषण ! तुम उतने ही समय तक दीर्घजीवी रहोगे । उन्होंने हनुमान से कहा कि तुम सदैव ही जीवित रहोगे और हमारा चरित्र सुनकर आनन्द प्राप्त करते रहोगे । ३ महीन्द्र, दुर्विन्द और जामवंत को आज्ञा देते हुए कहा कि आप लोग कलियुग आने तक यहाँ रहोगे । सभी अयोध्यावासी एकत्रित हो चुके थे । साथ जाने के लिए सुयोग कर रहे थे । ४ दोनों ओर भरत और शत्रुघ्न सेवा कर रहे थे । व्रत का आचरण करके श्रीराम मौन हो गये । वशिष्ठ ने समझकर प्रयाण का समय बताया । उसी के अनुसार श्रीराम बाहर निकल पड़े । ५ सभी स्त्री, पुरुष, बालक और वृद्ध, स्थावर, कीट, पतंग आदि नाना प्रकार के पशु साथ में थे । आकाश नाना प्रकार के वाद्यों के शब्द से भर गया । दिशाओं में मांगलिक उद्घोष सुनायी दे रहा था । ६

श्री पयरे बिजय करन्ति राम राजे ।
मंगळ अष्टकमान पढ़ुछन्ति द्विजे ।।
अजोध्या शून्य करिण होइले बाहार ।
प्रबेश होइले सरजू नदीर तीर ।। ७ ।।
सरजू नदीरे राम पशिले आपण ।
हरष होइले देखि अमरादिगण ।।
पुरन्दर सहिते आपणे परमेष्ठी ।
सकळ देबे मिळिण कले पुष्पबृष्टि ।। ८ ।।
स्तब पढ़ि जणाइले देब बेदबर ।
रत्नबिमान उपरे देब बिजे कर ।।
हरषे श्रीराम से बिमान आरोहिले ।
भ्रत शत्रुघन से बिमाने बिजे कले ।। ९ ।।
समस्ते जे सरजू नदीरे स्नान कले ।
देब देह धरि सर्बे बिमाने चढ़िले ।।
तरु पाषाण सहिते मूर्त्तिमन्त होइ ।
बिमानमान समस्ते आरोहिले जाइं ।। १० ।।
हनुमन्त जाम्बब आबर बिभीषण ।
दुर्बिन्द महीन्द्र ए रहिले पाञ्चजण ।।
स्वर्ग सभारे श्रीराम प्रबेश होइले ।
लक्ष्मणंकु देखि राम सन्तोष होइले ।। ११ ।।

महाराज राम अपने श्रीचरणों पर गमन कर रहे थे । ब्राह्मण मंगलाष्टक पढ़ रहे थे । अयोध्या को सूनी करके बाहर निकलकर सरयू नदी के तट पर जा पहुँचे । ७ श्रीराम स्वयं सरयू नदी में घुस गये । यह देखकर देवता लोग प्रसन्न हो गये । इन्द्र के साथ स्वयं ब्रह्माजी सभी देवताओं के साथ पुष्पवर्षा करने लगे । ८ ब्रह्माजी ने स्तुति करके कहा, हे देव ! आप रत्नविमान पर विराजमान हों । श्रीराम प्रसन्न होकर उस विमान पर आरूढ़ हो गये । भरत, शत्रुघ्न उस विमान पर बैठ गये । ९ वह सभी, जिन्होंने सरयू नदी में स्नान किया, सब के सब देव-शरीर धारण करके विमान पर चढ़ गये । वृक्ष, पाषाण सभी मूर्तिमान होकर विमान पर जाकर बैठ गये । १० हनुमान, जामवंत, विभीषण, दुर्विन्द तथा महीन्द्र यह पाँच व्यक्ति रह गये । स्वर्ग की सभा में श्रीराम पहुँचे और लक्ष्मण को देखकर वह संतुष्ट हो गये । ११ लक्ष्मण शंख, भरत सुदर्शन

लक्षमण होइले शंख अत सुदर्शन ।
शत्रुघन होइले जे कमळआसन ॥
श्रीराम पाद जुगळ लोहित कमळ ।
दीन बिशि मति तहिं होइला भ्रसळ ॥ १२ ॥

एकचत्वारिंश छान्द—लक्ष्मीनारायण भेट

राग–भैरव

गन्धर्ब किन्नर जक्ष तपी सिद्ध चारणे ।
बीणारत ताळ घेनि करुछन्ति गायने ॥ १ ॥
दुन्दुभिर बाद्य बाजे अबिरत गगने ।
बैकुण्ठनाथ बिजय बइकुण्ठ भुबने ॥ २ ॥
सकळ देबतांकु घेनि देब पाकशासने ।
शिब बिरंचि सहिते बृष्टि कले सुमने ॥ ३ ॥
कोटि कोटि जानमान तारा प्राये शोभने ।
देबता पराये शोभा पाउछन्ति गगने ॥ ४ ॥
बैकुण्ठपुरे बिजय तेजि दिब्य भुबन ।
बैकुण्ठपुर बासीए आसि कले दर्शन ॥ ५ ॥
अजोध्या जने निबास कले बिष्णु भबने ।
महा दुःसह कर्म त कले रघुनन्दने ॥ ६ ॥

तथा शत्रुघ्न कमल का आसन हो गये । श्रीराम के युगल-चरण जो लाल कमल के समान हैं । दीन विशि की बुद्धि वहाँ भ्रमर बन गयी । १२

छान्द ४१—लक्ष्मी-नारायण-भेट

राग–भैरव

गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, तपस्वी, सिद्ध और चारण ताल के साथ वीणा पर गायन कर रहे थे । १ दुन्दुभि-वाद्य आकाश में निरन्तर बज रहा था । वैकुंठ के स्वामी वैकुंठलोक में पधार रहे थे । २ सभी देवताओं को लेकर इन्द्र शंकर और ब्रह्मा के साथ पुष्पवर्षा कर रहे थे । ३ करोड़ों-करोड़ों यान नक्षत्र के समान आकाश में देवताओं के तुल्य शोभायमान हो रहे थे । ४ दिव्य भुवनों को छोड़कर वैकुंठपुर में आगमन को देखने के लिए वैकुंठपुरनिवासियों ने आकर दर्शन किये । ५ अयोध्यावासी विष्णुलोक में रह गये । रघुनन्दन श्रीराम ने महान साहसिक कार्य किया था । ६

सुबर्ण झरिरे नीर घेनि लक्ष्मी बिजय ।
पाद धोइ पद्मासने जाइँ कले बिजय ॥ ७ ॥
अनन्त शयन कले बटपुट गहने ।
लक्ष्मीपाद मंचाळन्ति होइ दिव्य सुमने ॥ ८ ॥
नारायण गुणन्ते कामना होए सम्पूर्ण ।
सर्बदा निबास करि रहे तांक भुबन ॥ ९ ॥
नाश सकळ बिपत्ति जगन्नाथ दर्शने ।
सात काण्ड रामायण विश्वनाथ मुँ भणे ॥ १० ॥

॥ उत्तराकाण्ड समाप्त ॥

॥ बिचित्र रामायण समाप्त ॥

सुवर्ण की झारी में जल लेकर लक्ष्मी जी पधारीं । वह चरण धोकर कमल के आसन पर जाकर विराजमान हो गयीं । ७ घने वटपत्र में नारायण अनन्त-शयन करने लगे । दिव्य शोभामयी लक्ष्मी उनके चरण दबाने लगीं । ८ नारायण का ध्यान करने से सभी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं । वह भवन में सर्बदा निवास करते रहें । ९ जगन्नाथ के दर्शन से सारी बाधाएँ नष्ट हो जाती हैं । मैंने (विश्वनाथ ने) सात काण्ड रामायण का वर्णन किया है । १०

॥ उत्तरकाण्ड समाप्त ॥

॥ बिचित्र रामायण समाप्त ॥

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ओड़िआ
भाषा के ग्रन्थः—

१ रामचरितमानस (मूल पाठ ओड़िआ लिपि में तथा ओड़िआ गद्य-पद्य-अनुवाद)	१४६४	७०.००

ओड़िआ मूल पाठ का नागरी लिप्यन्तरण तथा हिन्दी गद्यानुवादः—

२ बैदेहीश बिळास (उपेन्द्रभंज कृत)	१०००	७०.००
३ बिलंका रामायण (सिद्धेश्वर परिडा)	६५२	६०.००
४ बिचित्र रामायण (विश्वनाथ खुण्टिआ कृत)	६८८	७०.००
५ दाण्डी-जगमोहन रामायण (बलरामदास कृत)		छप रही है
६ महाभारत (सारळादास कृत)		छप रहा है

॥ ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ॥

भुवन ग्रन्थ-गाथा भुवन सन्त-वाणी

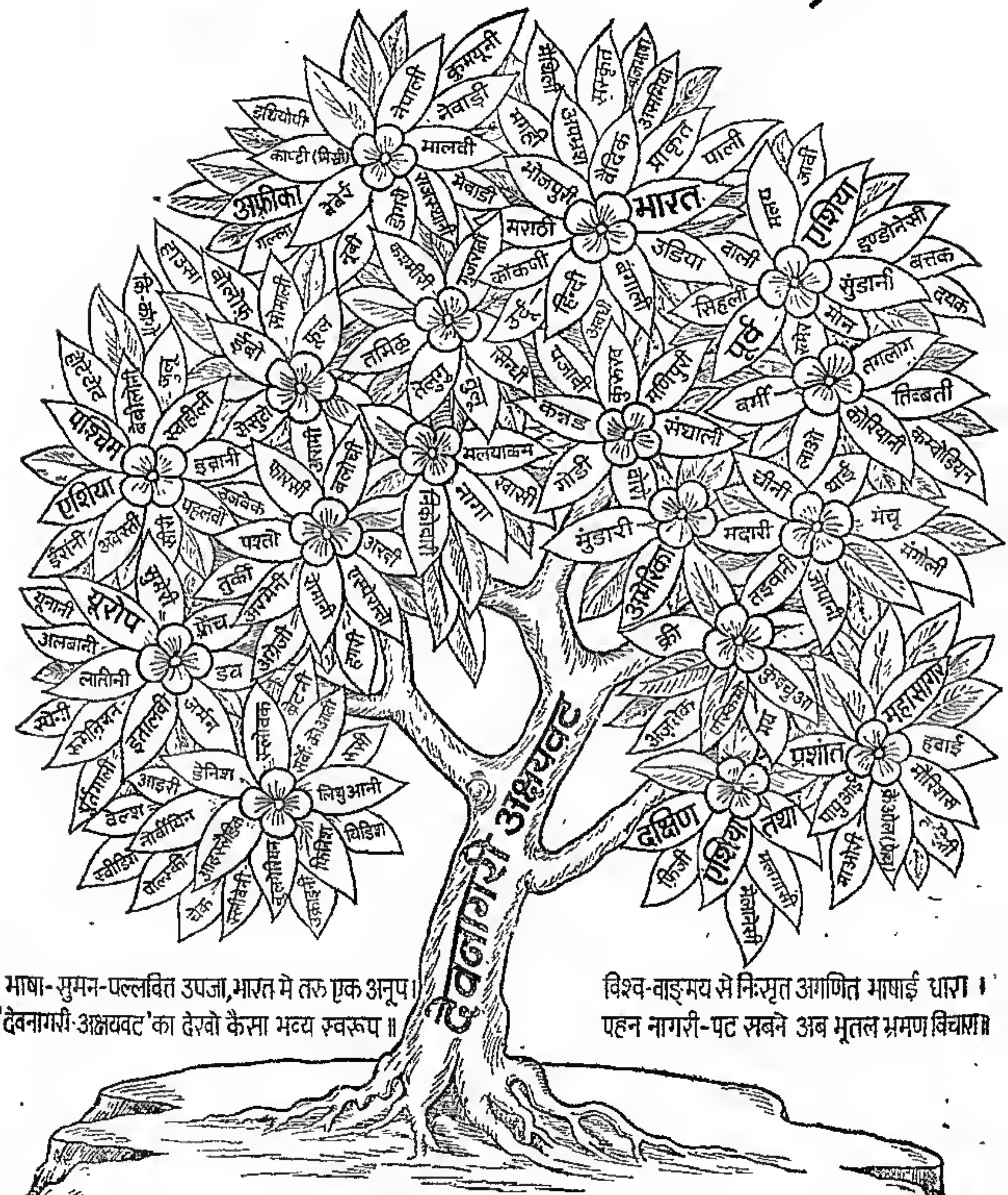

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

प्रतिष्ठाता – पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी